खण्ड-२

दीवान-ए-विदेह

मैथिली गजल संग्रह

(गजल सभक संगीतमय रूप संगमे)

गजलकार : गजेन्द्र ठाकुर

एक आजीवन साधनाक संग्रह

विदेह ISSN 2229-547X

दीवान-ए-विदेह

खण्ड-२

गजलकार: गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

दीवान-ए-विदेह

गजेन्द्र ठाकुर

दीवान-ए-विदेह खण्ड-२

© गजेन्द्र ठाकुर/ प्रीति ठाकुर, २०२६

गजलकार एवं संकलनकर्ता: गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशन-सन्दर्भ: विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

सर्वाधिकार सुरक्षित।

६ × ९ इञ्च हार्डबैक संस्करण

वर्णक्रमानुसार अनुक्रमणिका

गजल ५९२–११८१ · शीर्षक अनुसार देवनागरी वर्णक्रम

अ

७५७ अंक मात्र कहै छै, विचार जगै छै · ३५०

७३९ अंक सभ बोलै छै, सार खोजै छी · ३१४

११४४ अगहनक बाली · ११२४

६७७ अन्हारक भोर ककरो नहि देखायल · १९०

९१८ अन्हार घनै, आस जुगनू चमकैए · ६७२

६७९ अन्हार हमरा मोन बुझायल · १९४

६८४ अन्हार हमरासँ गप करैत अछि · २०४

७३७ अपन मत जाँचै छी, सार दिसै छै · ३१०

९९५ अरुई पात डोलै, बात पवनमे झूमैए · ८२६

१०३५ अरिपन रेखा · ९०६

१०५३ अलसी फूल · ९४२

६७१ अहाँक नाम आबो पास अछि · १७८

६६६ अहाँक नाम, निन्न दूर अछि · १६८

५९७ अहाँ बिनु रहल · ३०

५९९ अहाँ मोनमे रहि गेल · ३४

आ

८१० आँखि गोल चमकै छै, नोर बालक पूछैए · ४५६

१०५० आखरक यात्रा · ९३६

८१९ आखर पात सजै छै, बोल लिपि बचैए · ४७४

९३८ आग धधकै, आस ईंट पकैए · ७१२

८८८ आँगन थाप धरै, ढेंकी कुटैए · ६१२

९०७ आँगन रेखा खुलै, चाव अरिपन खिलैए · ६५०

७३१ आन पीर नोर मात्र नहि · २९८

७१८ आन बाट दिसैए फेर · २७२

१०१२ आम मंजर फुलै, आस गाछ भरि गमकि उठैए · ८६०

१०६६ आम्रपल्लव तोरण · ९६८

६१८ आस अहाँक पाछाँ रहैए · ७२

६२१ आस आबो संग रहैत अछि · ७८

६१६ आस भीतर रहैए · ६८

६१७ आस संग चलैत अछि · ७०

इ

११०२ इनारक डोल · १०४०

ई

६९९ ई केवल काल छल · २३४

११०४ ईखक गाँठि · १०४४

६६७ ई सोर नोर संग अछि · १७०

ए

७२८ एक राह सार नहि · २९२

७०३ एखनो चाह मोनमे अछि · २४२

७०१ एतेक फेर किएक · २३८

ओ

५९३ ओकर नाम नोर छल · २२

७०४ ओकर सोर रहि गेल · २४४

९५३ ओखरि मूसर खुलै, ताल धुनि बजैए · ७४२

६२४ ओ गान हमरा संग अछि · ८४

६१२ ओ ठोर फेरो मोन पड़ैए · ६०

६६४ ओ डोर मोन पास अछि · १६४

६२७ ओ नाम आबो संग अछि · ९०

६१५ ओ नाम एखनो मोनमे अछि · ६६

६६३ ओ नाम मोन संग अछि · १६२

६३२ ओ नोर मोनमे बसल अछि · १००

६३१ ओ नोर मोनसँ नहि गेल · ९८

६०२ ओ नोर हमरा मोन पड़ैए · ४०

६२५ ओ नोर हमरा मोन पड़ैए · ८६

६६५ ओ नेह मोन बीच अछि · १६६

६२६ ओ नेह मोनमे बचल अछि · ८८

६२८ ओ नेह राति भरि जागैत अछि · ९२

६२९ ओ नेह हमरा भीतर रहैए · ९४

६२३ ओ भोर मोनमे रहि गेल · ८२

६०३ ओ भोर हमरा मोन पड़ैए · ४२

९९४ ओल माटि फोड़ै, मूल माटि फोड़ि निकलैए · ८२४

८८९ ओस काँपै, पाला जमैए · ६१४

१०६० ओसक बूँद · ९५६

९२१ ओस पड़ै, भोर जाल चमकैए · ६७८

९०२ ओस पात चमकै, नेह पात महकैए · ६४०

९६४ ओसार साँझ खुलै, अँगार फेर जगैए · ७६४

क

९५९ काई पोखर खुलै, नाम जल तिरैए · ७५४

११३७ कागक ठोर · १११०

९१७ कागज देह जरै, आस लालटेन जरैए · ६७०

८७० कागज सफेद रहै छै, स्याही रेखा उतरै · ५७६

९६७ काँच चूड़ी खुलै, आस मृदु खनकैए · ७७०

१०९४ कचनार पात · १०२४

८७९ कचहरी सोझाँ छाह पसारैए · ५९४

८८६ काँच हँसै, लहठी खनकैए · ६०८

९८५ कछुआ नीर काटै, राह नीरमे बहैए · ८०६

९५७ कछार कटान खुलै, मूल कटैए · ७५०

१०६७ कुटजक छाल · ९७०

९६६ कुट्टी खलिहान खुलै, ताल धूरि उड़ैए · ७६८

११६९ कोठीक अन्न · ११७४

११६१ काठक छील · ११५८

८१३ काठ रेखा जागै छै, छाप हाथ गढ़ैए · ४६२

१११० कौड़ीक चाल · १०५६

१०८० कदंबक फूल · ९९६

९८१ कोदो बालि डोलै, उमंग साँझ धरि डोलैए · ७९८

११२८ कदम्बक फूल · १०९२

१०११ कदली पात बजै, पात बरखा संग थिरकैए · ८५८

९८७ कनकौआ ऊपर उठै, डोर अकास चढ़ि जाइए · ८१०

९५४ कनेर फूल खुलै, आस फुलैए · ७४४

१०८७ कनैल फूल · १०१०

११५७ कूपक घेरा · ११५०

९१२ कपड़ा फाटै, नेह सुई सिअैए · ६६०

८९३ कपड़ा भीजै, रंगरेज रँगैए · ६२२

१०९५ कपासक रूई · १०२६

१०४७ कमला धार · ९३०

१०६१ कमलनाल · ९५८

१०१५ कमल पोखर जागै, आस भोर संग खुलि उठैए · ८६६

१००७ कुम्हारक चाक घुमै, आधार माटिसँ देह गढ़ैए · ८५०

११७४ कुम्हारक भट्ठी · ११८४

१०५२ करघाक ताना · ९४०

११२९ करघाक सूत · १०९४

११४७ कार्तिकक दीप · ११३०

११५३ कुर्थीक दालि · ११४२

९९७ कुरथी दालि पकै, दाल भानसमे महकैए · ८३०

७६४ काल जखन मुड़ै छै, ढंग परखै छी · ३६४

७७६ कूल दूर सरै छै, तरंग संगे बहैए · ३८८

७५९ काल पार सोचै छी, भोर देखै छी · ३५४

८५६ कलम डारि जुड़ै छै, नव फूल खुलै · ५४८

७४७ काल्हिक आधार पूछै छी · ३३०

११२३ कुल्हड़क गंध · १०८२

६९६ केवल ई मान नहि · २२८

१०५७ कुशक आसन · ९५०

८११ केश धीर बदलै छै, श्वास उमिर ढलैए · ४५८

१०७७ काँसक डलिया · ९९०

११७१ काँसक थाल · ११७८

१०२५ कोसी धार बहै, इतिहास नकसा फेर लिखैए · ८८६

१०४२ कांस फूल · ९२०

११०७ कोंहड़ाक बेल · १०५०

ख

१०३३ खोंइछा अन्न · ९०२

९९२ खजूर रस टपकै, आस रस टपकैत रहैए · ८२०

११११ खाटक पाट · १०५८

९४८ खेत बँटै, मान मेड़ बोलैए · ७३२

१०१९ खपड़ा छान्ह टिकै, राह बरखा रोकैत रहैए · ८७४

११६० खपराक छत · ११५६

१०८८ खपरैल छानि · १०१२

१११५ खुरपीक धार · १०६६

११५२ खेसारीक दाना · ११४०

ग

११२६ गोइठाक राख · १०८८

११३४ गाछक खोह · ११०४

९२५ गाछ डोलै, पार पछिया बहैए · ६८६

११०५ गुड़क भेली · १०४६

८०० गीत काल लाँघै छै, गीत अन्त लाँघैए · ४३६

८८५ गन्ध उठै, मसाला पिसैए · ६०६

८९४ गाम गोल बैसै, सभा सुनैए · ६२४

६५८ गाम फेर दूर गेल · १५२

६४८ गाम मोनमे देखू · १३२

९१० गरमी घटै, श्वास पंखा डोलैए · ६५६

७४४ गौरव जखन बढ़ै छै, प्रमाण माँगै छै · ३२४

१०३७ गोरस मथनी · ९१०

८१६ गवाही स्वर उठै छै, प्रमाण न्याय तौलैए · ४६८

घ

११६७ घीक वास · ११७०

१०७८ घोंघाक खोल · ९९२

९८४ घोंघा पथ सरकै, पहिचान पाछाँ रहि जाइए · ८०४

१११३ घुँघरूक नाद · १०६२

११०० घंटीक अनुनाद · १०३६

९२३ घाट पएर चलै, नोर गगरी छलकैए · ६८२

८२३ घंटी भोर बजै छै, ज्ञान कक्षा जागैए · ४८२

८२६ घड़ी भोर बजै छै, काल फेर सरकै · ४८८

११०३ घूरक आँच · १०४२

७७५ घर पाछाँ छुटै छै, सार मोनमे बसैए · ३८६

१०९० घैलाक मुँह · १०१६

१००८ घैला नीर भरै, श्वास शीतल नेह भरैत जाइए · ८५२

७६७ घाव जखन दुखै, उपचार द्वार खोलैत अछि · ३७०

७४३ घाव जखन देखै छी, दाग बुझै छी · ३२२

७८२ घाव बात कहै छै, भाव नोरमे चमकैए · ४००

च

११३६ चकईक पाँख · ११०८

१०७४ चकरी पवन · ९८४

११४६ चैतिक पछिया · ११२८

८२० चिता शान्त पड़ै छै, फूल राख बोलैए · ४७६

११७६ चानक डाकघर · ११८८

११६६ चूनक ढेरी · ११६८

१०६९ चनाक फली · ९७४

६८८ चान डूबल, नेह नहि डूबल · २१२

९७० चन्द्र ज्योति खुलै, मूल दूर पसरैए · ७७६

८३३ चन्द्र राति चमकै छै, छाँह धीरे चढ़ै · ५०२

१०१६ चापाकल चलै, धार धरतीसँ नीर उठैए · ८६८

१०४८ चिरई घोंसला · ९३२

१००२ चरखा सूत कातै, मान सूतमे गाँठि जुड़ैए · ८४०

११५६ चूल्हिक धूर · ११४८

१०९३ चूल्हिक राख · १०२२

८४४ चूल्हा भोर जरै छै, दालि गन्ध फैलै · ५२४

७०८ चाह आबो बचल अछि · २५२

छ

८८२ छोट कोन रहै, टिकट पहुँचबैए · ६००

७५५ छूटल स्वर उठै छै, मान बदलै छै · ३४६

७३८ छूटल स्वर उठै छै, हाल बदलै छै · ३१२

८७३ छत गमला रहै छै, बीज माटि धरै · ५८२

९४९ छत गरमै, चाव धूप उतरैए · ७३४

९८२ छत्ता मधु भरै, आस मधु सँ भरैए · ८००

९५५ छप्पर बरखा खुलै, नोर टपकि खसैए · ७४६

११८० छाहक सोपान · ११९६

ज

१०५९ जुगनू राति · ९५४

७२७ जग मान जागैए · २९०

६८० जे गेल से भीतर रहि गेल · १९६

८९१ जंगल साँस ले, पगडंडी मुड़ैए · ६१८

७६१ ज्ञान जखन बदलै छै, उपाय मिलै छै · ३५८

६५० ज्ञान फेरो जागल · १३६

७४१ ज्ञान फेर बदलै छै, आधार जाँचै छी · ३१८

१०५६ जूटक बोरा · ९४८

११४१ जेठक धूल · १११८

८०७ जड़ि माटि पकड़ै छै, मूल छाँह रहैए · ४५०

११५४ जाँतक पाट · ११४४

११७२ जोतक लीक · ११८०

९८० जाँता दाना पिसै, गान मृदु बजैए · ७९६

६२२ जे नोर अहाँक पाछाँ रहि गेल · ८०

६१९ जे नोर आबो मोनमे अछि · ७४

६०० जे नोर मोनमे जागल अछि · ३६

६१३ जे नोर हमरा छोड़ि नहि गेल · ६२

६९३ जे भोर मोन पड़ैत अछि · २२२

११०८ जामुनक गाछ · १०५२

५९८ जे मोनसँ नै गेल · ३२

६९७ जीवन आस जकाँ · २३०

६९४ जीवनक सार कहू · २२४

६९८ जीवनमे गाम बिनु · २३२

७०२ जीवनमे फूल रहैत अछि · २४०

६०१ जे हमर संग रहैत अछि · ३८

झ

१११४ झाँझक थाप · १०६४

७३० झट ज्ञान नहि · २९६

११०६ झाड़ूक सींक · १०४८

९८९ झाँपी भीतर सजै, नाम भीतर बचि रहैए · ८१४

८६१ झोरा काँध चढ़ै छै, माय नोर धरै · ५५८

१०२४ झूला आमगाछ हिलै, उमंग पवन संग डोलैत रहैए · ८८४

ट

८२२ ट्रेन गाम छोड़ै छै, द्वार पएर घुरैए · ४८०

ठ

६९१ ठोर गुम्म, भीतर गीत · २१८

ड

८०६ डाक पएर चलै छै, सार चिट्ठी पहुँचैए · ४४८

७९८ डगमग मोन रहै छै, विश्वास डोर सम्हरैए · ४३२

११२५ डमरूक ताल · १०८६

९१३ डारि हिलै, चाव झूला डोलैए · ६६२

ढ

१०१७ ढेकी धान कुटै, ताल धपधप सोर उठैए · ८७०

१११२ ढिबरीक काँच · १०६०

११७० ढोलकक थाप · ११७६

८७२ ढोल थाप पड़ै छै, बीच मौन रहै · ५८०

८३० ढोल दूर बजै छै, रंग झण्डा लहरै · ४९६

त

१०८९ ताड़क पंखा · १०१४

११६२ ताड़क रस · ११६०

९९० ताड़पात आखर खुलै, ज्ञान पातमे बोलैए · ८१६

१०७१ ताँतक गाँठि · ९७८

९८३ तितली रंग उड़ै, रंग पाँख पसारैए · ८०२

८९२ तिनका जुड़ै, घोंसला बसैए · ६२०

८२९ तान सूता तनै छै, बाना रंग जुड़ै · ४९४

९३३ तार काँपै, गीत सारंगी रुवैए · ७०२

९७८ तराजू पल्ला झुकै, विचार तोलि देखैए · ७९२

११२४ तुरहीक नाद · १०८४

१०८४ तिलक फली · १००४

१०४५ तिलकोर पात · ९२६

९९८ तिल घानी घुमै, हाथ घानी संग चलैए · ८३२

८३८ ताला द्वार लटकै छै, हाथ धातु घुमै · ५१२

८८४ ताल नीर झलकै, कुमुद खिलैए · ६०४

१०३० तसर कोया · ८९६

द

६०५ दाग मोनसँ नहि जाइए · ४६

६३७ दाग हमरा भीतर रहैए · ११०

१११७ दूधक फेन · १०७०

९४० दाना जुटै, मान कोठी भरैए · ७१६

८०५ दीप कोन जरै छै, ज्ञान पन्ना खुलैए · ४४६

१००१ दीप बाती जरै, विश्वास मन्दे मन्दे जरैए · ८३८

८८० दीप मन्द जरै, राति सम्हारैए · ५९६

७९० दीप राति जरै छै, नेह मोनमे उजरैए · ४१६

८६४ दुपहर सूरज चढ़ै छै, गाछ छाह सिमटै · ५६४

१०२३ दूब आँगन भीजै, राह पएर तले हरियैए · ८८२

७८९ दाबी जोर करै छै, बात साँचमे टिकैए · ४१४

७६२ दाबी फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै · ३६०

८०१ दाम रोज बदलै छै, सार बाजार जँचैए · ४३८

६७५ दूर गेलहुँ तऽ नेह बुझलहुँ · १८६

७९७ दूर घर रहै छै, प्रीत दूरि घटैए · ४३०

८२८ दर्पण भोर चमकै छै, चेहरा रेखा उभरै · ४९२

९५० दूर रेखा खुलै, पार क्षितिज फैलैए · ७३६

७४५ दोषो देखलै मोन, सार रहि जाइ छै · ३२६

७२१ दिस आन साँच देख · २७८

८२१ दू हाथ मिलै छै, नेह बंधन जँचैए · ४७८

१०३१ दही मथानी · ८९८

८७१ देहरी भोर चमकै छै, घर बाहर मिलै · ५७८

ध

१०३२ धानक कोठी · ९००

११७५ धानक खील · ११८६

१०९७ धानक भूसी · १०३०

१०४९ धानक लावा · ९३४

९२७ धान जुटै, मान बखार भरैए · ६९०

८८१ धान डोलै, बिजुका तकैए · ५९८

८२७ धान बीज सुकै छै, अगिला ऋतु टिकै · ४९०

९२२ धान रोपै, गीत रोपनी गबैए · ६८०

६४६ ध्यान मोनमे राखू · १२८

९७४ धूरिक बाट खुलै, बात उड़ैए · ७८४

८९७ धूलि उठै, घोड़ा दौड़ैए · ६३०

९४७ धूलि उठै, भोर गोधूलि उठैए · ७३०

८८३ धूलि बीच अंक रहै, पत्थर गनैए · ६०२

८९५ धूलि हटै, अलमारी खुलबैए · ६२६

न

११५८ नाँदक जल · ११५२

११४९ नदीक बालू · ११३४

७९४ नदी याद बहै छै, धार स्मृतिमे घुरैए · ४२४

७४० नदी रूप बदलै छै, सार बचै छै · ३१६

८४८ नमक दाना पड़ै छै, दालि स्वाद बदलै · ५३२

१०४१ नीम पात · ९१८

६६१ नाम फेर लग छल · १५८

६८७ नाम मेटल, सोर नहि मेटल · २१०

७०६ नाम मोन पड़ैए · २४८

६५४ नाम मोन बीच छल · १४४

६४४ नाम मोनमे राखू · १२४

६३४ नाम मोनमे रहि गेल · १०४

६५६ नाम मोन संग छल · १४८

७१४ नम्र मोन मान संग अछि · २६४

६३९ नाम हमरा मोन पड़ैए · ११४

८५७ न्याय कक्ष खुलै छै, प्रश्न क्रम धरै · ५५०

७७० न्याय फेर बढ़ै, माप बनि रहैत अछि · ३७६

६०८ नोर अहाँ बिनु रहि गेल · ५२

९०० नीर पार खुलै, क्षितिज पसारैए · ६३६

६४३ नोर फेरो आयल · १२२

६५९ नोर फेर मोन आय · १५४

८७८ नीर बहै, भोर जाल पसारैए · ५९२

६६८ नोर मौन, नेह गाढ़ अछि · १७२

६५२ नोर मोनमे खोजू · १४०

६०७ नोर मोनमे बसल अछि · ५०

६४२ नोर मोनमे बसल अछि · १२०

६४९ नोर मोनमे राखू · १३४

६५३ नोर मोन संग छल · १४२

६३८ नोर मोनसँ नहि गेल · ११२

७५८ नोर-सोर बुझै छी, हाल खुलै छै · ३५२

९२९ नीर हटै, भोर चर उभरैए · ६९४

६३३ नोर हमरा संग अछि · १०२

६८५ नोर हमरा संग जागैत रहल · २०६

९६९ नाल जल खुलै, राह नीचाँ बहैए · ७७४

९४१ नील फूल डोलै, चाव अलसी हँसैए · ७१८

८६८ नाव घाट लगै छै, नीर तेज बहै · ५७२

८१२ नाव नीर उतरै छै, धार सीमा काटैए · ४६०

१०२७ नाव पतवार · ८९०

६११ नेह एखनो बचल अछि · ५८

६६९ नेह एखनो मोन संग अछि · १७४

५९६ नेहक अन्तिम छोर · २८

६१४ नेहक गान बचल अछि · ६४

७१३ नेहक नाम आब अछि · २६२

६८३ नेहक बाति रहि जाइत अछि · २०२

७२३ नेहक सार होइत अछि · २८२

६३६ नेह मोनमे बचल अछि · १०८

६४१ नेह मोनमे रहि गेल · ११८

७२५ नेह मूल सार अछि · २८६

८४० नहर खेत मुड़ै छै, नीर रेखा चलै · ५१६

६२० नेह राति भरि जागैत अछि · ७६

प

१०४४ पुआल गादी · ९२४

८८७ पएर उठै, सीढ़ी चढ़बैए · ६१०

८३१ पएर ढलान चढ़ै छै, कुहरा दूर सरै · ४९८

७९६ पएर माटि छुबै छै, देश माटिसँ जनमैए · ४२८

७९९ पएर मोड़ पड़ै छै, उपाय दिशा मुड़ैए · ४३४

८२५ पएर माथ रुकै छै, पार आकाश खुलैए · ४८६

७८५ पएर रोक घेरै छै, आकाश पार निकलैए · ४०६

९०५ पाखी खेल उठै, गीत सामा गबैए · ६४६

८४६ पाखी झुण्ड उड़ै छै, आकाश रेखा बनै · ५२८

११३३ पोखरिक घाट · ११०२

१०६५ पोखरक पाँक · ९६६

९३० पोखर गहिरै, आस कमलबीज पकैए · ६९६

१०३४ पोखर घाट · ९०४

९०१ पोखर नीर चमकै, आस मखान खिलैए · ६३८

१०२६ पगडंडी धूर · ८८८

१०५५ पगहा गाँठि · ९४६

८४७ पैडल पएर घुमै छै, चक्का राह धरै · ५३०

९३६ पात खुलै, ज्ञान पंजी बोलैए · ७०८

८४३ पतंग छत उठै छै, डोर हाथ तनै · ५२२

८४१ पत्थर रेखा रहै छै, आखर धीरे घिसै · ५१८

९७१ पीतल लोटा खुलै, रंग चमकैए · ७७८

९३४ पात लहरै, भोर तिलकोर लहरैए · ७०४

१०४० पोथीक जिल्द · ९१६

९७२ पोथीक पन्ना खुलै, नाम धीरे सरकैए · ७८०

८५२ पोथी पन्ना खुलै छै, छोट टिप्पणी जगै · ५४०

९३१ पाथर टकरै, नोर चकमक झिलमिलैए · ६९८

९२० पाथर बाट बजै, ताल खड़ाऊँ बजैए · ६७६

९४३ पाथर भीजै, भोर झरना गबैए · ७२२

६८१ पानि अपन पिआस कहैत रहल · १९८

१०६४ पानक बारी · ९६४

७८८ पन्ना फेर खुलै छै, नाम कालमे डोलैए · ४१२

१००४ पान पात भीजै, रंग ओस संग चमकि उठैए · ८४४

११६३ पनसक बीआ · ११६२

९९१ पीपर छाँह पसरै, राह छाँहमे टिकि रहैए · ८१८

११३५ पीपलक जड़ि · ११०६

९०९ पीयर खेत डोलै, प्रीत सरसों हँसैए · ६५४

७७१ पीरक मूल खुलै, निदान दिशा दैत अछि · ३७८

७७४ पीर जखन घटै छै, आस जागि उठैए · ३८४

६४५ प्रीत फेरो जागल · १२६

६५७ प्रीत मोन बीच छल · १५०

६५१ प्रीत मोनमे राखू · १३८

६०४ प्रीत हमरा भीतर अछि · ४४

६४० प्रीत हमरा संग अछि · ११६

८०९ पर्दा धीरे उठै छै, रंग मंच धड़कैए · ४५४

७८७ पीर देह कहै छै, ताप देहमे सिहरैए · ४१०

८२४ पीर धीरे कहै छै, भेद देह सुनैए · ४८४

८७४ पुरना टीला रहै छै, गाछ छाह पड़ै · ५८४

६७२ पुरन दुआरि फेर मोन पड़ल · १८०

९१४ पुरान नीर चमकै, भोर कुण्ड चमकैए · ६६४

८३७ पुरना फोटो खुलै छै, चेहरा मुस्की रहै · ५१०

८६२ पुरना बक्सा खुलै छै, कागज गन्ध उठै · ५६०

७८६ पुरना बीज बचै छै, मूल जड़ि धरैए · ४०८

७७९ पीर नोर कहै छै, नेह नोरमे भीजैए · ३९४

८७६ पुरान रेखा खुलै, राह नक्शा बतबैए · ५८८

६७० पुरन सोर घर बीच अछि · १७६

६८९ पार भेटल, मझधार बाँचल · २१४

७३६ प्रश्न उठि गेलै, द्वार खुलै छै · ३०८

७५० प्रश्न जखन उठै छै, सार बुझै छी · ३३६

७७३ प्रश्न जखन उठै, विचार केँ खोजैत अछि · ३८२

७५६ प्रश्न फेर उठै छै, राह दिसै छै · ३४८

७३३ प्रश्न बीच गीत अछि · ३०२

७७८ प्रश्न माथ उठै छै, ज्ञान ऊपर चढ़ैए · ३९२

११२० पालकीक डाँड़ · १०७६

८३४ पुल नदी लाँघै छै, दू कूल जुड़ै · ५०४

१०७२ पलाशक फूल · ९८०

११४० पूसक धुंध · १११६

फ

११४५ फागुनक अबीर · ११२६

९३९ फूल खुलै, प्रीत चंपा महकैए · ७१४

९१९ फूल झरै, नोर मौलश्री झरैए · ६७४

११३० फूसक छानि · १०९६

ब

१०७३ बकाइन छाह · ९८२

९९३ बकुल फूल झरै, सुवास भोरमे महकि उठैए · ८२२

९५८ बिचड़ा खेत खुलै, रंग फेर हरियैए · ७५२

९५२ बीज अँकुर खुलै, मान फेर उठैए · ७४०

७७७ बीज माटि फोड़ै छै, प्रीत माटिमे अँकुरैए · ३९०

११३९ बिजुरीक रेख · १११४

८६७ बाजार भोर खुलै छै, दाना पलड़ा धरै · ५७०

६७३ बुझल दीपक उजियार · १८२

१११९ बटखराक तोल · १०७४

१०६३ बढ़ईक रन्दा · ९६२

८६० बाढ़ नीर उतरै छै, खेत माटि दिसै · ५५६

१०८१ बेंतक मोढ़ा · ९९८

८१८ बत्ती राति जरै छै, सोर नगर जागैए · ४७२

९६० बाती दीप खुलै, पीर जरैए · ७५६

१०२१ बेंत पीढ़ी बुनै, मान बैसबाक आसन बनैए · ८७८

१११६ बथानक खूँटा · १०६८

११७८ बादलक पोथीघर · ११९२

९६५ बान्ह जल खुलै, मान टिकैए · ७६६

९६३ बबूल काँट खुलै, मेल भीतर चुभैए · ७६२

११३१ बेरक काँट · १०९८

१०४३ बरगद जटा · ९२२

८६६ बोर्ड बीच सजै छै, पहिल चाल खुलै · ५६८

११०९ बेलक फल · १०५४

१०९६ बेलनक घुमाव · १०२८

१०१८ बेलना लोइ फैलै, आधार गोलाइमे फैलैत जाइए · ८७२

११५१ बेलपत्रक डारि · ११३८

९६८ बेल लता खुलै, नोर लहरैए · ७७२

११३२ बाँसक फाँक · ११००

१०७६ बाँसक सूप · ९८८

९७७ बाँस दउरा जुड़ै, मान सँचि उठैए · ७९०

१०३६ बाँसुरी स्वर · ९०८

८४२ बाँस हवा डोलै छै, जड़ि माटि थामै · ५२०

भ

७५१ भाग्य फेर जाँचै छी, आधार खोजै छी · ३३८

७४८ भाग्यैँ साँच भेलै, कोन आधार मिलै छै · ३३२

११५९ भीतक लेप · ११५४

७३५ भीतर आस रहै छै · ३०६

१०८५ भदई धान · १००६

११४३ भादोक पाँक · ११२२

८४९ भोर अजान उठै छै, घण्टा दूर बजै · ५३४

६९२ भोर आयल, राति नहि गेल · २२०

८५१ भोर कूप जागै छै, नीर तल चमकै · ५३८

९४४ भोर खुलै, आस कुहासा हटैए · ७२४

९०८ भोर गन्ध उठै, आस मंजर महकैए · ६५२

९१६ भोर थारी सजै, प्रीत भोज सजैए · ६६८

८६३ भोर बाड़ी खुलै छै, पात ओस चमकै · ५६२

७१२ भोर मोनमे अछि · २६०

७१६ भोर रहि जाइत अछि · २६८

८५९ भोर विद्यालय खुलै छै, आँगन हँसी भरै · ५५४

६१० भूल मोनसँ नहि गेल · ५६

७३२ भाव मूल थाह अछि · ३००

१०२० भूसा दउनी चलै, सोर पवन संग उड़ि जाइए · ८७६

९५६ भूसी पवन खुलै, राह दूर उड़ैए · ७४८

म

९९९ मकई भुट्टा खुलै, धान दाना झरि पड़ैए · ८३४

७२९ मुक्त राह सार अछि · २९४

११६४ मखानक खोल · ११६४

१००३ मखान पोखर जागै, थाह नीर तलसँ उठैए · ८४२

११४८ माघक धूप · ११३२

११३८ मेघक बूँद · १११२

९२४ मेघ हटै, रंग इन्द्रधनुष उभरैए · ६८४

१०३९ माछक जाल · ९१४

११२१ माछक शल्क · १०७८

१०७० मूँजक चटाई · ९७६

१०२२ माटिक चूल्हि जरै, रात आँच भीतर जगैत रहैए · ८८०

९२८ माटि कटै, ज्ञान फाल चमकैए · ६९२

१०६२ माटिक पुतरी · ९६०

९६२ माटिक सोंध खुलै, रूप महकैए · ७६०

११२२ माटिक सुराही · १०८०

९११ माटि पकै, ताल घड़ा झनकैए · ६५८

१०८३ मटरक फूल · १००२

६७८ मेटल नाम हमरा घर आयल · १९२

८०८ माटि हाथ नमै छै, रूप चाक घुमैए · ४५२

८५४ माटि हाथ नमै छै, रूप बीच उगै · ५४४

९९६ मड़ुआ बालि झुकै, बाल नमि जाइए · ८२८

७१० मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि · २५६

६३५ मीत आबो संग अछि · १०६

७६३ मत जखन सुनै छी, प्रभाव बुझै छी · ३६२

६५५ मीत फेर दूर गेल · १४६

६०६ मीत फेर नहि भेटल · ४८

६३० मीत फेर नहि भेटल · ९६

५९५ मीत मोन प्राण छल · २६

६४७ मीत मोनमे खोजू · १३०

६०९ मीत मोनमे रहि जाइए · ५४

६६२ मीत साँझ संग आय · १६०

१०३८ मिथिला चित्रक कूची · ९१२

९१५ माथ सजै, मान पाग दमकैए · ६६६

१०८२ मृदंगक चमड़ा · १०००

१०९८ मधुक छत्ता · १०३२

११६८ मधुक मकरंद · ११७२

८३२ मधुमाछि भोर उड़ै छै, फूल गन्ध खोजै · ५००

७०५ मौन एक गीत लगैत अछि · २४६

६७६ मौनक तान भीतर बजैत रहल · १८८

७०० मोनक भीतर पीर कतए · २३६

६९५ मोनक भीतर राह रहू · २२६

६७४ मौनक सोर भीतर जागल · १८४

७६६ मान जखन बचै, आस रूप धरैत अछि · ३६८

७४२ मान जखन बढ़ै छै, विश्वास रहै छै · ३२०

७६९ मोन फेर जागै, प्रीत संग चलैत अछि · ३७४

७१९ मोन फेर बाट बदलैए · २७४

७१७ मान बचैए एखनो · २७०

७२६ मोन बीच एक नाव अछि · २८८

५९४ मोन बीच रात रहल · २४

६६० मान मोन बीच छल · १५६

७११ मोनमे साँचक सार एखनो अछि · २५८

७१५ मोनमे सार बचल अछि · २६६

७०९ मोन राति नाम फेर कहैत रहल · २५४

७६५ माप जखन लगै, ज्ञान मोनमे उतरैत अछि · ३६६

१०६८ मसूरक फूल · ९७२

८५५ मेह काँच पड़ै छै, बूँद रेखा बनै · ५४६

८६५ मेह छत पड़ै छै, नाली नीर बहै · ५६६

८१४ मेह राति पड़ै छै, नेह छप्पर बजैए · ४६४

८०२ मेह राति बढ़ै छै, धार कूल बनैए · ४४०

य

७७२ याद फेर उठै, नोर मोन फेरबैत अछि · ३८०

र

९७३ रुई सूत खुलै, पीर ऊपर उड़ैए · ७८२

९५१ राख अँगार खुलै, अँगार बचैए · ७३८

७९१ राख छाँह धरै छै, गीत राखसँ फूलैए · ४१८

७९२ रेखा नाम बनै छै, पहचान सीमा गलैए · ४२०

८९८ रेखा बोलै, चित्र उभरैए · ६३२

८१५ रोटी हाथ बाँटै छै, स्वाद थारी जुड़ैए · ४६६

८३६ रेडियो भोर बजै छै, दूर स्वर अबै · ५०८

८४५ राति आकाश खुलै छै, तारा झिलमिल करै · ५२६

८७५ राति झंझा बहै छै, दूर रेखा उगै · ५८६

९४५ राति ढलै, नोर चाँद झुकैए · ७२६

८५८ राति नदी बहै छै, मचान दीप जरै · ५५२

७८० राति पाछाँ सरै छै, आस भोरमे फूटैए · ३९६

१०९९ रुद्राक्षक दाना · १०३४

७४६ रूप जखन मिललै, मेल तखन विचार भेलै · ३२८

१०१० रोपनी धान झुकै, मान पाँतिमे हरियैत जाइए · ८५६

७९३ रूप नाम बदलै छै, स्वरूप नामसँ छूटैए · ४२२

७५२ रूप फेर जाँचै छी, आकार खुलै छै · ३४०

७५४ रूप फेर बदलै छै, सार बचै छै · ३४४

९३२ रेशा जुड़ै, प्रीत पाटी बुनैए · ७००

९०४ रेशा तनै, मान सिक्की जुड़ैए · ६४४

७८३ रोष देह चढ़ै छै, क्रोध भीतर धधकैए · ४०२

९३७ रस्सी तनै, चाव डोल उतरैए · ७१०

८०३ रस्सी हाथ उतरै छै, प्यास कुआँ बोलैए · ४४२

ल

११२७ लौकीक बेल · १०९०

९३५ लोक जुटै, मान सभा जुटैए · ७०६

७९५ लोक सोर जुड़ै छै, रंग लोकमे बजैए · ४२६

१०१३ लीची गुच्छा पाकै, रंग डारि संग झूलैत रहैए · ८६२

१००९ लाठी बाट चलै, साथ पएर संग टिकैत रहैए · ८५४

१११८ लाहक चूड़ी · १०७२

१०९२ लहठीक खनक · १०२०

१०५१ लोहारक धौंकनी · ९३८

८७७ लोहारक श्वास उठै, आग भट्ठी धधकैए · ५९०

८९६ लहर चढ़ै, पदचिह्न मिटैए · ६२८

८५० लहर भोर उठै छै, क्षितिज रंग बदलै · ५३६

९४६ लहर हटै, आस सीपी खुलैए · ७२८

व

९०६ व्रत कथा खुलै, स्वर कथा गुँजैए · ६४८

श

११५० शंखक सोर · ११३६

११८१ शून्यक पतंग · ११९८

७८१ शब्द पवन चढ़ै छै, संवाद पवनमे उड़ैए · ३९८

११७३ शालक छाल · ११८२

८९९ श्वास उठै, शंख गुँजैए · ६३४

९४२ श्वास मिलै, गीत बाँसुरी सुसकैए · ७२०

स

१०७५ सुईक टाँका · ९८६

१००६ सिकी डलिया बुनै, प्रीत बुनाइमे रूप धरैए · ८४८

९७५ साँकल द्वार खुलै, रूप राति खनकैए · ७८६

१०७९ सखुआ पात · ९९४

८३९ सूखल पात सरसरै छै, चिनगी छोट उठै · ५१४

१०४६ सिंघाड़ा पोखर · ९२८

७२२ साँच एक बेर भेल नहि · २८०

७२४ साँचक नव ढंग रहैए · २८४

५९२ साँचक मान · २०

७३४ साँचक सोर अछि · ३०४

७५३ साँच जखन कहै छी, डोर रहै छै · ३४२

७६८ साँच फेर खुलै, नोर सँ जुड़ैत अछि · ३७२

७४९ साँच फेर मिलै छै, सार खुलै छै · ३३४

७२० साँच लेल कोन माप अछि · २७६

८६९ साँझ आँगन सजै छै, पहिल लौ उठै · ५७४

६८६ साँझक बादो घर नहि सुतल · २०८

८०४ सीटी दूर बजै छै, राह रेल चलैए · ४४४

८५३ सीटी दूर बजै छै, लोहा ताल धरै · ५४२

९०३ सूत जुड़ै, चाव सुजनी सजैए · ६४२

९६१ सूत तकली खुलै, बात सूत तनैए · ७५८

९२६ सूत तनै, सार चर्खा घूमैए · ६८८

७६० सत्ता फेर जाँचै छी, ध्यान रखै छी · ३५६

९८६ सनई फूल डोलै, रंग पवनमे लहरैए · ८०८

११६५ सनक रेसा · ११६६

१०२८ सनक रस्सी · ८९२

६९० सून्न गामक एकटा साँझ · २१६

६८२ सून्न दुआरि एतबे कहि गेल · २००

१०१४ सिन्नुर डिबिया खुलै, मान माँगमे रँग भरैए · ८६४

१०५८ सोनारक हथौड़ी · ९५२

९८८ सूप दाना छाँटै, धान सूपमे छँटैए · ८१२

११७९ सपनक रेल · ११९४

१००५ सुपारी कटरनी चलै, विचार फाँक बनि खुलैए · ८४६

८९० समुद्र बीच सूइ बतबैए · ६१६

११७७ समयक खाली जेब · ११९०

१०२९ सरकंडा चटाई · ८९४

७८४ सोर दूर रहै छै, राग मौनमे गमकैए · ४०४

१०५४ सरिसो खेत · ९४४

१०९१ सिलौटक धार · १०१८

११५५ सिलौटक लीक · ११४६

९७६ सिलौट लोढ़ा बजै, सोर धीमे थिरैए · ७८८

११४२ सावनक टपक · ११२०

८१७ स्वप्न रूप बदलै छै, रूप भोर जगबैए · ४७०

८३५ सीसा टाइप सजै छै, स्याही रोल चढ़ै · ५०६

ह

१००० हजारम गजल खुलै, गीत आगाँ गुँजैत रहैए · ८३६

७०७ हमर मोन रुवैए किएक? · २५०

९७९ हँसुआ धार चमकै, सार फेर दमकैए · ७९४

११०१ हँसियाक धार · १०३८

१०८६ हंसुलीक चमक · १००८

गजलमे बहर, वजन आ समान मिसरा : रेख्ता, कोलंबिया आ मिशिगनक मत तथा विदेहक लेखन-विधान

प्रस्तावना

गजल केवल अन्त्य-तुक, काफिया वा रदीफक पुनरावृत्ति नहि, बल्कि कठोर औपचारिक अनुशासनक काव्य-रूप अछि। एक-एक शेर अपन अर्थमे स्वतंत्र भऽ सकैत अछि, मुदा पूरा गजलकेँ एक सूत्रमे बाँधनिहार प्रधान तत्त्व बहर, काफिया आ रदीफक अनुशासन अछि। एहि कारण केवल एतेक देखब पर्याप्त नहि जे सभ मिसराक कुल मात्रा बराबर अछि; जरूरी ई अछि जे प्रत्येक मिसरा समान मात्रिक भारक संग एक्के आन्तरिक वजन-क्रममे चलए। एहि लेखमे रेख्ता, Columbia Universityक Digital Urdu Ghazal Reader आ University of Michiganक गजल-लेखन निर्देशकेँ एक संग पढ़ि मैथिली गजल लेल स्पष्ट प्रकाशन-विधान निर्धारित कएल गेल अछि।

१. रेख्ता : गजलक संरचना आ बहर

रेख्ता गजल लेल न्यूनतम पाँच शेरक नियम स्पष्ट करैत अछि। ओकर अनुसार एक गजलक सभ शेर एक्के बहरमे रहबाक चाही। मतला अर्थात् पहिल शेरक दुनू मिसरामे काफिया आ रदीफ अबैत अछि; बादक शेरसभक दोसर मिसरामे वएह काफिया-रदीफक क्रम रहैत अछि। रेख्ता बहरकेँ लय-संरचना मानैत अछि—अर्थात् गजलक सभ मिसरामे लयक साँचा समान रहबाक चाही। तखल्लुसयुक्त मक्ता परम्परागत विशेषता भऽ सकैत अछि, मुदा रेख्ताक व्याख्यामे मक्तामे तखल्लुस रहि सकैत अछि; अर्थात् गजल होएबाक न्यूनतम शर्त रूपमे तखल्लुस अनिवार्य नहि।

२. Columbia University : मात्रात्मक मीटरक वास्तविक अर्थ

Frances W. Pritchett आ A. Sean Pue द्वारा तैयार Columbia Universityक Digital Urdu Ghazal Reader गजलकेँ दू-पाँतिक शेरसभक एहन समुच्चय रूपमे परिभाषित करैत अछि जाहिमे सभ अशआर एक्के बहर आ एक्के जमीन साझा करैत अछि। ओतए उर्दू मीटर मात्रात्मक कहल गेल अछि—मीटरक आधार आघात नहि, बल्कि ह्रस्व आ दीर्घ उच्चारण-इकाइक निश्चित संख्या आ निश्चित क्रम अछि। ई बिन्दु अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि: दू मिसरा दुनू १८, २२ वा २८ मात्रा देत, मुदा जँ लघु-गुरु अथवा वजनक आन्तरिक क्रम भिन्न अछि तँ ओ एक्के बहरमे नहि मानल जा सकैत। कुल मात्रा समान होनाइ आवश्यक हो सकैत अछि, पर्याप्त नहि।

Columbiaक विवरणमे रदीफ वैकल्पिक किंतु सामान्य तत्त्व अछि। एहि संग्रहमे अस्पष्टता दूर रखबाक लेल सम्पादकीय नियम जानि-बुझि आरो कठोर राखल गेल अछि: प्रत्येक प्रकाशित गजल रदीफ-सहित रहत, आ रदीफ मतला तथा बादक सम्बद्ध मिसरासभमे अक्षरशः एक्के रूपमे दोहराएत।

३. University of Michigan : समान बहर, पाँच वा बेसी स्वतंत्र शेर

University of Michiganक ASIAN 226 “Writing a Ghazal” निर्देश गजलकेँ अत्यन्त अनुशासित काव्य-रूप मानैत अछि। ओ एक्के बहर/मीटर पर जोर दैत अछि; छपल पाँतिक शब्द-संख्या अथवा आँखिसँ देखाइत लम्बाइ समान होनाइ अनिवार्य नहि, वास्तविक मात्रिक लम्बाइ आ वजन-क्रम समान होनाइ अनिवार्य अछि। पहिल दू पाँतिमे तुक-संरचना स्थापित होइत अछि आ तकर बाद प्रत्येक दोसर पाँतिमे वएह काफिया-रदीफक जमीन लौटैत अछि। निर्देश कम-सँ-कम पाँच शेरक अभ्यासक अपेक्षा करैत अछि आ प्रत्येक शेरकेँ विषयगत रूपसँ स्वतंत्र मानैत अछि। एहि स्वतंत्रताक अर्थ ई जे एक शेर प्रेम पर, दोसर जीवन-दर्शन पर, तेसर सामाजिक विडम्बना पर भऽ सकैत अछि; प्रत्येक शेर अपन बलपर पूर्ण कथन बनि सकए।

४. तीनू स्रोतक साझा औपचारिक केन्द्र

- कम-सँ-कम पाँच शेर; अर्थात् न्यूनतम दस मिसरा।
- सभ मिसरामे एक्के बहर—केवल समान कुल मात्रा नहि, बल्कि समान सत्यापित ह्रस्व-दीर्घ/वजन-क्रम।
- मतलाक दुनू मिसरामे काफिया + रदीफ; बादक प्रत्येक शेरक दोसर मिसरामे वएह काफिया + रदीफ।
- काफिया वास्तविक तुक-परिवार हो; केवल अन्तिम अक्षर समान देखाइत होनाइ पर्याप्त नहि।
- रदीफ जँ राखल गेल अछि तँ शब्द वा शब्द-समूह अक्षरशः एक्के रहए। एहि संग्रहमे रदीफ अनिवार्य सम्पादकीय नियम अछि।
- प्रत्येक शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक हो; एक शेरक कथ्य दोसर शेरक वाक्य पूरा करबाक लेल आवश्यक नहि। मतला पहिने रहत, मुदा बादक स्वतंत्र शेरसभक क्रम बदललासँ मूल अर्थ-संरचना नहि टूटबाक चाही। लगातार कथात्मक कविता कें केवल दू-दू पाँतिमे काटि देलासँ गजल नहि बनैत।
- मक्ता/तखल्लुस उपयोगी परम्परा अछि, मुदा एहि संग्रहमे गजल होएबाक अनिवार्य न्यूनतम शर्त नहि।

५. विदेहक प्रकाशन-विधान

दीवान-ए-विदेह खण्ड-२ मे “गजल” शब्द केवल ओहि रचनाक लेल प्रयुक्त होयत जाहिमे उपर्युक्त औपचारिक शर्त सभ वास्तविक पाठपर जाँचल गेल हो। कोनो घोषित मात्रा-संख्या, यति वा कल-क्रम केवल शीर्षकीय सूचना नहि; ओ रचनाक सत्यापित छन्द-विवरण होयत। जँ कोनो मिसरा बहरसँ बाहर अछि तँ ओकर मरम्मत कएल जाएत; मरम्मतसँ अर्थ, भाषा वा काव्यगुण नष्ट होइत हो तँ ओ रचना गजल-संग्रहमे नहि राखल जाएत। पारम्परिक

अरूज़ी बहरक नाम निश्चित रूपेँ सिद्ध नहि रहने झूठ नाम नहि देल जाएत; वास्तविक उच्चारणाधारित वजन-क्रम साफ लिखल जाएत।

सन्दर्भ

Rekhta Foundation: “Forms of Urdu Poetry”; “Ghazal: Its Definition and Elements.” · Pritchett, Frances W., and A. Sean Pue: “Digital Urdu Ghazal Reader: Introduction — About the Ghazal,” Columbia University. · University of Michigan: “ASIAN 226: Poetries of Asia — Assignment 4: Writing a Ghazal.” · अभिगमन: ११ सितम्बर २०२६।

छन्द-विधान

मात्रा-क्रम, कल-क्रम आ यति निर्धारणक पद्धति

दीवान-ए-विदेहमे प्रयुक्त उच्चारणाधारित छन्द-जाँच

१. मूल सिद्धान्त

एहि संग्रहमे मात्रा अक्षरक संख्या नहि, उच्चारित वर्णांशक काल-भार अछि। प्रत्येक मिसरा पहिने स्वाभाविक मैथिली उच्चारणमे पढ़ल जाइत अछि; तकर बाद उच्चारित वर्णांशकेँ लघु वा गुरु रूपमे चिन्हित कऽ वजन-क्रम बनाओल जाइत अछि। कुल मात्रा ओहि क्रमक योग मात्र अछि। तेँ “१८ मात्रा” वा “२८ मात्रा” लिखनाइ छन्द-जाँचक पहिल सूचना अछि, अन्तिम प्रमाण नहि। एक्के बहरक दू मिसरा छपल रूपमे शब्द-संख्या वा दृश्य लम्बाइमे भिन्न देखाइ सकैत अछि; निर्णायक ई अछि जे उच्चारणगत पूरा वजन-क्रम एक्के अछि।

२. लघु, गुरु आ उच्चारण

सामान्य कार्यपद्धतिमे ह्रस्व खुलल वर्णांशकेँ १ आ दीर्घ वा बन्द/भारयुक्त वर्णांशकेँ २ मानल जाइत अछि। मुदा देवनागरी अक्षर देखिकऽ यांत्रिक जोड़ नहि कएल जाएत। शब्दक वास्तविक मैथिली उच्चारण निर्णायक अछि। अन्तिम व्यञ्जन, संयुक्ताक्षर, नासिक्यता, अवग्रह-युक्त संकुचित रूप, आ शब्दान्तक अन्तर्निहित स्वर—सभकेँ उच्चारण अनुसार देखल जाएत। एक्के शब्दकेँ केवल गणना मिलाबय लेल कृत्रिम रूपेँ छोट वा पैघ उच्चारित नहि कएल जाएत।

३. मात्रा-क्रम : योग, प्रमाण नहि

“मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा”क अर्थ ई अछि जे प्रत्येक मिसराक उच्चारण-भारक योग १८ अछि। मुदा दू मिसरा दुनू १८ मात्रा होइतहुँ एक्के बहरमे नहियो भऽ सकैत अछि। उदाहरणतः २+२+२+२ | २+२+२+२+२ आ १+१+२+२+२ | २+२+२+२+२+२ दुनू एकहि कुलक लग पहुँचि सकैत अछि, मुदा पहिल अर्धक चाल भिन्न अछि। तेँ कुल योग मिललाक बाद पूरा लघु-गुरु/वजन-क्रम मिलान अनिवार्य अछि।

४. कल-क्रम : एहि पोथीक सत्यापन-लिपि

एहि पोथीमे “कल-क्रम” शब्दक प्रयोग मिसराक वास्तविक आन्तरिक वजन-विन्यास देखेबाक लेल कएल गेल अछि। ई पारम्परिक अरूज़ी बहरक नामक विकल्प नहि, बल्कि पारदर्शी जाँच-लिपि अछि। उदाहरणतः गजल ५९२ मे सत्यापित क्रम २+२+२+२ | २+२+२+२+२ अछि। एहि लिखावटसँ पाठक देख सकैत छथि जे पहिल ८ मात्रा चारि गुरु इकाइमे, आ दोसर १० मात्रा पाँच गुरु इकाइमे चलैत अछि। जँ सभ मिसरामे ठीक ई क्रम पुनरावृत्त नहि हो तँ “कल-विन्यास समान” लिखब निषिद्ध अछि।

५. यति : अर्थ आ लयक स्वाभाविक विराम

यति मिसराक भीतर मुख्य लय-विराम अछि। यति केवल आधा-आधा मात्रा बाँटबाक गणित नहि। विराम एहन ठाम होयत जतए उच्चारण, अर्थ आ गायन तीनू स्वाभाविक रूपेँ ठहरि सकए। काफिया-रदीफ, परसर्गयुक्त पद वा घनिष्ठ कर्ता-क्रिया सम्बन्धकेँ केवल संख्या पूरा करबाक लेल बीचमे नहि काटल जाएत। एक गजलक सभ मिसरामे मुख्य यति एक्के लय-स्थानपर टिकबाक चाही।

६. काफिया-रदीफ आ वजन

काफिया आ रदीफ छन्दसँ बाहरक सजावट नहि; ओ मिसराक वजनक हिस्सा अछि। अलग काफिया शब्दक उच्चारण-भार बदलैत हो तँ पूर्ववर्ती शब्द-विन्यास एहन समायोजित कएल जाए जे पूरा मिसरा फेर ओही बहरमे आबि जाए। रदीफक उच्चारण प्रत्येक सम्बद्ध मिसरामे एक्के रहबाक चाही। एहि कारण तुक ठीक होइतहुँ मिसरा बहरसँ बाहर जा सकैत अछि, आ बहर ठीक होइतहुँ गलत काफिया गजलकेँ औपचारिक रूपेँ दोषपूर्ण बना सकैत अछि।

७. पूर्ण मिसराक सत्यापनक उदाहरण

गजल ५९२क पहिल मिसरा: “भोर रौद गाम बीच / मोन नीक मान राखू”। स्वीकृत पाठ-उच्चारण अनुसार पहिल खण्ड २+२+२+२ = ८, दोसर खण्ड २+२+२+२+२ = १०; कुल १८ मात्रा, यति ८+१०। गजल ५९२क शेष सभ मिसरा सेहो ठीक ओही २+२+२+२ | २+२+२+२+२ क्रममे सत्यापित होइत अछि। एही कारण ओ गजलमे “१८ मात्रा” सूचना मात्र नहि, पूरा बहरक प्रमाणित वजन-विन्यासक संग देल गेल अछि।

८. अन्तिम छन्द-जाँच

- पहिने मिसरा-संख्या गनू: न्यूनतम पाँच शेर अर्थात् दस मिसरा।
- प्रत्येक मिसराक स्वाभाविक उच्चारण-सिलसिला चिन्हित करू।
- प्रत्येक वर्णांशक वजन लिखि पूरा क्रम बनाउ।
- कुल मात्रा मिलाउ, मुदा केवल कुल योगपर निर्णय नहि करू।
- सभ मिसरामे पूरा वजन-क्रम अक्षरशः/समतुल्य मात्रिक रूपेँ मेल खाइत अछि कि नहि, जाँचू।
- मुख्य यति सभ मिसरामे एक्के लय-स्थानपर अछि कि नहि, जाँचू।
- मतला, काफिया, रदीफ आ बादक सानी-मिसरासभक अन्त्य-विन्यास अलग सँ जाँचू।
- छन्द-जाँच पाँतिमे वास्तविक परिणाम लिखू; पूर्वनिर्धारित यांत्रिक साँचा नहि। एक्के शब्दरूपक उच्चारण-वजन पूरा पोथीमे स्थिर रहत; कोनो खास मिसरा मिलाबय लेल ओकर वजन बदलल नहि जाएत।

एहि पद्धतिक उद्देश्य कविता पर यांत्रिक बन्धन थोपब नहि, बल्कि भाषा, उच्चारण, गेयता आ गजलक औपचारिक अनुशासनकेँ एक ठाम सत्यापनीय बनायब अछि। अर्थ आ स्वाभाविक मैथिली बचल रहए, तखनहि छन्द-सुधार स्वीकार्य अछि।

संक्षिप्त सूत्र

मात्रा-क्रम = उच्चारण-भारक कुल योग। कल-क्रम = पूरा सत्यापित आन्तरिक वजन-विन्यास। यति = अर्थ-संगत मुख्य लय-विराम। बहर = सभ मिसरामे एक्के मात्रिक/वजन-साँचा।

सन्दर्भ

स्रोत: रेख्ता; Columbia Universityक Digital Urdu Ghazal Reader; University of Michiganक ASIAN 226 गजल-लेखन निर्देश—विवरण पहिल लेख सन्दर्भ-सूचीमे।

पद्य केँ गजल कहल जाएबाक न्यूनतम औपचारिक योग्यता

प्रस्तावना

हरेक तुकान्त पद्य गजल नहि होइत अछि। दू-दू पाँतिक खण्ड, विरहक भाव, रदीफ-जकाँ दोहराव अथवा गेयता—एहि मे सँ कोनो एक गुण अपने-आप रचनाकेँ गजल नहि बनबैत अछि। गजल नाम देबाक लेल किछु न्यूनतम औपचारिक शर्त एक संग पूरा होयब जरूरी अछि। एहि लेखमे ओहि न्यूनतम शर्तकेँ स्पष्ट स्वीकृति-अस्वीकृति कसौटी रूपमे रखल गेल अछि, जाहिसँ पद्य, गीत, नज्म आ गजल बीचक भेद अस्पष्ट नहि रहए।

१. न्यूनतम पाँच शेर

गजलमे कम-सँ-कम पाँच शेर रहबाक चाही। एक शेर दू मिसरासँ बनैत अछि; तेँ न्यूनतम दस मिसरा आवश्यक भेल। तीन वा चारि शेरक सुन्दर रचना शेर-संग्रह, कतआ, गीतांश वा आन पद्य-रूप हो सकैत अछि, मुदा एहि संग्रहमे ओकरा गजल नहि कहल जाएत। शेरक संख्या विषम होनाइ परम्परागत रूपेँ प्रिय भऽ सकैत अछि, मुदा न्यूनतम योग्यता लेल पाँच वा बेसी शेर मुख्य कसौटी अछि।

२. प्रत्येक शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक

गजलक प्रत्येक शेर अपन बलपर अर्थपूर्ण कथन बनि सकए। अगिला शेर बुझबाक लेल पिछला शेरक वाक्य पूरा होएबाक प्रतीक्षा अनिवार्य नहि हो। सम्पूर्ण रचना एक भाव-जगत साझा कऽ सकैत अछि, मुदा ई आवश्यक नहि; एक शेर प्रेम, दोसर समाज, तेसर मृत्यु-बोध वा आत्मचिन्तन पर भऽ सकैत अछि। मतला पहिने रहत; तकर बाद स्वतंत्र शेरसभक क्रम बदललासँ जँ कथ्य भाँगि जाए तँ रचना गजल-सुलभ स्वतंत्रता प्राप्त नहि कएलक।

३. एक्के बहर : समान वजन-क्रम

गजलक सभ मिसरा एक्के बहरमे होयत। “एक्के बहर”क अर्थ केवल एतेक नहि जे सभ मिसराक कुल मात्रा बराबर अछि। प्रत्येक मिसरामे ह्रस्व-दीर्घ वर्णांश अथवा तदनुरूप लघु-गुरु/वजनक क्रम समान होयब जरूरी अछि। छपल पाँतिक शब्द-संख्या, अक्षर-संख्या वा दृश्य लम्बाइ अलग भऽ सकैत अछि; मात्रिक लम्बाइ आ आन्तरिक चाल समान रहत। एहि संग्रहमे वास्तविक कल-क्रम लिखल जाएत जाहिसँ बहरक समानता देखल जा सकए।

४. मतला : दुनू मिसरामे काफिया + रदीफ

पहिल शेर मतला अछि। मतलाक पहिल आ दोसर दुनू मिसरामे एक्के काफिया-परिवारक शब्द रदीफसँ ठीक पहिने आबि, तकर बाद एक्के रदीफ दोहराएत। मतला गजलक जमीन श्रोताकेँ तुरन्त चिन्हबैत अछि। जँ पहिल मिसरासँ ई संरचना गायब अछि तँ एहि संग्रहक नियम अनुसार गजल अपूर्ण मानल जाएत।

५. बादक शेर : दोसर मिसरामे वएह जमीन

मतलाक बाद प्रत्येक शेरक दोसर मिसरामे वएह काफिया-परिवार + वएह रदीफ रहत। पहिल मिसरा स्वतंत्र रहि सकैत अछि। काफिया केवल लिखित अन्तिम अक्षरक समानता नहि; श्रुतिगत तुक-साम्य वास्तविक होयब चाही। रदीफ शब्द वा शब्द-समूह जेकाँ निर्धारित भेल, ओकर रूप बदलल नहि जाएत।

६. रदीफ सम्बन्धी एहि संग्रहक निर्णय

व्यापक उर्दू परम्पराक किछु शास्त्रीय विवरण रदीफकेँ वैकल्पिक मानैत अछि। मुदा दीवान-ए-विदेह खण्ड-२ लेल सम्पादकीय नियम आरो कठोर अछि: प्रत्येक गजल रदीफ-सहित रहत। एहि निर्णयसँ काफिया-रदीफक जाँच स्पष्ट रहैत अछि आ संगीतमय प्रस्तुति लेल रदीफक दोहराव-संरचना सेहो स्थिर रहैत अछि।

७. मक्ता, तखल्लुस आ शीर्षक

मक्ता गजलक अन्तिम अथवा अन्तक निकट शेर हो सकैत अछि जाहिमे कविक तखल्लुस अबैत अछि। ई प्रतिष्ठित परम्परा अछि, मुदा न्यूनतम औपचारिक योग्यता लेल अनिवार्य नहि। University of Michiganक शिक्षण-अभ्यास तखल्लुसक प्रयोग करबैत अछि, जबकि Rekhta आ Columbiaक व्यापक विवरण एकरा विशेष/प्रचलित तत्त्व रूपमे देखबैत अछि। एहि संग्रहमे तखल्लुस वैकल्पिक रहत। पारम्परिक गजल बहुधा शीर्षकविहीन होइत अछि; एहि पोथीमे देल शीर्षक केवल पाठ-सुविधा आ अनुक्रमणक लेल अछि, ओ गजलक औपचारिक संरचनाक अंग नहि।

८. छन्द-जाँचक प्रकाशन-द्वार

रचनाक नीचाँ देल “छन्द-जाँच” सजावटी घोषणा नहि। ओहि पाँतिमे वास्तविक मिसरा-संख्या, वास्तविक मात्रा, वास्तविक कल-विन्यास आ वास्तविक यति दर्ज होयत। जँ घोषित विवरण पाठसँ मेल नहि खाइत अछि तँ रचना प्रकाशन योग्य नहि। पहिले मिसरा मरम्मत कएल जाएत; जँ मरम्मत काव्यगुण वा स्वाभाविक मैथिली बिगाड़ैत अछि तँ रचना हटाओल जाएत।

९. न्यूनतम योग्यता : एक पाँतिक निर्णय-सूत्र

कम-सँ-कम पाँच स्वतंत्र शेर + सभ मिसरामे एक्के सत्यापित बहर/वजन-क्रम + मतलाक दुनू मिसरामे काफिया-रदीफ + बादक प्रत्येक शेरक दोसर मिसरामे वएह काफिया-रदीफ + वास्तविक तुक-साम्य + अक्षरशः स्थिर रदीफ = एहि संग्रहमे “गजल”।

१०. जे गुण सभ अपने-आप गजल नहि बनबैत अछि

- केवल विरह, प्रेम, दर्शन वा उदासी विषय।
- केवल तुकान्त अन्त।
- केवल समान कुल मात्रा।
- केवल रदीफ-जकाँ दोहराव, जँ काफिया आ बहर नियम पूरा नहि।
- केवल दू-दू पाँतिक खण्ड, जँ शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक नहि।
- केवल गायनयोग्यता वा संगीतबद्ध होनाइ।

एहि न्यूनतम कसौटीक उद्देश्य गजलकेँ संकीर्ण करब नहि, बल्कि ओकर रूपगत पहचान सुरक्षित रखब अछि। रूप प्रमाणित भेला बाद विषय, बिंब, भाषा, विडम्बना, उलटवासी, विरह, दर्शन आ आधुनिक संगीत—सभ क्षेत्र कविक लेल खुलल रहैत अछि।

सन्दर्भ

Rekhta Foundation: “Forms of Urdu Poetry”; “Ghazal: Its Definition and Elements”; Taqti Project. · Pritchett, Frances W., and A. Sean Pue: “Digital Urdu Ghazal Reader: Introduction — About the Ghazal,” Columbia University. · University of Michigan: “ASIAN 226: Poetries of Asia — Assignment 4: Writing a Ghazal.” · अभिगमन: ११ सितम्बर २०२६।

गजल ५९२ — साँचक मान

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: ८+१०

काफिया: (मान, ज्ञान, ध्यान, गान, प्राण, दान) · रदीफ: राखू

भोर रौद गाम बीच / मोन नीक मान राखू
साँच बोल नीक काज / संग मोन ज्ञान राखू

दिन बीत फेर भोर / जाग मोन काज देखू
थाक मोन फेर जाग / काज संग ध्यान राखू

दुख सुख संग दिन / बीत मोन गीत गाबू
नेह बोल मीत संग / मोन मीठ गान राखू

मेह बाद गाम बीच / गाछ फूल रंग देखू
मेह बाद गाम बीच / मोन नीक प्राण राखू

झूठ तज साँच संग / लोक नीक काज देखू
नीक काज मीत संग / मोन नेह दान राखू

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = १८ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति ८+१०

गजल ५९२ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो/हारमोनियम, सारंगी, हलुक तबला, मन्द बास

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) कैँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ५९३ — ओकर नाम नोर छल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: ८+१०

काफिया: (नोर, भोर, जोर, डोर, घोर, चोर) · रदीफ: छल

रात चान मौन बीच / ओकर नाम नोर छल
नोर धार मोन बीच / मोनक आस भोर छल

भोर धूप दूर गेल / मोन फेर बड्ड सून्न भेल
नेह टूट मोन बीच / मोनक दुख जोर छल

दिन बीत रात आय / व्याकुल मोन फेर भेल
नाम जप रात बीच / ओकर नेह डोर छल

चान ढल भोर आय / मोन नोर फेर थाम नै
मोन थाक रात बीत / मोनक रात घोर छल

भोर आय रौद फूट / मोनक घाव फेर जाग
रौद बीच मोन मौन / ओकर प्रेम चोर छल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = १८ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति ८+१०

गजल ५९३ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६४ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, एकूस्टिक गिटार, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) कैँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ५९४ — मोन बीच रात रहल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+२ · यति: ८+९

काफिया: (हार, पार, धार, भार, सार, तार) · रदीफ: रहल

रात नोर मोन बीच / नेह टूट हार रहल
साँझ चान छाह बीच / मीत दूर पार रहल

दूर मीत मोन बीच / नेह डोर टूट चलल
मौन रात मोन बीच / नेह संग धार रहल

भोर रौद गाम बीच / मीत बिन मोन जलल
मीत दूर नेह टूट / मोन बीच भार रहल

साँझ चान छाह बीच / नोर धार गाल भरल
नेह डोर हाथ छूट / नेहक सार रहल

रात मौन घर बीच / नाम मीत मोन कहत
मोन हार नोर शेष / नेह बीच तार रहल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = १७ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+१+२ · **यति** ८+९

गजल ५९४ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५६–६० BPM · ताल: मुक्त आलाप सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द पैड, तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ५९५ — मीत मोन प्राण छल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+२ · यति: ८+८

काफिया: (प्राण, मान, ध्यान, गान, दान, ज्ञान) · रदीफ: छल

रात मौन मोन रोय / मीत मोन प्राण छल
भोर रौद घर जाग / मीत नेह मान छल

साँझ चान छाह ढल / मोन मौन रात भेल
नाम मीत मोन जाग / मीत मोन ध्यान छल

दिन बीत रात आय / मोन थाक मौन भेल
मीत दूर बाट मौन / नेह मोन गान छल

चान ढल रात बीत / नोर सूख घाव जाग
मीत नाम मोन काट / नेह मीत दान छल

भोर आय रौद फूट / घाव मोन फेर जाग
नेह टूट मोन सीख / दुख देल ज्ञान छल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = १६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+२ · यति ८+८

गजल ५९५ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६२–६६ BPM · ताल: धीमा कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, गिटार, सारंगी, ब्रश पर्कशन

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) कैँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ५९६ — नेहक अन्तिम छोर

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+२ · यति: ८+९

काफिया: (नोर, भोर, जोर, डोर, घोर, चोर, ठोर, छोर) · रदीफ: रहल

रात मौन मोन रोय / नेह बीच नोर रहल
भोर रौद घर जाग / मोन संग भोर रहल

दिन बीत देह थाक / नाम मीत संग बचल
मीत दूर घर मौन / नाम देत जोर रहल

सुख दु:ख एक धार / लोक पार फेर चलल
नेह देल घाव एक / प्राण संग डोर रहल

चान ढल रात बीत / नोर सूख घाव बचल
नाम मौन मोन बीच / रात मोन घोर रहल

मीत गेल नेह रह / देह चल दिन घटल
लोक पूछ मीत कोन / नेह मोन चोर रहल

काल बीत नाम एक / दीप मोन बीच जरल
घाव देल नेह फेर / नाम मीत ठोर रहल

काल पास दिन घट / साँस नित थाक चलल
नेह शेष साँच एक / प्रेम बाट छोर रहल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १४/१४ मिसरा = १७ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+१+२ · **यति** ८+९

गजल ५९६ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो/हारमोनियम, सारंगी, हलुक तबला, मन्द बास

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

शेर ४: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ५: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

शेर ६: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) कैँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ५९७ — अहाँ बिनु रहल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+१+२+२+२+२ | २+१+२+१+१+१+२ · यति: ११+१०

काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, जोर, ठोर, सोर, ओर) · रदीफ: अहाँ बिनु रहल

ओहि दिन नेह टूटल / नोर अहाँ बिनु रहल
राति चान ढल आयल / भोर अहाँ बिनु रहल

ओहि बाट मीत छूटल / घाव हमर नहि भरल
राति नोर धार सूखल / डोर अहाँ बिनु रहल

आँखि नोर फेर सूखल / नोर हमर नहि थमल
पानि धार फेर सूखल / छोर अहाँ बिनु रहल

ओहि साँझ चान डूबल / गीत हमर नहि बजल
राति मोन फेर थाकल / जोर अहाँ बिनु रहल

आँखि नोर फेर जागल / नाम हमर नहि मिटल
ओहि घर नेह छूटल / ठोर अहाँ बिनु रहल

राति साँस फेर थाकल / साँस हमर नहि थमल
आँखि नाम फेर जागल / सोर अहाँ बिनु रहल

ओहि भोर घाव जागल / राग हमर नहि बजल
ओहि रात नेह जागल / ओर अहाँ बिनु रहल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १४/१४ मिसरा = २१ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+१+२+२+२+२ | २+१+२+१+१+१+२ · यति ११+१०

गजल ५९७ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६४ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, एकूस्टिक गिटार, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

शेर ४: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ५: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

शेर ६: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ५९८ — जे मोनसँ नै गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+१+२+२ · यति: ८+९

काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, जोर, सोर, ठोर, कोर) · रदीफ: मोनसँ नै गेल

रात ढल चान म्लान / नोर मोनसँ नै गेल
भोर फूट रौद जाग / भोर मोनसँ नै गेल

दिन बीत देह थाक / नेह मोनसँ नै टूट
मीत गेल घर सून्न / डोर मोनसँ नै गेल

साँझ आय दीप म्लान / आस मोनसँ नै सूत
रात घोर निन्न दूर / छोर मोनसँ नै गेल

लोक पूछ नेह की / मौन मोनसँ नै टूट
देह थाक काल पास / जोर मोनसँ नै गेल

काल बीत रूप ढल / नाम मोनसँ नै टूट
मीत दूर लोक पास / सोर मोनसँ नै गेल

घाव सूख दाग रह / नेह मोनसँ नै टूट
चान ढल रात बीत / ठोर मोनसँ नै गेल

काल आय दिन घट / नाम मोनसँ नै टूट
देह जाय नेह रह / कोर मोनसँ नै गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १४/१४ मिसरा = १७ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+१+२+२ · यति ८+९

गजल ५९८ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५६–६० BPM · ताल: मुक्त आलाप सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द पैड, तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

शेर ४: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ५: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

शेर ६: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ५९९ — अहाँ मोनमे रहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+१+२+२+२+१+१+२ · यति: १०+१३

काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, घोर, ठोर) · रदीफ: अहाँ मोनमे रहि गेल

रात चान ढल नाम मीत / नोर अहाँ मोनमे रहि गेल
भोर रौद उठ गाम जाग / भोर अहाँ मोनमे रहि गेल

दिन बीत देह थाक मौन / नेह हमर मोनमे रहि गेल
नेह टूट घाव जाग फेर / डोर अहाँ मोनमे रहि गेल

साँझ चान पात झर मौन / नाम हमर मोनमे रहि गेल
काल चुप दिन घट फेर / छोर अहाँ मोनमे रहि गेल

लोक आय लोक गेल दूर / दाग हमर मोनमे रहि गेल
निन्न दूर रात मौन भेल / घोर अहाँ मोनमे रहि गेल

देह थाक दिन घट साँस / घाव हमर मोनमे रहि गेल
चान ढल रात बीत मौन / ठोर अहाँ मोनमे रहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+१+२+२+२+१+१+२ · यति १०+१३

गजल ५९९ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६२–६६ BPM · ताल: धीमा कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, गिटार, सारंगी, ब्रश पर्कशन

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६०० — जे नोर मोनमे जागल अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यति: १०+१२

काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफ: मोनमे जागल अछि

रात चान मौन घर बीच / नोर मोनमे जागल अछि
भोर रौद गाम बाट दूर / भोर मोनमे जागल अछि

दिन बीत देह थाक मौन / घाव मोनमे जागल अछि
नेह टूट मोन रात घोर / डोर मोनमे जागल अछि

साँझ चान पात झर मौन / नाम मोनमे जागल अछि
काल चुप दिन घट फेर / छोर मोनमे जागल अछि

लोक आय लोक गेल दूर / दुख मोनमे जागल अछि
निन्न दूर रात मौन भेल / सोर मोनमे जागल अछि

देह थाक दिन घट साँस / मौन मोनमे जागल अछि
चान ढल रात बीत मौन / नोर मोनमे जागल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यति १०+१२

गजल ६०० — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो/हारमोनियम, सारंगी, हलुक तबला, मन्द बास

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६०१ — जे हमर संग रहैत अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+१+२+२+१+२+१+१ · यति: १०+१२

काफिया: (नोर, डोर, सोर, भोर, छोर, ठोर) · रदीफ: हमर संग रहैत अछि

रात चान मौन घर बीच / नोर हमर संग रहैत अछि
भोर रौद गाम बाट दूर / डोर हमर संग रहैत अछि

दिन बीत देह थाक मौन / घाव हमर संग रहैत अछि
नेह टूट मोन रात घोर / सोर हमर संग रहैत अछि

साँझ चान पात झर मौन / नाम हमर संग रहैत अछि
काल चुप दिन घट फेर / भोर हमर संग रहैत अछि

लोक आय लोक गेल दूर / नेह हमर संग रहैत अछि
निन्न दूर रात मौन भेल / छोर हमर संग रहैत अछि

देह थाक दिन घट साँस / घाव हमर संग रहैत अछि
चान ढल रात बीत मौन / ठोर हमर संग रहैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+१+२+२+१+२+१+१ · यति १०+१२

गजल ६०१ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६४ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, एकूस्टिक गिटार, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६०२ — ओ नोर हमरा मोन पड़ैए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२ | २+२+२+१+२+२ · यति: ४+११

काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, ठोर, सोर, कोर) · रदीफ: हमरा मोन पड़ैए

ओ नोर / हमरा मोन पड़ैए
ओ भोर / हमरा मोन पड़ैए

ई नेह / हमरा बड्ड रुवैए
ओ डोर / हमरा मोन पड़ैए

ई निन्न / हमरा नै अबैए
ओ छोर / हमरा मोन पड़ैए

ई मौन / हमरा बड्ड दुखैए
ओ ठोर / हमरा मोन पड़ैए

ई देह / हमरा नित थकैए
ओ सोर / हमरा मोन पड़ैए

ई साँझ / हमरा बड्ड रुवैए
ओ कोर / हमरा मोन पड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १५ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२ | २+२+२+१+२+२ · यति ४+११

गजल ६०२ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५६–६० BPM · ताल: मुक्त आलाप सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द पैड, तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

शेर ४: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ५: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) कैँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६०३ — ओ भोर हमरा मोन पड़ैए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+१+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+२+२ · यति: ११+१३

काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर) · रदीफ: हमरा मोन पड़ैए

आइ साँझ बड्ड गुम्म अछि / नोर हमरा मोन पड़ैए
ओहि रातिक गप अछि / भोर हमरा मोन पड़ैए

आँखिमे बड्ड नोर अछि / नेह हमरा संग रहैए
आइ मोन बड्ड सोर अछि / डोर हमरा मोन पड़ैए

आइ भोर बड्ड दूर अछि / नाम हमरा संग रहैए
ओहि साँझक गप अछि / छोर हमरा मोन पड़ैए

आँखिमे निन्न दूर अछि / घाव हमरा संग रहैए
राति मोन बड्ड मौन अछि / सोर हमरा मोन पड़ैए

आइ साँझ बड्ड दूर अछि / मौन हमरा संग रहैए
ओहि भोरक गप अछि / ठोर हमरा मोन पड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+१+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+२+२ · यति ११+१३

गजल ६०३ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६२–६६ BPM · ताल: धीमा कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, गिटार, सारंगी, ब्रश पर्कशन

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) कैँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६०४ — प्रीत हमरा भीतर अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यति: १०+१२

काफिया: (मीत, प्रीत, गीत, रीत) · रदीफ: हमरा भीतर अछि

रात चान मौन घर बीच / मीत हमरा भीतर अछि
भोर रौद गाम बाट दूर / प्रीत हमरा भीतर अछि

दिन बीत देह थाक मौन / निन्न दूर रात बड्ड घोर अछि
नेह टूट मोन रात घोर / गीत हमरा भीतर अछि

साँझ चान पात झर मौन / मीत दूर घर बड्ड सून्न अछि
काल चुप दिन घट फेर / रीत हमरा भीतर अछि

लोक आय लोक गेल दूर / भोर दूर मोन बड्ड मौन अछि
निन्न दूर रात मौन भेल / मीत हमरा भीतर अछि

देह थाक दिन घट साँस / नोर बीच मोन बड्ड मौन अछि
चान ढल रात बीत मौन / प्रीत हमरा भीतर अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यति १०+१२

गजल ६०४ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो/हारमोनियम, सारंगी, हलुक तबला, मन्द बास

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६०५ — दाग मोनसँ नहि जाइए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+१+२+२+२+१+१ | २+२+१+१+१+२+१+२ · यति: ११+१२

काफिया: (दाग, आग, राग) · रदीफ: मोनसँ नहि जाइए

आइ साँझ बड्ड गुम्म अछि / दाग मोनसँ नहि जाइए
ओहि रातिक गप अछि / आग मोनसँ नहि जाइए

आँखिमे बड्ड नोर अछि / नेह मोनसँ नहि जाइए
आइ मोन बड्ड सोर अछि / राग मोनसँ नहि जाइए

आइ भोर बड्ड दूर अछि / नाम मोनसँ नहि जाइए
ओहि साँझक गप अछि / दाग मोनसँ नहि जाइए

आँखिमे निन्न दूर अछि / घाव मोनसँ नहि जाइए
राति मोन बड्ड मौन अछि / आग मोनसँ नहि जाइए

आइ साँझ बड्ड दूर अछि / मौन मोनसँ नहि जाइए
ओहि भोरक गप अछि / राग मोनसँ नहि जाइए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+१+२+२+२+१+१ | २+२+१+१+१+२+१+२ · यति ११+१२

गजल ६०५ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६४ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, एकूस्टिक गिटार, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६०६ — मीत फेर नहि भेटल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+१+१+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: (मीत, गीत, प्रीत, रीत) · रदीफ: फेर नहि भेटल

रात चान मौन घर बीच / मीत फेर नहि भेटल
भोर रौद गाम बाट दूर / गीत फेर नहि भेटल

दिन बीत देह थाक मौन / नेह फेर नहि भेटल
नेह टूट मोन रात घोर / प्रीत फेर नहि भेटल

साँझ चान पात झर मौन / निन्न फेर नहि भेटल
काल चुप दिन घट फेर / रीत फेर नहि भेटल

लोक आय लोक गेल दूर / नाम फेर नहि भेटल
निन्न दूर रात मौन भेल / मीत फेर नहि भेटल

देह थाक दिन घट साँस / घाव फेर नहि भेटल
चान ढल रात बीत मौन / गीत फेर नहि भेटल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+१+१+२+२ · यति १०+१०

गजल ६०६ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५६–६० BPM · ताल: मुक्त आलाप सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द पैड, तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६०७ — नोर मोनमे बसल अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति: १०+११

काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर) · रदीफ: मोनमे बसल अछि

रात चान मौन घर बीच / नोर मोनमे बसल अछि
भोर रौद गाम बाट दूर / भोर मोनमे बसल अछि

दिन बीत देह थाक मौन / नेह मोनमे बसल अछि
नेह टूट मोन रात घोर / डोर मोनमे बसल अछि

साँझ चान पात झर मौन / नाम मोनमे बसल अछि
काल चुप दिन घट फेर / छोर मोनमे बसल अछि

लोक आय लोक गेल दूर / घाव मोनमे बसल अछि
निन्न दूर रात मौन भेल / सोर मोनमे बसल अछि

देह थाक दिन घट साँस / मौन मोनमे बसल अछि
चान ढल रात बीत मौन / ठोर मोनमे बसल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २१ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति १०+११

गजल ६०७ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६२–६६ BPM · ताल: धीमा कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, गिटार, सारंगी, ब्रश पर्कशन

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६०८ — नोर अहाँ बिनु रहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+१+२+१+१+१+१+२ · यति: १०+११

काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर) · रदीफ: अहाँ बिनु रहि गेल

रात चान मौन घर बीच / नोर अहाँ बिनु रहि गेल
भोर रौद गाम बाट दूर / भोर अहाँ बिनु रहि गेल

दिन बीत देह थाक मौन / नेह अहाँ बिनु रहि गेल
नेह टूट मोन रात घोर / डोर अहाँ बिनु रहि गेल

साँझ चान पात झर मौन / नाम अहाँ बिनु रहि गेल
काल चुप दिन घट फेर / छोर अहाँ बिनु रहि गेल

लोक आय लोक गेल दूर / घाव अहाँ बिनु रहि गेल
निन्न दूर रात मौन भेल / सोर अहाँ बिनु रहि गेल

देह थाक दिन घट साँस / मौन अहाँ बिनु रहि गेल
चान ढल रात बीत मौन / ठोर अहाँ बिनु रहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २१ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+१+२+१+१+१+१+२ · यति १०+११

गजल ६०८ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो/हारमोनियम, सारंगी, हलुक तबला, मन्द बास

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६०९ — मीत मोनमे रहि जाइए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+१+१+२+१+२ · यति: १०+१३

काफिया: (मीत, गीत, प्रीत, रीत) · रदीफ: मोनमे रहि जाइए

रात चान मौन घर बीच / मीत मोनमे रहि जाइए
भोर रौद गाम बाट दूर / गीत मोनमे रहि जाइए

दिन बीत देह थाक मौन / नेह मोनमे रहि जाइए
नेह टूट मोन रात घोर / प्रीत मोनमे रहि जाइए

साँझ चान पात झर मौन / नाम मोनमे रहि जाइए
काल चुप दिन घट फेर / रीत मोनमे रहि जाइए

लोक आय लोक गेल दूर / घाव मोनमे रहि जाइए
निन्न दूर रात मौन भेल / मीत मोनमे रहि जाइए

देह थाक दिन घट साँस / मौन मोनमे रहि जाइए
चान ढल रात बीत मौन / गीत मोनमे रहि जाइए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+१+१+२+१+२ · यति १०+१३

गजल ६०९ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६४ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, एकूस्टिक गिटार, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) कैँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६१० — भूल मोनसँ नहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+१+१+१+२ · यति: १०+९

काफिया: (भूल, फूल, शूल, मूल) · रदीफ: मोनसँ नहि गेल

रात चान मौन घर बीच / भूल मोनसँ नहि गेल
भोर रौद गाम बाट दूर / फूल मोनसँ नहि गेल

दिन बीत देह थाक मौन / नेह मोनसँ नहि गेल
नेह टूट मोन रात घोर / शूल मोनसँ नहि गेल

साँझ चान पात झर मौन / नाम मोनसँ नहि गेल
काल चुप दिन घट फेर / मूल मोनसँ नहि गेल

लोक आय लोक गेल दूर / घाव मोनसँ नहि गेल
निन्न दूर रात मौन भेल / फूल मोनसँ नहि गेल

देह थाक दिन घट साँस / मौन मोनसँ नहि गेल
चान ढल रात बीत मौन / भूल मोनसँ नहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = १९ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+१+१+१+२ · यति १०+९

गजल ६१० — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५६–६० BPM · ताल: मुक्त आलाप सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द पैड, तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) कैँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६११ — नेह एखनो बचल अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति: १०+११

काफिया: (नेह, गेह, मेह, देह) · रदीफ: एखनो बचल अछि

रात चान मौन घर बीच / नेह एखनो बचल अछि
भोर रौद गाम बाट दूर / गेह एखनो बचल अछि

दिन बीत देह थाक मौन / नाम एखनो बचल अछि
नेह टूट मोन रात घोर / मेह एखनो बचल अछि

साँझ चान पात झर मौन / घाव एखनो बचल अछि
काल चुप दिन घट फेर / देह एखनो बचल अछि

लोक आय लोक गेल दूर / मौन एखनो बचल अछि
निन्न दूर रात मौन भेल / नेह एखनो बचल अछि

देह थाक दिन घट साँस / नोर एखनो बचल अछि
चान ढल रात बीत मौन / गेह एखनो बचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २१ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति १०+११

गजल ६११ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६२–६६ BPM · ताल: धीमा कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, गिटार, सारंगी, ब्रश पर्कशन

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) केँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६१२ — ओ ठोर फेरो मोन पड़ैए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+१+२+२ · यति: १०+१३

काफिया: (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर, ठोर) · रदीफ: फेरो मोन पड़ैए

रात चान मौन घर बीच / नोर फेरो मोन पड़ैए
भोर रौद गाम बाट दूर / भोर फेरो मोन पड़ैए

दिन बीत देह थाक मौन / नेह फेरो मोन पड़ैए
नेह टूट मोन रात घोर / डोर फेरो मोन पड़ैए

साँझ चान पात झर मौन / नाम फेरो मोन पड़ैए
काल चुप दिन घट फेर / छोर फेरो मोन पड़ैए

लोक आय लोक गेल दूर / घाव फेरो मोन पड़ैए
निन्न दूर रात मौन भेल / सोर फेरो मोन पड़ैए

देह थाक दिन घट साँस / मौन फेरो मोन पड़ैए
चान ढल रात बीत मौन / ठोर फेरो मोन पड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+१+२+२ · यति १०+१३

गजल ६१२ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो/हारमोनियम, सारंगी, हलुक तबला, मन्द बास

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर लगभग गप-जकाँ, ताल तुरन्त नहि।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूर्ण गाउ। दोसर मिसराक काफिया–रदीफ एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम शब्द पर हलुक मींड।

शेर २: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा बिना तान स्पष्ट गाउ; दोहराव नहि।

शेर ३: एतयसँ छोट वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) ४ मात्रा; फेर दोसर मिसरा एक बेर दोहराउ (repeat)।

शेर ४: यति पर सूक्ष्म विराम (pause); दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा, मुदा शब्द स्पष्ट।

अन्तिम शेर: तबला आधा करु (drop); पहिल मिसरा धीमे। दोसर मिसराक रदीफ दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: शब्द प्रधान; अत्यधिक तान नहि। मौन (silence) कैँ संगीतक हिस्सा मानि प्रत्येक शेरक बाद १–२ मात्रा खाली स्थान राखू।

गजल ६१३ — जे नोर हमरा छोड़ि नहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+१+२ · यति: १४+९

काफिया: –ोर (नोर, डोर, सोर) · रदीफ: छोड़ि नहि गेल

घर सून्न अछि नोर नहि थामल / नोर छोड़ि नहि गेल
मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / डोर छोड़ि नहि गेल

रात मौन अछि निन्न नहि आयल / नेह टूटि नहि गेल
चान दूर अछि नोर नहि थामल / सोर छोड़ि नहि गेल

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / निन्न आँखि नहि आय
गाम चुप अछि नोर नहि थामल / नोर छोड़ि नहि गेल

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / राग छूटि नहि गेल
बाट बंद अछि नेह नहि टूटल / डोर छोड़ि नहि गेल

लोक पास अछि मोन नहि मानल / नेह टूटि नहि गेल
साँझ चुप अछि नोर नहि थामल / सोर छोड़ि नहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+१+२ · यति १४+९

गजल ६१३ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५६–६० BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द हारमोनियम, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल मिसरा लगभग गप-जकाँ, ताल दोसर मिसरा पछाति धीरे प्रवेश करय।

मतला: १४-मात्रिक यति पर २ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) “डोर छोड़ि नहि गेल” एक बेर दोहराउ (repeat); दोसर बेर आवाज नीचा राखू।

शेर २: पहिल मिसरा बिना अलंकार सीधा गाउ; दोसर मिसरा बाद २ मात्रा मौन (silence)। तबला अत्यन्त हलुक रहय।

शेर ३: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) पछाति दोसर मिसराक “नोर छोड़ि नहि गेल” कैँ आधा स्वरमे फेर लिअ (repeat)।

शेर ४: सारंगी उत्तर-धुन (response phrase) दे; यति बाद स्वर थोड़ा खुलय, मुदा आवाजक तीव्रता नहि बढ़य।

अन्तिम शेर: ताल आधा करु (drop)। “सोर छोड़ि नहि गेल” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: दबा नोर आ निन्नहीन रातिक स्वर; आवाज निकट आ संयत। अत्यधिक तान नहि; मींड छोट, शब्द स्पष्ट, आ शेरक बीच १–२ मात्रा खाली स्थान।

गजल ६१४ — नेहक गान बचल अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+१+२+१+१ · यति: १४+७

काफिया: –ान (प्राण, मान, गान, ज्ञान, ध्यान) · रदीफ: बचल अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / प्राण बचल अछि
घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / मान बचल अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / मोन कहैत अछि
नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / गान बचल अछि

लोक पास अछि मोन नहि मानल / नोर बहैत अछि
बाट बंद अछि नेह नहि टूटल / ज्ञान बचल अछि

रात मौन अछि निन्न नहि आयल / नाम रहैत अछि
नाम पास अछि नेह नहि टूटल / ध्यान बचल अछि

भोर मौन अछि नोर नहि थामल / रात ढलैत अछि
काल दूर अछि नेह नहि टूटल / प्राण बचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २१ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+१+२+१+१ · यति १४+७

गजल ६१४ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, एकूस्टिक गिटार, मन्द बास

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल मिसरा लगभग गप-जकाँ, ताल दोसर मिसरा पछाति धीरे प्रवेश करय।

मतला: १४-मात्रिक यति पर २ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) “मान बचल अछि” एक बेर दोहराउ (repeat); दोसर बेर आवाज नीचा राखू।

शेर २: पहिल मिसरा बिना अलंकार सीधा गाउ; दोसर मिसरा बाद २ मात्रा मौन (silence)। तबला अत्यन्त हलुक रहय।

शेर ३: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) पछाति दोसर मिसराक “ज्ञान बचल अछि” केँ आधा स्वरमे फेर लिअ (repeat)।

शेर ४: सारंगी उत्तर-धुन (response phrase) दे; यति बाद स्वर थोड़ा खुलय, मुदा आवाजक तीव्रता नहि बढ़य।

अन्तिम शेर: ताल आधा करु (drop)। “प्राण बचल अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: टूटनक भीतर बचल नेह; उदासीमे हलुक उजास। अत्यधिक तान नहि; मींड छोट, शब्द स्पष्ट, आ शेरक बीच १–२ मात्रा खाली स्थान।

गजल ६१५ — ओ नाम एखनो मोनमे अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यति: १४+१२

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम) · रदीफ: एखनो मोनमे अछि

मीत दूर अछि नाम नहि छूटल / नाम एखनो मोनमे अछि
घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / गाम एखनो मोनमे अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नेह एखनो देहमे अछि
चान दूर अछि नोर नहि थामल / घाम एखनो मोनमे अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / दाग एखनो मोनमे अछि
गाम चुप अछि नोर नहि थामल / ठाम एखनो मोनमे अछि

रात मौन अछि निन्न नहि आयल / राग एखनो साँझमे अछि
नाम पास अछि नेह नहि टूटल / नाम एखनो मोनमे अछि

साँझ चुप अछि नोर नहि थामल / गप एखनो मोनमे अछि
लोक पास अछि मोन नहि मानल / गाम एखनो मोनमे अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यति १४+१२

गजल ६१५ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५४–५८ BPM · ताल: मुक्त आलाप सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, हलुक पैड, ब्रश ताल

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल मिसरा लगभग गप-जकाँ, ताल दोसर मिसरा पछाति धीरे प्रवेश करय।

मतला: १४-मात्रिक यति पर २ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) “गाम एखनो मोनमे अछि” एक बेर दोहराउ (repeat); दोसर बेर आवाज नीचा राखू।

शेर २: पहिल मिसरा बिना अलंकार सीधा गाउ; दोसर मिसरा बाद २ मात्रा मौन (silence)। तबला अत्यन्त हलुक रहय।

शेर ३: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) पछाति दोसर मिसराक “ठाम एखनो मोनमे अछि” कैँ आधा स्वरमे फेर लिअ (repeat)।

शेर ४: सारंगी उत्तर-धुन (response phrase) दे; यति बाद स्वर थोड़ा खुलय, मुदा आवाजक तीव्रता नहि बढ़य।

अन्तिम शेर: ताल आधा करु (drop)। “गाम एखनो मोनमे अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: स्मृति प्रधान; प्रत्येक रदीफक अन्तमे स्वर नीचा उतरय। अत्यधिक तान नहि; मींड छोट, शब्द स्पष्ट, आ शेरक बीच १–२ मात्रा खाली स्थान।

गजल ६१६ — आस भीतर रहैए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+१+२+२ · यति: १४+७

काफिया: –ास (आस, साँस, बास) · रदीफ: रहैए

नेह मौन अछि मोन नहि मानल / आस रहैए
मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / साँस रहैए

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / मोन कहैए
घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / बास रहैए

चान दूर अछि नोर नहि थामल / नोर बहैए
बाट बंद अछि नेह नहि टूटल / आस रहैए

भोर मौन अछि नोर नहि थामल / नाम रहैए
नाम पास अछि नेह नहि टूटल / साँस रहैए

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / सोर रहैए
काल दूर अछि नेह नहि टूटल / बास रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २१ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+१+२+२ · यति १४+७

गजल ६१६ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६४ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, बाँसुरी, सारंगी, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल मिसरा लगभग गप-जकाँ, ताल दोसर मिसरा पछाति धीरे प्रवेश करय।

मतला: १४-मात्रिक यति पर २ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) “साँस रहैए” एक बेर दोहराउ (repeat); दोसर बेर आवाज नीचा राखू।

शेर २: पहिल मिसरा बिना अलंकार सीधा गाउ; दोसर मिसरा बाद २ मात्रा मौन (silence)। तबला अत्यन्त हलुक रहय।

शेर ३: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) पछाति दोसर मिसराक “आस रहैए” केँ आधा स्वरमे फेर लिअ (repeat)।

शेर ४: सारंगी उत्तर-धुन (response phrase) दे; यति बाद स्वर थोड़ा खुलय, मुदा आवाजक तीव्रता नहि बढ़य।

अन्तिम शेर: ताल आधा करु (drop)। “बास रहैए” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: मनखिन्नता भीतर बचल आस; स्वर मद्धिम मुदा पूर्ण निराश नहि। अत्यधिक तान नहि; मींड छोट, शब्द स्पष्ट, आ शेरक बीच १–२ मात्रा खाली स्थान।

गजल ६१७ — आस संग चलैत अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+१+२+१+१ · यति: १४+७

काफिया: –ास (आस, साँस, बास) · रदीफ: चलैत अछि

बाट बंद अछि नेह नहि टूटल / आस चलैत अछि
मीत दूर अछि मोन नहि मानल / साँस चलैत अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर बहैत अछि
घाम मंद अछि मोन नहि मानल / बास चलैत अछि

लोक पास अछि नोर नहि थामल / नाम रहैत अछि
रात मौन अछि निन्न नहि आयल / आस चलैत अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / मोन कहैत अछि
चान दूर अछि नोर नहि थामल / साँस चलैत अछि

भोर मौन अछि नोर नहि थामल / रात ढलैत अछि
साँझ चुप अछि नोर नहि थामल / बास चलैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २१ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+१+२+१+१ · यति १४+७

गजल ६१७ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६३ BPM · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, एकूस्टिक गिटार, सारंगी, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल मिसरा लगभग गप-जकाँ, ताल दोसर मिसरा पछाति धीरे प्रवेश करय।

मतला: १४-मात्रिक यति पर २ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) “साँस चलैत अछि” एक बेर दोहराउ (repeat); दोसर बेर आवाज नीचा राखू।

शेर २: पहिल मिसरा बिना अलंकार सीधा गाउ; दोसर मिसरा बाद २ मात्रा मौन (silence)। तबला अत्यन्त हलुक रहय।

शेर ३: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) पछाति दोसर मिसराक “आस चलैत अछि” केँ आधा स्वरमे फेर लिअ (repeat)।

शेर ४: सारंगी उत्तर-धुन (response phrase) दे; यति बाद स्वर थोड़ा खुलय, मुदा आवाजक तीव्रता नहि बढ़य।

अन्तिम शेर: ताल आधा करु (drop)। “बास चलैत अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: धीरे चलैत स्मृति; लय निरन्तर, तान अत्यल्प। अत्यधिक तान नहि; मींड छोट, शब्द स्पष्ट, आ शेरक बीच १–२ मात्रा खाली स्थान।

गजल ६१८ — आस अहाँक पाछाँ रहैए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+२ · यति: १४+११

काफिया: –ास (आस, साँस, बास) · रदीफ: पाछाँ रहैए

मीत दूर अछि नाम नहि छूटल / आस पाछाँ रहैए
चान दूर अछि नोर नहि थामल / साँस पाछाँ रहैए

बाट बंद अछि नेह नहि टूटल / मोन भीतर रहैए
घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / बास पाछाँ रहैए

छाह दूर अछि मोन नहि मानल / नोर भीतर रहैए
नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / आस पाछाँ रहैए

रात मौन अछि निन्न नहि आयल / नाम भीतर रहैए
ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / साँस पाछाँ रहैए

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / राग भीतर रहैए
लोक पास अछि मोन नहि मानल / बास पाछाँ रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २५ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+२ · **यति १४+११**

गजल ६१८ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५६–६० BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, मन्द तबला, ड्रोन

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल मिसरा लगभग गप-जकाँ, ताल दोसर मिसरा पछाति धीरे प्रवेश करय।

मतला: १४-मात्रिक यति पर २ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) “साँस पाछाँ रहैए” एक बेर दोहराउ (repeat); दोसर बेर आवाज नीचा राखू।

शेर २: पहिल मिसरा बिना अलंकार सीधा गाउ; दोसर मिसरा बाद २ मात्रा मौन (silence)। तबला अत्यन्त हलुक रहय।

शेर ३: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) पछाति दोसर मिसराक “आस पाछाँ रहैए” कैँ आधा स्वरमे फेर लिअ (repeat)।

शेर ४: सारंगी उत्तर-धुन (response phrase) दे; यति बाद स्वर थोड़ा खुलय, मुदा आवाजक तीव्रता नहि बढ़य।

अन्तिम शेर: ताल आधा करु (drop)। “बास पाछाँ रहैए” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: पाछाँ छूटल नेहक अनुभूति; यति बाद हलुक साँस सुनाय देत। अत्यधिक तान नहि; मींड छोट, शब्द स्पष्ट, आ शेरक बीच १–२ मात्रा खाली स्थान।

गजल ६१९ — जे नोर आबो मोनमे अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · यति: १४+१२

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर) · रदीफ: आबो मोनमे अछि

घर सून्न अछि नोर नहि थामल / नोर आबो मोनमे अछि
चान दूर अछि नोर नहि थामल / भोर आबो मोनमे अछि

मीत दूर अछि नाम नहि छूटल / नेह आबो देहमे अछि
साँझ चुप अछि नोर नहि थामल / डोर आबो मोनमे अछि

रात मौन अछि निन्न नहि आयल / दाग आबो मोनमे अछि
भोर मौन अछि नोर नहि थामल / सोर आबो मोनमे अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / राग आबो साँझमे अछि
नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नोर आबो मोनमे अछि

लोक पास अछि मोन नहि मानल / गप आबो मोनमे अछि
गाम चुप अछि निन्न नहि आयल / भोर आबो मोनमे अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+१ · **यति १४+१२**

गजल ६१९ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५५–५९ BPM · ताल: मुक्त आरम्भ, पछाति दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द बास, अति हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल मिसरा लगभग गप-जकाँ, ताल दोसर मिसरा पछाति धीरे प्रवेश करय।

मतला: १४-मात्रिक यति पर २ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) “भोर आबो मोनमे अछि” एक बेर दोहराउ (repeat); दोसर बेर आवाज नीचा राखू।

शेर २: पहिल मिसरा बिना अलंकार सीधा गाउ; दोसर मिसरा बाद २ मात्रा मौन (silence)। तबला अत्यन्त हलुक रहय।

शेर ३: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) पछाति दोसर मिसराक “सोर आबो मोनमे अछि” केँ आधा स्वरमे फेर लिअ (repeat)।

शेर ४: सारंगी उत्तर-धुन (response phrase) दे; यति बाद स्वर थोड़ा खुलय, मुदा आवाजक तीव्रता नहि बढ़य।

अन्तिम शेर: ताल आधा करु (drop)। “भोर आबो मोनमे अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: पुरान नोरक स्मृति; शब्दक बीच मौन अधिक। अत्यधिक तान नहि; मींड छोट, शब्द स्पष्ट, आ शेरक बीच १–२ मात्रा खाली स्थान।

गजल ६२० — नेह राति भरि जागैत अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१ · यति: १४+८

काफिया: –ेह (नेह, देह, मेह) · रदीफ: जागैत अछि

रात मौन अछि निन्न नहि आयल / नेह जागैत अछि
मीत दूर अछि मोन नहि मानल / देह जागैत अछि

घर सून्न अछि नोर नहि थामल / मोन बोलैत अछि
साँझ चुप अछि नोर नहि थामल / मेह जागैत अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर रोइत अछि
नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नेह जागैत अछि

चान दूर अछि नोर नहि थामल / रात जागैत अछि
गाम चुप अछि निन्न नहि आयल / देह जागैत अछि

लोक पास अछि मोन नहि मानल / नाम गूँजैत अछि
भोर मौन अछि नोर नहि थामल / नेह जागैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१ · यति १४+८

गजल ६२० — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५४–५८ BPM · ताल: अति धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, पियानो, मन्द तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल मिसरा लगभग गप-जकाँ, ताल दोसर मिसरा पछाति धीरे प्रवेश करय।

मतला: १४-मात्रिक यति पर २ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) “देह जागैत अछि” एक बेर दोहराउ (repeat); दोसर बेर आवाज नीचा राखू।

शेर २: पहिल मिसरा बिना अलंकार सीधा गाउ; दोसर मिसरा बाद २ मात्रा मौन (silence)। तबला अत्यन्त हलुक रहय।

शेर ३: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) पछाति दोसर मिसराक “नेह जागैत अछि” कैँ आधा स्वरमे फेर लिअ (repeat)।

शेर ४: सारंगी उत्तर-धुन (response phrase) दे; यति बाद स्वर थोड़ा खुलय, मुदा आवाजक तीव्रता नहि बढ़य।

अन्तिम शेर: ताल आधा करु (drop)। “नेह जागैत अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: निन्नहीन राति; स्वर फुसफुसाहटसँ आरम्भ भऽ धीरे खुलय। अत्यधिक तान नहि; मींड छोट, शब्द स्पष्ट, आ शेरक बीच १–२ मात्रा खाली स्थान।

गजल ६२१ — आस आबो संग रहैत अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+२+१+१ · यति: १४+९

काफिया: –ास (आस, साँस, बास) · रदीफ: संग रहैत अछि

नेह मौन अछि मोन नहि मानल / आस संग रहैत अछि
बाट बंद अछि नेह नहि टूटल / साँस संग रहैत अछि

चान दूर अछि नोर नहि थामल / रात नोर बहैत अछि
घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / बास संग रहैत अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / मोन नाम कहैत अछि
मीत दूर अछि नाम नहि छूटल / आस संग रहैत अछि

भोर मौन अछि नोर नहि थामल / घाम छाह बनैत अछि
लोक पास अछि मोन नहि मानल / साँस संग रहैत अछि

साँझ चुप अछि नोर नहि थामल / चान दूर रहैत अछि
रात मौन अछि निन्न नहि आयल / बास संग रहैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+२+१+१ · यति १४+९

गजल ६२१ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५९–६३ BPM · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): एकूस्टिक गिटार, हारमोनियम, सारंगी, ब्रश ताल

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल मिसरा लगभग गप-जकाँ, ताल दोसर मिसरा पछाति धीरे प्रवेश करय।

मतला: १४-मात्रिक यति पर २ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) “साँस संग रहैत अछि” एक बेर दोहराउ (repeat); दोसर बेर आवाज नीचा राखू।

शेर २: पहिल मिसरा बिना अलंकार सीधा गाउ; दोसर मिसरा बाद २ मात्रा मौन (silence)। तबला अत्यन्त हलुक रहय।

शेर ३: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) पछाति दोसर मिसराक “आस संग रहैत अछि” कैँ आधा स्वरमे फेर लिअ (repeat)।

शेर ४: सारंगी उत्तर-धुन (response phrase) दे; यति बाद स्वर थोड़ा खुलय, मुदा आवाजक तीव्रता नहि बढ़य।

अन्तिम शेर: ताल आधा करु (drop)। “बास संग रहैत अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: दुख संग चलैत आस; मध्यम शेरमे हलुक उभार, अन्तमे फेर शान्त। अत्यधिक तान नहि; मींड छोट, शब्द स्पष्ट, आ शेरक बीच १–२ मात्रा खाली स्थान।

गजल ६२२ — जे नोर अहाँक पाछाँ रहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१+२ · यति: १४+१०

काफिया: –ोर (नोर, डोर, सोर) · रदीफ: पाछाँ रहि गेल

मीत दूर अछि नाम नहि छूटल / नोर पाछाँ रहि गेल
घर सून्न अछि नोर नहि थामल / डोर पाछाँ रहि गेल

चान दूर अछि नोर नहि थामल / मीत नेह दूर नहि गेल
बाट बंद अछि नेह नहि टूटल / सोर पाछाँ रहि गेल

रात मौन अछि निन्न नहि आयल / रात राग दूर नहि गेल
ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर पाछाँ रहि गेल

नेह मौन अछि मोन नहि मानल / नेह मोन दूर नहि गेल
गाम चुप अछि नोर नहि थामल / डोर पाछाँ रहि गेल

लोक पास अछि मोन नहि मानल / घाव मोन दूर नहि गेल
साँझ चुप अछि नोर नहि थामल / सोर पाछाँ रहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१+२ · यति १४+१०

गजल ६२२ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५५–५९ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हारमोनियम, मन्द तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल मिसरा लगभग गप-जकाँ, ताल दोसर मिसरा पछाति धीरे प्रवेश करय।

मतला: १४-मात्रिक यति पर २ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) “डोर पाछाँ रहि गेल” एक बेर दोहराउ (repeat); दोसर बेर आवाज नीचा राखू।

शेर २: पहिल मिसरा बिना अलंकार सीधा गाउ; दोसर मिसरा बाद २ मात्रा मौन (silence)। तबला अत्यन्त हलुक रहय।

शेर ३: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) पछाति दोसर मिसराक “नोर पाछाँ रहि गेल” कैँ आधा स्वरमे फेर लिअ (repeat)।

शेर ४: सारंगी उत्तर-धुन (response phrase) दे; यति बाद स्वर थोड़ा खुलय, मुदा आवाजक तीव्रता नहि बढ़य।

अन्तिम शेर: ताल आधा करु (drop)। “सोर पाछाँ रहि गेल” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त ४ मात्रा रोक (hold) सँ मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: छूटल बाटक पछाति रहि गेल ध्वनि; अन्तिम रदीफ लगभग फुसफुसाइत। अत्यधिक तान नहि; मींड छोट, शब्द स्पष्ट, आ शेरक बीच १–२ मात्रा खाली स्थान।

गजल ६२३ — ओ भोर मोनमे रहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१+२ · यति: १४+१०

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफ: मोनमे रहि गेल

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर मोनमे रहि गेल

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर मोनमे रहि गेल

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम मोनमे रहि गेल

चान दूर अछि मोन नहि मानल / डोर मोनमे रहि गेल

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / घाव मोनमे रहि गेल

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर मोनमे रहि गेल

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / नेह मोनमे रहि गेल

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर मोनमे रहि गेल

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / नाम मोनमे रहि गेल

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनमे रहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१+२ · यति १४+१०

गजल ६२३ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, हलुक तबला, मन्द बास

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर गप-जकाँ निकट, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर मोनमे रहि गेल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ निकट; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा स्पष्ट, बिना अनावश्यक तान।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा राखू।

चारिम शेर: तबला आधा करु (drop); शब्द प्रधान। “नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर मोनमे रहि गेल” केर रदीफ पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: पहिल मिसरा लगभग मुक्त-लयमे; “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनमे रहि गेल” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, स्मृति आ भीतरक मौन प्रधान; अत्यधिक तान नहि। शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence) राखू।

गजल ६२४ — ओ गान हमरा संग अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: १४+१०

काफिया: –ान (मान, प्राण, गान, ज्ञान, ध्यान) · रदीफ: हमरा संग अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / मान हमरा संग अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / प्राण हमरा संग अछि

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नेह हमरा संग अछि

चान दूर अछि मोन नहि मानल / गान हमरा संग अछि

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नाम हमरा संग अछि

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / ज्ञान हमरा संग अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / घाव हमरा संग अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / ध्यान हमरा संग अछि

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / मीत हमरा संग अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / मान हमरा संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति १४+१०

गजल ६२४ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६४ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, एकूस्टिक गिटार, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर गप-जकाँ निकट, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / प्राण हमरा संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ निकट; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा स्पष्ट, बिना अनावश्यक तान।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा राखू।

चारिम शेर: तबला आधा करु (drop); शब्द प्रधान। “नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / ध्यान हमरा संग अछि” केर रदीफ पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: पहिल मिसरा लगभग मुक्त-लयमे; “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / मान हमरा संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, स्मृति आ भीतरक मौन प्रधान; अत्यधिक तान नहि। शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence) राखू।

गजल ६२५ — ओ नोर हमरा मोन पड़ैए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+२+२ · यति: १४+१३

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफ: हमरा मोन पड़ैए

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर हमरा मोन पड़ैए

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर हमरा मोन पड़ैए

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम हमरा मोन पड़ैए

चान दूर अछि मोन नहि मानल / डोर हमरा मोन पड़ैए

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / घाव हमरा मोन पड़ैए

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर हमरा मोन पड़ैए

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / नेह हमरा मोन पड़ैए

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर हमरा मोन पड़ैए

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / मीत हमरा मोन पड़ैए

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर हमरा मोन पड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २७ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+२+२ · **यति १४+१३**

गजल ६२५ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५६–६० BPM · ताल: मुक्त आलाप सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द पैड, तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर गप-जकाँ निकट, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। "मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर हमरा मोन पड़ैए" एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ निकट; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा स्पष्ट, बिना अनावश्यक तान।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा राखू।

चारिम शेर: तबला आधा करु (drop); शब्द प्रधान। "नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर हमरा मोन पड़ैए" केर रदीफ पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: पहिल मिसरा लगभग मुक्त-लयमे; "ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर हमरा मोन पड़ैए" दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, स्मृति आ भीतरक मौन प्रधान; अत्यधिक तान नहि। शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence) राखू।

गजल ६२६ — ओ नेह मोनमे बचल अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति: १४+११

काफिया: –े‌ह (नेह, देह, मेह, गेह) · रदीफ: मोनमे बचल अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नेह मोनमे बचल अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / देह मोनमे बचल अछि

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम मोनमे बचल अछि

चान दूर अछि मोन नहि मानल / मेह मोनमे बचल अछि

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / घाव मोनमे बचल अछि

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / गेह मोनमे बचल अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / आस मोनमे बचल अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नेह मोनमे बचल अछि

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / प्रीत मोनमे बचल अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह मोनमे बचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २५ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · **यति १४+११**

गजल ६२६ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६४ BPM · ताल: धीमा कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, गिटार, सारंगी, ब्रश पर्कशन

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर गप-जकाँ निकट, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / देह मोनमे बचल अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ निकट; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा स्पष्ट, बिना अनावश्यक तान।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा राखू।

चारिम शेर: तबला आधा करु (drop); शब्द प्रधान। “नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नेह मोनमे बचल अछि” केर रदीफ पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: पहिल मिसरा लगभग मुक्त-लयमे; “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह मोनमे बचल अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, स्मृति आ भीतरक मौन प्रधान; अत्यधिक तान नहि। शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence) राखू।

गजल ६२७ — ओ नाम आबो संग अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: १४+१०

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम) · रदीफ: आबो संग अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नाम आबो संग अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / गाम आबो संग अछि

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नेह आबो संग अछि

चान दूर अछि मोन नहि मानल / घाम आबो संग अछि

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर आबो संग अछि

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / ठाम आबो संग अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / प्रीत आबो संग अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नाम आबो संग अछि

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / घाव आबो संग अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / गाम आबो संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति १४+१०

गजल ६२७ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द बास, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर गप-जकाँ निकट, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / गाम आबो संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ निकट; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा स्पष्ट, बिना अनावश्यक तान।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा राखू।

चारिम शेर: तबला आधा करु (drop); शब्द प्रधान। “नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नाम आबो संग अछि” केर रदीफ पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: पहिल मिसरा लगभग मुक्त-लयमे; “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / गाम आबो संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, स्मृति आ भीतरक मौन प्रधान; अत्यधिक तान नहि। शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence) राखू।

गजल ६२८ — ओ नेह राति भरि जागैत अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+१+२+२+१+१ · यति: १४+१३

काफिया: –ेह (नेह, देह, मेह, गेह) · रदीफ: राति भरि जागैत अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नेह राति भरि जागैत अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / देह राति भरि जागैत अछि

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम राति भरि जागैत अछि

चान दूर अछि मोन नहि मानल / मेह राति भरि जागैत अछि

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर राति भरि जागैत अछि

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / गेह राति भरि जागैत अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / आस राति भरि जागैत अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नेह राति भरि जागैत अछि

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / प्रीत राति भरि जागैत अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह राति भरि जागैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २७ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+१+२+२+१+१ · यति १४+१३

गजल ६२८ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, हलुक तबला, मन्द बास

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर गप-जकाँ निकट, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / देह राति भरि जागैत अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ निकट; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा स्पष्ट, बिना अनावश्यक तान।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा राखू।

चारिम शेर: तबला आधा करु (drop); शब्द प्रधान। “नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नेह राति भरि जागैत अछि” केर रदीफ पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: पहिल मिसरा लगभग मुक्त-लयमे; “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह राति भरि जागैत अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, स्मृति आ भीतरक मौन प्रधान; अत्यधिक तान नहि। शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence) राखू।

गजल ६२९ — ओ नेह हमरा भीतर रहैए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+२+२ · यति: १४+१५

काफिया: –े ह (नेह, देह, मेह, गेह) · रदीफ: हमरा भीतर रहैए

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नेह हमरा भीतर रहैए

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / देह हमरा भीतर रहैए

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम हमरा भीतर रहैए

चान दूर अछि मोन नहि मानल / मेह हमरा भीतर रहैए

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर हमरा भीतर रहैए

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / गेह हमरा भीतर रहैए

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / आस हमरा भीतर रहैए

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नेह हमरा भीतर रहैए

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / प्रीत हमरा भीतर रहैए

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह हमरा भीतर रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २९ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+२+२ · **यति** १४+१५

गजल ६२९ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६४ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, एकूस्टिक गिटार, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर गप-जकाँ निकट, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / देह हमरा भीतर रहैए” एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ निकट; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा स्पष्ट, बिना अनावश्यक तान।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा राखू।

चारिम शेर: तबला आधा करु (drop); शब्द प्रधान। “नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नेह हमरा भीतर रहैए” केर रदीफ पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: पहिल मिसरा लगभग मुक्त-लयमे; “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह हमरा भीतर रहैए” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, स्मृति आ भीतरक मौन प्रधान; अत्यधिक तान नहि। शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence) राखू।

गजल ६३० — मीत फेर नहि भेटल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+२+२ · यति: १४+१०

काफिया: –ीत (मीत, गीत, प्रीत, रीत) · रदीफ: फेर नहि भेटल

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / मीत फेर नहि भेटल

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / गीत फेर नहि भेटल

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम फेर नहि भेटल

चान दूर अछि मोन नहि मानल / प्रीत फेर नहि भेटल

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर फेर नहि भेटल

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / रीत फेर नहि भेटल

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / आस फेर नहि भेटल

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / मीत फेर नहि भेटल

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / घाव फेर नहि भेटल

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / गीत फेर नहि भेटल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+२+२ · यति १४+१०

गजल ६३० — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५६–६० BPM · ताल: मुक्त आलाप सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द पैड, तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर गप-जकाँ निकट, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / गीत फेर नहि भेटल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ निकट; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा स्पष्ट, बिना अनावश्यक तान।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा राखू।

चारिम शेर: तबला आधा करु (drop); शब्द प्रधान। “नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / मीत फेर नहि भेटल” केर रदीफ पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: पहिल मिसरा लगभग मुक्त-लयमे; “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / गीत फेर नहि भेटल” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, स्मृति आ भीतरक मौन प्रधान; अत्यधिक तान नहि। शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence) राखू।

गजल ६३१ — ओ नोर मोनसँ नहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+१+२ · यति: १४+९

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफ: मोनसँ नहि गेल

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर मोनसँ नहि गेल

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर मोनसँ नहि गेल

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम मोनसँ नहि गेल

चान दूर अछि मोन नहि मानल / डोर मोनसँ नहि गेल

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / घाव मोनसँ नहि गेल

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर मोनसँ नहि गेल

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / नेह मोनसँ नहि गेल

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर मोनसँ नहि गेल

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / मीत मोनसँ नहि गेल

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनसँ नहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+१+२ · यति १४+९

गजल ६३१ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ६०–६४ BPM · ताल: धीमा कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, गिटार, सारंगी, ब्रश पर्कशन

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर गप-जकाँ निकट, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर मोनसँ नहि गेल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ निकट; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा स्पष्ट, बिना अनावश्यक तान।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा राखू।

चारिम शेर: तबला आधा करु (drop); शब्द प्रधान। “नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर मोनसँ नहि गेल” केर रदीफ पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: पहिल मिसरा लगभग मुक्त-लयमे; “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनसँ नहि गेल” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, स्मृति आ भीतरक मौन प्रधान; अत्यधिक तान नहि। शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence) राखू।

गजल ६३२ — ओ नोर मोनमे बसल अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति: १४+११

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफ: मोनमे बसल अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर मोनमे बसल अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर मोनमे बसल अछि

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम मोनमे बसल अछि

चान दूर अछि मोन नहि मानल / डोर मोनमे बसल अछि

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / घाव मोनमे बसल अछि

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर मोनमे बसल अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / नेह मोनमे बसल अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर मोनमे बसल अछि

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / मीत मोनमे बसल अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनमे बसल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २५ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · **यति १४+११**

गजल ६३२ — भाग २ — संगीतमय रूप

गति (tempo): ५८–६२ BPM · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द बास, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; पहिल स्वर गप-जकाँ निकट, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसरा मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर मोनमे बसल अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat), अन्तिम रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ निकट; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause)। दोसर मिसरा स्पष्ट, बिना अनावश्यक तान।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; दोसर मिसराक अन्तिम धुन-अंश (phrase) लम्बा राखू।

चारिम शेर: तबला आधा करु (drop); शब्द प्रधान। “नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर मोनमे बसल अछि” केर रदीफ पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: पहिल मिसरा लगभग मुक्त-लयमे; “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनमे बसल अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज + सारंगी; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, स्मृति आ भीतरक मौन प्रधान; अत्यधिक तान नहि। शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence) राखू।

गजल ६३३ — नोर हमरा संग अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: १४+१०

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफ: हमरा संग अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर हमरा संग अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर हमरा संग अछि

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम हमरा संग अछि

चान दूर अछि मोन नहि मानल / डोर हमरा संग अछि

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / घाव हमरा संग अछि

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर हमरा संग अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / नेह हमरा संग अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर हमरा संग अछि

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / मीत हमरा संग अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर हमरा संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति १४+१०

गजल ६३३ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५८–६२ · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, हलुक तबला, मन्द बास

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर हमरा संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करु (drop); आवाज प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर हमरा संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरह, सून्न घर आ भीतर बचल साथ; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६३४ — नाम मोनमे रहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१+२ · यति: १४+१०

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: मोनमे रहि गेल

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नाम मोनमे रहि गेल

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / गाम मोनमे रहि गेल

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नेह मोनमे रहि गेल

चान दूर अछि मोन नहि मानल / घाम मोनमे रहि गेल

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर मोनमे रहि गेल

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / ठाम मोनमे रहि गेल

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / मीत मोनमे रहि गेल

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / धाम मोनमे रहि गेल

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / घाव मोनमे रहि गेल

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नाम मोनमे रहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१+२ · **यति १४+१०**

गजल ६३४ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५६–६० · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, मन्द पियानो, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / गाम मोनमे रहि गेल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करु (drop); आवाज प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नाम मोनमे रहि गेल” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: स्मृति, गामक गन्ध आ नामक टिकाव; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६३५ — मीत आबो संग अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: १४+१०

काफिया: –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत) · रदीफ: आबो संग अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / मीत आबो संग अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / प्रीत आबो संग अछि

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम आबो संग अछि

चान दूर अछि मोन नहि मानल / गीत आबो संग अछि

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर आबो संग अछि

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / रीत आबो संग अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / घाव आबो संग अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / मीत आबो संग अछि

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / नेह आबो संग अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / गीत आबो संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति १४+१०

गजल ६३५ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ६०–६४ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): अकूस्टिक गिटार, सारंगी, पियानो, मन्द तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / प्रीत आबो संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करु (drop); आवाज प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / गीत आबो संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: अनुपस्थित मीतक भीतर बचल उपस्थिति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६३६ — नेह मोनमे बचल अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति: १४+११

काफिया: –ेह (नेह, देह, मेह, गेह) · रदीफ: मोनमे बचल अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नेह मोनमे बचल अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / देह मोनमे बचल अछि

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम मोनमे बचल अछि

चान दूर अछि मोन नहि मानल / मेह मोनमे बचल अछि

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर मोनमे बचल अछि

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / गेह मोनमे बचल अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / आस मोनमे बचल अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नेह मोनमे बचल अछि

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / प्रीत मोनमे बचल अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह मोनमे बचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २५ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति १४+११

गजल ६३६ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५६–६० · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सेलो, सारंगी, बहुत हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / देह मोनमे बचल अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करु (drop); आवाज प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह मोनमे बचल अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: टूटल सम्बन्धक बादो बचल नेह; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६३७ — दाग हमरा भीतर रहैए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+२+२ · यति: १४+१५

काफिया: –ाग/आग (दाग, राग, आग) · रदीफ: हमरा भीतर रहैए

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / दाग हमरा भीतर रहैए

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / राग हमरा भीतर रहैए

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम हमरा भीतर रहैए

चान दूर अछि मोन नहि मानल / आग हमरा भीतर रहैए

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर हमरा भीतर रहैए

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / दाग हमरा भीतर रहैए

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / नेह हमरा भीतर रहैए

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / राग हमरा भीतर रहैए

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / घाव हमरा भीतर रहैए

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / आग हमरा भीतर रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २९ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+२+१+२+२ **· यति** १४+१५

गजल ६३७ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मुक्त लय सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, मन्द सेलो, विरल तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / राग हमरा भीतर रहैए” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करु (drop); आवाज प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / आग हमरा भीतर रहैए” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: भीतरक दाह, स्मृति आ अनकहल पीड़ा; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६३८ — नोर मोनसँ नहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+१+२ · यति: १४+९

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफ: मोनसँ नहि गेल

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर मोनसँ नहि गेल

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर मोनसँ नहि गेल

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम मोनसँ नहि गेल

चान दूर अछि मोन नहि मानल / डोर मोनसँ नहि गेल

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / घाव मोनसँ नहि गेल

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर मोनसँ नहि गेल

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / नेह मोनसँ नहि गेल

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर मोनसँ नहि गेल

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / मीत मोनसँ नहि गेल

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनसँ नहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+१+१+१+२ · यति १४+९

गजल ६३८ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५८–६२ · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, पियानो, सारंगी, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर मोनसँ नहि गेल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करु (drop); आवाज प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनसँ नहि गेल” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: लम्बा विरह आ नोरक अटकल स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६३९ — नाम हमरा मोन पड़ैए

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+२+२ · यति: १४+१३

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: हमरा मोन पड़ैए

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नाम हमरा मोन पड़ैए

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / गाम हमरा मोन पड़ैए

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नेह हमरा मोन पड़ैए

चान दूर अछि मोन नहि मानल / घाम हमरा मोन पड़ैए

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर हमरा मोन पड़ैए

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / ठाम हमरा मोन पड़ैए

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / मीत हमरा मोन पड़ैए

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / धाम हमरा मोन पड़ैए

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / घाव हमरा मोन पड़ैए

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नाम हमरा मोन पड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २७ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+२+२ **· यति १४+१३**

गजल ६३९ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५८–६२ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, बाँसुरी, सारंगी, मन्द तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / गाम हमरा मोन पड़ैए” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करु (drop); आवाज प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नाम हमरा मोन पड़ैए” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: पुरान नाम, गाम आ फेर-फेर उठैत स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६४० — प्रीत हमरा संग अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: १४+१०

काफिया: –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत) · रदीफ: हमरा संग अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / मीत हमरा संग अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / प्रीत हमरा संग अछि

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम हमरा संग अछि

चान दूर अछि मोन नहि मानल / गीत हमरा संग अछि

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर हमरा संग अछि

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / रीत हमरा संग अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / घाव हमरा संग अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / मीत हमरा संग अछि

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / नेह हमरा संग अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / गीत हमरा संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+२+१+१ · **यति** १४+१०

गजल ६४० — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ६०–६४ · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): अकूस्टिक गिटार, पियानो, सारंगी, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / प्रीत हमरा संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करु (drop); आवाज प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / गीत हमरा संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरहमे सेहो बाँचल प्रीतक सहचरता; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६४१ — नेह मोनमे रहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१+२ · यति: १४+१०

काफिया: –ेह (नेह, देह, मेह, गेह) · रदीफ: मोनमे रहि गेल

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नेह मोनमे रहि गेल

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / देह मोनमे रहि गेल

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम मोनमे रहि गेल

चान दूर अछि मोन नहि मानल / मेह मोनमे रहि गेल

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / नोर मोनमे रहि गेल

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / गेह मोनमे रहि गेल

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / आस मोनमे रहि गेल

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / नेह मोनमे रहि गेल

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / प्रीत मोनमे रहि गेल

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह मोनमे रहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+१+२ · यति १४+१०

गजल ६४१ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५६–६० · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, सेलो, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / देह मोनमे रहि गेल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करु (drop); आवाज प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / देह मोनमे रहि गेल” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: मौन, देहक स्मृति आ मोनमे अटकल नेह; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६४२ — नोर मोनमे बसल अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति: १४+११

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, छोर, सोर) · रदीफ: मोनमे बसल अछि

घर सून्न अछि निन्न नहि आयल / नोर मोनमे बसल अछि

मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर मोनमे बसल अछि

रात मौन अछि नोर नहि थामल / नाम मोनमे बसल अछि

चान दूर अछि मोन नहि मानल / डोर मोनमे बसल अछि

बाट बंद अछि नाम नहि छूटल / घाव मोनमे बसल अछि

साँझ चुप अछि निन्न नहि आयल / छोर मोनमे बसल अछि

घाम मंद अछि मोन नहि मानल / नेह मोनमे बसल अछि

नेह मौन अछि नाम नहि छूटल / सोर मोनमे बसल अछि

गाम चुप अछि नोर नहि थामल / मीत मोनमे बसल अछि

ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनमे बसल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २५ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+१+२+१+१+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति १४+११

गजल ६४२ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मुक्त लय सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, मन्द बास, विरल तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर अछि नेह नहि टूटल / भोर मोनमे बसल अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करु (drop); आवाज प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “ठोर मौन अछि गप नहि बोलल / नोर मोनमे बसल अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल आवाज आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: नोर, भोर आ नछुटैत स्मृतिक गहिर एकान्त; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६४३ — नोर फेरो आयल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर) · रदीफ: फेरो आयल
रात गाढ़ चान आयल / नोर फेरो आयल

रात ढल भोर आयल / भोर फेरो आयल

मीत दूर नेह जागल / नेह फेरो आयल

डोर टूट नेह जागल / डोर फेरो आयल

गीत थाम नोर जागल / घाव फेरो आयल

सोर थाम मोन जागल / सोर फेरो आयल

मेह आय गाम जागल / आस फेरो आयल

चान ढल भोर आयल / भोर फेरो आयल

घर सून्न नाम जागल / मीत फेरो आयल

मोन मौन नोर आयल / नोर फेरो आयल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६४३ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मुक्त लय सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, मन्द सेलो, विरल तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “रात ढल भोर आयल / भोर फेरो आयल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन नोर आयल / नोर फेरो आयल” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: नोर, भोर आ नफेरायल विरहक स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६४४ — नाम मोनमे राखू

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: मोनमे राखू

मीत दूर नाम जागल / नाम मोनमे राखू

गाम दूर गीत जागल / गाम मोनमे राखू

साँझ ढल दीप बालल / नेह मोनमे राखू

धूप ढल छाह जागल / घाम मोनमे राखू

घाव गाढ़ नोर जागल / नोर मोनमे राखू

राह बन्द पाँव थामल / ठाम मोनमे राखू

भोर आय मोन जागल / आस मोनमे राखू

घर मौन दीप बालल / धाम मोनमे राखू

ठोर बन्द गप जागल / मीत मोनमे राखू

मोन मौन नाम जागल / नाम मोनमे राखू

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास
२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६४४ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५८–६२ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, बाँसुरी, सारंगी, मन्द तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “गाम दूर गीत जागल / गाम मोनमे राखू” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन नाम जागल / नाम मोनमे राखू” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: नाम, गाम आ स्मृतिक संयत आत्मीयता; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६४५ — प्रीत फेरो जागल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत) · रदीफ: फेरो जागल
मीत दूर नेह जागल / मीत फेरो जागल

डोर टूट नेह जागल / प्रीत फेरो जागल

रात ढल भोर आयल / नोर फेरो जागल

गीत थाम मोन जागल / गीत फेरो जागल

ठोर बन्द गप जागल / नाम फेरो जागल

राह बन्द पाँव थामल / रीत फेरो जागल

धूप आय फूल जागल / आस फेरो जागल

गाम दूर नाम जागल / मीत फेरो जागल

चान चढ़ मोन जागल / नेह फेरो जागल

साँस मंद मोन जागल / प्रीत फेरो जागल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६४५ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ६०–६४ · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): अकूस्टिक गिटार, पियानो, सारंगी, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। "डोर टूट नेह जागल / प्रीत फेरो जागल" एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: "साँस मंद मोन जागल / प्रीत फेरो जागल" दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: प्रीत, गीत आ नटूटल नेहक पुनर्जागरण; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६४६ — ध्यान मोनमे राखू

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, गान, प्राण) · रदीफ: मोनमे राखू
साँच बोल मोन जागल / मान मोनमे राखू

ग्रन्थ बन्द दीप बालल / ज्ञान मोनमे राखू

मीत दूर नेह जागल / नेह मोनमे राखू

चान चढ़ मोन जागल / ध्यान मोनमे राखू

गीत थाम नोर जागल / नोर मोनमे राखू

मीत दूर गीत जागल / गान मोनमे राखू

साँस मंद मोन जागल / आस मोनमे राखू

राह बन्द पाँव थामल / प्राण मोनमे राखू

मेह आय गाछ जागल / मीत मोनमे राखू

साँच बोल नेह जागल / मान मोनमे राखू

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास
२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६४६ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५६–६० · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, पियानो, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “ग्रन्थ बन्द दीप बालल / ज्ञान मोनमे राखू” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “साँच बोल नेह जागल / मान मोनमे राखू” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: मान, ज्ञान, ध्यान आ प्राणक भीतरी अनुशासन; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६४७ — मीत मोनमे खोजू

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत) · रदीफ: मोनमे खोजू

घर सून्न नाम जागल / मीत मोनमे खोजू

मीत दूर नेह जागल / प्रीत मोनमे खोजू

रात गाढ़ चान आयल / भोर मोनमे खोजू

गीत थाम सोर जागल / गीत मोनमे खोजू

घाव गाढ़ नोर जागल / नोर मोनमे खोजू

राह बन्द पाँव थामल / रीत मोनमे खोजू

धूप आय फूल जागल / आस मोनमे खोजू

गाम दूर नाम जागल / मीत मोनमे खोजू

धूप ढल छाह जागल / नाम मोनमे खोजू

साँझ ढल दीप बालल / प्रीत मोनमे खोजू

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६४७ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मुक्त लय सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, मन्द पियानो, सेलो, विरल तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर नेह जागल / प्रीत मोनमे खोजू” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “साँझ ढल दीप बालल / प्रीत मोनमे खोजू” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरहमे मीत, प्रीत आ गीतक भीतरी खोज; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६४८ — गाम मोनमे देखू

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: मोनमे देखू

मीत दूर नाम जागल / नाम मोनमे देखू

गाम दूर गीत जागल / गाम मोनमे देखू

चान चढ़ रात जागल / भोर मोनमे देखू

धूप ढल छाह जागल / घाम मोनमे देखू

घाव गाढ़ नोर जागल / नोर मोनमे देखू

पथ दूर पाँव थामल / ठाम मोनमे देखू

मेह आय पात डोलल / आस मोनमे देखू

घर मौन दीप बालल / धाम मोनमे देखू

ठोर बन्द गप जागल / मीत मोनमे देखू

मोन मौन नाम जागल / नाम मोनमे देखू

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६४८ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ६०–६४ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): अकूस्टिक गिटार, सारंगी, पियानो, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। "गाम दूर गीत जागल / गाम मोनमे देखू" एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: "मोन मौन नाम जागल / नाम मोनमे देखू" दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: गाम, नाम, ठाम आ दूर भऽ गेल दृश्यसभक स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६४९ — नोर मोनमे राखू

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर) · रदीफ: मोनमे राखू

रात गाढ़ चान आयल / नोर मोनमे राखू
रात ढल भोर आयल / भोर मोनमे राखू
मीत दूर नेह जागल / नेह मोनमे राखू
डोर टूट नेह जागल / डोर मोनमे राखू
घाव गाढ़ नोर जागल / आस मोनमे राखू
गीत थाम सोर जागल / सोर मोनमे राखू
मेह आय गाम जागल / गीत मोनमे राखू
चान ढल भोर आयल / भोर मोनमे राखू
गाम दूर नाम जागल / मीत मोनमे राखू
मोन मौन नोर आयल / नोर मोनमे राखू

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६४९ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५८–६२ · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, पियानो, बाँसुरी, मन्द तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “रात ढल भोर आयल / भोर मोनमे राखू” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन नोर आयल / नोर मोनमे राखू” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: नोर, भोर, डोर आ मौन सोरक भीतरी स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६५० — ज्ञान फेरो जागल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: –ान (ज्ञान, ध्यान, गान, प्राण, मान) · रदीफ: फेरो जागल
ग्रन्थ बन्द दीप बालल / ज्ञान फेरो जागल

चान चढ़ मोन जागल / ध्यान फेरो जागल

मीत दूर नेह जागल / प्रीत फेरो जागल

गीत थाम सोर जागल / गान फेरो जागल

नोर थाम भोर आयल / आस फेरो जागल

साँस मंद मोन जागल / प्राण फेरो जागल

धूप आय फूल जागल / नेह फेरो जागल

साँच बोल मोन जागल / मान फेरो जागल

राह बन्द पाँव थामल / मीत फेरो जागल

घर मौन दीप बालल / ध्यान फेरो जागल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६५० — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५६–६० · ताल: मुक्त लय सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, मन्द बास, विरल तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “चान चढ़ मोन जागल / ध्यान फेरो जागल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “घर मौन दीप बालल / ध्यान फेरो जागल” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: ज्ञान, ध्यान, गान आ प्राणक मन्द पुनर्जागरण; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६५१ — प्रीत मोनमे राखू

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत) · रदीफ: मोनमे राखू

घर सून्न नाम जागल / मीत मोनमे राखू

मीत दूर नेह जागल / प्रीत मोनमे राखू

भोर आय मोन जागल / आस मोनमे राखू

गीत थाम सोर जागल / गीत मोनमे राखू

ठोर बन्द गप जागल / नाम मोनमे राखू

राह बन्द पाँव थामल / रीत मोनमे राखू

घाव गाढ़ नोर जागल / नोर मोनमे राखू

गाम दूर नाम जागल / मीत मोनमे राखू

मेह आय गाछ जागल / नेह मोनमे राखू

साँझ ढल दीप बालल / प्रीत मोनमे राखू

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६५१ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: धीमा दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, बाँसुरी, हलुक तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मीत दूर नेह जागल / प्रीत मोनमे राखू” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “साँझ ढल दीप बालल / प्रीत मोनमे राखू” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: मीत, प्रीत, गीत आ रीतक संयत विरह-स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६५२ — नोर मोनमे खोजू

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०
काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर) · रदीफ: मोनमे खोजू

रात गाढ़ चान आयल / नोर मोनमे खोजू

रात ढल भोर आयल / भोर मोनमे खोजू

मीत दूर नेह जागल / नेह मोनमे खोजू

डोर टूट नेह जागल / डोर मोनमे खोजू

घाव गाढ़ नोर जागल / आस मोनमे खोजू

गीत थाम सोर जागल / सोर मोनमे खोजू

गाम दूर नाम जागल / मीत मोनमे खोजू

चान ढल भोर आयल / भोर मोनमे खोजू

धूप आय फूल जागल / नाम मोनमे खोजू

मोन मौन नोर आयल / नोर मोनमे खोजू

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६५२ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५६–६० · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला

आरम्भ (intro): ८ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर अत्यन्त निकट आ संयत, ताल धीरे प्रवेश करय।

मतला: पहिल मिसराक मध्य-यति पर २ मात्रा विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “रात ढल भोर आयल / भोर मोनमे खोजू” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा राखू; पहिल मिसरा बाद १ मात्रा विराम (pause), दोसर मिसरामे शब्द स्पष्ट—अनावश्यक तान नहि।

तेसर शेर: ४ मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; रदीफक अन्तिम धुन-अंश (phrase) थोड़ा लम्बा राखू।

चारिम शेर: ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान। दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर २ मात्रा रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन नोर आयल / नोर मोनमे खोजू” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: नोर, भोर आ नफेरायल डोरक भीतरी खोज; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६५३ — नोर मोन संग छल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर, छोर) · रदीफ: मोन संग छल

दिन ढल गेल, मोन सून्न / ओ नोर मोन संग छल

घर सून्न छल, दीप मौन / ओ भोर मोन संग छल

नेह गाढ़ छल, मीत दूर / घाव मौन, निन्न फेर दूर

डोर टूट गेल, मोन सून्न / ओ डोर मोन संग छल

मेह थम गेल, गाम मौन / नाम संग, नोर फेर आय

गीत बन्द छल, सोर मौन / ओ सोर मोन संग छल

चान दूर छल, साँझ मौन / ठोर बन्द, गप फेर मौन

आस टूट गेल, राह बन्द / ओ छोर मोन संग छल

नाम संग छल, मीत दूर / घाव गाढ़, निन्न फेर दूर

हम चुप छल, मीत दूर / ओ नोर मोन संग छल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६५३ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “घर सून्न छल, दीप मौन / ओ भोर मोन संग छल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया साफ उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम चुप छल, मीत दूर / ओ नोर मोन संग छल” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: नोर, भोर, टूटल डोर आ चुप विरहक भीतरू संगति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६५४ — नाम मोन बीच छल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: मोन बीच छल

साँझ ढल गेल, चान दूर / ओ नाम मोन बीच छल

मेह थम गेल, गाम मौन / ओ गाम मोन बीच छल

रौद ढल गेल, छाह गाढ़ / दीप मन्द, घर फेर मौन

नेह गाढ़ छल, मीत दूर / ओ घाम मोन बीच छल

राह बन्द छल, पाँव थाम / आस सून्न, निन्न फेर दूर

घर सून्न छल, दीप मौन / ओ ठाम मोन बीच छल

गीत बन्द छल, सोर मौन / नाम संग, नोर फेर आय

दिन ढल गेल, मोन सून्न / ओ धाम मोन बीच छल

ठोर बन्द छल, गप मौन / नेह गाढ़, मीत फेर दूर

हम चुप छल, नाम संग / ओ नाम मोन बीच छल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६५४ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मेह थम गेल, गाम मौन / ओ गाम मोन बीच छल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया साफ उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम चुप छल, नाम संग / ओ नाम मोन बीच छल” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: नाम, गाम, घाम आ घरक स्मृति—मोनक भीतर टिकि रहल दूरी; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६५५ — मीत फेर दूर गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०

काफिया: –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत) · रदीफ: फेर दूर गेल

नेह गाढ़ छल, मीत दूर / ओ मीत फेर दूर गेल
गीत बन्द छल, सोर मौन / ओ प्रीत फेर दूर गेल
दिन ढल गेल, मोन सून्न / नाम संग, नोर फेर आय
घर सून्न छल, दीप मौन / ओ गीत फेर दूर गेल
आस टूट गेल, राह बन्द / पाँव थाम, निन्न फेर दूर
चान दूर छल, साँझ मौन / ओ रीत फेर दूर गेल
मेह थम गेल, गाम मौन / घाव गाढ़, गप फेर मौन
डोर टूट गेल, मोन सून्न / ओ मीत फेर दूर गेल
नाम संग छल, नेह गाढ़ / ठोर बन्द, नोर फेर आय
हम चुप छल, मीत दूर / ओ प्रीत फेर दूर गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६५५ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “गीत बन्द छल, सोर मौन / ओ प्रीत फेर दूर गेल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया साफ उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम चुप छल, मीत दूर / ओ प्रीत फेर दूर गेल” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: मीतक दूरी, प्रीतक कसक आ मौन गीतक टूटैत प्रतिध्वनि; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६५६ — नाम मोन संग छल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: मोन संग छल

घर सून्न छल, दीप मौन / ओ नाम मोन संग छल

मेह थम गेल, गाम मौन / ओ गाम मोन संग छल

रौद ढल गेल, छाह गाढ़ / मीत दूर, नेह फेर गाढ़

दिन ढल गेल, मोन सून्न / ओ घाम मोन संग छल

ठोर बन्द छल, गप मौन / नोर संग, घाव फेर गाढ़

राह बन्द छल, पाँव थाम / ओ ठाम मोन संग छल

गीत बन्द छल, सोर मौन / नाम संग, निन्न फेर दूर

चान दूर छल, साँझ मौन / ओ धाम मोन संग छल

नेह गाढ़ छल, मीत दूर / घाव मौन, नोर फेर आय

हम चुप छल, नाम संग / ओ नाम मोन संग छल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६५६ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मेह थम गेल, गाम मौन / ओ गाम मोन संग छल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया साफ उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम चुप छल, नाम संग / ओ नाम मोन संग छल” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: नामक संगति, दूर गाम आ स्मृतिमे बचल उजास; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६५७ — प्रीत मोन बीच छल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०

काफिया: –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत) · रदीफ: मोन बीच छल

साँझ ढल गेल, चान दूर / ओ मीत मोन बीच छल
घर सून्न छल, दीप मौन / ओ प्रीत मोन बीच छल
नेह गाढ़ छल, मीत दूर / घाव मौन, निन्न फेर दूर
गीत बन्द छल, सोर मौन / ओ गीत मोन बीच छल
दिन ढल गेल, मोन सून्न / नाम संग, नोर फेर आय
राह बन्द छल, पाँव थाम / ओ रीत मोन बीच छल
मेह थम गेल, गाम मौन / आस सून्न, राह फेर बन्द
डोर टूट गेल, मोन सून्न / ओ मीत मोन बीच छल
ठोर बन्द छल, गप मौन / नेह गाढ़, मीत फेर दूर
हम चुप छल, गीत मौन / ओ प्रीत मोन बीच छल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६५७ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “घर सून्न छल, दीप मौन / ओ प्रीत मोन बीच छल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया साफ उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम चुप छल, गीत मौन / ओ प्रीत मोन बीच छल” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: प्रीत, मीत आ गीत—बाहरक दूरीक बीच मोनमे बचल समीपता; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६५८ — गाम फेर दूर गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: फेर दूर गेल

दिन ढल गेल, मोन सून्न / ओ नाम फेर दूर गेल

मेह थम गेल, गाम मौन / ओ गाम फेर दूर गेल

रौद ढल गेल, छाह गाढ़ / दीप मन्द, घर फेर मौन

चान दूर छल, साँझ मौन / ओ घाम फेर दूर गेल

नेह गाढ़ छल, मीत दूर / नोर संग, घाव फेर गाढ़

राह बन्द छल, पाँव थाम / ओ ठाम फेर दूर गेल

गीत बन्द छल, सोर मौन / आस सून्न, निन्न फेर दूर

घर सून्न छल, दीप मौन / ओ धाम फेर दूर गेल

ठोर बन्द छल, गप मौन / नाम संग, नोर फेर आय

हम चुप छल, मीत दूर / ओ नाम फेर दूर गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६५८ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मेह थम गेल, गाम मौन / ओ गाम फेर दूर गेल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया साफ उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम चुप छल, मीत दूर / ओ नाम फेर दूर गेल” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: गाम, ठाम, घाम आ नामक धीरे-धीरे दूर पड़ैत स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६५९ — नोर फेर मोन आय

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर, छोर) · रदीफ: फेर मोन आय

घर सून्न छल, दीप मौन / ओ नोर फेर मोन आय
चान दूर छल, साँझ मौन / ओ भोर फेर मोन आय
नेह गाढ़ छल, मीत दूर / घाव मौन, निन्न फेर दूर
डोर टूट गेल, मोन सून्न / ओ डोर फेर मोन आय
गीत बन्द छल, सोर मौन / नाम संग, नोर फेर आय
मेह थम गेल, गाम मौन / ओ सोर फेर मोन आय
राह बन्द छल, पाँव थाम / आस सून्न, निन्न फेर दूर
दिन ढल गेल, मोन सून्न / ओ छोर फेर मोन आय
ठोर बन्द छल, गप मौन / नेह गाढ़, मीत फेर दूर
हम चुप छल, मीत दूर / ओ नोर फेर मोन आय

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६५९ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “चान दूर छल, साँझ मौन / ओ भोर फेर मोन आय” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया साफ उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम चुप छल, मीत दूर / ओ नोर फेर मोन आय” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: नोर, भोर आ टूटल डोरक अचानक लौटैत स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६६० — मान मोन बीच छल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, गान, प्राण, दान) · रदीफ: मोन बीच छल

दिन ढल गेल, मोन मौन / ओ मान मोन बीच छल
गीत बन्द छल, राग मौन / ओ ज्ञान मोन बीच छल
नेह गाढ़ छल, मीत दूर / घाव संग, मान फेर जाग
राह बन्द छल, पाँव थाम / ओ ध्यान मोन बीच छल
रौद ढल गेल, छाह गाढ़ / दीप मन्द, घर फेर मौन
साँझ ढल गेल, चान दूर / ओ गान मोन बीच छल
आस टूट गेल, राह बन्द / साँच संग, प्राण फेर जाग
घर सून्न छल, दीप मौन / ओ प्राण मोन बीच छल
ज्ञान मौन छल, ध्यान पास / दान मौन, मान फेर जाग
हम चुप छल, मोन मौन / ओ दान मोन बीच छल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६६० — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “गीत बन्द छल, राग मौन / ओ ज्ञान मोन बीच छल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया साफ उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम चुप छल, मोन मौन / ओ दान मोन बीच छल” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: विरहक भीतर मान, ध्यान, गान आ प्राणक शान्त जीवन-दर्शन; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६६१ — नाम फेर लग छल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: फेर लग छल

घर सून्न छल, दीप मौन / ओ नाम फेर लग छल

मेह थम गेल, गाम मौन / ओ गाम फेर लग छल

रौद ढल गेल, छाह गाढ़ / नेह संग, नोर फेर आय

दिन ढल गेल, मोन सून्न / ओ घाम फेर लग छल

राह बन्द छल, पाँव थाम / आस संग, मीत फेर दूर

ठोर बन्द छल, गप मौन / ओ ठाम फेर लग छल

गीत बन्द छल, सोर मौन / नाम संग, निन्न फेर दूर

चान दूर छल, साँझ मौन / ओ धाम फेर लग छल

नेह गाढ़ छल, मीत दूर / घाव मौन, नोर फेर आय

हम चुप छल, नाम संग / ओ नाम फेर लग छल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६६१ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मेह थम गेल, गाम मौन / ओ गाम फेर लग छल” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया साफ उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम चुप छल, नाम संग / ओ नाम फेर लग छल” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: दूर भेल वस्तुसभ फेर मोनक लग अबैत-जकाँ अनुभव; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६६२ — मीत साँझ संग आय

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति: १०+१०

काफिया: –ीत (मीत, प्रीत, गीत, रीत) · रदीफ: साँझ संग आय

चान दूर छल, साँझ मौन / ओ मीत साँझ संग आय
गीत बन्द छल, सोर मौन / ओ प्रीत साँझ संग आय
घर सून्न छल, दीप मौन / नाम संग, नोर फेर आय
नेह गाढ़ छल, मीत दूर / ओ गीत साँझ संग आय
मेह थम गेल, गाम मौन / घाव गाढ़, निन्न फेर दूर
दिन ढल गेल, मोन सून्न / ओ रीत साँझ संग आय
राह बन्द छल, पाँव थाम / आस सून्न, राह फेर बन्द
डोर टूट गेल, मोन सून्न / ओ मीत साँझ संग आय
ठोर बन्द छल, गप मौन / नेह गाढ़, नोर फेर आय
हम चुप छल, मीत दूर / ओ प्रीत साँझ संग आय

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+२ · यति १०+१०

गजल ६६२ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “गीत बन्द छल, सोर मौन / ओ प्रीत साँझ संग आय” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया साफ उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम चुप छल, मीत दूर / ओ प्रीत साँझ संग आय” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: साँझक संग लौटैत मीत, प्रीत, गीत आ पुरान रीतक स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६६३ — ओ नाम मोन संग अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: मोन संग अछि

रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ नाम मोन संग अछि
भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ गाम मोन संग अछि
घर सून्न, दीप मन्द अछि / नेह गाढ़, नोर संग अछि
रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ घाम मोन संग अछि
ठोर बन्द, गप मौन अछि / नाम पास, मीत दूर अछि
साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ ठाम मोन संग अछि
दुख गाढ़, सुख दूर अछि / आस मन्द, प्राण धीर अछि
गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ धाम मोन संग अछि
डोर ढील, नेह गाढ़ अछि / नोर मौन, मोन सून्न अछि
हम मौन, नाम पास अछि / ओ नाम मोन संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६६३ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ गाम मोन संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम मौन, नाम पास अछि / ओ नाम मोन संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: नाम, गाम आ पुरन ठामक भीतर टिकि रहल विरह-स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६६४ — ओ डोर मोन पास अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर, छोर) · रदीफ: मोन पास अछि

रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ नोर मोन पास अछि

भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ भोर मोन पास अछि

नेह गाढ़, मीत दूर अछि / डोर ढील, घाव गाढ़ अछि

घर सून्न, दीप मन्द अछि / ओ डोर मोन पास अछि

ठोर बन्द, गप मौन अछि / नाम पास, निन्न दूर अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ सोर मोन पास अछि

दुख गाढ़, सुख दूर अछि / आस मन्द, प्राण धीर अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ छोर मोन पास अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / नोर मौन, मोन सून्न अछि

हम मौन, मीत दूर अछि / ओ नोर मोन पास अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६६४ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ भोर मोन पास अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम मौन, मीत दूर अछि / ओ नोर मोन पास अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: टूटैत दूरीक बीच नोर, भोर आ डोरक निकट स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६६५ — ओ नेह मोन बीच अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ेह (नेह, देह, मेह, गेह) · रदीफ: मोन बीच अछि

नाम पास, मीत दूर अछि / ओ नेह मोन बीच अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ देह मोन बीच अछि

रात मौन, मोन सून्न अछि / नोर मौन, घाव गाढ़ अछि

भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ मेह मोन बीच अछि

घर सून्न, दीप मन्द अछि / नेह गाढ़, मीत दूर अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ गेह मोन बीच अछि

ठोर बन्द, गप मौन अछि / नाम पास, निन्न दूर अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ नेह मोन बीच अछि

डोर ढील, आस मन्द अछि / दुख गाढ़, सुख दूर अछि

हम मौन, नाम पास अछि / ओ देह मोन बीच अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६६५ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ देह मोन बीच अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम मौन, नाम पास अछि / ओ देह मोन बीच अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: देहक दूरी पार नेह, मेह आ गेहक भीतरी उपस्थिति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६६६ — अहाँक नाम, निन्न दूर अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: निन्न दूर अछि

रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ नाम निन्न दूर अछि

भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ गाम निन्न दूर अछि

घर सून्न, दीप मन्द अछि / नाम पास, नोर संग अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ घाम निन्न दूर अछि

ठोर बन्द, गप मौन अछि / नेह गाढ़, घाव मौन अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ ठाम निन्न दूर अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / आस मन्द, प्राण धीर अछि

डोर ढील, मोन सून्न अछि / ओ धाम निन्न दूर अछि

दुख गाढ़, सुख दूर अछि / मीत दूर, नाम पास अछि

हम मौन, नाम पास अछि / ओ नाम निन्न दूर अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६६६ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ गाम निन्न दूर अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम मौन, नाम पास अछि / ओ नाम निन्न दूर अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: राति, नाम आ जागरणक विरह—निन्नक लगातार दूर होइत रहब; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६६७ — ई सोर नोर संग अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ोर (सोर, भोर, डोर, छोर) · रदीफ: नोर संग अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ सोर नोर संग अछि

भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ भोर नोर संग अछि

रात मौन, मोन सून्न अछि / नाम पास, मीत दूर अछि

डोर ढील, नेह गाढ़ अछि / ओ डोर नोर संग अछि

घर सून्न, दीप मन्द अछि / घाव गाढ़, गप मौन अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ छोर नोर संग अछि

ठोर बन्द, मोन मौन अछि / आस मन्द, प्राण धीर अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ सोर नोर संग अछि

दुख गाढ़, सुख दूर अछि / मीत दूर, नाम पास अछि

हम मौन, मोन सून्न अछि / ओ सोर नोर संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६६७ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ भोर नोर संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम मौन, मोन सून्न अछि / ओ सोर नोर संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: पुरन सोर सुनिते नोरक चुपचाप लौटि आबयब; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६६८ — नोर मौन, नेह गाढ़ अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर, छोर) · रदीफ: नेह गाढ़ अछि

रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ नोर नेह गाढ़ अछि

भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ भोर नेह गाढ़ अछि

घर सून्न, दीप मन्द अछि / नाम पास, मीत दूर अछि

डोर ढील, मोन मौन अछि / ओ डोर नेह गाढ़ अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / नोर मौन, घाव गाढ़ अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ सोर नेह गाढ़ अछि

ठोर बन्द, गप मौन अछि / आस मन्द, प्राण धीर अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ छोर नेह गाढ़ अछि

दुख गाढ़, सुख दूर अछि / नाम पास, निन्न दूर अछि

हम मौन, मीत दूर अछि / ओ नोर नेह गाढ़ अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६६८ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ भोर नेह गाढ़ अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम मौन, मीत दूर अछि / ओ नोर नेह गाढ़ अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: मौन नोरक भीतर कम नहि भेल नेहक गाढ़ता; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६६९ — नेह एखनो मोन संग अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ेह (नेह, देह, मेह, गेह) · रदीफ: मोन संग अछि

दिन मौन, मोन सून्न अछि / ओ नेह मोन संग अछि

साँझ मौन, देह मौन अछि / ओ देह मोन संग अछि

नाम पास, मीत दूर अछि / नोर मौन, घाव गाढ़ अछि

भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ मेह मोन संग अछि

घर सून्न, दीप मन्द अछि / आस मन्द, प्राण धीर अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ गेह मोन संग अछि

ठोर बन्द, गप मौन अछि / नेह गाढ़, मीत दूर अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ नेह मोन संग अछि

डोर ढील, मोन सून्न अछि / नाम पास, निन्न दूर अछि

हम मौन, नाम पास अछि / ओ नेह मोन संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६६९ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “साँझ मौन, देह मौन अछि / ओ देह मोन संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम मौन, नाम पास अछि / ओ नेह मोन संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: समय बीतलाक बादो नेहक मोनसँ नहि छुटल संगति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६७० — पुरन सोर घर बीच अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ोर (सोर, भोर, डोर, छोर, नोर) · रदीफ: घर बीच अछि

रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ सोर घर बीच अछि

भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ भोर घर बीच अछि

घर सून्न, दीप मन्द अछि / नाम पास, नोर संग अछि

डोर ढील, नेह गाढ़ अछि / ओ डोर घर बीच अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / गप मौन, मीत दूर अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ छोर घर बीच अछि

ठोर बन्द, मोन मौन अछि / घाव गाढ़, आस मन्द अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ सोर घर बीच अछि

दुख गाढ़, सुख दूर अछि / नाम पास, निन्न दूर अछि

हम मौन, मीत दूर अछि / ओ नोर घर बीच अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६७० — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ भोर घर बीच अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम मौन, मीत दूर अछि / ओ नोर घर बीच अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: घर सून्न भेलहुँ पुरन सोरक भीतर बसल रहि जाएब; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६७१ — अहाँक नाम आबो पास अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: आब पास अछि

रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ नाम आब पास अछि
भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ गाम आब पास अछि
घर सून्न, दीप मन्द अछि / नेह गाढ़, नोर संग अछि
रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ घाम आब पास अछि
ठोर बन्द, गप मौन अछि / नाम पास, मीत दूर अछि
साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ ठाम आब पास अछि
गीत मौन, सुर मन्द अछि / आस मन्द, प्राण धीर अछि
डोर ढील, मोन सून्न अछि / ओ धाम आब पास अछि
दुख गाढ़, सुख दूर अछि / नोर मौन, घाव गाढ़ अछि
हम मौन, नाम पास अछि / ओ नाम आब पास अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६७१ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ गाम आब पास अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “हम मौन, नाम पास अछि / ओ नाम आब पास अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: समय बीतलाक बादो नामक निकटता आ मीतक दूरी; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६७२ — पुरन दुआरि फेर मोन पड़ल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ार (पार, हार, तार, सार, धार) · रदीफ: मोन पास अछि

घर सून्न, दीप मन्द अछि / ओ पार मोन पास अछि

रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ हार मोन पास अछि

नाम पास, मीत दूर अछि / नेह गाढ़, नोर संग अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ तार मोन पास अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / घाव गाढ़, गप मौन अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ सार मोन पास अछि

डोर ढील, आस मन्द अछि / दुख गाढ़, सुख दूर अछि

भोर मन्द, गाम मौन अछि / ओ धार मोन पास अछि

ठोर बन्द, मोन मौन अछि / नाम पास, निन्न दूर अछि

हम मौन, घर सून्न अछि / ओ पार मोन पास अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६७२ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। "रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ हार मोन पास अछि" एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: "हम मौन, घर सून्न अछि / ओ पार मोन पास अछि" दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: पुरन दुआरिक स्मृतिसँ उठैत पार, हार, तार, सार आ धारक बिम्ब; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६७३ — बुझल दीपक उजियार

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ार (पार, हार, तार, सार, धार) · रदीफ: मोन बीच अछि

दीप मौन, छाह गाढ़ अछि / ओ पार मोन बीच अछि

रात गाढ़, भोर दूर अछि / ओ हार मोन बीच अछि

घर सून्न, नाम पास अछि / नेह गाढ़, मीत दूर अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ तार मोन बीच अछि

मेघ गाढ़, चान दूर अछि / रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि

दुख गाढ़, सुख दूर अछि / ओ सार मोन बीच अछि

ताल मौन, घाट सून्न अछि / नाव ठाढ़, डोर ढील अछि

नोर मौन, ठोर बन्द अछि / ओ धार मोन बीच अछि

फूल मौन, रंग मन्द अछि / गन्ध दूर, नेह गाढ़ अछि

मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ पार मोन बीच अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६७३ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “रात गाढ़, भोर दूर अछि / ओ हार मोन बीच अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ पार मोन बीच अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: बुझल दीपक बादो भीतर बचल उजियार, हार-पार आ स्मृतिक धीम स्वर; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६७४ — मौनक सोर भीतर जागल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, ठोर, डोर, छोर) · रदीफ: मोन संग अछि

रात गाढ़, निन्न दूर अछि / ओ सोर मोन संग अछि
भोर दूर, साँझ पास अछि / ओ भोर मोन संग अछि
गीत मौन, सुर मन्द अछि / ठोर बन्द, नोर मौन अछि
नाम पास, मीत दूर अछि / ओ नोर मोन संग अछि
ताल मौन, घाट सून्न अछि / नाव ठाढ़, डोर ढील अछि
डोर ढील, नेह गाढ़ अछि / ओ ठोर मोन संग अछि
रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / दुख गाढ़, सुख दूर अछि
घर सून्न, दीप मौन अछि / ओ डोर मोन संग अछि
आस मन्द, प्राण धीर अछि / नाम पास, मीत दूर अछि
मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ छोर मोन संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६७४ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “भोर दूर, साँझ पास अछि / ओ भोर मोन संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ छोर मोन संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: मौनक भीतर उठैत सोर, दूर मीत आ नहि टूटल नेहक डोर; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६७५ — दूर गेलहुँ तऽ नेह बुझलहुँ

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ेह (नेह, देह, गेह, मेह) · रदीफ: आब पास अछि

मीत दूर, नाम पास अछि / ओ नेह आब पास अछि
साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ देह आब पास अछि
घर सून्न, दीप मौन अछि / नेह गाढ़, घाव मौन अछि
रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ गेह आब पास अछि
नोर मौन, ठोर बन्द अछि / दुख गाढ़, सुख दूर अछि
मेघ गाढ़, भोर दूर अछि / ओ मेह आब पास अछि
डोर ढील, नेह गाढ़ अछि / आस मन्द, प्राण धीर अछि
गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ नेह आब पास अछि
रात गाढ़, निन्न दूर अछि / नाम पास, मीत दूर अछि
मोन मौन, घाव गाढ़ अछि / ओ देह आब पास अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६७५ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ देह आब पास अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन, घाव गाढ़ अछि / ओ देह आब पास अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: दूरीक बाद बुझायल नेह, देहक अनुपस्थिति आ गेहक भीतरी निकटता; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६७६ — मौनक तान भीतर बजैत रहल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ान (तान, गान, प्राण, ध्यान, मान) · रदीफ: मोन संग अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ तान मोन संग अछि

रात गाढ़, निन्न दूर अछि / ओ गान मोन संग अछि

देह मौन, नेह गाढ़ अछि / आस मन्द, प्राण धीर अछि

मीत दूर, नाम पास अछि / ओ प्राण मोन संग अछि

दीप मौन, छाह गाढ़ अछि / रौद मन्द, भोर दूर अछि

ठोर बन्द, नोर मौन अछि / ओ ध्यान मोन संग अछि

घर सून्न, भीत मौन अछि / नेह गाढ़, डोर ढील अछि

दुख गाढ़, सुख दूर अछि / ओ मान मोन संग अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / गीत मौन, सुर मन्द अछि

मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ तान मोन संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६७६ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “रात गाढ़, निन्न दूर अछि / ओ गान मोन संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ तान मोन संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: बिनु उच्च स्वरक भीतर बजैत तान, प्राणक धीरता आ स्मृतिक ध्यान; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६७७ — अन्हारक भोर ककरो नहि देखायल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ोर (भोर, सोर, नोर, ठोर, डोर, छोर) · रदीफ: लोक बीच अछि

रात गाढ़, भोर दूर अछि / ओ भोर लोक बीच अछि

मौन गाढ़, ठोर बन्द अछि / ओ सोर लोक बीच अछि

लोक पास, मोन सून्न अछि / नाम पास, मीत दूर अछि

ठोर मौन, नोर गाढ़ अछि / ओ नोर लोक बीच अछि

डोर ढील, नेह गाढ़ अछि / मीत दूर, नाम पास अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ ठोर लोक बीच अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / दुख गाढ़, सुख दूर अछि

घर सून्न, दीप मौन अछि / ओ डोर लोक बीच अछि

आस मन्द, प्राण धीर अछि / निन्न दूर, रात गाढ़ अछि

मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ छोर लोक बीच अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६७७ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “मौन गाढ़, ठोर बन्द अछि / ओ सोर लोक बीच अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ छोर लोक बीच अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: लोकक भीड़मे अनदेखल विरह, मौन ठोर आ भीतरक भोरक सूक्ष्म उजास; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६७८ — मेटल नाम हमरा घर आयल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: घर बीच अछि

नाम मौन, मोन सून्न अछि / ओ नाम घर बीच अछि

गाम दूर, बाट मौन अछि / ओ गाम घर बीच अछि

घर सून्न, भीत मौन अछि / नाम पास, मीत दूर अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / ओ घाम घर बीच अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / नेह गाढ़, डोर ढील अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / ओ ठाम घर बीच अछि

नोर मौन, ठोर बन्द अछि / दुख गाढ़, सुख दूर अछि

भोर दूर, आस मन्द अछि / ओ धाम घर बीच अछि

रात गाढ़, निन्न दूर अछि / नाम पास, मोन मौन अछि

मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ नाम घर बीच अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६७८ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “गाम दूर, बाट मौन अछि / ओ गाम घर बीच अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ नाम घर बीच अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: मेटल नामक फेर घरमे लौटब, गाम-ठामक स्मृति आ सून्न घरक नेह; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६७९ — अन्हार हमरा मोन बुझायल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ार (हार, पार, तार, सार, धार, भार) · रदीफ: मोन संग अछि

दीप मौन, छाह गाढ़ अछि / ओ हार मोन संग अछि
रात गाढ़, भोर दूर अछि / ओ पार मोन संग अछि
घर सून्न, नाम पास अछि / मीत दूर, नेह गाढ़ अछि
गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ तार मोन संग अछि
रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / दुख गाढ़, सुख दूर अछि
आस मन्द, प्राण धीर अछि / ओ सार मोन संग अछि
घाट सून्न, नाव ठाढ़ अछि / डोर ढील, पार दूर अछि
नोर मौन, ठोर बन्द अछि / ओ धार मोन संग अछि
साँझ मौन, चान दूर अछि / निन्न दूर, रात गाढ़ अछि
मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ भार मोन संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६७९ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “रात गाढ़, भोर दूर अछि / ओ पार मोन संग अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ भार मोन संग अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: अन्हारक भीतर भेटैत आत्मबोध—हार, पार, धार आ नेहक भार; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६८० — जे गेल से भीतर रहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, ठोर, डोर, छोर) · रदीफ: मोन बीच अछि

नाम पास, मीत दूर अछि / ओ सोर मोन बीच अछि

रात गाढ़, भोर दूर अछि / ओ भोर मोन बीच अछि

घर सून्न, दीप मौन अछि / नेह गाढ़, डोर ढील अछि

ठोर बन्द, नोर मौन अछि / ओ नोर मोन बीच अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / आस मन्द, प्राण धीर अछि

दुख गाढ़, सुख दूर अछि / ओ ठोर मोन बीच अछि

रौद मन्द, छाह गाढ़ अछि / गीत मौन, सुर मन्द अछि

मीत दूर, नाम पास अछि / ओ डोर मोन बीच अछि

निन्न दूर, रात गाढ़ अछि / घर सून्न, मोन मौन अछि

मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ छोर मोन बीच अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६८० — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “रात गाढ़, भोर दूर अछि / ओ भोर मोन बीच अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ छोर मोन बीच अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: जे दूर गेल से स्मृति, नोर, ठोर आ डोर बनि भीतर रहि गेल; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६८१ — पानि अपन पिआस कहैत रहल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ोर (सोर, नोर, भोर, डोर, ठोर) · रदीफ: साँच गप अछि

रात मौन, मोन सून्न अछि / ओ सोर साँच गप अछि

ठोर मौन, नोर गाढ़ अछि / ओ नोर साँच गप अछि

दीप मौन, छाह गाढ़ अछि / भोर दूर, रात गाढ़ अछि

रौद मन्द, आस मन्द अछि / ओ भोर साँच गप अछि

घाट सून्न, नाव ठाढ़ अछि / पार दूर, डोर ढील अछि

मीत दूर, नाम पास अछि / ओ डोर साँच गप अछि

घर सून्न, भीत मौन अछि / नेह गाढ़, घाव मौन अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ ठोर साँच गप अछि

दुख गाढ़, सुख दूर अछि / प्राण धीर, आस मन्द अछि

मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ सोर साँच गप अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६८१ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो

आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।

मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “ठोर मौन, नोर गाढ़ अछि / ओ नोर साँच गप अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।

दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।

तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।

चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: “मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ सोर साँच गप अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: पानि-पिआसक विरोधाभास, मौनक सोर आ भीतरक साँच गप; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६८२ — सून्न दुआरि एतबे कहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०

काफिया: –ार (पार, हार, तार, सार, धार) · रदीफ: घर बीच अछि

घर सून्न, भीत मौन अछि / ओ पार घर बीच अछि

दीप मौन, छाह गाढ़ अछि / ओ हार घर बीच अछि

नाम पास, मीत दूर अछि / नेह गाढ़, घाव मौन अछि

गीत मौन, सुर मन्द अछि / ओ तार घर बीच अछि

साँझ मौन, चान दूर अछि / डोर ढील, नेह गाढ़ अछि

दुख गाढ़, सुख दूर अछि / ओ सार घर बीच अछि

घाट सून्न, नाव ठाढ़ अछि / पार दूर, धार मौन अछि

नोर मौन, ठोर बन्द अछि / ओ धार घर बीच अछि

रात गाढ़, निन्न दूर अछि / नाम पास, मोन मौन अछि

मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ पार घर बीच अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ६८२ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा
वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, अकूस्टिक गिटार, मन्द तबला, हलुक पियानो
आरम्भ (intro): ६ मात्रा मुक्त वाद्य; मुख्य स्वर निकट, कम अलंकार, शब्द स्पष्ट।
मतला: पहिल मिसराक यति पर छोट विराम (pause); दोसर मिसरा पूरा गाउ। “दीप मौन, छाह गाढ़ अछि / ओ हार घर बीच अछि” एक बेर फेर दोहराउ (repeat); रदीफ पर हलुक मींड।
दोसर शेर: स्वर नीचा आ आत्मीय राखू; पहिल मिसराक बाद एक मात्रा मौन, दोसर मिसरामे काफिया स्पष्ट उच्चारू।
तेसर शेर: चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) धीरे खींचू।
चारिम शेर: ताल हलुक करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक अन्तिम शब्द पर छोट रोक (hold)।
अन्तिम शेर: “मोन मौन, नेह गाढ़ अछि / ओ पार घर बीच अछि” दू बेर—दोसर बेर केवल स्वर आ एकटा प्रधान वाद्य; अन्त मन्द समापन (fade-out)।
गायन-भाव: सून्न दुआरि, घरक मौन आ नेहक बाँचल भीतर—पार, हार, तार आ धारक बिम्ब; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन (silence), स्वरमे अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६८३ — नेहक बाति रहि जाइत अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१४

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, ठोर, छोर) · रदीफ: मोनमे बाँचल अछि

मोनमे नेह फेर जागल / ओ नोर मोनमे बाँचल अछि

भीतर नाम फेर थामल / ओ सोर मोनमे बाँचल अछि

साँझमे चान फेर डूबल / घरमे छाह फेर गाढ़ भेल अछि

नेहक डोर बड्ड ढील भेल / ओ डोर मोनमे बाँचल अछि

रात घर फेर बड्ड मौन भेल / दीप छाह बीच फेर डूबल अछि

भोरमे राग फेर जागल / ओ भोर मोनमे बाँचल अछि

मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / नाम ठोर बीच फेर थामल अछि

नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ ठोर मोनमे बाँचल अछि

गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि

रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / ओ छोर मोनमे बाँचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१४

गजल ६८३ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; किछु ठाम मुक्त-लय (rubato)

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हलुक तबला, अकूस्टिक गिटार; स्वर निकट आ संयत।

आरम्भ (intro): ६–८ मात्रा विरल वाद्य; पहिल शब्दसँ पहिने छोट मौन (pause), अलंकार न्यून राखू।

मतला: मोनमे नेह फेर जागल / ओ नोर मोनमे बाँचल अछि ॥ भीतर नाम फेर थामल / ओ सोर मोनमे बाँचल अछि — दुनू मिसरा पूरा गाउ; दोसर मिसराक रदीफ एक बेर धीमे दोहराउ (repeat), अन्तमे हलुक मींड।

दोसर शेर: साँझमे चान फेर डूबल / घरमे छाह फेर गाढ़ भेल अछि ॥ नेहक डोर बड्ड ढील भेल / ओ डोर मोनमे बाँचल अछि — पहिल मिसरा गप-जकाँ; दोसर मिसरासँ पहिने एक मात्रा मौन (pause), काफिया स्पष्ट।

तेसर शेर: रात घर फेर बड्ड मौन भेल / दीप छाह बीच फेर डूबल अछि ॥ भोरमे राग फेर जागल / ओ भोर मोनमे बाँचल अछि — चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) नीचे उतरय।

चारिम शेर: मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / नाम ठोर बीच फेर थामल अछि ॥ नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ ठोर मोनमे बाँचल अछि — ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक रदीफ पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि ॥ रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / ओ छोर मोनमे बाँचल अछि — दुनू मिसरा गाउ; दोसर मिसरा फेर एक बेर केवल स्वर-सारंगी संग, तकर बाद मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: दूरीक बादो नेहक बाँचल ताप, सून्न घर, नोर आ स्मृतिक भीतरक सोर; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन, अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६८४ — अन्हार हमरासँ गप करैत अछि

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१४

काफिया: –ार (पार, हार, धार, तार, सार, भार) · रदीफ: भीतर जागल अछि

रात घर फेर बड्ड मौन भेल / ओ पार भीतर जागल अछि

मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / ओ हार भीतर जागल अछि

रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / घरमे दीप फेर जागल अछि

घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / ओ धार भीतर जागल अछि

नेहक डोर बड्ड ढील भेल / रात मोन फेर बड्ड सून्न भेल अछि

चान मेघ बीच फेर डूबल / ओ तार भीतर जागल अछि

भीतर नाम फेर थामल / मीत दूर नाम फेर थामल अछि

गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / ओ सार भीतर जागल अछि

नोर ठोर बीच फेर थामल / साँझमे चान फेर डूबल अछि

मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ भार भीतर जागल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१४

गजल ६८४ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; किछु ठाम मुक्त-लय (rubato)

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हलुक तबला, अकूस्टिक गिटार; स्वर निकट आ संयत।

आरम्भ (intro): ६–८ मात्रा विरल वाद्य; पहिल शब्दसँ पहिने छोट मौन (pause), अलंकार न्यून राखू।

मतला: रात घर फेर बड्ड मौन भेल / ओ पार भीतर जागल अछि ॥ मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / ओ हार भीतर जागल अछि — दुनू मिसरा पूरा गाउ; दोसर मिसराक रदीफ एक बेर धीमे दोहराउ (repeat), अन्तमे हलुक मींड।

दोसर शेर: रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / घरमे दीप फेर जागल अछि ॥ घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / ओ धार भीतर जागल अछि — पहिल मिसरा गप-जकाँ; दोसर मिसरासँ पहिने एक मात्रा मौन (pause), काफिया स्पष्ट।

तेसर शेर: नेहक डोर बड्ड ढील भेल / रात मोन फेर बड्ड सून्न भेल अछि ॥ चान मेघ बीच फेर डूबल / ओ तार भीतर जागल अछि — चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) नीचे उतरय।

चारिम शेर: भीतर नाम फेर थामल / मीत दूर नाम फेर थामल अछि ॥ गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / ओ सार भीतर जागल अछि — ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक रदीफ पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: नोर ठोर बीच फेर थामल / साँझमे चान फेर डूबल अछि ॥ मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ भार भीतर जागल अछि — दुनू मिसरा गाउ; दोसर मिसरा फेर एक बेर केवल स्वर-सारंगी संग, तकर बाद मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: अन्हारक संग आत्म-संवाद, हार-पारक दुविधा, सून्न घर आ भीतर जागल नेह; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन, अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६८५ — नोर हमरा संग जागैत रहल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१४

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, शीत) · रदीफ: नेहमे बाँचल अछि

भोरमे राग फेर जागल / ओ गीत नेहमे बाँचल अछि

भीतर नाम फेर थामल / ओ मीत नेहमे बाँचल अछि

रात मोन फेर बड्ड सून्न भेल / मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल अछि

नेहक डोर बड्ड ढील भेल / ओ प्रीत नेहमे बाँचल अछि

साँझमे चान फेर डूबल / नोर ठोर बीच फेर थामल अछि

गीतक तान फेर जागल / ओ रीत नेहमे बाँचल अछि

घरमे दीप फेर जागल / रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल अछि

मीतक नाम फेर थामल / ओ शीत नेहमे बाँचल अछि

गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि

मोनमे नेह फेर जागल / ओ गीत नेहमे बाँचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१४

गजल ६८५ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; किछु ठाम मुक्त-लय (rubato)

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हलुक तबला, अकूस्टिक गिटार; स्वर निकट आ संयत।

आरम्भ (intro): ६–८ मात्रा विरल वाद्य; पहिल शब्दसँ पहिने छोट मौन (pause), अलंकार न्यून राखू।

मतला: भोरमे राग फेर जागल / ओ गीत नेहमे बाँचल अछि ॥ भीतर नाम फेर थामल / ओ मीत नेहमे बाँचल अछि — दुनू मिसरा पूरा गाउ; दोसर मिसराक रदीफ एक बेर धीमे दोहराउ (repeat), अन्तमे हलुक मींड।

दोसर शेर: रात मोन फेर बड्ड सून्न भेल / मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल अछि ॥ नेहक डोर बड्ड ढील भेल / ओ प्रीत नेहमे बाँचल अछि — पहिल मिसरा गप-जकाँ; दोसर मिसरासँ पहिने एक मात्रा मौन (pause), काफिया स्पष्ट।

तेसर शेर: साँझमे चान फेर डूबल / नोर ठोर बीच फेर थामल अछि ॥ गीतक तान फेर जागल / ओ रीत नेहमे बाँचल अछि — चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) नीचे उतरय।

चारिम शेर: घरमे दीप फेर जागल / रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल अछि ॥ मीतक नाम फेर थामल / ओ शीत नेहमे बाँचल अछि — ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक रदीफ पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि ॥ मोनमे नेह फेर जागल / ओ गीत नेहमे बाँचल अछि — दुनू मिसरा गाउ; दोसर मिसरा फेर एक बेर केवल स्वर-सारंगी संग, तकर बाद मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: निन्नहीन विरह, नोरक जागरण, मीतक स्मृति आ नहि मेटल प्रीतक धीम स्वर; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन, अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६८६ — साँझक बादो घर नहि सुतल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१४

काफिया: –ाम (नाम, गाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: घरमे बाँचल अछि

साँझमे चान फेर डूबल / ओ नाम घरमे बाँचल अछि

घरमे दीप फेर जागल / ओ गाम घरमे बाँचल अछि

मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / रात घर फेर बड्ड मौन भेल अछि

रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / ओ घाम घरमे बाँचल अछि

नेहक डोर बड्ड ढील भेल / भीतर नाम फेर थामल अछि

गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / ओ ठाम घरमे बाँचल अछि

नोर ठोर बीच फेर थामल / भोरमे राग फेर जागल अछि

घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / ओ धाम घरमे बाँचल अछि

मीतक नाम फेर थामल / साँझमे चान फेर डूबल अछि

मोनमे नेह फेर जागल / ओ नाम घरमे बाँचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१४

गजल ६८६ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; किछु ठाम मुक्त-लय (rubato)

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हलुक तबला, अकूस्टिक गिटार; स्वर निकट आ संयत।

आरम्भ (intro): ६–८ मात्रा विरल वाद्य; पहिल शब्दसँ पहिने छोट मौन (pause), अलंकार न्यून राखू।

मतला: साँझमे चान फेर डूबल / ओ नाम घरमे बाँचल अछि ॥ घरमे दीप फेर जागल / ओ गाम घरमे बाँचल अछि — दुनू मिसरा पूरा गाउ; दोसर मिसराक रदीफ एक बेर धीमे दोहराउ (repeat), अन्तमे हलुक मींड।

दोसर शेर: मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / रात घर फेर बड्ड मौन भेल अछि ॥ रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / ओ घाम घरमे बाँचल अछि — पहिल मिसरा गप-जकाँ; दोसर मिसरासँ पहिने एक मात्रा मौन (pause), काफिया स्पष्ट।

तेसर शेर: नेहक डोर बड्ड ढील भेल / भीतर नाम फेर थामल अछि ॥ गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / ओ ठाम घरमे बाँचल अछि — चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) नीचे उतरय।

चारिम शेर: नोर ठोर बीच फेर थामल / भोरमे राग फेर जागल अछि ॥ घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / ओ धाम घरमे बाँचल अछि — ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक रदीफ पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: मीतक नाम फेर थामल / साँझमे चान फेर डूबल अछि ॥ मोनमे नेह फेर जागल / ओ नाम घरमे बाँचल अछि — दुनू मिसरा गाउ; दोसर मिसरा फेर एक बेर केवल स्वर-सारंगी संग, तकर बाद मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: साँझ पछातियो नहि सुतल घर, नामक स्मृति, गाम-ठाम आ भीतर बाँचल अपनपन; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन, अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६८७ — नाम मेटल, सोर नहि मेटल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१४

काफिया: –ोर (सोर, नोर, भोर, ठोर, डोर, छोर) · रदीफ: घरमे जागल अछि

भीतर नाम फेर थामल / ओ सोर घरमे जागल अछि

मोनमे नेह फेर जागल / ओ नोर घरमे जागल अछि

नेहक डोर बड्ड ढील भेल / रात घर फेर बड्ड मौन भेल अछि

भोरमे राग फेर जागल / ओ भोर घरमे जागल अछि

गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि

नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ ठोर घरमे जागल अछि

घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / साँझमे चान फेर डूबल अछि

डोर हाथ बीच फेर ढील भेल / ओ डोर घरमे जागल अछि

रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल अछि

मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ छोर घरमे जागल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१४

गजल ६८७ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; किछु ठाम मुक्त-लय (rubato)
वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हलुक तबला, अकूस्टिक गिटार; स्वर निकट आ संयत।
आरम्भ (intro): ६–८ मात्रा विरल वाद्य; पहिल शब्दसँ पहिने छोट मौन (pause), अलंकार न्यून राखू।
मतला: भीतर नाम फेर थामल / ओ सोर घरमे जागल अछि ॥ मोनमे नेह फेर जागल / ओ नोर घरमे जागल अछि — दुनू मिसरा पूरा गाउ; दोसर मिसराक रदीफ एक बेर धीमे दोहराउ (repeat), अन्तमे हलुक मींड।
दोसर शेर: नेहक डोर बड्ड ढील भेल / रात घर फेर बड्ड मौन भेल अछि ॥ भोरमे राग फेर जागल / ओ भोर घरमे जागल अछि — पहिल मिसरा गप-जकाँ; दोसर मिसरासँ पहिने एक मात्रा मौन (pause), काफिया स्पष्ट।
तेसर शेर: गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि ॥ नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ ठोर घरमे जागल अछि — चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) नीचे उतरय।
चारिम शेर: घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / साँझमे चान फेर डूबल अछि ॥ डोर हाथ बीच फेर ढील भेल / ओ डोर घरमे जागल अछि — ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक रदीफ पर छोट रोक (hold)।
अन्तिम शेर: रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल अछि ॥ मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ छोर घरमे जागल अछि — दुनू मिसरा गाउ; दोसर मिसरा फेर एक बेर केवल स्वर-सारंगी संग, तकर बाद मन्द समापन (fade-out)।
गायन-भाव: मेटल नामक बादो नहि मेटल सोर, ढील डोर आ सून्न घरमे जागल स्मृति; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन, अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६८८ — चान डूबल, नेह नहि डूबल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१४

काफिया: –ान (चान, तान, गान, मान, प्राण) · रदीफ: मोनमे जागल अछि

साँझमे चान फेर डूबल / ओ चान मोनमे जागल अछि

गीतक तान फेर जागल / ओ तान मोनमे जागल अछि

घरमे दीप फेर जागल / रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल अछि

भोरमे राग फेर जागल / ओ गान मोनमे जागल अछि

मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / भीतर नाम फेर थामल अछि

नेहक डोर बड्ड ढील भेल / ओ मान मोनमे जागल अछि

गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि

नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ प्राण मोनमे जागल अछि

घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / पार दूर धार बड्ड गाढ़ भेल अछि

मोनमे नेह फेर जागल / ओ चान मोनमे जागल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१४

गजल ६८८ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; किछु ठाम मुक्त-लय (rubato)

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हलुक तबला, अकूस्टिक गिटार; स्वर निकट आ संयत।

आरम्भ (intro): ६–८ मात्रा विरल वाद्य; पहिल शब्दसँ पहिने छोट मौन (pause), अलंकार न्यून राखू।

मतला: साँझमे चान फेर डूबल / ओ चान मोनमे जागल अछि ॥ गीतक तान फेर जागल / ओ तान मोनमे जागल अछि — दुनू मिसरा पूरा गाउ; दोसर मिसराक रदीफ एक बेर धीमे दोहराउ (repeat), अन्तमे हलुक मींड।

दोसर शेर: घरमे दीप फेर जागल / रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल अछि ॥ भोरमे राग फेर जागल / ओ गान मोनमे जागल अछि — पहिल मिसरा गप-जकाँ; दोसर मिसरासँ पहिने एक मात्रा मौन (pause), काफिया स्पष्ट।

तेसर शेर: मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / भीतर नाम फेर थामल अछि ॥ नेहक डोर बड्ड ढील भेल / ओ मान मोनमे जागल अछि — चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) नीचे उतरय।

चारिम शेर: गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि ॥ नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ प्राण मोनमे जागल अछि — ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक रदीफ पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / पार दूर धार बड्ड गाढ़ भेल अछि ॥ मोनमे नेह फेर जागल / ओ चान मोनमे जागल अछि — दुनू मिसरा गाउ; दोसर मिसरा फेर एक बेर केवल स्वर-सारंगी संग, तकर बाद मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: डूबल चानक विपरीत नहि डूबल नेह, जागल तान-गान आ स्मृतिसँ भरल प्राण; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन, अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६८९ — पार भेटल, मझधार बाँचल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१४

काफिया: –ार (पार, हार, तार, सार, धार, भार) · रदीफ: नेहमे जागल अछि

घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / ओ पार नेहमे जागल अछि
नेहक डोर बड्ड ढील भेल / ओ हार नेहमे जागल अछि
चान मेघ बीच फेर डूबल / रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल अछि
भीतर नाम फेर थामल / ओ तार नेहमे जागल अछि
गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि
मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / ओ सार नेहमे जागल अछि
रात मोन फेर बड्ड सून्न भेल / घरमे दीप फेर जागल अछि
साँझमे चान फेर डूबल / ओ धार नेहमे जागल अछि
नोर ठोर बीच फेर थामल / डोर हाथ बीच फेर ढील भेल अछि
मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ भार नेहमे जागल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१४

गजल ६८९ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; किछु ठाम मुक्त-लय (rubato)

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हलुक तबला, अकूस्टिक गिटार; स्वर निकट आ संयत।

आरम्भ (intro): ६–८ मात्रा विरल वाद्य; पहिल शब्दसँ पहिने छोट मौन (pause), अलंकार न्यून राखू।

मतला: घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / ओ पार नेहमे जागल अछि ॥ नेहक डोर बड्ड ढील भेल / ओ हार नेहमे जागल अछि — दुनू मिसरा पूरा गाउ; दोसर मिसराक रदीफ एक बेर धीमे दोहराउ (repeat), अन्तमे हलुक मींड।

दोसर शेर: चान मेघ बीच फेर डूबल / रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल अछि ॥ भीतर नाम फेर थामल / ओ तार नेहमे जागल अछि — पहिल मिसरा गप-जकाँ; दोसर मिसरासँ पहिने एक मात्रा मौन (pause), काफिया स्पष्ट।

तेसर शेर: गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि ॥ मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / ओ सार नेहमे जागल अछि — चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) नीचे उतरय।

चारिम शेर: रात मोन फेर बड्ड सून्न भेल / घरमे दीप फेर जागल अछि ॥ साँझमे चान फेर डूबल / ओ धार नेहमे जागल अछि — ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक रदीफ पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: नोर ठोर बीच फेर थामल / डोर हाथ बीच फेर ढील भेल अछि ॥ मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ भार नेहमे जागल अछि — दुनू मिसरा गाउ; दोसर मिसरा फेर एक बेर केवल स्वर-सारंगी संग, तकर बाद मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: पार भेटलाक बादो भीतर बचल मझधार, हारक स्मृति, धार आ नेहक भार; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन, अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६९० — सून्न गामक एकटा साँझ

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१४

काफिया: –ाम (गाम, नाम, घाम, ठाम, धाम) · रदीफ: मोनमे बाँचल अछि

गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / ओ गाम मोनमे बाँचल अछि
भीतर नाम फेर थामल / ओ नाम मोनमे बाँचल अछि
साँझमे चान फेर डूबल / घरमे छाह फेर गाढ़ भेल अछि
रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / ओ घाम मोनमे बाँचल अछि
मीतक नाम फेर थामल / रात मोन फेर बड्ड सून्न भेल अछि
घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / ओ ठाम मोनमे बाँचल अछि
नेहक डोर बड्ड ढील भेल / मीत दूर नाम फेर थामल अछि
भोरमे राग फेर जागल / ओ धाम मोनमे बाँचल अछि
घरमे दीप फेर जागल / गाममे बाट फेर सून्न भेल अछि
मोनमे नेह फेर जागल / ओ नाम मोनमे बाँचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१४

गजल ६९० — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; किछु ठाम मुक्त-लय (rubato)

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हलुक तबला, अकूस्टिक गिटार; स्वर निकट आ संयत।

आरम्भ (intro): ६–८ मात्रा विरल वाद्य; पहिल शब्दसँ पहिने छोट मौन (pause), अलंकार न्यून राखू।

मतला: गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / ओ गाम मोनमे बाँचल अछि ॥ भीतर नाम फेर थामल / ओ नाम मोनमे बाँचल अछि — दुनू मिसरा पूरा गाउ; दोसर मिसराक रदीफ एक बेर धीमे दोहराउ (repeat), अन्तमे हलुक मींड।

दोसर शेर: साँझमे चान फेर डूबल / घरमे छाह फेर गाढ़ भेल अछि ॥ रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / ओ घाम मोनमे बाँचल अछि — पहिल मिसरा गप-जकाँ; दोसर मिसरासँ पहिने एक मात्रा मौन (pause), काफिया स्पष्ट।

तेसर शेर: मीतक नाम फेर थामल / रात मोन फेर बड्ड सून्न भेल अछि ॥ घाटपर नाव फेर बड्ड ठाढ़ / ओ ठाम मोनमे बाँचल अछि — चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) नीचे उतरय।

चारिम शेर: नेहक डोर बड्ड ढील भेल / मीत दूर नाम फेर थामल अछि ॥ भोरमे राग फेर जागल / ओ धाम मोनमे बाँचल अछि — ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक रदीफ पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: घरमे दीप फेर जागल / गाममे बाट फेर सून्न भेल अछि ॥ मोनमे नेह फेर जागल / ओ नाम मोनमे बाँचल अछि — दुनू मिसरा गाउ; दोसर मिसरा फेर एक बेर केवल स्वर-सारंगी संग, तकर बाद मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: सून्न गामक साँझ, पुरन नाम, बाट-घाट आ स्मृतिक भीतर बाँचल अपन धाम; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन, अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६९१ — ठोर गुम्म, भीतर गीत

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१४

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, शीत) · रदीफ: भीतर जागल अछि

नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ गीत भीतर जागल अछि
मीतक नाम फेर थामल / ओ मीत भीतर जागल अछि
रात घर फेर बड्ड मौन भेल / घरमे दीप फेर जागल अछि
नेहक डोर बड्ड ढील भेल / ओ प्रीत भीतर जागल अछि
साँझमे चान फेर डूबल / मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल अछि
गीतक तान फेर जागल / ओ रीत भीतर जागल अछि
गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि
भोरमे राग फेर जागल / ओ शीत भीतर जागल अछि
रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / नोर ठोर बीच फेर थामल अछि
मोनमे नेह फेर जागल / ओ गीत भीतर जागल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१४

गजल ६९१ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; किछु ठाम मुक्त-लय (rubato)

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हलुक तबला, अकूस्टिक गिटार; स्वर निकट आ संयत।

आरम्भ (intro): ६–८ मात्रा विरल वाद्य; पहिल शब्दसँ पहिने छोट मौन (pause), अलंकार न्यून राखू।

मतला: नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ गीत भीतर जागल अछि ॥ मीतक नाम फेर थामल / ओ मीत भीतर जागल अछि — दुनू मिसरा पूरा गाउ; दोसर मिसराक रदीफ एक बेर धीमे दोहराउ (repeat), अन्तमे हलुक मींड।

दोसर शेर: रात घर फेर बड्ड मौन भेल / घरमे दीप फेर जागल अछि ॥ नेहक डोर बड्ड ढील भेल / ओ प्रीत भीतर जागल अछि — पहिल मिसरा गप-जकाँ; दोसर मिसरासँ पहिने एक मात्रा मौन (pause), काफिया स्पष्ट।

तेसर शेर: साँझमे चान फेर डूबल / मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल अछि ॥ गीतक तान फेर जागल / ओ रीत भीतर जागल अछि — चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) नीचे उतरय।

चारिम शेर: गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / मीत दूर नाम फेर थामल अछि ॥ भोरमे राग फेर जागल / ओ शीत भीतर जागल अछि — ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक रदीफ पर छोट रोक (hold)।

अन्तिम शेर: रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / नोर ठोर बीच फेर थामल अछि ॥ मोनमे नेह फेर जागल / ओ गीत भीतर जागल अछि — दुनू मिसरा गाउ; दोसर मिसरा फेर एक बेर केवल स्वर-सारंगी संग, तकर बाद मन्द समापन (fade-out)।

गायन-भाव: गुम्म ठोरक भीतर बजैत गीत, मीतक नाम, प्रीतक डोर आ धीर गेयता; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन, अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६९२ — भोर आयल, राति नहि गेल

बहर: मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१४

काफिया: –ोर (भोर, सोर, नोर, ठोर, डोर, छोर) · रदीफ: घरमे बाँचल अछि

भोरमे राग फेर जागल / ओ भोर घरमे बाँचल अछि

भीतर नाम फेर थामल / ओ सोर घरमे बाँचल अछि

साँझमे चान फेर डूबल / रात घर फेर बड्ड मौन भेल अछि

मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / ओ नोर घरमे बाँचल अछि

नेहक डोर बड्ड ढील भेल / मीत दूर नाम फेर थामल अछि

नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ ठोर घरमे बाँचल अछि

गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / घरमे दीप फेर जागल अछि

डोर हाथ बीच फेर ढील भेल / ओ डोर घरमे बाँचल अछि

रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / भोरमे राग फेर जागल अछि

मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ छोर घरमे बाँचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१४

गजल ६९२ — भाग २ — संगीतमय रूप

ताल-गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; किछु ठाम मुक्त-लय (rubato)
वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, पियानो, हलुक तबला, अकूस्टिक गिटार; स्वर निकट आ संयत।
आरम्भ (intro): ६–८ मात्रा विरल वाद्य; पहिल शब्दसँ पहिने छोट मौन (pause), अलंकार न्यून राखू।
मतला: भोरमे राग फेर जागल / ओ भोर घरमे बाँचल अछि ॥ भीतर नाम फेर थामल / ओ सोर घरमे बाँचल अछि — दुनू मिसरा पूरा गाउ; दोसर मिसराक रदीफ एक बेर धीमे दोहराउ (repeat), अन्तमे हलुक मींड।
दोसर शेर: साँझमे चान फेर डूबल / रात घर फेर बड्ड मौन भेल अछि ॥ मोनक घाव बड्ड गाढ़ भेल / ओ नोर घरमे बाँचल अछि — पहिल मिसरा गप-जकाँ; दोसर मिसरासँ पहिने एक मात्रा मौन (pause), काफिया स्पष्ट।
तेसर शेर: नेहक डोर बड्ड ढील भेल / मीत दूर नाम फेर थामल अछि ॥ नोर ठोर बीच फेर थामल / ओ ठोर घरमे बाँचल अछि — चारि मात्रा वाद्य-अन्तराल (instrumental interlude) बाद प्रवेश; अन्तिम धुन-अंश (phrase) नीचे उतरय।
चारिम शेर: गाममे बाट फेर बड्ड सून्न / घरमे दीप फेर जागल अछि ॥ डोर हाथ बीच फेर ढील भेल / ओ डोर घरमे बाँचल अछि — ताल आधा करू (drop); स्वर प्रधान राखू, दोसर मिसराक रदीफ पर छोट रोक (hold)।
अन्तिम शेर: रौदमे छाह फेर गाढ़ भेल / भोरमे राग फेर जागल अछि ॥ मोन नेह बीच फेर मौन भेल / ओ छोर घरमे बाँचल अछि — दुनू मिसरा गाउ; दोसर मिसरा फेर एक बेर केवल स्वर-सारंगी संग, तकर बाद मन्द समापन (fade-out)।
गायन-भाव: भोर आबियो नहि मेटल रातिक असर, घरक भीतर बाँचल नोर-सोर आ नेहक डोर; शेरक बीच १–२ मात्रा मौन, अतिनाटकीयता नहि।

गजल ६९३ — जे भोर मोन पड़ैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: १+२+२+२+२+२+२ | २+२+१+२+१+१ · यति: १३+९
काफिया: –ोर (भोर, ठोर, नोर, छोर, सोर, डोर) · रदीफ: मोन पड़ैत अछि · शेर: ५
जखन गामक बाट सुनसान / भोर मोन पड़ैत अछि
जखन नेहक डोर कमजोर / ठोर मोन पड़ैत अछि
नदी पारक नाव लाचार / धूप राह कहैत अछि
जखन लोकक हाथ लाचार / नोर मोन पड़ैत अछि
मजूर देहक जोर कमजोर / देह पीर कहैत अछि
जखन साँसक जोर कमजोर / छोर मोन पड़ैत अछि
जखन मोनक गीत गुमनाम / रात नेह कहैत अछि
कतेक गामक बाट सुनसान / सोर मोन पड़ैत अछि
जखन साँसक जोर कमजोर / माय हाथ धरैत अछि
मनुख मोनक नेह कमजोर / डोर मोन पड़ैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास १+२+२+२+२+२+२ | २+२+१+२+१+१ · यति १३+९

गजल ६९३ — संगीतमय रूप

भाव: स्मृति · गाम · श्रम · देह · नेह

गति (BPM): ५०–५६ · ताल: धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, बाँसुरी, मन्द तबला, विरल पियानो; शब्द प्रधान।

मतला: दुनू मिसरा पूर्ण स्वरमे; यतिपर स्वाभाविक ठहराव, काफिया–रदीफ स्पष्ट; शब्द केँ तानमे नहि हराउ।

२म शेर: शेरक स्वतंत्र अर्थकेँ सामने राखू; पहिल मिसरा बोल-जकाँ, दोसर मिसराक अन्त सहज ठहरावसँ।

३म शेर: ताल विरल राखू; अगिला शेरसँ कथा जोड़बाक चेष्टा नहि, प्रत्येक शेर अपन अर्थमे पूर्ण सुनाइ।

४म शेर: स्वर एक पायदान नीचाँ; काफिया पर सूक्ष्म जोर, रदीफ अक्षरशः स्पष्ट।

५म शेर: वाद्य घटाउ; अन्तिम दोसर मिसरा धीमे उतारि एक छोट मौनपर समाप्त करू।

समापन: संगीत केवल बहर, काफिया आ रदीफक ध्वनि-सूत्र बनाए राखए; स्वतंत्र शेरसभ केँ कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ६९४ — जीवनक सार कहू

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+१+२+२+१+२ | २+२+२+१+२ · यति: १४+९
काफिया: –ार (पार, सार, भार, हार, धार, मार) · रदीफ: कहू · शेर: ५
जे पीड़ा सहैत हाथ धरैत / जीवनक पार कहू
जे माया हटैत साँच बढ़ैत / जीवनक सार कहू
जे दूरी सहैत साथ रहैत / जीवनक नेह कहू
जे पीड़ा बढ़ैत मौन रहैत / जीवनक भार कहू
जे सेवा करैत मान बचैत / जीवनक धर्म कहू
जे आशा घटैत भय बढ़ैत / जीवनक हार कहू
जे पूजा करैत नेह घटैत / जीवनक भ्रम कहू
जे माया हटैत नेह बढ़ैत / जीवनक धार कहू
जे दूरी सहैत नेह रहैत / जीवनक मान कहू
जे पीड़ा बढ़ैत देह सहैत / जीवनक मार कहू

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+१+२+२+१+२ | २+२+२+१+२ · यति १४+९

गजल ६९४ — संगीतमय रूप

भाव: पीड़ा · साँच · सेवा · भय · नेह

गति (BPM): ५४–६० · ताल: मन्द कहरवा

वाद्य-विन्यास (arrangement): हारमोनियम, सारंगी, हलुक गिटार, मन्द तबला; शब्द प्रधान।

मतला: दुनू मिसरा पूर्ण स्वरमे; यतिपर स्वाभाविक ठहराव, काफिया–रदीफ स्पष्ट; शब्द कें तानमे नहि हराउ।

२म शेर: शेरक स्वतंत्र अर्थकें सामने राखू; पहिल मिसरा बोल-जकाँ, दोसर मिसराक अन्त सहज ठहरावसँ।

३म शेर: ताल विरल राखू; अगिला शेरसँ कथा जोड़बाक चेष्टा नहि, प्रत्येक शेर अपन अर्थमे पूर्ण सुनाइ।

४म शेर: स्वर एक पायदान नीचाँ; काफिया पर सूक्ष्म जोर, रदीफ अक्षरशः स्पष्ट।

५म शेर: वाद्य घटाउ; अन्तिम दोसर मिसरा धीमे उतारि एक छोट मौनपर समाप्त करू।

समापन: संगीत केवल बहर, काफिया आ रदीफक ध्वनि-सूत्र बनाए राखए; स्वतंत्र शेरसभ कें कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ६९५ — मोनक भीतर राह रहू

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+१+१+२+२+१+१+२ | २+२+२+२+२+१+२ · यति: १२+१३
काफिया: –ाह (राह, छाह, चाह, थाह, आह, दाह) · रदीफ: रहू · शेर: ५
माटि कहैत पानि बहैत / मोनक भीतर राह रहू
पानि बहैत राति ढलैत / मोनक भीतर छाह रहू
आँखि कहैत बाति जरैत / मोनक भीतर नेह रहू
राति ढलैत माटि रहैत / मोनक भीतर चाह रहू
बाति जरैत आँखि कहैत / मोनक भीतर साँच रहू
माटि रहैत पानि बहैत / मोनक भीतर थाह रहू
पानि कहैत माटि सहैत / मोनक भीतर धीर रहू
आँखि रहैत राति ढलैत / मोनक भीतर आह रहू
राति कहैत बाति जरैत / मोनक भीतर गीत रहू
बाति कहैत माटि रहैत / मोनक भीतर दाह रहू

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २५ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+१+१+२+२+१+१+२ | २+२+२+२+२+१+२ · यति १२+१३

गजल ६९५ — संगीतमय रूप

भाव: माटि · पानि · राति · नेह · धीर

गति (BPM): ४८–५४ · ताल: मुक्त आलाप सँ ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): बाँसुरी, तानपुरा-सदृश ड्रोन, सारंगी, विरल पखावज; शब्द प्रधान।

मतला: दुनू मिसरा पूर्ण स्वरमे; यतिपर स्वाभाविक ठहराव, काफिया–रदीफ स्पष्ट; शब्द केँ तानमे नहि हराउ।

२म शेर: शेरक स्वतंत्र अर्थकेँ सामने राखू; पहिल मिसरा बोल-जकाँ, दोसर मिसराक अन्त सहज ठहरावसँ।

३म शेर: ताल विरल राखू; अगिला शेरसँ कथा जोड़बाक चेष्टा नहि, प्रत्येक शेर अपन अर्थमे पूर्ण सुनाइ।

४म शेर: स्वर एक पायदान नीचाँ; काफिया पर सूक्ष्म जोर, रदीफ अक्षरशः स्पष्ट।

५म शेर: वाद्य घटाउ; अन्तिम दोसर मिसरा धीमे उतारि एक छोट मौनपर समाप्त करू।

समापन: संगीत केवल बहर, काफिया आ रदीफक ध्वनि-सूत्र बनाए राखए; स्वतंत्र शेरसभ केँ कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ६९६ — केवल ई मान नहि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: १+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: १३+१०
काफिया: –ान (मान, जान, गान, थान, दान, आन) · रदीफ: नहि · शेर: ५
जखन साँचक मोल बेकार / केवल ई मान नहि
जखन गामक दीप कमजोर / केवल ई जान नहि
मनुख देहक पीर गुमनाम / केवल ई दोष नहि
जखन गीतक अर्थ बेकार / केवल ई गान नहि
मजूर हाथक जोर कमजोर / केवल ई कर्म नहि
जखन गामक बाट सुनसान / केवल ई थान नहि
कतेक लोकक धर्म लाचार / केवल ई धर्म नहि
जखन नामक लोभ बेकार / केवल ई दान नहि
गरीब लोकक दीप कमजोर / केवल ई भाग नहि
कतेक लोकक आन लाचार / केवल ई आन नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास १+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति १३+१०

गजल ६९६ — संगीतमय रूप

भाव: मान · जीवन · गीत · कर्म · दान
गति (BPM): ५६–६२ · ताल: विरल कहरवा
वाद्य-विन्यास (arrangement): पियानो, इसराज, हलुक तबला, विरल बास; शब्द प्रधान।
मतला: दुनू मिसरा पूर्ण स्वरमे; यतिपर स्वाभाविक ठहराव, काफिया–रदीफ स्पष्ट; शब्द केँ तानमे नहि हराउ।
२म शेर: शेरक स्वतंत्र अर्थकेँ सामने राखू; पहिल मिसरा बोल-जकाँ, दोसर मिसराक अन्त सहज ठहरावसँ।
३म शेर: ताल विरल राखू; अगिला शेरसँ कथा जोड़बाक चेष्टा नहि, प्रत्येक शेर अपन अर्थमे पूर्ण सुनाइ।
४म शेर: स्वर एक पायदान नीचाँ; काफिया पर सूक्ष्म जोर, रदीफ अक्षरशः स्पष्ट।
५म शेर: वाद्य घटाउ; अन्तिम दोसर मिसरा धीमे उतारि एक छोट मौनपर समाप्त करू।
समापन: संगीत केवल बहर, काफिया आ रदीफक ध्वनि-सूत्र बनाए राखए; स्वतंत्र शेरसभ केँ कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ६९७ — जीवन आस जकाँ

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२+१+२ | २+२+२+१+२ · यति: १३+९
काफिया: –ास (आस, साँस, पास, वास, घास, रास) · रदीफ: जकाँ · शेर: ५
ककरो मोन पीड़ा सहैत / जीवन आस जकाँ
एखनो नेह भीतर रहैत / आशा साँस जकाँ
सगरो धूप माया रहैत / माया जाल जकाँ
ककरो हाथ खाली रहैत / दूरी पास जकाँ
फेरो भोर आशा बढ़ैत / जीवन काल जकाँ
सगरो रात पीड़ा रहैत / माया वास जकाँ
ककरो नाम बाहर रहैत / आशा दीप जकाँ
एखनो गीत भीतर रहैत / आशा घास जकाँ
सगरो राह दूरी बढ़ैत / जीवन साँच जकाँ
ककरो देह पीड़ा सहैत / जीवन रास जकाँ

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+१+२ | २+२+२+१+२ · यति १३+९

गजल ६९७ — संगीतमय रूप

भाव: पीड़ा · आशा · दूरी · माया · जीवन
गति (BPM): ५०–५६ · ताल: धीमा रूपक
वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, सन्तूर, बाँसुरी, मन्द तबला; शब्द प्रधान।
मतला: दुनू मिसरा पूर्ण स्वरमे; यतिपर स्वाभाविक ठहराव, काफिया–रदीफ स्पष्ट; शब्द कैँ तानमे नहि हराउ।
२म शेर: शेरक स्वतंत्र अर्थकेँ सामने राखू; पहिल मिसरा बोल-जकाँ, दोसर मिसराक अन्त सहज ठहरावसँ।
३म शेर: ताल विरल राखू; अगिला शेरसँ कथा जोड़बाक चेष्टा नहि, प्रत्येक शेर अपन अर्थमे पूर्ण सुनाइ।
४म शेर: स्वर एक पायदान नीचाँ; काफिया पर सूक्ष्म जोर, रदीफ अक्षरशः स्पष्ट।
५म शेर: वाद्य घटाउ; अन्तिम दोसर मिसरा धीमे उतारि एक छोट मौनपर समाप्त करू।
समापन: संगीत केवल बहर, काफिया आ रदीफक ध्वनि-सूत्र बनाए राखए; स्वतंत्र शेरसभ कैँ कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ६९८ — जीवनमे गाम बिनु

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २१ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: १+२+२+१+२+१+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: ११+१०
काफिया: –ाम (गाम, दाम, काम, नाम, ठाम, घाम) · रदीफ: बिनु · शेर: ५
कतेक दूर मनुख चलैत / जीवनमे गाम बिनु
मजूर घाम कतेक सहैत / बाजारमे दाम बिनु
शहर भूख कतेक सहैत / जीवनमे नेह बिनु
गरीब भूख कतेक सहैत / जीवनमे काम बिनु
मनुख मान कतेक धरैत / भीतरमे साँच बिनु
मनुख नाम कतेक गनैत / भीतरमे नाम बिनु
नदी घात कतेक सहैत / जीवनमे धीर बिनु
मजूर दाम कतेक गनैत / जीवनमे ठाम बिनु
किसान आस कतेक धरैत / खेतीमे नीर बिनु
किसान घाम कतेक सहैत / खेतीमे घाम बिनु

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २१ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास १+२+२+१+२+१+२ | २+२+२+२+१+१ · यति ११+१०

गजल ६९८ — संगीतमय रूप

भाव: परदेश · श्रम · भूख · पहचान · खेती
गति (BPM): ५८–६४ · ताल: मन्द दादरा
वाद्य-विन्यास (arrangement): एकूस्टिक गिटार, हारमोनियम, बाँसुरी, हलुक ढोलक; शब्द प्रधान।
मतला: दुनू मिसरा पूर्ण स्वरमे; यतिपर स्वाभाविक ठहराव, काफिया–रदीफ स्पष्ट; शब्द कैँ तानमे नहि हराउ।
२म शेर: शेरक स्वतंत्र अर्थकेँ सामने राखू; पहिल मिसरा बोल-जकाँ, दोसर मिसराक अन्त सहज ठहरावसँ।
३म शेर: ताल विरल राखू; अगिला शेरसँ कथा जोड़बाक चेष्टा नहि, प्रत्येक शेर अपन अर्थमे पूर्ण सुनाइ।
४म शेर: स्वर एक पायदान नीचाँ; काफिया पर सूक्ष्म जोर, रदीफ अक्षरशः स्पष्ट।
५म शेर: वाद्य घटाउ; अन्तिम दोसर मिसरा धीमे उतारि एक छोट मौनपर समाप्त करू।
समापन: संगीत केवल बहर, काफिया आ रदीफक ध्वनि-सूत्र बनाए राखए; स्वतंत्र शेरसभ कैँ कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ६९९ — ई केवल काल छल

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+१+२+२+१+२ | २+२+२+२+२ · यति: १४+१०
काफिया: –ाल (काल, जाल, ताल, चाल, हाल, ढाल) · रदीफ: छल · शेर: ५
जे छाती सहैत पीर बढ़ैत / ई केवल काल छल
जे माया बढ़ैत साँच घटैत / ई केवल जाल छल
जे दूरी बढ़ैत नेह रहैत / ई केवल दोष छल
जे आशा बढ़ैत भय घटैत / ई केवल ताल छल
जे सेवा बढ़ैत मान बढ़ैत / ई केवल भ्रम छल
जे पूजा बढ़ैत नेह घटैत / ई केवल चाल छल
जे पीड़ा घटैत साँच रहैत / ई केवल साँच छल
जे माया घटैत भय रहैत / ई केवल हाल छल
जे दूरी घटैत मान रहैत / ई केवल मान छल
जे छाती सहैत मौन रहैत / ई केवल ढाल छल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+१+२+२+१+२ | २+२+२+२+२ · यति १४+१०

गजल ६९९ — संगीतमय रूप

भाव: काल · माया · आशा · चाल · नेह
गति (BPM): ४८–५४ · ताल: मन्द ४/४
वाद्य-विन्यास (arrangement): निम्न पियानो, सारंगी, विरल पर्कशन, मन्द बास; शब्द प्रधान।
मतला: दुनू मिसरा पूर्ण स्वरमे; यतिपर स्वाभाविक ठहराव, काफिया–रदीफ स्पष्ट; शब्द केँ तानमे नहि हराउ।
२म शेर: शेरक स्वतंत्र अर्थकेँ सामने राखू; पहिल मिसरा बोल-जकाँ, दोसर मिसराक अन्त सहज ठहरावसँ।
३म शेर: ताल विरल राखू; अगिला शेरसँ कथा जोड़बाक चेष्टा नहि, प्रत्येक शेर अपन अर्थमे पूर्ण सुनाइ।
४म शेर: स्वर एक पायदान नीचाँ; काफिया पर सूक्ष्म जोर, रदीफ अक्षरशः स्पष्ट।
५म शेर: वाद्य घटाउ; अन्तिम दोसर मिसरा धीमे उतारि एक छोट मौनपर समाप्त करू।
समापन: संगीत केवल बहर, काफिया आ रदीफक ध्वनि-सूत्र बनाए राखए; स्वतंत्र शेरसभ केँ कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ७०० — मोनक भीतर पीर कतए

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: १+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+१+१+२ · यति: १३+१४
काफिया: –ीर (पीर, नीर, धीर, तीर, वीर, चीर) · रदीफ: कतए · शेर: ५
कतेक लोकक पीर गुमनाम / मोनक भीतर पीर कतए
नदी नोरक धार सुनसान / नोरक भीतर नीर कतए
मनुख नेहक थाह अनजान / मोनक भीतर नाम कतए
गरीब देहक भार कमजोर / नेहक भीतर धीर कतए
मजूर मोनक नेह गुमनाम / देहक भीतर भार कतए
किसान खेतक आस कमजोर / देहक भीतर तीर कतए
शहर लोकक मान लाचार / लोकक भीतर साँच कतए
शहर पारक घाट सुनसान / लोकक भीतर वीर कतए
कतेक नामक मोल बेकार / नेहक भीतर मान कतए
गरीब हाथक मान लाचार / मोनक भीतर चीर कतए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २७ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास १+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+१+१+२ · यति १३+१४

गजल ७०० — संगीतमय रूप

भाव: पीर · नीर · नेह · धीर · मनुखता

गति (BPM): ५०–५६ · ताल: मुक्त आलाप सँ धीमा दादरा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, बाँसुरी, मन्द पियानो, अति विरल तबला; शब्द प्रधान।

मतला: दुनू मिसरा पूर्ण स्वरमे; यतिपर स्वाभाविक ठहराव, काफिया–रदीफ स्पष्ट; शब्द कैँ तानमे नहि हराउ।

२म शेर: शेरक स्वतंत्र अर्थकेँ सामने राखू; पहिल मिसरा बोल-जकाँ, दोसर मिसराक अन्त सहज ठहरावसँ।

३म शेर: ताल विरल राखू; अगिला शेरसँ कथा जोड़बाक चेष्टा नहि, प्रत्येक शेर अपन अर्थमे पूर्ण सुनाइ।

४म शेर: स्वर एक पायदान नीचाँ; काफिया पर सूक्ष्म जोर, रदीफ अक्षरशः स्पष्ट।

५म शेर: वाद्य घटाउ; अन्तिम दोसर मिसरा धीमे उतारि एक छोट मौनपर समाप्त करू।

समापन: संगीत केवल बहर, काफिया आ रदीफक ध्वनि-सूत्र बनाए राखए; स्वतंत्र शेरसभ कैँ कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ७०१ — एतेक फेर किएक

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: १+२+२+१+२+१+२ | २+२+२+१+२ · यति: ११+९
काफिया: –ेर (फेर, बेर, देर, घेर, ढेर, नेर) · रदीफ: किएक · शेर: ५

मनुख पीर कतेक सहैत / एतेक फेर किएक
कतेक नेह मनुख सहैत / एतेक बेर किएक
शहर मौन कतेक सहैत / एतेक दूर किएक
गरीब भार कतेक सहैत / एतेक देर किएक
मजूर देर कतेक सहैत / एतेक मौन किएक
किसान भार कतेक सहैत / एतेक घेर किएक
शहर मोल कतेक गनैत / एतेक भार किएक
मनुख मोल कतेक गनैत / एतेक ढेर किएक
मजूर नेह कतेक धरैत / एतेक पीर किएक
कतेक नेह शहर धरैत / एतेक नेर किएक

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास १+२+२+१+२+१+२ | २+२+२+१+२ · यति ११+९

गजल ७०१ — संगीतमय रूप

भाव: पीर · दूरी · मौन · भार · नेर-पास
गति (BPM): ५४–६० · ताल: विरल ६ मात्रा
वाद्य-विन्यास (arrangement): गिटार, इसराज, मन्द तबला, हलुक पियानो; शब्द प्रधान।
मतला: दुनू मिसरा पूर्ण स्वरमे; यतिपर स्वाभाविक ठहराव, काफिया–रदीफ स्पष्ट; शब्द केँ तानमे नहि हराउ।
२म शेर: शेरक स्वतंत्र अर्थकेँ सामने राखू; पहिल मिसरा बोल-जकाँ, दोसर मिसराक अन्त सहज ठहरावसँ।
३म शेर: ताल विरल राखू; अगिला शेरसँ कथा जोड़बाक चेष्टा नहि, प्रत्येक शेर अपन अर्थमे पूर्ण सुनाइ।
४म शेर: स्वर एक पायदान नीचाँ; काफिया पर सूक्ष्म जोर, रदीफ अक्षरशः स्पष्ट।
५म शेर: वाद्य घटाउ; अन्तिम दोसर मिसरा धीमे उतारि एक छोट मौनपर समाप्त करू।
समापन: संगीत केवल बहर, काफिया आ रदीफक ध्वनि-सूत्र बनाए राखए; स्वतंत्र शेरसभ केँ कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ७०२ — जीवनमे फूल रहैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+१+१+२+२+२+१+२ | २+२+२+२+१+२+१+१ · यति: १३+१३
काफिया: –ूल (फूल, धूल, मूल, कूल, शूल) · रदीफ: रहैत अछि · शेर: ५
माटि कहैत जीवन रहैत / जीवनमे फूल रहैत अछि
पानि बहैत भीतर रहैत / भीतरमे धूल रहैत अछि
आँखि कहैत माया हटैत / जीवनमे साँच रहैत अछि
राति ढलैत आशा रहैत / मायामे मूल रहैत अछि
बाति जरैत पीड़ा घटैत / भीतरमे नेह रहैत अछि
माटि रहैत जीवन चलैत / जीवनमे कूल रहैत अछि
पानि बहैत दूरी घटैत / जीवनमे राह रहैत अछि
आँखि कहैत माया बढ़ैत / पीड़ामे शूल रहैत अछि
राति ढलैत आशा बढ़ैत / खेतीमे घाम रहैत अछि
बाति जरैत पीड़ा रहैत / खेतीमे फूल रहैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+१+१+२+२+२+१+२ | २+२+२+२+१+२+१+१ · यति १३+१३

गजल ७०२ — संगीतमय रूप

भाव: माटि · माया · आशा · पीड़ा · खेती

गति (BPM): ५२–५८ · ताल: मन्द कहरवा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, बाँसुरी, सन्तूर, विरल तबला; शब्द प्रधान।

मतला: दुनू मिसरा पूर्ण स्वरमे; यतिपर स्वाभाविक ठहराव, काफिया–रदीफ स्पष्ट; शब्द केँ तानमे नहि हराउ।

२म शेर: शेरक स्वतंत्र अर्थकेँ सामने राखू; पहिल मिसरा बोल-जकाँ, दोसर मिसराक अन्त सहज ठहरावसँ।

३म शेर: ताल विरल राखू; अगिला शेरसँ कथा जोड़बाक चेष्टा नहि, प्रत्येक शेर अपन अर्थमे पूर्ण सुनाइ।

४म शेर: स्वर एक पायदान नीचाँ; काफिया पर सूक्ष्म जोर, रदीफ अक्षरशः स्पष्ट।

५म शेर: वाद्य घटाउ; अन्तिम दोसर मिसरा धीमे उतारि एक छोट मौनपर समाप्त करू।

समापन: संगीत केवल बहर, काफिया आ रदीफक ध्वनि-सूत्र बनाए राखए; स्वतंत्र शेरसभ केँ कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ७०३ — एखनो चाह मोनमे अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+२+१+१ · यति: १२+१२
काफिया: –ाह (चाह, आह, छाह, थाह, राह, दाह) · रदीफ: मोनमे अछि · शेर: ५
ओकर नाम मोन बीच अछि / एखनो चाह मोनमे अछि
मीत दूर, नेह जागल अछि / ओकर आह मोनमे अछि
रात बीत, नोर सूखल अछि / मीत दूर, नेह एखनो अछि
नेह टूट, घाव एखनो अछि / रातिक छाह मोनमे अछि
भोर आय, घर सुनसान अछि / मीतक नाम मोन बीच अछि
मीत दूर, रात सुनसान अछि / एखनो थाह मोनमे अछि
दिन बीत, मोन थाकल अछि / ओकर गीत रात बीच अछि
रात बीत, नेह जागल अछि / मीतक राह मोनमे अछि
रात ढल, घर सुनसान अछि / नेहक आग देह बीच अछि
भोर आय, मोन जागल अछि / नेहक दाह मोनमे अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+१+१ | २+२+२+२+२+१+१ · यति १२+१२

गजल ७०३ — संगीतमय रूप

भाव: विरह · स्मृति · चाह · मौन · दाह
गति (BPM): ४८–५४ · ताल: अति मन्द दादरा ६ मात्रा
वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, मन्द पियानो, तानपुराक स्थिर पृष्ठस्वर, अति विरल तबला; शब्द प्रधान।
आरम्भ: चारि मात्रा प्रायः मौन; सारंगी एक छोट उतरैत स्वर लेत। पहिल मिसरा गप-जकाँ, सजावट बिनु।
मतला: “चाह” आ “आह” पर जोर नहि, केवल स्वाभाविक ठहराव; “मोनमे अछि” अक्षरशः स्पष्ट राखू। दुनू मिसरा बाद दू मात्रा मौन।
२म शेर: “रात बीत, नोर सूखल अछि” केँ दबल स्वरमे; सानी मिसराक “छाह” पर सारंगी हलुक उतरए, मुदा शब्द नहि ढाकए।
३म शेर: घरक नीरवता सामने रहए; तबला प्रायः हटाउ। “थाह मोनमे अछि” बाद छोट वाद्य-विराम राखू।
४म शेर: थकानसँ फेर जागैत नेह धरि स्वर मन्द-मन्द ऊपर उठए; “राह” पर मींड सूक्ष्म, रदीफ सादा।
५म शेर: भोरक उजास आ भीतरक दाह एक संग सुनाइ; अन्तिम “मोनमे अछि” फेर नहि गाउ—एक बेर गाइ मौनमे समाप्त करू।
समापन: स्मृति दूर मीतक बचल अनुभूति-जकाँ सुनाइ; संगीत भावकेँ गाढ़ करए, शेरसभ केँ कथात्मक गीतमे नहि बदलए।

गजल ७०४ — ओकर सोर रहि गेल

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+१+२ · यति: ८+१०
काफिया: –ोर (नोर, भोर, डोर, सोर, जोर, छोर) · रदीफ: रहि गेल · शेर: ५
रात बीत, मोन चुप / ओकर नोर रहि गेल
भोर आय, घर मौन / भीतर भोर रहि गेल
मीत दूर, रात घोर / मोन बीच नेह नहि सूख
टूट नेह, मोन थाक / मीतक डोर रहि गेल
काल बीत, नाम मौन / देह बीच पीर नहि थाम
घर सून्न, दीप मन्द / ओकर सोर रहि गेल
रात ढल, नाम जाग / मोन बीच घाव नहि सूख
भोर आय, नोर सूख / मोनक जोर रहि गेल
काल गेल, नेह शेष / मोन बीच नाम नहि गेल
भोर आय, चान ढल / रातिक छोर रहि गेल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = १८ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+१+१+२ · यति ८+१०

गजल ७०४ — संगीतमय रूप

भाव: समय · अनुपस्थिति · स्मृति · नेह · बचल स्वर
गति (BPM): ५०–५६ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा
वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, मन्द हारमोनियम, तानपुराक स्थिर पृष्ठस्वर, विरल तबला; शब्द प्रधान।
आरम्भ: दू मात्रा मौन; पहिल मिसरा गप-जकाँ सीधा। “नोर रहि गेल” पर स्वर नहि सजाउ—अर्थकेँ ठहरय दिअ।
मतला: “नोर/भोर” काफिया स्पष्ट, मुदा जोर बिनु; “रहि गेल” दुनू बेर एक्के उच्चारण आ लयमे।
२म शेर: मीतक दूरी आ नेहक बचल डोरक विरोधाभास सामने राखू; पहिल मिसरा नीच स्वरमे, दोसरक अन्तमे छोट मौन।
३म शेर: “काल बीत, नाम मौन” लगभग बोलल पाँति-जकाँ; “सोर रहि गेल” पर सारंगी केवल सूक्ष्म उत्तर दिअ।
४म शेर: घावक पाँति दबाएल स्वरमे; “जोर रहि गेल” केँ विजय-घोष नहि, भीतर बचल सहनशक्ति-जकाँ गाउ।
५म शेर: समय बीतल, नाम नहि गेल—एहि अनुभूतिक बाद अन्तिम “छोर रहि गेल” एक बेर मात्र; वाद्य धीरे मौनमे उतरए।
समापन: अनुपस्थित व्यक्ति केँ कथा बनाकऽ नहि सुनाउ; जे बचल अछि—नोर, भोर, डोर, सोर, जोर, छोर—ओही ध्वनि-सूत्रसँ गजल समाप्त हो।

गजल ७०५ — मौन एक गीत लगैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २४ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: १+२+२+१+२+२ | १+२+२+२+२+१+२+१+१ · यति: १०+१४
काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, शीत, जीत) · रदीफ: लगैत अछि · शेर: ५
किएक मोन थकैए? / हमर मौन एक गीत लगैत अछि
किएक नोर बहैए? / हमर रात एक मीत लगैत अछि
जखन नोर बहैए / हमर नेह आबो बचैत अछि
जखन देह थकैए / हमर घाव आब प्रीत लगैत अछि
हमर साँस थकैए / हमर नाम एखनो बचल अछि
किएक घाव दुखैए? / हमर दुख एक रीत लगैत अछि
जखन मेह पड़ैए / हमर नोर आबो बहैत अछि
कतेक भोर अबैए? / हमर भोर आब शीत लगैत अछि
हमर गीत रुवैए / हमर घाव एखनो बचल अछि
हमर नेह दुखैए / हमर नेह एक जीत लगैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २४ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास १+२+२+१+२+२ | १+२+२+२+२+१+२+१+१ · यति १०+१४

गजल ७०५ — संगीतमय रूप

भाव: विरह · अपन चिन्हारि · मौन · पीर · बचल नेह

गति (BPM): ४८–५४ · ताल: अति मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, मन्द पियानो, तानपुराक स्थिर पृष्ठस्वर, अति विरल तबला; शब्द प्रधान।

आरम्भ: पहिल प्रश्न “किएक मोन थकैए?” प्रायः गप-जकाँ पूछू; यतिपर छोट मौन, उत्तरक पाँति धीरे खोलू।

मतला: “गीत/मीत” काफिया स्वाभाविक उच्चारणमे; “लगैत अछि” दुनू बेर एक्के लयमे, अतिरिक्त तान बिना।

२म शेर: नोर बहैतहुँ नेह बचल अछि—एहि विरोधाभासकेँ स्वरमे दबाएल पीर रूपेँ राखू; “प्रीत” पर जोर नहि।

३म शेर: साँसक थकान आ नामक बचल रहब अपन चिन्हारिक क्षीण प्रश्न जकाँ सुनाइ; तबला प्रायः हटाउ।

४म शेर: मेह आ नोरक ध्वनि एक-दोसरमे घुलय, मुदा शब्द स्पष्ट; “शीत लगैत अछि” बाद दू मात्रा मौन।

५म शेर: “गीत रुवैए” अत्यन्त संयत; अन्तिम “नेह एक जीत लगैत अछि” विजय-घोष नहि, पीर सहि बचल प्रेमक धीम स्वीकृति जकाँ।

समापन: शेरसभ स्वतंत्र रहथि; दार्शनिक भाव भीतर रहए, कथन उपदेश वा निबन्ध नहि बनए। अन्तिम रदीफ एक बेर मात्र गाइ मौनमे उतरू।

गजल ७०६ — नाम मोन पड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२ · यति: ११+९
काफिया: –ाम (नाम, गाम, ठाम, घाम, धाम, दाम) · रदीफ: मोन पड़ैए · शेर: ५

एखनो नोर बहैए / नाम मोन पड़ैए
माटिक गन्ध अबैए / गाम मोन पड़ैए
आबो घाव दुखैए / नेह फेर रहैए
रातिक निन्न अबैए / ठाम मोन पड़ैए
फेरो गीत रुवैए / मौन फेर रहैए
रातिक मेह पड़ैए / घाम मोन पड़ैए
पानिक धार बहैए / नोर फेर बहैए
साँझक गीत रुवैए / धाम मोन पड़ैए
मोनक घाव दुखैए / पीर फेर रहैए
नेहक घाव दुखैए / दाम मोन पड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२ · यति ११+९

गजल ७०६ — संगीतमय रूप

भाव: विरह · स्मृति · गाम · अनुपस्थिति · नेहक मोल
गति (BPM): ५०–५६ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा
वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, मन्द हारमोनियम, तानपुराक स्थिर पृष्ठस्वर, विरल तबला; शब्द प्रधान।
आरम्भ: चारि मात्रा मौन; “एखनो नोर बहैए” गप-जकाँ सीधा गाउ, अधिक सजावट बिना।
मतला: “नाम/गाम” काफिया स्वाभाविक उच्चारणमे; “मोन पड़ैए” दुनू बेर एक्के लयमे। पहिल शेरक बाद छोट वाद्य-विराम राखू।
२म शेर: “आबो घाव दुखैए” मे स्वर नीचाँ; “ठाम मोन पड़ैए” पर स्मृतिक हलुक उभार, अतिरिक्त तान नहि।
३म शेर: “गीत रुवैए” आ “मौन फेर रहैए”क टकराहट स्पष्ट राखू; “रातिक मेह पड़ैए” सँ “घाम मोन पड़ैए” धरि स्वर धीरे खुलए।
४म शेर: “पानिक धार बहैए” मे ताल बहाव-जकाँ राखू; “नोर फेर बहैए” केँ अधिक खींचि नहि गाउ। “धाम” पर केवल हलुक ठहराव।
५म शेर: “मोनक घाव दुखैए” दबाएल स्वरमे; अन्तिम “दाम मोन पड़ैए” केँ उपदेश-जकाँ नहि, नेहक मोल भीतरसँ बुझाइत हो ताहि धीम भावमे गाउ।
समापन: अन्तिम रदीफ एक बेर मात्र; सारंगी छोट उतराव देत, फेर मौन। प्रत्येक शेर अपन अर्थमे स्वतंत्र सुनाइ।

गजल ७०७ — हमर मोन रुवैए किएक?

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १३ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: १+२+२+१+२+२+१+२ · यति: ५+८
काफिया: –ैए (रुवैए, कनैए, बहैए, दुखैए, थकैए, रहैए) · रदीफ: किएक · शेर: ५
हमर मोन रुवैए किएक?
हमर गीत कनैए किएक?
जखन चान ढलैत, मोन जलल
हमर नोर बहैए किएक?
जखन मेह पड़ैत, दुख घटल
हमर घाव दुखैए किएक?
जखन भोर बढ़ैत, निन्न घटल
हमर साँस थकैए किएक?
जखन काल बहैत, नाम मिटल
हमर नेह रहैए किएक?

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = १३ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास १+२+२+१+२+२+१+२ · यति ५+८

गजल ७०७ — संगीतमय रूप

भाव: विरह · प्रश्न · समय · मौन · बचल नेह
गति (BPM): ४८–५४ · ताल: अति मन्द दादरा ६ मात्रा
वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, मन्द हारमोनियम, तानपुराक स्थिर पृष्ठस्वर, अति विरल तबला; शब्द प्रधान।
आरम्भ: चारि मात्रा मौन; “हमर मोन रुवैए किएक?” प्रश्न-जकाँ सहज गाउ—उत्तर देबाक चेष्टा नहि करू।
मतला: “रुवैए/कनैए”क –ैए ध्वनि साफ रहए; “किएक” दुनू बेर एक्के लयमे, अतिरिक्त तान बिना। दुनू मिसरा बाद छोट मौन राखू।
२म शेर: चान ढलैत मोन जरबाक अनुभूति दबाएल स्वरमे; “नोर बहैए किएक?” पर सारंगी केवल छोट उत्तर दिअ।
३म शेर: मेह पड़ैत दुख घटल, मुदा घाव दुखैत रहबाक दुनू विपरीत भाव सामने राखू; प्रश्नमे करुणा रहए, रोष नहि।
४म शेर: भोर बढ़ैत निन्न घटबाक संग साँसक थकान सुनाइ; “थकैए किएक?” केँ खींचू नहि, सहज ठहराव दिअ।
५म शेर: काल बहैत नाम मिटल, मुदा नेह रहैत अछि—अन्तिम प्रश्नक उत्तर नहि दिअ। रदीफ एक बेर मात्र गाइ मौनमे उतरू।
समापन: प्रत्येक शेर अपन अर्थमे स्वतंत्र सुनाइ। दर्शन भीतर रहए; शब्द गप-जकाँ सरल, भाव गाढ़, संगीत संयत रहए।

गजल ७०८ — चाह आबो बचल अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति: ६+११
काफिया: –ाह (चाह, आह, छाह, थाह, राह, दाह) · रदीफ: आबो बचल अछि · शेर: ५
मीत दूर गेल, चाह आबो बचल अछि
गीत मौन भेल, आह आबो बचल अछि
दिन बीतल, मोनमे नेह बचल अछि
घर सून्न भेल, छाह आबो बचल अछि
साँझ बीतल, घरमे मौन बचल अछि
नेह मौन भेल, थाह आबो बचल अछि
चान दूर गेल, घरमे गीत बचल अछि
मीत दूर गेल, राह आबो बचल अछि
नोर सूखल, मोनमे पीर बचल अछि
घाव सूखल, दाह आबो बचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = १७ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति ६+११

गजल ७०८ — संगीतमय रूप

भाव: विरह · समय · दूरी · मौन · बचल नेह

गति (BPM): ४८–५४ · ताल: अति मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास (arrangement): सारंगी, मन्द हारमोनियम, तानपुराक स्थिर पृष्ठस्वर, अति विरल तबला; शब्द प्रधान।

आरम्भ: चारि मात्रा मौन; “मीत दूर गेल, चाह आबो बचल अछि” गप-जकाँ सहज गाउ। “दूर गेल” बाद छोट ठहराव राखू, रदीफ कैँ खींचू नहि।

मतला: “चाह/आह” काफिया स्पष्ट रहए; “आबो बचल अछि” दुनू बेर एक्के लयमे। दोसर मिसरा बाद सारंगी केवल छोट उत्तर दिअ।

२म शेर: दिन बीतलापर मोनमे नेह बचल रहबाक अनुभूति दबाएल स्वरमे; “छाह” पर हलुक ठहराव, अतिरिक्त तान नहि।

३म शेर: साँझ बीतल, घरमे मौन बचल—एहि सून्नताकैँ स्वरमे ठाम दिअ। “थाह” कैँ कोनो निष्कर्ष नहि, भीतरक अनुभव जकाँ गाउ।

४म शेर: चान दूर गेल, मुदा घरमे गीत बचल; “राह आबो बचल अछि” हुलासक स्वर नहि, दूरीक भीतर बचल बाट जकाँ सुनाइ।

५म शेर: “नोर सूखल” अत्यन्त संयत; अन्तिम “दाह आबो बचल अछि” पर ताल घटाउ, स्वर नीचाँ उतारि मौनमे समाप्त करू।

समापन: प्रत्येक शेर अपन अर्थमे स्वतंत्र सुनाइ। समय बीतलासँ अनुभव मेटाइत नहि—ई भाव भीतर रहए; शब्द सहज, संगीत संयत रहए।

गजल ७०९ — मोन राति नाम फेर कहैत रहल

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १५ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+१+२ | २+१+२+१+२ · यति: ७+८
काफिया: –ैत (बहैत, कहैत, सहैत, पड़ैत, चलैत, हटैत) · रदीफ: रहल · शेर: ५

नोर राति-दिन, चुप बहैत रहल
मोन राति नाम, फेर कहैत रहल
ओ राति घर, मौन बढ़ैत चलल
मोन राति दुख, चुप सहैत रहल
भोर पानि-धार, चुप बहैत चलल
नोर आँखि-कोर, फेर पड़ैत रहल
पाँव माटि-बाट, दूर बढ़ैत चलल
मोन राति बाट, फेर चलैत रहल
दीप राति घर, चुप जरैत चलल
मीत मोनसँ दूर, फेर हटैत रहल

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = १५ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२ | २+१+२+१+२ · यति ७+८

गजल ७०९ — संगीतमय रूप

भाव: विरह · काल · दूरी · स्मृति · मौन

गति (BPM): ४८–५२ · ताल: अति मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास: सारंगी, मन्द हारमोनियम, तानपुराक स्थिर पृष्ठस्वर, अति विरल तबला; शब्द प्रधान।

आरम्भ: चारि मात्रा मौन; “नोर राति-दिन, चुप बहैत रहल” गप-जकाँ सहज गाउ। “रहल” केँ खींचू नहि; स्वरमे दबाएल पीर रहए।

मतला: “बहैत/कहैत”क –ैत ध्वनि साफ रहए; “रहल” दुनू बेर एक्के लयमे। दोसर मिसरा बाद सारंगी छोट उत्तर दिअ।

२म शेर: “ओ राति घर” बाद छोट ठहराव; मौन बढ़बाक अनुभूति स्वरमे धीरे गाढ़ होअए। “सहैत रहल” पर अतिरिक्त तान नहि।

३म शेर: पानि-धार आ नोरक एक्के सन बहाव केँ अलग भावमे राखू—पहिल मिसरा बाहरक दृश्य, दोसर भीतरक पीर। “पड़ैत रहल” सहज उतरावसँ।

४म शेर: माटि-बाट पर पाँव आगाँ बढ़ैत अछि, मुदा मोन फेर बाटे पर चलैत अछि—एहि दूरी केँ मन्द स्वरमे राखू; अभिनय नहि।

५म शेर: दीप जरैत रहबाक छवि बाद “मीत मोनसँ दूर” अत्यन्त संयत गाउ। अन्तिम “हटैत रहल” पर ताल विरल कऽ मौनमे उतरू।

समापन: प्रत्येक शेर अपन अर्थमे स्वतंत्र सुनाइ। काल, दूरी आ स्मृति भीतर रहए; शब्द गप-जकाँ सहज, संगीत संयत रहए।

गजल ७१० — मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: ८+१०
काफिया: –ार (भार, तार, धार, सार, पार, हार) · रदीफ: शेष अछि · शेर: ५

मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि
गीत आब मौन भेल; मोनक तार शेष अछि
भोर आब घर बीच; मोनक नोर फेर अछि
नोर आब सूखल; मोनमे धार शेष अछि
साँझ, चान आब दूर; मीतक छाह फेर अछि
गप आब थामल; मोन मौन, सार शेष अछि
काल आब दूर गेल; मोनक पीर फेर अछि
मीत गेल, घर सून्न; बाटक पार शेष अछि
साँस आब मन्द भेल; देहक पीर फेर अछि
घर मौन, दीप मन्द; फूलक हार शेष अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १०/१० मिसरा = १८ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति ८+१०

गजल ७१० — संगीतमय रूप

भाव: विरह · शेष रहि गेल चिन्ह · काल · मौन · नेह

गति (BPM): ५०–५४ · ताल: अति मन्द दादरा ६ मात्रा

वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, मन्द हारमोनियम, अति विरल तबला; शब्द प्रधान।

आरम्भ: चारि मात्रा मौन; “मीत आब दूर गेल; मोनमे भार शेष अछि” कैँ गप-जकाँ सहज गाउ। “शेष अछि” पर अनावश्यक तान नहि।

मतला: “भार/तार” स्पष्ट रहए; रदीफ “शेष अछि” दुनू मिसरामे एक्के लयमे। दोसर मिसरा बाद सारंगी छोट उत्तर दिअ।

२म शेर: भोरक सून्न घर आ सूखल नोरक अन्तर राखू। “धार शेष अछि” भीतरक पीरक ध्वनि-जकाँ उतरए; अभिनय नहि।

३म शेर: साँझक चान दूर अछि, मुदा मीतक छाह फेर मोनमे अबैए—स्वर धीर राखू। “सार शेष अछि” पर छोट ठहराव।

४म शेर: काल दूर गेलो पर पीर फेरो अछि। “बाटक पार शेष अछि” कैँ प्रश्न नहि, स्वीकार-जकाँ गाउ।

५म शेर: साँस मन्द, देहमे पीर; अन्तिम मिसरामे सून्न घर, मन्द दीप आ फूलक हारक छवि मात्र रहए। तबला विरल कऽ अन्त मौनमे उतरू।

समापन: प्रत्येक शेर अपन अर्थमे स्वतंत्र सुनाइ। शेष रहि गेल वस्तु आ स्मृति भावक केन्द्र रहए; शब्द स्पष्ट, संगीत संयत।

गजल ७११ — मोनमे साँचक सार एखनो अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+१ · यति: ८+८

काफिया: –ार (सार, भार, तार, पार, धार, हार, मार) · रदीफ: एखनो अछि · शेर: ६

मोनमे साँचक सार एखनो अछि
मोन चुप, प्रश्नक भार एखनो अछि
शब्द दूर, नेहक अर्थ आब गाढ़ अछि
नाममे नेहक तार एखनो अछि
छाह मीत? ई भ्रम; भीतर दीप अछि
दीप मन्द, छाहक पार एखनो अछि
क्षण दूर, देह आन; मोन आबो अछि
मोनमे कालक धार एखनो अछि
नोर चुप, मीतक चिन्ह आब ठाढ़ अछि
चिन्हमे नेहक हार एखनो अछि
मीत दूर, पीरक मूलक थाह अछि
मोनमे पीरक मार एखनो अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+१+१ · यति ८+८

गजल ७११ — संगीतमय रूप

भाव: विरह · प्रश्न · साँच · नाम आ अर्थ · छाह आ इजोत · काल · चिन्ह · पीर
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: अति मन्द दादरा ६ मात्रा
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, मन्द हारमोनियम, विरल तबला; शब्द प्रधान।
आरम्भ: चारि मात्रा मौन। “मोनमे साँचक सार एखनो अछि” गप-जकाँ सहज गाउ; “एखनो अछि” पर शब्द स्पष्ट रहए, तान नहि।
मतला: पहिल मिसराक साँच आ दोसर मिसराक प्रश्नक भार बीच स्वरमे सूक्ष्म अन्तर राखू। “सार/भार” स्पष्ट, रदीफ एक्के लयमे।
२म शेर: शब्द दूर भऽ गेलो पर नेहक अर्थ गाढ़ अछि। “नाममे नेहक तार” पर सारंगी छोट उत्तर दिअ; शेरकेँ तर्क-वाक्य नहि, स्मृतिक गप जकाँ गाउ।
३म शेर: छाहकेँ मीत बुझबाक भ्रम आ भीतरक दीप—दुनू छवि बीच छोट मौन राखू। “छाहक पार” पर स्वर नीचा करू।
४म शेर: क्षण दूर गेल, देह आन भेल, मुदा मोनक निरन्तरता बचल अछि। ताल विरल; “कालक धार” सहज बहए।
५म शेर: नोर चुप अछि, मुदा मीतक चिन्ह ठाढ़ अछि। “चिन्हमे नेहक हार” पर शब्दक उच्चारण विशेष स्पष्ट राखू; अधिक सजावट नहि।
६म शेर: मीत दूर अछि, पीरक मूलक थाह अछि, तथापि मार शेष अछि। अन्तिम रदीफ बाद दू मात्रा मौन राखि तबला बन्द करू।
समापन: छहू शेर अपन अर्थमे स्वतंत्र सुनाइ; दर्शन भीतरक भाव-गहराइ बनि रहए, व्याख्यान नहि। स्वर संयत आ गजलपन प्रधान।

गजल ७१२ — भोर मोनमे अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+१ · यति: ८+८
काफिया: –ोर (नोर, भोर, सोर, कोर, डोर, ठोर, छोर) · रदीफ: मोनमे अछि · शेर: ६
मीत दूर, घर सून्न; नोर मोनमे अछि
नेह मौन, दिन चुप; भोर मोनमे अछि
नाम दूर, शब्द चुप; भीतर अर्थ अछि
घर सून्न, मीत दूर; सोर मोनमे अछि
घेर ठाढ़, दीप मन्द; भीतर बाट अछि
मीत दूर, नेह ठाढ़; कोर मोनमे अछि
रूप आन, सोर आन; भीतर नेह अछि
देह आन, मोन एक; डोर मोनमे अछि
रूप एक, मुख आन; भीतर भेद अछि
मुख आन, मीत दूर; ठोर मोनमे अछि
मीत दूर, बाट सून्न; भीतर चिन्ह अछि
घर सून्न, बाट दूर; छोर मोनमे अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+१+१ · यति ८+८

गजल ७१२ — संगीतमय रूप

भाव: विरह · मौन · अनुपस्थिति · भीतरक बाट · बदलैत रूप · चिन्ह · नेह

गति (BPM): ४६–५० · ताल: अति मन्द दादरा ६ मात्रा; शब्द सभसँ आगाँ।

वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, विरल हारमोनियम, बहुत मन्द तबला; बीच-बीचमे मौन राखू।

आरम्भ: “मीत दूर, घर सून्न” गप-जकाँ सहज स्वरमे। “नोर मोनमे अछि” पर स्वर नहि तानू; नोरक भीतरक भार सुनाइ।

मतला: दोसर मिसराक “भोर” केँ आनन्दक पुकार नहि, विरहक बीच बचल भीतरी इजोत जकाँ गाउ। नोर/भोर स्पष्ट रहए।

२म शेर: नाम आ शब्द चुप भऽ सकैत अछि, मुदा अर्थ आ सोर भीतर बचैत अछि। दुनू मिसरा बीच छोट मौन राखू।

३म शेर: घेर ठाढ़ अछि, दीप मन्द अछि, तइयो भीतर बाट अछि। “कोर” पर स्वर नरम करू; भाव अपनत्वक हो, मीतपर दाबीक नहि।

४म शेर: रूप आ सोर बदललापर सेहो नेहक धरातल बचल अछि। “डोर” पर सूक्ष्म जोर; शेरकेँ दार्शनिक कथन नहि, स्मृतिक गप बनाकऽ गाउ।

५म शेर: एक्के रूप आ आन मुखक बीच भेदक पीर अछि। “ठोर” पर कोमल ठहराव; कोनो अतिरिक्त तान नहि।

६म शेर: मीत नदेखाइत अछि, बाट सून्न अछि, मुदा चिन्ह आ छोर मोनमे अछि। अन्तिम रदीफ बाद दू मात्रा मौन राखि तबला रोकू।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक सुनाइ; छह दर्शन-स्रोत केवल भीतरक विचार-बीज छथि, गजलमे नाम वा व्याख्यान नहि।

गजल ७१३ — नेहक नाम आब अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: ८+१०
काफिया: –ाम (नाम, गाम, ठाम, घाम, धाम, काम, दाम) · रदीफ: आब अछि · शेर: ६
काल दूर, चिन्ह ठाढ़; नेहक नाम आब अछि
मीत दूर, घर सून्न; पीरक गाम आब अछि
शब्द एक, अर्थ आन; नामक भेद गाढ़ अछि
सोर दूर, गप चुप; अर्थक ठाम आब अछि
चाह गाढ़, साँच आन; मोनक भ्रम मन्द अछि
दीप मन्द, छाह गाढ़; साँचक घाम आब अछि
रूप आन, काल दूर; चिन्हक नेह ठाढ़ अछि
देह आन, मोन एक; नेहक धाम आब अछि
नोर एक, नेह आन; बीचक दोष ठाढ़ अछि
चिन्ह एक, अर्थ आन; तर्कक काम आब अछि
शब्द गेल, अर्थ ठाढ़; नेहक सोर गाढ़ अछि
सोर गेल, नेह ठाढ़; अर्थक दाम आब अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १८ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति ८+१०

गजल ७१३ — संगीतमय रूप

भाव: विरह · काल · स्मृति · शब्द आ अर्थ · भ्रम आ साँच · चिन्ह · नेह

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: अति मन्द दादरा ६ मात्रा; शब्द आ मौन दुनू समान महत्त्व पाबए।

वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, विरल हारमोनियम आ बहुत मन्द तबला; शेरक बीच छोट मौन राखू।

मतला: “काल दूर, चिन्ह ठाढ़” गप-जकाँ सहज कहू। “नेहक नाम आब अछि” पर स्वर कोमल रहए; दोसर मिसरामे सून्न घरक पीर ढाँकि नहि, संयत रूपेँ सुनाउ।

२म शेर: शब्द एक रहितहुँ अर्थ बदलि सकैत अछि। “अर्थक ठाम” पर हलुक ठहराव; शेरकेँ व्याख्यान नहि बनाउ।

३म शेर: चाह गाढ़ भेलासँ साँच नहि बदलैत। दीप मन्द आ छाह गाढ़क बिम्बमे “साँचक घाम” धीरे उघारू।

४म शेर: रूप आ देह बदललापर सेहो चिन्हारि आ नेहक निरन्तरता सुनाइ। “नेहक धाम” पर स्वर स्थिर राखू।

५म शेर: नोर देखिते नेह मानि नहि लिअ—चिन्ह आ अर्थक बीच विवेक राखब चाही। “तर्कक काम” स्पष्ट, मुदा कोर गजल-जकाँ भावपूर्ण रहए।

६म शेर: शब्द आ सोर गेलापर सेहो अर्थ बचि सकैत अछि। अन्तिम “अर्थक दाम आब अछि” बाद दू मात्रा मौन राखि तबला रोकू।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक सुनाइ; छह दर्शन-पुस्तक केवल भीतरक वैचारिक बीज छथि, गजलमे स्रोत-नाम वा उद्धरण नहि।

गजल ७१४ — नम्र मोन मान संग अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: ८+१०
काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, धान, तान) · रदीफ: संग अछि · शेर: ६
साँच दूर, प्रश्न ठाढ़; नम्र मोन मान संग अछि
ज्ञान कम, दंभ दूर; खोजमे ज्ञान संग अछि
गप सुन, क्रोध दूर; मीत सोर, नेह ठाढ़ अछि
मौन टूट, गप जाग; मोनक ध्यान संग अछि
आन छाह, निज मान; मोन बीच भ्रम ठाढ़ अछि
छाह हट, दीप जाग; साँचक प्राण संग अछि
चाह जाग, डेग चाल; कर्म बीच बाट ठाढ़ अछि
काज कर, फल देख; श्रमक गान संग अछि
गप दूर, काज सिद्ध; फल बीच साँच ठाढ़ अछि
बाट साँच, डेग सिद्ध; नीक खेत धान संग अछि
फूल झर, बास ठाढ़; चिन्ह बीच मूल ठाढ़ अछि
फल देख, मूल खोज; चिन्हक तान संग अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १८ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति ८+१०

गजल ७१४ — संगीतमय रूप

भाव: विनय · प्रश्न · संवाद · भ्रमक छाह · काज · फल · चिन्ह · कारण-खोज

गति (BPM): ४६–५० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर संयत, शब्द स्पष्ट, शेरक बीच छोट मौन राखू।

वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, विरल हारमोनियम आ मन्द तबला; दार्शनिक भावक भार संगीतपर नहि थोपल जाए।

मतला: “साँच दूर, प्रश्न ठाढ़” सहज गप-जकाँ कहू। “ज्ञान कम, दंभ दूर”मे विनयक भाव रहए; काफिया–रदीफ पर कृत्रिम जोर नहि।

२म शेर: पहिने सुनब, तखन उत्तर। “मौन टूट, गप जाग” पर स्वर तनिक खुलए; संवादकेँ वाद-विवादक कोलाहल नहि बनाउ।

३म शेर: परक छाह अपन दोष बुझबाक भ्रम भीतरक पीर बनबैत अछि। “छाह हट, दीप जाग” धीरे उघारू।

४म शेर: चाह मात्र नहि—डेग, काज आ प्रयत्न सेहो चाही। “श्रमक गान संग अछि” पर लय स्थिर राखू।

५म शेर: कथनसँ बेसी काजक फल महत्त्वपूर्ण। “नीक खेत धान संग अछि” केँ सफल प्रवृत्तिक सरल बिम्ब जकाँ गाउ।

६म शेर: झरल फूलक बादो बास आ चिन्ह कारणक खोज जगबैत अछि। अन्तिम “चिन्हक तान संग अछि” बाद दू मात्रा मौन राखू।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पुस्तक केवल भीतरक वैचारिक बीज, कोनो स्रोत-नाम वा उद्धरण गजलमे नहि।

गजल ७१५ — मोनमे सार बचल अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति: ८+११
काफिया: –ार (सार, भार, तार, धार, पार, मार, हार) · रदीफ: बचल अछि · शेर: ६
रूप देख, मोन पूछ; मोनमे सार बचल अछि
देह देख, मोन मौन; देहमे भार बचल अछि
शब्द सुन, मीत संग; गपमे अर्थ कहैत अछि
सोर सुन, मीत संग; शब्दमे तार बचल अछि
बीज संग, मेघ संग; खेतमे धान उगैत अछि
घाम संग, नीर संग; काजमे धार बचल अछि
छाह हट, मोह दूर; मोनमे बन्ध हटैत अछि
मोह दूर, नेह शुद्ध; बाटमे पार बचल अछि
घर सून्न, मीत दूर; घरमे नोर बहैत अछि
मीत दूर, घर मौन; घावमे मार बचल अछि
नोर देख, मोन पूछ; मोनमे प्रश्न उठैत अछि
चिन्ह देख, मोन मौन; बाटमे हार बचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १९ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+१+२+१+१ · यति ८+११

गजल ७१५ — संगीतमय रूप

भाव: द्रष्टा–दृश्य भेद · साझा अर्थ · सहायक कारण · मोह-निषेध · अनुपस्थितिक पीर · चिन्ह आ शर्त
गति (BPM): ४६–५० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर निकट, संयत आ गप-जकाँ सहज राखू।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, हलुक हारमोनियम आ विरल तबला; शब्दक अर्थ संगीतसँ ढाकल नहि जाए।
मतला: “रूप देख, मोन पूछ”मे बाहरक रूप आ भीतरक प्रश्नक दूरी स्पष्ट हो। दोसर मिसरामे देहक भारक अनुभूति धीमे उतरए।
२म शेर: अर्थ एकान्त शब्दमे नहि, संगक गप आ सुनबामे खुलैत अछि। “शब्दमे तार बचल अछि”मे सम्बन्धक सूक्ष्म डोर सुनाउ।
३म शेर: बीज असगरे धान नहि बनबैत; मेघ, घाम, नीर आ काजक संगति चाही। लय स्थिर राखू, बिम्बकेँ उपदेश नहि बनाउ।
४म शेर: छाह आ मोह हटिते बन्ध ढीला पड़ैत अछि; “बाटमे पार बचल अछि”मे मुक्तिक संकेत रहए, घोषणा नहि।
५म शेर: सून्न घर निरा शून्य नहि; मीतक अनुपस्थिति नोर आ घावक रूपमे अनुभव होइत अछि। स्वर विरल राखू।
६म शेर: नोर वा कोनो एक चिन्ह देखिते तुरन्त निष्कर्षपर नहि पहुँचू; भीतर प्रश्न जागए, कारणक लुकल शर्तक सम्भावना बचल रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पुस्तक केवल भीतरक वैचारिक बीज, कोनो स्रोत-नाम वा उद्धरण गजलमे नहि।

गजल ७१६ — भोर रहि जाइत अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+१+१+२+१+१+१ · यति: ८+९
काफिया: –ोर (भोर, ठोर, सोर, नोर, डोर, छोर, कोर) · रदीफ: रहि जाइत अछि · शेर: ६
लोभ क्षण, नेह धीर; भोर रहि जाइत अछि
काल कात, प्रश्न ठाढ़; ठोर रहि जाइत अछि
कौल देल, नेह गाढ़; अर्थ जगि जाइत अछि
हाथ धेल, मीत संग; सोर रहि जाइत अछि
छाह देख, मीत मान; भ्रम उठि जाइत अछि
भोर भेल, छाह दूर; नोर रहि जाइत अछि
काल बीत, रूप फेर; नाम कहि जाइत अछि
रूप फेर, मोन एक; डोर रहि जाइत अछि
रूप देख, शब्द मौन; चिन्ह बनि जाइत अछि
नाम देल, अर्थ स्पष्ट; छोर रहि जाइत अछि
काज देख, क्रम देख; प्रश्न उठि जाइत अछि
हाथ दूर, चिन्ह संग; कोर रहि जाइत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १७ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+१+१+२+१+१+१ · यति ८+९

गजल ७१६ — संगीतमय रूप

भाव: क्षणिक चाव बनाम टिकाउ नेह · वचनक काज · भ्रम आ साँच · स्मृति-निरन्तरता · नाम देबाक पहिल-पछिला बोध · चिन्हसँ कारण-खोज

गति (BPM): ४८–५२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर निकट, संयत आ गप-जकाँ सहज रहए।

वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, हलुक हारमोनियम आ विरल तबला; शब्दक अर्थपर वाद्य हावी नहि हो।

मतला: पहिल मिसरामे क्षणिक लोभक सोझाँ धीर नेहक भोर; दोसर मिसरामे काल कात होइतहुँ प्रश्न ठोरपर बचल रहबाक तनाव स्पष्ट हो।

२म शेर: कौल केवल ध्वनि नहि—कहल वचन सम्बन्धमे काज करैत अछि। “हाथ धेल, मीत संग”मे निकटता सहज रहए, अभिनय नहि।

३म शेर: छाहकेँ मीत मानल भ्रम भोरमे टूटैत अछि; भ्रम हटला पछातियो नोरक मानवीय अवशेष रहि सकैत अछि।

४म शेर: काल बीतैत रूप फेर हो, मुदा स्मृति आ प्रत्यभिज्ञाक डोर “मोन एक”क अनुभव जगबैत अछि।

५म शेर: पहिल देखाइमे शब्द मौन रहि सकैत अछि; नाम देलापर अर्थक सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि। एहि शेरकेँ व्याख्यान नहि, अनुभव-जकाँ गाउ।

६म शेर: काज आ क्रम देखि प्रश्न उठैत अछि; हाथ सोझाँ नहि देखाइतहुँ चिन्ह कारण दिस संकेत करैत अछि। तुरन्त निश्चयक बदला खोजक भाव राखू।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पुस्तक केवल भीतरक वैचारिक बीज, कोनो स्रोत-नाम वा उद्धरण गजल-पाठमे नहि।

गजल ७१७ — मान बचैए एखनो

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १७ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | १+२+२+२+२ · यति: ८+९
काफिया: –ैए (बचैए, बुझैए, खुलैए, रहैए, कहैए, सुझैए, दिसैए) · रदीफ: एखनो · शेर: ६
मोनक मान थिर; बचैए एखनो
साँचक सीमा; बुझैए एखनो
गपक ठाम फेर; न अर्थ दूर, नेह थिर
बोलक चालसँ; खुलैए एखनो
रूप काल संग फेर; न मोन दूर, नेह थिर
चिन्हक डोर थिर; रहैए एखनो
छाहक रूप भ्रम; न दीप दूर, साँच थिर
छाहक पार दीप; कहैए एखनो
काज क्रम चिन्ह संग; न मूल दूर, राह थिर
काजक चिन्ह मूल; सुझैए एखनो
रूप देख चिन्ह संग; न झट मान, साँच थिर
रूपक भेद स्पष्ट; दिसैए एखनो

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १७ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | १+२+२+२+२ · यति ८+९

गजल ७१७ — संगीतमय रूप

भाव: मानवीय गरिमा आ ज्ञानक सीमा · बोलक प्रयोगमे अर्थ · रूप फेरलापर आत्म-निरन्तरता · अध्यास हटला पछाति भीतरक इजोत · कार्यसँ कारणक संकेत · प्रत्यक्ष चिन्ह देखि झट निर्णय नहि

गति (BPM): ५०–५४ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर निकट, संयत आ गप-जकाँ सहज रहए।

वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, हलुक हारमोनियम आ विरल तबला; वाद्य शब्द कैं नहि ढाकए।

मतला: “मोनक मान थिर”मे गरिमा अक्षुण्ण रहबाक भाव; दोसर मिसरामे साँचक सीमा बुझबाक विनय। काफिया–रदीफ स्पष्ट, मुदा बनावटी जोर नहि।

२म शेर: गपक ठाम फेरलासँ अर्थक रूप फेरि सकैत अछि; “बोलक चालसँ” अर्थ खुलबाक अनुभव गाउ, सिद्धान्त नहि।

३म शेर: काल संग रूप फेरलापर सेहो चिन्हक डोर आत्म-निरन्तरताक अनुभव जगबैत अछि; स्वर भीतर दिस रहए।

४म शेर: छाहक रूपकैं साँच मानबाक भ्रम हटैत अछि; छाहक पारक दीप भीतरक इजोत-जकाँ सुनाइ।

५म शेर: काज, क्रम आ चिन्हसँ अदृश्य मूल दिस संकेत भेटैत अछि; शेर प्रश्नक द्वार खोलए, हठपूर्वक निष्कर्ष नहि दे।

६म शेर: रूप आ चिन्ह देखलापर झट मानि नहि लिअ; भेद स्पष्ट होइतहुँ जाँचक धीरता बचल रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पुस्तक केवल भीतरक वैचारिक बीज, कोनो स्रोत-नाम वा उद्धरण गजल-पाठमे नहि।

गजल ७१८ — आन बाट दिसैए फेर

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+१+२+२+२ · यति: ८+११
काफिया: –ैए (दिसैए, झलकैए, बुझैए, रहैए, मिलैए, हटैए) · रदीफ: फेर · शेर: ६
दिस फेर साँच रूप; आन बाट दिसैए फेर
एक नीर घाट फेर; आन रंग झलकैए फेर
बीटल चिन्ह संग; नव अर्थ खुलैए मोन
पाठ फेर गप संग; नव अर्थ बुझैए फेर
मोन छाह रूप फेर; दीप थिर रहैए मोन
छाह रूप फेर गेल; दीप थिर रहैए फेर
रंग गन्ध रूप फेर; मूल ठाम मिलैए मोन
रंग रूप फेर गेल; मूल ठाम मिलैए फेर
क्रम चिन्ह फेर भेट; मूल राह सुझैए मोन
क्रम फेर चाल एक; संयोग हटैए फेर
दूर बाट छाह घेर; साँच बोल सुनैए मोन
साँच बोल राह खोल; दूर बाट मिलैए फेर

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १९ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+१+२+२+२ · यति ८+११

गजल ७१८ — संगीतमय रूप

भाव: एक्के वस्तुक अनेक दिस · बीटल अनुभवसँ नव अर्थ · बदलैत मनोवृत्तिक बीच थिर इजोत · रंग-गन्ध फेरलापर मूल आधार · क्रम आ संयोगक भेद · साँच वचनसँ दूर बाटक ज्ञान।

गति (BPM): ५२–५६ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर आत्मीय, विचारशील आ गप-जकाँ सहज रहए।

वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; शब्दक अर्थ प्रधान रहए, अलंकरण अल्प।

मतला: पहिल मिसरामे दिस फेरलापर साँचक आन रूप देखाइ; दोसर मिसरामे एक्के नीर भिन्न घाटपर आन रंग झलकि उठए। दुनू ठाम “फेर” सहज उतारसँ स्पष्ट हो।

२म शेर: बीटल अनुभवक चिन्ह नव पाठक अर्थ खोलैत अछि; गप आ पाठक मेलमे अर्थ फेर बुझाइत अछि। शेर व्याख्या नहि, स्मृतिक अनुभव-जकाँ सुनाइ।

३म शेर: मोनक छाह रूप फेरैत रहए, मुदा भीतरक दीप थिर रहबाक अनुभूति दियौ; स्वर स्थिर आ धीमा।

४म शेर: रंग, गन्ध आ रूप फेरलापर सेहो मूल ठाम खोजल जा सकैत अछि; “मूल ठाम”पर हलुक ठहराव।

५म शेर: फेर-फेर भेटैत क्रम संयोगक दाबी दुर्बल करैत अछि; शेर प्रश्न खोलए, कठोर निष्कर्ष नहि थोपी।

६म शेर: दूर बाट आँखिसँ स्पष्ट नहि रहितहुँ साँच बोल राह खोलि सकैत अछि; विश्वासक भाव संयत रहए, भावुक अतिरंजना नहि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पुस्तक केवल भीतरक वैचारिक बीज छथि—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक व्याख्या गजल-पाठमे नहि।

गजल ७१९ — मोन फेर बाट बदलैए

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+२+२ · यति: ८+११
काफिया: –ाट (बाट, पाठ, हाट, पाट, घाट) · रदीफ: बदलैए · शेर: ६
लोक बोल नेह संग; मोन फेर बाट बदलैए
शास्त्र पाठ लोक संग; मोन फेर पाठ बदलैए
नाम छाप देह संग; साँच रूप फेर खुलैए
नाम जाल लोक संग; मोन फेर हाट बदलैए
मोन चाह रंग फेर; साँच थिर दीप रहैए
छाह रंग काल संग; मोन फेर पाट बदलैए
बीज काल नीर संग; मूल राह फेर खुलैए
घाम नीर बीज संग; रूप फेर घाट बदलैए
सभ बोल धुँध मान; निज मान फेर डोलैए
निज मान प्रश्न संग; मोन फेर पाठ बदलैए
एक पग दू पग; मूल राह फेर खुलैए
चिन्ह क्रम मेल संग; मोन फेर बाट बदलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १९ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+१+२+२ · यति ८+११

गजल ७१९ — संगीतमय रूप

भाव: लोक आ शास्त्रक संवाद · नाम/वर्गीकरणक सामाजिक प्रभाव · चाहसँ स्वतंत्र साँच · बीजक सामर्थ्य आ सहायक कारण · सर्वसंशयक आत्म-परीक्षा · क्रमिक प्रमाणसँ निर्णय।
गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर निकट, सहज आ विचारपूर्ण रहए, मुदा शेर गप-जकाँ जीवित सुनाइ।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; वाद्य अर्थक सहचर रहए, शब्द केँ नहि ढाकए।
मतला: पहिल मिसरामे लोकक बोल आ नेह मोनक बाट फेरैत अछि; दोसर मिसरामे शास्त्र लोकसँ भेटि अपन पाठ नव रूपेँ खोलैत अछि। “बदलैए” दुनू मिसरामे सहज उतरए।
२म शेर: देहपर लागल नाम-छाप साँचक समग्र रूप नहि; नामक जाल लोकक हाट, मान आ बाँटकेँ प्रभावित करैत अछि। स्वर आरोप नहि, अनुभूति-जकाँ रहए।
३म शेर: मोनक चाह रंग फेरि सकैत अछि, मुदा साँचक दीप इच्छाक आदेशपर नहि फेरए; छाह आ कालक संग मोनक पाट बदलैत अछि।
४म शेर: बीज एकसर नहि—काल, नीर आ घामक संग ओकर सम्भावना रूप धरैत अछि। कारणक बात उपदेश नहि, अंकुर फुटबाक बिम्ब-जकाँ सुनाइ।
५म शेर: सभ बोलकेँ धुँध मानल जाए तँ अपन मान सेहो डोलैत अछि; प्रश्न अपन दिस घुरैत अछि। संशयक स्वर विनम्र रहए, निराश नहि।
६म शेर: एक पगसँ अन्तिम बाट नहि खुलैत; चिन्ह, क्रम आ मेलसँ राह स्पष्ट होइत अछि। निष्कर्ष क्रमसँ आबए, झट नहि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पुस्तक भीतरक वैचारिक बीज मात्र छथि—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७२० — साँच लेल कोन माप अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: ८+१०
काफिया: –ाप (माप, छाप, ताप, थाप, जाप, संताप, आलाप) · रदीफ: अछि · शेर: ६
प्रश्न जाग मोन मौन / साँच लेल कोन माप अछि
एक दिस साँच रूप / आन दिस आन छाप अछि
चित्र देख सोर सुन / जाँच बिन झट मान नहि
काज फेर लोक बीच / नाम पर फेर ताप अछि
शब्द थिर पाठ मौन / काज मात्र एक अर्थ नहि
मौन पाठ बोल बीच / साँच रूप थिर थाप अछि
काल बीत देह दूर / मीत नाम मोन दूर नहि
देह दूर काल पार / मोन बीच नाम जाप अछि
फल दूर काज मौन / चिन्ह क्रम व्यर्थ गप नहि
काज फल काल पार / मोन पर संताप अछि
रूप देख मान झट / काज फल बिन साँच नहि
काज फल मेल देख / साँच नव आलाप अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १८ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति ८+१०

गजल ७२० — संगीतमय रूप

भाव: साँचक एकसँ बेसी दिस · देखल-सुनलक पुनःजाँच · शब्द केवल काजक आदेश नहि · स्मृतिक भीतर चिन्हारि · अदृश्य कारणक नैतिक ताप · काज आ फल मिललापर ज्ञानक पुनःपरीक्षा।
गति (BPM): ५२–५६ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर निकट आ संयत रहए, प्रश्नक ठाम प्रश्न आ मौनक ठाम मौन बचल रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; वाद्य शब्दक सहचर रहए, शब्द केँ नहि ढाकए।
मतला: पहिल मिसरामे प्रश्न उठए—साँचक माप की? दोसर मिसरामे एक्के साँच भिन्न दिससँ भिन्न छाप छोड़ैत देखाउ। “अछि” सहज, अनावश्यक जोर बिनु उतरए।
२म शेर: चित्र आ सोर देखितहि-सुनितहि निष्कर्ष नहि; फेर जाँच आवश्यक। दोसर मिसरामे काज लोकक बीच नामपर ताप छोड़ैत अछि—उत्तरदायित्वक भाव सूक्ष्म रहए।
३म शेर: शब्दक अर्थ केवल काज करबाक आदेश धरि सीमित नहि; मौन पाठ आ बोलक बीच साँचक थिर थाप सुनाइ। स्वर उपदेशक नहि, खोजक हो।
४म शेर: काल आ दूर रहब देहकेँ दूर करए, मुदा मीतक नाम मोनसँ दूर नहि; स्मृति चिन्हारिक सूत्र बनि रहए।
५म शेर: फल तुरत नहि दिसलापर कारण शून्य मानि नहि लिअ; चिन्ह आ क्रम व्यर्थ गप नहि। दोसर मिसरामे काजक नैतिक संताप काल पार धरि रहि सकैत अछि।
६म शेर: रूप देखितहि झट मानि लेब उचित नहि; काज आ फल मिललापर पुनः जाँच चाही। साँच नव आलाप-जकाँ खुलए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पुस्तक वैचारिक बीज मात्र छथि—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७२१ — दिस आन साँच देख

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: ८+१०
काफिया: –ाल (हाल, काल, जाल, चाल, ताल) · रदीफ: अछि · शेर: ६
दिस आन साँच देख / मोन बीच नव हाल अछि
मत भिन्न तर्क सुन / साँच बीच नव काल अछि
लोक मान देह घेर / नाम रूप सभ थिर नहि
छाप देह मोन घेर / लोक बीच नव जाल अछि
मोह दूर नेह थिर / मोन मुक्त बाट दूर नहि
भ्रम दूर रूप थिर / मोन बीच नव चाल अछि
मोन रूप फेर डोल / देह लोक काज भ्रम नहि
देह काज लोक थिर / जग बीच निज ताल अछि
नाम बोल लोक संग / अर्थ रीत सभ एक नहि
लोक रीत शब्द जोड़ / अर्थ बीच नव चाल अछि
साँच रूप कात थिर / फेर तर्क काज शेष नहि
सिद्ध साँच फेर तर्क / मोन बीच नव जाल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १८ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति ८+१०

गजल ७२१ — संगीतमय रूप

भाव: असहमति सुनितहुँ सत्य-परीक्षा · ज्ञान आ सामाजिक मानकक दबाव · मोह/भ्रम हटला पछाति मुक्ति · मोनक रूपसँ बाहरक यथार्थ · लोक-व्यवहारमे शब्द-अर्थक रीत · सिद्ध साँचपर अनावश्यक अनुमानसँ बचाव।

गति (BPM): ५०–५४ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर निकट, संयत आ आत्मीय रहए; तर्कक भीतर सेहो नेह आ मानवीय अनुभवक ऊष्मा बचल रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; वाद्य केवल भावक सहचर रहए, शब्द केँ नहि ढाकए।

मतला: पहिल मिसरामे आन दिससँ साँच देखबाक विनय; दोसर मिसरामे भिन्न मत आ तर्क सुनितहुँ सत्यक कालिक परीक्षा। “अछि” सहज उतरए।

२म शेर: लोकक मानक देह आ नाम-रूप घेरि सकैत अछि; एहि छापक जालकेँ साँचक समग्र रूप नहि मानू। स्वर आलोचनात्मक मुदा संयत रहए।

३म शेर: मोह दूर भेलापर नेह थिर रहि सकैत अछि; भ्रम हटिते मोन नव चाल पबैत अछि। मुक्ति केँ उद्घोष नहि, भीतरक हलुक खुलबाक रूपमे गाउ।

४म शेर: मोनक रूप डोलैत अछि, मुदा देह, लोक आ काज भ्रम मात्र नहि; जग अपन तालमे अछि।

५म शेर: नाम आ बोल लोकक व्यवहारमे अर्थक रीत बनबैत अछि; सभ अर्थ एक नहि, लोक-प्रयोगमे अर्थ खुलैत अछि।

६म शेर: जतय साँच प्रत्यक्षतः थिर अछि, ओतय फेर तर्कक काज शेष नहि; अनुमानक काज आवश्यकताक ठामे रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पुस्तक भीतरक वैचारिक बीज मात्र छथि—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७२२ — साँच एक बेर भेल नहि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: २० मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: १०+१०
काफिया: –ेल (भेल, लेल, मेल) · रदीफ: नहि · शेर: ६
मीत ज्ञान थिर नै मान / साँच एक बेर भेल नहि
नव चिन्ह मोन फेर देख / जाँच बिन मत लेल नहि
रीत नित नाम रूप देत / नाम थिर मान झूठ अछि
रीत फेर नाम रूप फेर / रूप थिर मान लेल नहि
मीत शब्द सुन फेर सोच / मोन बीच अर्थ जाग अछि
पाठ मात्र शब्द नै मान / मोन बिन अर्थ मेल नहि
रंग गन्ध रस संग देख / सभ गुण एक ठाम अछि
सभ गुण एक संग देख / गुण मात्र देह भेल नहि
रूप संग रूप फेर देख / आन नाम नव राह अछि
मेल देख मीत नाम सीख / रूप एक संग भेल नहि
काज झट रूप फेर देख / पाछाँ मूल क्रम अछि
क्रम देख मूल फेर खोज / काज बिन मूल भेल नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = २० मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति १०+१०

गजल ७२२ — संगीतमय रूप

भाव: ज्ञानक विनय आ संशोधन · रीतिसँ बनैत थिर-जकाँ पहिचानक परिवर्तनशीलता · सुनल शब्दसँ भीतरक अर्थ धरि यात्रा · गुणसभ आ समग्र वस्तुक भेद · सादृश्यसँ नूतन नामक ज्ञान · अकस्मात् देखाइत घटनामे कारण-क्रमक खोज।

गति (BPM): ५०–५४ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर निकट, संयत आ विचारशील रहए, मुदा शेरसभ गप-जकाँ सहज सुनाइ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; वाद्य शब्दक सहचर रहए, कोनो दार्शनिक भार शब्दक भाव कैँ नहि ढाकए।

मतला: “ज्ञान थिर मत मान” विनयक स्वरमे; दोसर मिसरामे नव चिन्ह देखिते फेर जाँच करबाक आग्रह। रदीफ “नहि” छोट, स्वाभाविक ठहरावसँ उतरए।

२म शेर: रीत, नाम आ चाल दोहरैत रूपकैँ थिर-जकाँ देखबैत अछि; फेरल रीतिसँ फेर अर्थ/रूप खुलि सकैत अछि। शेर उपदेश नहि, देखल-बुझल गप-जकाँ गाउ।

३म शेर: सुनल शब्द मात्र पर्याप्त नहि; भीतर विचार भेलापर अर्थ जागैत अछि। स्वर धीरे भीतर उतरए।

४म शेर: रंग, गन्ध, रस आदि गुण एक ठाम भेटितहुँ ओहि जोड़कैँ समग्र देह मानि लेब उचित नहि। “गुण मात्र देह भेल नहि” स्पष्ट मुदा कोमल रहए।

५म शेर: एक रूपक मेलसँ आन नाम सीखल जा सकैत अछि, मुदा सादृश्य दुनूकैँ एक वस्तु नहि बनबैत। शेरमे खोजक कौतूहल रहए।

६म शेर: अकस्मात् रूप बदलल काजक पाछाँ सेहो क्रम आ मूल खोजू; अकारण कहि देबासँ पहिने कारणक डोर देखू।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पुस्तक वैचारिक बीज मात्र छथि—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७२३ — नेहक सार होइत अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+२+१+१ · यति: १०+८
काफिया: –ार (भार, सार, पार, धार, तार, द्वार, हार) · रदीफ: होइत अछि · शेर: ६
बाट चुन फल निज सह / भार होइत अछि
आन हक मान नेह धर / सार होइत अछि
लाभ गिन नोर संग बूझ / मान मात्र दाम नहि
पीर सुन धीर मोन राख / पार होइत अछि
शब्द सुन फेर मोन खोल / बिन सोच बोध नहि
गप सुन मोन बीच धर / धार होइत अछि
ज्ञान चाह श्रम संग राख / काज मात्र देह नहि
ज्ञान चाह श्रम एक संग / तार होइत अछि
पद पद संग मात्र जोड़ / अर्थ मात्र योग नहि
पद मेल मोन भाव संग / द्वार होइत अछि
सूत तान हाथ सभ मान / एक मूल काज नहि
काज मूल क्रम संग जोड़ / हार होइत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १८ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+२+१+१ · यति १०+८

गजल ७२३ — संगीतमय रूप

भाव: चयनक संग दायित्व · सेवा-सँभार आ गरिमा · सुनल वचनक भीतर मनन · ज्ञान-चाह-श्रमक संयुक्त कर्तृत्व · पदसभक मेलसँ परे वाक्यार्थक शर्त · निकट कारणसभक संग कारण-क्रमक व्यापक हार।

गति (BPM): ५०–५४ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर निकट, संयत आ आत्मीय रहए; विचार शेरक भीतर रहए, व्याख्यानक रूप नहि ले।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; वाद्य शब्दक सहचर रहए, भाव केँ नहि ढाकए।

मतला: पहिल मिसरामे बाट चुनबाक संग फल सहबाक भाव; दोसर मिसरामे आनक हक मानबाक संग नेहक सार। रदीफ “होइत अछि” सहज उतरावसँ गाउ।

२म शेर: लाभक लेखाक संग नोर बुझब आ पीर सुनबाक धीरज; सेवा केँ दामक सीमा पार करैत गरिमापूर्ण उपस्थितिक रूपमे राखू।

३म शेर: सुनल शब्द पर थामि नहि जाउ; मोन खोलि सोचला पर बोधक धार पैघ होइत अछि। स्वर भीतर दिस झुकल रहए।

४म शेर: ज्ञान, चाह आ श्रम एक संग काजक तार बनबैत अछि; देह मात्र कर्तृत्वक समग्र अर्थ नहि।

५म शेर: पद मात्र जोड़लासँ अर्थ पूर्ण नहि; पदक मेल, मोनक भाव आ प्रसंग अर्थक द्वार खोलैत अछि।

६म शेर: सूत, तान, हाथ आदि निकट कारण सभकेँ मानैत काज–मूल–क्रमक हार देखू; एक कारणमे समस्त व्यवस्था समेटू नहि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पुस्तक वैचारिक बीज मात्र छथि—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७२४ — साँचक नव ढंग रहैए

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+१+२+२ · यति: १०+९
काफिया: –ंग (ढंग, रंग, संग, भंग, अंग) · रदीफ: रहैए · शेर: ६
भूल मान फेर जाँच कर / नव ढंग रहैए
साँच संग प्रश्न राख धीर / नेह रंग रहैए
पीर चाल नेह मोन श्वास / ई देह न मात्र भार
जग संग देह नित बूझ / देह ढंग रहैए
भिन्न पाठ सभ अर्थ खोज / एक पाठ न सभ साँच
भिन्न सोर मूल नेह जोड़ / अर्थ संग रहैए
नाम भेद मात्र देख मोन / आन नाम न अर्थ सार
रूप भेद बीच गुण बूझ / मूल रंग रहैए
रोक संग नेह मौन रह / ई काज न पाब बाट
रोक हट नेह फेर चल / रोध भंग रहैए
ज्ञान भेल मोन फेर जाग / ई बोध न मात्र नाम
ज्ञान संग मोन ज्ञान बूझ / बोध अंग रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १९ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+१+२+२ · यति १०+९

गजल ७२४ — संगीतमय रूप

भाव: भूल स्वीकारि फेर जाँच · देहकेँ अनुभवक जीवित माध्यम बुझब · भिन्न पाठक समन्वय · नाम-भेदसँ परे सकारात्मक अर्थ · अवरोध हटबाक कारणात्मक भूमिका · मोनद्वारा फेर ज्ञानक ग्रहण।

गति (BPM): ५०–५४ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर आत्मीय, विनम्र आ विचारशील रहए; दर्शन शेरक भीतर भाव बनि रहए, व्याख्यान नहि।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; काफिया –ंग पर सूक्ष्म ठहराव, रदीफ “रहैए” सहज उतरावसँ।

मतला: भूल स्वीकारि फेर जाँच करब खोजक नव ढंग; प्रश्नक संग धीरता रखलासँ नेहक रंग नहि मेटाइ। दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट।

२म शेर: पीर, चाल, नेह, मोन आ श्वास देहक जीवित अनुभूतिक एकहि क्षेत्र; देह केँ मात्र भार वा बाहरक वस्तु नहि बुझू।

३म शेर: भिन्न पाठ आ सोरकेँ एक-दोसरक विरोधी खण्ड मात्र नहि मानू; अर्थक समन्वयमे सभक अपन ठाम रहि सकैत अछि।

४म शेर: केवल “आन” कहि देलासँ अर्थ सिद्ध नहि; भेदक बीच सकारात्मक गुण, रूप आ मूल अर्थ सेहो बूझू।

५म शेर: काजक बाट रोकल हो तँ केवल शक्ति खोजब पर्याप्त नहि; अवरोध हटब सेहो गति सम्भव होयबाक शर्त।

६म शेर: पहिल ज्ञानक बाद मोन ओहि ज्ञानकेँ फेर ग्रहण करैत अछि—“हम जानैत छी”क भीतर ज्ञानक ज्ञानक सूक्ष्म बोध।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पोथी वैचारिक बीज मात्र—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७२५ — नेह मूल सार अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+१+१ | २+२+२+१+१ · यति: ८+८
काफिया: –ार (सार, पार, धार, द्वार, तार, हार, भार) · रदीफ: अछि · शेर: ६
जोर बीच मान नहि / नेह मूल सार अछि
जोर संग प्रश्न अछि / मान बाट पार अछि
गप मूल भाव अछि / सुन अर्थ एक नहि
आन मोन बोध अछि / अर्थ नव धार अछि
छाह हट दीप अछि / नव दीप भेल नहि
रोध भंग भेल अछि / मुक्त बोध द्वार अछि
रूप नित फेर अछि / सभ मूल भंग नहि
नाम बोध संग अछि / काल धार तार अछि
देख रूप साँच नहि / रूप भेद बोध नहि
भेद बूझ थिर अछि / भ्रम भार हार अछि
रीत बिन शब्द नहि / लोक बिन अर्थ नहि
लोक रीत अर्थ अछि / शब्द मान भार अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+१+१ | २+२+२+१+१ · यति ८+८

गजल ७२५ — संगीतमय रूप

भाव: जोर आ मानक विरोध · कहल गप आ सुनल अर्थक दूरी · छाह हटला पर पहिनेसँ रहल इजोतक बोध · रूप बदललापर मूल निरन्तरता · देखल वस्तु आ स्मृतिक छवि बीच भेद · लोक-रीतिसँ शब्द-अर्थक मान।

गति (BPM): ५०–५४ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर निकट, संयत आ प्रश्नशील रहए; दर्शन भावक भीतरी तह हो, व्याख्यान नहि।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; काफिया –ार पर सूक्ष्म ठहराव, रदीफ “अछि” छोट आ स्पष्ट।

मतला: जोरक बीच मान नहि बचैत; नेहक मूल सार मान आ प्रश्नक अधिकारसँ जुड़ैत अछि। दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट।

२म शेर: कहल गपक मूल भाव एक भऽ सकैत अछि, मुदा आन मोन सुनि अर्थक नव धार खोलि सकैत अछि।

३म शेर: छाह हटला पर दीप नव बनैत नहि; रोध भंगलापर पहिनेसँ रहल बोध खुलैत अछि।

४म शेर: रूप नित फेर होइत रहए, तैयो सभ मूल भंग नहि; नाम-बोध कालक धारमे निरन्तरताक तार बनि सकैत अछि।

५म शेर: देखल रूपकेँ झट साँच मानू नहि; भेद बूझलापर भ्रमक भार हारैत अछि।

६म शेर: लोक-रीत बिन शब्दक मान स्थिर नहि; शब्द-अर्थ लोक-व्यवहारक भीतर वजन पबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पोथी वैचारिक बीज मात्र—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७२६ — मोन बीच एक नाव अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १८ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति: ८+१०
काफिया: –ाव (भाव, चाव, ठाव, नाव) · रदीफ: अछि · शेर: ६
डेग फेर डेग नित / मोह दूर नव भाव अछि
लोभ दूर मोन थिर / नेह बीच नव चाव अछि
नाम फेर नाम फेर / जल धार नाम मान नहि
शब्द दे जग रूप / साँच देह मूल ठाव अछि
ज्ञान चाह मोन बीच / मोन थिर बिन पार नहि
धीर मोन नेह संग / ज्ञान बाट नव चाव अछि
बीज नीर घाम संग / फल झट एक बेर नहि
काल दे फल रूप / बेर संग नव भाव अछि
रूप सोर गंध संग / मोन सभ एक बेर नहि
रूप सोर फेर फेर / मोन बीच एक नाव अछि
आन मत सभ सुन / आन बोल मात्र दोष नहि
आन स्वर मान संग / साँच गप मूल भाव अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १८ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+२+१+१ · यति ८+१०

गजल ७२६ — संगीतमय रूप

भाव: डेग पर डेग साधना आ मोहक ढील · शब्दक सीमा आ जगतक अपन ठाम · ज्ञानक चाहसँ पहिने मोनक तैयारी · फल लेल काल-क्रमक धीरता · रूप-सोर-गन्धक क्रमिक अनुभूति · आन मत सुनि तखन न्याय।

गति (BPM): ५०–५४ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर सहज, अन्तरमुखी आ धीर रहए; दर्शन भीतरी बीज हो, व्याख्यान नहि।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; काफिया –ाव पर छोट ठहराव, रदीफ “अछि” स्पष्ट मुदा अनावश्यक जोर बिन।

मतला: पहिल मिसरामे अभ्यासक डेग आ मोहसँ दूरी; दोसर मिसरामे लोभ घटलापर नेहक नव चाव। दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट।

२म शेर: नाम बदललासँ जलक धार अपन गति नहि छोड़ैत; शब्द जगकेँ रूप दैत अछि, मुदा साँचक अपन ठाम रहैत अछि।

३म शेर: ज्ञानक चाह मात्र पर्याप्त नहि; धीर मोन आ नेहसँ ज्ञान-बाटक चाव स्थिर होइत अछि।

४म शेर: बीज, नीर आ घाम रहितहुँ फल एक बेरमे नहि; काल-क्रम फलकेँ रूप दैत अछि।

५म शेर: रूप, सोर आ गन्ध एक्के बेर जकाँ लगैत अछि, मुदा मोन एक नाव-जकाँ अनुभवक बीच फेर-फेर चलैत अछि।

६म शेर: आन मत सभ सुनि तखन विचार करू; आन स्वरकेँ मान देलापर साँच गपक मूल भाव खुलैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पोथी वैचारिक बीज मात्र—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७२७ — जग मान जागैए

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: १९ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२ | २+२+१+२+२ · यति: १०+९
काफिया: –ान (मान, तान, ध्यान, गान, ज्ञान) · रदीफ: जागैए · शेर: ६
नीर वन हक मान राख / जग मान जागैए
पाछाँ लोक हक राख / नव तान जागैए
यंत्र हाथ चाल फेर दे / हाथ चाल न थिर रीत
यंत्र संग मोन फेर चल / नव ध्यान जागैए
सुख चाह मोन मोह राख / सुख चाह न मुक्त राह
पीर मूल दूर कर फेर / मुक्त गान जागैए
काज मोन शुद्ध कर फेर / काज मात्र न ज्ञान मूल
मोन शुद्ध बोध जाग फेर / नव ज्ञान जागैए
देह मात्र रूप देख मोन / देह जोर न काज मूल
चाह श्रम ज्ञान संग राख / नव गान जागैए
चिन्ह मेल मोन संग राख / चिन्ह मात्र न साँच ज्ञान
चिन्ह मेल एक संग जोड़ / नव ज्ञान जागैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १९ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२ | २+२+१+२+२ · यति १०+९

गजल ७२७ — संगीतमय रूप

भाव: नीर-वन आ पाछाँ आबयवला लोकक हक · यंत्रक संग बदलैत चाल आ ध्यान · सुखक लोभसँ परे पीरक मूल निवृत्ति · काजसँ मोनक शुद्धि आ बोधक जागरण · ज्ञान-चाह-श्रमक संग कर्तृत्व · चिन्ह आ पूर्व-मेलक मानसिक जोड़सँ साँच बुझब।

गति (BPM): ४८–५२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर अन्तरमुखी, गम्भीर आ सहज रहए; दर्शन भीतरी बीज हो, व्याख्यान नहि।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; काफिया –ान पर छोट ठहराव, रदीफ “जागैए” स्पष्ट मुदा अनावश्यक जोर बिन।

मतला: नीर-वनक हक मानलासँ जगक प्रति मान जागैत अछि; पाछाँ आबयवला लोकक हक राखलासँ नव तान—नव जीवन-लय—जागैत अछि। दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट।

२म शेर: यंत्र हाथक चाल मात्र नहि बढ़बैत; ओ रीत आ ध्यानक दिशा सेहो बदलि सकैत अछि।

३म शेर: सुखक चाह मुक्तिक एकमात्र राह नहि; पीरक मूल निवृत्त करबामे मुक्त गानक शान्त लय जागैत अछि।

४म शेर: काज मोनकेँ शुद्ध करबाक सहायक भऽ सकैत अछि, मुदा अन्तिम बोध ज्ञानक जागरणसँ खुलैत अछि।

५म शेर: देहक रूप देखब मात्र कर्तृत्वक मूल नहि; ज्ञान, चाह आ श्रमक संग काजक नव गान जागैत अछि।

६म शेर: चिन्ह एकसर निष्कर्ष नहि; पहिनेसँ ज्ञात मेलक संग चिन्हकेँ मोनमे जोड़लापर ज्ञान जागैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पोथी वैचारिक बीज मात्र—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७२८ — एक राह सार नहि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+१ · यति: ८+८

काफिया: –ार (सार, भार, द्वार) · रदीफ: नहि · शेर: ६

लोक धर्म भिन्न राह / एक राह सार नहि
नेह धर्म संग राख / आन राह भार नहि
रीत राह दे फेर / फेर राह मोड़ अछि
रीत थिर मान नै / रीत भाग्य सार नहि
आन नाम दूर राख / नाम अर्थ अल्प अछि
नाम अर्थ आन संग / आन त्याग सार नहि
आन दीप चाह नै / मोन बोध दीप अछि
निज बोध मोन देख / आन दीप सार नहि
ज्ञान पर छाप नै / बोध मोन थिर अछि
निज ज्ञान मोन देख / छाप एक द्वार नहि
फल देख मूल नै / आन मूल खोज अछि
आन मूल खोज मोन / फल मात्र सार नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+१+१ · यति ८+८

गजल ७२८ — संगीतमय रूप

भाव: भिन्न धर्म-पथक सहअस्तित्व · रीत/संरचना रहितहुँ नव मोड़क सम्भावना · शब्दार्थकेँ केवल आनकेँ काटि नहि बुझब · आत्मबोधक स्वयंप्रकाश · ज्ञानपर अलग छापक अनिवार्यता नहि · देखल फलसँ अदृश्य मूलक खोज।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर गम्भीर, निकट आ प्रश्नशील; दर्शन भावक भीतर रहए, व्याख्यान न बनए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; –ार काफियापर छोट ठहराव, रदीफ “नहि” स्पष्ट मुदा कठोर जोर बिन।
मतला: धर्मक भिन्न बाटसभ रहितहुँ एक बाटकेँ सम्पूर्ण सार नहि मानल गेल; नेह संग आन बाटकेँ भार नहि मानल गेल। दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट।
२म शेर: रीत दिशा दैत अछि, मुदा रीत भाग्यक सार नहि; नव मोड़ सम्भव अछि।
३म शेर: आन नामसभकेँ केवल काटि देलासँ शब्दार्थ पूर्ण नहि होइत; अर्थ सम्बन्धमे सेहो खुलैत अछि।
४म शेर: आत्मबोधकेँ दोसर दीपक उधार इजोत अनिवार्य नहि; मोनक बोध अपन इजोतमे प्रकट होइत अछि।
५म शेर: ज्ञान सत्य होयबाक लेल पृथक् “ज्ञातता-छाप” अनिवार्य नहि; ज्ञानकेँ मोन स्वयं ग्रहण करैत अछि।
६म शेर: फल देखाइत अछि मुदा मूल नहिं; तखन मोन अदृश्य मूल खोजैत अछि—देखल फल मात्र सम्पूर्ण सार नहि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पोथी वैचारिक बीज मात्र—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७२९ — मुक्त राह सार अछि

बहर: उच्चारणाधारित मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: १६ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+२+२ | २+२+२+१+१ · यति: ८+८

काफिया: –ार (सार, पार, द्वार, धार, भार) · रदीफ: अछि · शेर: ६

राग द्वेष मोन बाँध / मुक्त राह सार अछि
लोभ मोह देह बाँध / शान्त मोन पार अछि
शब्द जग रूप दैत / अर्थ नाम मात्र नहि
मौन प्रश्न काल भाव / शब्द अर्थ द्वार अछि
जग काज नित चल / बोध जग नाश नहि
साँच बोध पार देख / जग काज धार अछि
पीर मूल दूर भेल / सुख खोज काज नहि
पीर शान्त मोन मुक्त / मौन राह पार अछि
दूर देश नेत्र पार / देख मात्र ज्ञान नहि
साँच बोल मान संग / दूर गप सार अछि
आन लोक दूर भेल / निज मोन मौन नहि
मोन सब काज जान / निज मोन भार अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = १६ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२ | २+२+२+१+१ · यति ८+८

गजल ७२९ — संगीतमय रूप

भाव: राग-द्वेषक पकड़सँ मुक्ति · भाषा केवल नामकरण नहि · बोधसँ जगक व्यवहार नष्ट नहि · पीरक मूल निवृत्ति · दूर विषयमे विश्वसनीय वचन · बाहरक दृष्टि नहि रहितहुँ भीतरक साक्षी।

गति (BPM): ४८–५२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; स्वर आत्मसंयत, निकट आ गम्भीर; दर्शन भीतरक भाव-बीज रहए, विवेचन नहि।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; –◌ार काफियापर छोट ठहराव, रदीफ "अछि" स्पष्ट मुदा अनावश्यक जोर बिन।

मतला: राग-द्वेषक बन्धनसँ मुक्त राहक सार खुलैत अछि; लोभ-मोह घटला पर मोन पारक शान्ति दिस जाइत अछि। दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट।

२म शेर: शब्द जगकेँ रूप दैत अछि, मुदा अर्थ केवल नाम नहि; प्रश्न, काल, मौन आ भाव सेहो शब्दार्थक द्वार खोलैत अछि।

३म शेर: गहिर बोध जगक नित व्यवहारकेँ नष्ट नहि करैत; साँचक पार देखितहुँ काजक धार चलैत रहैत अछि।

४म शेर: पीरक मूल दूर होयब स्वयं अर्थवान; सुखक पृथक् खोज मात्रेँ मुक्ति नहि, मौन राहमे पारक बोध सेहो अछि।

५म शेर: नेत्रक पहुँचसँ बाहरक देश वा विषयक ज्ञान केवल देखबासँ नहि; विश्वसनीय साँच वचन दूर गपक ज्ञान दऽ सकैत अछि।

६म शेर: आन लोक दूर भेलापर सेहो निज मोन मौन नहि; मोन अपन काज जानैत अछि आ भीतर उत्तरदायित्वक भार रहैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; छह दर्शन-पोथी वैचारिक बीज मात्र—कोनो स्रोत-नाम, उद्धरण वा निबन्धात्मक विवेचन गजल-पाठमे नहि।

गजल ७३० — झट ज्ञान नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १६+१६
काफिया: –ान (ज्ञान, मान, ध्यान, गान, तान, आन) · रदीफ: नहि · शेर: ६
साँच गप मूल खोज लोक मत सीमा / प्रश्न राख मान जाँच फेर झट ज्ञान नहि
साँच गप जोर राख मूल चिन्ह फेर देख / चिन्ह संग सीमा खोज फेर मान नहि
शब्द लोक चाल संग अर्थ रूप नव खोल / बोल काज ठाम देख फेर अर्थ थिर अछि
ज्ञान सत्ता संग शब्द लोक राह मोड़ / अर्थ लोक काज बिन मौन ठाम ध्यान नहि
मोन चाह रंग घेर साँच रूप दूर राख / साँच जग ठाम थिर चाह मात्र दूर अछि
ज्ञान जग रूप संग जन्म मूल पथ थिर / मोन चाह जोर मात्र साँच रूप गान नहि
मोन स्वप्न रंग घेर जग रूप दूर राख / नेत्र स्पर्श गंध स्वाद बाह्य जग थिर अछि
मोन बोध रूप संग बाह्य जग ठाम थिर / बाह्य जग रूप मात्र मोन चित्र तान नहि
भाव संग शब्द मेल लोक मोन ठाम गाढ़ / गप भाषा लोक संग अर्थ खुल अछि
शब्द भाव लोक मेल टूट फेर रस शून्य / भाव ठाम लोक बिन शब्द रूप आन नहि
धूम देख डाँड़ ठाम ज्वाल बोध फेर थिर / धूम ज्वाल संग पूर्व बोध मोन थिर अछि
चिन्ह संग मूल मेल फेर काज रूप बोध / एक चिन्ह देख मात्र झट साँच ज्ञान नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+२+१+१ · यति १६+१६

गजल ७३० — संगीतमय रूप

भाव: साँचक दाबीपर प्रमाण आ सीमा · अर्थक लोक-प्रयोग · ज्ञान इच्छाक अधीन नहि · बाह्य जगक यथार्थता · विषय-भाषा-लोकक औचित्य · चिन्हसँ अनुमान करबाक पहिल सम्बन्ध-जाँच।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; मिसरा आब पहिलक अपेक्षा लगभग दूना लम्बा अछि, तेँ १६+१६ यतिपर स्पष्ट श्वास-विराम राखू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; लम्बा मिसरामे शब्द नहि दबए, काफिया –ान पर छोट ठहराव आ रदीफ “नहि” स्पष्ट रहए।

मतला: पहिल शेर प्रश्न, जाँच आ सीमा पर केन्द्रित; साँच कहबाक जोर वा मान मात्रसँ ज्ञान नहि बनैत। दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट।

२म शेर: अर्थ लोकक चाल, बोल आ काजमे खुलैत; ज्ञान आ सत्ता शब्दक राह मोड़ि सकैत अछि, तेँ अर्थ केवल मौन ध्यान नहि।

३म शेर: मोनक चाह साँचकेँ ढाकि सकैत अछि, मुदा ज्ञान वस्तुक रूपक संग उठैत; इच्छाक जोर मात्र सत्यक गान नहि।

४म शेर: स्वप्न वा मोनक रंग रहितहुँ नेत्र, स्पर्श, गंध, स्वाद आ बाह्य जगक प्रतिरोध यथार्थताक धुरी बनैत; जग मात्र मोनक चित्र नहि।

५म शेर: शब्द, भाव आ लोकक मेल औचित्य दैत; पाठक/श्रोता आ प्रसंग टूटलापर रस सूखैत—शब्द अपनहि मे सम्पूर्ण अर्थ नहि।

६म शेर: चिन्ह देखि मूल सम्बन्ध स्मरण कएलापर अनुमान उठैत; एक चिन्ह मात्र देखि झट साँच ज्ञान मानि लेब उचित नहि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहथि; लम्बा मिसराक १६+१६ यति स्पष्ट राखू, आ विचारक गहिराइ गीतक स्वाभाविकता पर भारी नहि पड़ए।

गजल ७३१ — आन पीर नोर मात्र नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १६+१६
काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, ठोर, छोर, कोर, भोर) · रदीफ: मात्र नहि · शेर: ६
मोन पीर सोझ जान नोर धार थिर जाग / आन पीर चिन्ह बोल देह नोर मात्र नहि
आन पीर दूर रह मोन नेह कात जाग / गप चाल देह चिन्ह नेह सोर मात्र नहि
देह माप लेख राख मान मूल राह खोज / रोग श्रम पीर संग देह थिर मान अछि
नाम छाप बन्ध देह मान मूल राह रोक / देह मान लेख माप मूल डोर मात्र नहि
ईख दूध गुड़ स्वाद भेद शब्द पार रह / नेह आत्म रूप मौन शब्द हद पार अछि
शब्द राह चिन्ह संग मौन अर्थ द्वार खोल / आत्म रूप बोध मौन शब्द ठोर मात्र नहि
स्वप्न साँप डोर देख जाग भोर भेद खोल / जाग जग काज संग स्वप्न भिन्न रूप अछि
स्वप्न साँच मान चल जाग जग राह टूट / जाग भोर भेद संग साँच छोर मात्र नहि
तर्क जीत खेल छोड़ लोक पीर नोर देख / मोन नेह भाव जाग लोक पीर मूल अछि
तर्क फूल रूप राख लोक पीर राह खोज / जीत मोह दूर राख नेह कोर मात्र नहि
नेत्र भ्रम रूप दे जग रूप आन भास / जग रूप थिर रह दृष्टि भूल रूप अछि
हम रूप देख ई मोन ज्ञान फेर जान / भ्रम बीच निज देख बोध भोर मात्र नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+२+१+१ · यति १६+१६

गजल ७३१ — संगीतमय रूप

भाव: आन मन/आन पीरक ज्ञान संकेतसँ · देह मापनसँ पैघ अनुभव · शब्दक सीमा · स्वप्न आ जागरणक भेद · तर्कक करुण प्रयोजन · ज्ञानक ज्ञान अर्थात् अनुव्यवसाय।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; दूना-लम्बा मिसरामे १६+१६ यतिपर स्पष्ट श्वास-विराम राखू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; –ोर काफियापर छोट ठहराव आ “मात्र नहि” रदीफ स्पष्ट, मुदा सहज रहए।

मतला: अपन पीर सोझ अनुभव होइत अछि; आनक पीर नोर मात्र नहि—बोल, देह, चाल आ चिन्ह सेहो ओकर बोधक राह खोलैत अछि। दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट।

२म शेर: देहकेँ माप, लेख आ श्रेणीमे बन्ध नहि करू; रोग, श्रम आ पीरक जीवित अनुभव मापनक डोरसँ पैघ अछि, मान मूल अछि।

३म शेर: ईख, दूध आ गुड़क मधुरताक भेद जकाँ शब्द सभ विशेष अनुभूति पूर्ण नहि समेटैत; मौन, निषेध, चिन्ह आ अर्थक द्वार मिलि बोध खोलैत अछि।

४म शेर: स्वप्न आ जागरण दुनूमे अनुभव होइतहुँ व्यवहारक भेद रहैत; जाग्रत काज, प्रतिरोध आ क्रम स्वप्नक रूपसँ भिन्न अछि।

५म शेर: तर्क जीतक खेल नहि; लोकक पीर देखिकऽ उपाय खोजब आ करुणाकेँ काजमे आनब ओकर मानवीय परख अछि।

६म शेर: भ्रमित दृष्टिमे बाह्य वस्तु आन रूपेँ भासि सकैत अछि, मुदा “हम एना देखैत छी” ई निज अनुभवक बोध पृथक् स्तरपर जानल जा सकैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए; दर्शन-पोथीक विचार काव्यात्मक रूपमे समाहित रहए, गजल विवेचन वा पाठ्य-सार नहि बने।

गजल ७३२ — भाव मूल थाह अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १६+१६
काफिया: –ाह (थाह, राह, छाह, चाह, दाह) · रदीफ: अछि · शेर: ६

भय राग द्वेष मोन पीर मूल खोज राख / दोष मात्र मान छोड़ भाव मूल थाह अछि
मोन भाव रंग फेर पीर रूप फेर जाग / मूल खोज राह खोल मोन नेह राह अछि
माय बोल लाज संग ज्ञान द्वार बन्द राख / लोक मान राख ज्ञान द्वार फेर बन्द नहि
माय बोल ज्ञान संग लोक मान फेर जाग / घर बोल ज्ञान राह लोक मान छाह अछि
धन मोह नाम मान मोन चोर भय जाग / धन छोड़ मोह राख चोर भय दूर नहि
धन छोड़ मोह छोड़ मोन भार दूर राख / मोह छूट धन दूर मोन शान्त थाह अछि
काल काज मोन राख फेर काज याद जाग / जे जन काज संग से हम आन नहि
काल काज याद संग मोन नाम फेर जाग / कर्म फल मान लेल एक जीव चाह अछि
धूम देख आग मान लोक काज राह चल / सभ तर्क झूठ कह तर्क बिन साँच नहि
दूर आग धूम चिन्ह देख लोक राह जान / तर्क बिन दूर ठाम मोन बीच दाह अछि
वस्त्र स्पर्श देह जान रंग रूप दूर रह / स्पर्श ज्ञान रंग ज्ञान एक रूप मात्र नहि
नेत्र बन्द वस्त्र स्पर्श रंग रूप दूर रह / वस्त्र रंग भेद बीच ज्ञान मूल राह अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+२+१+१ · यति १६+१६

गजल ७३२ — संगीतमय रूप

भाव: भय–राग–द्वेषक कारण बुझब · मातृभाषा आ ज्ञानक गरिमा · धनाभिमान छूटला पर भयक क्षय · कर्तृत्व–दायित्व लेल अनुभवकर्ताक निरन्तरता · अनुमान-विरोधक आत्मविरोध · गुण आ गुणीक भेद।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; दूना-लम्बा मिसरामे १६+१६ यतिपर स्पष्ट श्वास-विराम राखू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; –ाह काफियापर छोट ठहराव, “अछि” रदीफ स्पष्ट मुदा सहज रहए।

मतला: भय, राग आ द्वेषकेँ केवल दोष कहि दबेबाक बदला ओकर मूल खोजू; भावक कारण बुझलासँ नेहक राह खुलैत अछि। दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट।

२म शेर: माय-बोलीक लाज ज्ञानक द्वार बन्द करैत अछि; लोकक मान आ अपन भाषा ज्ञानक घर लेल छाह बनैत अछि।

३म शेर: धन छोड़लासँ मात्र भय नहि जाए; धनाभिमान आ मोह छूटलापर चोरक भयक पकड़ शिथिल होइत अछि।

४म शेर: कालक काजक स्मृति आ फल-दायित्व एहि बातपर टिकल अछि जे काज करनिहार केँ पूर्णतः आन नहि मानल जाए।

५म शेर: सभ तर्क झूठ अछि—ई सामान्य कथन स्वयं तर्क बिन सिद्ध नहि होइत; दूर आगक ज्ञानमे धूम-जकाँ चिन्ह व्यावहारिक राह खोलैत अछि।

६म शेर: वस्त्रक स्पर्शसँ वस्त्रक ज्ञान भऽ सकैत अछि, मुदा रंगक नहि; एतय गुण आ आधारक भेद काव्य-बिम्ब बनैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए; छहू दर्शन-पोथीक विचार गजलमे भावात्मक रूपेँ समाहित रहए, व्याख्यान वा पाठ्य-सार नहि बने।

गजल ७३३ — प्रश्न बीच गीत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+२+१+१ · यति: १६+१६
काफिया: –ीत (गीत, मीत, रीत, प्रीत, जीत, शीत) · रदीफ: अछि · शेर: ६
घर बाट नित चिन्ह मोन चुप थिर चल / एक प्रश्न उठ मोन बीच मौन गीत अछि
जे साँच नित मान मोन फेर जाँच राख / भूल मान नव दिस बीच एक मीत अछि
झट मंच छाँट नाम काज माथ फेर राख / चमक सोझ देख से साँच माप थिक नहि
मंच छाँट लोक बोल एक भाग माथ राख / जे गुम से लोक बोल बीच रीत अछि
याद छाह आन रूप सून्न देह पर चढ़ / जे ने से मोन देख साँच थिक नहि
छाह निज आन ठाम रख मोन भूल कर / भेद जाग फेर मोन देख मूल प्रीत अछि
मीत रूप देख आइ फेर सोझ ठाढ़ थिर / जे मीत काल संग आइ आन थिक नहि
आइ याद काज नाम फेर मोन जाग थिर / काल बीच याद जोड़ मोन संग मीत अछि
फूल हार क्रम देख हाथ काज बुझ मोन / क्रम अपन आप गढ़ल साँच बात थिक नहि
घर घाट क्रम देख मूल खोज मोन चल / काज मूल खोज मोन तर्क न्याय जीत अछि
नव बोध मोन बीच दुइ मत संग ठाढ़ / फल बिन झट सत्य मान योग्य थिक नहि
काज फल मिल फेर दुइ मत आग मन्द / साँच थिर बोध मोन बीच एक शीत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+२+२+२+२+२+२ | २+२+२+२+२+२+२+१+१ · यति १६+१६

गजल ७३३ — संगीतमय रूप

भाव: परिचित वस्तु प्रश्न बनि उठब · मञ्चपर देखाइब आ साँचक भेद · स्मृतिरूपक आरोप · काल-पार चिन्हारि · क्रमबद्ध काजसँ मूलक खोज · नव ज्ञानक फलद्वारा फेर जाँच।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; दूना-लम्बा मिसरामे १६+१६ यतिपर स्पष्ट श्वास-विराम राखू।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला; –ीत काफियापर छोट ठहराव, “अछि” रदीफ स्पष्ट मुदा सहज रहए।
मतला: नित देखल घर-बाट जखन प्रश्न बनि उठैत अछि, तखन मौन सेहो गीत बनैत अछि; साँचकेँ नित फेर जाँचब भूल मानि लेबाक साहसक मीत अछि।
२म शेर: मंच जे लोक-बोलक एक भाग माथ राखैत अछि, से देखाइब बढ़बैत अछि; मुदा सोझ चमक साँचक माप नहि। जे गुम अछि, ओकर मौनो लोक-रीतिक एक अर्थयुक्त भाग अछि।
३म शेर: पहिने देखल रूपक याद आन ठाम चढ़ि सकैत अछि; भेद जागलापर मोन बुझैत अछि जे आरोप आ मूल प्रीत एक नहि।
४म शेर: काल्हि देखल मीतकेँ आइ फेर चिन्हब स्मृति आ प्रत्यभिज्ञाक काल-पार सूत्रक काव्य-बिम्ब अछि।
५म शेर: फूलक हारमे क्रम देख काजक हाथ बुझाइत अछि; घर-घाटक क्रम मोनकेँ मूल खोजबाक दिस लऽ जाइत अछि—तर्क एतय भावक पाछाँ रहए, उपदेश नहि बने।
६म शेर: नव बोधक संग दुइ मत ठाढ़ रहि सकैत अछि; सफल काज पछाति संशयक आगि मन्द पड़ैत अछि आ थिर बोध शीतलता दैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए; छहू दर्शन-पोथीक बीज गजलमे भावात्मक रूपेँ घुलल रहए, पाठ्य-सार वा व्याख्यान नहि बने।

गजल ७३४ — साँचक सोर अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ मात्रिक छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू अर्धांश क्रियाशील वाक्य-रूप · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+१+२+२+१+२+२+२+२ | २+१+२+२+१+२+२+२+१+१ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, कोर, छोर, ठोर) · रदीफ: अछि · शेर: ६

मोन कहैत दुःख सुनैत लोक मौन थिर / देह कनैत बोध उठैत नेह नोर अछि
लोक कहैत न्याय सुनैत मोन मौन थिर / पीर बहैत बोध मिलैत साँच सोर अछि
शब्द कहैत भूख सुनैत लोक मौन थिर / अर्थ खुलैत देह कनैत अन्न हाथ नहि
लोक कहैत बात सुनैत देह मौन थिर / भूख रहैत शब्द चलैत अर्थ डोर अछि
नींद घिरैत देह रहैत मोन मौन थिर / बोध घटैत रूप मिलैत याद साथ नहि
नींद खुलैत मोन कहैत सुख मौन थिर / याद उठैत बोध मिलैत मोन भोर अछि
क्षण बहैत रूप घटैत देह मौन थिर / याद रहैत बोध मिलैत डोर छोर नहि
रूप मिटैत नाम रहैत याद मौन थिर / क्षण मिलैत बोध चलैत याद कोर अछि
काज चलैत क्रम मिलैत लोक मौन थिर / चिन्ह दिसैत मूल खुलैत काज आप नहि
हार बनैत फूल मिलैत हाथ मौन थिर / क्रम कहैत मूल रहैत काज छोर अछि
चिन्ह मिलैत मत उठैत मोन मौन थिर / मान रहैत मान मिलैत मोन थिर नहि
तर्क चलैत पक्ष सुनैत मोन मौन थिर / हेतु मिलैत बोध खुलैत बोल ठोर अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+१+२+२+१+२+२+२+२ | २+१+२+२+१+२+२+२+१+१ · यति १६+१६

गजल ७३४ — संगीतमय रूप

भाव: पीरक अनुभव आ आन मनक बोध · शब्दक सीमा आ भूखक भौतिक सत्य · नींद आ जागरणक बीच बोध · क्षणभङ्गुर रूपक बीच स्मृति-सूत्र · क्रमबद्ध काजसँ मूलक खोज · संशयमे पक्ष-द्वय सुनि हेतु जाँच।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; दूना-लम्बा मिसरामे १६+१६ यतिपर स्पष्ट श्वास-विराम राखू। एहि गजलमे दुनू अर्धांश क्रिया-सहित वाक्य-लयमे गाउ।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल बाँसुरी आ बहुत हलुक तबला; –ोर काफियापर छोट ठहराव, “अछि” रदीफ स्पष्ट मुदा स्वाभाविक रहए।
मतला: मोन पीर सुनैत अछि, देह कनैत अछि, आ बोध उठैत अछि; आन पीरक अनुभव केवल मौन वस्तु नहि—ओ नोर आ सोर दुनू रूपमे प्रकट होइत अछि।
२म शेर: शब्द भूखक अर्थ खोलि सकैत अछि, मुदा अन्नक स्थान नहि लैत; भाषा जगतसँ जुड़बाक डोर अछि, ओ जगतक देह नहि।
३म शेर: नींदमे क्रिया घटैत अछि, जागलापर याद उठैत अछि; एहि आवागमनमे मोन भोर-जकाँ फेर खुलैत अछि।
४म शेर: रूप क्षण-क्षण घटैत-मिटैत अछि, मुदा याद आ बोध कालक बीच डोर बनबैत अछि; निरन्तरताक प्रश्न एतय भावक कोर बनैत अछि।
५म शेर: हार बनैत अछि कारण फूल क्रममे मिलैत अछि; काजक क्रम मोनकेँ मूल खोजबाक दिस लऽ जाइत अछि, मुदा तर्क गीतकेँ नहि ढाकए।
६म शेर: दू पक्ष उठैत अछि तँ मोन झट निर्णय नहि दैत; हेतु मिलैत आ बोध खुलैत तखन बोल ठोर धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए; छहू दर्शन-पोथीक विचार भावमे घुलल रहए।
विशेष नियम—प्रत्येक मिसराक पहिल आ दोसर दुनू अर्धांशमे क्रिया/वाक्य-प्रवाह रहए; पहिल अर्धांश केवल शब्द-समूह नहि बने।

गजल ७३५ — भीतर आस रहै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश पूर्ण क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, त्रास) · रदीफ: रहै छै · शेर: ६

गाछ बेसी कटै छै, धरा काँपै छै / बालकक साँस घुटै छै, त्रास रहै छै
धन नित चढ़ै छै, छाह घटै छै / आगाँक जन चाहै छै, आस रहै छै
सभ आइ जुटै छै, नोर बहै छै / तर्क मात्र जीतै छै, पीर बोलै छै
क्रोध झट उठै छै, लाज बोलै छै / लोक न्याय जागै छै, आस रहै छै
भ्रम फेर बसै छै, साँच कहै छै / एक बोध जागै छै, गाँठ खुलै छै
साँच फेर कहै छी, मोन खुलै छै / बोध फेर जगै छै, आस रहै छै
मधु मीठ लगै छै, विषो रहै छै / मोन सुख मानै छै, पीर आबै छै
सुख मिलि गेलै, पीर फेर आबै छै / हँसी पीर ढाकै छै, त्रास रहै छै
घट दूर भेलै, मोन खोज चलै छै / योग्य ठाम खोजै छै, बोध जगै छै
मोन फेर खोजै छै, शून्य बोलै छै / अभाव बोध जागै छै, आस रहै छै
बोल मनसँ सुनै छी, उठि जाइ छी / वक्ताक चाह रहै छै, काज टरै छै
वचन फेर बजै छै, काज जगै छै / अर्थ काज जगै छै, आस रहै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७३५ — संगीतमय रूप

भाव: प्रकृति आ आगाँक जनक अधिकार · सार्वजनिक न्यायमे करुणा आ भावक स्थान · सत्यक पुनरावृत्तिसँ दृढ़ भ्रमक गाँठ खुलब · मधु-विष जकाँ सुख-दुःखक मिश्रण · योग्य दशामे अभावक ज्ञान · वचनक प्रेरक शक्ति आ काजक जन्म।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; १६+१६ यतिपर स्पष्ट श्वास-विराम। पहिल अर्धांशकेँ सूची-जकाँ नहि, स्वतंत्र बोलचालक उपवाक्य-जकाँ गाउ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल बाँसुरी आ हलुक तबला; –ास काफियापर छोट ठहराव, “रहै छै” रदीफ स्वाभाविक बातचीत-जकाँ उतरए।

मतला: गाछ बेसी कटैत अछि तँ धरा काँपैत अछि आ बालकक साँस घुटैत अछि; धन चढ़ैत अछि मुदा छाह घटैत अछि। एहि विरोधक बीच आगाँक जनक आस प्रश्न बनि ठाढ़ अछि।

२म शेर: सभा आ तर्क मात्रेँ न्याय पूरा नहि करैत; नोर, क्रोध, लाज आ करुणा सेहो लोकक न्याय-बोधक अंग अछि।

३म शेर: गाढ़ भ्रम एक बेरक बोधसँ सदा नहि टूटैत; साँच फेर-फेर कहला आ बुझलासँ गाँठ धीरे खुलैत अछि।

४म शेर: लौकिक सुख एकसरि मधु नहि; ओकर संग पीरक विषो चलैत अछि। हँसीक पाछाँक त्रासक बोध मोहकेँ शिथिल करैत अछि।

५म शेर: योग्य ठाममे घट दूर रहला पर खोज चलैत अछि; नहि भेटबाक बोध अभावक ज्ञान बनि सकैत अछि। शून्य स्वयं प्रश्न करैत अछि आ बोध जागैत अछि।

६म शेर: वचन केवल वक्ताक चाह नहि; बोल मनसँ सुनिते पयर उठैत अछि आ अर्थ काज जगबैत अछि। वक्ताक चाह रहितहुँ काज टरि सकैत अछि—प्रेरक अर्थक स्वतंत्र भूमिका एतय काव्य बनैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। विशेष ७३५ नियम—पहिल १६-मात्रिक अर्धांश पूर्ण क्रियाशील, सुन्दर उपवाक्य हो; “छै/छी/जाइ छै/रहै छै” जकाँ क्रिया-लय स्वाभाविक रूपेँ बदलैत रहए, केवल छन्द भरबाक लेल नहि।

गजल ७३६ — प्रश्न उठि गेलै, द्वार खुलै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (द्वार, सार, सँभार, विस्तार, आकार, विचार) · रदीफ: खुलै छै · शेर: ६

प्रश्न उठि गेलै, भीतर नींदि टूटै छै / मोन जखन सुनै छै, द्वार खुलै छै

उत्तर झट देबै छी, संशय बचै छै / प्रश्न फेर पूछै छी, सार खुलै छै

धन बेसी चढ़ै छै, अवकाश घटै छै / मोन जखन हँसै छै, जीवन चमकै छै

काज जखन घटै छै, सृजन बढ़ै छै / नेह जखन बचै छै, सँभार खुलै छै

आवरण हटि गेलै, अपन रूप चमकै छै / धूरि जखन हटै छै, दर्पण दमकै छै

मुक्ति पहिने रहै छै, भ्रम घटै छै / बोध जखन जगै छै, सार खुलै छै

बीज समर्थ रहै छै, अङ्कुर रुकै छै / पानि जखन घटै छै, माटि सुखै छै

संगति जखन मिलै छै, अङ्कुर उठै छै / हेतु जखन जुटै छै, विस्तार खुलै छै

वन बीच देखै छी, पशु चिन्है छी / सुनल बात जागै छै, नाम भेटै छै

गाय सन सम्झै छी, भेद बुझै छी / सादृश्य जखन मिलै छै, आकार खुलै छै

उत्तर पहिल देबै छी, आपत्ति उठै छै / फेर विचार करै छी, मत बदलै छै

वाद जखन चलै छै, अभिमान गलै छै / फेर जाँच करै छी, विचार खुलै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७३६ — संगीतमय रूप

भाव: प्रश्नसँ चेतना जागब · वस्तु-संचयक बदला अवकाश, नेह आ सृजन · आवरण हटला पर स्वभावक प्रकट होयब · सामर्थ्य आ सहायक कारण · सादृश्यसँ नव नामक बोध · आपत्ति आ पुनःपरीक्षणसँ विचारक परिपक्वता।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; यति १६+१६ पर स्वाभाविक श्वास-विराम। दुनू अर्धांश पूर्ण बोलचालक वाक्य-जकाँ गाउ; पहिल भागकेँ शब्द-सूची नहि बनाउ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर छोट ठहराव; “खुलै छै” रदीफ सहज उतरए; ओकरा अनावश्यक बल नै दिअ।

मतला: प्रश्न उठिते भीतरक नींदि टूटैत अछि; मोन सुनबाक लेल सजग होइत अछि तँ द्वार खुलैत अछि। झट उत्तर देलापर संशय बचि सकैत अछि; फेर प्रश्न पूछलापर सार खुलैत अछि।

२म शेर: धन बढ़ब अपनेमे जीवनक विस्तार नहि; अवकाश घटि सकैत अछि। आवश्यक काज घटला पर सृजन बढ़ए आ नेह बचए तँ जीवनक सँभारक बाट खुलैत अछि।

३म शेर: मुक्ति नव वस्तु बनबाक बात नहि; आवरण हटला पर अपन रूप दिपैत अछि। भ्रम घटैत अछि आ बोध जागैत अछि तँ जे पहिनेसँ छल, ओकर सार प्रकट होइत अछि।

४म शेर: बीजमे सामर्थ्य रहितो पानि-माटि-ताप जकाँ सहायक कारणक अभावमे अङ्कुर रुकि सकैत अछि। उचित संगति जुटला पर सामर्थ्य फलित होइत अछि।

५म शेर: वनमे देखल अपरिचित पशु केँ पहिने सुनल समानताक स्मृतिसँ नाम भेटैत अछि। गाय सन रूप स्मरण भेलापर सादृश्य नव परिचयक आकार खोलैत अछि।

६म शेर: पहिल उत्तर अन्तिम सत्य नहि। आपत्ति उठैत अछि, फेर विचार होइत अछि, मत बदलि सकैत अछि; अभिमान गलला पर पुनःजाँच विचारक द्वार खोलैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ७३५ सँ लागू जीवित-अर्धांश नियम ७३६मे आरो कठोर: पहिल १६ मात्रा स्वयं पूर्ण उपवाक्य हो; “गेलै/देबै छी/रहै छै/देखै छी/सम्झै छी” जकाँ क्रिया-लय अर्थानुसार बदलैत रहए।

गजल ७३७ — अपन मत जाँचै छी, सार दिसै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, द्वार, व्यवहार, आकार, विचार, संसार) · रदीफ: दिसै छै · शेर: ६

अपन मत जाँचै छी, मोह गलै छै / आन मत जाँचै छी, सार दिसै छै
प्रिय बात मानै छी, संशय उठै छै / एक कसौटी राखै छी, द्वार दिसै छै
आँखि ऊपर रहै छै, चालि बदलै छै / लोक नियम मानै छै, मन डरै छै
कोनो आँखि देखै छै, देह सँकुचै छै / मौन आदत बनै छै, व्यवहार दिसै छै
घट माटिक रहै छै, रूप बचै छै / शास्त्र बहुत कहै छै, घट बदलै छै?
पट सूतक रहै छै, स्पर्श बदलै छै / आँखि जखन देखै छै, आकार दिसै छै
दीप जखन बुझै छै, धुआँ उठै छै / नाश जखन होइ छै, वस्तु जाइ छै?
नाश पृथक् मानै छी, वस्तु बचै छै / भेद जखन राखै छी, विचार दिसै छै
सीपक चमक देखै छी, चानी बुझै छी / स्मृति जखन जागै छै, भ्रम बढ़ै छै
भेद जखन बुझै छी, भ्रम घटै छै / सीप सीपे रहै छै, व्यवहार दिसै छै
शब्द संग जुड़ै छै, अर्थ उभरै छै / वाक्य जखन जुड़ै छै, नियम खुलै छै
क्रम जखन देखै छी, कारण खोजै छी / सूत जखन जुड़ै छै, संसार दिसै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७३७ — संगीतमय रूप

भाव: अपन प्रिय मतपर सेहो समान कसौटी · निगरानीसँ चालि आ आदतक रूपान्तरण · प्रत्यक्ष अनुभवक दृढ़ता · विनाश आ विनष्ट वस्तुक भेद · सीप-चानी भ्रममे भेदाग्रह · शब्द-क्रम आ कारणक खोज।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; यति १६+१६ पर स्वाभाविक श्वास-विराम। दुनू अर्धांश पूर्ण बोलचालक उपवाक्य-जकाँ गाउ; पहिल भागमे क्रिया आ भाव दुनू स्पष्ट रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर छोट ठहराव; “दिसै छै” रदीफ सहज उतारमे आबए।

मतला: अपन मतकेँ जाँचला पर मोह गलैत अछि; आन मतकेँ ओही कसौटी पर जाँचला पर सार दिसैत अछि। प्रिय बात मानितो संशय उठि सकैत अछि; एके कसौटी रखला पर नव द्वार देखाइत अछि।

२म शेर: ऊपर दृष्टिक सम्भावना रहला पर चालि बदलैत अछि, नियम भीतर बसैत अछि। निरन्तर देखल जाएबाक भाव देह केँ सँकुचित करैत आ चुप्पी केँ आदत बना सकैत अछि।

३म शेर: घट घटे रहैत अछि; शब्द वा शास्त्र ओकर प्रत्यक्ष रूप अपनेसँ नहि बदलि दैत। पट सूतक रहैत अछि; स्पर्श आ रूपक अनुभव वस्तुक अपन स्वरूप दिस घुरबैत अछि।

४म शेर: दीप बुझला पर धुआँ उठैत अछि, मुदा विनाश आ विनष्ट वस्तु एक्के बात अछि की—प्रश्न बचैत अछि। नाशकेँ वस्तुसँ पृथक् मानला पर विचारक भेद स्पष्ट होइत अछि।

५म शेर: सीपक चमक देखि चानीक स्मृति जागि भ्रम बढ़ि सकैत अछि। जखन सीप आ स्मृतिक चानीक भेद बुझाइत अछि, भ्रम घटैत अछि आ सीप सीपे रहैत अछि—व्यवहार सही दिशा पकड़ैत अछि।

६म शेर: शब्द संग जुड़ैत अछि तँ अर्थ उभरैत अछि; वाक्यक नियम खुलैत अछि। क्रम देखला पर कारणक प्रश्न उठैत अछि—सूत जुड़ला पर संसारक विस्तृत ताना-बाना देखाइत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ७३५ सँ लागू जीवित-अर्धांश नियम कायम: पहिल १६ मात्रा स्वयं अर्थवान उपवाक्य हो; “जाँचै छी/रहै छै/देखै छै/मानै छी/होइ छै” जकाँ क्रिया-लय अर्थानुसार बदलैत रहए।

गजल ७३८ — छूटल स्वर उठै छै, हाल बदलै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (हाल, चाल, जाल, ढाल, काल, ताल) · रदीफ: बदलै छै · शेर: ६

छूटल स्वर उठै छै, कान खुलै छै / बिसरल कथा पढ़ै छी, हाल बदलै छै
दबल जन बोलै छै, बात खुलै छै / केन्द्र जखन सुनै छै, चाल बदलै छै
यन्त्र अंक गिनै छै, नाम छुटै छै / नियम जखन चुनै छै, जन हटै छै
सूत्र ठीक चलै छै, न्याय चुकै छै / पक्ष भीतर बसै छै, जाल बदलै छै
शब्द रूप बदलै छै, भाव बचै छै / छन्द जखन छूटै छै, अर्थ बचै छै
घरक बोल जुड़ै छै, ग्रन्थ हँसै छै / अर्थ जखन बचै छै, ढाल बदलै छै
नाम मात्र बचै छै, पाठ छुटै छै / पोथी जखन खुलै छै, घर जगै छै
भाषा घर घुरै छै, स्मृति जगै छै / विसरल धन भेटै छै, काल बदलै छै
नव बोध अबै छै, संशय उठै छै / मन जखन जाँचै छै, बात पकै छै
पहिल बात सुनै छी, फेर रुकै छी / जाँच जखन मिलै छै, ताल बदलै छै
घर दूर जाइ छी, बाट स्मरै छै / पाछाँ जखन घुरै छी, चिन्ह पढ़ै छी
सभ अनुमान त्यागै छी, बाट छुटै छै / घुरि जखन अबै छी, हाल बदलै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७३८ — संगीतमय रूप

भाव: दबल स्वर फेर उठब · वर्गीकरण चलितो न्याय चुकि सकब · अनुवादमे अर्थ-सुरक्षा · भाषा द्वारा विरासत घर घुरब · नव ज्ञानक स्वाभाविक संशय · अनुमान त्यागक व्यवहारगत असम्भवता।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा; यति १६+१६ पर स्वाभाविक श्वास-विराम। दुनू अर्धांश पूरा उपवाक्य-जकाँ गाउ; पहिल अर्धांश स्वयं क्रिया, भाव आ अर्थ राखए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ाल काफियापर छोट ठहराव; “बदलै छै” रदीफ सहज आरोह-अवरोहमे आबए।
मतला: छूटल स्वर उठैत अछि तँ कान खुलैत अछि; बिसरल कथा पढ़ला पर हाल बदलैत अछि। दबल जन बोलैत अछि तँ बात खुलैत अछि; केन्द्र सुनैत अछि तँ चाल बदलैत अछि।
२म शेर: यन्त्र अंक गिनि सकैत अछि, मुदा नाम छुटि सकैत अछि; नियम चुनैत अछि तँ किछु जन बाहर पड़ि सकैत अछि। सूत्र ठीक चलितो न्याय चुकि सकैत अछि; भीतर बसल पक्ष पूरा जाल बदलि दैत अछि।
३म शेर: शब्दरूप बदलैत अछि मुदा भाव बचि सकैत अछि; छन्द छूटितो अर्थ सुरक्षित रहि सकैत अछि। घरक बोल ग्रन्थमे जुड़ैत अछि तँ ग्रन्थ हँसैत अछि; अर्थ बचला पर अभिव्यक्तिक ढाल बदलैत अछि।
४म शेर: नाम मात्र बचि जाए आ पाठ छुटि जाए तँ विरासत अपूर्ण रहैत अछि; पोथी खुलला पर घर जगैत अछि। भाषा घर घुरैत अछि तँ स्मृति जगैत अछि; विसरल धन भेटला पर कालक अनुभव बदलैत अछि।
५म शेर: नव बोध अबैत अछि तँ संशय उठैत अछि; मन जाँचैत अछि तँ बात पकैत अछि। पहिल बात सुनि झट निर्णय नहि—रुकि जाँचल जाए; जाँच मिलला पर ताल बदलैत अछि।
६म शेर: घरसँ दूर जाइतहुँ बाट स्मरण रहैत अछि; घुरैत काल चिन्ह पढ़ैत छी। जँ सभ अनुमान त्यागि देब तँ बाट छुटि सकैत अछि; घुरि आबि सकब स्वयं व्यवहारगत उत्तर बनैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ७३५ सँ लागू जीवित-अर्धांश नियम कायम: पहिल १६ मात्रा स्वयं अर्थवान, क्रियाशील उपवाक्य हो; क्रिया-लय अर्थानुसार बदलैत रहए।

गजल ७३९ — अंक सभ बोलै छै, सार खोजै छी

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, पार, द्वार, आधार, धार) · रदीफ: खोजै छी · शेर: ६

अंक सभ बोलै छै, तथ्य मिलै छै / न्याय जखन पूछै छी, सार खोजै छी
माप सभ बोलै छै, पीर बचै छै / नोर जखन देखै छी, पार खोजै छी
लेख नहि बोलै छै, घटना बचै छै / पात फेर बचै छै, चिन्ह जगै छै
पोथी नहि कहै छै, घटना रहै छै / छूटल पात खोजै छी, द्वार खोजै छी
धन जखन छोड़ै छी, मोह गलै छै / चोरक भय घटै छै, मोन खुलै छै
हमर कहब छुटै छै, बन्ध गलै छै / खालि हाथ चलै छी, पार खोजै छी
दू रूप रहै छै, मेल बचै छै / भेद जखन बुझै छी, बैर घटै छै
एकक रूप बचै छै, आनक बचै छै / भेदक अर्थ जाँचै छी, आधार खोजै छी
भात जखन खाइ छी, नाच देखै छी / गीत सेहो सुनै छी, गन्ध सूँघै छी
मोन दिस-दिस जाइ छै, बोध जुटै छै / एकहि बेर देखै छी, धार खोजै छी
चाह जखन जागै छै, पएर चलै छै / विरति जखन अबै छै, हाथ हटै छै
केवल अभाव कहै छी, कारण चुकै छै / चाहक बल जाँचै छी, सार खोजै छी

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७३९ — संगीतमय रूप

भाव: तथ्य आ मूल्यक भेद · अभिलेखक मौन आ घटनाक अस्तित्व · स्वामित्व-मोह घटला पर भयक क्षय · भिन्नतामे मेल · एकहि बेर अनेक इन्द्रिय-अनुभव · चाह आ विरतिक सकारात्मक कारणता।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम; दुनू अर्धांश पूरा उपवाक्य-जकाँ गाउ, पहिल अर्धांशो स्वयं क्रिया आ अर्थ राखए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “खोजै छी” रदीफ आत्म-अन्वेषी, मृदु अवरोहमे आबए।

मतला: अंक तथ्य कहैत अछि, मुदा न्याय केवल आँकड़ासँ नहि निकलैत; प्रश्न उठला पर सार खोजल जाइत अछि। माप अपन बात कहैत अछि, मुदा पीर बचल रहैत अछि; नोर देखि पार खोजबाक मानवीय आकांक्षा जागैत अछि।

२म शेर: अभिलेख मौन रहला मात्रसँ घटना अनघटित नहि भऽ जाइत। धूरि तले पात वा चिन्ह बचल रहि सकैत अछि; छूटल पात खोजब इतिहासक द्वार फेर खोलि सकैत अछि।

३म शेर: “हमर”क मोह ढीला पड़ला पर धन-रक्षा सँ जुड़ल भय सेहो घटैत अछि। अपन कहबाक बन्धन गलला पर खालि हाथ चलबो मुक्ति-दिशि पार खोजब बनि सकैत अछि।

४म शेर: दू रूप भिन्न रहितो मेल बचि सकैत अछि; भेद बुझलासँ बैर अनिवार्य नहि। एकक रूप एक रहैत अछि, आनक आन; भेदक अर्थ जाँचि ओकर आधार खोजल जाइत अछि।

५म शेर: मनुष्य भात खाइत काल नाच देखि, गीत सुनि, गन्ध सूँघि सकैत अछि; अनुभव एकहि क्षण अनेक धारामे आबि सकैत अछि। मन सभ दिस जाइतहुँ बोध जुटा सकैत अछि।

६म शेर: पाबयक चाह जागला पर पएर चलैत अछि; विरति आबला पर हाथ हटैत अछि। केवल विपरीत अवस्थाक अभावकेँ कारण कहब पर्याप्त नहि; सकारात्मक चाहक बल जाँचल जाए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पहिल १६-मात्रिक अर्धांश शब्द-माला नहि, स्वयं जीवित वाक्य/उपवाक्य हो; क्रिया-लय मिसरा-दर-मिसरा स्वाभाविक रूपेँ बदलैत रहए।

गजल ७४० — नदी रूप बदलै छै, सार बचै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, द्वार, विचार, पार, आचार) · रदीफ: बचै छै · शेर: ६

नदी रूप बदलै छै, अर्थ बढ़ै छै / घाट कथा कहै छै, सार बचै छै
बरखा उतरि गेलै, फेर खेत जागै छै / नदी सभ जोड़ै छै, धार बचै छै
शब्द गूढ़ भेलै, फेर अर्थ दबै छै / पाठक दूर जाइ छै, बोध घटै छै
बोल सहज बनै छै, लोक जुड़ै छै / गाँठ जखन खुलै छै, द्वार बचै छै
साँच जखन ढँकै छै, मोन भटकै छै / मोन रूप गढ़ै छै, मिथ्या बढ़ै छै
आवरण विरल भेलै, फेर रूप खुलै छै / भ्रम जखन घटै छै, विचार बचै छै
नेत्र बाहर देखै छै, बोध बढ़ै छै / आत्मा भीतर रहै छै, नेत्र चुकै छै
मोन भीतर जाइ छै, बोध जगै छै / नेत्र जखन रुकै छै, सार बचै छै
विघ्न दूर रहै छै, काज चलै छै / लोक भाग्य मानै छै, कारण चुकै छै
बाधा हटि गेलै, फेर पंथ खुलै छै / कारण फेर जाँचै छी, पार बचै छै
वाद जखन जितै छी, क्रोध घटै छै / आनक मान रखै छी, नेह बढ़ै छै
वाद थमि गेलै, फेर रोष गलै छै / आनक मंगल चाहै छी, आचार बचै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७४० — संगीतमय रूप

भाव: एक वस्तुक अनेक यथार्थ-वर्णन · गूढ़ पदावली आ बोधक दूरी · अविद्याक आवरण-विक्षेप · नेत्रक सीमा आ भीतरक आत्मबोध · विघ्नाभावक कारणात्मक भूमिका · प्रतिपक्षीक प्रति औदार्य।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम; दुनू अर्धांश पूर्ण उपवाक्य-जकाँ गाउ। पहिल अर्धांशमे छै/छी/जाइ छै/रहै छै आदि क्रिया-लय अर्थानुसार बदलैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “बचै छै” रदीफक अवरोह एहन हो जे परिवर्तनक बीच शेष रहि गेल मूल स्वर सुनाइ पड़ए।

मतला: नदी एकहि समय रूप, अर्थ, घाट, कथा आ खेतक पानि सभक संग जुड़ि सकैत अछि; एक वर्णन दोसरकेँ मिटबैत नहि। विभिन्न दृष्टिक बीचो साँचक सार आ धार बचल रहैत अछि।

२म शेर: शब्द गूढ़ भेलापर अर्थ दबि सकैत अछि आ पाठक दूर जा सकैत अछि। सहज बोल जखन लोककेँ जोड़ैत अछि, तखन तर्कक गाँठ खुलैत आ बोधक द्वार बचैत अछि।

३म शेर: अविद्याक एक गति साँचकेँ ढँकब अछि, दोसर गति मोनसँ एहन रूप गढ़ब जे वस्तुतः नहि। आवरण विरल भेलापर रूप खुलैत अछि; विक्षेप घटला पर विवेकी विचार बचैत अछि।

४म शेर: बाहरक नेत्रक पहुँच सीमित अछि; नेत्रसँ नहि देखाइ पड़ब मात्रसँ आत्माक निषेध सिद्ध नहि। मोन भीतर जाइत अछि, बोध जगैत अछि; नेत्र रुकलापर सेहो सार बचल रहि सकैत अछि।

५म शेर: कखनो काज एही लेल सहज चलैत अछि जे विघ्न उत्पन्ने नहि भेल। बाधा हटि गेलापर पंथ खुलैत अछि; सफलता देखिते भाग्य मानि लेब कारणकेँ चुकि सकैत अछि।

६म शेर: तर्कमे जीतलाक बादो प्रतिपक्षीक मान घटेनाइ आवश्यक नहि। वाद थमि गेलापर रोष गलए, आनक मंगल चाहल जाए—एहि औदार्यमे बौद्धिक आचार बचैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पहिल १६-मात्रिक अर्धांश शब्द-माला नहि, स्वयं जीवित वाक्य/उपवाक्य हो; क्रिया-लय मिसरा-दर-मिसरा स्वाभाविक रूपेँ बदलैत रहए।

गजल ७४१ — ज्ञान फेर बदलै छै, आधार जाँचै छी

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (आधार, विचार, व्यवहार, आकार, संसार, प्रकार) · रदीफ: जाँचै छी · शेर: ६

ज्ञान फेर बदलै छै, भूल खुलै छै / साँच फेर देखै छी, आधार जाँचै छी
मत जखन जमै छै, प्रश्न उठै छै / भूल अपन मानै छी, विचार जाँचै छी
मत भिन्न भेलै, बात फेर बढ़ै छै / आनक तर्क सुनै छी, मोन खुलै छै
वाद जखन उठै छै, रोष घटै छै / आनक बात सुनै छी, व्यवहार जाँचै छी
सोन दूर दिसलै, रूप नहि बुझै छी / कुण्डल रूप बचै छै, भेद दिसै छै
मूल बोध भेलै, रूप नहि मिटै छै / नाम रूप पढ़ै छी, आकार जाँचै छी
सुख आबि गेलै, फेर दूर जाइ छै / पीर आबि गेलै, फेर दूर जाइ छै
भाव फेर बदलै छै, मोन देखै छी / काल फेर घुरै छै, संसार जाँचै छी
लक्षण पैघ भेलै, सीमा दूर जाइ छै / आनक वस्तु घेरै छै, दोष बढ़ै छै
लक्षण जखन घटै छै, सत्य छुटै छै / सीमा फेर धरै छी, प्रकार जाँचै छी
फल भेटि गेलै, काज स्मरण रहै छै / कारण दूर भेलै, क्रम नहि टूटै छै
कर्म जखन फलै छै, हेतु देखै छी / जड़ जखन चलै छै, आधार जाँचै छी

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७४१ — संगीतमय रूप

भाव: ज्ञानक संशोध्यता · असहमतिक ज्ञानात्मक मूल्य · पदार्थ आ रूपक भेद · सुख-पीरक परिवर्तनशीलता · लक्षणक सीमा · कारण-क्रमक सावधान जाँच।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम; दुनू अर्धांश पूर्ण उपवाक्य-जकाँ गाउ। पहिल अर्धांशक क्रिया-लय एकरूप नहि—बदलै छै, भेलै, दिसै छै, गेलै, रहै छै आदि अर्थानुसार बदलैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “जाँचै छी” रदीफक अवरोह आत्मविश्वास नहि, आत्मसमीक्षाक भाव देत।

मतला: ज्ञान सम्भव अछि, मुदा मानवीय ज्ञान संशोध्य अछि। भूल खुलला पर नव आधार जाँचब आ अपन भूल स्वीकार कऽ विचार फेर जाँचब दुर्बलता नहि, ज्ञानक अनुशासन अछि।

२म शेर: भिन्न मत अपने-आप बैर नहि। आनक तर्क सुनला पर मोन खुलि सकैत अछि; वाद उठलापर रोष घटा कऽ अपन व्यवहार जाँचब असहमतिकेँ ज्ञानक स्रोत बनबैत अछि।

३म शेर: दूरसँ सोन बुझि लेब आ कुण्डलक विशिष्ट रूप जानब एक बात नहि। मूल पदार्थक ज्ञान रूप-विशेषक ज्ञानकेँ अनावश्यक नहि बनबैत; नाम, रूप आ आकार फेर जाँच माँगैत अछि।

४म शेर: सुख आ पीर दुनू आबैत-जाइत अनुभव अछि। बदलैत भावक बीच काल आ अपन संसार फेर देखब ई स्मरण करबैत अछि जे क्षणिक अनुभूतिकेँ नित्य सत्य मानब उचित नहि।

५म शेर: परिभाषा बहुत फैलल तँ आन वस्तुओ घेरि लेत; बहुत घटल तँ सत्य उदाहरण छुटि जाएत। उचित सीमा धरि प्रकार जाँचब लक्षणक शुद्धता बचबैत अछि।

६म शेर: फल भेटलापर दूर कारण भुलाएब नहि; मुदा प्रत्येक अज्ञात ठाम मनमाना कारण जोड़ब सेहो उचित नहि। कर्म, हेतु, जड़ गति आ आधारक क्रम प्रमाणसँ जाँचल जाए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पहिल १६-मात्रिक अर्धांश शब्द-माला नहि, स्वयं जीवित उपवाक्य हो; क्रिया-लय मिसरा-दर-मिसरा स्वाभाविक रूपेँ बदलैत रहए।

गजल ७४२ — मान जखन बढ़ै छै, विश्वास रहै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (विश्वास, उल्लास, त्रास, अभ्यास, हुलास, आभास) · रदीफ: रहै छै · शेर: ६

मान जखन बढ़ै छै, बैर घटै छै / आनक मान बचै छै, विश्वास रहै छै
रंग अपन बचै छै, आनक बचै छै / नेह जखन जुड़ै छै, उल्लास रहै छै
पीर जखन नुकै छै, देह कहै छै / लोक जखन चुकै छै, घाव बचै छै
बोल जखन छुटै छै, पीर बचै छै / मौन जखन बढ़ै छै, त्रास रहै छै
गुरु जखन कहै छै, क्रम चलै छै / शिष्य जखन सुनै छै, सूत्र बचै छै
पाठ जखन बहै छै, पीढ़ि जुड़ै छै / क्रम जखन चलै छै, अभ्यास रहै छै
नोर जखन खसै छै, मोन पसीजै छै / मूल जखन खोजै छी, पीर खुलै छै
मूल जखन बुझै छी, उपाय मिलै छै / पीर जखन घटै छै, हुलास रहै छै
बाल जखन देखै छै, मोन खुलै छै / रूप जखन मिलै छै, बोध जगै छै
नाम पाछाँ जुड़ै छै, बोध बढ़ै छै / रूप पहिने दिसै छै, आभास रहै छै
बोल जखन सुनै छी, अर्थ खुलै छै / हेतु सभ गिनै छी, देर बढ़ै छै
साँच जन कहै छै, अर्थ मिलै छै / बोल जखन बुझै छी, विश्वास रहै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७४२ — संगीतमय रूप

भाव: अस्मिता आ समान गरिमा · कम-सुनल पीरक यथार्थ · गुरु-शिष्य क्रममे ज्ञान-धारा · करुणासँ कारण-उपायक खोज · नामसँ पहिनेक प्रथम अनुभूति · विश्वसनीय शब्दक सोझ ज्ञान।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम; दुनू अर्धांश पूर्ण उपवाक्य-जकाँ गाउ। पहिल अर्धांशक क्रिया-लय अर्थानुसार बदलैत रहए—बढ़ै छै, बचै छै, नुकै छै, कहै छै, बहै छै, खोजै छी, देखै छै, सुनै छी।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ास काफियापर हलुक ठहराव; “रहै छै” रदीफक अवरोह निरन्तरता आ भीतरक भरोसा देत।
मतला: अपन मान बढ़ब आनक मान घटेबाक नाम नहि। अपन रंग बचल रहि सकैत अछि आ आनक रंग सेहो; नेह जुड़ल रहला पर आस आ विश्वास दुनू टिकैत अछि।
२म शेर: जे पीर बहुमत भाषा नहि पाबि सकल, से झूठ नहि। देह सेहो कहैत अछि; बोल छुटि गेलापर मौन बढ़ि सकैत अछि आ त्रास भीतर रहि सकैत अछि।
३म शेर: ज्ञान केवल पोथीक अक्षर नहि; क्रमबद्ध गुरु-शिष्य परम्परा, सुनब, दोहराएब, बुझब आ अभ्यास करब ज्ञान-धाराकेँ जीवित रखैत अछि।
४म शेर: करुणा नोर धरि सीमित नहि। मोन पसीजलाक बाद पीरक मूल खोजब, कारण बुझब आ उपाय भेटब करुणाकेँ काजमे बदलैत अछि।
५म शेर: नाम आ जाति जुड़बासँ पहिने सेहो प्रथम अनुभूति सम्भव अछि। बालक पहिने रूप देखैत अछि; तकर बाद नाम जुड़ैत आ बोध अधिक निर्धारित होइत अछि।
६म शेर: विश्वसनीय बोलक अर्थ बुझबाक लेल सभ बेर धूम-अग्नि-जकाँ अनुमानक पूरा घेरा आवश्यक नहि। जखन शब्दक बोधशक्ति आ वक्ताक विश्वसनीयता स्थापित अछि, बोल सोझ ज्ञान दऽ सकैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पहिल १६-मात्रिक अर्धांश शब्द-माला नहि, स्वयं जीवित उपवाक्य हो; दोसर अर्धांशो समान रूपेँ वाक्यात्मक रहए।

गजल ७४३ — घाव जखन देखै छी, दाग बुझै छी

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाग (दाग, भाग, राग, त्याग) · रदीफ: बुझै छी · शेर: ६

क्षमा जखन माँगै छी, दोष मानै छी / घाव जखन देखै छी, दाग बुझै छी

दोष फेर बचै छै, क्षमा चुकै छै / अंश अपन मानै छी, भाग बुझै छी

वचन जखन कहै छी, बन्ध बनै छै / बोल जखन धरै छी, लोक जुड़ै छै

नाम जखन धरै छी, रूप बदलै छै / बन्ध जखन टिकै छै, राग बुझै छी

देह जखन दुखलै, हम दुखि जाइ छी / रूप जखन बदललै, हम बदलि जाइ छी

देहक गुण जोड़ै छी, हममे जोड़ै छी / भेद जखन देखै छी, दाग बुझै छी

सुख जखन भेटै छै, पीर जुड़ै छै / मधु जखन चखै छी, विष भेटै छै

लाभ जखन दौड़ै छी, थाकि जाइ छी / पीर जखन तौलै छी, त्याग बुझै छी

ध्वनि फेर सुनै छी, जाति बुझै छी / स्वर जखन बदलै छै, रूप बदलै छै

एक ध्वनि जाइ छै, दोसर आबै छै / जाति रूप देखै छी, भाग बुझै छी

आँखि जखन चुकै छै, वस्तु बचै छै / ज्ञान जखन रुकै छै, सत्ता बचै छै

नहि देखल कहै छी, सत्ता नकारै छी / सीमा अपन देखै छी, दाग बुझै छी

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७४३ — संगीतमय रूप

भाव: क्षमा आ उत्तरदायित्व · बोल स्वयं काज बनब · देहक गुणकेँ “हम” पर आरोप · सुख-पीरक मिश्रण · ध्वनि बदलितो साझा जातिक बोध · नहि देखाइ पड़ब आ नहि होयबक भेद।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम; दुनू अर्धांश पूर्ण उपवाक्य-जकाँ गाउ। पहिल अर्धांशक क्रिया-लय अर्थानुसार बदलैत रहए—माँगै छी, बचै छै, कहै छी, दुखै छै, भेटै छै, सुनै छी, चुकै छै।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ाग काफियापर हलुक ठहराव; “बुझै छी” रदीफ आत्मपरीक्षा आ भीतरक बोधक अवरोह देत।

मतला: क्षमा माँगब केवल शब्द नहि; दोष मानब, घाव देखब आ अपन अंश स्वीकारब आवश्यक। भूल बचल रहला पर क्षमा अपूर्ण रहैत अछि।

२म शेर: भाषा केवल वर्णन नहि करैत। वचन कहला सँ बन्ध बनैत अछि, बोल धरला सँ लोक जुड़ैत अछि; नामकरण आ प्रतिज्ञा सामाजिक सम्बन्ध बदलि सकैत अछि।

३म शेर: देह दुखला पर “हम दुखी” कहब आ रूप बदलला पर “हम बदललहुँ” बुझब देहक गुणकेँ आत्मापर आरोप करबाक मानवीय प्रवृत्ति देखबैत अछि।

४म शेर: लौकिक सुख बहुधा पीर-मिश्रित अछि। लाभक पाछाँ दौड़ैत थाकि जाइत छी; पीरकेँ तौलला पर कखनहुँ त्याग अधिक विवेकपूर्ण बुझाइ पड़ैत अछि।

५म शेर: एक वर्ण फेर सुनला पर “वएह” बुझाइ पड़ैत अछि, मुदा व्यक्तिगत ध्वनि बदलि सकैत अछि; साझा जाति वा रूपक कारण फेर चिन्हल जाइत अछि।

६म शेर: आँखिक चूक वस्तुकेँ मिटबैत नहि। “हम नहि देखलहुँ” कहब आ “ओ नहि अछि” कहब एक बात नहि; अपन ज्ञान-सीमा देखब आवश्यक।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पहिल १६-मात्रिक अर्धांश शब्द-माला नहि, स्वयं जीवित उपवाक्य हो; दोसर अर्धांशो समान रूपेँ वाक्यात्मक रहए।

गजल ७४४ — गौरव जखन बढ़ै छै, प्रमाण माँगै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (आधार, विचार, संसार, द्वार, सार) · रदीफ: खुलै छै · शेर: ६

गौरव जखन बढ़ै छै, प्रमाण माँगै छै / दाबी जखन जाँचै छी, आधार खुलै छै
गौरव अपन राखै छी, मिथ्या छोड़ै छी / साँच जखन जागै छै, विचार खुलै छै
नाम पुरान रहै छै, अर्थ बदलै छै / देश जखन मुड़ै छै, सीमा बदलै छै
काल जखन मुड़ै छै, अर्थ बदलै छै / नाम जखन पढ़ै छी, संसार खुलै छै
तट जखन सरकै छै, फेन बदलै छै / नाव जखन डोलै छै, डरियो उठै छै
बीच जखन टिकै छी, श्वास सम्हरै छै / धीर जखन जागै छै, द्वार खुलै छै
बीज जखन रोपै छी, ऋतु तकै छी / कारण जखन टूटै छै, विश्वास टूटै छै
नियम जखन टिकै छै, खेत फलै छै / काज जखन जाँचै छी, आधार खुलै छै
धूम जखन देखै छी, आगि बुझै छी / कारण जखन नुकै छै, भ्रमो बनै छै
उपाधि जखन खोजै छी, भ्रम घटै छै / हेतु जखन टिकै छै, विचार खुलै छै
दाबी जखन सुनै छी, अर्थ तौलै छी / एक जखन टूटै छै, दोसर बचै छै
विकल्प जखन जाँचै छी, दोष खुलै छै / तर्क जखन बढ़ै छै, सार खुलै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७४४ — संगीतमय रूप

भाव: अपन गौरवक प्रमाण-परीक्षा · काल-देशसँ नाम-अर्थक परिवर्तन · चञ्चल किनार छोड़ि स्थिर मध्यक खोज · कारण-नियमक भरोस · उपाधिक कारण अनुमानक भ्रम · विकल्पसभक क्रमिक परीक्षण।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम; दुनू अर्धांश पूर्ण उपवाक्य-जकाँ गाउ। पहिल अर्धांशक क्रिया-लय अर्थानुसार बदलैत रहए—बढ़ै छै, राखै छी, रहै छै, मुड़ै छै, सरकै छै, टिकै छी, रोपै छी, खोजै छी, सुनै छी।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, कोमल बाँसुरी आ विरल तबला। –◌ार काफियापर हलुक ठहराव; “खुलै छै” रदीफ क्रमशः प्रमाण, अर्थ, शान्ति, कारण आ तर्कक उद्घाटनक भाव देत।

मतला: अपन परम्परा वा गौरव प्रिय होइतहुँ प्रमाणक कसौटीसँ मुक्त नहि। मिथ्या छोड़ि साँचकेँ जगा कऽ देखला पर विचारक आधार खुलैत अछि।

२म शेर: एके नाम काल, देश, सीमा, भाषा आ व्यवहारक परिवर्तनसँ भिन्न अर्थ धारण कऽ सकैत अछि; नाम पढ़ैत इतिहासक संसार खुलैत अछि।

३म शेर: सरकैत तट, फेन आ डोलैत नावक बीच स्थिर मध्य खोजब भीतरक धीरता आ शान्तिक बिम्ब अछि।

४म शेर: कारण-नियम टूटि जाए तँ बीज, ऋतु, खेत आ फलपर व्यवहारिक विश्वास टूटि जाएत; स्थिर कारण-क्रम कृषि आ दैनिक जीवनक आधार अछि।

५म शेर: धूम देखिते आगि बुझब तखन सुरक्षित अछि जखन लुकायल उपाधि वा शर्त भ्रम नहि बना रहल हो; हेतु फेर जाँचल जाए।

६म शेर: दाबी सुनि ओकर सम्भावित अर्थ तौलू; एक विकल्प टूटला पर दोसर बचि सकैत अछि। विकल्प-दर-विकल्प परीक्षणसँ तर्कक सार खुलैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पहिल १६-मात्रिक अर्धांश शब्द-माला नहि, स्वयं जीवित उपवाक्य हो; दोसर अर्धांशो समान रूपेँ वाक्यात्मक रहए।

गजल ७४५ — दोषो देखलै मोन, सार रहि जाइ छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, आधार, सँभार, विचार, व्यवहार, आकार) · रदीफ: रहि जाइ छै · शेर: ६

आन दोष गनलहुँ फेर, दोषो देखलै मोन / एक नियम राखलहुँ, सार रहि जाइ छै
अपन मत जाँचलहुँ फेर, साँच चमकलै सोझ / मोह जखन गललै, आधार रहि जाइ छै
दीप जखन बुझलै, तार कथा कहलक फेर / बाट जखन टूटलै, श्रम सभ देखायल सोझ
श्रम जखन नुकलै, नगर चुप चललै फेर / काज जखन रुकलै, सँभार रहि जाइ छै
राग जखन थमलै, मोन फेर सम्हरलै नीक / चाह जखन घटलै, श्वास फेर चललै सहज
मोन जखन थमलै, सत्य फेर चमकलै सोझ / राग जखन गललै, विचार रहि जाइ छै
वस्तु जखन बुझलहुँ, चाह फेर जागलै मोन / चाह जखन जागलै, हाथ फेर बढ़लै सोझ
हाथ जखन पहुँचलै, वस्तु फेर भेटलै सोझ / वस्तु जखन भेटलै, व्यवहार रहि जाइ छै
आँगन जखन देखलहुँ, अभावो सोझ दिसलै तखन / घटक अभाव बुझलहुँ, अनुमान तखन रहलै दूर
रिक्त ठाम देखलहुँ, अभाव फेर बुझलै मोन / आँखि जखन पड़लै, आधार रहि जाइ छै
दाना जखन राखलहुँ, ढेरी फेर बनलै सोझ / एक-दू फेर गनलहुँ, संख्या मन रचलै तखन
वस्तु अपन रहलै, बुद्धि फेर गनलै कण / संख्या जखन बनलै, आकार रहि जाइ छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७४५ — संगीतमय रूप

भाव: आत्मसमीक्षा · अदृश्य सँभार-श्रम · राग घटला पर मोनक स्थिरता · ज्ञानसँ चाह–प्रयत्न–काज · अभावक सोझ बोध · गिनबाक बुद्धिसँ संख्या आ आकारक उदय।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। पहिल अर्धांशक क्रिया-लय गनलहुँ/देखलै, बुझलै/कहलक, थमलै/सम्हरलै, जानलहुँ/जागलै, देखलहुँ/दिसलै, राखलहुँ/बनलै जकाँ बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, कोमल बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “रहि जाइ छै” रदीफ क्षणिक दृश्य हटला बाद बचल मूल बातक अनुभूति देत।
मतला: आनक दोष गनबाक कसौटी अपन मतपर सेहो लागू हो; मोह गलला बाद जे टिकैत अछि, ओहीमे साँचक आधार खोजल जाए।
२म शेर: दीप बुझला वा बाट टूटला पर तार, श्रम, सुधार-सँभारक ओ अदृश्य संसार देखाइ पड़ैत अछि जे व्यवस्था चलैत काल प्रायः नुका रहैत अछि।
३म शेर: राग घटला पर मोन सम्हरैत अछि; चाहक कोलाहल घटला पर श्वास सहज होइत अछि, आ सत्य-विचार लेल भीतर ठाम बनैत अछि।
४म शेर: वास्तविक वस्तुक ज्ञान चाह जगबैत अछि; चाहसँ हाथ बढ़ैत अछि, प्रयत्नसँ वस्तु भेटैत अछि, आ एही क्रममे व्यवहारक वास्तविकता बचैत अछि।
५म शेर: रिक्त ठाम देखैत अभाव सेहो सोझ बुझाइ पड़ैत अछि; ओकर ज्ञान लेल सभ बेर पृथक् अनुमानक बाट पकड़ब आवश्यक नहि।
६म शेर: वस्तु अपन ठाम रहैत अछि, मुदा गिनबाक बुद्धि ओकरा एक-दू-अनेक रूपेँ ग्रहण करैत अछि; संख्या उगला संग आकारक भेदो स्पष्ट होइत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश जीवित उपवाक्य हो; पहिल भाग केवल शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७४६ — रूप जखन मिललै, मेल तखन विचार भेलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (विचार, आधार, व्यवहार, सार, साकार, उदार) · रदीफ: भेलै · शेर: ६

रूप जखन मिललै, भेद तखन जीवित रहलै / भेद जखन बचलै, मेल तखन विचार भेलै
रंग जखन मिललै, ढंग तखन भिन्न रहलै / भेद जखन बचलै, तर्क तखन आधार भेलै
अंक जखन चढ़लै, मानुख तखन सान दिसलै / लेखा जखन बढ़लै, नाम तखन मौन रहलै
बात जखन उठलै, लेखा तखन फेर खुललै / मान जखन लौटलै, न्याय तखन व्यवहार भेलै
पात जखन झरलै, गाछ तखन ठाढ़ रहलै / रूप जखन बदललै, मूल तखन शान्त रहलै
क्षण जखन सरकलै, मोह तखन दूर रहलै / नित्य जखन बुझलै, भेद तखन सार भेलै
रूप जखन देखलहुँ, हम तखन भिन्न रहलहुँ / ज्ञान जखन चमकलै, वस्तु तखन सोझ रहलै
भेद जखन बचलै, भ्रम तखन दूर रहलै / ज्ञान जखन चमकलै, वस्तु तखन साकार भेलै
साँच जखन मिललै, बाट तखन दोष रहलै / लक्ष्य जखन भेटलै, भूल तखन जीवित रहलै
कारण जखन जाँचलै, दोष तखन दूर रहलै / बाट जखन सुधरलै, ज्ञान तखन आधार भेलै
मत जखन सुनलै, रोष तखन दूर रहलै / प्रश्न जखन गहिरलै, उत्तर तखन ठाढ़ रहलै
आपत्ति जखन आयल, तर्क तखन फेर सँवरलै / बल जखन मानलै, वाद तखन उदार भेलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७४६ — संगीतमय रूप

भाव: सीमित समानता · मानुखक गरिमा · नित्य–अनित्य विवेक · ज्ञान आ ज्ञेयक भेद · साँच परिणाम संग उचित कारण-क्रम · प्रतिपक्षक बल मानि तर्कक परिपक्वता।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश पूर्ण क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; मिललै/रहलै, चढ़लै/दिसलै, झरलै/रहलै, देखलहुँ/रहलहुँ, जाँचलै/रहलै, आयल/सँवरलै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “भेलै” रदीफ निष्कर्षक क्षणिक चमक देत।

मतला: एक गुणक मेल पूरा समानता नहि; रंग मिललासँ ढंगो समान हो—ई आवश्यक नहि। भेद बचल रहला पर तुलनाक सीमा बुझाइत अछि।

२म शेर: अंक वा लेखा मानुखक पूर्ण गरिमा नहि नापि सकैत; बात फेर खुलला आ मान लौटलापर न्याय व्यवहार बनैत अछि।

३म शेर: पात झरैत, रूप बदलैत रहैत अछि; परिवर्तनक बीच नित्य–अनित्यक विवेक मोह घटबैत अछि।

४म शेर: जे देखल जाए से ज्ञान नहि बनि जाइत; ज्ञाता, ज्ञान आ ज्ञेयक भेद बचल रहला पर वस्तु अपन रूपमे साकार बुझाइत अछि।

५म शेर: संयोगसँ साँच परिणाम भेटलासँ मात्र ज्ञान सिद्ध नहि; कारण आ बाटक शुद्धता जाँचल जाए तखन ज्ञानक आधार दृढ़ होइत अछि।

६म शेर: प्रतिपक्षक बात सुनि रोष घटब; आपत्ति तर्ककेँ सँवारि सकैत अछि। आनक बल मानलासँ वाद दुर्बल नहि, उदार होइत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७४७ — काल्हिक आधार पूछै छी

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (आधार, विचार, व्यवहार, स्वीकार, प्रतिकार, प्रकार, सत्कार) · रदीफ: पूछै छी · शेर: ६

सूरुज प्रतिदिन उगै, मोन काल्हि तकै छै / समय पाठ देलै, कोन आधार पूछै छी
भोर फेर अएलै, मोन भरोस करै छै / अभ्यास बल देलै, कोन विचार पूछै छी
बटन झट दबेलै, पन्ना आगाँ बढ़ै छै / अक्षर छोट लिखलै, मोन अर्थ बुझै नहि
अँगुरी हाँ कहलक, मोन चुप्पे रहै छै / बुझब अपूर्ण भेलै, कोन व्यवहार पूछै छी
श्रद्धा दीप जरै, प्रश्न संग चलै छै / जन आँखि मूँदलै, बाट सोझ देखै नहि
मत जखन सुनलै, बुद्धि फेर जागै छै / श्रद्धा जाँचि बढ़लै, कोन स्वीकार पूछै छी
पानि पिआस बुझेलै, देह शान्ति पबै छै / फल संग जुड़लै, मोन नियम धरै छै
विपरीत फल मानलै, बाट स्वयं टूटै छै / अनिष्ट जखन उभरलै, कोन प्रतिकार पूछै छी
रूप पहिने चमकलै, नाम पाछाँ जुड़ै छै / आँखि वस्तु देखलै, बुद्धि जाति धरै छै
गाय रूप बुझलै, गोत्व संग जुड़ै छै / पहिल झलक अएलै, कोन प्रकार पूछै छी
मानुख नाम अएलै, बोल आदर धरै छै / निर्जीव नाम अएलै, क्रिया भेद करै छै
भाषा मान बचेलै, अर्थो संग बढ़ै छै / व्याकरण भेद धरलै, कतेक सत्कार पूछै छी

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७४७ — संगीतमय रूप

भाव: अतीत–भविष्यक भरोस आ तर्कक सीमा · सूचित सहमति · श्रद्धा संग विचार · अनिष्ट-परिणाम द्वारा तर्क-जाँच · पहिल झलक आ नामित प्रत्यक्ष · भाषा भीतर आदर आ चेतन–अचेतनक भेद।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश पूर्ण क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; उगै/तकै, अएलै/करै, दबेलै/बढ़ै, जरै/चलै, बुझेलै/पबै, चमकलै/जुड़ै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “पूछै छी” रदीफ प्रश्नक स्वर खुला रखए।

मतला: सभ दिन सूरुज उगब काल्हिक अनिवार्य तार्किक प्रमाण नहि; अभ्यास भरोस दैत अछि, मुदा मोन आधार आ विचार पूछैत अछि।

२म शेर: बटन दबेब वा “हाँ” कहब अपने-आप सूचित सहमति नहि। अर्थ अपूर्ण बुझल रहला पर व्यवहारक नैतिक आधार प्रश्न बनैत अछि।

३म शेर: श्रद्धा आँखि मूदि स्वीकार करब नहि; प्रश्न संग चलैत श्रद्धा विचारसँ दृढ़ होइत अछि।

४म शेर: वास्तविक कारण-सम्बन्धक प्रतिकूल परिणाम देखला पर तर्कक बाट स्वयं टूटैत अछि; अनिष्ट परिणाम तर्क-परीक्षाक साधन बनैत अछि।

५म शेर: पहिल झलक नाम वा जाति-संबन्ध स्पष्ट होएबाक पहिने आबि सकैत अछि; पाछाँ “गाय” आ “गोत्व”क सम्बन्ध जुड़ि निश्चित बोध बनैत अछि।

६म शेर: मैथिली व्याकरण मानुख आ निर्जीव वस्तुक क्रियामे भेद राखि आदर आ चेतन–अचेतनक सूक्ष्मता अर्थमे जोड़ैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७४८ — भाग्यैँ साँच भेलै, कोन आधार मिलै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (आधार, विचार, अधिकार, विस्तार, आकार, सार, व्यवहार) · रदीफ: मिलै छै · शेर: ६

साँच बात भेलै, मोन झट मानै छै / भाग्यैँ साँच भेलै, कोन आधार मिलै छै
कारण जखन खोजै छी, सूत्र खुलै छै / संयोग छोड़ि देखू, तखन विचार मिलै छै
अंक फेर गिनै छै, नाम छुटै छै / वर्ग जखन बनै छै, लोक बँटै छै
छूटल नाम जोड़ै छी, रूप बदलै छै / सभक कथा सुनलै, तखन अधिकार मिलै छै
राग फेर सुनै छी, स्वर खुलै छै / अभ्यास जखन पकै छै, कान जागै छै
वाक्य फेर सुनै छी, मोन बुझै छै / मनन संग जोड़ू, तखन विस्तार मिलै छै
इँटा सभ जुड़लै, घर रूप उठै छै / भाग मात्र गनलै, मोन समग्र बुझै नहि
सूत्र जखन जुड़लै, अर्थ नवा उठै छै / भाग पार देखलै, तखन आकार मिलै छै
एक शब्द सुनलै, दू अर्थ जगै छै / प्रसंग नहि भेटलै, मोन फेर ठमकै छै
तात्पर्य जखन खुललै, संशय फेर घटै छै / सन्दर्भ संग सुनलै, तखन सार मिलै छै
आज्ञा फेर सुनलै, पएर झट चलै छै / बोल केवल कहै नहि, काज जगै छै
वचन जखन देलै, अपन भार बढ़ै छै / शब्द काज जगेलै, तखन व्यवहार मिलै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७४८ — संगीतमय रूप

भाव: संयोगवश साँच विश्वास आ ज्ञानक भेद · आँकड़ा/वर्ग द्वारा अदृश्यता · अभ्यास–श्रवण–मनन · अवयव आ अवयवी · प्रसङ्ग–तात्पर्य द्वारा अनेकार्थकता-निवारण · वचन/आज्ञाक काजकारी शक्ति।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश पूर्ण क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; भेलै/मानै, खोजै/खुलै, गिनै/छुटै, सुनै/खुलै, जुड़लै/उठै, खुललै/घटै, देलै/जुड़ै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “मिलै छै” रदीफ खोजक बाद प्राप्ति-जकाँ कोमल खुलाव दे।

मतला: कोनो विश्वास संयोगेँ साँच भऽ गेलासँ मात्र ज्ञान नहि बनैत; कारण खोजि संयोग छोड़ि जाँचलापर आधार आ विचार भेटैत अछि।

२म शेर: अंक आ वर्ग ककरो नाम छुटा सकैत अछि; छूटल लोकक कथा जोड़ला पर प्रतिनिधित्व आ अधिकारक प्रश्न साफ होइत अछि।

३म शेर: बारम्बार श्रवण आ अभ्यास कानकेँ सूक्ष्म स्वर-भेद सुनबैत अछि; वाक्यक पुनरावृत्ति संग मनन अर्थक विस्तार खोलैत अछि।

४म शेर: इँटाक जोड़ मात्र घरक समग्रता नहि; भाग जुड़ला पर नव रूप उठैत अछि, आ समग्र वस्तु भागसभसँ अधिक संरचना पबैत अछि।

५म शेर: एक शब्दक अनेक अर्थ हो सकैत अछि; प्रसङ्ग आ वक्ताक तात्पर्य खुलला पर संशय घटैत आ अभिप्रेत सार भेटैत अछि।

६म शेर: आज्ञा वा वचन केवल वर्णन नहि; ओ श्रोतामे प्रवृत्ति, दाय आ काज जगबैत अछि—भाषा व्यवहार करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७४९ — साँच फेर मिलै छै, सार खुलै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, द्वार, धार, तार, सार, पार, द्वार) · रदीफ: खुलै छै · शेर: ६

भूल फेर देखै छी, मोन जागै छै / साँच फेर मिलै छै, सार खुलै छै
मत फेर सुनै छी, प्रश्न जगै छै / मोन भूल मानै छै, द्वार खुलै छै
मूल बात रहै छै, अर्थ बदलै छै / आन मोन सुनै छै, भाव जगै छै
बात फेर सुनै छी, अर्थ खुलै छै / आन मोन जुड़ै छै, धार खुलै छै
छाह फेर घटै छै, दीप रहै छै / रोध दूर रहै छै, बोध जगै छै
दीप ठाढ़ रहै छै, छाह घटै छै / मोन फेर बुझै छै, तार खुलै छै
नाम आन कहै छै, रूप रहै छै / भेद मात्र कहै छै, अर्थ घटै छै
रूप फेर देखै छी, गुण धरै छी / रूप गुण देखै छी, सार खुलै छै
रोक ठाढ़ रहै छै, काज ठमकै छै / मूल पास रहै छै, फल छुटै छै
रोध दूर रहै छै, बाट खुलै छै / काज फेर चलै छै, पार खुलै छै
ज्ञान मोन जगै छै, मोन बुझै छै / मोन ज्ञान देखै छै, बोध जगै छै
मोन बोध धरै छै, ज्ञान देखै छै / ज्ञान फेर बुझै छी, द्वार खुलै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७४९ — संगीतमय रूप

भाव: फेर-जाँच आ भूल-स्वीकार · कहल बातक मूल भाव आ सुननिहारक नव अर्थ · आवरण घटला पर पहिनेसँ रहल बोध · केवल निषेधसँ अर्थक अपूर्णता · रोध-अभावसँ काजक बाट · ज्ञानक ज्ञान।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश पूर्ण क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; देखै/जागै, रहै/बदलै, घटै/रहै, कहै/घटै, रहै/ठमकै, जगै/बुझै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “खुलै छै” रदीफ भ्रम, आवरण वा रोध हटला पर अर्थक भीतरक बाट खुलबाक अनुभूति दे।
मतला: भूलकेँ फेर देखब आ आन मत सुनब साँचक विरोध नहि; प्रश्न जगला आ भूल मानलापर साँचक सार आ विचारक द्वार खुलैत अछि।
२म शेर: कहल बात अपन मूल भाव राखैत अछि, मुदा आन मोन ओकरा सुनि नव भाव जगा सकैत अछि; सुननिहारक सहभागितासँ अर्थक नव धार खुलैत अछि।
३म शेर: छाह घटला पर दीप नव नहि बनैत—दीप पहिनेसँ रहैत अछि; रोध दूर रहला पर बोध जगैत अछि, अर्थात् आवरण हटब मुख्य बिम्ब अछि।
४म शेर: कोनो नाम केवल “आन” कहि समग्र अर्थ नहि दैत; रूप आ गुणक सकारात्मक बोधसँ अर्थक सार खुलैत अछि।
५म शेर: कारण उपस्थित रहितहुँ रोध ठाढ़ रहए तँ काज ठमकि सकैत अछि; रोध दूर रहला पर काजकारी बाट फेर खुलैत अछि।
६म शेर: ज्ञान उत्पन्न होएबाक संग मोन ओहि ज्ञानकेँ सेहो ग्रहण करैत अछि; “हम जानैत छी”क भीतर ज्ञानक ज्ञानक द्वार खुलैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७५० — प्रश्न जखन उठै छै, सार बुझै छी

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, आधार, विस्तार, विचार, आकार, आधार, सत्कार) · रदीफ: बुझै छी · शेर: ६

भूल फेर देखै छी, मोन जागै छै / प्रश्न जखन उठै छै, सार बुझै छी
कारण फेर खोजै छी, दोष घटै छै / साँच जखन मिलै छै, आधार बुझै छी
पाठ फेर उठै छै, याद जगै छै / मोन बात धरै छै, चिन्ह रहै छै
नव चिन्ह जुड़ै छै, भेद खुलै छै / बात फेर सुनै छी, विस्तार बुझै छी
बात फेर सुनै छी, अर्थ जगै छै / मोन फेर धरै छी, सार मिलै छै
अर्थ फेर जोड़ै छी, भाव खुलै छै / मनन जखन चलै छै, विचार बुझै छी
रूप फेर देखै छी, मोन बुझै छै / रूप तखन रहै छै, मोन धरै छै
भेद जखन खुलै छै, भ्रम घटै छै / ज्ञान रूप खोलै छै, आकार बुझै छी
चिन्ह जखन मिलै छै, मोन चलै छै / एक बेर देखै छी, संशय रहै छै
आन चिन्ह खोजै छी, दोष घटै छै / मेल जखन ठहरै छै, आधार बुझै छी
आन मत सुनै छी, रोष घटै छै / बात फेर सुनै छी, दोष कहै छी
आन स्वर मानै छी, वाद चलै छै / पक्ष जखन खुलै छै, सत्कार बुझै छी

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७५० — संगीतमय रूप

भाव: भूलक पुनःजाँच · स्मृति आ नूतन बोधक भेद · श्रवण–मनन · रूप, ज्ञान आ ज्ञाताक भेद · चिन्ह–मेलक पुनःपरीक्षा · प्रतिपक्षक मान।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश स्वतंत्र क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; देखै/जागै, खोजै/घटै, उठै/जगै, सुनै/खुलै, धरै/मिलै, ठहरै/बुझै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “बुझै छी” रदीफ खोजक बाद भीतरक बोध स्थिर होएबाक अनुभूति दे।
मतला: भूलकेँ फेर देखला पर मोन जागैत अछि; प्रश्न उठब ज्ञानक विरोध नहि। कारण खोजि दोष घटला आ साँच भेटला पर सार आ आधार स्पष्ट बुझाइत अछि।
२म शेर: पहिने पढ़ल पाठ स्मृतिमे उठि सकैत अछि, मुदा नव चिन्ह जुड़ला पर पुरान बातक सीमा खुलैत अछि; फेर सुनला पर अर्थक विस्तार बुझाइत अछि।
३म शेर: शब्द सुनब पहिल डेग अछि; अर्थकेँ मोनमे धऽ, जोड़ि आ मनन कएलापर भावक भीतरक विचार स्पष्ट होइत अछि।
४म शेर: रूप देखब, रूपक बोध आ रूप स्वयं एक्के बात नहि; भेद खुलला पर भ्रम घटैत अछि आ ज्ञान वस्तुक आकार प्रकट करैत अछि।
५म शेर: एक चिन्ह एक बेर भेटब मात्रेँ सार्वभौम मेल सिद्ध नहि; आन चिन्ह खोजि दोष घटाओल जाए, तखन सम्बन्धक आधार बुझाइत अछि।
६म शेर: आन मत पहिने सुनब, ओकर पक्ष बुझब आ तकर बाद दोष कहब वादक मर्यादा अछि; प्रतिपक्षक स्वर मानलापर सत्कारक अर्थ खुलैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७५१ — भाग्य फेर जाँचै छी, आधार खोजै छी

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (आधार, विचार, व्यवहार, सार, विस्तार, प्रकार, आधार) · रदीफ: खोजै छी · शेर: ६

फल जखन देखै छी, कारण खुलै छै / भाग्य फेर जाँचै छी, आधार खोजै छी
कारण जखन खुलै छै, बाट बदलै छै / बन्ध फेर खोलै छी, विचार खोजै छी
मंच जखन चुनै छै, सोर छुटै छै / आन बोल सुनै छी, मान जगै छै
लोक स्वर जोड़ै छी, रूप बदलै छै / आन भाग धरै छी, व्यवहार खोजै छी
छाह जखन हटै छै, दीप खुलै छै / बोध फेर जागै छै, मोन बदलै छै
रोध जखन घटै छै, भेद खुलै छै / निज रूप देखै छी, सार खोजै छी
काल जखन सरकै छै, रूप बदलै छै / याद फेर जागै छै, मोन जुड़ै छै
मीत फेर देखै छी, याद जुड़ै छै / एक तार धरै छी, विस्तार खोजै छी
घेर जखन बढ़ै छै, आन घुसै छै / घेर जखन घटै छै, सार छुटै छै
दोष फेर देखै छी, घेर जाँचै छी / साँच रूप धरै छी, प्रकार खोजै छी
सूत जखन जुड़ै छै, हार बनै छै / हाथ फेर चलै छै, क्रम खुलै छै
कारण सभ धरै छी, क्रम बचै छै / काज पार देखै छी, आधार खोजै छी

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७५१ — संगीतमय रूप

भाव: कारणता आ बदलाब · छूटैत स्वरक मान · आवरण हटला पर बोध · स्मृति आ निरन्तरता · लक्षणक सीमा · कारण-क्रमक खोज।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम।
दुनू अर्धांश स्वतंत्र क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; देखै/खुलै, जाँचै/खोजै, चुनै/छुटै, हटै/जागै, सरकै/जुड़ै, बढ़ै/घटै, जुड़ै/बनै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; "खोजै छी" रदीफ निष्कर्षक घमण्ड नहि, निरन्तर जिज्ञासाक स्वर दे।
मतला: फल देखला पर कारणक प्रश्न उठैत अछि; भाग्य कहि थामि नहि जाइ, आधार फेर जाँचल जाइ। कारण खुलला पर बाट बदलि सकैत अछि—एहि कारण विचारक खोज जीवित रहैत अछि।
२म शेर: मंच ककर स्वर चुनैत आ ककर छोड़ैत अछि, ई मानक प्रश्न अछि। आन बोल सुनि, छूटल भाग जोड़ि, लोक-व्यवहारक समग्र रूप खोजल जाइत अछि।
३म शेर: छाह हटला पर दीप नव बनैत नहि; रोध घटला पर भेद खुलैत अछि। आवरण हटला पर पहिनेसँ रहल बोध दिस मोन फेर देखैत अछि।
४म शेर: काल सरकैत आ रूप बदलैत रहैत अछि, मुदा स्मृति आ फेर-चिन्हारि अनुभवक तार जोड़ैत अछि; मीत फेर देखला पर निरन्तरताक विस्तार खोजल जाइत अछि।
५म शेर: लक्षणक घेर बहुत बढ़ला पर आन वस्तु घुसैत अछि, बहुत घटला पर उचित सार छुटैत अछि। दुनू दोष देखिकऽ रूपक यथोचित प्रकार खोजल जाइत अछि।
६म शेर: सूत, हाथ आ निकट कारणसभ मानल जाइत अछि; तइयो काजक समग्र क्रम एक कारणमे नहि समाइत। निकट कारण धरि व्यापक आधारक खोज चलैत रहैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७५२ — रूप फेर जाँचै छी, आकार खुलै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (आकार, आधार, अधिकार, व्यवहार, आधार, सार, विचार) · रदीफ: खुलै छै · शेर: ६

दोष जखन घटै छै, नेत्र खुलै छै / रूप फेर जाँचै छी, आकार खुलै छै
भ्रम जखन घटै छै, भेद खुलै छै / दोष फेर जाँचै छी, आधार खुलै छै
यंत्र जखन सुनै छै, बोल छुटै छै / लोक जखन बोलै छै, मान बढ़ै छै
लिपि जखन छुटै छै, नाम घटै छै / बोल फेर जोड़ै छी, अधिकार खुलै छै
सोन जखन देखै छी, रूप छुटै छै / दूर जखन देखै छी, भेद रहै छै
रूप जखन देखै छी, नाम खुलै छै / मूल भिन्न बुझै छी, व्यवहार खुलै छै
वस्तु जखन बुझै छी, चाह जगै छै / चाह जखन जगै छै, हाथ चलै छै
हाथ जखन चलै छै, काज बढ़ै छै / फल जखन भेटै छै, आधार खुलै छै
ठाम जखन देखै छी, अभाव खुलै छै / रिक्त ठाम देखै छी, शून्य बोलै छै
आँगन फेर देखै छी, शून्य बोलै छै / तर्क फेर छोड़ै छी, सार खुलै छै
चाह जखन जगै छै, पएर चलै छै / विरति जखन आबै छै, हाथ हटै छै
अभाव मात्र गनै छी, कारण छुटै छै / चाह विरति धरै छी, विचार खुलै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७५२ — संगीतमय रूप

भाव: प्रत्यक्षक दोष-जाँच · यंत्र-भाषामे छूटैत बोली आ लिपि · मूल पदार्थ आ रूप-विशेष · ज्ञानसँ चाह आ प्रयत्न · योग्य ठाममे अभाव-बोध · चाह-विरतिक सकारात्मक कारण-शक्ति।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश स्वतंत्र क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; घटै/खुलै, सुनै/छुटै, देखै/रहै, बुझै/जगै, देखै/बोलै, आबै/हटै जकाँ क्रिया-लय स्वाभाविक रूपेँ बदलैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “खुलै छै” रदीफ आवरण हटैत अर्थ प्रकट होएबाक शान्त अनुभूति दे।

मतला: प्रत्यक्ष केवल आँखिक उपस्थिति नहि; दोष घटला पर नेत्रक ग्रहण बदलैत अछि। रूप फेर जाँचला पर आकार स्पष्ट होइत आ भ्रम घटला पर आधार खुलैत अछि।

२म शेर: यंत्र जे बोली सुनैत अछि, ओ सभ बोली समान रूपेँ नहि पकड़ि सकैत अछि; लिपि वा लोक-बोल छुटला पर नाम आ मान घटि सकैत अछि। छूटल बोल जोड़ला पर अधिकारक प्रश्न खुलैत अछि।

३म शेर: दूरसँ सोनक मूल पदार्थ बुझाइतहुँ रूप-विशेष छुटि सकैत अछि। लगसँ रूप देखला पर नाम, भेद आ व्यवहारक पृथक् स्तर स्पष्ट होइत अछि।

४म शेर: वस्तु बुझला पर चाह जगैत, चाहसँ हाथ चलैत आ प्रयत्न फल धरि पहुँचैत अछि। सफल प्राप्ति केवल कल्पना नहि, व्यवहारक आधार खोलैत अछि।

५म शेर: योग्य ठाम सोझ देखला पर रिक्तता अपनहि अभावक बोध दैत अछि। आँगनक शून्यकेँ देखिकऽ सभ बेर पृथक् अनुमानक बाट आवश्यक नहि—एहि बिम्बमे सार खुलैत अछि।

६म शेर: चाह पएर चलबैत अछि, विरति हाथ हटबैत अछि। केवल अभाव गनलासँ कारणक सकारात्मक बल छुटि जाइत; चाह आ विरति दुनू धरला पर विचार स्पष्ट होइत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७५३ — साँच जखन कहै छी, डोर रहै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (डोर, नोर, सोर, भोर, छोर) · रदीफ: रहै छै · शेर: ६

दोष जखन मानै छी, घाव खुलै छै / साँच जखन कहै छी, डोर रहै छै

घाव जखन देखै छी, दोष घटै छै / नेह जखन जागै छै, नोर रहै छै

वचन जखन कहै छी, बन्ध बनै छै / नाम जखन राखै छी, रूप बनै छै

बोल जखन राखै छी, मान बढ़ै छै / लोक जखन सुनै छै, सोर रहै छै

देह जखन दुखै छै, मोह बढ़ै छै / आत्म जखन देखै छी, भेद खुलै छै

भेद जखन खुलै छै, मोह घटै छै / आत्म बोध जगै छै, भोर रहै छै

सुख जखन भेटै छै, पीर जुड़ै छै / मधु जखन चखै छी, विष भेटै छै

मोन जखन दौड़ै छै, देह थकै छै / पीर जखन बुझै छी, छोर रहै छै

स्वर जखन जाइ छै, आन आबै छै / ध्वनि जखन बदलै छै, जाति टिकै छै

ध्वनि फेर सुनै छी, रूप मिलै छै / जाति जखन बुझै छी, डोर रहै छै

आँखि जखन चुकै छै, वस्तु रहै छै / ज्ञान जखन रुकै छै, सत्ता टिकै छै

आँखि फेर चुकै छै, ज्ञान घटै छै / सीमा जखन बुझै छी, छोर रहै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७५३ — संगीतमय रूप

भाव: दोष-स्वीकार आ घावक सत्य · वचन आ नामक सामाजिक काज · देह-गुण आ आत्म-बोधक भेद · सुखमे पीरक मिश्रण · बदलैत ध्वनिमे साझा रूप · ज्ञानक सीमा आ वस्तुक स्वतंत्र सत्ता।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश स्वतंत्र क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; मानै/खुलै, कहै/रहै, दुखै/बढ़ै, भेटै/जुड़ै, जाइ/आबै, चुकै/रहै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ोर काफियापर हलुक ठहराव; “रहै छै” रदीफ टूटनक बीच बचल सत्य, स्मृति आ सम्बन्धक शान्त अनुभूति दे।
मतला: दोष मानब केवल क्षमा माँगब नहि; घाव देखब आ साँच कहब जिम्मेदारीक आरम्भ अछि। एहि स्वीकारसँ नेहक डोर बचैत, नोर करुणाक स्मृति बनि रहैत अछि।
२म शेर: वचन कहब आ नाम राखब केवल वर्णन नहि; उचित प्रसंगमे बोल स्वयं सामाजिक काज बनैत अछि। बोल राखला पर मान बढ़ैत, लोक सुनला पर सोर जीवित रहैत अछि।
३म शेर: देहक दुख वा रूपक परिवर्तनकेँ आत्माक समग्र स्वरूप मानि लेब मोह बढ़ा सकैत अछि। देह आ आत्म-बोधक भेद खुलला पर मोह घटैत आ भीतर भोरक बिम्ब रहैत अछि।
४म शेर: लौकिक सुख पीरसँ सर्वथा पृथक् नहि; मधु चखैत विष भेटबाक बिम्ब एहि मिश्रणकेँ देखबैत अछि। दौड़ैत मोन थाकैत देहक पीर बुझला पर दुःखनिवृत्तिक छोर देखाइत अछि।
५म शेर: एक ध्वनि जाइत अछि, आन अबैत अछि; तथापि बदलैत उच्चारणसभमे साझा रूप वा जातिक बोध टिकि सकैत अछि। फेर सुनला पर रूप मिलैत, साझा डोर रहैत अछि।
६म शेर: आँखि चुकला वा ज्ञान रुकला मात्रसँ वस्तु वा सत्ता समाप्त नहि होइत; सत्ता अपन ठाम टिकैत अछि। अपन ज्ञानक सीमा बुझला पर “नहि देखल” आ “नहि अछि”क भेदक छोर सुरक्षित रहैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७५४ — रूप फेर बदलै छै, सार बचै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (धार, सार, द्वार, आधार, विचार, आचार) · रदीफ: बचै छै · शेर: ६

घाट फेर कहै छै, धार बहै छै / रूप फेर बदलै छै, सार बचै छै
नाम फेर बदलै छै, रूप रहै छै / दृष्टि फेर बदलै छै, धार बचै छै
शब्द फेर गहिरै छै, लोक हटै छै / लोक बोल मिलै छै, बोध बढ़ै छै
गाँठ फेर खुलै छै, बोध बढ़ै छै / सहज बोल जुड़ै छै, द्वार बचै छै
शब्द रूप बदलै छै, भाव रहै छै / छन्द फेर बदलै छै, अर्थ रहै छै
घर बोल जुड़ै छै, ग्रन्थ हँसै छै / मूल भाव रहै छै, विचार बचै छै
नेत्र बाह्य देखै छै, सीमा रहै छै / मोन भीतर उतरै छै, बोध जगै छै
नेत्र जखन रुकै छै, मोन चलै छै / भीतर बोध जगै छै, आधार बचै छै
बोध नव जगै छै, प्रश्न उठै छै / मोन फेर जाँचै छै, बात पकै छै
जाँच फेर मिलै छै, प्रश्न घटै छै / ज्ञान फेर टिकै छै, विचार बचै छै
वाद फेर चलै छै, रोष बढ़ै छै / आन मत सुनै छी, मान रहै छै
जीत पाछाँ झुकै छी, रोष घटै छै / आन मान बचै छै, आचार बचै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७५४ — संगीतमय रूप

भाव: एकहि वस्तुक अनेक वैध रूप-वर्णन · गूढ़ भाषा आ लोक-पहुँच · अनुवादमे अर्थ-सुरक्षा · भीतरक मानसिक बोध · नव ज्ञानक प्रामाण्य-जाँच · वादक बादो प्रतिपक्षक मान।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश स्वतंत्र क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; कहै/बचै, बदलै/रहै, गहिरै/हटै, उतरै/जगै, जाँचै/पकै, चलै/बढ़ै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “बचै छै” रदीफ रूप, भाषा, अर्थ, बोध आ मानक बीच बाँचि रहल तत्त्वक शान्त अनुभूति दे।
मतला: घाट नदीक एक रूप कहैत अछि, मुदा नदी केवल घाट नहि। नाम आ दृष्टि बदलितो धार बहैत आ रूपक भीतर सार बचल रहि सकैत अछि।
२म शेर: गूढ़ शब्द लोककेँ दूर कऽ सकैत अछि। लोक-बोल भेटला पर बोध बढ़ैत; गाँठ खुलला आ सहज बोल जुड़ला पर अर्थक द्वार बचैत अछि।
३म शेर: अनुवादमे शब्द-रूप वा छन्द बदलि सकैत अछि, मुदा मूल भावक रक्षा प्रधान अछि। घरक बोल जुड़ला पर ग्रन्थ फेर जीवित हँसैत अछि आ विचार बचैत अछि।
४म शेर: नेत्र बाह्य वस्तु देखैत अछि आ ओकर सीमा अछि; भीतरक बोध लेल मोन अपन बाट चलैत अछि। बाह्य दृष्टि रुकितो मानसिक ग्रहणसँ बोधक आधार बचि सकैत अछि।
५म शेर: नव बोधक संग प्रश्न उठब स्वाभाविक अछि। मोन फेर जाँचैत, बात पकैत, प्रश्न घटैत; जाँच मिलला पर ज्ञान टिकैत आ विचार बचैत अछि।
६म शेर: वादक ताप रोष बढ़ा सकैत अछि, मुदा आन मत सुनब आ प्रतिपक्षक मान राखब बौद्धिक आचारक अंश अछि। जीतलाक पाछाँ झुकला पर रोष घटैत आ आचार बचैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७५५ — छूटल स्वर उठै छै, मान बदलै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, विधान, ध्यान, अनुमान, पहिचान) · रदीफ: बदलै छै · शेर: ६

मौन जन बोलै छै, कान खुलै छै / छूटल स्वर उठै छै, मान बदलै छै
दबल कथा जगै छै, पाठ खुलै छै / आन जन बोलै छै, ज्ञान बदलै छै
यन्त्र अंक गिनै छै, नाम छुटै छै / नियम मात्र चलै छै, न्याय चुकै छै
पक्ष भीतर रहै छै, रूप बनै छै / पक्ष जखन खुलै छै, विधान बदलै छै
घट रूप रहै छै, ग्रन्थ कहै छै / पट रूप रहै छै, भेद बचै छै
नेत्र फेर देखै छी, हाथ धरै छी / साँच जखन मिलै छै, मान बदलै छै
दीप फेर बुझै छै, धूम उठै छै / नाश फेर बुझै छी, प्रश्न जगै छै
वस्तु फेर सोचै छी, भेद खुलै छै / नाश जखन बुझै छी, ध्यान बदलै छै
सीप चमक दिसै छै, चानि लगै छै / स्मृति फेर जगै छै, भ्रम बढ़ै छै
भेद जखन खुलै छै, सीप रहै छै / चानि दूर हटै छै, अनुमान बदलै छै
शब्द संग जुड़ै छै, अर्थ बनै छै / क्रम जखन मिलै छै, कारण जगै छै
वाक्य फेर सुनै छी, नियम मिलै छै / कर्ता जखन बुझै छी, पहिचान बदलै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७५५ — संगीतमय रूप

भाव: दबायल स्वरक पुनःप्रवेश · नियमक भीतर नुकायल पक्ष · प्रत्यक्ष अनुभवक सोझ अधिकार · वस्तु आ विनाशक भेद · स्मृति-प्रत्यक्षक मिलानमे भ्रम · क्रमबद्ध शब्दसँ कर्ता/कारणक खोज।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश स्वतंत्र क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; बोलै/खुलै, गिनै/छुटै, देखै/धरै, बुझै/जगै, दिसै/लगै, जुड़ै/बनै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ान काफियापर हलुक ठहराव; “बदलै छै” रदीफ ज्ञान, मान, प्रमाण आ पहिचानक फेर-जाँचक अनुभूति दे।

मतला: जे स्वर इतिहासक बाहरक किनार पर दबायल छल, से उठला पर कान खुलैत अछि। आन जन बोलला आ दबल कथा जागला पर मान आ ज्ञान दुनू बदलि सकैत अछि।

२म शेर: यन्त्र अंक गिनि सकैत अछि, मुदा नाम छुटि सकैत अछि। नियम चलैत रहितो न्याय चुकि जाए तँ भीतर नुकायल पक्ष देखब आवश्यक; पक्ष खुलला पर विधानक फेर-जाँच होइत अछि।

३म शेर: ग्रन्थ बहुत किछु कहि सकैत अछि, मुदा घटकेँ पट नहि बना सकैत। नेत्रक देखब आ हाथक धरब प्रत्यक्ष भेद सोझाँ आनैत अछि; प्रत्यक्ष साँच भेटला पर प्रमाणक मान फेर जाँचल जाइत अछि।

४म शेर: दीप बुझलापर धूम उठैत अछि, मुदा “वस्तु” आ “ओकर विनाश” केँ एके मानब आवश्यक नहि। नाशक अर्थ फेर सोचला पर भेद खुलैत आ ध्यानक दिशा बदलैत अछि।

५म शेर: सीपक चमक चानि-जकाँ लगि सकैत अछि, कारण स्मृति फेर जागि वर्तमान प्रत्यक्षक संग मिलि भ्रम बढ़ा सकैत अछि। भेद खुलला पर सीप सीपे रहैत अछि आ अनुमान बदलैत अछि।

६म शेर: शब्द सभ संग जुड़ला पर अर्थ बनैत अछि; क्रम, नियम आ संगति कारणक प्रश्न जगबैत अछि। वाक्य फेर सुनि कर्ताक भूमिका बुझला पर पहिचान बदलि सकैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७५६ — प्रश्न फेर उठै छै, राह दिसै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, थाह, चाह, दाह) · रदीफ: दिसै छै · शेर: ६

घर फेर देखै छी, रूप बदलै छै / प्रश्न फेर उठै छै, राह दिसै छै
बाट नित चलै छी, मोन थमकै छै / नित बात खुलै छै, थाह दिसै छै
यन्त्र राह चुनै छै, ध्यान सरकै छै / हाथ फेर चलै छै, चाल बदलै छै
मोन जखन झुकै छै, रीत बनै छै / यन्त्र फेर चुनै छै, चाह दिसै छै
शब्द कान पड़ै छै, अर्थ नुकै छै / मोन फेर सोचै छै, बोध जगै छै
पाठ फेर सुनै छी, अर्थ जगै छै / मोन भीतर चलै छै, थाह दिसै छै
रंग गन्ध जुड़ै छै, रस मिलै छै / गुण सभ जुटै छै, रूप बनै छै
गुण मात्र गिनै छी, देह चुकै छै / भेद जखन खुलै छै, राह दिसै छै
रूप संग मिलै छै, नाम सिखै छी / आन वस्तु रहै छै, मेल बचै छै
रूप जखन मिलै छै, भेद बचै छै / नाम फेर सिखै छी, थाह दिसै छै
आन जन हटै छै, मोन सुनै छै / काज फेर सोचै छी, भार जगै छै
निज मोन कहै छै, दोष बचै छै / काज फेर देखै छी, दाह दिसै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७५६ — संगीतमय रूप

भाव: परिचित जगतमे विस्मयसँ प्रश्न · यन्त्रक चयनसँ ध्यान आ रीतक फेरबदल · सुनल शब्दसँ मनन आ भीतर बोध · गुणक जोड़ आ समग्र रूपक भेद · सादृश्यसँ नाम-ज्ञान मुदा तादात्म्य नहि · बाहरी साक्षी बिना निज मोनक नैतिक साक्ष्य।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश स्वतंत्र क्रियाशील उपवाक्य रूपेँ बहए; देखै/बदलै, उठै/दिसै, चुनै/सरकै, पड़ै/नुकै, गिनै/चुकै, कहै/बचै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ाह काफियापर हलुक ठहराव; “दिसै छै” रदीफ प्रश्नक भीतरसँ नव बाट देखायबक भाव दे।

मतला: नित देखल घर फेर देखला पर रूप बदलल सन लगि सकैत अछि; परिचित बाटपर चलैत मोन अकस्मात् थमकि सकैत अछि। एहि विस्मयसँ प्रश्न उठैत आ राह/थाह दिसैत अछि।

२म शेर: यन्त्र केवल हाथक चाल तेज नहि करैत; कोन राह सहज हो, कोन बात सोझाँ आबय, एहि चयनसँ ध्यान सरकैत आ रीत बनैत अछि। यन्त्रक चयनमे चाहक दिशा सेहो दिसि सकैत अछि।

३म शेर: शब्द कानमे पड़िते अर्थ सम्पूर्ण नहि खुलैत; अर्थ कखनो नुकायल रहैत अछि। फेर सुनब, मोनमे सोचब आ भीतर चलैत मननसँ बोध जगैत आ थाह दिसैत अछि।

४म शेर: रंग, गन्ध, रस आदि गुण सभ एक ठाम जुटि सकैत अछि, मुदा गुणसभक गिनती मात्रे समग्र देहक सम्पूर्ण अर्थ नहि। भेद खुलला पर समग्रता बुझबाक राह दिसैत अछि।

५म शेर: रूपक मेलसँ अपरिचित वस्तुक नाम सीखल जा सकैत अछि, मुदा मेल दुनू वस्तुकेँ एक नहि बना दैत। रूप मिलितो भेद बचैत अछि; नाम सीखला पर सम्बन्धक थाह दिसैत अछि।

६म शेर: आन लोक हटि गेलापर सेहो निज मोन अपन काज सुनैत अछि। दोष बचल हो तँ भीतर भार जगैत अछि; अपन काज फेर देखला पर दाह दिसैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७५७ — अंक मात्र कहै छै, विचार जगै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (विचार, अधिकार, संसार, व्यवहार, आधार, विस्तार) · रदीफ: जगै छै · शेर: ६

अंक मात्र कहै छै, पीर बचै छै / न्याय फेर पूछै छी, विचार जगै छै
माप ठीक रहै छै, नोर खसै छै / तथ्य मात्र गिनै छी, अधिकार जगै छै
पात चुप रहै छै, घटना बचै छै / लेख दूर रहै छै, चिन्ह बचै छै
पोथी मौन रहै छै, बात बचै छै / छूटल पात पढ़ै छी, संसार जगै छै
धन दूर रहै छै, मोह घटै छै / हमर दाबी गलै छै, भय घटै छै
हाथ खालि रहै छै, पएर चलै छै / गाँठ फेर खुलै छै, व्यवहार जगै छै
दू रूप रहै छै, भेद बचै छै / एक रंग रहै छै, आन बचै छै
भेद ठीक बुझै छी, बैर घटै छै / मेल फेर बनै छै, आधार जगै छै
आँखि नाच देखै छै, कान सुनै छै / नाक गन्ध धरै छै, मोन जुड़ै छै
जीह रस धरै छै, ताल सुनै छी / एक बेर बुझै छी, विस्तार जगै छै
घर दूर रहै छै, बाट नुकै छै / चिन्ह फेर देखै छी, मोन चलै छै
बाट चिन्ह पढ़ै छी, घर मिलै छै / अनुमान फेर करै छी, आधार जगै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७५७ — संगीतमय रूप

भाव: तथ्य आ मूल्यक भेद · चुप अभिलेखक पार बचल घटना · स्वामित्व-मोह ढील पड़ला पर भयक क्षय · भेद आ बैरक अन्तर · एकहि बेर अनेक इन्द्रिय-बोध · दैनिक व्यवहारमे अनुमानक अनिवार्यता।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। दुनू अर्धांश जीवित उपवाक्य रूपेँ बहए; कहै/बचै, पूछै/जगै, रहै/घटै, देखै/सुनै, पढ़ै/मिलै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियापर हलुक ठहराव; “जगै छै” रदीफ बाहरी तथ्यसँ भीतर उठैत मूल्य-बोध वा विचारक जागरण दे।

मतला: अंक आ माप आवश्यक तथ्य दैत अछि, मुदा पीर आ नोर अपने-आप न्याय नहि बनबैत। तथ्य गिनला पर अधिकारक प्रश्न उठैत, आ विचार जगैत अछि।

२म शेर: पात, लेख वा पोथी चुप रहला मात्रसँ घटना नष्ट नहि होइत। छूटल पात फेर पढ़ला पर चिन्ह जुड़ैत, आ बिसरल संसार फेर जागि सकैत अछि।

३म शेर: धनसँ दूरी बढ़ला पर मोह घटि सकैत अछि; “हमर” दाबी गलला पर भयक आधार ढील पड़ैत अछि। गाँठ खुलला पर व्यवहारक नव अर्थ जगैत अछि।

४म शेर: दू रूप भिन्न रहितो एक-दोसराक शत्रु नहि। भेद बुझला पर बैर घटि सकैत, मेल फेर बनि सकैत, आ सह-अस्तित्वक आधार जगैत अछि।

५म शेर: आँखि नाच देखैत, कान सुनैत, नाक गन्ध धरैत, जीह रस पबैत—एकहि बेर अनुभवक अनेक धार मोनमे जुड़ि सकैत अछि; एहि जुटानसँ अनुभवक विस्तार जगैत अछि।

६म शेर: घर दूर हो आ बाट नुकायल हो तँ चिन्ह पढ़ि दिशा अनुमान कएल जाइत अछि। अनुमान सभ ठाम आवश्यक नहि, मुदा दैनिक चलनमे ओकर आधार बारम्बार जागैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७५८ — नोर-सोर बुझै छी, हाल खुलै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (हाल, जाल, ताल, चाल) · रदीफ: खुलै छै · शेर: ६

आन पीर सुनै छी, मोन पसीजै छै / नोर सोर बुझै छी, हाल खुलै छै
देह बात कहै छै, नोर खसै छै / आन दुख पढ़ै छी, जाल खुलै छै
भूख देह कहै छै, पेट दुखै छै / शब्द दूर रहै छै, देह दुखै छै
अन्न हाथ धरै छी, भूख घटै छै / भूख मूल बुझै छी, हाल खुलै छै
नींदि फेर घिरै छै, काज घटै छै / मोन मौन रहै छै, सोर घटै छै
भोर आँखि खुलै छै, याद जगै छै / काल फेर जुड़ै छै, ताल खुलै छै
बीज बल धरै छै, रूप नुकै छै / जल ताप मिलै छै, हेतु जुड़ै छै
हेतु संग जुटै छै, बीज उगै छै / नव रूप धरै छै, चाल खुलै छै
मोन रूप देखै छै, नाम नुकै छै / रंग रूप मिलै छै, बोध जगै छै
नाम फेर जुड़ै छै, भेद मिलै छै / रूप फेर बुझै छी, जाल खुलै छै
कान बोल सुनै छै, अर्थ जगै छै / मोन चाह धरै छै, पएर चलै छै
बोल भाव बुझै छी, काज चलै छै / बाट फेर धरै छी, चाल खुलै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७५८ — संगीतमय रूप

भाव: आन पीरक बोध · भूखक देहगत यथार्थ · नींदिसँ जागरण आ स्मृति · सामर्थ्य संग सहायक कारण · नामसँ पहिने रूप-बोध · बोलक प्रवृत्ति-जनक अर्थ।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। सुनै/पसीजै, कहै/खसै, घिरै/घटै, धरै/नुकै, देखै/मिलै, बुझै/चलै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ाल काफियापर हलुक ठहराव; “खुलै छै” रदीफ संकेत, देह, स्मृति वा कारणक गाँठ खुलबाक भाव दे।
मतला: आन व्यक्तिक पीर भीतर प्रत्यक्ष नहि होइत, मुदा नोर, सोर, देह आ कथन संकेत दैत अछि। ओहि संकेतकेँ मनसँ पढ़ला पर आन पीरक हाल बुझाइ पड़ैत आ दूरीक जाल ढील पड़ैत अछि।
२म शेर: “भूख” शब्द कहि देब मात्र पर्याप्त नहि; पेटक पीर आ अन्नक भौतिक आवश्यकता अलग यथार्थ अछि। अन्न हाथमे अएलापर भूख घटैत, तखन भाषासँ आगाँ देहक हाल खुलैत अछि।
३म शेर: रातिक नींदिमे काज आ बाहरी सोर घटैत अछि; भोर आँखि खुलला पर याद फेर जागैत अछि। जागरण स्मृतिक संग कालक छुटल कड़ी जोड़ैत, अनुभवक ताल फेर खोलैत अछि।
४म शेर: बीजमे सामर्थ्य रहितो जल, ताप आ आन सहायक कारण बिना नव रूप नुकायल रहि सकैत अछि। हेतु जुटला पर बीज उगैत आ विकासक चाल प्रकट होइत अछि।
५म शेर: रूप पहिने आँखि वा मोनमे आबि सकैत अछि, जखन नाम एखन नहि जुड़ल हो। पाछाँ नाम आ भेद जुड़ला पर ओही रूपक अधिक निश्चित बोध बनैत अछि।
६म शेर: बोल वा आज्ञा सुनला पर केवल ध्वनि नहि, काजक अर्थो जागि सकैत अछि। अर्थ बुझला पर चाह आ प्रवृत्ति उठैत, पएर चलैत, आ काजक चाल खुलैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७५९ — काल पार सोचै छी, भोर देखै छी

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (भोर, डोर, नोर, छोर, कोर) · रदीफ: देखै छी · शेर: ६

वन नीर बचै छै, शिशु हँसै छै / काल पार सोचै छी, भोर देखै छी
आगि वन जलै छै, धूम उठै छै / काल दूर सोचै छी, डोर देखै छी
तर्क बात कहै छै, नोर खसै छै / न्याय फेर तौलै छी, रोष घटै छै
पीर लोक कहै छै, मोन पसीजै छै / तर्क संग सुनै छी, नोर देखै छी
भ्रम फेर बसै छै, गाँठ बढ़ै छै / साँच फेर कहै छी, मोन खुलै छै
साँच फेर सुनै छी, भ्रम घटै छै / गाँठ जखन खुलै छै, छोर देखै छी
स्वप्न रूप उठै छै, रंग बदलै छै / आँखि फेर खुलै छै, जग रहै छै
हाथ स्पर्श धरै छै, नेत्र देखै छै / जग ठोस रहै छै, कोर देखै छी
दूर धूम उठै छै, आगि नुकै छै / नेत्र दूर रुकै छै, बात बचै छै
साँच जन कहै छै, अर्थ मिलै छै / बोल हेतु मिलै छै, डोर देखै छी
आन लोक हटै छै, राति ढलै छै / निज मोन कहै छै, भार रहै छै
दोष जखन जगै छै, मोन कहै छै / निज काज तौलै छी, छोर देखै छी

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७५९ — संगीतमय रूप

भाव: भावी लोकक जल-वन अधिकार · तर्क संग करुणाक न्याय-बोध · पुनरुक्त सत्यसँ भ्रम-संस्कारक क्षय · स्वप्नक पार बाह्य जगक प्रतिरोध · दूर विषयमे अनुमान आ विश्वसनीय बोल · निज मोनक नैतिक साक्ष्य।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। बचै/हँसै, कहै/खसै, बसै/बढ़ै, उठै/बदलै, रुकै/बचै, हटै/ढलै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ोर काफियापर हलुक ठहराव; “देखै छी” रदीफ दूर काल, आन पीर, भ्रमक सीमा, जगक ठोसता आ निज काजक भीतरक कोर देखबाक भाव दे।

मतला: जल आ वन केवल एखनक उपभोगक वस्तु नहि; दूर कालक लोकक जीवन सेहो ओहिसँ जुड़ल अछि। वन-नीर बचला पर शिशुक हँसी आ भावी भोरक डोर एक संग देखाइ पड़ैत अछि।

२म शेर: न्याय केवल तर्कक गणना नहि। लोकक पीर, नोर आ रोष सुनला पर करुणा निर्णयकेँ मानवीय धरातल दैत अछि; तर्कक संग नोर देखब न्याय-बोधक एक आवश्यक आयाम बनैत अछि।

३म शेर: दृढ़ भ्रम एक बेरक कथनसँ सदिखन नहि हटैत। साँच फेर-फेर सुनला आ मनन कएलापर पुरान गाँठ ढील पड़ैत, भ्रम घटैत, आ ओकर छोर देखाइ पड़ैत अछि।

४म शेर: स्वप्न भीतर रंग-रूप उठि बदलि सकैत अछि, मुदा जागरणमे स्पर्श, नेत्र आ जगक ठोस प्रतिरोध अलग कसौटी दैत अछि। एहि प्रतिरोधसँ बाह्य यथार्थक कोर स्पष्ट होइत अछि।

५म शेर: नेत्रक पहुँच दूर ठाम वा अदृष्ट विषय धरि नहि पहुँचैत। ओतय चिन्हसँ अनुमान आ विश्वसनीय जनक बोल ज्ञानक डोर बनि सकैत अछि; प्रत्यक्ष मात्रेँ ज्ञानक सभ बाट नहि।

६म शेर: आन लोक हटि जाए, राति ढलि जाए, बाहरी साक्षी नहि रहए—तैयो निज मोन अपन काजक भार कहि सकैत अछि। दोष जागला पर अपन काज तौलैत नैतिक सीमाक छोर देखाइ पड़ैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७६० — सत्ता फेर जाँचै छी, ध्यान रखै छी

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (ध्यान, मान, स्थान, ज्ञान, गान) · रदीफ: रखै छी · शेर: ६

जोर जखन बढ़ै छै, मान घटै छै / सत्ता फेर जाँचै छी, ध्यान रखै छी
दाबी जखन उठै छै, प्रश्न जगै छै / साँच फेर तौलै छी, मान रखै छी
रीत जखन बँधै छै, बाट घटै छै / लोक जखन सोचै छै, राह बनै छै
सीमा फेर देखै छी, चाल बदलै छै / बाट फेर चुनै छी, स्थान रखै छी
काज जखन करै छी, मोन सुधरै छै / ज्ञान जखन नुकै छै, बोध रुकै छै
मोन जखन सुधरै छै, प्रश्न खुलै छै / बोध फेर जगै छै, ज्ञान रखै छी
पीर जखन बढ़ै छै, सुख घटै छै / सुख फेर खोजै छी, पीर बचै छै
मूल जखन हटै छै, मोह घटै छै / मोन फेर गाबै छै, गान रखै छी
धूम जखन देखै छी, आगि बुझै छी / मेल जखन छुटै छै, बोध रुकै छै
धूम हेतु धरै छी, मेल जगै छै / चिन्ह संग जोड़ै छी, ध्यान रखै छी
दाना जखन गिनै छी, एक दिसै छै / दाना फेर गिनै छी, दू दिसै छै
एक दू गिनै छी, भेद खुलै छै / अंक फेर गिनै छी, मान रखै छी

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७६० — संगीतमय रूप

भाव: सत्ताक वैधता · संरचना आ कर्तृत्व · काजसँ मोनक तैयारी आ ज्ञानक निर्णायक भूमिका · पीरक मूल निवृत्ति · चिन्ह–सम्बन्धक परामर्श · अपेक्षा-बुद्धिसँ संख्या-बोध।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम।
बढ़ै/घटै, बँधै/बनै, करै/सुधरै, हटै/घटै, देखै/बुझै, गिनै/बनै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ान काफियापर हलुक ठहराव; “रखै छी” रदीफ मान, ध्यान, ज्ञान आ मापकेँ सजग राखबाक भाव दे।
मतला: जोर वा सत्ता अपने-आप मानक प्रमाण नहि। दाबी उठला पर प्रश्न जागैत अछि; साँच तौलैत सत्ता केँ वैधताक कसौटीपर राखब आ मनुष्यक मान पर ध्यान राखब एहि शेरक केन्द्र अछि।
२म शेर: रीत आ संरचना बाट छोट कऽ सकैत अछि, मुदा बाट समाप्त नहि होइत। सीमा देखलापर चाल बदलि, नव बाट चुनि, कर्तृत्व लेल स्थान बचेनाइ सम्भव अछि।
३म शेर: काज आ अनुशासन मोनकेँ सुधरबाक भूमि दे सकैत अछि, मुदा ज्ञान नुकायल रहला पर मूल बोध रुकि सकैत अछि। मोन तैयार भेलापर प्रश्न खुलैत आ निर्णायक ज्ञान जागैत अछि।
४म शेर: केवल सुखक पाछाँ दौड़ब पीरक मूल नहि हटबैत। मूल कारण हटला पर पीर घटैत अछि; मुक्ति केँ एहि दुःखनिवृत्तिक दिशासँ बुझाओल गेल अछि, आ मोह घटला पर मोन फेर गाबय लगैत अछि।
५म शेर: धूम देखब मात्र पर्याप्त नहि; धूम–आगिक ज्ञात मेल मोनमे सक्रिय होएब चाही। चिन्ह केँ सम्बन्धक संग जोड़ला पर अनुमितिक बाट खुलैत अछि; एहि जोड़पर ध्यान राखल गेल अछि।
६म शेर: दाना अपन ठाम रहैत अछि, मुदा बुद्धि ओकरा एक, दू वा अनेक रूपेँ गनैत अछि। अपेक्षा आ तुलना जुड़ला पर संख्या-बोध बनैत, भेद खुलैत, आ अंकक मान स्पष्ट होइत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७६१ — ज्ञान जखन बदलै छै, उपाय मिलै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाय (उपाय, न्याय, पर्याय, सहाय, अध्याय, अभिप्राय) · रदीफ: मिलै छै · शेर: ६

ज्ञान जखन बदलै छै, भूल खुलै छै / साँच फेर जाँचै छी, उपाय मिलै छै
मत जखन जमै छै, प्रश्न उठै छै / भूल फेर मानै छी, न्याय मिलै छै
मत भिन्न रहै छै, बात बढ़ै छै / आन तर्क सुनै छी, रोष घटै छै
वाद जखन उठै छै, मोन खुलै छै / आन मत तौलै छी, पर्याय मिलै छै
बोध जखन जगै छै, काज चलै छै / साँच भीतर खुलै छै, जग चलै छै
जग जखन चलै छै, बोध रहै छै / बोध संग चलै छी, सहाय मिलै छै
सुख जखन आबै छै, पीर घटै छै / पीर जखन आबै छै, सुख घटै छै
दुनू फेर जाइ छै, काल चलै छै / क्षण फेर देखै छी, अध्याय मिलै छै
पद जखन जुड़ै छै, अर्थ रुकै छै / मेल जखन छुटै छै, भाव रुकै छै
भाव जखन जुड़ै छै, प्रसंग खुलै छै / पद फेर तौलै छी, अभिप्राय मिलै छै
शब्द जखन चुकै छै, रस सूखै छै / लोक जखन छुटै छै, भाव घटै छै
ठाम जखन मिलै छै, बोल सजै छै / शब्द ठाम तौलै छी, न्याय मिलै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७६१ — संगीतमय रूप

भाव: संशोध्य ज्ञान · असहमतिक बौद्धिक मूल्य · आत्मबोध आ नित्य व्यवहारक सह-अस्तित्व · सुख-दुःखक आगमन-गमन · वाक्यार्थक शर्तसभ · विषय–भाषा–श्रोताक औचित्य।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। बदलै/खुलै, जमै/उठै, रहै/बढ़ै, जगै/चलै, आबै/घटै, जुड़ै/रुकै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ाय काफियापर हलुक ठहराव; “मिलै छै” रदीफ जाँच, संवाद, प्रसंग आ औचित्यक बाद प्राप्त होइत अर्थक भाव दे।
मतला: ज्ञान बदलि सकैत अछि; भूल खुलला पर फेर जाँच करब ज्ञानक दुर्बलता नहि, ओकर अनुशासन थिक। अपन भूल मानला पर न्यायपूर्ण उपाय भेटबाक बाट खुलैत अछि।
२म शेर: मत भिन्न भेलासँ बात समाप्त नहि होइत; आन तर्क सुनला पर रोष घटि सकैत अछि। वाद मोन खोलए तँ एकमात्र बाटक बदला आन पर्याय भेटैत अछि।
३म शेर: गहिर बोध भेलापर नित्य जगत् आ काज सर्वथा लुप्त नहि होइत। भीतर साँच खुलितो व्यवहार चलैत रहैत अछि; बोध संग चलला पर काज लेल सहाय भेटैत अछि।
४म शेर: सुख आ पीर दुनू आगमन-गमनशील अनुभव अछि। एक क्षणक अनुभूति केँ नित्य सत्य मानबाक बदला कालक बहाव देखला पर जीवनक नव अध्याय बुझाइ पड़ैत अछि।
५म शेर: पद मात्र जुड़लासँ वाक्यार्थ पूर्ण नहि होइत। आकाङ्क्षा, योग्यता, निकटता आ तात्पर्यक मेल रहला पर प्रसंग खुलैत अछि आ अभिप्राय भेटैत अछि।
६म शेर: विषय, भाषा आ श्रोता—तीनूक संगति टूटला पर रस सूखि सकैत अछि। शब्दकेँ ठाम, लोक आ भावक अनुरूप तौलला पर औचित्य आ न्याय भेटैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७६२ — दाबी फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (विश्वास, आस, उल्लास, प्यास) · रदीफ: बचै छै · शेर: ६

गौरव जखन बढ़ै छै, मोह बढ़ै छै / दाबी फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै
मान जखन राखै छी, साँच कहै छी / प्रमाण फेर तौलै छी, आस बचै छै
धन जखन बढ़ै छै, बेर घटै छै / काज जखन घटै छै, नेह बढ़ै छै
बेर जखन भेटै छै, खेल बढ़ै छै / नेह जखन जगै छै, उल्लास बचै छै
तट जखन सरकै छै, नाव डोलै छै / फेन जखन उठै छै, नीर डोलै छै
बीच जखन टिकै छी, श्वास सम्हरै छै / भय जखन घटै छै, विश्वास बचै छै
बीज जखन रोपै छी, ऋतु तकै छी / मेह जखन पड़ै छै, खेत फलै छै
नियम जखन टिकै छै, काज फलै छै / कारण फेर जाँचै छी, आस बचै छै
साँच जखन मिलै छै, काज फलै छै / भ्रम जखन बसै छै, बाट चुकै छै
फल जखन भेटै छै, बोध पकै छै / काज फेर जाँचै छी, विश्वास बचै छै
दाबी जखन सुनै छी, अर्थ तौलै छी / एक जखन टूटै छै, आन टिकै छै
विकल्प फेर जाँचै छी, दोष खुलै छै / प्रश्न फेर उठै छै, प्यास बचै छै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७६२ — संगीतमय रूप

भाव: प्रमाणसँ परखल गौरव · वस्तुक बदला स्वायत्त बेर, खेल आ नेह · चञ्चल तटसँ स्थिर मध्यक खोज · कारण-नियमक भरोस · सफल प्रवृत्तिसँ बोध-जाँच · विकल्प-दर-विकल्प परीक्षण।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। बढ़ै/जाँचै, घटै/बढ़ै, सरकै/डोलै, रोपै/तकै, मिलै/फलै, सुनै/तौलै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ास काफियापर हलुक ठहराव; “बचै छै” रदीफ जाँचक बाद बचल भरोस, आशा, उल्लास आ प्रश्न-प्यासक भाव दे।
मतला: अपन गौरवक मूल्य अछि, मुदा प्रमाणक कसौटीसँ मुक्त नहि। दाबी फेर जाँचला पर मिथ्या मोह घटि सकैत अछि आ साँचपर टिकायल विश्वास बचैत अछि।
२म शेर: धन बढ़लासँ जीवनक स्वायत्त बेर अपने-आप नहि बढ़ैत। काजक बोझ घटि खेल, सृजन आ नेह लेल बेर भेटए तँ मानवीय उल्लास बचैत अछि।
३म शेर: सरकैत तट, फेन आ डोलैत नावक बीच स्थिर मध्य खोजब धीरताक बिम्ब अछि। बीच टिकला पर श्वास सम्हरैत अछि आ भय घटला पर विश्वास बचैत अछि।
४म शेर: बीज रोपब, ऋतु तकब आ मेहक बाट तकब कारण-क्रमपर भरोसक व्यवहारिक रूप अछि। नियम टिकला पर खेत फलैत अछि; कारण फेर जाँचल जाए तँ भविष्यक आस बचैत अछि।
५म शेर: नव बोधक प्रामाण्य केवल जन्मते निश्चित मानल नहि जाए। साँच बोध सफल काज दिस लऽ जाए आ भ्रम बाट चुकाए—फल भेटला पर बोध पकैत अछि, तखन विश्वास बचैत अछि।
६म शेर: दाबीक सम्भावित अर्थसभ कँ एक-एक कऽ तौलल जाए। एक विकल्प टूटला पर आन बचि सकैत अछि; दोष खुलितो प्रश्नक प्यास बचल रहए, से तर्कक जीवित अनुशासन अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७६३ — मत जखन सुनै छी, प्रभाव बुझै छी

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –भाव (भाव, सद्भाव, प्रभाव, स्वभाव, अभाव) · रदीफ: बुझै छी · शेर: ६

मत जखन सुनै छी, प्रभाव बुझै छी / हक जखन मानै छी, सद्भाव बुझै छी

भेद जखन देखै छी, प्रभाव बुझै छी / नेह जखन राखै छी, सद्भाव बुझै छी

सेवा जखन दैत छी, देह थकै छै / नेह जखन कहै छी, श्रम नुकै छै

बेर जखन गनै छी, भार खुलै छै / सेवा जखन तौलै छी, प्रभाव बुझै छी

बोल जखन सुनै छी, काज चलै छै / साँच जखन सुनै छी, बोध जगै छै

वाक्य जखन पढ़ै छी, बोध जगै छै / साँच जखन जानै छी, भाव बुझै छी

रंग जखन देखै छी, गन्ध मिलै छै / रस जखन चखै छी, रूप बनै छै

गुण जखन जोड़ै छी, योग बनै छै / देह जखन देखै छी, स्वभाव बुझै छी

ठाम जखन देखै छी, रिक्त दिसै छै / दीप जखन जरै छै, ठाम खुलै छै

घट जखन खोजै छी, आँखि टिकै छै / रिक्त जखन देखै छी, अभाव बुझै छी

काज जखन करै छी, चिन्ह रहै छै / काल जखन बीतै छै, हेतु टिकै छै

फल जखन नुकै छै, डोर रहै छै / कर्म जखन तौलै छी, प्रभाव बुझै छी

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७६३ — संगीतमय रूप

भाव: मतभेदक बीच समान अधिकार आ सद्भाव · प्रेमक नाममे नुकायल सेवा-श्रम · आदेशक संग सिद्ध साँच जनबैत वाक्यक फल · गुण-जोड़ आ समग्र देहक भेद · योग्य ठाममे अभावक सोझ बोध · काल-पार नैतिक कारणक प्रभाव।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। सुनै/बुझै, दैत/थकै, पढ़ै/जगै, जोड़ै/बनै, देखै/दिसै, करै/रहै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –भाव काफियापर हलुक ठहराव; “बुझै छी” रदीफ बाहरी रूपक पाछाँ अर्थ, सम्बन्ध आ कारण बुझबाक अन्तर्मुखी लय दे।
मतला: आन मत सुनब अपन मत छोड़ब नहि, मुदा ओकर सामाजिक आ बौद्धिक प्रभाव बुझबाक बाट खोलैत अछि। समान हक मानला पर मतभेद रहितो सद्भाव सम्भव रहैत अछि।
२म शेर: सेवा-सँभार देह आ बेर दुनू खर्च करैत अछि। ओकरा केवल नेह कहि देला पर श्रम नुकि सकैत अछि; बेर आ भार गनला पर एहि सेवा-श्रमक सामाजिक प्रभाव खुलैत अछि।
३म शेर: भाषा केवल आदेश दऽ काज चलबैत अछि एतबे नहि। सिद्ध साँच जनबैत वाक्य सेहो बोध जगबैत अछि; वाक्य पढ़ि सत्य जानला पर ओकर भाव बुझाइत अछि।
४म शेर: रंग, गन्ध आ रस जकाँ गुणसभ जुड़ैत अछि, मुदा गुणक योग मात्रे समग्र देहक अर्थ नहि। देहकेँ समग्र रूपेँ देखला पर ओकर स्वभावक पृथक् बोध होइत अछि।
५म शेर: योग्य ठाम स्पष्ट रहए आ अपेक्षित घट नहि भेटए तँ रिक्तता सोझ बोधगम्य भऽ सकैत अछि। आँखि ठामपर टिकला पर अभावक बोध लेल सभ बेर पृथक् अनुमान आवश्यक नहि।
६म शेर: काजक फल तुरत नहि दिसितो कारणक डोर शून्य नहि भऽ जाइत। काल बीतलापर सेहो काजक चिन्ह आ नैतिक भार रहि सकैत अछि; कर्म तौलला पर ओकर प्रभाव बुझाइत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७६४ — काल जखन मुड़ै छै, ढंग परखै छी

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (ढंग, संग, प्रसंग, रंग, अंग) · रदीफ: परखै छी · शेर: ६

बाट जखन चुनै छी, भार धरै छी / काल जखन मुड़ै छै, ढंग परखै छी

सीमा जखन घेरै छै, चाह बचै छै / राह जखन चुनै छी, संग परखै छी

बाट जखन बनै छै, चाल बढ़ै छै / देह जखन चलै छै, हक खुलै छै

रोध जखन हटै छै, देह चलै छै / लोक जखन बदलै छै, प्रसंग परखै छी

पाठ जखन मिलै छै, अर्थ बढ़ै छै / बोल जखन जुड़ै छै, भाव खुलै छै

एक जखन कहै छै, आन जुड़ै छै / अर्थ जखन बनै छै, रंग परखै छी

दीप जखन बुझै छै, धूम उठै छै / नाश जखन कहै छी, भेद खुलै छै

वस्तु जखन जाइ छै, प्रश्न रहै छै / नाश जखन बुझै छी, संग परखै छी

घेर जखन बढ़ै छै, आन घुसै छै / घेर जखन घटै छै, सार छुटै छै

लक्षण जखन गढ़ै छी, सीमा धरै छी / दोष जखन खुलै छै, ढंग परखै छी

ज्ञान जखन जगै छै, मोन बुझै छै / बोध जखन बनै छै, ज्ञान खुलै छै

बोध जखन उठै छै, प्रश्न खुलै छै / ज्ञान फेर देखै छी, अंग परखै छी

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७६४ — संगीतमय रूप

भाव: चुनाव आ जिम्मेवारी · सुगम परिवेश आ देहगत क्षमता · भिन्न पाठक समन्वयसँ अर्थ · वस्तु आ विनाशक भेद · लक्षणक उचित सीमा · ज्ञानक मानसिक पुनर्बोध।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। चुनै/धरै, बनै/बढ़ै, मिलै/खुलै, बुझै/उठै, गढ़ै/धरै, जगै/बुझै जकाँ क्रिया-लय बदलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ंग काफियापर हलुक ठहराव; “परखै छी” रदीफ निर्णयक पहिने सम्बन्ध, प्रसंग आ रूप फेर जाँचबाक लय दे।
मतला: बाट चुनब केवल इच्छा नहि; चुनल डेगक भार सेहो अपन माथ पर अबैत अछि। सीमा रहितो राह चुनल जाइत अछि, आ परिस्थितिक संग परखलापर जिम्मेवारीक ढंग स्पष्ट होइत अछि।
२म शेर: देहक क्षमता केवल देहक भीतर बन्द नहि। बाट, प्रवेश, सहायक साधन आ परिवेश सुगम भेलापर चाल बढ़ैत अछि; रोध हटला पर देह नहि, समग्र प्रसंग फेर परखबाक आवश्यकता बुझाइत अछि।
३म शेर: भिन्न वाक्य वा पाठ परस्पर काटय आवश्यक नहि। एकक बात आनक संग जुड़ला पर तात्पर्यक नव रंग खुलि सकैत अछि; अर्थ समन्वयमे बनैत अछि।
४म शेर: दीप बुझब आ दीपक विनाश एक्के प्रश्न नहि। नाशक कथनमे वस्तु, अवस्था आ परिवर्तनक सम्बन्ध पृथक् कऽ परखला पर भेद स्पष्ट होइत अछि।
५म शेर: लक्षण बहुत फैलल तँ असम्बद्ध वस्तु घुसैत अछि; बहुत संकुचित भेल तँ उचित उदाहरण छुटैत अछि। घेरक सीमा साधि अतिव्याप्ति आ अव्याप्ति दुनू दोषक ढंग परखल जाए।
६म शेर: पहिल बोधक बाद मोन ओहि बोधकेँ फेर ग्रहण करि सकैत अछि—“हम जानैत छी” एहि मानसिक पुनर्बोधक रूप अछि। ज्ञानक ज्ञान बुझबाक लेल ओकर अंग आ क्रिया पृथक् परखल जाए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वयं सुन्दर वाक्य/उपवाक्य हो; पहिल भाग शब्द-माला नहि बनए।

गजल ७६५ — माप जखन लगै, ज्ञान मोनमे उतरैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (ज्ञान, ध्यान, मान, गान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: मोनमे उतरैत अछि · शेर: ६

स्रोत जखन मिलै छै, बोध बढ़ै छै / माप जखन लगै, ज्ञान मोनमे उतरैत अछि
साँच जखन तौलै छी, दोष घटै छै / कसौटि जखन लगै, ध्यान मोनमे उतरैत अछि
चित्र जखन बनै छै, रूढ़ि बढ़ै छै / नाम जखन जुड़ै छै, भेद बढ़ै छै
जाँच जखन चलै छै, दोष खुलै छै / रूढ़ि जखन गलै, मान मोनमे उतरैत अछि
काज जखन चलै छै, मोन सुधरै छै / ज्ञान जखन नुकै छै, बोध रुकै छै
बोध जखन जगै छै, मोह घटै छै / ज्ञान जखन जगै, गान मोनमे उतरैत अछि
स्वप्न जखन चलै छै, रूप बदलै छै / नींद जखन टूटै छै, जग अड़ै छै
काज जखन फलै छै, भेद खुलै छै / जग जखन अड़ै, अनुमान मोनमे उतरैत अछि
धूम जखन उठै छै, आगि नुकै छै / मेल जखन सम्झै छी, हेतु जुड़ै छै
चिन्ह जखन मिलै छै, बोध बढ़ै छै / हेतु जखन जुड़ै, विधान मोनमे उतरैत अछि
रूप जखन फेरै छै, मूल नुकै छै / क्रम जखन बचै छै, प्रश्न उठै छै
मूल जखन खोजै छी, क्रम खुलै छै / कारण जखन मिलै, निदान मोनमे उतरैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७६५ — संगीतमय रूप

भाव: अनेक प्रमाणक तुलनात्मक कसौटी · यान्त्रिक रूढ़िक जाँच · काजसँ मोनक तैयारी आ ज्ञानक निर्णायकता · स्वप्न-जागरणक व्यवहारिक भेद · चिन्ह-सम्बन्धक परामर्श · अकस्मात् परिवर्तनमे कारण-क्रमक खोज।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ान काफियापर हलुक ठहराव; “मोनमे उतरैत अछि” रदीफ बाहरी तथ्यक भीतरक बोध बनबाक धीमी गति दे।

मतला: ज्ञान एकहि स्रोतक आज्ञा नहि। अनेक स्रोत जुटैत अछि, मुदा ओकर भार एक्के नहि; कसौटि लागलापर प्रमाणक रीत भीतर उतरैत अछि।

२म शेर: यन्त्र वा चित्र पुरान सामाजिक रूढ़ि फेर मजबूत कऽ सकैत अछि। नाम, भूमिका आ भेद जाँचला पर दोष खुलैत अछि; रूढ़ि गलला पर मानवीय मान भीतर बसैत अछि।

३म शेर: काज आ अनुशासन मोन तैयार कऽ सकैत अछि, मुदा अन्तिम बोध केवल काजक फल नहि। मोन सुधरलापर ज्ञान जगैत अछि आ मोह घटैत अछि।

४म शेर: स्वप्नमे रूप सहज फेरि सकैत अछि; जागरणमे जग प्रतिरोध करैत अछि। सफल काज, क्रम आ बाहरी अड़चन स्वप्न-जकाँ अनुभव आ जाग्रत जगक भेद खोलैत अछि।

५म शेर: धूम देखब मात्र पर्याप्त नहि; धूम–आगिक अविनाभाव-सम्बन्ध स्मरण कऽ चिन्हकेँ पक्षसँ जोड़लापर अनुमिति जन्मैत अछि। एहि जोड़बाक मानसिक क्रिया परामर्शक काव्य-बिम्ब अछि।

६म शेर: “अकस्मात्” कहि कारण-प्रश्न बन्द नहि होइत। रूप फेरलापर पूर्व–उत्तर क्रम, मूल आ कारण खोजल जाए; कारण भेटला पर परिवर्तनक निदान भीतर उतरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। रदीफ लंबा आ मृदु अछि, तेँ काफियाक बाद हड़बड़ी नहि; “मोनमे उतरैत अछि” केँ एकसार नहि, भावानुसार सूक्ष्म उतार-चढ़ावसँ गाओल जाए।

गजल ७६६ — मान जखन बचै, आस रूप धरैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (विश्वास, आस, त्रास, उल्लास, प्यास) · रदीफ: रूप धरैत अछि · शेर: ६

बल जखन बढ़ै छै, मान बचै छै / नेह जखन जगै, विश्वास रूप धरैत अछि
रूप जखन गढ़ै छी, बैर घटै छै / मान जखन बचै, आस रूप धरैत अछि
राति जखन घेरै छै, पथ रुकै छै / दीप जखन जलै छै, चाल बढ़ै छै
पथ जखन खुलै छै, पएर बढ़ै छै / ठाम जखन सजै, आस रूप धरैत अछि
याद जखन चढ़ै छै, रूप बदलै छै / छाह जखन पड़ै छै, भेद नुकै छै
भेद जखन नुकै छै, मोह बढ़ै छै / मोन जखन डरै, त्रास रूप धरैत अछि
काल जखन सरकै छै, रूप बदलै छै / मीत जखन भेटै छी, याद जगै छै
याद जखन जुड़ै छै, तार बचै छै / मीत फेर मिलै, विश्वास रूप धरैत अछि
भात जखन खाइ छी, नाच देखै छी / गीत जखन सुनै छी, गन्ध सूँघै छी
बोध जखन जुटै छै, रूप खुलै छै / रस जखन मिलै, उल्लास रूप धरैत अछि
चाह जखन जागै छै, पएर चलै छै / विरति जखन जागै छै, हाथ हटै छै
कारण जखन धरै छी, भेद खुलै छै / चाह जखन जगै, प्यास रूप धरैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७६६ — संगीतमय रूप

भाव: शक्ति बढ़ैतहुँ आनक मानक रक्षा · भौतिक नगर-रचनासँ वास्तविक चलन-स्वतंत्रता · स्मृति-छाहक अध्यास · काल-पार स्मृति–प्रत्यभिज्ञाक तार · एकहि बेर अनेक इन्द्रिय-बोध · इच्छा आ विरतिक सकारात्मक कारणता।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ास काफियापर हलुक ठहराव; रदीफमे “रूप” पर कोमल उठान आ “धरैत अछि” पर धीमा अवसान।
मतला: शक्ति वा आत्म-विकास दोसरक गरिमा नष्ट करबाक नाम नहि। बल बढ़ितहुँ मान बचल रहए आ नेह जुड़ए, तखन विश्वास आ आस जीवित रूप लैत अछि।
२म शेर: स्वतंत्रता केवल कागजक अधिकार नहि; रातिक प्रकाश, पथ, पएर चलबाक सुविधा आ सुरक्षित ठाम वास्तविक विकल्प बढ़बैत अछि। परिवेश सजला पर आस रूप लैत अछि।
३म शेर: पुरान यादक छाह आन रूपपर चढ़ि सकैत अछि; भेद नुकला पर अध्यास आ मोह बढ़ैत अछि। भ्रमक भीतर त्रास कोना आकार लैत अछि, शेर ओहि क्षणकेँ पकड़ैत अछि।
४म शेर: काल सरकैत अछि आ रूप बदलैत अछि, मुदा मीत फेर भेटला पर याद जुड़ैत अछि। स्मृति–प्रत्यभिज्ञाक तार व्यक्तिक निरन्तरतामे विश्वासक रूप देत अछि।
५म शेर: खाइत, देखैत, सुनैत आ गन्ध ग्रहण करैत एकहि बेर अनेक बोध जुटि सकैत अछि। अनुभवक अनेक धार मिलला पर उल्लासक रूप उभरैत अछि।
६म शेर: चाह प्राप्ति दिस पएर चलबैत अछि; विरति त्याग दिस हाथ हटबैत अछि। केवल विपरीत गुणक अभाव नहि, इच्छा आ विरति अपन सकारात्मक कारण-बल राखैत अछि; चाह प्यासक रूप लैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। रदीफ “रूप धरैत अछि” केँ सभ बेर एक्के स्वरमे नहि गाउ; विश्वास, आस, त्रास, उल्लास आ प्यास अनुसार ओकर भाव-रंग फेरू।

गजल ७६७ — घाव जखन दुखै, उपचार द्वार खोलैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (उपचार, सत्कार, अधिकार, विचार, आधार, व्यवहार) · रदीफ: द्वार खोलैत अछि · शेर: ६

पीर जखन उठै छै, मोन सुनै छै / घाव जखन दुखै, उपचार द्वार खोलैत अछि
नोर जखन झरै छै, बोल रुकै छै / मौन जखन बसै, सत्कार द्वार खोलैत अछि
भेद जखन खुलै छै, मान घटै छै / बात जखन फैलै छै, घाव बढ़ै छै
रेख जखन बचै छै, नेह बढ़ै छै / मान जखन बचै, अधिकार द्वार खोलैत अछि
दीप जखन जलै छै, रूप दिखै छै / ज्ञान जखन जगै छै, मोन खुलै छै
बोध जखन चमकै छै, मोह घटै छै / मोन जखन जगै, विचार द्वार खोलैत अछि
स्वप्न जखन टूटै छै, जग रहै छै / द्वार जखन रोकै छै, पएर रुकै छै
जग जखन रोकै छै, मान बदलै छै / रूप जखन टिकै, आधार द्वार खोलैत अछि
धूम जखन उठै छै, मूल नुकै छै / चिन्ह जखन मिलै छै, बोध बढ़ै छै
चिन्ह जखन जुड़ै छै, बात खुलै छै / चिन्ह जखन धरै, विचार द्वार खोलैत अछि
बोल जखन सजै छै, अर्थ मिलै छै / लोक जखन सुनै छै, मान बढ़ै छै
ठाम जखन बदलै छै, बोल बदलै छै / अर्थ जखन मिलै, व्यवहार द्वार खोलैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७६७ — संगीतमय रूप

भाव: पीरक सोझाँ पहिने सुननाइ · निज बातक सीमा आ सूचनात्मक गरिमा · भीतर चमकैत बोध · स्वप्नक विपरीत बाह्य जगक प्रतिरोध · चिन्ह–सम्बन्ध सँ अनुमान · विषय–ठाम–श्रोताक अनुकूल बोल।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा। यति १६+१६ पर स्पष्ट विराम।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकल सारंगी, बाँसुरीक विरल उत्तर आ बहुत मृदु पखावज।

काफिया –ार पर सूक्ष्म ठहराव; “द्वार” पर स्वर उठए, “खोलैत अछि” पर धीरे खुलैत अवसान।

मतला: पीर उठला पर तत्क्षण अर्थ थोपब आवश्यक नहि; पहिने सुनब, मौनक मान राखब आ घावक सोझाँ उपस्थित रहब उपचारक बाट खोलैत अछि। नोरक बीच सम्मान बचल रहए त संवादक द्वार खुलैत अछि।

२म शेर: निजी बात एक ठाम कहल गेल तकर अर्थ ई नहि जे ओ सभ ठाम फैलाओल जाए। भेद उघड़ला पर मान आ नेह घायल भऽ सकैत अछि; सीमा बचेनाइ अधिकारक द्वार खोलैत अछि।

३म शेर: दीप आन वस्तु प्रकाशित करैत अछि; काव्य-बिम्बमे ज्ञान अपन प्रकाशसँ भीतरक मोह घटबैत अछि। मोन जागला पर विचारक द्वार बाहरी प्रमाण नहियो रहए तऽ भीतरसँ खुलि सकैत अछि।

४म शेर: स्वप्न टूटला पर जग अपन प्रतिरोध सहित रहैत अछि। द्वार पएर रोकैत अछि, वस्तु अपन सीमा दैत अछि; ई बाह्य जगक स्वतंत्रताक काव्य-संकेत अछि।

५म शेर: धूम देखल भरिसँ निष्कर्ष नहि; चिन्हक उचित सम्बन्ध स्मरण/बोधमे जुड़ला पर अनुमान जन्म लैत अछि। एहि परामर्श-सदृश क्षणमे विचारक द्वार खुलैत अछि।

६म शेर: बोलक औचित्य केवल शब्दक शुद्धतामे नहि; ठाम, विषय, अर्थ आ सुननिहारक संगति सेहो चाही। ई संगति बनला पर व्यवहारक द्वार खुलैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। रदीफ “द्वार खोलैत अछि” कैँ यांत्रिक पुनरावृत्ति नहि बनाउ—उपचार, सत्कार, अधिकार, विचार, आधार आ व्यवहार अनुसार स्वरक भाव-रंग बदलू।

गजल ७६८ — साँच फेर खुलै, नोर सँ जुड़ैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर) · रदीफ: सँ जुड़ैत अछि · शेर: ६

घाव फेर दुखै छै, याद जगै छै / साँच फेर खुलै, नोर सँ जुड़ैत अछि
दोष जखन घटै छै, नेह बढ़ै छै / मोन फेर बोलै, सोर सँ जुड़ैत अछि
नाम जखन बदलै छै, रूप बचै छै / ठाम जखन बदलै छै, मान बदलै छै
लोक जखन सुनै छै, मान बढ़ै छै / मोन फेर चुनै, डोर सँ जुड़ैत अछि
नींदि जखन घिरै छै, काज रुकै छै / राति जखन ढलै छै, याद नुकै छै
आँखि जखन खुलै छै, याद जगै छै / मोन फेर जगै, भोर सँ जुड़ैत अछि
चाह जखन जगै छै, पएर चलै छै / हाथ जखन बढ़ै छै, काज बनै छै
फल जखन मिलै छै, मोन बुझै छै / काज फेर बढ़ै, जोर सँ जुड़ैत अछि
दूर जखन रहै छै, नेत्र रुकै छै / धूम जखन उठै छै, आगि नुकै छै
साँच जखन सुनै छै, मोन बुझै छै / ज्ञान फेर बढ़ै, छोर सँ जुड़ैत अछि
दाबी जखन सुनै छै, अर्थ तौलै छै / एक जखन टूटै छै, आन टिकै छै
दोष जखन खुलै छै, प्रश्न बचै छै / तर्क फेर बढ़ै, कोर सँ जुड़ैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७६८ — संगीतमय रूप

भाव: क्षमा आ स्मृतिक संग जिम्मेवारी · अनेक पहिचानक बीच अपन चुनाव · गहन नींदि-पाछाँ स्मृति-जागरण · चाह–प्रयत्न–काज–फल · दूर/अदृष्ट ज्ञानमे अनुमान आ विश्वसनीय बोल · विकल्पसभक क्रमिक परीक्षण।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। रदीफ "सँ जुड़ैत अछि" केँ "सँ" पर सूक्ष्म सेतु-जकाँ ठहराव आ "जुड़ैत अछि" पर बहैत अवसान देल जाए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल बाँसुरी आ मृदु तबला। काफिया –ोर पर हलुक ठहराव; रदीफमे स्वर नीचे खसि फेर धीरे जुड़ए, जाहिसँ सम्बन्धक भाव सुनाइ पड़ए।

मतला: क्षमा विसरब नहि। पुरान घावक साँच खुलला पर नोर उठि सकैत अछि; दोष घटला पर नेह फेर बोलि सकैत अछि। स्मृति आ प्रीत दूनू जिम्मेवारीक संग चलए।

२म शेर: एक व्यक्ति एक्के नाम वा भूमिका नहि। ठाम बदलला पर सामाजिक मान बदलि सकैत अछि, मुदा अपन चुनावक सोर लोक, संसाधन आ सम्बन्धक डोरसँ जुड़ल रहैत अछि।

३म शेर: गहन नींदिमे काज आ सोर थमैत अछि; भोर आँखि खुलला पर याद फेर जागैत अछि। क्रिया-निवृत्ति आ स्मृति-पुनरुत्थानक बीच निरन्तरताक सूक्ष्म संकेत राखल गेल अछि।

४म शेर: चाह जगला पर पएर चलैत अछि, हाथ बढ़ैत अछि, काज बनैत अछि आ फल भेटैत अछि। ज्ञान–इच्छा–प्रयत्न–क्रियाक डोर सफल व्यवहारमे अपन बल देखबैत अछि।

५म शेर: नेत्रक पहुँच दूर ठामपर रुकि सकैत अछि; धूम दिसैत अछि मुदा आगि नुकायल रहैत अछि। हेतु आ विश्वसनीय बोल प्रत्यक्षक छोरक पाछाँ ज्ञान बढ़बैत अछि।

६म शेर: दाबी सुनि एक्के अर्थ पकड़ि नहि बैसू। एक विकल्प टूटला पर आन सम्भावना जाँचू; दोष खुललाक बादो प्रश्न बचैत अछि, आ क्रमिक परीक्षण तर्कक कोर धरि पहुँचबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। रदीफ "सँ जुड़ैत अछि" केँ यांत्रिक दोहराव नहि बनाउ—नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर आ कोर अनुसार स्वरक सम्बन्ध-भाव बदलू।

गजल ७६९ — मोन फेर जागै, प्रीत संग चलैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (प्रीत, रीत, मीत, गीत, जीत) · रदीफ: संग चलैत अछि · शेर: ६

पीर जखन सुनै छै, मोन पसीजै छै / मोन फेर जागै, प्रीत संग चलैत अछि
तर्क जखन बढ़ै छै, भाव बचै छै / बोध फेर जागै, रीत संग चलैत अछि
याद ढेर रहै छै, सार नुकै छै / खोज जखन चुकै छै, बोध रुकै छै
मोन जखन चुनै छै, भूल घटै छै / याद फेर जागै, मीत संग चलैत अछि
बोध फेर जगै छै, देह चलै छै / ज्ञान जखन बढ़ै छै, काज चलै छै
घर फेर बसै छै, लोक चलै छै / मोन फेर गाबै, गीत संग चलैत अछि
पीर जखन घटै छै, श्वास खुलै छै / देह फेर उठै छै, बाट खुलै छै
दाह जखन घटै छै, नेह बढ़ै छै / मोन फेर हँसै, प्रीत संग चलैत अछि
रोध जखन रहै छै, काज रुकै छै / हेतु जखन रहै छै, फल नुकै छै
रोध जखन हटै छै, बाट खुलै छै / काज फेर बढ़ै, जीत संग चलैत अछि
घर दूर रहै छै, बाट नुकै छै / चिन्ह जखन मिलै छै, मोन बुझै छै
मोन जखन सोचै छै, पएर चलै छै / बाट फेर खुलै, रीत संग चलैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७६९ — संगीतमय रूप

भाव: करुणा आ तर्कक संयुक्त विवेक · स्मृतिक चयन आ सुधार · गहिर बोधक बादो नित्य व्यवहार · पीर-निवृत्तिक स्वतन्त्र मूल्य · बाधा हटबाक कारणात्मक महत्त्व · व्यवहारमे अनुमानक अनिवार्यता।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। रदीफ “संग चलैत अछि” मे “संग” पर कोमल जोड़ आ “चलैत अछि” पर दीर्घ, बहैत अवसान राखू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल बाँसुरी आ मृदु तबला। काफिया –ीत पर सूक्ष्म ठहराव; रदीफमे स्वर आगाँ सरकए, जाहिसँ संग-साथक जीवित गति सुनाइ पड़ए।

मतला: दोसरक पीर सुनिते मोन पसीजैत अछि, मुदा करुणा मात्र पर्याप्त नहि; तर्क बढ़ितो भाव बचल रहए। प्रीत आ रीत एक-दोसराकेँ काटि नहि, विवेकमे संग चलए।

२म शेर: स्मृति मात्र ढेर कएल बात नहि। उपयोगी स्मृति उचित बात चुनैत, भूल सुधारैत आ खोज चुकला पर फेर दिशा दैत अछि; मीतक याद एहि चयनक जीवित बिम्ब बनैत अछि।

३म शेर: गहिर बोध जगलापर देह, घर, लोक आ नित्य काज लोप नहि होइत। भीतरक ज्ञानक संग बाहरी व्यवहार चलैत रहैत अछि; एहि द्विस्तर जीवनकेँ गीतक बिम्ब देल गेल अछि।

४म शेर: पीर घटब अपनेमे अर्थवान अछि। श्वास खुलब, देह उठब आ नेह फेर बढ़ब—ई सभ मात्र आन सुखक साधन नहि, दुःखनिवृत्तिक अपन मूल्यक संकेत अछि।

५म शेर: हेतु रहितो रोध ठाढ़ हो तँ फल नुका सकैत अछि। बाधा हटला पर बाट खुलैत आ काज आगाँ बढ़ैत अछि; जीत एतय बाधा-निवृत्तिक फल-बिम्ब अछि।

६म शेर: घर दूर हो, बाट नुका जाए, तखन चिन्ह पढ़ि मोन दिशा बुझैत अछि। व्यवहारमे अनुमान छोड़ि देला पर घुरबाक बाटो छुटि सकैत; सोच आ पएरक गति प्रमाणक रीत संग चलैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। रदीफ “संग चलैत अछि” केँ यांत्रिक दोहराव नहि बनाउ—प्रीत, रीत, मीत, गीत आ जीत अनुसार स्वरक सम्बन्ध आ गति बदलू।

गजल ७७० — न्याय फेर बढ़ै, माप बनि रहैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाप (माप, छाप, ताप, थाप) · रदीफ: बनि रहैत अछि · शेर: ६

मोन दीप जरै छै, लोभ घटै छै / न्याय फेर बढ़ै, माप बनि रहैत अछि

घर बन्ध हटै छै, लोक हँसै छै / नेह फेर उगै, छाप बनि रहैत अछि

हक नाम रहै छै, बाट रुकै छै / पएर दूर रहै छै, द्वार रुकै छै

पाठ दीप जरै छै, बाट खुलै छै / हक काज करै, माप बनि रहैत अछि

ज्ञान दीप जरै छै, मोन बुझै छै / आन दीप रहै छै, भ्रम बढ़ै छै

बोध निज चमकै छै, मोह घटै छै / ज्ञान फेर जगै, ताप बनि रहैत अछि

नाम आन कहै छै, अर्थ घटै छै / भेद मात्र रहै छै, रूप नुकै छै

रंग रूप मिलै छै, गुण खुलै छै / अर्थ फेर जगै, छाप बनि रहैत अछि

नव बोध जगै छै, मोन पूछै छै / फल दूर रहै छै, बात रुकै छै

साँच काज चलै छै, फल मिलै छै / बोध फेर पकै, माप बनि रहैत अछि

एक दू दिसै छै, अंक बढ़ै छै / मोन फेर गनै छै, भेद मिलै छै

अंक फेर गनै छै, क्रम बनै छै / मोन अंक गनै, थाप बनि रहैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७७० — संगीतमय रूप

भाव: भीतरक मुक्ति आ बाहरी न्याय · नाम-मात्र अधिकारक बदला वास्तविक अवसर · स्वयंप्रकाश बोध · निषेध-मात्रसँ अर्थ अपूर्ण · सफल प्रवृत्तिसँ ज्ञानक परीक्षा · गिनती आ अपेक्षासँ संख्या-बोध।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। रदीफ “बनि रहैत अछि” केँ दीर्घ, स्थिर अवसान दिअ; “बनि” पर हलुक उठान आ “रहैत अछि” पर टिकाउ स्वर राखू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, कोमल बाँसुरी आ विरल तबला। काफिया –ाप पर छोट ठहराव; “माप/छाप/ताप/थाप” अनुसार स्वरक रंग बदलू, मुदा रदीफक स्थिरता बचाए राखू।

मतला: भीतर लोभ घटब आ बोधक दीप जरब पर्याप्त नहि जँ बाहर अन्याय आ बन्ध जस के तस रहए। भीतरक मुक्ति बाहरी न्यायसँ जुड़ला पर जीवनक माप बदलैत अछि; मुक्त घरक हँसी समाजपर छाप छोड़ैत अछि।

२म शेर: कागजपर हक लिखल रहितहुँ बाट, शिक्षा वा पहुँच रुकल हो तँ अधिकार व्यवहारमे अधूरा अछि। पाठक दीप जरला, बाट खुलला आ हक काज करए लगला पर वास्तविक अवसर स्वयं कसौटी बनैत अछि।

३म शेर: निज बोध बुझबाक लेल अनन्त दोसर दीपक आवश्यकता मानला पर श्रृंखला रुकैत नहि। बोध अपनहि चमकि सकैत अछि; मोह घटला पर ज्ञान भीतरक ताप जकाँ टिकि रहैत अछि।

४म शेर: अर्थकेँ मात्र “आन नहि” कहि समाप्त कएल जाए तँ सकारात्मक रूप आ गुण नुकाइ सकैत अछि। रंग, रूप आ गुण खुलला पर शब्दक अर्थ जीवित छाप बनि रहैत अछि।

५म शेर: नव बोधक प्रामाण्यपर प्रश्न उठि सकैत अछि। जखन साँच बोध व्यवहारमे काज सफल करैत आ फल दैत अछि, तखन बादक सफलता ओकर जाँचक माप बनि रहैत अछि।

६म शेर: एक, दू वा अनेकक बोध वस्तुमे निष्क्रिय छाप मात्र नहि; गिननिहार मोन क्रम, अपेक्षा आ भेद जोड़ैत अछि। अंक गनबाक लय संख्या-बोधक थाप बनि रहैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ७७१ — पीरक मूल खुलै, निदान दिशा दैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (ज्ञान, निदान, विधान, पहिचान, अनुमान, ध्यान) · रदीफ: दिशा दैत अछि · शेर: ६

मेह फेर खसै छै, धार बढ़ै छै / घरक भेद खुलै, ज्ञान दिशा दैत अछि
बाढ़ फेर चढ़ै छै, खेत डुबै छै / पीरक मूल खुलै, निदान दिशा दैत अछि
लोक नियम गढ़ै छै, मान टिकै छै / लेख फेर चलै छै, हक बनै छै
रीत फेर बदलै छै, लेख बदलै छै / हक बाट खुलै, विधान दिशा दैत अछि
सोन दूर चमकै छै, रूप नुकै छै / मूल बात बुझै छै, भेद रहै छै
रूप फेर खुलै छै, नाम मिलै छै / सोनक रूप खुलै, पहिचान दिशा दैत अछि
बीज फेर रोपै छी, ऋतु तकै छी / जल ताप मिलै छै, बीज उगै छै
नियम फेर टिकै छै, काज फलै छै / कारणक भेद खुलै, अनुमान दिशा दैत अछि
धूम दूर उठै छै, आगि नुकै छै / हेतु फेर जाँचै छी, संशय रहै छै
भेद फेर खुलै छै, दोष घटै छै / हेतुक मेल खुलै, ध्यान दिशा दैत अछि
घट रूप बनै छै, चाक घुमै छै / हाथ फेर चलै छै, रूप बनै छै
काज क्रम खुलै छै, हेतु मिलै छै / जगक क्रम खुलै, विधान दिशा दैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७७१ — संगीतमय रूप

भाव: प्राकृतिक विपत्तिक असमान सामाजिक प्रभाव · मानव-निर्मित संस्था आ ओकर वास्तविक परिणाम · मूल पदार्थ आ रूप-विशेषक भेद · कारण-नियमक भरोस · लुकायल उपाधिक परीक्षा · क्रमबद्ध कार्यसँ कारणक खोज।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। रदीफ "दिशा दैत अछि" मे "दिशा" पर हलुक उठान आ "दैत अछि" पर शान्त अवसान राखू।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। काफिया –ान पर छोट ठहराव दिअ; ज्ञान/निदान/विधान/पहिचान/अनुमान/ध्यानक भावानुसार स्वरक छाया फेरू।
मतला: वर्षा आ बाढ़ प्राकृतिक क्रमक अंश भऽ सकैत अछि, मुदा दुर्बल घर, संसाधनक भेद आ असमान सुरक्षा पीरक रूप बढ़ा सकैत अछि। बाह्य घटना आ सामाजिक कारण दुनू देखला पर ज्ञान निदानक दिशा दैत अछि।
२म शेर: नियम, लेख, संस्था आ अधिकार मानव-मान्यतासँ बनैत अछि, मुदा बनलाक बाद अवसर, रोक, हक आ व्यवहारपर वास्तविक असर दैत अछि। लिखल नियम काजमे उतरला पर विधान दिशा दैत अछि।
३म शेर: दूरसँ सोन बुझाइ पड़लासँ ओकर कुण्डल वा आन रूप-विशेष स्वतः नहि बुझाइत। मूल पदार्थक बोध आ विशिष्ट रूपक बोध पृथक् रहि सकैत अछि; रूप खुलला पर पहिचान दिशा दैत अछि।
४म शेर: बीज रोपब, ऋतु तकब, जल-ताप जुटब आ अंकुर उगब कारण-क्रमपर व्यवहारिक भरोस देखबैत अछि। नियम बारम्बार फलला पर कारणक भेद बुझि अनुमान दिशा दैत अछि।
५म शेर: धूम आ आगिक मेल देखिते निष्कर्ष थिर नहि करबाक चाही; लुकायल उपाधि सम्बन्धकेँ बिगाड़ि सकैत अछि। भेद खुलला आ दोष घटला पर सजग ध्यान दिशा दैत अछि।
६म शेर: घट बनैत काल चाक, हाथ, क्रम आ रूपक मेल कार्यक पाछाँ कारण-व्यवस्था खोजबाक प्रेरणा दैत अछि। क्रमबद्ध कार्य देखला पर हेतु जाँचि व्यापक विधान दिशा दैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ७७२ — याद फेर उठै, नोर मोन फेरबैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, छोर, जोर, कोर) · रदीफ: मोन फेरबैत अछि · शेर: ६

रोष मोन घटै छै, नेह बढ़ै छै / याद फेर उठै, नोर मोन फेरबैत अछि
दोष फेर मानै छी, भार घटै छै / पीर जखन बोलै, सोर मोन फेरबैत अछि
एक आँखि देखै छै, भेद चुकै छै / आन आँखि देखै छै, पक्ष खुलै छै
दू आँखि मिलै छै, भेद घटै छै / दू पक्ष जुड़ै, डोर मोन फेरबैत अछि
शब्द साँच कहै छै, अर्थ जगै छै / मौन पाठ रहै छै, बोध बढ़ै छै
साँच बात कहै छै, मोन सुनै छै / बोध जखन जगै, भोर मोन फेरबैत अछि
सुख फेर आबै छै, पीर घटै छै / पीर फेर आबै छै, सुख घटै छै
काल फेर चलै छै, रूप बदलै छै / सुख जखन ढलै, छोर मोन फेरबैत अछि
चिन्ह एक मिलै छै, भ्रम रहै छै / आन चिन्ह मिलै छै, दोष घटै छै
मेल फेर जाँचै छी, भेद धरै छी / दोष जखन खुलै, जोर मोन फेरबैत अछि
आन मत सुनै छी, रोष घटै छै / मूल बात बुझै छी, न्याय बढ़ै छै
पक्ष फेर कहै छी, दोष धरै छी / मोन पक्ष बुझै, कोर मोन फेरबैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७७२ — संगीतमय रूप

भाव: क्षमा आ स्मृतिक भेद · अनेक दृष्टिसँ अन्हर ठाम घटब · सिद्ध साँच कहनिहार वाक्यक फलवत्ता · सुख–पीरक अनित्यता · चिन्ह–सम्बन्धमे अपवाद-परीक्षा · प्रतिपक्षक मतक न्यायपूर्ण प्रस्तुति।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। रदीफ “मोन फेरबैत अछि” मे “मोन” पर हलुक ठहराव आ “फेरबैत अछि” पर कोमल अवसान राखू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। काफिया –ोर पर सूक्ष्म स्वर-उठान दिअ; नोर/सोर/डोर/भोर/छोर/जोर/कोरक बिम्ब अनुसार रंग फेरू।

मतला: क्षमा रोष घटा सकैत अछि, मुदा क्षमा विस्मरण नहि। दोष मानल जाए आ पीड़क स्मृति दबाओल नहि जाए; याद उठला पर नोर आ पीरक सोर मोनकेँ नैतिक उत्तरदायित्व दिस फेरबैत अछि।

२म शेर: एक दृष्टि किछु देखैत अछि आ किछु चुकैत अछि। आन दृष्टि जुड़ला पर अन्हर ठाम घटैत अछि; दू पक्षक मेल सत्यकेँ इच्छाधीन नहि बनबैत; अपूर्ण देखाइ केँ भरबाक डोर बनैत अछि।

३म शेर: भाषा मात्र आदेश नहि दैत। सिद्ध साँच कहनिहार वाक्य सेहो बोध जगा सकैत अछि; मौन पाठ भीतर अर्थ जगबैत अछि, आ साँच बात सुनला पर ज्ञानक भोर मोन फेरबैत अछि।

४म शेर: लौकिक सुख आ पीर दुनू आगमन-गमनशील अनुभव अछि। एक क्षणक सुखकेँ नित्य सत्य मानब उचित नहि; काल चलैत, रूप बदलैत, सुख ढलैत—एहि छोरपर अनित्यता मोन फेरबैत अछि।

५म शेर: एक चिन्ह वा एक सहउपस्थिति मात्रसँ सार्वभौम सम्बन्ध सिद्ध नहि। आन चिन्ह, विपरीत उदाहरण, अपवाद आ दोष जाँचला पर सम्बन्धक जोर बदलि सकैत अछि; एहि कारण पुनर्परीक्षण आवश्यक अछि।

६म शेर: वादमे आन मतकेँ पहिने समग्र आ न्यायपूर्ण रूपेँ बुझब आवश्यक। प्रतिपक्षक मूल बात ठीक सँ कहलाक बाद दोष धरला पर समीक्षा अधिक विश्वसनीय बनैत अछि; मतक कोर बुझनाइ मोन फेरबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ७७३ — प्रश्न जखन उठै, विचार कैँ खोजैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (विचार, आधार, व्यवहार, उद्धार, पार, प्रकार, भार) · रदीफ: कैँ खोजैत अछि · शेर: ६

भूल फेर खुलै छै, मत बदलै छै / प्रश्न जखन उठै, विचार कैँ खोजैत अछि
साँच फेर जाँचै छी, दोष धरै छी / ज्ञान जखन बढ़ै, आधार कैँ खोजैत अछि
रीत फेर गढ़ै छी, हक बनै छै / नियम फेर धरै छी, फल बदलै छै
मान जखन जुड़ै छै, हक चलै छै / नियम जखन चलै, व्यवहार कैँ खोजैत अछि
काज मोन सुधरै छै, ध्यान बढ़ै छै / पूजा मोन धरै छै, एकाग्र बढ़ै छै
ज्ञान जखन जगै छै, मोह घटै छै / बोध जखन बढ़ै, उद्धार कैँ खोजैत अछि
रूप जखन बुझै छी, चाह जगै छै / चाह जखन जगै छै, यत्न बढ़ै छै
यत्न जखन बढ़ै छै, काज चलै छै / फल जखन मिलै, पार कैँ खोजैत अछि
गाइ रूप जानै छी, आन मिलै छै / सादृश्य फेर देखै छी, नाम जगै छै
नाम जखन मिलै छै, भेद रहै छै / रूप जखन मिलै, प्रकार कैँ खोजैत अछि
काज जखन होइ छै, छाप रहै छै / फल दूर रहै छै, बीज बचै छै
फल जखन आबै छै, भेद खुलै छै / काल जखन घुरै, भार कैँ खोजैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+१+२+२ | २+२+१+२+२+२+१+२+२ · यति १६+१६

गजल ७७३ — संगीतमय रूप

भाव: संशोध्य ज्ञान · मानव-गढ़ल नियमक वास्तविक सामाजिक फल · कर्मसँ मोन-शुद्धि मुदा ज्ञानसँ मुक्ति · बोध–चाह–यत्न–काज–फल क्रम · सादृश्यसँ नाम-बोध मुदा अभिन्नता नहि · दूर फलो रहला पर नैतिक कर्मक कारण-भार।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। यति १६+१६ पर सहज श्वास-विराम। रदीफ "कैँ खोजैत अछि" मे काफियाक बाद हलुक ठहराव, "खोजैत" पर उठान आ "अछि" पर शान्त अवसान राखू।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ार काफियाक दीर्घ स्वरकैँ खुलल राखू; विचार/आधार/व्यवहार/उद्धार/पार/प्रकार/भार अनुसार स्वर-छाया फेरू।
मतला: ज्ञानक अनुशासन अपन भूल मानब आ दाबी फेर जाँचब अछि। प्रश्न उठला पर विचार खोजल जाइत अछि; ज्ञान बढ़ला पर ओ अपन आधार सेहो खोजैत अछि। संशोधन ज्ञानक दुर्बलता नहि, ओकर सजगता अछि।
२म शेर: नियम, संस्था आ सामाजिक मान्यता मानवक रचना भऽ सकैत अछि, मुदा ओ कल्पना-मात्र नहि। हक, अवसर, रोक आ फल वास्तविक बनैत अछि; तेँ नियम चलला पर ओकर व्यवहारिक परिणाम जाँचल आवश्यक अछि।
३म शेर: काज, अनुशासन आ उपासना मोनकैँ शुद्ध आ एकाग्र बना सकैत अछि; मुदा अज्ञानक मूल गाँठ ज्ञानसँ खुलैत अछि। एहि भेदमे कर्म तैयारी करैत, बोध उद्धारक पार खोजैत अछि।
४म शेर: वस्तुक बोधसँ चाह, चाहसँ यत्न, यत्नसँ काज आ काजसँ फल दिस क्रम बनैत अछि। फल भेटला पर ई क्रमक प्रत्येक कड़ी फेर देखल जा सकैत अछि; प्राप्ति संयोग छल की प्रयत्नक पार, से प्रश्न बचैत अछि।
५म शेर: सादृश्य अज्ञात वस्तुक नाम बुझबामे सहायता दैत अछि, मुदा समानता अभिन्नता नहि। गाइ-जकाँ रूप देखला पर नाम जगैत अछि; नाम भेटलाक बादो भेद रहैत, तेँ रूप अपन प्रकार खोजैत अछि।
६म शेर: कर्मक फल सदिखन तत्क्षण नहि दिसैत। काजक छाप आ कारण-बीज काल पार धरि रहि सकैत अछि; फल अबिते सम्बन्ध खुलैत अछि, आ घुरैत काल कर्मक भार अपन कारण खोजैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ७७४ — पीर जखन घटै छै, आस जागि उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, आभास, श्वास, इतिहास) · रदीफ: जागि उठैए · शेर: ६

वाद बीच रहै छै, लोक संग चलैए / पीर जखन घटै छै, आस जागि उठैए
मत भिन्न रहै छै, काज संग बढ़ैए / नेह जखन जगै छै, विश्वास जागि उठैए
शब्द नाम बदलै छै, जग ठाढ़ रहैए / दाबी शब्द सजै छै, सेतु फेर टूटैए
तथ्य दाबी जाँचै छै, दोष फेर खुलैए / जग जखन रोकै छै, प्रयास जागि उठैए
पाँति भिन्न रहै छै, अर्थ संग मिलैए / सोर दूर रहै छै, तात्पर्य फेर खुलैए
अंश संग जुड़ै छै, पाठ रूप धरैए / अर्थ जखन मिलै छै, उल्लास जागि उठैए
रूप सोझाँ रहै छै, मोन ओकरा धरैए / ज्ञान मोनमे जगै छै, रूप दूर रहैए
ज्ञाता रूप देखै छै, ज्ञान भेद धरैए / भेद जखन खुलै छै, आभास जागि उठैए
नव बोध उठै छै, प्रश्न संग चलैए / मोन फेर जाँचै छै, दाबी फेर पकैए
जाँच फल मिलै छै, संशय दूर हटैए / बोध जखन टिकै छै, श्वास जागि उठैए
रूप झट बदलै छै, मूल कतय रहैए / लोक अकस्मात् कहै छै, डोर फेर नुकैए
क्रम फेर खोजै छी, हेतु संग मिलैए / मूल जखन खुलै छै, इतिहास जागि उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७७४ — संगीतमय रूप

भाव: मतभेदक बावजूद साझा काज · भाषा आ यथार्थक प्रतिरोध · भिन्न पाठक समन्वय · ज्ञाता–ज्ञान–ज्ञेयक भेद · नव बोधक प्रामाण्य-जाँच · अकस्मात् घटना पाछाँ कारण-डोर।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। रदीफ "जागि उठैए" केँ हलुक आरोहमे गाउ; "उठैए" पर स्वर खुलि कऽ फेर थिर हो।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। –ास काफियाक दीर्घ स्वर खुलल राखू; शेर-दर-शेर भावक ताप बदलू।
मतला: अन्तिम मतभेद नहियो मिटए, साझा पीर घटेबाक काज लोककेँ संग आनि सकैत अछि। काज बढ़ला पर आस आ विश्वास फेर जागि उठैत अछि।
२म शेर: भाषा नाम आ वर्ग बदलि सकैत अछि, मुदा जग ओकर इच्छा पर नहि चलैत। दाबी सुन्दर हो, सेतु टूटल तँ यथार्थ दोष देखबैत आ नव जाँचक प्रयास जगबैत अछि।
३म शेर: भिन्न पाँति आ सोर परस्पर काटबाक बदला संग पढ़ला पर तात्पर्य खुलैत अछि। अंश जुड़ला पर पाठक समग्र अर्थ रूप धरैत अछि।
४म शेर: ज्ञाता, ज्ञान आ ज्ञेय एकहि घटना भीतर भिन्न भूमिका रखैत अछि। मोन रूपकेँ धरैत अछि, मुदा रूप ज्ञानमे बिलीन नहि; भेद खुलला पर आभास स्पष्ट होइत अछि।
५म शेर: नव बोध उठिते ओकर प्रामाण्य स्वतः निश्चित नहि। जाँच, फल आ संशयक परीक्षा पाछाँ बोध टिकैत अछि; तखन श्वास-जकाँ विश्वासक सहजता फेर अबैत अछि।
६म शेर: "अकस्मात्" कहब कारणक अभाव सिद्ध नहि करैत। रूप झट बदलला पर क्रम, हेतु आ नुकायल डोर खोजू; मूल खुलला पर घटनाक इतिहास जागि उठैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ७७५ — घर पाछाँ छुटै छै, सार मोनमे बसैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, भार, द्वार, धार, पार, तार, हार) · रदीफ: मोनमे बसैए · शेर: ६

घर बाट छुटै छै, पएर दूर बढ़ैए / घर पाछाँ छुटै छै, सार मोनमे बसैए
राति नोर झरै छै, भोर आँखि खुलैए / काल पाछाँ सरै छै, भार मोनमे बसैए
लोक ठाम बदलै छै, नाम फेर जुड़ैए / पुरना छाँह उठै छै, रूप सोझाँ अबैए
याद भेद जगै छै, मोन बात सुनैए / गेह दूर रहै छै, द्वार मोनमे बसैए
पीर धीरे घटै छै, नेह फेर उगैए / बात मनुक्ख कहै छै, नोर चुप्पे बहैए
देह दूर चलै छै, बाट भीतर रहैए / स्मृति काल जोड़ै छै, धार मोनमे बसैए
दोष जखन खुलै छै, मान फेर बदलैए / क्षमा रोष घटै छै, याद तइयो रहैए
काल दूर सरै छै, घर धुनि सुनैए / साँच बात कहै छै, पार मोनमे बसैए
दीप राति जरै छै, छाँह भीत चलैए / मोन अपन सुनै छै, नेह पाछाँ अबैए
पवन पात हिलै छै, सोर भीतर गमकैए / पत्र धूरि धरै छै, तार मोनमे बसैए
हार मोन थकै छै, बोध फेर जगैए / बाट मोन खुलै छै, पएर आगाँ बढ़ैए
घर दूर रहै छै, नेह संगहि चलैए / जीवन फेर चलै छै, हार मोनमे बसैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७७५ — संगीतमय रूप

भाव: घर छोड़लापर स्मृति, पीर, क्षमा, दूरी आ भीतर बसल अपनत्व।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। रदीफ केँ स्मृतिक धुनि जकाँ धीरे भीतर उतारू; काफियाक पाछाँ अल्प मौन राखू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु बाँसुरी आ विरल तबला। सारंगीक मींड घरक दूरि आ स्मृतिक कम्पन उभारए।

मतला: घर छुटैत अछि, मुदा ओकर सार भीतर रहैत अछि।

२म शेर: दूरी स्मृतिमे द्वारक छवि जगा दैत अछि।

३म शेर: स्मृति रूप बदलैत अछि, मुदा पहचान जोड़ैत अछि।

४म शेर: भौगोलिक दूरी भीतरक धार काटि नहि सकैत।

५म शेर: क्षमा रोष घटबैत अछि, विस्मरण नहि करबैत।

६म शेर: हारो जीवनक नेह-डोर मेटा नहि पबैत।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर घरक स्मृति जकाँ भीतर रहि जाए।

गजल ७७६ — कूल दूर सरै छै, तरंग संगे बहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (तरंग, रंग, संग, उमंग, अंग, प्रसंग, ढंग) · रदीफ: संगे बहैए · शेर: ६

नीर कूल छुबै छै, नाव धार धरैए / कूल दूर सरै छै, तरंग संगे बहैए
मेह धार भरै छै, माटि गन्ध छोड़ैए / भोर नीर चमकै छै, रंग संगे बहैए
बाट जल बनै छै, खेत रूप बदलैए / पात डार हिलै छै, मेह गीत गबैए
लोक घाट बसै छै, नाव फेर चलैए / हाथ हाथ मिलै छै, संग संगे बहैए
साँच रूप बदलै छै, माप तइयो रहैए / आँखि नीर देखै छै, बोध गहिर उतरैए
धार कूल काटै छै, द्वीप फेर बनैए / दृष्टि भिन्न रहै छै, उमंग संगे बहैए
ज्ञान जग चलै छै, काज तइयो रहैए / देह घाट चलै छै, पएर बाट धरैए
काल रूप फेरै छै, नियम पाछाँ रहैए / सिद्धि भीतर जगै छै, अंग संगे बहैए
बीज मेह पिबै छै, खेत पात उगैए / हेतु संग मिलै छै, फल धीरे पकैए
धूम आगि कहै छै, संशय फेर घटैए / काज मूल जोड़ै छै, प्रसंग संगे बहैए
हार फूल सजै छै, क्रम कारण जगबैए / मोन ढंग तकै छै, सूत्र भीतर खुलैए
नीर दूर बहै छै, प्रश्न संगहि चलैए / जगत क्रम धरै छै, ढंग संगे बहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७७६ — संगीतमय रूप

भाव: नदी, परिवर्तन, दृष्टि, कारण-क्रम आ प्रवाहमे टिकैत सम्बन्ध।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: दादरा ६ मात्रा। लय नदीक धार जकाँ सतत रहए; रदीफ पर स्वर बहि कऽ कोमल थिराव लिअ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, मन्द पखावज आ जलतरंगक हलुक स्पर्श। जलतरंग नीरक चमक दियए; पखावज बहुत मृदु रहए।

मतला: नदी बदलैत अछि, प्रवाहक नियम रहैत अछि।

२म शेर: रंग बदलला परो संगतिक अनुभव बनल रहैत अछि।

३म शेर: अनेक दृष्टि एक प्रवाहक भिन्न रूप देखैत अछि।

४म शेर: बोधक बादो जगक व्यवहार चलैत रहैत अछि।

५म शेर: बीज-मेह-खेत कारणक क्रम देखबैत अछि।

६म शेर: व्यवस्था कारणक प्रश्न जगबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम ठहराव नदीक कूल नहि, अगिला बहावक संकेत हो।

गजल ७७७ — बीज माटि फोड़ै छै, प्रीत माटिमे अँकुरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (प्रीत, गीत, रीत, जीत, शीत, अतीत, मीत) · रदीफ: माटिमे अँकुरैए · शेर: ६

बीज मेह पिबै छै, पात धूप तकैए / बीज माटि फोड़ै छै, प्रीत माटिमे अँकुरैए
खेत पएर चलै छै, हाथ बीज छिटैए / लोक सोर उठै छै, गीत माटिमे अँकुरैए
मेह बेर चुकै छै, खेत पीर सहैए / काज तइयो चलै छै, आस भीतर जगैए
मूल माटि धरै छै, गाछ पवन सहैए / नियम ऋतु कहै छै, रीत माटिमे अँकुरैए
ज्ञान काज सिखै छै, मोन लोभ घटैए / कर्म देह थकै छै, बोध बाट खुलैए
बीज शक्ति धरै छै, जल ताप मिलैए / पसीन नोर मिलै छै, जीत माटिमे अँकुरैए
राति ओस पड़ै छै, पात धीरे भीजैए / श्वास खेत चलै छै, भोर पाँखि खोलैए
जड़ि पुरना बचै छै, नव पात निकलैए / धूप दूर सरै छै, शीत माटिमे अँकुरैए
याद खेत घुरै छै, बाबा सोर सुनैए / पएर पुरना पड़ै छै, मोन माटि छुबैए
भूख देह कहै छै, न्याय काज माँगैए / काल रूप बदलै छै, अतीत माटिमे अँकुरैए
दान अन्न बँटै छै, मान संग बढ़ैए / लोक नेह जगै छै, मीत सोझाँ अबैए
खेत गीत गबै छै, जीवन फेर उगैए / हाथ हाथ जुड़ै छै, मीत माटिमे अँकुरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७७७ — संगीतमय रूप

भाव: बीज, कृषिक श्रम, परम्परा, न्याय आ नवजीवन।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा। खेतक चाल जकाँ धरती-सँ जुड़ल गायन राखू; रदीफ पर स्वर नव अँकुर जकाँ उठए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु तबला आ एकतारा। एकतारा खेतक सरल श्रम-लय थामए।
मतला: बीज फुटनाइ आशाक रूपक बनैत अछि।
२म शेर: लोकगीत खेतक श्रमसँ जनमैत अछि।
३म शेर: रीत जड़ता नहि, ऋतु-जकाँ बदलैत अनुशासन अछि।
४म शेर: कर्म मोन शुद्ध करैत, ज्ञान दिशा खोलैत अछि।
५म शेर: सहायक कारण बिनु बीजक शक्ति निष्फल रहैत।
६म शेर: भूख आ अन्नक प्रश्न न्यायसँ जुड़ैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर माटिमे राखल बीज जकाँ शान्त रहए।

गजल ७७८ — प्रश्न माथ उठै छै, ज्ञान ऊपर चढ़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (ज्ञान, ध्यान, मान, गान, तान, पहचान, विधान) · रदीफ: ऊपर चढ़ैए · शेर: ६

आकाश दूर खुलै छै, आँखि तारा गिनैए / प्रश्न माथ उठै छै, ज्ञान ऊपर चढ़ैए
राति नक्षत्र चमकै छै, मोन सीमा बुझैए / संशय दीप जरै छै, ध्यान ऊपर चढ़ैए
यंत्र चित्र बनै छै, साँच तइयो जँचैए / स्रोत फेर मिलै छै, दोष धीरे खुलैए
दीप भीतर जरै छै, आन सहारा घटैए / उत्तर झट मिलै छै, मान ऊपर चढ़ैए
बोध भीतर उठै छै, छाँह दूर सरैए / जग सोझाँ रहै छै, कल्पना रोकि देखैए
रूप नाम जुड़ै छै, बोध फेर बनैए / स्वप्न भोर टूटै छै, गान ऊपर चढ़ैए
आँखि रूप धरै छै, मोन भेद कहैए / शब्द पाछाँ अबै छै, वर्ग रूप सजैए
मत अनेक उठै छै, विकल्प फेर जँचैए / नाम भेद खुलै छै, तान ऊपर चढ़ैए
दाबी एक टूटै छै, आन राह खुलैए / दोष जखन मिलै छै, अर्थ फेर बदलैए
तारा दूर रहै छै, प्रश्न नित्य जगैए / पक्ष संग जँचै छै, पहचान ऊपर चढ़ैए
ज्ञान सीमा कहै छै, मोन नम्र रहैए / आकाश मौन रहै छै, दृष्टि तइयो बढ़ैए
प्रश्न फेर उठै छै, बोध बाट खुलैए / जाँच संग चलै छै, विधान ऊपर चढ़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७७८ — संगीतमय रूप

भाव: आकाशक विस्मय, ज्ञानक सीमा, स्रोत-जाँच आ बौद्धिक नम्रता।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: रूपक ७ मात्रा। उच्च स्वरक बदला खुलल आकाश-जकाँ विस्तार दिअ; रदीफ पर आरोह स्वच्छ रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, स्वरमण्डल आ विरल तबला। स्वरमण्डल तारा-जकाँ विरल चमक जोड़ए।

मतला: विस्मय प्रश्नक पहिल आकाश खोलैत अछि।

२म शेर: ज्ञान बढ़ैत अछि, नम्रता सेहो बढ़बाक चाही।

३म शेर: यान्त्रिक उत्तर प्रमाणक बदला नहि।

४म शेर: बोध स्वयंप्रकाशक बिम्ब लैत अछि।

५म शेर: नाम पाछाँ आबि रूपकेँ वर्ग दैत अछि।

६म शेर: विकल्प-दर-विकल्प जाँच ज्ञानकेँ मजबूत करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम तान प्रश्नकेँ बन्द नहि, आकाशमे छोड़ि दे।

गजल ७७९ — पीर नोर कहै छै, नेह नोरमे भीजैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेह (नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, नेह) · रदीफ: नोरमे भीजैए · शेर: ६

पीर नोर कहै छै, मोन चुप्पे सुनैए / पीर नोर कहै छै, नेह नोरमे भीजैए

राति देह थकै छै, श्वास धीरे चलैए / हाथ माथ छुबै छै, देह नोरमे भीजैए

बात धीरे उठै छै, मौन ठाम बनैए / लोक सोझाँ बसै छै, पीर अपन कहैए

काज घर नुकै छै, नेह तइयो चलैए / संग चुप्पे रहै छै, गेह नोरमे भीजैए

रोटी हाथ बनै छै, पीर संगहि बँटैए / सेवा चुप्पे चलै छै, देह काज सहैए

वाक्य साँच कहै छै, आदेश सीमा लाँघैए / मेह राति पड़ै छै, मेह नोरमे भीजैए

शब्द पीर धरै छै, अर्थ भीतर खुलैए / दुःख दूर हटै छै, श्वास फेर बढ़ैए

रिक्त ठाम दिसै छै, वस्तु तइयो बुझैए / मूल पीर घटै छै, स्नेह नोरमे भीजैए

आँखि अभाव धरै छै, मोन बात कहैए / वाद पाछाँ रहै छै, मान आगाँ अबैए

आन मत सुनै छै, रोष धीरे घटैए / जीत माथ नचै छै, विदेह नोरमे भीजैए

क्षमा हाथ बढ़ै छै, याद तइयो रहैए / पीर इतिहास कहै छै, न्याय बाट माँगैए

मौन भीतर बजै छै, जीवन फेर चलैए / नेह रोष घटै छै, नेह नोरमे भीजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७७९ — संगीतमय रूप

भाव: शोक, उपस्थिति, सेवा, दुःख-निवृत्ति आ गरिमामय संवाद।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित दादरा ६ मात्रा। शोकक ठाम बचबैत स्वर कम राखू; रदीफ नोरक कम्पन जकाँ हलुक सुनाओ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मन्द मँजीरा आ बाँसुरी। मँजीरा बहुत कम बजए, ताकि शोकक मौन बचल रहए।

मतला: पीरक सोझाँ पहिने सुननाइ आवश्यक अछि।

२म शेर: देहक थकान भाषा सँ पहिने बोलैत अछि।

३म शेर: मौन अर्थहीन नहि, ठाम देबैत अछि।

४म शेर: सेवा अदृश्य काज रूपेँ घरकेँ थामैत अछि।

५म शेर: दुःख घटब अपनेमे मूल्यवान अछि।

६म शेर: वादक बादो प्रतिपक्षक मान बचल रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन शोककेँ समाधान नहि, गरिमामय ठाम दे।

गजल ७८० — राति पाछाँ सरै छै, आस भोरमे फूटैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, आभास, श्वास, इतिहास) · रदीफ: भोरमे फूटैए · शेर: ६

राति पाछाँ सरै छै, दीप धीरे जरैए / राति पाछाँ सरै छै, आस भोरमे फूटैए
पएर बाट धरै छै, मोन डर घटैए / काज एखन चलै छै, विश्वास भोरमे फूटैए
भाग्य नाम कहै छै, हाथ तइयो चलैए / वर्तमान काज बढ़ै छै, भविष्य रूप धरैए
जाल छाह ढकै छै, दीप भीतर रहैए / रोक पथ घेरै छै, प्रयास भोरमे फूटैए
आवरण दूर हटै छै, साँच सोझाँ अबैए / कारण क्रम टिकै छै, खेत फल धरैए
यत्न फल मिलै छै, बोध फेर पकैए / बीज मेह मिलै छै, उल्लास भोरमे फूटैए
साँच चाल कहै छै, भ्रम धीरे घटैए / चाह मोन चलै छै, पएर काज करैए
श्वास देह भरै छै, पवन गन्ध छोड़ैए / मोह दूर सरै छै, आभास भोरमे फूटैए
नीर पात चमकै छै, पक्षी गीत गबैए / लोक द्वार खोलै छै, दिन पएर धरैए
याद काल कहै छै, भोर फेर बदलैए / राति भार घटै छै, श्वास भोरमे फूटैए
दुःख फेर अबै छै, काज फेर करैए / आस फेर उठै छै, जीवन बाट धरैए
हाथ हाथ जुड़ै छै, लोक दिन गढ़ैए / काल पन्ना फेरै छै, इतिहास भोरमे फूटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७८० — संगीतमय रूप

भाव: भोर, वर्तमान काज, कारण-क्रम, आस आ नव आरम्भ।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। भोरक पहिल किरण जकाँ क्रमशः उजास बढ़ाउ; रदीफ पर स्वर एकाएक तेज नहि हो।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, मृदु तबला आ बाँसुरी। संतूरक छोट चमक भोरक किरण जकाँ अबए।

मतला: भाग्यक नाम काजकेँ निष्फल नहि करैत।

२म शेर: रोकक बीच प्रयासक अर्थ बढ़ैत अछि।

३म शेर: आवरण हटला पर साँच प्रकट होइत अछि।

४म शेर: कारण-क्रम भरोसा दे◌ैत अछि।

५म शेर: सफल काज पहिल बोधकेँ जाँचैत अछि।

६म शेर: आस मोह नहि, नव काजक प्रेरणा भऽ सकैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर भोरक प्रकाश जकाँ धीरे फैलए।

गजल ७८१ — शब्द पवन चढ़ै छै, संवाद पवनमे उड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाद (संवाद, नाद, अनुवाद, विवाद, प्रसाद, अवसाद, स्वाद) · रदीफ: पवनमे उड़ैए · शेर: ६

शब्द पवन चढ़ै छै, पत्र दूर पहुँचैए / शब्द पवन चढ़ै छै, संवाद पवनमे उड़ैए
मौन सोर धरै छै, कान धीरे खुलैए / लोक गीत गबै छै, नाद पवनमे उड़ैए
नाम वर्ग बनै छै, जग तइयो रहैए / बोल लोक गढ़ै छै, नियम संग चलैए
पाँति भिन्न रहै छै, अर्थ संग मिलैए / भाषा सेतु बनै छै, अनुवाद पवनमे उड़ैए
तात्पर्य भीतर खुलै छै, संशय दूर हटैए / आन मत उठै छै, रोष तइयो घटैए
शब्द आदेश बनै छै, पएर काज धरैए / प्रश्न बात बढ़ै छै, विवाद पवनमे उड़ैए
वचन भार बढ़ै छै, लोक याद रखैए / नाम मान बदलै छै, देह परिणाम सहैए
छूटल सोर नुकै छै, मंच चमक बढ़ैए / सत्कार हाथ बढ़ै छै, प्रसाद पवनमे उड़ैए
गुम नाम उठै छै, इतिहास फेर लिखैए / भाषा सत्ता धरै छै, लोक अर्थ जँचैए
रस बात बनै छै, गीत जिह्वा छुबैए / दुःख शब्द भरै छै, अवसाद पवनमे उड़ैए
लोक हँसी उठै छै, भोजन नेह जगैए / स्वाद याद धरै छै, घर पाछाँ अबैए
भाषा दूर सरै छै, मूल संगहि रहैए / माटि गन्ध चढ़ै छै, स्वाद पवनमे उड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७८१ — संगीतमय रूप

भाव: शब्द, पवन, अनुवाद, वाक्-कर्म, छूटल सोर आ लोक-स्मृति।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। पवनक गति जकाँ वाक्य बहए; रदीफ पर शब्द साफ आ दीर्घ उच्चरित हो।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, पखावजक कोमल ठेक आ बाँसुरी। पवन-जकाँ बाँसुरीक लम्बा श्वास पाँतिकेँ जोड़ए।

मतला: संवाद दूरी पार करैत अछि।

२म शेर: नाद मौनक भीतर सँ सेहो उठैत अछि।

३म शेर: भाषा जगकेँ गढ़ैत अछि, मुदा जग भाषा मात्र नहि।

४म शेर: समन्वय भिन्न पाँतिक अर्थ जोड़ैत अछि।

५म शेर: वचन काज जगबैत अछि।

६म शेर: छूटल सोरक पुनर्प्रवेश इतिहास बदलैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन पवनमे उड़ल शब्दक प्रतिध्वनि छोड़ए।

गजल ७८२ — घाव बात कहै छै, भाव नोरमे चमकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाव (भाव, चाव, घाव, ठाव, नाव, बहाव, दाव) · रदीफ: नोरमे चमकैए · शेर: ६

घाव बात कहै छै, आँखि चुप्पे सुनैए / घाव बात कहै छै, भाव नोरमे चमकैए
हाथ माथ छुबै छै, देह श्वास धरैए / पीर धीरे घटै छै, चाव नोरमे चमकैए
आन पीर नुकै छै, चिन्ह तइयो मिलैए / सोर चाल कहै छै, मोन हाल बुझैए
देह जग बुझै छै, जीवन ठाम बनैए / चेहरा रंग बदलै छै, घाव नोरमे चमकैए
चाल स्पर्श सुनै छै, स्मृति भीतर उठैए / रूप गन्ध मिलै छै, बोध एक्के बनैए
नाव नीर डोलै छै, कूल दूर रहैए / इन्द्रिय संग जुड़ै छै, ठाव नोरमे चमकैए
मनुख संग चलै छै, नेह डोर धरैए / पीर सुख बदलै छै, दुनू काल चलैए
भीतर साक्षी रहै छै, काज मान जँचैए / क्षण रूप सरै छै, नाव नोरमे चमकैए
मोन दोष कहै छै, देह लाज बुझैए / न्याय बात उठै छै, लोक हाथ बढ़ैए
दाबी जोर करै छै, पीर तइयो कहैए / नोर धार बहै छै, बहाव नोरमे चमकैए
सत्ता कान बन्दै छै, चिन्ह तइयो बोलैए / लोक साँच धरै छै, नोर बाट बनैए
पीर आन छुबै छै, अपन मोन बदलैए / मान हाथ उठै छै, दाव नोरमे चमकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७८२ — संगीतमय रूप

भाव: करुणा, देह, चिन्ह, इन्द्रिय-बोध आ आनक पीरक अनुमान।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। करुणाक स्वर देहक निकट रहए; रदीफ पर हलुक चमक, मुदा कोनो नाटकीय दबाव नहि।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, स्वरमण्डल आ मन्द तबला। सारंगी देहक करुण कम्पन धैर्यसँ रखए।

मतला: आनक पीर प्रत्यक्ष नहि, चिन्हसँ बुझल जाइत अछि।

२म शेर: देह मात्र वस्तु नहि, अनुभवक ठाम अछि।

३म शेर: घाव आ नोर भाषा सँ पहिने बोलैत अछि।

४म शेर: सुख-पीर कालसँ बदलैत अछि।

५म शेर: अनेक इन्द्रिय एक बोधमे जुड़ैत अछि।

६म शेर: भीतरक नैतिक साक्षी बाहरी दाबीसँ स्वतन्त्र प्रश्न उठबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम नाद नोर पोंछए नहि, ओकर चमक मानए।

गजल ७८३ — रोष देह चढ़ै छै, क्रोध भीतर धधकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोध (क्रोध, बोध, रोध, विरोध, शोध, प्रबोध, निरोध) · रदीफ: भीतर धधकैए · शेर: ६

रोष देह चढ़ै छै, श्वास तेज चलैए / रोष देह चढ़ै छै, क्रोध भीतर धधकैए
बात आगि बनै छै, मान दूर सरैए / मोन फेर जँचै छै, बोध भीतर धधकैए
दोष आन कहै छै, भाग अपन नुकैए / दबाव भार बढ़ै छै, माप फेर बदलैए
मंच रोष बढ़ै छै, सोर फेर फैलैए / सत्ता जाल बनै छै, रोध भीतर धधकैए
चित्र बार देखै छै, क्रोध आरो बढ़ैए / कर्म मोन ढकै छै, ज्ञान छाह हटैए
वस्तु राख रहै छै, नाश आन कहैए / दीप बोध जगै छै, विरोध भीतर धधकैए
आगि रूप बदलै छै, मूल प्रश्न बचैए / रोक काज रुकै छै, हेतु तइयो रहैए
वाद मत भिड़ै छै, अपमान दूर रहैए / रोध दूर हटै छै, शोध भीतर धधकैए
आन पक्ष सुनै छै, अपन दोष खुलैए / जीत रोष घटै छै, मान सोझाँ रहैए
रोष धीरे घटै छै, नेह बाट धरैए / ज्ञान फेर खुलै छै, प्रबोध भीतर धधकैए
आगि राख बनै छै, धूप तइयो रहैए / मोन काज चुनै छै, हिंसा पाछाँ हटैए
आगि रूप बदलै छै, ऊष्मा काज बनैए / श्वास धीर बनै छै, निरोध भीतर धधकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७८३ — संगीतमय रूप

भाव: क्रोध, उत्तरदायित्व, डिजिटल उकसाहट, विनाश-भेद आ संयम।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: झपताल १० मात्रा। क्रोधक ताप कैँ तालमे बाँधू; रदीफ पर ऊष्मा रहए, चीत्कार नहि।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोदक मृदु आलाप, तबला आ बाँसुरी। सरोदक गम्भीर तार क्रोधक तापकैँ अनुशासित करए।

मतला: क्रोधक भार परिस्थिति अनुसार जाँचल जाए।

२म शेर: मंच रोषकैँ बढ़ा सकैत अछि।

३म शेर: ज्ञान मोनक मलिनता काटैत अछि।

४म शेर: वस्तु आ ओकर विनाश एक नहि।

५म शेर: बाधा हटब सेहो कारणक शर्त अछि।

६म शेर: वादमे जीत अपमानक अधिकार नहि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापनमे आगि राख नहि, ऊष्मा बनि बचए।

गजल ७८४ — सोर दूर रहै छै, राग मौनमे गमकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाग (राग, अनुराग, विराग, त्याग, भाग, पराग, राग) · रदीफ: मौनमे गमकैए · शेर: ६

सोर दूर रहै छै, श्वास धीरे चलैए / सोर दूर रहै छै, राग मौनमे गमकैए
राति दीप जरै छै, तार दूर चमकैए / मनुख चुप्पे बसै छै, अनुराग मौनमे गमकैए
पीर मौन रहै छै, देह तइयो कहैए / मौन ठाम बनै छै, नोर अर्थ धरैए
पाठ फेर सुनै छै, अर्थ गहिर उतरैए / श्रवण बात जगै छै, विराग मौनमे गमकैए
मनन गाँठ खोलै छै, संशय दूर सरैए / भीतर ज्ञान उठै छै, मोन ओकरा देखैए
रिक्त ठाम दिसै छै, वस्तु दूर रहैए / बोध बोध जँचै छै, त्याग मौनमे गमकैए
अभाव आँखि धरै छै, मन अर्थ गढ़ैए / स्मृति सोर घुरै छै, राति पाछाँ चलैए
अभिलेख नाम नुकै छै, इतिहास आधा रहैए / पुरना गीत उठै छै, भाग मौनमे गमकैए
छूटल लोक बोलै छै, पन्ना फेर खुलैए / कान सत्ता तोड़ै छै, शब्द ठाम पबैए
वाद धीरे घटै छै, नेह तइयो रहैए / फूल गन्ध उठै छै, पराग मौनमे गमकैए
जीत ध्वनि घटै छै, मान भीतर बढ़ैए / धीर श्वास चलै छै, राति धीरे कटैए
मौन ठाम बनै छै, अर्थ भीतर बजैए / मोन दीप बनै छै, राग मौनमे गमकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७८४ — संगीतमय रूप

भाव: मौन, श्रवण, मनन, अभाव, छूटल अभिलेख आ अन्तर्बोध।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द रूपक ७ मात्रा। मौनक भीतरक नाद उभारू; रदीफ बहुत कोमल, लगभग फुसफुसाहट-सन खुलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, इसराज आ मन्द मँजीरा। बाँसुरी आ इसराजक बीच रिक्त ठाम सेहो संगीत बनए।
मतला: मौन पीरक ठाम बनैत अछि।
२म शेर: श्रवण-मनन अर्थकेँ गाढ़ करैत अछि।
३म शेर: ज्ञान अपन ज्ञानकेँ फेर देखैत अछि।
४म शेर: अभाव सेहो ज्ञानक विषय होइत अछि।
५म शेर: छूटल अभिलेख इतिहासक मौन भाग अछि।
६म शेर: वादक बाद ध्वनि घटि मान बचबाक चाही।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम मौन स्वयं संगीतक भाग बनि रहए।

गजल ७८५ — पएर रोक घेरै छै, आकाश पार निकलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाश (आकाश, प्रकाश, अवकाश, विकास, निवास, विनाश, उपहास) · रदीफ: पार निकलैए · शेर: ६

पएर रोक घेरै छै, मोन पाँखि खोलैए / पएर रोक घेरै छै, आकाश पार निकलैए
दीप बाट खोलै छै, राति डर घटैए / पथ खुलल रहै छै, प्रकाश पार निकलैए
सीमा देह घेरै छै, चाह तइयो बचैए / सुविधा राह बनै छै, क्षमता रूप धरैए
ज्ञान गाँठ काटै छै, मोह धीरे हटैए / दरवज्जा नीच रहै छै, अवकाश पार निकलैए
कर्म मोन सजै छै, बोध मुक्ति कहैए / क्षण रूप बदलै छै, याद तइयो जुड़ैए
रूप मेल सिखै छै, नाम फेर बनैए / मीत फेर देखै छै, विकास पार निकलैए
सादृश्य नाम सिखै छै, भेद तइयो रहैए / चिन्ह घर कहै छै, पएर फेर घुरैए
पाँखि भार सहै छै, पवन रूप बदलैए / अनुमान बाट खोलै छै, निवास पार निकलैए
आकाश दूर खुलै छै, उड़ान माप जँचैए / नेह डोर धरै छै, संग स्वतन्त्र रहैए
हँसी तीर बनै छै, मान तइयो बचैए / मोह जाल टूटै छै, विनाश पार निकलैए
लोक हाथ धरै छै, उपहास दूर सरैए / पाँखि फेर खुलै छै, पएर जमीन छुबैए
मुक्ति मोन खुलै छै, जग बीचहि बनैए / आकाश दूर रहै छै, उपहास पार निकलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७८५ — संगीतमय रूप

भाव: स्वतन्त्रता, पहुँच, ज्ञान, स्मृति, सादृश्य आ व्यवहारगत अनुमान।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। उड़ानक भाव लेल आरोह विस्तृत राखू; रदीफ पर श्वास खुलल छोड़ू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, तबला आ हलुक घुँघरू-ध्वनि। घुँघरू-ध्वनि उड़ानक हलुक पएर दे, भार नहि।

मतला: स्वतन्त्रता वास्तविक विकल्पसँ मापल जाए।

२म शेर: परिवेश क्षमता बढ़ा वा घटा सकैत अछि।

३म शेर: ज्ञान बन्धनक गाँठ काटैत अछि।

४म शेर: स्मृति बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता दैत अछि।

५म शेर: सादृश्य नाम सीखबैत, अभिन्नता नहि।

६म शेर: अनुमान बिनु व्यवहार चलब कठिन।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन पाँखिकेँ जमीनसँ सम्बन्ध राखिते आकाश दे।

गजल ७८६ — पुरना बीज बचै छै, मूल जड़ि धरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूल (मूल, फूल, धूल, शूल, भूल, कूल, मूल) · रदीफ: जड़ि धरैए · शेर: ६

जड़ि गहिर धरै छै, नव पात निकलैए / पुरना बीज बचै छै, मूल जड़ि धरैए
गाछ पवन सहै छै, डार फेर झुकैए / ऋतु रूप बदलै छै, फूल जड़ि धरैए
परम्परा प्रश्न सहै छै, लोक तइयो जँचैए / गौरव आँखि ढकै छै, प्रमाण बाट देखैए
लोक बोली बचै छै, ज्ञान ताहिमे रहैए / स्रोत फेर जँचै छै, धूल जड़ि धरैए
बड़ भाषा चमकै छै, छोट सोर नुकैए / पाठ भिन्न मिलै छै, अर्थ संग खुलैए
कारण नियम टिकै छै, खेत फल धरैए / तात्पर्य एक बनै छै, शूल जड़ि धरैए
बीज ऋतु मानै छै, काज फेर चलैए / लक्षण पैघ बनै छै, आन रूप घुसैए
कूल नीर रोकै छै, धार तइयो कटैए / सीमा छोट बनै छै, भूल जड़ि धरैए
पुरना नियम जँचै छै, दोष भेटल बदलैए / ज्ञान दोष सुधारै छै, जीवन संग चलैए
क्रम फूल सजै छै, कर्ता प्रश्न उठैए / माटि पएर धरै छै, कूल जड़ि धरैए
व्यवस्था अर्थ कहै छै, मोन मूल तकैए / परम्परा दीप जरै छै, तेल फेर भरैए
जड़ि गहिर रहै छै, पात आकाश छुबैए / जाँच नेह बचबै छै, मूल जड़ि धरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७८६ — संगीतमय रूप

भाव: परम्परा, जड़ि, प्रमाण, लोकभाषा, लक्षण आ बदलैत जीवन।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: दादरा ६ मात्रा। जड़िक गहिराइ लेल मध्य-मन्द्र स्वर अधिक राखू; रदीफ पर स्थिर थिराव दिअ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, बाँसुरी आ मृदु तबला। एकताराक स्थिर धुनि जड़िक गहिराइ थामए।

मतला: परम्पराक गौरव प्रमाणक बदला नहि।

२म शेर: छोट भाषा ज्ञानक वैध घर होइत अछि।

३म शेर: भिन्न पाठ समन्वयसँ अर्थ बनबैत अछि।

४म शेर: कारण-नियम परम्परासँ स्वतन्त्र जाँचल जाए।

५म शेर: लक्षण बेसी पैघ वा छोट दूनू दोषपूर्ण।

६म शेर: व्यवस्थित क्रम कारणक प्रश्न जगबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर जड़ि आ पात दुनूक सम्बन्ध थामए।

गजल ७८७ — पीर देह कहै छै, ताप देहमे सिहरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाप (ताप, छाप, थाप, संताप, माप, जाप, आलाप) · रदीफ: देहमे सिहरैए · शेर: ६

पीर देह कहै छै, मोन चुप्पे सुनैए / पीर देह कहै छै, ताप देहमे सिहरैए
पएर थाकि रुकै छै, श्वास धीरे चलैए / हाथ माथ छुबै छै, छाप देहमे सिहरैए
देह जग छुबै छै, जग एहिसँ खुलैए / चाल गन्ध मिलै छै, स्मृति संग उठैए
ज्ञाता रूप देखै छै, ज्ञान बीच बनैए / धड़कन ताल धरै छै, थाप देहमे सिहरैए
ज्ञेय सोझाँ रहै छै, भेद तइयो बचैए / रूप सोझाँ खुलै छै, पहिले आँखि धरैए
भोजन गन्ध उठै छै, रस जिह्वा छुबैए / नाम पाछाँ अबै छै, संताप देहमे सिहरैए
इन्द्रिय संग जुड़ै छै, बोध एक्के उठैए / नोर पीर कहै छै, न्याय बाट माँगैए
कर्म फल रहै छै, याद काल पकड़ैए / गरिमा मान धरै छै, माप देहमे सिहरैए
काज आन छुबै छै, अपन भाग बनैए / नैतिक भार उठै छै, मोन फेर जँचैए
मौन संगीत बनै छै, नाड़ी ताल धरैए / श्वास मन्त्र बनै छै, जाप देहमे सिहरैए
नेह हाथ बढ़ै छै, देह डर घटैए / सुननाइ काज बनै छै, पीर ठाम पबैए
देह जग खोलै छै, मोन भीतर खुलैए / राति गीत उठै छै, आलाप देहमे सिहरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७८७ — संगीतमय रूप

भाव: देहक अनुभव, इन्द्रिय, गरिमा, ज्ञाता-ज्ञेय भेद आ नैतिक भार।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: झपताल १० मात्रा। देहक धड़कन जकाँ ताल सुनाओ; रदीफ पर कम्पन सूक्ष्म रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, पखावज आ नादमय तान। पखावज धड़कन-जकाँ सुनाउ, प्रदर्शन-जकाँ नहि।

मतला: देह जग बुझबाक जीवित माध्यम अछि।

२म शेर: पीरक छाप शरीरमे बोलैत अछि।

३म शेर: ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय भिन्न भूमिका रखैत अछि।

४म शेर: नामसँ पहिने रूपक बोध सम्भव।

५म शेर: अनेक इन्द्रिय एक बोधमे जुड़ैत अछि।

६म शेर: कर्मक नैतिक भार अपन मोनमे घुरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन श्वासक लयपर थिर हो, देहक सम्मान बचए।

गजल ७८८ — पन्ना फेर खुलै छै, नाम कालमे डोलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, धाम, ग्राम, विराम, परिणाम, प्रणाम, विश्राम) · रदीफ: कालमे डोलैए · शेर: ६

पन्ना फेर खुलै छै, धूल धीरे उड़ैए / पन्ना फेर खुलै छै, नाम कालमे डोलैए
घण्टा सोर रहै छै, देवाल रंग झरैए / लोक दूर चलै छै, धाम कालमे डोलैए
इतिहास सोर धरै छै, छूटल नाम रहैए / सत्ता पन्ना चुनै छै, आन नाम नुकैए
बोध जग चलै छै, काज तइयो रहैए / पुरना बाट बदलै छै, ग्राम कालमे डोलैए
ज्ञान जग देखै छै, व्यवहार संग चलैए / याद मीत जोड़ै छै, क्षण बीच जुड़ैए
दाबी अभिलेख कहै छै, स्रोत फेर जँचैए / चेहरा फेर देखै छै, विराम कालमे डोलैए
पत्र तारीख धरै छै, झूठ पकड़ि खुलैए / काल क्रम बनै छै, कारण संग जुड़ैए
क्षमा याद रखै छै, दोष तइयो कहैए / फल पाछाँ अबै छै, परिणाम कालमे डोलैए
न्याय देर सहै छै, पत्र साँच बोलैए / लोक माथ झुकै छै, मृत नाम सुनैए
राति काज रुकै छै, इतिहास नहि रुकैए / मान स्मृति धरै छै, प्रणाम कालमे डोलैए
भोर पन्ना खुलै छै, नव प्रश्न उठैए / काल पन्ना फेरै छै, लोक अर्थ गढ़ैए
स्मृति काज माँगै छै, भविष्य सोझाँ रहैए / थाकल दिन ढलै छै, विश्राम कालमे डोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७८८ — संगीतमय रूप

भाव: इतिहास, अभिलेख, छूटल नाम, स्मृति आ समयक गतिशीलता।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा। कालक झूला जकाँ आरोह-अवरोह बदलू; रदीफ पर पाछाँ मुड़ैत मींड राखू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, संतूर आ विरल तबला। संतूरक प्रतिध्वनि कालक दूरि अनुभव कराउ।

मतला: इतिहास स्मृति आ उत्तरदायित्व दुनू अछि।

२म शेर: अभिलेख सत्ता चुनि सकैत अछि।

३म शेर: बोधक बादो व्यवहार चलैत रहैत अछि।

४म शेर: प्रत्यभिज्ञा कालक बीच पहचान जोड़ैत अछि।

५म शेर: तारीख-स्रोत दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: फल देरिसँ अबितो कारण-क्रम लोप नहि होइत।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम मींड कालमे विलीन नहि, स्मृतिमे घुरए।

गजल ७८९ — दाबी जोर करै छै, बात साँचमे टिकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, घात, जात, पात, प्रभात, आघात) · रदीफ: साँचमे टिकैए · शेर: ६

दाबी जोर करै छै, प्रमाण फेर जँचैए / दाबी जोर करै छै, बात साँचमे टिकैए
राति सोर बढ़ै छै, झूठ रंग धरैए / भोर तथ्य खुलै छै, रात साँचमे टिकैए
लोक मान कहै छै, साँच प्रमाण माँगैए / बाह्य जग रोकै छै, शब्द सीमा बुझैए
दीप अपनहि जरै छै, आन सहारा घटैए / सेतु टूटि पड़ै छै, घात साँचमे टिकैए
बोध अपन खुलै छै, छाह दूर सरैए / रूप बाहर रहै छै, ज्ञान ओकरा धरैए
नव ज्ञान उठै छै, प्रश्न तुरत जगैए / स्वप्न भोर टूटै छै, जात साँचमे टिकैए
प्रामाण्य फेर जँचै छै, काज फल कहैए / आन मत सुनै छै, अपन अर्थ सुधारैए
डर रोष बढ़ै छै, सत्य तइयो कहैए / प्रतिपक्ष मान पबै छै, पात साँचमे टिकैए
सत्ता द्वार बन्दै छै, लोक बाट बनैए / नोर साक्ष्य बनै छै, इतिहास फेर खुलैए
घाव दाग रहै छै, न्याय बाट माँगैए / भोर दीप उगै छै, प्रभात साँचमे टिकैए
दोष नाम बदलै छै, पीर तइयो रहैए / साँच मान बचबै छै, करुणा संग चलैए
सत्य काज माँगै छै, उत्तरदायित्व रूप बनैए / लोक फेर उठै छै, आघात साँचमे टिकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७८९ — संगीतमय रूप

भाव: साँच, प्रमाण, यथार्थक प्रतिरोध, करुणा आ न्यायपूर्ण वाद।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: दादरा ६ मात्रा। साँचक दृढ़ता लेल स्वर स्पष्ट राखू; रदीफ पर अनावश्यक अलंकार नहि जोड़ू।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, तबला आ मन्द झाँझ। इसराजक सीधा स्वर साँचक कठोरता आ करुणा दुनू राखए।
मतला: साँच समुदाय-स्वीकृति मात्र नहि।
२म शेर: भाषा जगकेँ मनमाना नहि बना सकैत।
३म शेर: बोध अपन प्रकाश धरैत अछि।
४म शेर: बाह्य वस्तु ज्ञानसँ पृथक् रहैत अछि।
५म शेर: नव ज्ञानक प्रामाण्य जाँचल जाए।
६म शेर: प्रतिपक्षक अर्थ पहिने न्यायसँ बुझल जाए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन साँचकेँ नारा नहि, उत्तरदायी प्रश्न बनाकऽ छोड़ए।

गजल ७९० — दीप राति जरै छै, नेह मोनमे उजरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेह (नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, नेह) · रदीफ: मोनमे उजरैए · शेर: ६

दीप राति जरै छै, छाँह धीरे सरैए / दीप राति जरै छै, नेह मोनमे उजरैए
हाथ हाथ मिलै छै, रोष दूर हटैए / मान संग बढ़ै छै, देह मोनमे उजरैए
मत भिन्न रहै छै, गरिमा एक्के रहैए / आन राह चलै छै, नेह तइयो बनैए
ज्ञान प्रेम मिलै छै, दुनू मूल तकैए / घर काज बँटै छै, गेह मोनमे उजरैए
मोह धीरे घटै छै, बोध पथ खुलैए / पीर मूल हटै छै, श्वास फेर बढ़ैए
रूप मेल देखै छै, नाम आन सिखैए / मेह पात चमकै छै, मेह मोनमे उजरैए
भेद तइयो रहै छै, सादृश्य बाट खोलैए / चाह मोन जगै छै, विरक्ति माप धरैए
प्रेम डोर धरै छै, स्वतन्त्रता संग रहैए / लोभ दूर सरै छै, स्नेह मोनमे उजरैए
दूरी देह रहै छै, नेह डोर बचैए / पत्र सोर बनै छै, राति पाछाँ कटैए
लोक दोष मानै छै, क्षमा तइयो अटकैए / मौन नाम कहै छै, विदेह मोनमे उजरैए
याद न्याय माँगै छै, नेह रोष घटैए / दीप तेल पिबै छै, आगि ऊष्मा छोड़ैए
प्रेम काज जगै छै, काज रूप धरैए / भोर द्वार खुलै छै, नेह मोनमे उजरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७९० — संगीतमय रूप

भाव: नेह, गरिमा, स्वतन्त्रता, ज्ञान-प्रेम, पीर-निवृत्ति आ सादृश्य।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। नेहक उजास लेल कोमल मध्य-सप्तक राखू; रदीफ पर स्वर मुस्की-जकाँ खुलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, बाँसुरी आ कोमल मृदंग-स्पर्श। मृदंग-स्पर्श नेहक उजासमे उष्मा जोड़ए।

मतला: भिन्न मत मानवीय गरिमा नहि घटबैत।

२म शेर: देखभालक श्रम साझा काज रूपेँ नेहकेँ ठोस बनबैत अछि।

३म शेर: ज्ञान आ प्रेम विरोधी नहि।

४म शेर: पीरक मूल हटब अपनेमे मूल्यवान।

५म शेर: सादृश्य नाम सिखबैत, भेद बचबैत।

६म शेर: विरक्ति प्रेमकेँ स्वामित्वसँ पृथक् करैत।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम उजास नेहकेँ स्वामित्वसँ मुक्त राखए।

गजल ७९१ — राख छाँह धरै छै, गीत राखसँ फूलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, प्रीत, रीत, मीत, जीत, अतीत, शीत) · रदीफ: राखसँ फूलैए · शेर: ६

राख छाँह धरै छै, आगि पाछाँ रहैए / राख छाँह धरै छै, गीत राखसँ फूलैए

टूटल घर रहै छै, हाथ ईंट धरैए / लोक संग बनै छै, प्रीत राखसँ फूलैए

भूत काज कहै छै, वर्तमान तइयो चलैए / कर्म बाट खोलै छै, हाथ नव करैए

ज्ञान कर्म सँवारै छै, मोन मलिन घटैए / मोन छाँह हटै छै, रीत राखसँ फूलैए

आवरण दूर हटै छै, बोध फेर उगैए / वस्तु राख बनै छै, नाश आन कहैए

काज फल मिलै छै, ज्ञान फेर पकैए / भेद जखन खुलै छै, मीत राखसँ फूलैए

असफल राह कहै छै, दोष कतय रहैए / कारण दूर नुकै छै, फल तइयो अबैए

स्मृति राख धरै छै, भविष्य पात उगैए / मूल फेर जँचै छै, जीत राखसँ फूलैए

घाव दाग रहै छै, जीवन तइयो बढ़ैए / लोक पुनर्निर्माण करै छै, माटि रूप बदलैए

शीत राति घटै छै, भोर पवन चलैए / काल पन्ना फेरै छै, अतीत राखसँ फूलैए

बीज राखि धरै छै, मेह पाछाँ पड़ैए / फूल रंग धरै छै, गन्ध लोक भरैए

राख बीज धरै छै, नव काज जनमैए / भोर धूप चढ़ै छै, शीत राखसँ फूलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७९१ — संगीतमय रूप

भाव: विनाश पाछाँ पुनर्निर्माण, कर्म, स्मृति आ नवजीवन।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। राखसँ नव फूलक भाव लेल मन्द्रसँ धीरे आरोह करू; रदीफ पर नव रंग उभरए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, सारंगी आ विरल तबला। एकतारा राखक निस्तब्धता पाछाँ नव जीवनक स्वर उघारए।

मतला: भूत कारण वर्तमान काजकेँ बन्द नहि करैत।

२म शेर: संरचना घाव दैत, मुदा परिवर्तन सम्भव।

३म शेर: कर्म मोन तैयार करैत, ज्ञान दिशा दैत।

४म शेर: वस्तु आ विनाशक भेद राखक बिम्बमे खुलैत।

५म शेर: फलसँ ज्ञान जाँचल जाइत।

६म शेर: लुकायल कारण परिणाममे फेर देखाइ पड़ैत।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन राखक भीतर नव अँकुरक सम्भावना सुनाउ।

गजल ७९२ — रेखा नाम बनै छै, पहचान सीमा गलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (पहचान, मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, गान) · रदीफ: सीमा गलैए · शेर: ६

रेखा नाम बनै छै, लोक पार रहैए / रेखा नाम बनै छै, पहचान सीमा गलैए
जात वर्ग कहै छै, मनुख तइयो बदलैए / गरिमा एक्के रहै छै, मान सीमा गलैए
श्रेणी काज सजै छै, जड़ सत्य बदलैए / दोष भेटल बदलै छै, भाषा फेर बनैए
रूप कुण्डल बनै छै, मूल तइयो रहैए / सोन मूल रहै छै, ज्ञान सीमा गलैए
नाम आन हटै छै, सकारात्मक रूप बचैए / सीमा पैघ बनै छै, आन वस्तु घुसैए
नियम मनुख गढ़ै छै, परिणाम तइयो रहैए / सीमा छोट बनै छै, ध्यान सीमा गलैए
कानून नाम बदलै छै, जीवन असर सहैए / विकल्प एक कहै छै, दोष आन खुलैए
चिन्ह बोध जगै छै, संशय तइयो रहैए / तर्क शाख बनै छै, विधान सीमा गलैए
उपाधि दूर नुकै छै, संबंध फेर जँचैए / मानचित्र रेखा खींचै छै, नदी तइयो बहैए
गीत भाषा बदलै छै, भाव तइयो चलैए / देश पार खुलै छै, अनुमान सीमा गलैए
मोन वर्ग छोड़ै छै, मनुख सोझाँ रहैए / पहचान रूप बदलै छै, जीवन अनेक रहैए
गरिमा काज माँगै छै, व्यवहारमे मान बनैए / सीमा धीरे गलै छै, गान सीमा गलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७९२ — संगीतमय रूप

भाव: पहचान, वर्ग, सीमा, गरिमा, लक्षण आ सामाजिक निर्माण।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: रूपक ७ मात्रा। सीमा गलबाक भाव लेल कठोर ठहराव कम करू; रदीफ पर स्वर एक रेखासँ दोसर रेखा पार करए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, स्वरमण्डल, बाँसुरी आ मन्द तबला। स्वरमण्डल सीमा गलबाक तरलता बढ़ाए।

मतला: पहचान गरिमाक एकमात्र आधार नहि।

२म शेर: श्रेणी संशोध्य अछि।

३म शेर: मूल पदार्थ आ रूप-विशेष पृथक् बुझल जाए।

४म शेर: सकारात्मक अर्थ बहिष्कार मात्र नहि।

५म शेर: लक्षणक सीमा सही हो।

६म शेर: विकल्प-विश्लेषण कठोर परिभाषा तोड़ैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम तान सीमा मिटेबाक बदला ओकर परिवर्तन देखाउ।

गजल ७९३ — रूप नाम बदलै छै, स्वरूप नामसँ छूटैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूप (रूप, स्वरूप, प्रतिरूप, अनूप, धूप, कूप, कुरूप) · रदीफ: नामसँ छूटैए · शेर: ६

रूप नाम बदलै छै, मोन तइयो देखैए / रूप नाम बदलै छै, रूप नामसँ छूटैए
बालपन दूर सरै छै, बोध भीतर रहैए / चेहरा काल बदलै छै, स्वरूप नामसँ छूटैए
शब्द वर्ग बनै छै, अनुभव तइयो बढ़ैए / नाम सत्ता धरै छै, लोक अर्थ बदलैए
वाक्य अर्थ जुड़ै छै, शब्द सीमा लाँघैए / चित्र लोक गढ़ै छै, प्रतिरूप नामसँ छूटैए
प्रसंग अर्थ खोलै छै, तात्पर्य फेर खुलैए / ज्ञाता रूप देखै छै, ज्ञान बीच रहैए
मोन अपन देखै छै, बाह्य नेत्र रुकैए / ज्ञेय सोझाँ रहै छै, अनूप नामसँ छूटैए
अन्तर्बोध भीतर उठै छै, देह श्वास धरैए / सूरज धूप फैलै छै, ताप तइयो छुबैए
कूप जल धरै छै, नाम गाँव बदलैए / दिन पात चमकै छै, धूप नामसँ छूटैए
नीर स्वाद रहै छै, प्यास तइयो बुझैए / नैतिक बोध उठै छै, लाभ पाछाँ हटैए
रूप सुन्नर कहै छै, मान माप बदलैए / मोन साक्षी कहै छै, कूप नामसँ छूटैए
दृष्टि पक्ष धरै छै, गरिमा तइयो रहैए / नाम घाव करै छै, मनुख रूप बदलैए
मनुख नाम छूटै छै, नेह सोझाँ रहैए / हँसी घाव करै छै, कुरूप नामसँ छूटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७९३ — संगीतमय रूप

भाव: नाम, रूप, पहचान, प्रसंग, अन्तर्बोध आ गरिमा।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। नामक खोल उतरबाक भाव लेल शब्द साफ राखू; रदीफ पर स्वर बाहरी जोर छोड़ि भीतर जाए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, मृदु तबला आ बाँसुरी। सरोद नामक बाहरी खोलसँ भीतरक स्वर धरि जाए।

मतला: भाषा अनुभव वर्गीकृत करैत अछि।

२म शेर: नाम सामाजिक शक्ति धारण करैत अछि।

३म शेर: वाक्यार्थ शब्द-समुच्चय मात्र नहि।

४म शेर: ज्ञाता-ज्ञान-ज्ञेय भिन्न।

५म शेर: तात्पर्य अर्थ निश्चित करैत अछि।

६म शेर: भीतरक नैतिक साक्षी नाम-पार प्रश्न उठबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन नाम पाछाँ मनुखक बहुवचन छोड़ए।

गजल ७९४ — नदी याद बहै छै, धार स्मृतिमे घुरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (धार, सार, भार, पार, तार, द्वार, हार) · रदीफ: स्मृतिमे घुरैए · शेर: ६

नदी याद बहै छै, कूल धीरे सरैए / नदी याद बहै छै, धार स्मृतिमे घुरैए
बालपन नाव चलै छै, भोर नीर चमकैए / मीत दूर रहै छै, सार स्मृतिमे घुरैए
क्षमा रोष घटै छै, घटना तइयो रहैए / विस्मरण दोष ढकै छै, पन्ना फेर खुलैए
पुरना छवि उठै छै, देह ओकरा देखैए / घर छवि चढ़ै छै, भार स्मृतिमे घुरैए
भेद अध्यास खुलै छै, मोन छाँह हटैए / चेहरा फेर मिलै छै, काल पुल बनैए
अभिलेख शब्द रहै छै, सोर फेर उठैए / पहिचान फेर जगै छै, पार स्मृतिमे घुरैए
लोक कथा कहै छै, छूटल नाम उठैए / कारण काज जुड़ै छै, फल पाछाँ अबैए
नदी फेर बहै छै, कूल नव बनैए / नैतिक भार टिकै छै, तार स्मृतिमे घुरैए
याद अर्थ बदलै छै, काल संग चलैए / गीत पुरना उठै छै, नव कंठ गबैए
हार मोन कहै छै, उठि फेर चलैए / घर द्वार खुलै छै, द्वार स्मृतिमे घुरैए
दुःख नाम रहै छै, जीवन तइयो बढ़ैए / नोर नीर मिलै छै, नदी दुख बहैए
स्मृति बीज धरै छै, भविष्य बाट बनैए / भोर धार चमकै छै, हार स्मृतिमे घुरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७९४ — संगीतमय रूप

भाव: स्मृति, क्षमा, अध्यास, प्रत्यभिज्ञा, अभिलेख आ नैतिक भार।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। स्मृति-प्रवाह लेल मींड लम्बा राखू; रदीफ पर स्वर घुरि कऽ मूल स्वर छुबए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, पखावजक धीमा ठेक आ बाँसुरी। पखावजक धीमा ठेक स्मृतिक घुरैत चाल थामए।
मतला: क्षमा विस्मरण नहि।
२म शेर: स्मृति नित्य एकरूप नहि।
३म शेर: पुरान छवि नव दृश्यपर चढ़ि सकैत अछि।
४म शेर: प्रत्यभिज्ञा कालक पुल बनैत अछि।
५म शेर: अभिलेख छूटल सोरकेँ फेर उठबैत अछि।
६म शेर: कारण-फल नैतिक स्मृतिमे टिकैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर नदी जकाँ स्मृतिसँ भविष्य दिस बहए।

गजल ७९५ — लोक सोर जुड़ै छै, रंग लोकमे बजैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, प्रसंग, तरंग, उमंग) · रदीफ: लोकमे बजैए · शेर: ६

लोक सोर जुड़ै छै, ढोल धीरे उठैए / लोक सोर जुड़ै छै, रंग लोकमे बजैए
बाँसुरी पवन छुबै छै, पएर ताल धरैए / हाथ हाथ मिलै छै, संग लोकमे बजैए
मत भिन्न रहै छै, काज एक्के बनैए / पर्व सबकेँ जोड़ै छै, मान संग बढ़ैए
पाठ सोर मिलै छै, अर्थ संग खुलैए / भाषा अनेक रहै छै, ढंग लोकमे बजैए
समन्वय धुनि बनै छै, पाँति संग जुड़ैए / गुण संग मिलै छै, देह जोड़ लाँघैए
वाक्य शब्द माँगै छै, क्रम संग रहैए / अंश संग जुड़ै छै, अंग लोकमे बजैए
आकांक्षा योग्यता मिलै छै, अर्थ फेर खुलैए / आदेश सोर उठै छै, पएर काज धरैए
छूटल जात बोलै छै, मंच ठाम खोलैए / उत्सव मान बढ़ै छै, प्रसंग लोकमे बजैए
पुरना गीत घुरै छै, नव कंठ उगैए / नदी ताल मिलै छै, नाव धीरे डोलैए
माटि गन्ध चढ़ै छै, भोजन नेह जगैए / कूल सोर उठै छै, तरंग लोकमे बजैए
साझा थाल खुलै छै, दूरी धीरे घटैए / गीत लोक जुड़ै छै, समुदाय रूप धरैए
लोक गीत गमकै छै, स्मृति कागज लाँघैए / भोर ढोल उठै छै, उमंग लोकमे बजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७९५ — संगीतमय रूप

भाव: लोकगीत, समुदाय, भाषिक बहुलता, समन्वय, वाक्यार्थ आ वाक्-कर्म।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: दादरा ६ मात्रा। लोक-गायनक खुलापन राखू; रदीफ पर समूह-प्रतिध्वनि सम्भव, मुदा मूल पाँति साफ रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, एकतारा आ मन्द मँजीरा। एकतारा लोक-सोरकेँ केन्द्रमे राखए, वाद्य ओकर पाछाँ चलए।
मतला: अन्तिम मतभेद बिनु साझा काज सम्भव।
२म शेर: लोकभाषा ज्ञानक मान्य माध्यम।
३म शेर: भिन्न सोर समन्वयसँ एक धुनि बनैत।
४म शेर: गुणक जोड़ समग्र देह नहि।
५म शेर: वाक्यार्थ सम्बन्धक शर्तसँ बनैत।
६म शेर: आज्ञा व्यवहार जगबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन लोकक सामूहिक सोरमे खुलल रहए।

गजल ७९६ — पएर माटि छुबै छै, देश माटिसँ जनमैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेश (देश, वेश, परिवेश, सन्देश, प्रवेश, अवशेष, निर्देश) · रदीफ: माटिसँ जनमैए · शेर: ६

पएर माटि छुबै छै, गन्ध मोन भरैए / पएर माटि छुबै छै, देश माटिसँ जनमैए
भाषा घर कहै छै, लोक अर्थ गढ़ैए / पोशाक रूप बदलै छै, वेश माटिसँ जनमैए
नदी खेत गढ़ै छै, बाढ़ पीर बढ़ैए / न्याय बाँध जँचै छै, भार ककरा पड़ैए
छोट भाषा नुकै छै, अनुभव संग नुकैए / सड़क राह बदलै छै, परिवेश माटिसँ जनमैए
शब्द मान पबै छै, ज्ञान दरवज्जा खोलैए / कर्म मोन सजै छै, बोध मूल कहैए
बाह्य जग रहै छै, भाषा सीमा धरैए / काज हाथ चलै छै, सन्देश माटिसँ जनमैए
फसल असफल कहै छै, सिद्धान्त फेर जँचैए / धूम आगि कहै छै, उपाधि तइयो खोजैए
कारण क्रम खुलै छै, अनुमान बाट खोलैए / हेतु संग जँचै छै, प्रवेश माटिसँ जनमैए
घर दूर बनै छै, चिन्ह राह खोलैए / पुरना ईंट रहै छै, इतिहास गन्ध छोड़ैए
आदेश नक्शा गढ़ै छै, लोक पएर चलैए / धूल पन्ना ढकै छै, अवशेष माटिसँ जनमैए
निर्णय भार बढ़ै छै, उत्तरदायित्व पाछाँ अबैए / विकास मान जँचै छै, न्याय संग रहैए
माटि इतिहास धरै छै, इतिहास भीतर बोलैए / लोक प्रश्न उठै छै, निर्देश माटिसँ जनमैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७९६ — संगीतमय रूप

भाव: माटि, भाषा, पर्यावरण, न्याय, यथार्थक प्रतिरोध आ कारण-जाँच।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: झपताल १० मात्रा। माटिक गन्धक भाव लेल स्वर गरम आ स्थिर राखू; रदीफ पर जमीनक भार अनुभव हो।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, सारंगी आ विरल तबला। संतूरक सूक्ष्म झंकार माटिक कण-जकाँ बिखरए।

मतला: पर्यावरणक असर वितरणसँ नैतिक बनैत।

२म शेर: स्थानीय भाषा अनुभवक ज्ञान वहन करैत।

३म शेर: कर्म मोन तैयार करैत, ज्ञान दिशा दैत।

४म शेर: बाह्य जग सिद्धान्तकेँ सुधारैत।

५म शेर: लुकायल उपाधि सम्बन्ध तोड़ि सकैत।

६म शेर: अनुमान व्यवहार आ कारण-खोजक साधन।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर माटिक गन्ध जकाँ देहमे टिकए।

गजल ७९७ — दूर घर रहै छै, प्रीत दूरि घटैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (प्रीत, मीत, गीत, रीत, जीत, अतीत, शीत) · रदीफ: दूरि घटैए · शेर: ६

दूर घर रहै छै, पत्र सोर जगैए / दूर घर रहै छै, प्रीत दूरि घटैए
राति दूरभाष बजै छै, चेहरा छवि बनैए / शब्द दूरी छुबै छै, मीत दूरि घटैए
आन मोन नुकै छै, चिन्ह तइयो मिलैए / हँसी चाल कहै छै, पीर भीतर बुझैए
जग व्यवहार चलै छै, दूरी तइयो रहैए / शब्द दूरी छुबै छै, गीत दूरि घटैए
बोध संग चलै छै, देह बाट धरैए / पुरना मीत मिलै छै, याद पुल बनैए
रूप मेल सिखै छै, नाम आन बुझैए / पहिचान फेर जगै छै, रीत दूरि घटैए
सादृश्य भेद रखै छै, संवाद पुल बनैए / आन पक्ष सुनै छै, रोष धीरे घटैए
अतीत घाव रहै छै, क्षमा तइयो उगैए / सम्मान बात खोलै छै, जीत दूरि घटैए
न्याय याद माँगै छै, नेह दोष कहैए / राति जाड़ पड़ै छै, दीप सोझाँ जरैए
शीत श्वास बनै छै, हाथ उष्मा भरैए / घर गन्ध घुरै छै, अतीत दूरि घटैए
दूरी बाट बढ़ै छै, मनुख ठाम बनैए / संग राह अटकै छै, सुननाइ राह खोलैए
प्रीत डोर धरै छै, स्वतन्त्रता संग रहैए / भोर सोर अबै छै, शीत दूरि घटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७९७ — संगीतमय रूप

भाव: दूरी, संवाद, अन्य-मनोवृत्ति, प्रत्यभिज्ञा, उपमान आ सम्मानपूर्ण वाद।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द रूपक ७ मात्रा। दूरी घटबाक भाव लेल पहिल पाँति विरल, दोसर पाँति निकट स्वरमे गाउ।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, बाँसुरी आ मृदु तबला। इसराजक लम्बा स्वर दूरीक पुल बनए।
मतला: आनक मोन चिन्हसँ अनुमानित।
२म शेर: संचार दूरी घटबैत, देहगत दूरी मिटबैत नहि।
३म शेर: व्यवहार ज्ञानक बादो चलैत।
४म शेर: पुरान मीतक पहचान निरन्तरता दैत।
५म शेर: सादृश्य नाम सिखबैत।
६म शेर: सम्मानपूर्वक आन पक्ष सुननाइ दूरी घटबैत।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन दूरी घटाउ, व्यक्तित्व नहि मिटाउ।

गजल ७९८ — डगमग मोन रहै छै, विश्वास डोर सम्हरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (विश्वास, आस, प्रयास, उल्लास, आभास, श्वास, इतिहास) · रदीफ: डोर सम्हरैए · शेर: ६

डगमग मोन रहै छै, हाथ संग पकड़ैए / डगमग मोन रहै छै, विश्वास डोर सम्हरैए
दाबी फेर जँचै छै, स्रोत संग मिलैए / संशय जीवित रहै छै, आस डोर सम्हरैए
विश्वास प्रमाण माँगै छै, प्रमाण संग बढ़ैए / संस्था नियम धरै छै, लोक व्यवहार बनैए
श्रवण बात जगै छै, मनन गाँठ खोलैए / वचन भार बढ़ै छै, प्रयास डोर सम्हरैए
अर्थ भीतर बसै छै, पुनरावृत्ति गाढ़ करैए / धूम आगि कहै छै, व्याप्ति तइयो जँचैए
क्रम फूल सजै छै, कारण प्रश्न जगैए / अपवाद राह रोकै छै, उल्लास डोर सम्हरैए
जगत व्यवस्था कहै छै, मनुख मूल तकैए / डर रूप बनै छै, विश्वास तइयो बचैए
श्वास देह भरै छै, नेह मोन सम्हरैए / भ्रम छाँह घटै छै, आभास डोर सम्हरैए
मीत बात सुनै छै, संकट भार घटैए / सूत्र अनुभव जँचै छै, अनुभव संग बदलैए
इतिहास वचन धरै छै, झूठ फेर पकड़ैए / धीर मोन बनै छै, श्वास डोर सम्हरैए
अभिलेख स्रोत बनै छै, जाँच पन्ना खुलैए / डोर समय सहै छै, गाँठ समय कसैए
विश्वास जाँच माँगै छै, जाँच संगहि चलैए / लोक संग रहै छै, इतिहास डोर सम्हरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७९८ — संगीतमय रूप

भाव: विश्वास, संशय, संस्था, श्रवण-मनन, व्याप्ति आ कारण-क्रम।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। विश्वासक डोर लेल ताल तनिक दृढ़ राखू; रदीफ पर स्वर टूटए नहि, लचकैत रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, स्वरमण्डल आ मन्द तबला। सरोदक तार विश्वासक डोर जकाँ तनल मुदा कोमल रहए।

मतला: विश्वास प्रमाण-विरोधी नहि।

२म शेर: संस्था नियमसँ सामाजिक फल उत्पन्न करैत।

३म शेर: श्रवण-मनन अर्थ गाढ़ करैत।

४म शेर: कारण-सम्बन्ध अपवादसँ जँचल जाए।

५म शेर: व्यवस्था कारणक प्रश्न जगबैत।

६म शेर: इतिहास विश्वासक डोर जाँचैत रहैत।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम ठहराव डोरकेँ कसए नहि, सम्हारए।

गजल ७९९ — पएर मोड़ पड़ै छै, उपाय दिशा मुड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाय (उपाय, न्याय, सहाय, अध्याय, आशय, पर्याय, अभिप्राय) · रदीफ: दिशा मुड़ैए · शेर: ६

पएर मोड़ पड़ै छै, नक्शा फेर खुलैए / पएर मोड़ पड़ै छै, उपाय दिशा मुड़ैए
राति बाट नुकै छै, तारा राह खोलैए / संकट प्रश्न उठै छै, न्याय दिशा मुड़ैए
चयन भार बढ़ै छै, विकल्प तइयो रहैए / दबाव माप बदलै छै, उत्तरदायित्व फेर जँचैए
सुविधा बाट खोलै छै, दूरी रूप बदलैए / सड़क दीप माँगै छै, सहाय दिशा मुड़ैए
आवरण आँखि ढकै छै, ज्ञान छाह हटैए / बोध बाट खोलै छै, मोह पाछाँ सरैए
चाह मोन जगै छै, यत्न पएर चलैए / यात्रा पाठ बनै छै, अध्याय दिशा मुड़ैए
यत्न राह मिलै छै, बोध फेर पकैए / असफल राह कहै छै, योजना फेर बदलैए
विकल्प एक टूटै छै, पर्याय फेर बचैए / प्रसंग शब्द खोलै छै, आशय दिशा मुड़ैए
तर्क शाख खुलै छै, दोष कतय रहैए / बाट फेर मुड़ै छै, मोड़ फेर अबैए
मीत संग चलै छै, निर्णय अपन रहैए / नव राह मिलै छै, पर्याय दिशा मुड़ैए
संग बल बढ़ै छै, स्वतन्त्रता तइयो बचैए / यात्रा मान बदलै छै, घर अर्थ बदलैए
अन्त मोड़ बनै छै, चलन ज्ञान बनैए / पएर धूल धरै छै, अभिप्राय दिशा मुड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ७९९ — संगीतमय रूप

भाव: यात्रा, विकल्प, दबाव, पहुँच, इच्छा-यत्न-काज आ बदलैत दिशा।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। यात्राक मोड़ जकाँ शेर-दर-शेर आरोह बदलू; रदीफ पर दिशा-फेर स्पष्ट सुनाउ।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, बाँसुरी आ हलुक कहरवा-ठेक। कहरवा-ठेक यात्राक पएर दे, बाँसुरी दिशा बदलबाक संकेत करए।
मतला: चयन परिस्थिति भीतर होइत अछि।
२म शेर: सुविधा वास्तविक विकल्प बदलैत अछि।
३म शेर: ज्ञान आवरण हटबैत अछि।
४म शेर: इच्छा-यत्न-काज-फल क्रम बनैत अछि।
५म शेर: फलसँ योजना जाँचल जाइत अछि।
६म शेर: विकल्प-विश्लेषण दिशा बदलि सकैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन यात्रा रोकए नहि, नव मोड़ दिस धकेलए।

गजल ८०० — गीत काल लाँघै छै, गीत अन्त लाँघैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, प्रीत, मीत, रीत, जीत, अतीत, शीत) · रदीफ: अन्त लाँघैए · शेर: ६

गीत काल लाँघै छै, श्वास तइयो चलैए / गीत काल लाँघै छै, गीत अन्त लाँघैए

पन्ना धीरे मुड़ै छै, प्रश्न फेर खुलैए / ज्ञान सीमा कहै छै, प्रीत अन्त लाँघैए

अन्तिम बात खुलै छै, संवाद तइयो रहैए / विचार फेर चलै छै, मत फेर बदलैए

बोध अपन खुलै छै, साक्षी भीतर रहैए / दीप अपन जरै छै, मीत अन्त लाँघैए

क्षण देह बदलै छै, स्मृति डोर जुड़ैए / काल बीच बहै छै, पहचान तइयो रहैए

ज्ञान अपन देखै छै, मोन फेर जँचैए / पुरना रीत बदलै छै, रीत अन्त लाँघैए

बोध बोध पकड़ै छै, प्रश्न आरो उठैए / तर्क जीत पबै छै, मान तइयो रहैए

अतीत भीतर रहै छै, स्मृति संग चलैए / प्रतिपक्ष हाथ मिलै छै, जीत अन्त लाँघैए

स्मृति बीज धरै छै, भविष्य पात उगैए / शीत राति रहै छै, भोर पाछाँ अबैए

शीत देह छुबै छै, दीप ऊष्मा छोड़ैए / भोर गीत उठै छै, अतीत अन्त लाँघैए

पएर आगाँ बढ़ै छै, बाट फेर बनैए / अन्त मोड़ बनै छै, अनन्त प्रश्न जगैए

दीवान द्वार खोलै छै, पाठक भीतर चलैए / मोन मौन सुनै छै, शीत अन्त लाँघैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८०० — संगीतमय रूप

भाव: अन्तिम गजल: अन्त नहि, खुलल प्रश्न; ज्ञान, स्मृति, संवाद आ अनन्त पाठकीय जीवन।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। अन्तिम गजलमे विजय-धुनि नहि, खुलल अनन्तता राखू; रदीफ पर स्वर समाप्तिक बदला आगाँ बढ़ए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, स्वरमण्डल आ अत्यन्त मृदु तबला। अन्तिम वाद्य-विन्यास धीरे विरल हो, जेना पाठकक भीतर स्वर आगाँ चलि जाए।
मतला: ज्ञान अन्तिम सिद्धान्त नहि, खुलल अनुशासन अछि।
२म शेर: विचार आलोचना पाछाँ पुनर्निर्मित होइत अछि।
३म शेर: बोधक प्रकाश भीतर सँ उठैत अछि।
४म शेर: स्मृति बदलैत क्षणक बीच डोर बनैत अछि।
५म शेर: ज्ञान अपन ज्ञानकेँ फेर ग्रहण करैत अछि।
६म शेर: वादक जीतक बादो संवाद आ औदार्य बचल रहैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ८००क अन्तिम स्वर “समाप्त” नहि कहए; ओ पाठकक भीतर अगिला प्रश्न बनि बजैत रहए।

गजल ८०१ — दाम रोज बदलै छै, सार बाजार जँचैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, भार, व्यापार, आधार, विचार, व्यवहार, पुकार) · रदीफ: बाजार जँचैए · शेर: ६

हाट भोर खुलै छै, लोक दाम तौलैए / दाम रोज बदलै छै, सार बाजार जँचैए
अनाज ढेरी सजै छै, आँखि भाव पढ़ैए / बोरा लोक ढोवै छै, भार बाजार जँचैए
भूख देह कहै छै, धन बाट रोकैए / न्याय प्रश्न उठै छै, लोक माप खोजैए
हाथ सौदा करै छै, भरोस डोर धरैए / लाभ नियम माँगै छै, व्यापार बाजार जँचैए
नाम चमक बढ़ै छै, वस्तु तइयो रहैए / स्रोत फेर जँचै छी, भ्रम धीरे घटैए
तौल बाटखरा चलै छै, माप साँच कहैए / भरोस लोक जोड़ै छै, आधार बाजार जँचैए
श्रम हाथ थकै छै, दाम मान माँगैए / रोटी भूख कहै छै, बाँट नेह जगैए
मुनाफा माथ चढ़ै छै, हानि पाठ पढ़ैए / भूख लोक जगबै छै, विचार बाजार जँचैए
नियम दोष रोकै छै, सौदा राह बचैए / लेखा पन्ना खुलै छै, बात मूल कहैए
बोल वचन बनै छै, नाम भरोस धरैए / लोक अनुभव कहै छै, व्यवहार बाजार जँचैए
सस्ता रूप लुभै छै, टिकाउ काज बचैए / मान लोक बनबै छै, निर्णय धीरे पकैए
साँझ हाट सिमटै छै, धूल पएर चढ़ैए / भूख फेर कहै छै, पुकार बाजार जँचैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८०१ — संगीतमय रूप

भाव: हाट-बाजारमे दाम, श्रम, भूख, भरोस, प्रमाण आ न्याय।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। हाटक चाल जकाँ लय चलए; रदीफ पर तौल-जकाँ स्पष्ट थिराव रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु तबला आ मँजीरा। सारंगी दामक तनावकेँ मानवीय उष्मा दे।
मतला: दामक चमकसँ ऊपर वस्तुक सार जाँचल जाए।
२म शेर: श्रमक भार बाजारक अदृश्य आधार अछि।
३म शेर: लाभक संग नियम आ उत्तरदायित्व चाही।
४म शेर: भरोस नहि रहला पर लेन-देन टिकैत नहि।
५म शेर: भूख विचारकेँ नैतिक दिशा दैत अछि।
६म शेर: व्यवहार अन्ततः लोक-अनुभवमे जाँचल जाइत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन हाटक धूलमे लोकक आवाज छोड़ए।

गजल ८०२ — मेह राति बढ़ै छै, धार कूल बनैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (धार, पार, भार, आधार, पुकार, उद्धार, विचार) · रदीफ: कूल बनैए · शेर: ६

मेह राति बढ़ै छै, नीर आँगन भरैए / मेह राति बढ़ै छै, धार कूल बनैए
नाव रस्सी खिंचै छै, हाथ लोक जोड़ैए / नीर बाट काटै छै, पार कूल बनैए
घर भीत गलै छै, लोक छत चढ़ैए / चेतावनी देर अबै छै, पीर बेसी बढ़ैए
राह नीर ढकै छै, बोरा माथ चढ़ैए / असमान घर सहै छै, भार कूल बनैए
बाढ़ दोष खुलै छै, अन्याय असर बढ़ैए / बाँध प्रश्न जगै छै, नीति फेर जँचैए
नाव साझा चलै छै, हाथ हाथ मिलैए / सूखा ठाम बचै छै, आधार कूल बनैए
नीर उतरि जाइ छै, कीचड़ घर रहैए / रोग डर उठै छै, सेवा काज चलैए
बालक नाम पुकारै छै, भीड़ उत्तर दैए / राति सोर उठै छै, पुकार कूल बनैए
धान खेत डुबै छै, ऋण भार बढ़ैए / बीज फेर बचै छै, आस धीरे उगैए
लोक नाव बनबै छै, बाँस डोर जुड़ैए / संग काज उठै छै, उद्धार कूल बनैए
पानी रेखा छोड़ै छै, भीत इतिहास कहैए / नीति पन्ना खुलै छै, कारण लोक जँचैए
भोर धूप निकलै छै, नीर दूर सरैए / बाढ़ पाठ रहै छै, विचार कूल बनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८०२ — संगीतमय रूप

भाव: बाढ़, असमान जोखिम, साझा बचाव, पुनर्निर्माण आ सामाजिक न्याय।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। नीरक चढ़ान-उतरान जकाँ मींड राखू; रदीफ पर स्वर कूल पकड़ए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, जलतरंग आ विरल तबला। जलतरंग बाढ़क नीरक चमक आ भय दुनू सूक्ष्म करए।

मतला: प्राकृतिक घटना आ सामाजिक अन्यायक भेद।

२म शेर: पार पबैत नाव सामूहिक काजक बिम्ब।

३म शेर: असमान घर एके बाढ़क भार भिन्न रूपेँ सहैत अछि।

४म शेर: पुनर्निर्माण कारण-नीतिक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: बीज बचेनाइ भविष्यक ज्ञान अछि।

६म शेर: उद्धार मात्र दया नहि, न्यायसंगत व्यवस्था सेहो।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर नीर उतरला पाछाँ कारणक प्रश्न बचाए।

गजल ८०३ — रस्सी हाथ उतरै छै, प्यास कुआँ बोलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (प्यास, आस, विश्वास, निवास, प्रकाश, आभास, श्वास) · रदीफ: कुआँ बोलैए · शेर: ६

रस्सी हाथ उतरै छै, डोल नीर छुबैए / रस्सी हाथ उतरै छै, प्यास कुआँ बोलैए
भोर पात चमकै छै, पाखी सोर उठैए / नीर आँखि चमकै छै, आस कुआँ बोलैए
पुरना ईंट झरै छै, काई भीत चढ़ैए / स्मृति छाँह उठै छै, बालपन फेर अबैए
घेरा लोक बनबै छै, डोल हाथ बदलैए / साझा नीर बचै छै, विश्वास कुआँ बोलैए
नाम मालिक कहै छै, नीर सभकेँ चाहैए / हक प्रश्न उठै छै, सीमा फेर जँचैए
पथिक थाकि रुकै छै, छाँह देह बचैए / गाम बीच टिकै छै, निवास कुआँ बोलैए
नीर तल रहै छै, रूप ऊपर झलकैए / आँखि गहिर तकै छै, बोध धीरे उतरैए
दीप राति रखै छै, जल चेहरा धरैए / अन्हार दूर सरै छै, प्रकाश कुआँ बोलैए
डोल खाली उठै छै, प्रश्न मोन जगैए / नीर घटि जाइ छै, कारण लोक खोजैए
मेह देर पड़ै छै, धरती ताप सहैए / तल नीर नुकै छै, आभास कुआँ बोलैए
हाथ नीर बाँटै छै, मान संग बढ़ैए / प्यास आन बुझै छै, नेह भीतर जगैए
साँझ रस्सी थमै छै, गाम चुप्पे रहैए / नीर गन्ध उठै छै, श्वास कुआँ बोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८०३ — संगीतमय रूप

भाव: पुरान कुआँ: साझा नीर, स्मृति, हक, सूखा आ लोकजीवन।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। कुआँक गहिर प्रतिध्वनि जकाँ मन्द्र स्वर राखू; रदीफ पर श्वास लम्बा हो।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, एकतारा आ मृदु तबला। एकतारा पुरान कुआँक लोक-स्मृति थामए।

मतला: प्यास कुआँकेँ उपयोगसँ ऊपर अर्थ दैत अछि।

२म शेर: साझा नीर भरोस बनबैत अछि।

३म शेर: स्मृति पुरान ठामकेँ नव अर्थ दैत अछि।

४म शेर: मालिकी आ साझा हकक तनाव उठैत अछि।

५म शेर: नीर घटब कारण-जाँच माँगैत अछि।

६म शेर: बाँटब नेह आ न्याय दुनूक कसौटी अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन कुआँक गहिराइमे साझा प्यासक स्मृति रखए।

गजल ८०४ — सीटी दूर बजै छै, राह रेल चलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह) · रदीफ: रेल चलैए · शेर: ६

सीटी दूर बजै छै, पएर डिब्बा चढ़ैए / सीटी दूर बजै छै, राह रेल चलैए
माय हाथ हिलै छै, आँखि नोर भरैए / मोन घर तकै छै, चाह रेल चलैए
खिड़की खेत सरै छै, गाम पाछाँ छुटैए / नाम ठाम बदलै छै, स्मृति संग चलैए
पुल नीर लाँघै छै, डिब्बा ताल धरैए / शहर गाम जोड़ै छै, प्रवाह रेल चलैए
टिकट हाथ रहै छै, मंजिल तइयो बदलैए / अवसर दूर चमकै छै, भय भीतर उठैए
राति पटरी चमकै छै, तारा राह दिखैए / दूरी गहिर लगै छै, अथाह रेल चलैए
मीत सीट बाँटै छै, रोटी संग खाइए / भाषा भिन्न सुनै छै, हँसी दूरी घटैए
भोर स्टेशन अबै छै, भीड़ पएर उतरैए / नव काज बोलै छै, उछाह रेल चलैए
श्रम शहर खिंचै छै, घर ऋण कहैए / दाम कम पड़ै छै, काज फेर खोजैए
पैसा घर पहुँचै छै, चिट्ठी खबर दैए / परिवार साँस बढ़ै छै, निर्वाह रेल चलैए
फेर टिकट कटै छै, चक्र जीवन बनैए / पएर अपन पूछै छै, घर कतय रहैए
सीटी साँझ बजै छै, प्लेटफार्म नोर धरैए / विदा स्वर उठै छै, आह रेल चलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८०४ — संगीतमय रूप

भाव: रेल-यात्रा, प्रवास, अवसर, दूरी, परिवार आ घुरैत पहचान।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। रेल-पएर जकाँ ताल नियमित चलए; रदीफ पर दूरीक हलुक मींड दिअ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, सारंगी आ हलुक खड़ताल। खड़ताल रेलक पएर-जकाँ दूर ध्वनि दे।

मतला: राह अवसरो अछि आ विछोह सेहो।

२म शेर: दूरीक बीच चाह स्मृति बचबैत अछि।

३म शेर: रेल सामाजिक प्रवाह आ श्रम-प्रवास जोड़ैत अछि।

४म शेर: भिन्न भाषा सहयात्रामे दूरी घटबैत अछि।

५म शेर: निर्वाह आर्थिक संरचनासँ जुड़ल अछि।

६म शेर: यात्रा घरक अर्थ फेर पूछबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम सीटी घर आ यात्रा दुनू खुलल छोड़ए।

गजल ८०५ — दीप कोन जरै छै, ज्ञान पन्ना खुलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (ज्ञान, ध्यान, मान, विधान, निदान, प्रमाण, गान) · रदीफ: पन्ना खुलैए · शेर: ६

दीप कोन जरै छै, पाठक मौन बसैए / दीप कोन जरै छै, ज्ञान पन्ना खुलैए
धूल जिल्द धरै छै, हाथ स्नेह झाड़ैए / अक्षर आँखि रोकै छै, ध्यान पन्ना खुलैए
पुस्तक नाम कहै छै, अर्थ तइयो बदलैए / प्रसंग फेर पढ़ै छी, वाक्य नव बनैए
सूची राह दिखै छै, पाठ भीतर बढ़ैए / मत आन सुनै छी, मान पन्ना खुलैए
उद्धरण चमक सकै छै, स्रोत फेर जँचैए / लेखक सीमा कहै छै, पाठक प्रश्न धरैए
शब्द क्रम जुड़ै छै, तात्पर्य एक बनैए / भिन्न पाठ मिलै छै, विधान पन्ना खुलैए
मौन कक्ष रहै छै, भीतर वाद चलैए / प्रश्न उत्तर माँगै छै, बुद्धि फेर जगैए
भूल हाशिया कहै छै, संशोधन बाट खुलैए / दोष चिन्ह मिलै छै, निदान पन्ना खुलैए
आँखि थाकि जाइ छै, मोन तइयो चलैए / राति पन्ना पलटै छै, भोर निकट अबैए
दाबी स्रोत माँगै छै, संदर्भ भार धरैए / पंक्ति फेर जँचै छी, प्रमाण पन्ना खुलैए
पाठक नाम बदलै छै, पुस्तक तइयो रहैए / पीढ़ी अर्थ जोड़ै छै, संवाद आगाँ बढ़ैए
दीप धीरे घटै छै, आखर मोन बसैए / पुस्तक बन्द होइ छै, गान पन्ना खुलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८०५ — संगीतमय रूप

भाव: पुस्तकालयक मौन, स्रोत-जाँच, पाठ, तात्पर्य, संशोधन आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी अर्थ।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित दादरा ६ मात्रा। पन्ना पलटबाक मौन बचाउ; रदीफ पर स्वर धीरे खुलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, स्वरमण्डल, इसराज आ विरल तबला। स्वरमण्डल पुस्तकालयक विरल प्रकाश बनए।
मतला: ज्ञान एक बेरमे नहि, पन्ना-दर-पन्ना खुलैत अछि।
२म शेर: ध्यान मौनक सक्रिय रूप अछि।
३म शेर: भिन्न पाठ समन्वयसँ तात्पर्य बने।
४म शेर: हाशिया भूलक इतिहास बचबैत अछि।
५म शेर: दाबी स्रोत आ प्रमाण माँगैत अछि।
६म शेर: पुस्तक बन्द भेलो संवाद बन्द नहि होइत।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन पुस्तक बन्द करए, प्रश्न नहि।

गजल ८०६ — डाक पएर चलै छै, सार चिट्ठी पहुँचैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, द्वार, पार, तार, विचार, समाचार, पुकार) · रदीफ: चिट्ठी पहुँचैए · शेर: ६

डाक पएर चलै छै, मोहर राह धरैए / डाक पएर चलै छै, सार चिट्ठी पहुँचैए
माय नाम पढ़ै छै, आँखि नोर भरैए / कागज हाथ काँपै छै, द्वार चिट्ठी पहुँचैए
स्याही गन्ध उठै छै, स्मृति कोर जगैए / दूरि शब्द घटै छै, चेहरा सोझाँ अबैए
नदी नाव लाँघै छै, डाक राह बदलैए / सीमा दूर रहै छै, पार चिट्ठी पहुँचैए
एक पाँति नुकै छै, अर्थ तइयो रहैए / तात्पर्य मोन पकड़ै छै, संशय धीरे घटैए
कुशल प्रश्न लिखै छै, उत्तर देर अबैए / खबर डोर तनै छै, तार चिट्ठी पहुँचैए
पत्र प्रेम कहै छै, भार सेहो धरैए / वचन नाम जुड़ै छै, जिम्मा संग बढ़ैए
दूर काज बदलै छै, मन घर तकैए / पाँति मोन खोलै छै, विचार चिट्ठी पहुँचैए
पुरना पत्र खुलै छै, काल फेर घुरैए / हस्ताक्षर फेर देखै छी, पहिचान फेर जगैए
दिनांक साँच कहै छै, घटना ठाम धरैए / इतिहास पन्ना माँगै छै, समाचार चिट्ठी पहुँचैए
डाकिया नाम पुकारै छै, आँगन सोर उठैए / बालक दौड़ि अबै छै, घर हँसी भरैए
कागज मोड़ खुलै छै, दूरी फेर घटैए / मोन आवाज सुनै छै, पुकार चिट्ठी पहुँचैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८०६ — संगीतमय रूप

भाव: चिट्ठी: दूरी, तात्पर्य, वचन, स्मृति, दिनांक आ घरक प्रतीक्षा।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। चिट्ठीक आत्मीयता लेल मध्य स्वर राखू; रदीफ पर शब्द सोझाँ पहुँचए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, संतूर आ मृदु तबला। बाँसुरी चिट्ठीक दूरि घटबैत श्वास बने।

मतला: कागज भीतरक सार दूरी लाँघैत अछि।

२म शेर: तात्पर्य अधूर पाँतिक अर्थ बचबैत अछि।

३म शेर: वचन जिम्मेदारी बढ़बैत अछि।

४म शेर: दिनांक इतिहासक प्रमाण बनैत अछि।

५म शेर: हस्ताक्षर प्रत्यभिज्ञा जगबैत अछि।

६म शेर: पुकार घरकेँ सामाजिक ठाम बनबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम शब्द दूरी लाँघि घरक श्वास छुबए।

गजल ८०७ — जड़ि माटि पकड़ै छै, मूल छाँह रहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूल (मूल, फूल, धूल, कूल, शूल, भूल, अनुकूल) · रदीफ: छाँह रहैए · शेर: ६

जड़ि माटि पकड़ै छै, डार आकाश छुबैए / जड़ि माटि पकड़ै छै, मूल छाँह रहैए
बालक खेल करै छै, दादी कथा कहैए / ऋतु पात बदलै छै, फूल छाँह रहैए
नाम पीढ़ी बदलै छै, गाछ ठाम रहैए / छाल घाव धरै छै, समय पाँति लिखैए
आँधी डार तोड़ै छै, पात दूर उड़ैए / तना माटि थामै छै, धूल छाँह रहैए
मूल गहिर रहै छै, जल दूर खोजैए / सहायक मेह पड़ै छै, नव पात निकलैए
गाम सभा जुटै छै, गाछ मध्य बनैए / लोक सीमा खींचै छै, कूल छाँह रहैए
कुल्हाड़ी तेज चमकै छै, प्रश्न लोक उठैए / लाभ छोट लगै छै, काल भार कहैए
घाव रस छोड़ै छै, डार फेर उगैए / पीर रूप धरै छै, शूल छाँह रहैए
पुरना कथा बदलै छै, साँच तइयो जँचैए / गौरव माथ चढ़ै छै, प्रमाण फेर माँगैए
पात गलि जाइ छै, खाद माटि बनैए / ऋतु पाठ पढ़ै छै, भूल छाँह रहैए
यात्री थाकि रुकै छै, देह शीत पबैए / छाँह सहज मिलै छै, नेह तइयो बाँटैए
भोर पाखी गबै छै, गाछ सोर धरैए / जड़ि पात जोड़ै छै, अनुकूल छाँह रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८०७ — संगीतमय रूप

भाव: बरगद: जड़ि, पीढ़ी, पर्यावरण, स्मृति, घाव आ साझा छाँह।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द रूपक ७ मात्रा। गाछक छाँह जकाँ लय विस्तृत राखू; रदीफ पर स्थिर शीतलता दिअ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, सारंगी आ मन्द पखावज। एकतारा जड़ि-जकाँ मूल स्वर थामए।

मतला: जड़ि स्थिरता नहि, नव पातक आधार अछि।

२म शेर: पीढ़ी बदलैत, साझा ठाम अर्थ बदलैत अछि।

३म शेर: घाव समयक अभिलेख बनैत अछि।

४म शेर: गौरव प्रमाणक बदला नहि।

५म शेर: छाँह सार्वजनिक भलाईक बिम्ब।

६म शेर: गलल पात नव जीवनक खाद बनैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन छाँह जकाँ अगिला पीढ़ी धरि टिकए।

गजल ८०८ — माटि हाथ नमै छै, रूप चाक घुमैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूप (रूप, स्वरूप, प्रतिरूप, धूप, कूप, अनूप, भूप) · रदीफ: चाक घुमैए · शेर: ६

माटि हाथ नमै छै, जल कोमल करैए / माटि हाथ नमै छै, रूप चाक घुमैए

पएर चाक चलै छै, हथेली देह गढ़ैए / घेरा धीरे उठै छै, स्वरूप चाक घुमैए

एक माटि रहै छै, आकार अनेक बनैए / नाम पाछाँ जुड़ै छै, उपयोग अर्थ बदलैए

कुम्हार दोष देखै छै, अँगुरी फेर दबैए / माप आँखि जँचै छै, प्रतिरूप चाक घुमैए

घड़ा धूप सहै छै, भीतर नीर बचैए / ताप नहि रहै छै, देह कच्चा रहैए

भट्ठी आगि जरै छै, माटि रंग बदलैए / पक्व देह चमकै छै, धूप चाक घुमैए

घड़ा टूटि जाइ छै, माटि फेर मिलैए / नाश रूप कहै छै, मूल तइयो रहैए

कूप नीर धरै छै, घड़ा घर पहुँचैए / उपयोग लोक बनबै छै, कूप चाक घुमैए

बाजार दाम कहै छै, हाथ श्रम नुकैए / कारीगर मान माँगै छै, लोक ध्यान धरैए

रेखा अँगुरी छोड़ै छै, हस्ताक्षर सन रहैए / एक रूप बदलै छै, अनूप चाक घुमैए

बालक सीखि रहै छै, गुरु हाथ देखैए / भूल फेर सुधारै छै, कौशल धीरे पकैए

साँझ चाक थमै छै, माटि गन्ध उठैए / कारीगर माथ झुकै छै, भूप चाक घुमैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८०८ — संगीतमय रूप

भाव: कुम्हारक चाक: पदार्थ, रूप, श्रम, आगि, नाश आ कौशल।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: झपताल १० मात्रा। चाकक घुमाव तालमे सुनाउ; रदीफ पर वृत्ताकार मींड राखू।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, पखावज आ हलुक मँजीरा। सरोद चाकक गहिर घुमावकेँ आधार दे।
मतला: एक माटिसँ अनेक रूप बनैत अछि।
२म शेर: दोष देखिकऽ हाथ रूप सुधारैत अछि।
३म शेर: आगि सहायक कारण रूप पकबैत अछि।
४म शेर: घड़ा टूटला पर पदार्थक प्रश्न बचैत अछि।
५म शेर: कारीगरक श्रम दामसँ बेसी अर्थ धरैत अछि।
६म शेर: कौशल गुरु-शिष्य परम्परामे संशोधित होइत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम घुमाव माटिक नव रूपक सम्भावना छोड़ए।

गजल ८०९ — पर्दा धीरे उठै छै, रंग मंच धड़कैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, अंग, प्रसंग, तरंग, उमंग, ढंग) · रदीफ: मंच धड़कैए · शेर: ६

पर्दा धीरे उठै छै, दीप चेहरा छुबैए / पर्दा धीरे उठै छै, रंग मंच धड़कैए
वाद्य ताल धरै छै, अभिनेता श्वास लैतए / दर्शक मौन सुनै छै, संग मंच धड़कैए
पात्र नाम धरै छै, मनुख तइयो रहैए / संवाद अर्थ बदलै छै, प्रसंग राह खोलैए
हाथ मुद्रा बनै छै, देह कथा कहैए / चाल लय पकड़ै छै, अंग मंच धड़कैए
झूठ पात्र कहै छै, साँच भीतर चमकैए / अभिनय प्रश्न जगै छै, दर्शक फेर जँचैए
एक पाँति रुकै छै, मौन अर्थ बढ़ैए / कथा मोड़ बदलै छै, प्रसंग मंच धड़कैए
मंच सत्ता दिखै छै, हाशिया सोर उठैए / छूटल पात्र बोलै छै, इतिहास फेर खुलैए
गीत ताल बढ़ै छै, भीड़ हाथ बजैए / स्वर लहर उठै छै, तरंग मंच धड़कैए
श्रम पाछाँ चलै छै, नाम कम दिखैए / वस्त्र दीप सजै छै, काज संग चलैए
हँसी नोर मिलै छै, दर्शक देह बदलैए / कथा मन छुबै छै, उमंग मंच धड़कैए
अन्त दृश्य घटै छै, प्रश्न तइयो रहैए / पात्र प्रणाम करै छै, दूरी फेर बनैए
दीप धीरे बुझै छै, खाली ठाम बोलैए / दर्शक घर चलै छै, ढंग मंच धड़कैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८०९ — संगीतमय रूप

भाव: नाटक-मंच: देह, संवाद, मौन, सत्ता, सामूहिक अनुभव आ पर्दा-पाछाँ श्रम।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: रूपक ७ मात्रा। मंचक धड़कन लेल संवाद-सन उठान दिअ; रदीफ पर नाटकीयता संयत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, बाँसुरी आ मृदु मृदंग। मृदंग मंचक देहधर्मी लय बचाए।
मतला: रंग अभिनयक माध्यम, सत्यक स्वामी नहि।
२म शेर: देह स्वयं अर्थक वाहक अछि।
३म शेर: मौन सेहो संवादक अंग अछि।
४म शेर: छूटल पात्र इतिहासक हाशिया खोलैत अछि।
५म शेर: दर्शक प्रतिक्रिया अर्थ बदलैत अछि।
६म शेर: पर्दा पाछाँक श्रम दृश्य काजक कारण अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पर्दा खसलो प्रश्न दर्शकक संग घर जाए।

गजल ८१० — आँखि गोल चमकै छै, नोर बालक पूछैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, भोर, सोर, डोर, छोर, जोर, कोर) · रदीफ: बालक पूछैए · शेर: ६

आँखि गोल चमकै छै, प्रश्न ओंठ चढ़ैए / आँखि गोल चमकै छै, नोर बालक पूछैए

राति तारा दिसै छै, अँगुरी गिनि रहैए / नींद पाछाँ सरै छै, भोर बालक पूछैए

कीड़ा पात चलै छै, बालक राह रोकैए / जीवन छोट कहै छै, गुरु ध्यान धरैए

घंटी कक्षा बजै छै, मित्र हँसी उड़ैए / प्रश्न तइयो उठै छै, सोर बालक पूछैए

उत्तर झट मिलै छै, संशय तइयो रहैए / गुरु फेर कहै छै, प्रमाण संग जँचैए

कागज नाव बनै छै, नीर राह धरैए / खेल ज्ञान जोड़ै छै, डोर बालक पूछैए

जात नाम सुनै छै, भेद मोन अटकैए / समान खेल कहै छै, लोक किएक बाँटैए

सीमा नक्शा बनै छै, नदी पार बहैए / रंग रेखा मिटै छै, छोर बालक पूछैए

मशीन उत्तर दै छै, स्रोत कतय रहैए / बालक फेर जँचै छै, गुरु मुस्की धरैए

दुःख खबर सुनै छै, न्याय प्रश्न जगैए / छोट हाथ उठै छै, जोर बालक पूछैए

माय कथा कहै छै, बालक अर्थ बदलैए / पीढ़ी बीच चलै छै, भाषा नव बनैए

राति दीप बुझै छै, प्रश्न तइयो जगैए / सपना रूप धरै छै, कोर बालक पूछैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८१० — संगीतमय रूप

भाव: बालकक प्रश्न: जिज्ञासा, खेल, भेद, नक्शा, मशीन-उत्तर आ न्याय।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। बालकक प्रश्न जकाँ स्वर खुलल राखू; रदीफ पर कौतूहल चमकए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, खड़ताल आ हलुक तबला। खड़ताल बालकक खेल-जकाँ हलुक चमक दे।
मतला: प्रश्न ज्ञानक प्रारम्भ अछि।
२म शेर: खेल अनुभवक प्रयोगशाला बनैत अछि।
३म शेर: जात/सीमा बालकक सहज प्रश्नमे पुनःजाँचल जाइत।
४म शेर: मशीन-उत्तर स्रोत माँगैत अछि।
५म शेर: दुःख न्यायकेँ सरल मुदा गहिर प्रश्न बनबैत अछि।
६म शेर: पीढ़ी-दर-पीढ़ी भाषा नव होइत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन बालकक अगिला प्रश्न लेल मौन ठाम दे।

गजल ८११ — केश धीर बदलै छै, श्वास उमिर ढलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (श्वास, आस, निवास, प्रयास, आभास, इतिहास, विश्वास) · रदीफ: उमिर ढलैए · शेर: ६

केश धीर बदलै छै, चाल तनिक घटैए / केश धीर बदलै छै, श्वास उमिर ढलैए
भोर देह जगै छै, छड़ी बाट धरैए / नाती हाथ पकड़ै छै, आस उमिर ढलैए
नाम काज घटै छै, मान तइयो रहैए / उपयोग माप बनै छै, मान तइयो रहैए
घर कोन बदलै छै, पुरना आसन रहैए / याद ठाम बनै छै, निवास उमिर ढलैए
दवाई समय कहै छै, देह सीमा बतैए / पीर ध्यान माँगै छै, मजाक घाव बढ़ैए
पएर धीरे चलै छै, मन दूर उड़ैए / सीख नव रहै छै, प्रयास उमिर ढलैए
मीत नाम घटै छै, फोन मौन रहैए / पुरना गीत उठै छै, आँखि नोर धरैए
दर्पण रूप बदलै छै, पहचान तइयो रहैए / भीतर बालक हँसै छै, आभास उमिर ढलैए
कागज अधिकार कहै छै, सीढ़ी रोक लगैए / सुविधा राह खोलै छै, गरिमा फेर बचैए
कथा नाती सुनै छै, काल डोर जुड़ैए / स्मृति घर बनै छै, इतिहास उमिर ढलैए
मृत्यु शब्द डरै छै, जीवन तइयो चलैए / साँझ रंग बदलै छै, नेह पास रहैए
हाथ हाथ मिलै छै, मौन भरोस दैए / अन्त प्रश्न रहै छै, विश्वास उमिर ढलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८११ — संगीतमय रूप

भाव: उमिर: देहक सीमा, गरिमा, स्मृति, पहुँच, सीख आ मृत्यु-बोध।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा। उमिरक चाल धीमी मुदा थाकल नहि; रदीफ पर साँझ-जकाँ कोमल अवरोह हो।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, संतूर आ मन्द तबला। इसराज उमिरक स्मृति-मींडकेँ कोमल राखए।

मतला: उपयोगिता मनुखक मानक एकमात्र माप नहि।

२म शेर: सुलभ वातावरण स्वतन्त्रता बचबैत अछि।

३म शेर: स्मृति पहचानक निरन्तरता दैत अछि।

४म शेर: पीर सुननाइ गरिमाक आधार अछि।

५म शेर: उमिरो नव सीख रोकैत नहि।

६म शेर: अन्त-बोध विश्वासकेँ प्रश्नसहित राखैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम तान उमिरकेँ क्षय नहि, गहिर अनुभव बनाकऽ छोड़ए।

गजल ८१२ — नाव नीर उतरै छै, धार सीमा काटैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (धार, पार, भार, आधार, पुकार, विचार, द्वार) · रदीफ: सीमा काटैए · शेर: ६

नाव नीर उतरै छै, चप्पू ताल धरैए / नाव नीर उतरै छै, धार सीमा काटैए
नक्शा रेखा कहै छै, नदी राह बदलैए / मछुआ पएर चलै छै, पार सीमा काटैए
दू देश रहै छै, नीर एक बहैए / लोक भाषा मिलै छै, बाजार संग जुड़ैए
चौकी दीप जरै छै, कागज हाथ माँगैए / पहचान भार बनै छै, भार सीमा काटैए
नदी माछ धरै छै, कर नियम बदलैए / जीविका रोज जँचै छै, सीमा देह छुबैए
तूफान नाव डोलै छै, नाविक दिशा धरैए / तारा राह कहै छै, आधार सीमा काटैए
परिजन पार रहै छै, पर्व याद जगैए / गीत हवा लाँघै छै, मन दूरी घटैए
राति नाव रुकै छै, बालक नाम पुकारैए / घाट उत्तर दै छै, पुकार सीमा काटैए
तस्कर राह खोजै छै, कानून जाल बिछैए / न्याय भेद करै छै, दोष फेर जँचैए
पुल योजना बनै छै, गाँव राय दैए / हित टकराव उठै छै, विचार सीमा काटैए
नीर बाढ़ बनै छै, रेखा सभ बहैए / प्रकृति हँसि कहै छै, नक्शा फेर बनैए
भोर घाट खुलै छै, नाव पएर भरैए / लोक हाथ मिलै छै, द्वार सीमा काटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८१२ — संगीतमय रूप

भाव: नदी-सीमा: नक्शा, पहचान, जीविका, कानून, परिवार आ प्रकृतिक प्रवाह।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: रूपक ७ मात्रा। नदी-सीमा लेल लय बहैत रहए; रदीफ पर रेखा पार करैत मींड दिअ।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, सरोद आ विरल पखावज। सरोद सीमा-पार नदीक गहिर प्रवाह सुनाए।
मतला: नदी राजनीतिक रेखासँ बेसी पुरान प्रवाह अछि।
२म शेर: पहचान-कागजक भार लोकपर असमान पड़ैत अछि।
३म शेर: जीविका सीमा-नियमसँ बदलैत अछि।
४म शेर: कानून दोष आ आवश्यकता पृथक् जाँचए।
५म शेर: प्रकृति नक्शाक स्थिरता चुनौती दैत अछि।
६म शेर: पुल/नाव सम्बन्धक वास्तविकता देखबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन नक्शासँ पैघ नदीक प्रवाह सुनाए।

गजल ८१३ — काठ रेखा जागै छै, छाप हाथ गढ़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाप (छाप, माप, थाप, ताप, आलाप, संताप, प्रताप) · रदीफ: हाथ गढ़ैए · शेर: ६

काठ रेखा जागै छै, छेनी सोर करैए / काठ रेखा जागै छै, छाप हाथ गढ़ैए
अँगुरी घाव सहै छै, रूप धीरे बनैए / आँखि सीमा जँचै छै, माप हाथ गढ़ैए
पुरना ढंग मिलै छै, नव रेखा जुड़ैए / गुरु हाथ देखै छै, शिष्य फेर करैए
हथौड़ी ताल धरै छै, छेनी धुनि उठैए / श्रम लय बनै छै, थाप हाथ गढ़ैए
बाजार नकल माँगै छै, कारीगर मन अटकैए / परम्परा प्रश्न कहै छै, नवपन कोना बनैए
धूप काठ सुखै छै, तेल रंग चढ़ैए / आगि दूर रहै छै, ताप हाथ गढ़ैए
दोष सूक्ष्म रहै छै, आँखि फेर पकड़ैए / सुधार हाथ करै छै, रूप मान पबैए
गीत कारीगर गबै छै, ताल काज चलैए / स्वर श्रम उठै छै, आलाप हाथ गढ़ैए
दाम कम मिलै छै, मान तइयो बचैए / नीति बाजार जँचै छै, श्रम मूल्य माँगैए
घाव राति दुखै छै, देह विश्राम चाहैए / रोटी प्रश्न उठै छै, संताप हाथ गढ़ैए
कला घर सजै छै, नाम कारीगर नुकैए / इतिहास पन्ना लिखै छै, हस्ताक्षर फेर खोजैए
शिष्य गुरु बनै छै, ढंग फेर बदलैए / कौशल पीढ़ी चलै छै, प्रताप हाथ गढ़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८१३ — संगीतमय रूप

भाव: हस्तकला: श्रम, परम्परा, नवपन, मूल्य, देहक पीर आ कारीगरक नाम।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: झपताल १० मात्रा। हथौड़ी-छेनीक लय तालमे सूक्ष्म राखू; रदीफ पर श्रमक ताप सुनाउ।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, खड़ताल आ मृदु तबला। एकतारा कारीगरक हाथक स्थिर श्रम दे।
मतला: हाथक छाप वस्तुकेँ अद्वितीय बनबैत अछि।
२म शेर: माप नियम अछि, सृजनक जेल नहि।
३म शेर: परम्परा नव रेखासँ जीवित रहैत अछि।
४म शेर: श्रमक पीर बाजारक दाममे प्रायः नुका जाइत अछि।
५म शेर: दोष-सुधार ज्ञानक प्रक्रिया अछि।
६म शेर: कारीगरक नाम इतिहासमे देखाइ पड़बाक चाही।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम थाप कारीगरक नाम आ श्रम बचाए।

गजल ८१४ — मेह राति पड़ै छै, नेह छप्पर बजैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेह (नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, उमेह) · रदीफ: छप्पर बजैए · शेर: ६

मेह राति पड़ै छै, टप टप सुनैए / मेह राति पड़ै छै, नेह छप्पर बजैए
बालक नींद खुलै छै, माय ओढ़नि दैए / बूढ़ देह सिहरै छै, देह छप्पर बजैए
छेद बूँद गिरै छै, हाँड़ी ठाम धरैए / गरीबी सोर करै छै, दीवार चुप रहैए
पड़ोसी बाँस लबै छै, हाथ छेद भरैए / साझा काज बनै छै, गेह छप्पर बजैए
मेघ समान पड़ै छै, छत भेद बतैए / पक्का घर बचै छै, कच्चा पीर सहैए
बिजुरी दूर चमकै छै, गाम अन्हार रहैए / नीर ताल भरै छै, मेह छप्पर बजैए
धान मेह पिबै छै, किसान आस धरैए / बेसी नीर पड़ै छै, खेत संकट कहैए
माय चूल्हि बचै छै, रोटी गन्ध उठैए / भीजल राति कटै छै, स्नेह छप्पर बजैए
सरकार सूची बनै छै, घर नाम छुटैए / प्रमाण फेर माँगै छै, लोक थाकि जाइए
युवा प्रश्न उठै छै, नीति दोष कहैए / सहायता देर अबै छै, विदेह छप्पर बजैए
भोर मेह थमै छै, धूप भीत सुखैए / छेद चिन्ह रहै छै, घटना याद धरैए
पाखी डार झाड़ै छै, नीर मोती बनैए / गाम साँस बढ़ै छै, उमेह छप्पर बजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८१४ — संगीतमय रूप

भाव: बरखा-छप्पर: घरक असमानता, पड़ोस, खेती, सहायता आ घरेलू स्नेह।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: दादरा ६ मात्रा। बरखाक टप-टप ध्वनि ठेकमे उभरए; रदीफ पर घरक उष्मा रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, बाँसुरी आ जलतरंग। जलतरंग बरखाक बूँदक विरल उत्तर दे।
मतला: एके मेह भिन्न घरपर भिन्न असर दैत अछि।
२म शेर: पड़ोसी काज सामाजिक सहारा अछि।
३म शेर: कच्चा छत संरचनात्मक असमानता खोलैत अछि।
४म शेर: धान लेल मेह कारण, बेसी मेह संकट।
५म शेर: सूचीमे नाम छुटनाइ ज्ञान/प्रशासनक दोष अछि।
६म शेर: घटना पाछाँ चिन्ह स्मृति बचबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मेह थमला पाछाँ छप्परक स्मृति सुनाइत रहए।

गजल ८१५ — रोटी हाथ बाँटै छै, स्वाद थारी जुड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाद (स्वाद, संवाद, प्रसाद, अनुवाद, विवाद, अवसाद, नाद) · रदीफ: थारी जुड़ैए · शेर: ६

रोटी हाथ बाँटै छै, दाल गन्ध उठैए / रोटी हाथ बाँटै छै, स्वाद थारी जुड़ैए
बूढ़ कथा कहै छै, बालक कान धरैए / भोजन बीच खुलै छै, संवाद थारी जुड़ैए
नून कम पड़ै छै, हँसी तइयो उठैए / दाम प्रश्न रहै छै, भूख साँच कहैए
अतिथि द्वार अबै छै, आसन ठाम बनैए / साझा अन्न बढ़ै छै, प्रसाद थारी जुड़ैए
जात रेखा उठै छै, थारी भेद कहैए / न्याय प्रश्न जगै छै, मन नियम जँचैए
भिन्न भाषा बोलै छै, व्यंजन नाम बदलैए / अर्थ जिह्वा मिलै छै, अनुवाद थारी जुड़ैए
काज बाँटि चलै छै, रसोई श्रम नुकैए / सेवा नाम नुकै छै, देह ताप सहैए
खर्च हिसाब बढ़ै छै, परिवार मत बदलैए / मोल प्रश्न बनै छै, विवाद थारी जुड़ैए
भोजन फोटो चमकै छै, भूख बाहर रहैए / रूप साँच नुकै छै, स्रोत फेर जँचैए
मौन मीत बसै छै, मन भारी रहैए / गरम दाल छुबै छै, अवसाद थारी जुड़ैए
अन्न खेत अबै छै, किसान श्रम धरैए / थारी पाछाँ चलै छै, कारण डोर दिखैए
गीत धीमे उठै छै, मँजीरा ताल धरैए / भोजन लोक जोड़ै छै, नाद थारी जुड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८१५ — संगीतमय रूप

भाव: साझा भोजन: भूख, जात-रेखा, रसोई श्रम, अनुवाद, किसान आ संगति।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। साझा भोजनक सहजता राखू; रदीफ पर समूह-स्वर हलुक जुड़ि सकए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, मँजीरा, बाँसुरी आ मृदु तबला। मँजीरा भोजनक साझा प्रसन्नता हलुक राखए।
मतला: स्वाद मात्र वस्तु नहि, स्मृति आ संगति अछि।
२म शेर: थारी संवादक सामाजिक ठाम बनैत अछि।
३म शेर: जात-रेखा भोजनमे नैतिक प्रश्न खोलैत अछि।
४म शेर: रसोईक अदृश्य श्रम देखल जाए।
५म शेर: फोटो भोजनक सत्यक पर्याप्त प्रमाण नहि।
६म शेर: अन्नक पाछाँ कारण-श्रमक डोर अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन साझा थारीक उष्मा लोकक बीच छोड़ए।

गजल ८१६ — गवाही स्वर उठै छै, प्रमाण न्याय तौलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (प्रमाण, विधान, अनुमान, निदान, ध्यान, मान, ज्ञान) · रदीफ: न्याय तौलैए · शेर: ६

गवाही स्वर उठै छै, कक्ष मौन धरैए / गवाही स्वर उठै छै, प्रमाण न्याय तौलैए

कागज मोहर कहै छै, तारीख ठाम धरैए / धारा शब्द बनै छै, विधान न्याय तौलैए

एक पक्ष रोवै छै, आन पक्ष कहैए / न्याय कान सुनै छै, पूर्वग्रह दूर रखैए

चिन्ह घटना जोड़ै छै, कैमरा रूप धरैए / स्रोत फेर जँचै छै, अनुमान न्याय तौलैए

साक्षी डर सहै छै, याद कखनो डोलैए / प्रश्न कोमल रहै छै, सत्य फेर खुलैए

घाव देह कहै छै, रिपोर्ट साथ दैए / चिकित्सक भेद लिखै छै, निदान न्याय तौलैए

कानून शब्द रहै छै, प्रसंग अर्थ बदलैए / तात्पर्य फेर जँचै छै, निर्णय धीरे बनैए

गरीब वकील खोजै छै, पैसा राह रोकैए / सहायता ठाम बनै छै, ध्यान न्याय तौलैए

भीड़ निर्णय दै छै, अदालत तइयो जँचैए / लोकप्रिय सोर उठै छै, प्रमाण फेर माँगैए

आरोपी मान रखै छै, दोष सिद्ध ठहरैए / दण्ड सीमा खोजै छै, मान न्याय तौलैए

फैसला पन्ना बनै छै, अपील द्वार रहैए / भूल सम्भव कहै छै, संस्था नम्र रहैए

कक्ष खाली होइ छै, प्रश्न तइयो बचैए / न्याय सीखि चलै छै, ज्ञान न्याय तौलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८१६ — संगीतमय रूप

भाव: अदालत: गवाही, स्रोत, अनुमान, पहुँच, मान, अपील आ संस्थागत नम्रता।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द रूपक ७ मात्रा। अदालतक गंभीरता लेल उच्चारण साफ राखू; रदीफ पर प्रमाणक भार सुनाउ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, सरोद आ विरल तबला। इसराज न्यायालयक प्रश्नक गम्भीरता बढ़ाए।

मतला: प्रमाणक भार लोकप्रिय सोरसँ पृथक् अछि।

२म शेर: प्रसंग नहि रहने कानून मृत शब्द बनि सकैत अछि।

३म शेर: अनुमान स्रोत-जाँचसँ चलए।

४म शेर: साक्षीक स्मृति सीमित हो सकैत अछि।

५म शेर: न्याय-पहुँच आर्थिक शक्ति सँ प्रभावित होइत अछि।

६म शेर: अपील ज्ञानक संशोध्यता स्वीकारैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर निर्णयसँ बेसी न्यायपूर्ण प्रक्रिया याद कराए।

गजल ८१७ — स्वप्न रूप बदलै छै, रूप भोर जगबैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूप (रूप, स्वरूप, प्रतिरूप, धूप, कूप, अनूप, भूप) · रदीफ: भोर जगबैए · शेर: ६

स्वप्न रूप बदलै छै, देह शय्या रहैए / स्वप्न रूप बदलै छै, रूप भोर जगबैए
नींद नगर बनै छै, मित्र सहसा अबैए / आँखि खुलि जाइ छै, स्वरूप भोर जगबैए
स्वप्न डर उठै छै, हृदय तेज चलैए / जागल देह कहै छै, कक्ष एतय रहैए
स्मृति अंश बचै छै, कथा फेर बनैए / मन तुलना करै छै, प्रतिरूप भोर जगबैए
बाह्य द्वार अड़ै छै, स्वप्न दीवार गलैए / प्रतिरोध फर्क कहै छै, जग साँच जँचैए
खिड़की धूप अबै छै, छाया रूप बदलैए / आँखि देह जोड़ै छै, धूप भोर जगबैए
नाम पाछाँ जुड़ै छै, पहिल रूप दिसैए / अवधारणा फेर बनै छै, बोध साफ खुलैए
नीर कूप रहै छै, स्वप्न समुद्र बनैए / माप जागल कहै छै, कूप भोर जगबैए
इच्छा चित्र बनै छै, भय रंग चढ़ैए / मन अपन देखै छै, अर्थ फेर जँचैए
एक सपना चमकै छै, दोसर फेर बदलैए / साझा जग टिकै छै, अनूप भोर जगबैए
नींद टूटि जाइ छै, प्रश्न तइयो रहैए / साक्षी कोन रहै छै, दर्शन बाट खुलैए
भोर पाखी गबै छै, स्वप्न छाँह सरैए / जागल पएर चलै छै, भूप भोर जगबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८१७ — संगीतमय रूप

भाव: स्वप्न-जागरण: बदलैत रूप, बाह्य प्रतिरोध, स्मृति, अवधारणा आ आत्म-प्रश्न।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित दादरा ६ मात्रा। स्वप्नसँ भोर धरि स्वर धीरे साफ हो; रदीफ पर जागरणक उजास उभरए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, स्वरमण्डल, बाँसुरी आ मन्द पखावज। स्वरमण्डल स्वप्नक धुँधसँ भोरक उजास धरि जाए।
मतला: स्वप्न रूपक लचक बाह्य जगक प्रतिरोधसँ भिन्न अछि।
२म शेर: स्मृति स्वप्नकेँ कथा बनबैत अछि।
३म शेर: जागरण माप आ साझा जग फेर स्थापित करैत अछि।
४म शेर: नाम प्रारम्भिक रूपक बाद जुड़ैत अछि।
५म शेर: इच्छा-भय स्वप्नक रंग बदलैत अछि।
६म शेर: साक्षीक प्रश्न आत्म-बोध खोलैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन स्वप्नकेँ नकारए नहि, भोरक कसौटीपर राखए।

गजल ८१८ — बत्ती राति जरै छै, सोर नगर जागैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, नोर, भोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: नगर जागैए · शेर: ६

बत्ती राति जरै छै, दुकान द्वार खुलैए / बत्ती राति जरै छै, सोर नगर जागैए
बस देर चलै छै, मजदूर घर घुरैए / आँखि थाकि जाइ छै, नोर नगर जागैए
काँच टावर चमकै छै, फुटपाथ देह सुतैए / एक शहर जागै छै, अनेक राति बनैए
चाय धुआँ उठै छै, प्रहरी राह तकैए / पूब रंग बदलै छै, भोर नगर जागैए
कैमरा आँखि बनै छै, निजता प्रश्न उठैए / सुरक्षा नाम कहै छै, सीमा फेर जँचैए
मेट्रो पेट चलै छै, भीड़ साँस घटैए / नक्शा अन्त खोजै छै, छोर नगर जागैए
ऐप राह बतै छै, पएर तइयो चलैए / यंत्र दिशा दै छै, निर्णय मनुख करैए
हॉर्न राति चढ़ै छै, रोगी नींद खोजैए / नियम मौन माँगै छै, जोर नगर जागैए
झुग्गी नीर माँगै छै, टावर रोशनी पबैए / सुविधा भेद कहै छै, नीति प्रश्न धरैए
कामगार हाथ चलै छै, शहर नाम कमैए / घर दूर रहै छै, डोर नगर जागैए
दीवार पोस्टर धरै छै, विरोध स्वर उठैए / सत्ता रंग बदलै छै, नागरिक बात कहैए
राति धीरे ढलै छै, सफाई हाथ चलैए / दिन सोझाँ अबै छै, कोर नगर जागैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८१८ — संगीतमय रूप

भाव: शहरक राति: श्रम, असमानता, निगरानी, यातायात, निजता आ नागरिक सोर।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। नगर-रातिक गति तेज मुदा नियंत्रित रहए; रदीफ पर थिर श्वास दिअ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, संतूर आ हलुक तबला। संतूर नगरक बत्ती-जकाँ छोट चमक दे।

मतला: एक शहरमे अनेक राति सह-अस्तित्व रखैत अछि।

२म शेर: रातिक श्रम दृश्य शहरक आधार अछि।

३म शेर: निगरानी सुरक्षा आ निजताक सीमा प्रश्न बनबैत अछि।

४म शेर: सुविधा वितरण स्वतन्त्रता बदलैत अछि।

५म शेर: यंत्र दिशा दैत, निर्णयक जिम्मा मनुखक अछि।

६म शेर: विरोधक सोर नागरिक ज्ञानक स्रोत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम नाद नगरक भीड़मे मनुखक श्वास बचाए।

गजल ८१९ — आखर पात सजै छै, बोल लिपि बचैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोल (बोल, मोल, खोल, डोल, तोल, झोल, गोल) · रदीफ: लिपि बचैए · शेर: ६

आखर पात सजै छै, हाथ रेखा खींचैए / आखर पात सजै छै, बोल लिपि बचैए
दादी कथा कहै छै, नाति लिखि रहैए / मौखिक धुनि बसै छै, मोल लिपि बचैए
एक ध्वनि बदलै छै, अर्थ तइयो रहैए / रूपान्तर सावध रहै छै, भाषा नेह माँगैए
पुरना पात फटै छै, स्कैन रूप बनैए / डिजिटल द्वार खुलै छै, खोल लिपि बचैए
फॉन्ट रूप बनै छै, पाठक आँखि जँचैए / अक्षर गलत बनै छै, अर्थ चोट पबैए
बालक आखर सीखै छै, अँगुरी ताल धरैए / कागज नाव डोलै छै, डोल लिपि बचैए
बड़ भाषा छबै छै, छोट आखर नुकैए / ज्ञान हाशिया जाइ छै, न्याय प्रश्न उठैए
अनुवाद शब्द खोजै छै, क्षेत्र अर्थ बचैए / समानता धीरे बनै छै, तोल लिपि बचैए
लिपि पहचान बनै छै, कैद तइयो टिकैए / बोल अनेक रहै छै, समुदाय रूप बदलैए
गलत पाठ चलै छै, स्रोत फेर मिलैए / संपादन दोष हटै छै, झोल लिपि बचैए
शिलालेख चुप रहै छै, तारीख तइयो कहैए / अक्षर इतिहास धरै छै, शोधक ध्यान लगैए
भविष्य बालक पढ़ै छै, पुरखा सोर सुनैए / काल चक्र घुमै छै, गोल लिपि बचैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८१९ — संगीतमय रूप

भाव: लिपि: मौखिकता, डिजिटलीकरण, फॉन्ट, लघु भाषा, अनुवाद आ अभिलेख।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। आखरक सूक्ष्मता लेल शब्द स्पष्ट राखू; रदीफ पर लिपिक रेखा-जकाँ तान चलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, इसराज आ मृदु मँजीरा। एकतारा आखर आ लोक-बोलक सम्बन्ध थामए।
मतला: लिपि बोलक कैद नहि, स्मृति-सेतु अछि।
२म शेर: डिजिटल रूप संरक्षणो करैत, विकृतियो करि सकैत।
३म शेर: फॉन्ट-दोष अर्थपर चोट करैत अछि।
४म शेर: लघु भाषाक अक्षर ज्ञानक न्यायसँ जुड़ैत।
५म शेर: अनुवाद समानता नहि, क्षेत्र-सेतु अछि।
६म शेर: अभिलेख तारीख आ इतिहास बचबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन आखरकेँ जीवित बोलसँ जोड़ि छोड़ए।

गजल ८२० — चिता शान्त पड़ै छै, फूल राख बोलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूल (फूल, धूल, मूल, कूल, शूल, भूल, अनुकूल) · रदीफ: राख बोलैए · शेर: ६

चिता शान्त पड़ै छै, धुआँ आकाश चढ़ैए / चिता शान्त पड़ै छै, फूल राख बोलैए

पएर धीरे चलै छै, लोक मौन धरैए / देह माटि मिलै छै, धूल राख बोलैए

नाम स्मृति रहै छै, शरीर दूर जाइए / नोर संबंध कहै छै, प्रेम तइयो बचैए

बालक प्रश्न करै छै, मृत्यु कोना बुझैए / बूढ़ उत्तर रोकै छै, मूल राख बोलैए

रिवाज ढंग बदलै छै, शोक अपन रहैए / विधि मान दै छै, पीर समय माँगैए

नदी धार बहै छै, अस्थि दूर लयैए / कूल मौन रहै छै, कूल राख बोलैए

सम्पत्ति सूची बनै छै, सम्बन्ध फेर जँचैए / अधिकार प्रश्न उठै छै, न्याय द्वार खोलैए

घाव मोन रहै छै, दिन धीरे चलैए / स्मृति काँट बनै छै, शूल राख बोलैए

क्षमा देर अबै छै, विस्मरण नहि होइ / जिम्मा नाम धरै छै, इतिहास पन्ना खोलैए

पुरना दोष खुलै छै, परिवार बात करैए / स्वीकार भार घटै छै, भूल राख बोलैए

राख माटि मिलै छै, गाछ नव उगैए / अन्त कारण बनै छै, जीवन फेर चलैए

भोर पात चमकै छै, शोक संग रहैए / नव दिन उगै छै, अनुकूल राख बोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८२० — संगीतमय रूप

भाव: मृत्यु आ राख: शोक, स्मृति, रिवाज, क्षमा, उत्तराधिकार आ नवजीवन।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द झपताल १० मात्रा। राखक मौन लेल वाद्य विरल राखू; रदीफ पर स्मृतिक कम्पन मात्र बचए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मन्द पखावज आ बाँसुरी। सारंगी शोककेँ गरिमामय ठाम दे।

मतला: राख अन्तक चिन्ह, विस्मरणक आदेश नहि।

२म शेर: शोकक समय व्यक्ति-दर-व्यक्ति बदलैत अछि।

३म शेर: मृत्यु पाछाँ अधिकार आ जिम्मेदारी बचैत अछि।

४म शेर: क्षमा विस्मरण नहि।

५म शेर: राख माटिसँ नव जीवनक कारण बनि सकैत अछि।

६म शेर: मौन प्रश्नकेँ दबबैत नहि, ठाम दैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम मौन राखक भीतर स्मृति आ नवजीवन दुनू राखए।

गजल ८२१ — दू हाथ मिलै छै, नेह बंधन जँचैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेह (नेह, देह, गेह, मेह, स्नेह, विदेह, उमेह) · रदीफ: बंधन जँचैए · शेर: ६

दू हाथ मिलै छै, परिवार सोर उठैए / दू हाथ मिलै छै, नेह बंधन जँचैए

वचन मुँह कहै छै, जीवन काज माँगैए / सम्मान देह धरै छै, देह बंधन जँचैए

रीत फूल सजै छै, इच्छा तइयो पूछैए / सहमति मूल रहै छै, उत्सव पाछाँ चलैए

नव घर बनै छै, पुरना आदत अबैए / साझा नियम बनै छै, गेह बंधन जँचैए

धन भार बदलै छै, श्रम बाँट जँचैए / रसोई काज कहै छै, न्याय घर बनबैए

मेह राति पड़ै छै, छप्पर संग सुनैए / कठिन दिन जोड़ै छै, मेह बंधन जँचैए

मत भिन्न उठै छै, संवाद राह खोलैए / मौन दण्ड बनै छै, दूरी बेसी बढ़ैए

हाथ सेवा करै छै, रोग दिन घटैए / संग देह थामै छै, स्नेह बंधन जँचैए

परिवार दबाव दै छै, व्यक्ति सीमा कहैए / प्रेम बाँधि रखै छै, स्वतन्त्रता संग रहैए

वाद राति बढ़ै छै, भोर बात खुलैए / मान फेर बनै छै, विदेह बंधन जँचैए

बालक घर अबै छै, जिम्मा रूप बदलैए / नेह विस्तार पबै छै, समय माप बदलैए

उमिर साथ ढलै छै, हाथ तइयो मिलैए / मित्रता गहिर बनै छै, उमेह बंधन जँचैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८२१ — संगीतमय रूप

भाव: सम्बन्ध: सहमति, श्रम-विभाजन, संवाद, स्वतन्त्रता, सेवा आ समय।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। बंधनक कसाव आ नेहक खुलापन दुनू सुनाउ; रदीफ पर स्वर लचकैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, स्वरमण्डल आ विरल तबला। बाँसुरी सम्बन्धमे साँसक ठाम बचाए।
मतला: नेहक माप स्वामित्व नहि, सम्मान अछि।
२म शेर: वचन काजमे उतरला पर अर्थ पबैत अछि।
३म शेर: सहमति रीतसँ पहिने अछि।
४म शेर: घरेलू श्रम न्यायपूर्वक बाँटल जाए।
५म शेर: मतभेद संवादक शत्रु नहि।
६म शेर: उमिर संग बंधनक रूप बदलैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन बंधनकेँ स्वामित्व नहि, सहमति आ नेहक प्रश्न बनए।

गजल ८२२ — ट्रेन गाम छोड़ै छै, द्वार पएर घुरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (द्वार, पार, भार, आधार, विचार, समाचार, पुकार) · रदीफ: पएर घुरैए · शेर: ६

ट्रेन गाम छोड़ै छै, शहर नाम पुकारैए / ट्रेन गाम छोड़ै छै, द्वार पएर घुरैए
बरिस बीत जाइ छै, बालपन दूर रहैए / छुट्टी टिकट मिलै छै, पार पएर घुरैए
स्टेशन रूप बदलै छै, पुरना गाछ नुकैए / स्मृति नक्शा धरै छै, आँखि ठाम खोजैए
बस्ता भारी रहै छै, उपहार हाथ धरैए / मन हलुक बनै छै, भार पएर घुरैए
घर दीवार रंगै छै, आवाज तइयो पहचानैए / दादी नाम पुकारै छै, काल डोर जुड़ैए
पुरना मित्र मिलै छै, बात बीच रुकैए / हँसी सेतु बनै छै, आधार पएर घुरैए
गाम बाजार बदलै छै, दाम रूप बदलैए / बाहर आँखि कहै छै, भीतर लोक समझैए
खेत प्लॉट बनै छै, मन प्रश्न उठैए / विकास माप जँचै छै, विचार पएर घुरैए
भाषा जीभ घुरै छै, उच्चारण फेर अबैए / शहर लय घटै छै, माटि सोर बढ़ैए
पड़ोसी हाल कहै छै, घटना डोर जुड़ैए / छूटल बरिस खुलै छै, समाचार पएर घुरैए
विदा फेर अबै छै, टिकट हाथ काँपैए / घर अर्थ बदलै छै, दूरी फेर बनैए
माय द्वार तकै छै, ट्रेन सीटी दैए / नोर आवाज उठै छै, पुकार पएर घुरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८२२ — संगीतमय रूप

भाव: प्रवासक बाद घुरनाइ: बदलल गाम, स्मृति, भाषा, विकास, मित्रता आ फेर विदा।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। घुरैत पएरक चाल तालमे राखू; रदीफ पर घरक दुआर-जकाँ ठहराव हो।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, खड़ताल आ मृदु तबला। खड़ताल प्रवासी पएरक घुरैत चाल दे।
मतला: घुरनाइ समान ठाममे समान समय पबैत नहि।
२म शेर: स्मृति नक्शा आ वास्तविक गाम बीच भेद खुलैत अछि।
३म शेर: मित्रता दूरी पाछाँ नव आधार खोजैत अछि।
४म शेर: विकासक माप बाहरी आँखिसँ मात्र नहि।
५म शेर: भाषा घुरला पर पहचानक धुनि लौटैत अछि।
६म शेर: फेर विदा घरक अर्थ गहिर करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम ठहराव घुरल पएरकेँ नव घरक अर्थ पूछए।

गजल ८२३ — घंटी भोर बजै छै, ज्ञान कक्षा जागैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (ज्ञान, ध्यान, मान, विधान, निदान, प्रमाण, गान) · रदीफ: कक्षा जागैए · शेर: ६

घंटी भोर बजै छै, बालक पाँति बनैए / घंटी भोर बजै छै, ज्ञान कक्षा जागैए
गुरु प्रश्न करै छै, हाथ अनेक उठैए / उत्तर फेर जँचै छै, ध्यान कक्षा जागैए
पुस्तक बात कहै छै, प्रयोग सत्य जँचैए / रटल पाँति घटै छै, समझ भीतर बनैए
भिन्न भाषा बोलै छै, बालक अर्थ जोड़ैए / हँसी भेद घटै छै, मान कक्षा जागैए
गलती बोर्ड रहै छै, गुरु तइयो मानैए / सुधार पाठ बनै छै, डर धीरे घटैए
नियम राह धरै छै, प्रश्न पथ खुलैए / स्वतंत्र सोच बचै छै, विधान कक्षा जागैए
कमजोर आँखि कहै छै, आगे सीट चाहैए / सुविधा राह बनै छै, सीख बराबर बढ़ैए
प्रयोग विफल होइ छै, कारण फेर खोजैए / दोष पत्ता चलै छै, निदान कक्षा जागैए
यंत्र उत्तर दै छै, स्रोत तइयो माँगैए / बालक लिंक जँचै छै, शिक्षक संग रहैए
चित्र दावा करै छै, आँकड़ा साथ दैए / चर्चा फेर चलै छै, प्रमाण कक्षा जागैए
परीक्षा अंक कहै छै, प्रतिभा फेर चमकैए / कला खेल चमकै छै, बालक रूप बदलैए
छुट्टी सोर उठै छै, पएर बाहर दौड़ैए / दिन पाठ रहै छै, गान कक्षा जागैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८२३ — संगीतमय रूप

भाव: विद्यालय: प्रश्न, प्रयोग, बहुभाषिकता, गलती, पहुँच, कृत्रिम-बुद्धि स्रोत आ अंकक सीमा।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: दादरा ६ मात्रा। कक्षाक जीवंतता लेल ताल उज्जर राखू; रदीफ पर प्रश्नक ऊर्जा उभरए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, बाँसुरी आ हलुक तबला। संतूर कक्षाक उत्सुकता उजागर करए।
मतला: कक्षा प्रश्नसँ जागैत अछि, रटने सँ नहि।
२म शेर: गलती स्वीकारब शिक्षणक शक्ति अछि।
३म शेर: भाषिक विविधता मान घटबैत नहि।
४म शेर: सुविधा सीखक वास्तविक अवसर बदलैत अछि।
५म शेर: कृत्रिम-बुद्धि उत्तर स्रोत-जाँच माँगैत अछि।
६म शेर: अंक प्रतिभाक पूर्ण माप नहि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन अंकसँ आगाँ बालकक बहुविध प्रतिभा खोलए।

गजल ८२४ — पीर धीरे कहै छै, भेद देह सुनैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेद (भेद, वेद, खेद, छेद, अभेद, निषेध, विभेद) · रदीफ: देह सुनैए · शेर: ६

पीर धीरे कहै छै, मोन ठाम बनैए / पीर धीरे कहै छै, भेद देह सुनैए

नाड़ी ताल बदलै छै, श्वास बात कहैए / चिकित्सक कान धरै छै, वेद देह सुनैए

रिपोर्ट अंक कहै छै, अनुभव तइयो चाहैए / संख्या आधा कहै छै, पीर अपन धरैए

दवाई असर करै छै, निद्रा फेर अबैए / गलती याद रहै छै, खेद देह सुनैए

रोग नाम बदलै छै, मनुख मान बचैए / देह इतिहास धरै छै, उपचार ताहि जँचैए

घाव त्वचा खोलै छै, भीतर पीर रहैए / पट्टी राह रोकै छै, छेद देह सुनैए

डर रोग बढ़बै छै, भरोस श्वास सम्हरैए / बात साफ कहै छै, सहमति मान बचैए

दू मत उठै छै, जाँच फेर चलैए / साझा लक्ष्य रहै छै, अभेद देह सुनैए

दर्द नकारि दै छै, निदान राह चुकैए / रोगी बात कहै छै, ध्यान संग जँचैए

दवाई हानि रोकै छै, सीमा देह कहैए / अनुचित काज रुकै छै, निषेध देह सुनैए

सुविधा दूर रहै छै, गरीब देर सहैए / स्वास्थ्य न्याय कहै छै, नीति फेर जँचैए

पीर घटि जाइ छै, जीवन रंग पबैए / मनुख भेद रहै छै, विभेद देह सुनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८२४ — संगीतमय रूप

भाव: देहक सुनवाई: पीर, रिपोर्ट, अनुभव, सहमति, उपचार-सीमा आ स्वास्थ्य-न्याय।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा। देहक पीरक निकट स्वर राखू; रदीफ पर करुणा, नाटक नहि।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, बाँसुरी आ मन्द मृदंग। इसराज देहक भीतरक कम्पन धैर्यसँ सुनाए।
मतला: देहक पीर ज्ञानक वैध स्रोत अछि।
२म शेर: रिपोर्ट अनुभवक स्थान पूर्णतः नहि लैत।
३म शेर: रोग-नाम मनुखक पूर्ण पहचान नहि।
४म शेर: सहमति उपचारक नैतिक आधार अछि।
५म शेर: दर्दक निषेध निदान बिगाड़ि सकैत अछि।
६म शेर: स्वास्थ्य-पहुँच सामाजिक न्यायसँ जुड़ल अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर पीर सुनबाक नैतिक दायित्व बनि रहए।

गजल ८२५ — पएर माथ रुकै छै, पार आकाश खुलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (पार, सार, द्वार, धार, तार, विस्तार, आधार) · रदीफ: आकाश खुलैए · शेर: ६

पएर माथ रुकै छै, नजर दूर चलैए / पएर माथ रुकै छै, पार आकाश खुलैए
भोर रंग चढ़ै छै, पाखी पाँखि पसारैए / प्रश्न सीमा लाँघै छै, सार आकाश खुलैए
अन्त शब्द लिखै छै, यात्रा तइयो रहैए / पन्ना बन्द होइ छै, मोन आगाँ चलैए
दीवान हाथ रहै छै, पाठक द्वार खोलैए / अर्थ भीतर बनै छै, द्वार आकाश खुलैए
ज्ञान सीमा कहै छै, नम्रता संग बढ़ैए / दाबी फेर जँचै छै, प्रमाण राह धरैए
स्मृति नीर बहै छै, भविष्य पात उगैए / काल गीत धरै छै, धार आकाश खुलैए
मत भिन्न रहै छै, संवाद तइयो चलैए / प्रतिपक्ष हाथ मिलै छै, जीत मान बचैए
राति तारा जगै छै, नाव दिशा पकड़ैए / संकेत दूर रहै छै, तार आकाश खुलैए
माटि पएर धरै छै, पाँखि ऊपर उठैए / जड़ि आधार दै छै, उड़ान तइयो बढ़ैए
सागर छोर नुकै छै, दृष्टि फेर बढ़ैए / माप छोट पड़ै छै, विस्तार आकाश खुलैए
मौन प्रश्न बनै छै, उत्तर दूर रहैए / खोज अपने चलै छै, जीवन अर्थ बनैए
दीप धीरे जरै छै, पाठक साँस धरैए / अन्त राह मुड़ै छै, आधार आकाश खुलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८२५ — संगीतमय रूप

भाव: समापनक बदला खुलल आकाश: प्रश्न, नम्रता, स्मृति, संवाद, उड़ान आ अगिला खोज।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: रूपक ७ मात्रा। अन्तिम गजलमे खुलल आकाश-जकाँ विस्तार राखू; रदीफ पर स्वर आगाँ बढ़ए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, स्वरमण्डल आ अत्यन्त मृदु तबला। सरोदक खुलल तार अन्तिम आकाशक विस्तार दे।
मतला: अन्त ज्ञानक अन्त नहि, नव प्रश्नक द्वार अछि।
२म शेर: नम्रता प्रमाण-जाँचक संग बढ़ए।
३म शेर: स्मृति भविष्यक पातकेँ जल दैत अछि।
४म शेर: प्रतिपक्षक मान संवादकेँ जीवित रखैत अछि।
५म शेर: जड़ि उड़ानक विरोधी नहि, आधार हो सकैत अछि।
६म शेर: खुलल आकाश अनन्त खोजक रूपक।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ८२५क अन्तिम तान समाप्ति नहि, खुलल आकाशमे अगिला सम्भावना बनि रहए।

गजल ८२६ — घड़ी भोर बजै छै, काल फेर सरकै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, निदान, प्रमाण, पहिचान) · रदीफ: घड़ी बोलैए · शेर: ६

घड़ी भोर बजै छै, लोक काल गिनैए / काल फेर सरकै छै, मान घड़ी बोलैए
सूरज छत चढ़ै छै, छाँह दीवार सरकै / दिन काज बाँटै छै, ज्ञान घड़ी बोलैए
बालक खेल मगनै छै, बेर झटपट भागै / बूढ़ आँखि तकै छै, क्षण धीरे ढलै
एकहि बेर बदलै छै, देह मोन जानै / भीतर काल फैलै छै, ध्यान घड़ी बोलैए
कारखाना सीटी बजै छै, श्रम पहर बँटै / मजदूर श्वास गिनै छै, दाम बेर तौलै
नियम ताल धरै छै, लोक जीवन चलै / साझा बेर बनै छै, विधान घड़ी बोलैए
पीर राति लम्बै छै, नींद दूर रहै / सुख क्षण छोटै छै, मोन याद धरै
अनुभव बेर बदलै छै, घटना अर्थ पबै / कारण क्रम खुलै छै, निदान घड़ी बोलैए
दस्तावेज दिनांक धरै छै, घटना ठाम टिकै / स्मृति कथा बदलै छै, स्रोत फेर जँचै
दाबी काल माँगै छै, साक्ष्य पन्ना खुलै / माप फेर जँचै छै, प्रमाण घड़ी बोलैए
घड़ी रुकि जाइ छै, काल तइयो बहै / नाम दूर हटै छै, काज छाप रहै
साँझ घण्टा बजै छै, मोन घर तकै / बीते दिन जुड़ै छै, पहिचान घड़ी बोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८२६ — संगीतमय रूप

भाव: घड़ीक माप आ मनुष्यक अनुभवगत समयक बीच तनाव; श्रम, स्मृति, पीर आ इतिहास।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। घड़ीक टिक-टिक सीधे नकल नहि करू; स्वरमे समयक फैलाव आ संकुचन सुनाउ।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, मन्द घण्टी, इसराज आ विरल तबला। इसराज अनुभवगत समयक खिंचाव सुनाए।
मतला: घड़ी समय मापैत अछि, मुदा मानवीय अनुभव ओकर अर्थ बदलैत अछि।
२म शेर: बालक, बूढ़ आ श्रमिकक लेल एके बेरक अनुभूति समान नहि।
३म शेर: नियमित समय सामाजिक जीवन व्यवस्थित करैत अछि।
४म शेर: पीर आ सुख कालक अनुभूति लम्बा-छोट करैत अछि।
५म शेर: दिनांक आ स्रोत ऐतिहासिक दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: घड़ी रुकितो काजक छाप समय-पार रहि सकैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन घड़ीक संख्या नहि, जीवित समयक प्रश्न छोड़ए।

गजल ८२७ — धान बीज सुकै छै, अगिला ऋतु टिकै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, भार, आधार, विचार, व्यवहार, उद्धार, पुकार) · रदीफ: कोठार बचैए · शेर: ६

धान बीज सुकै छै, हाथ दाना छानै / अगिला ऋतु टिकै छै, सार कोठार बचैए
कोठी द्वार बँधै छै, मूस राह रोकै / भूख काल यादै छै, भार कोठार बचैए
किसान दाना चुनै छै, रंग गन्ध जँचै / पुरना जाति रहै छै, माटि संग जुड़ै
बाजार भाव बदलै छै, बीज हक पूछै / साझा ज्ञान टिकै छै, आधार कोठार बचैए
मेह देर पड़ै छै, खेत ताप सहै / बीज भीतर रहै छै, शक्ति समय तकै
जल ताप जुटै छै, अंकुर माटि फोड़ै / सहायक हेतु मिलै छै, विचार कोठार बचैए
एक जाति घटै छै, जोखिम गाम बढ़ै / विविध बीज रहै छै, ऋतु मार सहै
लोक बुद्धि जुड़ै छै, खेती राह बचै / पीढ़ी काज सीखै छै, व्यवहार कोठार बचैए
दाना कम दिसै छै, भूख तइयो बढ़ै / भण्डार लेखा कहै छै, बाँट न्याय माँगै
माप फेर जँचै छै, हक लोक पूछै / संकट काल कटै छै, उद्धार कोठार बचैए
बूढ़ किसान कहै छै, बीज नाम यादै / बालक हाथ धरै छै, दाना भविष्य देखै
कोठार द्वार खुलै छै, गाम श्वास लैए / भूख सोर उठै छै, पुकार कोठार बचैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८२७ — संगीतमय रूप

भाव: बीज-संरक्षण, जैव-विविधता, किसानक ज्ञान, संकट-न्याय आ भविष्य।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। कोठारक शान्ति लेल मन्द्र लय राखू; दाना खनक जकाँ मँजीरा विरल पड़ए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, बाँसुरी आ मृदु मँजीरा। एकतारा बीजक निरन्तरता थामए।

मतला: बीजक सार अगिला ऋतुक सम्भावना अछि।

२म शेर: भण्डारण भूखक विरुद्ध सामाजिक सुरक्षा सेहो अछि।

३म शेर: अंकुर सहायक कारण जुटला पर प्रकट होइत अछि।

४म शेर: विविधता जोखिम घटबैत अछि।

५म शेर: संकटमे बाँट आ लेखा न्याय माँगैत अछि।

६म शेर: पीढ़ी-दर-पीढ़ी बीजक नाम ज्ञान बचबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर दानाकेँ अगिला ऋतुसँ जोड़ि राखए।

गजल ८२८ — दर्पण भोर चमकै छै, चेहरा रेखा उभरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, छोर, जोर, कोर) · रदीफ: दर्पण देखैए · शेर: ६

दर्पण भोर चमकै छै, चेहरा रेखा उभरै / आँखि फेर रुकै छै, नोर दर्पण देखैए
मुस्की ओठ आबै छै, पीर भीतर नुकै / मौन चेहरा कहै छै, सोर दर्पण देखैए
काँच रूप धरै छै, मन अर्थ जोड़ै / छवि रूप बदलै छै, बोध भेद माँगै
दाग काँच रहै छै, चेहरा तइयो बदलै / भ्रम धीरे घटै छै, डोर दर्पण देखैए
बालक चेहरा तकै छै, नाम स्वर सीखै / बूढ़ रेखा गिनै छै, काल छाप पढ़ै
एकहि रूप बदलै छै, स्मृति मोन जुड़ै / पहिचान फेर जगै छै, भोर दर्पण देखैए
छवि उलटि दिसै छै, हाथ तइयो चलै / दिशा भेद खुलै छै, बुद्धि राह धरै
बाह्य रूप रहै छै, भीतर भाव बदलै / सीमा मोन जँचै छै, छोर दर्पण देखैए
चित्र तेज चमकै छै, स्रोत तइयो पूछै / दर्पण रूप धरै छै, प्रमाण फेर माँगै
दाबी रूप धरै छै, जाँच भेद खोलै / साक्ष्य संग बढ़ै छै, जोर दर्पण देखैए
दर्पण राति अन्हारै छै, चेहरा ओझर होइ / मोन छवि रहै छै, याद धीरे चलै
भोर फेर उगै छै, काँच प्रकाश धरै / जीवन रेखा टिकै छै, कोर दर्पण देखैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८२८ — संगीतमय रूप

भाव: दर्पणक छवि, बाह्य रूप आ भीतरक अर्थ, उम्र, भ्रम, पहचान आ प्रमाण।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित कहरवा ८ मात्रा। दर्पणक चमक लेल सूक्ष्म मींड दिअ; स्वर आत्मदर्शनमे थिर रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, स्वरमण्डल, सारंगी आ विरल तबला। स्वरमण्डल छविक चमक आ स्मृतिक दूरी दुनू रखए।

मतला: छवि देखब आत्मबोधक आरम्भ हो सकैत अछि, अन्त नहि।

२म शेर: काँचक दोष आ चेहराक दोष भिन्न जाँचबाक चाही।

३म शेर: स्मृति बदलैत रूपमे पहचान जोड़ैत अछि।

४म शेर: उलटल छवि वस्तु-सत्य नहि बदलैत अछि।

५म शेर: तेज छवि अपनेमे प्रमाण नहि।

६म शेर: अन्हारमे छवि ओझर भेलो स्मृति रहैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन छविक पाछाँ स्वयंकेँ फेर जाँचबाक ठाम दे।

गजल ८२९ — तान सूता तनै छै, बाना रंग जुड़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, रीत, प्रीत, मीत, जीत, अतीत, विनीत) · रदीफ: करघा गबैए · शेर: ६

तान सूता तनै छै, बाना रंग जुड़ै / हाथ लय धरै छै, गीत करघा गबैए
पैडल पएर चलै छै, धागा पार सरकै / घर काज बचै छै, रीत करघा गबैए
कारीगर आँखि तकै छै, गाँठ दोष खोजै / छोट भूल रहै छै, कपड़ा रेखा बिगड़ै
माप फेर जँचै छै, आकार रूप मिलै / श्रम नेह जुड़ै छै, प्रीत करघा गबैए
नव नक्शा उठै छै, पुरना रीत रहै / पीढ़ी हाथ बदलै छै, कौशल तइयो चलै
बाजार दाम चढ़ै छै, कारीगर मान घटै / साझा हक पूछै छै, मीत करघा गबैए
सूता टूटि जाइ छै, काज क्षण रुकै / गाँठ फेर बँधै छै, चाल पुनः चलै
कारण दोष खुलै छै, रेखा फेर सुधरै / धैर्य हाथ धरै छै, जीत करघा गबैए
कपड़ा देह ढकै छै, श्रम नाम नुकै / लेबल दाम कहै छै, हाथ कथा नुकै
इतिहास धागा जुड़ै छै, गाम स्मृति बचै / पुरखा रीत जगै छै, अतीत करघा गबैए
बालक चाक छोड़ै छै, करघा ताल सुनै / माँ हाथ चलै छै, घर गीत उठै
कपड़ा मोड़ बनै छै, श्रम मान रहै / स्वर धीरे नमै छै, विनीत करघा गबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८२९ — संगीतमय रूप

भाव: करघा: तान-बाना, श्रम, परम्परा, बाजार, गाँठ, डिजाइन आ कारीगरक मान।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: झपताल १० मात्रा। करघाक तान-बाना जकाँ ठेक नियमित चलए; रदीफपर धागा-जकाँ तान जुड़ए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, खड़ताल, सारंगी आ मृदु पखावज। खड़ताल करघाक पैडल-लयकेँ हलुक संकेत दे।
मतला: तान-बाना विविध धागाकेँ एक कपड़ामे जोड़ैत अछि।
२म शेर: छोट गाँठ समग्र रेखा बिगाड़ि सकैत अछि।
३म शेर: परम्परा बदलैत हाथमे जीवित रहैत अछि।
४म शेर: बाजार-दाम कारीगरक मानक पूर्ण माप नहि।
५म शेर: टूटल सूता कारण-जाँच आ धैर्य माँगैत अछि।
६म शेर: कपड़ा संग श्रमक इतिहास सेहो देखल जाए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम तान कपड़ाक भीतर अनाम हाथक मान बचाए।

गजल ८३० — ढोल दूर बजै छै, रंग झण्डा लहरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, प्यास, विश्वास, उल्लास, निवास, प्रकाश, आभास) · रदीफ: मेला हँसैए · शेर: ६

ढोल दूर बजै छै, बालक पएर दौड़े / रंग झण्डा लहरै छै, आस मेला हँसैए
झूला गोल घुमै छै, हँसी आकाश छुबै / मीत हाथ धरै छै, प्यास मेला हँसैए
दुकान चमक बढ़ै छै, दाम मोन लुभै / खाली जेब कहै छै, इच्छा सीमा रहै
बालक मिठाइ तकै छै, माय माप धरै / वचन नेह बनै छै, विश्वास मेला हँसैए
नट रस्सी चलै छै, भीड़ श्वास रोकै / ताल ढोल धरै छै, देह सन्तुलन रखै
कला श्रम दिसै छै, लोक मान दैए / साझा हँसी उठै छै, उल्लास मेला हँसैए
भिन्न बोल सुनै छै, गाम लोक मिलै / नाम रीत बदलै छै, नेह दूरी घटै
राति दीप जरै छै, थाकल देह बैसै / तम्बू ठाम बनै छै, निवास मेला हँसैए
जादू रूप दिसै छै, बुद्धि कारण पूछै / आँखि भ्रम धरै छै, जाँच फेर चलै
परदा भेद खुलै छै, कौशल साँच दिसै / मोन फेर जगै छै, प्रकाश मेला हँसैए
साँझ भीड़ छँटै छै, मैदान कागज रहै / बालक याद धरै छै, ढोल दूर बजै
भोर धूल उड़ै छै, रंग मोन रहै / बीते राति बचै छै, आभास मेला हँसैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८३० — संगीतमय रूप

भाव: मेला: खेल, इच्छा, कला, बहुभाषिक मिलन, भ्रम, श्रम आ क्षणभंगुर उल्लास।

गति (BPM): ४८–५२ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। मेलाक खुलल हँसी राखू; ढोलक चंचल हो मुदा शब्दकेँ नहि ढाकए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, ढोलक, बाँसुरी आ हलुक मँजीरा। बाँसुरी मेलाक भीड़मे व्यक्तिगत श्वास बचाए।

मतला: मेला इच्छा आ सामाजिक मिलन दुनूक ठाम अछि।

२म शेर: जेबक सीमा इच्छा पर प्रश्न उठबैत अछि।

३म शेर: कला दिसैत अछि, पाछाँ अनुशासित श्रम रहैत अछि।

४म शेर: भिन्न बोल लोककेँ दूर नहि करए।

५म शेर: जादू भ्रमक संग कारण-जाँचक अवसर अछि।

६म शेर: मेला छूटला पाछाँ स्मृति रंग बचबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मेला छूटलापर धूलमे हँसीक स्मृति रहए।

गजल ८३१ — पएर ढलान चढ़ै छै, कुहरा दूर सरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह) · रदीफ: पहाड़ बोलैए · शेर: ६

पएर ढलान चढ़ै छै, श्वास ताल धरै / कुहरा दूर सरै छै, राह पहाड़ बोलैए
झरना पत्थर काटै छै, नीर गीत बनै / यात्री मोन जगै छै, चाह पहाड़ बोलैए
नक्शा रेखा कहै छै, धरती मोड़ बदलै / स्थानीय पथ जानै छै, खतरा ठाम बतबै
ज्ञान दू जुड़ै छै, यात्रा सुरक्षा बढ़ै / नीर घाटी बहै छै, प्रवाह पहाड़ बोलैए
प्रतिध्वनि सोर घुरै छै, मूल ठाम नुकै / कान दिशा भुलै छै, भेद दूरी बढ़ै
चिन्ह फेर जँचै छै, स्रोत ठाम मिलै / गहिर खोह खुलै छै, अथाह पहाड़ बोलैए
हिम धूप गलै छै, झरना रूप बदलै / काल ऋतु चक्रै छै, गाम जल पबै
राह टूटि जाइ छै, लोक संग जुड़ै / पुल हाथ बनै छै, उछाह पहाड़ बोलैए
वन रेखा घटै छै, माटि ढलान सरकै / वर्षा घाव खोलै छै, नीति प्रश्न उठै
कारण क्रम पढ़ै छै, गाम जोखिम बुझै / जीवन काज टिकै छै, निर्वाह पहाड़ बोलैए
साँझ घण्टी बजै छै, पशु घर घुरै / यात्री थाकि रुकै छै, छत धुँआ दिसै
राति तारा उगै छै, चोटी मौन रहै / हृदय श्वास नमै छै, आह पहाड़ बोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८३१ — संगीतमय रूप

भाव: पहाड़ी बाट: स्थानीय ज्ञान, नक्शा, प्रतिध्वनि, जल, जोखिम, वन आ सामूहिक पुल।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द रूपक ७ मात्रा। पहाड़ी चढ़ान जकाँ स्वर धीरे ऊपर जाए; साँसक ठाम स्पष्ट रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, सरोद आ विरल तबला। सरोद पहाड़क गहिर प्रतिध्वनि बनए।
मतला: पहाड़ी राह देह आ ध्यान दुनू माँगैत अछि।
२म शेर: नक्शा आ स्थानीय अनुभव जोड़ला पर सुरक्षा बढ़ैत अछि।
३म शेर: प्रतिध्वनि स्रोतक भ्रम करा सकैत अछि।
४म शेर: ऋतु-परिवर्तन जलक रूप बदलैत अछि।
५म शेर: वन-क्षय जोखिमक कारण-क्रम खोलैत अछि।
६म शेर: रातिक मौन मनुष्यक माप छोट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर चोटी नहि, अगिला मोड़क राह देखाए।

गजल ८३२ — मधुमाछि भोर उड़ै छै, फूल गन्ध खोजै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूल (मूल, फूल, धूल, कूल, शूल, भूल, अनुकूल) · रदीफ: छत्ता बजैए · शेर: ६

मधुमाछि भोर उड़ै छै, फूल गन्ध खोजै / पंख सोर मिलै छै, मूल छत्ता बजैए
एक फूल खुलै छै, पराग देह लगै / दूर फूल जुड़ै छै, फूल छत्ता बजैए
नाच दिशा कहै छै, साथी राह बुझै / सूरज कोण बदलै छै, संकेत अर्थ बदलै
साझा काज चलै छै, जीव श्रम जुड़ै / समूह श्रम उठै छै, धूल छत्ता बजैए
कीटनाशक गन्ध फैलै छै, पंख मार सहै / फसल फूल घटै छै, गाम फल घटै
कारण डोर खुलै छै, लाभ माप बदलै / धरती पीर कहै छै, कूल छत्ता बजैए
छत्ता षट्कोण बनै छै, मोम दीवार जुड़ै / रूप क्रम दिसै छै, कार्य संग मिलै
कौशल छोट दिसै छै, बुद्धि प्रश्न उठै / सृष्टि क्रम जगै छै, शूल छत्ता बजैए
एक संकेत मिलै छै, दिशा तइयो जँचै / दू नाच मिलै छै, मार्ग फेर खुलै
व्याप्ति फेर जँचै छै, अपवाद दूर हटै / ज्ञान धीरे पकै छै, भूल छत्ता बजैए
मधु हाथ लैए छै, मानुष सीमा मानै / छत्ता जीवन रहै छै, लूट राह रोकै
फूल ऋतु घुरै छै, पंख फेर उड़ै / जगत मेल बनै छै, अनुकूल छत्ता बजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८३२ — संगीतमय रूप

भाव: मधुमाछि: संकेत, परागण, समूह-श्रम, कीटनाशक, षट्कोण, अनुमान आ सीमित दोहन।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: दादरा ६ मात्रा। मधुमाछिक पंख-सोर जकाँ सूक्ष्म कम्पन राखू; समूह-लय एकाएक भारी नहि हो।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, मँजीरा, संतूर आ मृदु तबला। संतूर परागक बिन्दु-जकाँ छोट चमक दे।
मतला: फूल आ पंखक सम्बन्ध परागणक जाल बनबैत अछि।
२म शेर: नाच दिशा-संकेत अछि, मुदा प्रसंगसँ अर्थ बदलैत अछि।
३म शेर: कीटनाशकक लाभक संग पारिस्थितिक पीर जाँचल जाए।
४म शेर: छत्ताक क्रम कार्य-रचना पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: एक संकेतसँ सार्वभौम निष्कर्ष नहि।
६म शेर: मधु लेबाक संग छत्ताक जीवन बचेनाइ नैतिक सीमा अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन फूल, पंख आ फसलक परस्परता बचाए।

गजल ८३३ — चन्द्र राति चमकै छै, छाँह धीरे चढ़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, ढंग, संग, अंग, तरंग, प्रसंग, उमंग) · रदीफ: चन्द्र ढकैए · शेर: ६

चन्द्र राति चमकै छै, छाँह धीरे चढ़ै / आकाश रूप बदलै छै, रंग चन्द्र ढकैए
लोक आँगन जुटै छै, बालक प्रश्न पूछै / भय कथा उठै छै, ढंग चन्द्र ढकैए
पुरना कथा चलै छै, विज्ञान माप जँचै / दुनू स्वर सुनै छै, बुद्धि भेद धरै
छाया गणना मिलै छै, पूर्वानुमान साँच दिसै / प्रमाण लोक जोड़ै छै, संग चन्द्र ढकैए
आँखि सीमा रखै छै, सूर्य तेज बचै / उपकरण दृष्टि बढ़ै छै, सुरक्षा संग चलै
देह नियम मानै छै, ज्ञान काज बनै / सावधानी जीवन धरै छै, अंग चन्द्र ढकैए
छाया धीरे सरकै छै, चन्द्र फेर खुलै / क्षण भय घटै छै, मोन शान्त होइ
रूप ढकल रहै छै, वस्तु तइयो टिकै / साँच बोध जगै छै, तरंग चन्द्र ढकैए
चित्र फोन भरै छै, स्रोत काल पूछै / झूठ छवि फैलै छै, दाबी तेज बढ़ै
समय ठाम जँचै छै, आकाश लेखा मिलै / जाँच सार खुलै छै, प्रसंग चन्द्र ढकैए
ग्रहण दूर सरै छै, बालक हँसी उठै / आँगन राति बसै छै, सामान्य ताल धरै
चन्द्र पूर्ण दिसै छै, मोन प्रश्न रहै / भय ज्ञान बदलै छै, उमंग चन्द्र ढकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८३३ — संगीतमय रूप

भाव: ग्रहण: कथा, विज्ञान, पूर्वानुमान, सुरक्षा, छवि-जाँच आ भयक रूपान्तरण।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द झपताल १० मात्रा। ग्रहणक छाया जकाँ स्वर क्रमशः मन्द हो आ फेर उजास पाबए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, स्वरमण्डल, इसराज आ मन्द पखावज। इसराज छाया हटबाक क्षणमे कोमल उजास दे।

मतला: भयक कथा आ वैज्ञानिक माप दुनू सुनि प्रमाण जाँचल जाए।

२म शेर: पूर्वानुमान सार्वजनिक पुनर्परीक्षणक उदाहरण अछि।

३म शेर: उपकरण इन्द्रियक सीमा बढ़बैत अछि।

४म शेर: ढकल रूप वस्तुक नाश नहि।

५म शेर: डिजिटल छविक समय-ठाम जाँच आवश्यक अछि।

६म शेर: ज्ञान भयक रंग बदलैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। छाया हटला पाछाँ प्रश्नक उजास रहए।

गजल ८३४ — पुल नदी लाँघै छै, दू कूल जुड़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेल (मेल, खेल, बेल, तेल, रेल, भेल, जेल) · रदीफ: पुल थामैए · शेर: ६

पुल नदी लाँघै छै, दू कूल जुड़ै / पएर दिन चलै छै, मेल पुल थामैए
बालक दौड़ लगै छै, बूढ़ धीरे चलै / जीवन चाल बदलै छै, खेल पुल थामैए
लोहा जंग धरै छै, खम्भा भार सहै / दरार छोट दिसै छै, जोखिम भीतर बढ़ै
जाँच समय होइ छै, मरम्मत काज चलै / लता किनार चढ़ै छै, बेल पुल थामैए
वाहन भार बढ़ै छै, पुरना माप टूटै / नियम सीमा धरै छै, सुरक्षा राह बचै
यन्त्र तेल माँगै छै, जोड़ घर्षण घटै / देखभाल काज चलै छै, तेल पुल थामैए
बाढ़ नीर चढ़ै छै, खम्भा धक्का सहै / धरती नींव खिसकै छै, कारण फेर खुलै
नक्शा पुरना पढ़ै छै, अभियंता माप धरै / यात्रा राह बचै छै, रेल पुल थामैए
टोल दाम उठै छै, गरीब बाट पूछै / हक नीति जँचै छै, पार लोक माँगै
न्याय माप धरै छै, सुविधा साझा रहै / इतिहास दोष खुलै छै, भेल पुल थामैए
राति बत्ती जरै छै, पुल छाँह पड़ै / नदी नीर बहै छै, गाम सोर सुनै
पएर फेर चलै छै, दू कूल मिलै / सीमा मन टूटै छै, जेल पुल थामैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८३४ — संगीतमय रूप

भाव: पुरान पुल: अवसंरचना, रखरखाव, जोखिम, बाढ़, पहुँच, टोल आ साझा जीवन।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: रूपक ७ मात्रा। पुलक स्थिरता लेल मध्यम लय राखू; नदी-जकाँ बाँसुरी भीतर बहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, बाँसुरी आ हलुक मृदंग। सारंगी पुरान पुलक स्मृति आ वर्तमान भार जोड़ए।
मतला: पुल सम्बन्धक भौतिक आधार बनैत अछि।
२म शेर: छोट दरार समय पर नजेर नहि पड़ला पर जोखिम बढ़ैत अछि।
३म शेर: रखरखाव स्वतंत्र चलनक शर्त अछि।
४म शेर: बाढ़ कारण-क्रम नींव धरि खोलैत अछि।
५म शेर: टोल आ पहुँच न्यायिक प्रश्न अछि।
६म शेर: पुल दू कूल जोड़ैत, सामाजिक दूरी सेहो घटा सकैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम तान दू कूलक बीच साझा जिम्मेदारी छोड़ए।

गजल ८३५ — सीसा टाइप सजै छै, स्याही रोल चढ़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाप (छाप, माप, ताप, थाप, संताप, आलाप, प्रताप) · रदीफ: अक्षर छपैए · शेर: ६

सीसा टाइप सजै छै, हाथ पाँति गिनै / स्याही रोल चढ़ै छै, छाप अक्षर छपैए
कागज चक्र चलै छै, शब्द पृष्ठ भरै / प्रति दूर जाइ छै, माप अक्षर छपैए
एक त्रुटि रहै छै, सौ प्रति फैलै / प्रूफ आँखि तकै छै, दोष रेखा धरै
सुधार चिन्ह लगै छै, पाँति फेर सजै / ज्ञान अनुशासन बनै छै, ताप अक्षर छपैए
छोट भाषा रहै छै, टाइप कम मिलै / आखर रूप टूटै छै, पाठक दूरी बढ़ै
फॉन्ट नव बनै छै, लिपि मान पबै / श्रम धातु गरमै छै, थाप अक्षर छपैए
समाचार तेज फैलै छै, साँच तइयो जँचै / मुद्रित रूप रहै छै, प्रमाण फेर जँचै
स्रोत दिनांक मिलै छै, दाबी भार बढ़ै / झूठ लोक दुखै छै, संताप अक्षर छपैए
पुस्तक दाम घटै छै, पाठ लोक पबै / शिक्षा द्वार खुलै छै, ज्ञान साझा बढ़ै
वितरण राह चलै छै, गाम पाठक मिलै / बहु स्वर उठै छै, आलाप अक्षर छपैए
मशीन सोर रुकै छै, राति मौन उतरै / ताजा पृष्ठ महकै छै, काज छाप रहै
भोर गड्डी बँधै छै, डाक राह धरै / लोक विचार बढ़ै छै, प्रताप अक्षर छपैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८३५ — संगीतमय रूप

भाव: छापाखाना: प्रूफ, त्रुटि, लघु भाषा, स्रोत, वितरण आ सार्वजनिक विचार।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। मशीनक ठेक अनुशासित रहए; प्रूफ-सुधारक सूक्ष्मता लेल उच्चारण साफ राखू।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, खड़ताल, संतूर आ मृदु तबला। संतूर टाइपक धातु-जकाँ स्पष्ट मुदा कोमल आघात दे।
मतला: मुद्रण ज्ञान फैलाबैत अछि, त्रुटि सेहो फैला सकैत अछि।
२म शेर: प्रूफ-पढ़नाइ संशोधनक सार्वजनिक अनुशासन अछि।
३म शेर: लघु भाषाक टाइप/फॉन्ट ज्ञान-पहुँच बदलैत अछि।
४म शेर: मुद्रित रूप अपनेमे सत्यक प्रमाण नहि।
५म शेर: सस्ता पुस्तक ज्ञानक पहुँच बढ़बैत अछि।
६म शेर: बहु प्रति बहु स्वरक सार्वजनिक क्षेत्र बनबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मशीन रुकलापर सेहो प्रूफ-पढ़बाक विवेक जागल रहए।

गजल ८३६ — रेडियो भोर बजै छै, दूर स्वर अबै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोल (बोल, डोल, मोल, खोल, गोल, झोल, तोल) · रदीफ: रेडियो सुनैए · शेर: ६

रेडियो भोर बजै छै, घर सोर भरै / दूर स्वर अबै छै, बोल रेडियो सुनैए

किसान मौसम सुनै छै, बीज समय धरै / समाचार राह बदलै छै, डोल रेडियो सुनैए

तरंग आकाश चलै छै, आँखि रूप चुकै / कान दूर धरै छै, मन चित्र बनै

स्रोत नाम कहै छै, विश्वास धीरे बढ़ै / झूठ स्वर दुखै छै, मोल रेडियो सुनैए

लोकगीत राति बजै छै, दादी याद जगै / भाषा स्वर बचै छै, गाम मोन जुड़ै

मौन बीच रहै छै, श्रोता अर्थ जोड़ै / प्रसंग द्वार खुलै छै, खोल रेडियो सुनैए

आपदा खबर अबै छै, लोक राह बदलै / समय सूचना मिलै छै, जीवन जोखिम घटै

सार्वजनिक सेवा चलै छै, निज लाभ रुकै / समुदाय सोर बनै छै, गोल रेडियो सुनैए

आवाज मीठ लगै छै, दाबी तइयो जँचै / विशेषज्ञ नाम रहै छै, प्रमाण फेर माँगै

विचार दू टकरै छै, श्रोता माप धरै / तर्क धीरे खुलै छै, झोल रेडियो सुनैए

बैटरी कम होइ छै, सोर धीरे घटै / घर मौन रहै छै, मन गीत चलै

भोर फेर अबै छै, नॉब हाथ घुमै / दुनिया स्वर मिलै छै, तोल रेडियो सुनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८३६ — संगीतमय रूप

भाव: रेडियो: अदृश्य तरंग, समाचार, लोकगीत, आपदा-सूचना, स्रोत आ सार्वजनिक संवाद।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: दादरा ६ मात्रा। रेडियोक दूर स्वर जकाँ आरम्भ हलुक राखू; रदीफपर आवाज निकट आबए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, एकतारा आ विरल तबला। बाँसुरी अदृश्य तरंगक आभास बने।
मतला: रेडियो दूरीक स्वर घर धरि आनैत अछि।
२म शेर: तरंग नहि दिसितो प्रभाव वास्तविक अछि।
३म शेर: लोकगीत भाषा-स्मृति बचबैत अछि।
४म शेर: आपदा-सूचना समय पर काज बदलि सकैत अछि।
५म शेर: मीठ आवाज सत्यक प्रमाण नहि।
६म शेर: बहु मत सुनि श्रोता तर्कक माप बनबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन रेडियो बन्द करए, सुनबाक अनुशासन नहि।

गजल ८३७ — पुरना फोटो खुलै छै, चेहरा मुस्की रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाव (भाव, चाव, नाव, ठाव, घाव, प्रभाव, स्वभाव) · रदीफ: फोटो जगबैए · शेर: ६

पुरना फोटो खुलै छै, चेहरा मुस्की रहै / पीढ़ी नाम पूछै छै, भाव फोटो जगबैए
कागज पीयर पड़ै छै, आँखि नोर भरै / बालपन फेर अबै छै, चाव फोटो जगबैए
एक क्षण रुकै छै, जीवन तइयो चलै / फ्रेम सीमा धरै छै, बाहर कथा रहै
पाछाँ नदी दिसै छै, नाव दूर चलै / ठाम फेर खुलै छै, नाव फोटो जगबैए
चेहरा नाम भुलै छै, हस्ताक्षर पाछाँ बचै / दादी स्वर जुड़ै छै, पहिचान फेर जगै
स्मृति चित्र धरै छै, पीर नेह मिलै / मोन धीरे खुलै छै, ठाव फोटो जगबैए
फोटो कटि सकै छै, सन्दर्भ तइयो बदलै / दाबी तेज फैलै छै, इतिहास रूप बिगड़ै
दिनांक ठाम मिलै छै, स्रोत फेर जँचै / झूठ छवि घटै छै, घाव फोटो जगबैए
युद्ध चित्र दुखै छै, दर्शक मौन होइ / पीर मान माँगै छै, दृष्टि सीमा रहै
छवि लोक बदलै छै, नीति प्रश्न उठै / दूर घटना करै छै, प्रभाव फोटो जगबैए
फोटो डिब्बा बँधै छै, घर तइयो यादै / मीत दूर रहै छै, चेहरा मोन चलै
नव पीढ़ी तकै छै, पुरखा नाम सीखै / स्मृति रीत बनै छै, स्वभाव फोटो जगबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८३७ — संगीतमय रूप

भाव: पुरान फोटो: स्मृति, फ्रेमक सीमा, पहचान, संदर्भ, युद्ध-छवि आ पीढ़ीगत इतिहास।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा। पुरान फोटोक धूसर स्मृति लेल मींड कोमल राखू; शोक आ नेह संतुलित रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, स्वरमण्डल आ मन्द मँजीरा। स्वरमण्डल पुरान फोटो जकाँ धुँधल कोर राखए।
मतला: फोटो एक क्षण बचबैत अछि, सम्पूर्ण जीवन नहि।
२म शेर: फ्रेम बाहरक कथा सेहो इतिहासक भाग अछि।
३म शेर: नाम भूलल चेहराकेँ परिवार-स्मृति फेर जोड़ैत अछि।
४म शेर: कटल संदर्भ छविक अर्थ बदलि सकैत अछि।
५म शेर: पीरक फोटो दर्शकक नैतिक जिम्मेदारी जगबैत अछि।
६म शेर: नव पीढ़ी चित्रसँ पुरखा पूछैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। फोटो बँधला पाछाँ स्मृति खुलल रहए।

गजल ८३८ — ताला द्वार लटकै छै, हाथ धातु घुमै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (जाल, चाल, काल, ताल, पाल, माल, लाल) · रदीफ: चाभी खुलैए · शेर: ६

ताला द्वार लटकै छै, घर मौन रहै / हाथ धातु घुमै छै, जाल चाभी खुलैए

एक दाँत मिलै छै, भीतर पिन सरकै / द्वार धीरे खुलै छै, चाल चाभी खुलैए

गलत चाभी घुमै छै, ताला तइयो रहै / सादृश्य रूप दिसै छै, मेल सूक्ष्म बदलै

भेद छोट रहै छै, काज फल बदलै / समय परीक्षा करै छै, काल चाभी खुलैए

घर सुरक्षा माँगै छै, निजता हक रहै / निगरानी दृष्टि बढ़ै छै, सीमा प्रश्न उठै

अनुमति स्पष्ट रहै छै, प्रवेश न्याय बनै / विश्वास लय धरै छै, ताल चाभी खुलैए

पुरना ताला जामै छै, तेल थोड़ा पड़ै / रोक धीरे हटै छै, द्वार फेर चलै

बाधा दूर हटै छै, कारण काज खुलै / प्रवेश राह बचै छै, पाल चाभी खुलैए

चाभी हाथ बदलै छै, जिम्मा संग चलै / भरोस नाम जुड़ै छै, हानि भार बढ़ै

लेखा फेर रहै छै, काज स्रोत जँचै / मालिक हक धरै छै, माल चाभी खुलैए

साँझ द्वार बँधै छै, घर श्वास लैए / बालक भीतर हँसै छै, बाहर राति ढलै

भोर ताला खुलै छै, दिन काज जगै / पहिल किरण पड़ै छै, लाल चाभी खुलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८३८ — संगीतमय रूप

भाव: चाभी-ताला: सादृश्य, निजता, अनुमति, बाधा, जिम्मेदारी आ विश्वास।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: झपताल १० मात्रा। ताला खुलबाक क्षणपर छोट स्वर-विराम दिअ; पाछाँ लय फेर सहज चलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, खड़ताल आ मृदु तबला। सरोद धातुक कसाव आ खुलबाक राहत दुनू दे।
मतला: सही मेल सूक्ष्म भेदपर निर्भर अछि।
२म शेर: सादृश्य समानता नहि।
३म शेर: सुरक्षा आ निजताक संग अनुमति आवश्यक अछि।
४म शेर: बाधा हटब कार्यक कारणात्मक शर्त बनि सकैत अछि।
५म शेर: चाभी संग जिम्मेदारी हस्तान्तरित होइत अछि।
६म शेर: द्वारक खुलब-बँधब सामाजिक विश्वासक रूपक अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम ध्वनि द्वार खोलए, निजताक सीमा सेहो याद रखए।

गजल ८३९ — सूखल पात सरसरै छै, चिनगी छोट उठै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीर (नीर, पीर, धीर, तीर, भीर, समीर, शरीर) · रदीफ: जंगल जरैए · शेर: ६

सूखल पात सरसरै छै, हवा गरम बहै / चिनगी छोट उठै छै, नीर जंगल जरैए

धुआँ आकाश भरै छै, पाखी दूर उड़ै / गाम सोर उठै छै, पीर जंगल जरैए

आगि तेज फैलै छै, कारण अनेक जुड़ै / सूखा हवा जुड़ै छै, मानुष भूल जुड़ै

हेतु क्रम खुलै छै, दोष भाग बँटै / न्याय धैर्य माँगै छै, धीर जंगल जरैए

हरिण राह खोजै छै, बाड़ बाट रोकै / जीव स्थान घटै छै, नीति घाव बढ़ै

वन मार्ग खुलै छै, बचाव दल पहुँचै / समय काज चलै छै, तीर जंगल जरैए

आगि पाछाँ रहै छै, राख माटि ढकै / बीज किछु बचै छै, ऋतु फेर जगै

जीवन धीरे घुरै छै, पाखी सोर अबै / मौन भीड़ घटै छै, भीर जंगल जरैए

उपग्रह चित्र दिसै छै, धरती ताप जँचै / स्थानीय लोक कहै छै, धुआँ गन्ध पहुँचै

दू प्रमाण मिलै छै, कारण बोध पकै / हवा दिशा बदलै छै, समीर जंगल जरैए

वन कानून बनै छै, चरवाहा ज्ञान रहै / दुनू बात मिलै छै, रक्षा राह खुलै

नव पात उगै छै, राख तइयो यादै / धरती घाव भरै छै, शरीर जंगल जरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८३९ — संगीतमय रूप

भाव: जंगल-अग्नि: बहु-कारण, जीव-पलायन, बचाव, राखपाछाँ पुनर्जनन, उपग्रह-साक्ष्य आ स्थानीय ज्ञान।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। जंगल-अग्निक गजलमे वाद्य संयत राखू; भयकेँ नाटक नहि, कारण-बोध बनाउ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, बाँसुरी आ मन्द पखावज। सारंगी राख-पाछाँ नव पातक सम्भावना बचाए।

मतला: जंगल-अग्नि प्रायः बहु-कारणीय घटना अछि।

२म शेर: दोष बाँटब प्रमाणक बाद होए।

३म शेर: जीवक मार्ग आ आवास नीति-विषय अछि।

४म शेर: राखक बीच किछु बीज नव जीवन शुरू करैत अछि।

५म शेर: दूर चित्र आ स्थानीय गन्ध दुनू प्रमाण उपयोगी।

६म शेर: वन-कानून स्थानीय ज्ञानसँ संवाद करए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। राखक मौनमे नव पातक सम्भावना सुनाइत रहए।

गजल ८४० — नहर खेत मुड़ै छै, नीर रेखा चलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाय (उपाय, सहाय, न्याय, अध्याय, आशय, विनय, समुदाय) · रदीफ: नहर बहैए · शेर: ६

नहर खेत मुड़ै छै, नीर रेखा चलै / धान प्यास घटै छै, उपाय नहर बहैए
फाटक हाथ खुलै छै, ऊपर खेत भरै / नीचाँ खेत तकै छै, सहाय नहर बहैए
बाँट क्रम बिगड़ै छै, झगड़ा गाम बढ़ै / समय सूची बनै छै, हक साफ दिसै
पानी माप धरै छै, लोक पालि मानै / साझा नियम बनै छै, न्याय नहर बहैए
गाद तल जमै छै, धार धीरे घटै / सफाइ काज रुकै छै, फसल मार बढ़ै
कारण ठाम खुलै छै, श्रम संग जुड़ै / मरम्मत राह बनै छै, अध्याय नहर बहैए
मेह कम पड़ै छै, नीर मोल बढ़ै / फसल चयन बदलै छै, किसान जोखिम तौलै
ज्ञान ऋतु जुड़ै छै, बीज समय बदलै / योजना मोन धरै छै, आशय नहर बहैए
ऊपर गाम रोकै छै, नीचाँ पीर बढ़ै / दाबी हक टकरै छै, पंच प्रमाण माँगै
सुनवाई धैर्य धरै छै, दू पक्ष बोलै / मान दूरी घटै छै, विनय नहर बहैए
नहर साफ रहै छै, पाखी नीर पीबै / बालक कूल चलै छै, गाम साँझ हँसै
नीर पालि चलै छै, खेत हरियर होइ / साझा श्रम जुड़ै छै, समुदाय नहर बहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८४० — संगीतमय रूप

भाव: सिंचाइ नहर: पालि, हक, गाद, मरम्मत, सूखा, फसल-चयन आ जल-न्याय।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: रूपक ७ मात्रा। नहरक बहाव जकाँ लय सतत राखू; पालि-बाँटक तनाव शब्दमे साफ सुनाउ।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, एकतारा आ हलुक तबला। जलतरंग नहरक सतत नीर-सोर बनए।
मतला: पानीक प्रवाह सामाजिक नियमसँ बाँटल जाइत अछि।
२म शेर: ऊपर-नीचाँ खेतक असमानता न्याय माँगैत अछि।
३म शेर: गाद हटेनाइ साधारण मुदा निर्णायक देखभाल अछि।
४म शेर: सूखामे फसल-चयन कारण-जोखिमक निर्णय अछि।
५म शेर: विवादमे दूनू पक्षक प्रमाण सुनल जाए।
६म शेर: साझा श्रम नहरकेँ समुदायिक संस्था बनबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापन नहरक नीर संग न्यायपूर्ण पालिक प्रश्न बहबैत रहए।

गजल ८४१ — पत्थर रेखा रहै छै, आखर धीरे घिसै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, गाम, दाम, धाम, विराम, परिणाम, आयाम) · रदीफ: पत्थर कहैए · शेर: ६

पत्थर रेखा रहै छै, आखर धीरे घिसै / पुरखा स्वर बचै छै, नाम पत्थर कहैए
यात्री ठाम रुकै छै, लिपि रूप तकै / इतिहास द्वार खुलै छै, गाम पत्थर कहैए
राजा नाम रहै छै, श्रमिक नाम नुकै / मौन इतिहास पूछै छै, ककर हाथ गढ़ै
आखर घाव खोलै छै, सत्ता छाप दिसै / मान फेर बँटै छै, दाम पत्थर कहैए
तिथि रूप रहै छै, गणना पद्धति बदलै / पाठक काल मिलै छै, सन्दर्भ फेर जँचै
भाषा पुरना रहै छै, अर्थ धीरे खुलै / तीर्थ ठाम बनै छै, धाम पत्थर कहैए
एक अक्षर टूटै छै, अर्थ दू बनै / विद्वान मत धरै छै, दाबी फेर जँचै
विकल्प दू रहै छै, प्रमाण भार बदलै / निर्णय धीरे आबै छै, विराम पत्थर कहैए
प्रतिलिपि छवि बनै छै, मूल तइयो रहै / स्पर्श सन्दर्भ दैए छै, फोटो सीमा धरै
मूल ठाम बचै छै, अध्ययन दूर फैलै / ज्ञान फल बढ़ै छै, परिणाम पत्थर कहैए
साँझ छाँह पड़ै छै, आखर मौन रहै / पाखी पत्थर बैसै छै, काल रेखा चलै
नव पाठक अबै छै, पुरना प्रश्न जगै / इतिहास गहिर खुलै छै, आयाम पत्थर कहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८४१ — संगीतमय रूप

भाव: शिलालेख: सत्ता, लुप्त श्रम, तिथि, लिपि, पाठ-विकल्प, मूल-संदर्भ आ इतिहास।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित दादरा ६ मात्रा। शिलालेखक गम्भीरता लेल मन्द्र स्वर; आखर-आखर शब्द स्पष्ट खुलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मन्द मृदंग आ स्वरमण्डल। मृदंग शिलालेखक काल-भारकेँ धीमा आधार दे।
मतला: पत्थर आवाज नहि, प्रमाणक अवशेष अछि।
२म शेर: राजकीय नामक पाछाँ अनाम श्रम सेहो खोजल जाए।
३म शेर: तिथि आ लिपि सन्दर्भ माँगैत अछि।
४म शेर: टूटल अक्षर एकाधिक पाठ सम्भव करैत अछि।
५म शेर: प्रतिलिपि उपयोगी, मूल ठामक सन्दर्भ भिन्न मूल्य रखैत अछि।
६म शेर: नव पाठक पुरान लेखसँ नव प्रश्न पूछैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम स्वर पत्थरक मौनमे अनाम श्रम खोजए।

गजल ८४२ — बाँस हवा डोलै छै, जड़ि माटि थामै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (आकार, प्रकार, संस्कार, विस्तार, संसार, अधिकार, स्वीकार) · रदीफ: बाँस झुकैए · शेर: ६

बाँस हवा डोलै छै, जड़ि माटि थामै / ऊँच डार बनै छै, आकार बाँस झुकैए
पात सोर करै छै, गाम साँझ सुनै / लचक बल बनै छै, प्रकार बाँस झुकैए
आँधी तेज अबै छै, काठ किछु टूटै / बाँस धीरे नमै छै, तना फेर उठै
कठोर मान घटै छै, लचक बुद्धि बढ़ै / जीवन रीत बनै छै, संस्कार बाँस झुकैए
कारीगर बाँस चिरै छै, टोकरी रूप बनै / खाली गाँठ रहै छै, काज भेद धरै
रूप काज बदलै छै, मूल पदार्थ रहै / श्रम कला फैलै छै, विस्तार बाँस झुकैए
बाँस झुरमुट बढ़ै छै, पाखी घर बनै / माटि कटाव घटै छै, नीर राह बचै
जीव संग रहै छै, वन जाल बनै / छोट जगत खुलै छै, संसार बाँस झुकैए
जमीन हक उठै छै, कटनी सीमा पूछै / लोक नियम बनै छै, साझा लाभ बँटै
मान सुनवाई पबै छै, श्रम हक बचै / लोक दाबी धरै छै, अधिकार बाँस झुकैए
बाँसुरी छेद मिलै छै, हवा सुर बनै / खाली ठाम रहै छै, गीत राह पबै
हवा फेर चलै छै, झुरमुट सोर उठै / लचक मोन सीखै छै, स्वीकार बाँस झुकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८४२ — संगीतमय रूप

भाव: बाँस-बाड़ी: लचक, कारीगरी, पारिस्थितिकी, हक, बाँसुरी आ रिक्तताक सृजनात्मक अर्थ।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। बाँसक लचक जकाँ स्वर झुकए आ फेर उठए; कठोर थापसँ बचू।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, खड़ताल आ हलुक तबला। बाँसुरी बाँसक खाली गाँठसँ सुर निकलबाक बिम्ब बने।
मतला: लचक दुर्बलता नहि; आँधीमे टिकबाक बुद्धि हो सकैत अछि।
२म शेर: एक पदार्थ अनेक रूप-काज धारण करैत अछि।
३म शेर: झुरमुट अनेक जीवक साझा ठाम अछि।
४म शेर: भूमि-हक आ कटनी नियम न्याय माँगैत अछि।
५म शेर: बाँसुरीमे खाली ठाम सेहो सुरक शर्त अछि।
६म शेर: झुकब आ फेर उठब जीवनक रूपक बनैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। बाँस झुकलापर फेर उठए, वएह लय समापनमे रहए।

गजल ८४३ — पतंग छत उठै छै, डोर हाथ तनै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (सुवास, मिठास, विकास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, आभास) · रदीफ: पतंग उड़ैए · शेर: ६

पतंग छत उठै छै, डोर हाथ तनै / आकाश नील भरै छै, सुवास पतंग उड़ैए
बालक दौड़ लगै छै, हवा दिशा बदलै / मोन खेल बनै छै, मिठास पतंग उड़ैए
डोर ढील पबै छै, पतंग ऊँच चढ़ै / डोर बेसी छुटै छै, नियंत्रण राह घटै
स्वतंत्र उड़ान रहै छै, सम्बन्ध तइयो रहै / सन्तुलन धीरे बढ़ै छै, विकास पतंग उड़ैए
दोसर पतंग मिलै छै, डोर घर्षण बढ़ै / जीत हँसी लुभै छै, कटल पतंग गिरै
खेल नियम माँगै छै, सुरक्षा हक रहै / सावधानी काज बनै छै, प्रयास पतंग उड़ैए
पाखी राह कटै छै, काँच डोर दुखै / खेल हानि बनै छै, नैतिक प्रश्न उठै
दया नियम बदलै छै, बालक बोध जगै / करुणा रंग भरै छै, उल्लास पतंग उड़ैए
हवा अदृश्य रहै छै, पतंग चाल कहै / चिन्ह रूप मिलै छै, कारण फेर बुझै
दिशा डोर दिसै छै, अनुमान साँच पकै / भरोस धीरे बढ़ै छै, विश्वास पतंग उड़ैए
साँझ आकाश ढलै छै, डोर हाथ नमै / बालक पतंग समेटै छै, छत मौन होइ
कागज मोड़ रहै छै, आकाश याद धरै / उड़ान मोन बचै छै, आभास पतंग उड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८४३ — संगीतमय रूप

भाव: पतंग: स्वतंत्रता आ सम्बन्ध, खेलक नियम, पाखीक सुरक्षा, अदृश्य हवा आ अनुमान।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: दादरा ६ मात्रा। पतंगक उड़ान लेल ऊर्ध्व मींड राखू; डोरक कसाव तालमे सूक्ष्म सुनाउ।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, मँजीरा आ मृदु तबला। संतूर पतंगक चमक आ डोरक कसाव बीच सन्तुलन राखए।
मतला: उड़ान डोरक सम्बन्धमे सम्भव अछि।
२म शेर: स्वतंत्रता नियंत्रणक पूर्ण अभाव नहि।
३म शेर: खेल दोसर जीवक हानि नबनए।
४म शेर: करुणा नियम बदलि सकैत अछि।
५म शेर: अदृश्य हवा पतंगक चालसँ अनुमानित होइत अछि।
६म शेर: समेटल पतंग स्मृतिमे उड़ान बचबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पतंग समेटल जाए, उड़ानक नैतिक बोध मोनमे रहए।

गजल ८४४ — चूल्हा भोर जरै छै, दालि गन्ध फैलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (सुवास, मिठास, आस, प्यास, विश्वास, उल्लास, आभास) · रदीफ: धुआँ उठैए · शेर: ६

चूल्हा भोर जरै छै, दालि गन्ध फैलै / भात भाप उठै छै, सुवास धुआँ उठैए
माय हाथ चलै छै, बालक थारी तकै / भूख मोन जगै छै, मिठास धुआँ उठैए
धुआँ आँखि दुखै छै, रसोई हवा घटै / स्वाद नेह रहै छै, पीर तइयो रहै
चिमनी राह खुलै छै, देह श्वास बचै / सुधार काज बनै छै, आस धुआँ उठैए
मसाला गन्ध जगै छै, दादी याद अबै / स्वाद भाषा जुड़ै छै, घर स्मृति बनै
पीढ़ी रीत बदलै छै, पोषण ज्ञान जुड़ै / नीर हाथ माँगै छै, प्यास धुआँ उठैए
रसोई श्रम नुकै छै, थारी सजि जाइ / खेनिहार प्रशंसा करै छै, पकौनिहार नाम नुकै
काज माप खुलै छै, मान फेर बँटै / साझा हाथ बनै छै, विश्वास धुआँ उठैए
नमक कम पड़ै छै, स्वाद तुरत बदलै / जीभ चिन्ह दैए छै, माप फेर जँचै
अनुभव फल मिलै छै, बोध धीरे पकै / रस संग जगै छै, उल्लास धुआँ उठैए
साँझ चूल्हा बुझै छै, राख गरम रहै / घर गन्ध बसै छै, मोन शान्त होइ
अगिला भोर अबै छै, आगि फेर जरै / जीवन रीत बचै छै, आभास धुआँ उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८४४ — संगीतमय रूप

भाव: रसोईक धुआँ: स्वाद, श्वास-स्वास्थ्य, स्मृति, अदृश्य घरेलू श्रम, नमकक माप आ दिनचर्या।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द रूपक ७ मात्रा। रसोईक भोर लेल उष्म स्वर राखू; धुआँक पीरपर इसराज हलुक उतरए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, बाँसुरी आ विरल पखावज। इसराज घरेलू श्रमक अनकहल पीर सुनाए।
मतला: नेहक रसोईमे स्वास्थ्यक प्रश्न दबायल नहि जाए।
२म शेर: वातायन/चिमनी देहक स्वतंत्र श्वासक आधार अछि।
३म शेर: गन्ध स्मृति जगबैत अछि।
४म शेर: घरेलू श्रमक मान बाँटल जाए।
५म शेर: स्वादक अनुभव सफल जाँचक छोट उदाहरण अछि।
६म शेर: राख पाछाँ अगिला भोरक आगि जीवन-चक्र बनैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। चूल्हा बुझलापर घरेलू श्रमक मान बुझायल रहए।

गजल ८४५ — राति आकाश खुलै छै, तारा झिलमिल करै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (काल, चाल, जाल, ताल, पाल, माल, लाल) · रदीफ: तारा दिखैए · शेर: ६

राति आकाश खुलै छै, तारा झिलमिल करै / यात्री माथ उठै छै, काल तारा दिखैए
ध्रुव ठाम रहै छै, दिशा राह बनै / नाविक पथ धरै छै, चाल तारा दिखैए
बादल घेर करै छै, तारा ओझर होइ / कम्पास साथ रहै छै, दू ज्ञान जुड़ै
एक साधन रुकै छै, आन साधन चलै / भरोस जाल बनै छै, जाल तारा दिखैए
पुरखा आकाश पढ़ै छै, ऋतु समय बुझै / नव यन्त्र मिलै छै, माप अधिक सूक्ष्मै
परम्परा विज्ञान जुड़ै छै, दाबी फेर जँचै / ज्ञान लय धरै छै, ताल तारा दिखैए
तारा दूर रहै छै, प्रकाश देर अबै / देखल रूप कहै छै, बीते काल दिसै
वर्तमान बोध बदलै छै, दूरी अर्थ खुलै / समय रहस्य धरै छै, पाल तारा दिखैए
ज्योति तेज दिसै छै, दूरी तइयो माँगै / आभा रूप लुभै छै, स्रोत बल जँचै
प्रमाण दू मिलै छै, खगोल ज्ञान पकै / आकाश भ्रम घटै छै, माल तारा दिखैए
भोर किरण चढ़ै छै, तारा धीरे नुकै / दिशा तइयो रहै छै, पएर राह चलै
यात्री घर पबै छै, राति याद रहै / क्षितिज रंग बनै छै, लाल तारा दिखैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८४५ — संगीतमय रूप

भाव: तारा-दिशा: परम्परागत नेविगेशन, उपकरण, प्रकाशक विलम्ब, दूरी, स्रोत-जाँच आ भोर।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: झपताल १० मात्रा। ताराक दिशा जकाँ विरल स्वर-बिन्दु राखू; मौनक बीच लय स्पष्ट रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, स्वरमण्डल, सरोद आ मृदु तबला। स्वरमण्डल ताराक दूर प्रकाश-जकाँ विरल चमक दे।

मतला: आकाश पढ़ब अनुभवजन्य ज्ञानक रूप अछि।

२म शेर: एक साधन विफल भेलापर आन प्रमाण उपयोगी।

३म शेर: पुरान ज्ञान नव यन्त्रसँ संवाद करैत अछि।

४म शेर: दूर ताराक प्रकाश बीतल काल देखबैत अछि।

५म शेर: चमक स्रोत-बलक सरल माप नहि।

६म शेर: भोर तारा नुकबैत अछि, दिशा नहि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। भोर तारा नुकए, दिशा-बोध रहए।

गजल ८४६ — पाखी झुण्ड उड़ै छै, आकाश रेखा बनै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह) · रदीफ: पाखी घुरैए · शेर: ६

पाखी झुण्ड उड़ै छै, आकाश रेखा बनै / ऋतु सोर बदलै छै, राह पाखी घुरैए
दलदल नीर रहै छै, थाकल पंख रुकै / दूर देश जुड़ै छै, चाह पाखी घुरैए
सीमा नक्शा रहै छै, पाखी तइयो लाँघै / कानून देश बदलै छै, आकाश राह रहै
रक्षा सन्धि बनै छै, जीव ठाम बचै / नीर भूमि जुड़ै छै, प्रवाह पाखी घुरैए
चुम्बक सूरज मिलै छै, दिशा बोध बनै / तारा राति रहै छै, पंख मार्ग धरै
अनेक चिन्ह जुड़ै छै, यात्रा साँच बनै / गहिर राह खुलै छै, अथाह पाखी घुरैए
दलदल सूखि जाइ छै, विश्राम ठाम घटै / यात्रा भार बढ़ै छै, मृत्यु जोखिम बढ़ै
संरक्षण काज चलै छै, गाम पर्यटन बढ़ै / सन्तुलन धीरे बनै छै, उछाह पाखी घुरैए
वैज्ञानिक छल्ला धरै छै, पाखी फेर मिलै / दूरी लेखा खुलै छै, जीवन राह जँचै
डेटा लोक जुड़ै छै, नीति माप बनै / रक्षा काज चलै छै, निर्वाह पाखी घुरैए
भोर झुण्ड उठै छै, पंख नीर छुबै / बालक हाथ हिलै छै, आकाश सोर भरै
अगिला ऋतु अबै छै, पुरना ठाम तकै / घर बोध जगै छै, आह पाखी घुरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८४६ — संगीतमय रूप

भाव: प्रवासी पाखी: सीमा-पार यात्रा, दलदल, बहु-संकेत दिशा, संरक्षण, डेटा आ घरक ऋतु-बोध।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा। प्रवासी पाखीक झुण्ड जकाँ समूह-स्वर छोट बेर जुड़ए, फेर एकल स्वर खुलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, मन्द मँजीरा आ इसराज। बाँसुरी झुण्डक दूरी आ घुरनाइ दुनू सुनाए।

मतला: जीव राजनीतिक सीमा नहि मानैत, संरक्षण सहयोग माँगैत अछि।

२म शेर: दलदल यात्रा-मार्गक जीवनरेखा अछि।

३म शेर: दिशा एक चिन्ह नहि, अनेक संकेतसँ बनैत अछि।

४म शेर: आवास घटला पर जोखिम बढ़ैत अछि।

५म शेर: छल्ला/डेटा पुनरागमनक प्रमाण दैत अछि।

६म शेर: घुरनाइ घरक स्थिर बिन्दु नहि, ऋतु-सम्बन्ध अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। झुण्ड दूर जाए, साझा आकाशक जिम्मेदारी रहए।

गजल ८४७ — पैडल पएर घुमै छै, चक्का राह धरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, भार, आधार, विचार, व्यवहार, उद्धार, पुकार) · रदीफ: साइकिल चलैए · शेर: ६

पैडल पएर घुमै छै, चक्का राह धरै / सन्तुलन देह सीखै छै, सार साइकिल चलैए
बालक हाथ काँपै छै, मीत पाछाँ धरै / डर धीरे घटै छै, भार साइकिल चलैए
राह गड्ढा रहै छै, चक्का झटका सहै / सड़क नीति पूछै छै, सुरक्षा हक माँगै
पथ भिन्न रहै छै, जोखिम कम होइ / नगर योजना बनै छै, आधार साइकिल चलैए
चेन सूखि जाइ छै, पैडल भारी लगै / तेल थोड़ा पड़ै छै, घर्षण तुरत घटै
कारण छोट दिसै छै, काज फेर चलै / मरम्मत ज्ञान बनै छै, विचार साइकिल चलैए
धन कम लागै छै, दूरी तइयो कटै / विद्यार्थी विद्यालय पबै छै, अवसर राह खुलै
लिंग भय घटै छै, चलन हक बढ़ै / स्वतंत्र चाल बनै छै, व्यवहार साइकिल चलैए
हेलमेट माथ बचै छै, नियम जीवन धरै / गति माप रहै छै, दूसर पथिक बचै
साझा राह चलै छै, मान दूरी घटै / नैतिक बोध जगै छै, उद्धार साइकिल चलैए
साँझ घंटी बजै छै, गाम बाट खुलै / घर द्वार दिसै छै, पएर थाकि रुकै
चक्का धीरे थमकै छै, मोन तइयो हँसै / यात्रा सोर उठै छै, पुकार साइकिल चलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८४७ — संगीतमय रूप

भाव: साइकिल: सन्तुलन, सड़क-सुरक्षा, मरम्मत, शिक्षा-पहुँच, चलन-स्वतंत्रता आ साझा राह।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: रूपक ७ मात्रा। साइकिलक पैडल-जकाँ ताल वृत्ताकार चलए; घंटीक संकेत अत्यन्त हलुक रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, खड़ताल, सारंगी आ हलुक तबला। खड़ताल चक्काक आवर्तनकेँ हलुक आधार दे।
मतला: सन्तुलन अभ्याससँ बनैत अछि।
२म शेर: सड़कक संरचना जोखिम बदलैत अछि।
३म शेर: छोट घर्षण कारण काज भारी बना सकैत अछि।
४म शेर: कम लागत चलन शिक्षा/काजक अवसर बढ़बैत अछि।
५म शेर: नियम अपन संग दोसराक सुरक्षा लेल अछि।
६म शेर: यात्रा देहक श्रम आ स्वतंत्रता दुनू अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। चक्का थमए, चलन-स्वतंत्रताक प्रश्न आगाँ चलए।

गजल ८४८ — नमक दाना पड़ै छै, दालि स्वाद बदलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, छोर, जोर, कोर) · रदीफ: नमक घुलैए · शेर: ६

नमक दाना पड़ै छै, दालि स्वाद बदलै / जीभ माप धरै छै, नोर नमक घुलैए
कम नमक रहै छै, भोजन फीका लगै / बेसी नमक दुखै छै, सोर नमक घुलैए
समुद्र नीर सुकै छै, सफेद दाना रहै / श्रमिक धूप सहै छै, दाम कम पबै
श्रम नाम नुकै छै, थारी तइयो सजै / न्याय डोर जुड़ै छै, डोर नमक घुलैए
नमक पथ चलै छै, व्यापार राह बनै / कर भार बढ़ै छै, लोक रोष उठै
इतिहास काज जगै छै, साधारण दाना बनै / आन्दोलन भोर उठै छै, भोर नमक घुलैए
घाम देह पसीजै छै, नमक शरीर रहै / नीर सन्तुलन माँगै छै, स्वास्थ्य माप रहै
ज्ञान देह जुड़ै छै, स्वाद सीमा बुझै / सावधानी राह बनै छै, छोर नमक घुलैए
दाना आँखि चुकै छै, घुलल रूप नुकै / स्वाद फल कहै छै, उपस्थिति फेर बुझै
अभाव स्वाद कहै छै, कारण मोन खोजै / अनुमान बल बढ़ै छै, जोर नमक घुलैए
भोजन संग बैसै छै, लोक कथा कहै / नमक रोटी जुड़ै छै, मीत मान बढ़ै
दाना पूर्ण गलै छै, स्वाद तइयो रहै / नुकल रूप बचै छै, कोर नमक घुलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८४८ — संगीतमय रूप

भाव: नमक: स्वादक माप, श्रम, कर-इतिहास, देह-सन्तुलन, अदृश्य उपस्थिति आ मित्रता।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: दादरा ६ मात्रा। नमकक दाना जकाँ छोट स्वर-चिन्ह समग्र स्वाद बदलए; जलतरंग विरल प्रयोग करू।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, बाँसुरी आ विरल तबला। जलतरंग घुलैत दानाक अदृश्य प्रभाव बनए।
मतला: थोड़ नमक समग्र स्वाद बदलि सकैत अछि।
२म शेर: नमकक पाछाँ श्रमिकक धूप देखल जाए।
३म शेर: साधारण दाना राजनीतिक इतिहासक केन्द्र बनि सकैत अछि।
४म शेर: देहमे नमक सन्तुलनक प्रश्न अछि।
५म शेर: घुलल नमक नदिसितो स्वादसँ उपस्थिति बुझाइत अछि।
६म शेर: रूप गललासँ प्रभाव नष्ट नहि होइत।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दाना घुलए, श्रम आ इतिहासक स्वाद बचए।

गजल ८४९ — भोर अजान उठै छै, घण्टा दूर बजै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, निदान, प्रमाण, पहिचान) · रदीफ: सोर मिलैए · शेर: ६

भोर अजान उठै छै, घण्टा दूर बजै / पाखी संग गबै छै, मान सोर मिलैए
गाम नींद खुलै छै, लोक काज धरै / भिन्न पथ रहै छै, ज्ञान सोर मिलैए
श्रद्धा घर रहै छै, कानून साझा रहै / एक मत चढ़ै छै, आन पर थोपै
सम्मान सीमा धरै छै, स्वतंत्र मन बचै / नागरिक रीत बनै छै, ध्यान सोर मिलैए
दुःख घर अबै छै, पड़ोसी धर्म नपूछै / हाथ सहाय बनै छै, करुणा राह खुलै
मत भिन्न रहै छै, पीर लोक जोड़ै / सेवा काज बनै छै, विधान सोर मिलैए
इतिहास घाव रहै छै, स्मृति साँच माँगै / क्षमा स्मृति धरै छै, जिम्मा संग रहै
दस्तावेज स्रोत खुलै छै, हिंसा कारण जँचै / शान्ति राह बनै छै, निदान सोर मिलैए
अफवाह तेज फैलै छै, भीड़ रोष बढ़ै / स्रोत फेर जँचै छै, झूठ धीरे घटै
तथ्य दू मिलै छै, लोक मोन थमकै / साँच बल बढ़ै छै, प्रमाण सोर मिलैए
भोर सोर घटै छै, बाजार द्वार खुलै / लोक संग चलै छै, दिन काज बनै
नाम भिन्न रहै छै, मान साझा रहै / नागरिक बोध जगै छै, पहिचान सोर मिलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८४९ — संगीतमय रूप

भाव: बहुधर्मी भोर: श्रद्धा-स्वतंत्रता, साझा कानून, करुणा, स्मृति, अफवाह-जाँच आ नागरिक मान।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। भोरक बहु स्वर सम्मानसँ राखू; कोनो एक वाद्य दोसराकेँ दबाए नहि।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु घण्टी आ मन्द तबला। घण्टी अत्यन्त मृदु रहए, साझा भोरक स्थान सभ स्वरकेँ मिलए।
मतला: भिन्न धार्मिक स्वर सह-अस्तित्वमे रहि सकैत अछि।
२म शेर: स्वतंत्रता दोसरापर विश्वास थोपबाक अधिकार नहि।
३म शेर: पीरक घड़ी करुणा मतभेदसँ पहिने आबि सकैत अछि।
४म शेर: क्षमा विस्मरण नहि; इतिहासक जिम्मेदारी बचैत अछि।
५म शेर: अफवाह स्रोत-जाँच माँगैत अछि।
६म शेर: नागरिक मान साझा आधार बनि सकैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। भिन्न स्वर शान्त होथि, साझा मानक ध्वनि रहए।

गजल ८५० — लहर भोर उठै छै, क्षितिज रंग बदलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, भार, आधार, विचार, व्यवहार, उद्धार, पुकार) · रदीफ: समुद्र बुलबैए · शेर: ६

लहर भोर उठै छै, क्षितिज रंग बदलै / पएर बालू धँसै छै, सार समुद्र बुलबैए
नीर छोर नदिसै छै, आँखि दूर तकै / मोन प्रश्न धरै छै, भार समुद्र बुलबैए
नाव छोट दिसै छै, जगत पैघ रहै / मानुष माप घटै छै, नम्र बोध बढ़ै
तारा राह दिसै छै, कम्पास संग रहै / बहु ज्ञान जुड़ै छै, आधार समुद्र बुलबैए
लहर फेन उठै छै, रूप क्षण बदलै / नीर मूल रहै छै, नाम फेर बदलै
रूप नाश दिसै छै, पदार्थ तइयो रहै / बोध गहिर खुलै छै, विचार समुद्र बुलबैए
प्लास्टिक कूल अटकै छै, माछ पीर सहै / सुविधा दोष खुलै छै, जिम्मा मानुष माँगै
काज आइ बदलै छै, अगिला पीढ़ी बचै / नैतिक राह बनै छै, व्यवहार समुद्र बुलबैए
तूफान दूर उठै छै, बंदरगाह खबर पबै / माप दबाव कहै छै, नाविक राह बदलै
चिन्ह अनेक मिलै छै, जोखिम बोध पकै / जीवन नाव बचै छै, उद्धार समुद्र बुलबैए
साँझ सूरज डुबै छै, क्षितिज रेखा रहै / अन्त दूर दिसै छै, राह आगाँ चलै
राति तारा उगै छै, लहर सोर रहै / अगिला प्रश्न उठै छै, पुकार समुद्र बुलबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८५० — संगीतमय रूप

भाव: समुद्र-क्षितिज: नम्रता, बहुप्रमाण दिशा, रूप-परिवर्तन, पर्यावरणीय जिम्मेदारी, तूफान-संकेत आ अनन्त प्रश्न।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित रूपक ७ मात्रा। अन्तिम गजलमे समुद्र-जकाँ दीर्घ विस्तार राखू; रदीफपर क्षितिज बन्द नहि, खुलैत रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, स्वरमण्डल आ अत्यन्त मृदु तबला। सरोदक खुलल तार ८५०क बादो अगिला खोजक अवकाश छोड़ए।
मतला: क्षितिज अन्त जकाँ दिसैत अछि, वास्तविक अन्त नहि।
२म शेर: नाविक बहु साधन जोड़ि दिशा पबैत अछि।
३म शेर: फेन बदलैत अछि, नीरक निरन्तरता रहैत अछि।
४म शेर: समुद्री प्रदूषण वर्तमान सुविधा केँ भविष्यक दायित्वसँ जोड़ैत अछि।
५म शेर: तूफान एकाधिक संकेतसँ अनुमानित होइत अछि।
६म शेर: ८५० समाप्ति नहि; अगिला प्रश्नक खुलल क्षितिज अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ८५१ — भोर कूप जागै छै, नीर तल चमकै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (ज्ञान, मान, ध्यान, निदान, प्रमाण, विधान, पहिचान) · रदीफ: कूप पुकारैए · शेर: ६

भोर कूप जागै छै, रस्सी हाथ तनै / नीर तल चमकै छै, ज्ञान कूप पुकारैए
घड़ा पाँति लगै छै, लोक बेर तकै / प्यास मोन बढ़ै छै, मान कूप पुकारैए
जाति घेर बनै छै, पएर द्वार रुकै / नीर एकहि रहै छै, हक तइयो बँटै
बूढ़ नोर झरै छै, बालक घड़ा धरै / साझा हक जगै छै, ध्यान कूप पुकारैए
मेह देर पड़ै छै, तल धीरे घटै / माटि फाटि जाइ छै, गाम चिन्ता बढ़ै
गहिर माप जँचै छै, जल रेखा खुलै / सूखा मूल मिलै छै, निदान कूप पुकारैए
हाथ घाव धरै छै, रस्सी खुरदर लगै / श्रम दाम माँगै छै, नीर मूल्य बढ़ै
लेखा पन्ना खुलै छै, बाँट क्रम जँचै / लोक साक्ष्य धरै छै, प्रमाण कूप पुकारैए
नव पम्प लगै छै, कूप तइयो रहै / पुरना रीत बदलै छै, हक फेर जँचै
नीति द्वार खुलै छै, लोक बोल जुड़ै / साझा क्रम बनै छै, विधान कूप पुकारैए
साँझ घड़ा भरै छै, छाया लम्बा पड़ै / बालक नीर पीबै छै, मोन हँसी उठै
कूप गाम रहै छै, पीढ़ी कथा जुड़ै / नीर याद धरै छै, पहिचान कूप पुकारैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८५१ — संगीतमय रूप

भाव: जल, श्रम, जातिगत घेर, सूखा, साझा हक आ पीढ़ीगत स्मृति।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। कूपक डोल उतरबाक जकाँ स्वर मन्द्रसँ उठए; रदीफपर प्यास आ हक दुनू सुनाइ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, मृदु घण्टी, बाँसुरी आ विरल तबला। घण्टी जल-बाँटक सार्वजनिक संकेत जकाँ अत्यन्त कोमल रहए।

मतला: जल जीवनक साधन मात्र नहि, सामाजिक मानक प्रश्न सेहो अछि।

२म शेर: प्यास सभक समान, पहुँचक रुकावट मानवनिर्मित हो सकैत अछि।

३म शेर: सूखा कारणक जाँच आ साझा उत्तरदायित्व माँगैत अछि।

४म शेर: श्रमक अदृश्य भार जलक मूल्यक हिस्सा अछि।

५म शेर: नव साधन पुरान अन्याय अपनेसँ नहि मेटबैत।

६म शेर: कूप पीढ़ी-दर-पीढ़ी गामक स्मृति आ पहिचान धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। समापनमे कूपक नीर सभक हकक प्रश्न खुलल छोड़ए।

गजल ८५२ — पोथी पन्ना खुलै छै, छोट टिप्पणी जगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (विचार, आधार, व्यवहार, प्रकार, उद्धार, विस्तार, सत्कार) · रदीफ: हाशिया कहैए · शेर: ६

पोथी पन्ना खुलै छै, आखर रेखा चमकै / छोट टिप्पणी जगै छै, विचार हाशिया कहैए
मूल पाँति चलै छै, किनार सोर उठै / मौन पाठक मिलै छै, आधार हाशिया कहैए
स्याही फीकि पड़ै छै, अर्थ तइयो रहै / हाथ काल बदलै छै, टिप्पणी रूप बदलै
पाठ दू भिड़ै छै, मोन फेर जँचै / संगति धीरे खुलै छै, व्यवहार हाशिया कहैए
नकल दोष रहै छै, अगिला पन्ना बढ़ै / पाठक चिन्ह धरै छै, भेद फेर खोजै
स्रोत फेर मिलै छै, पाठ रूप सुधरै / दोष क्रम खुलै छै, प्रकार हाशिया कहैए
हाशिया नाम नुकै छै, बुद्धि तइयो दिसै / अनाम हाथ बचै छै, ज्ञान डोर जुड़ै
पीढ़ी पाठ पढ़ै छै, पुरना प्रश्न जगै / नव उत्तर उगै छै, उद्धार हाशिया कहैए
एक आखर कटै छै, अर्थ दिशा बदलै / दू बिन्दु जुड़ै छै, वाक्य साँस लैए
सम्पादक पाठ जँचै छै, स्रोत क्रम धरै / अर्थ फेर फैलै छै, विस्तार हाशिया कहैए
पोथी बन्द होइ छै, टिप्पणी मोन रहै / पाठक फेर आबै छै, प्रश्न द्वार खुलै
मूल पाँति बचै छै, किनार संग चलै / मत मान पबै छै, सत्कार हाशिया कहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८५२ — संगीतमय रूप

भाव: पाण्डुलिपि, नकल-दोष, अनाम पाठक, सम्पादन आ अर्थक बहुपरत यात्रा।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। हाशियाक फुसफुसाहट जकाँ मुख्य स्वरक किनारमे दोसर सूक्ष्म स्वर राखू; शब्द स्पष्ट रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, स्वरमण्डल आ मन्द मँजीरा। इसराज पुरान स्याहीक फीकि रंग आ नव पाठक प्रश्न जोड़ए।
मतला: मुख्य पाठक संग किनारक टिप्पणी सेहो ज्ञानक इतिहास बनैत अछि।
२म शेर: संगति खोजला पर भिन्न पाठ विरोध मात्र नहि रहैत।
३म शेर: नकल-दोष पकड़ब पाठ-समीक्षाक अनुशासन अछि।
४म शेर: अनाम हाथ सेहो परम्पराक ज्ञान बढ़बैत अछि।
५म शेर: एक आखर अर्थ-दिशा बदलि सकैत अछि।
६म शेर: सम्पादन संवाद अछि, मूल पाँति मेटब नहि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पोथी बन्द हो, हाशियाक प्रश्न अगिला पाठक लेल जागल रहए।

गजल ८५३ — सीटी दूर बजै छै, लोहा ताल धरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, डोर, भोर, छोर, कोर, जोर, नोर) · रदीफ: पटरी गबैए · शेर: ६

सीटी दूर बजै छै, भीड़ पएर सरकै / लोहा ताल धरै छै, सोर पटरी गबैए
गाड़ी धीरे रुकै छै, झोरा हाथ तनै / विदाई मोन बढ़ै छै, डोर पटरी गबैए
घड़ी दीवार चलै छै, प्रतीक्षा बेर लम्बै / बालक खिड़की तकै छै, नगर दूर दिसै
भोर धुँआ उठै छै, चाय गन्ध फैलै / नव यात्रा खुलै छै, भोर पटरी गबैए
मजदूर झोरा धरै छै, टिकट मुट्ठी रहै / घर याद जगै छै, पएर तइयो चलै
नाम पट्ट बदलै छै, भाषा सोर मिलै / दूर ठाम जुड़ै छै, छोर पटरी गबैए
देरी घोष होइ छै, रोष भीड़ बढ़ै / कारण फेर जँचै छै, दाबी तखन घटै
सूचना पटल चमकै छै, स्रोत समय मिलै / भ्रम धीरे छुटै छै, कोर पटरी गबैए
रेल पुल लाँघै छै, नदी नीर चमकै / यात्री मोन बदलै छै, दृश्य रेखा सरकै
पएर फेर उतरै छै, ठाम नाम पढ़ै / यात्रा बल पबै छै, जोर पटरी गबैए
साँझ गाड़ी जाइ छै, प्लेटफॉर्म खाली रहै / कागज पंख उड़ै छै, नोर आँखि धरै
दूर सीटी आबै छै, याद घर जुड़ै / विदाई सार रहै छै, नोर पटरी गबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८५३ — संगीतमय रूप

भाव: प्रस्थान, प्रतीक्षा, प्रवास, सूचना, भाषा, दूरी आ घरक स्मृति।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। पटरीक आवर्तन जकाँ ताल चलए; विदाईक पाँतिमे लय क्षणभर धीमा हो।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, मृदु खड़ताल आ विरल तबला। सरोद दूर नगर आ घरक डोरकेँ एक तानमे बाँधए।

मतला: प्लेटफॉर्म चलन आ प्रतीक्षाक एकहि ठाम अछि।

२म शेर: प्रवासक निर्णयमे श्रम, घर आ आशा एक संग चलैत अछि।

३म शेर: भाषा आ नाम दूरी जोड़ैत अछि।

४म शेर: सूचना जाँचल नहि जाए तँ भीड़मे भ्रम बढ़ैत अछि।

५म शेर: यात्रा दृष्टिकोण बदलैत अछि।

६म शेर: विदाईक बादो सम्बन्धक डोर रहैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। गाड़ी दूर जाए, पटरीक ताल घरक डोर मोनमे बचाए।

गजल ८५४ — माटि हाथ नमै छै, रूप बीच उगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, प्यास, विश्वास, उल्लास, प्रकाश, निवास, आभास) · रदीफ: माटि सँवरैए · शेर: ६

माटि हाथ नमै छै, चाक धीरे घुमै / रूप बीच उगै छै, आस माटि सँवरैए
नीर बूँद मिलै छै, माटि देह नरमै / कुम्हार मोन धरै छै, प्यास माटि सँवरैए
हाथ दबाव बदलै छै, घड़ा काँठ उठै / अधिक जोर पड़ै छै, देह रेखा बिगड़ै
माप फेर जँचै छै, अँगुरी ताल मिलै / रूप थिर बनै छै, विश्वास माटि सँवरैए
घड़ा धूप सुकै छै, भीतर खाली रहै / खाली ठाम बनै छै, नीर बाद धरै
रिक्त भीतर बचै छै, उपयोग अर्थ जगै / श्रम संग मिलै छै, उल्लास माटि सँवरैए
भट्ठी आग जरै छै, माटि रंग बदलै / ताप सीमा लाँघै छै, घड़ा तखन फुटै
कारण क्रम जँचै छै, ताप माप धरै / दोष फेर घटै छै, प्रकाश माटि सँवरैए
बाजार दाम बढ़ै छै, हाथ नाम नुकै / घड़ा घर जाइ छै, कारीगर सोर रहै
खरीदार रूप तकै छै, श्रम कथा सुनै / घर मान बढ़ै छै, निवास माटि सँवरैए
टूटल घड़ा पड़ै छै, माटि फेर मिलै / कुम्हार हाथ चलै छै, चक्र पुनः घुमै
रूप फेर बदलै छै, माटि मूल रहै / क्षण साँच दिसै छै, आभास माटि सँवरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८५४ — संगीतमय रूप

भाव: माटि, रूप, रिक्तता, ताप, श्रम, बाजार आ पुनर्निर्माण।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित झपताल १० मात्रा। चाकक वृत्ताकार गतिजकाँ ठेक नियमित रहए; रूप बनबाक पाँतिमे मींड धीरे चढ़ए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, माटिक घट, सारंगी आ मन्द पखावज। माटिक घट कुम्हारक श्रमक देहगत तालक स्मरण कराए।

मतला: रूप दबाव आ लयक संतुलनसँ बनैत अछि।

२म शेर: रिक्त भीतर उपयोगक शर्त बनैत अछि।

३म शेर: ताप आवश्यक अछि, अधिक ताप विनाशक।

४म शेर: कारण-क्रम बुझला पर दोष घटैत अछि।

५म शेर: बाजार रूप देखैत अछि, श्रमक कथा नुका सकैत अछि।

६म शेर: टूटल रूप माटिमे घुरि नव सम्भावना बनैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। चाक रुकए, माटिक नव रूपक सम्भावना तइयो रहए।

गजल ८५५ — मेह काँच पड़ै छै, बूँद रेखा बनै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, प्रीत, रीत, मीत, जीत, अतीत, विनीत) · रदीफ: खिड़की सुनैए · शेर: ६

मेह काँच पड़ै छै, बूँद रेखा बनै / छप्पर ताल धरै छै, गीत खिड़की सुनैए
बालक हाथ लगै छै, काँच ठंढा रहै / बाहर गाछ नमै छै, प्रीत खिड़की सुनैए
आकाश घन भरै छै, दिन अन्हार होइ / घर दीप जरै छै, मोन भीतर खुलै
मेह गन्ध उठै छै, माटि याद जगै / पुरना घर मिलै छै, रीत खिड़की सुनैए
नीर छज्जा बहै छै, राह कीच बनै / पएर धीरे चलै छै, देह ताल धरै
मीत दूर रहै छै, बूँद संदेश लैए / मोन नेह धरै छै, मीत खिड़की सुनैए
बिजुरी क्षण चमकै छै, छवि दीवार उभरै / तत्क्षण रूप मिटै छै, आँखि स्मृति धरै
क्षण फेर जुड़ै छै, याद डोर बनै / मोन पीर हरै छै, जीत खिड़की सुनैए
रेडियो सोर आबै छै, मेह तइयो बढ़ै / समाचार दूर कहै छै, घर चिन्ता बढ़ै
स्रोत फेर जँचै छै, दाबी माप मिलै / बोध धीरे पकै छै, अतीत खिड़की सुनैए
राति मेह थमकै छै, छत बूँद रहै / नींद धीरे आबै छै, मोन श्वास सम्हरै
भोर काँच खुलै छै, गाछ धूल धोवै / नव दिन नमै छै, विनीत खिड़की सुनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८५५ — संगीतमय रूप

भाव: बरखा, घर-बाहरक सीमा, स्मृति, दूर समाचार, बूँदक संगीत आ भोर।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। बूँदक असमान गिरावट नकल नहि करू; बरखाक भीतर घरक श्वास सुनाउ।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, बाँसुरी आ मृदु तबला। जलतरंग बूँदक उजास दे, मेहक सोरकेँ भारी नहि बनाबए।
मतला: खिड़की बाह्य जग आ भीतरक अनुभवक सीमा अछि।
२म शेर: गन्ध स्मृतिकेँ तुरत जगबैत अछि।
३म शेर: दूर मीतक अभाव बूँदक सोरमे उपस्थित भऽ सकैत अछि।
४म शेर: क्षणिक चमक स्मृतिमे टिकि सकैत अछि।
५म शेर: समाचार सुनब संग स्रोत-जाँच आवश्यक।
६म शेर: मेह थमला पाछाँ नव दिनक विनम्र उजास आबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मेह थमए, काँचपर एक बूँद स्मृतिक अन्तिम स्वर बने।

गजल ८५६ — कलम डारि जुड़ै छै, नव फूल खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, प्रवाह, अथाह, उछाह, निर्वाह, आह) · रदीफ: बगान फलैए · शेर: ६

कलम डारि जुड़ै छै, रस भीतर बहै / नव फूल खुलै छै, राह बगान फलैए
पुरना जड़ि रहै छै, नव डारि बढ़ै / दुनू रस मिलै छै, चाह बगान फलैए
छाल धीरे कटै छै, घाव पट्टी धरै / सावध हाथ चलै छै, जीवन डोर बचै
समय धूप मिलै छै, डारि बल धरै / माली मोन रखै छै, प्रवाह बगान फलैए
एक गाछ फलै छै, आन गाछ रहै / माटि जल बदलै छै, स्वाद तइयो बदलै
कारण बहु जुड़ै छै, फल रूप बनै / सरल दाबी डुबै छै, अथाह बगान फलैए
कीड़ा पात खाइए छै, माली चिन्ह देखै / दवा माप धरै छै, मधुमाछि जीवन बचै
उपाय सीमा जँचै छै, सन्तुलन राह मिलै / फूल फेर हँसै छै, उछाह बगान फलैए
फल बाजार जाइ छै, बीज घर रहै / दाम रूप बदलै छै, श्रम कथा रहै
माली लेखा धरै छै, ऋतु क्रम पढ़ै / घर काज चलै छै, निर्वाह बगान फलैए
साँझ गाछ नमै छै, पाखी डारि बैसै / बच्चा फल तकै छै, मोन चाव बढ़ै
जड़ि माटि धरै छै, डारि आकाश छुबै / जीवन संग भरै छै, आह बगान फलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८५६ — संगीतमय रूप

भाव: कलम-जोड़, जड़ि, सहायक कारण, जैव-सन्तुलन, श्रम आ पीढ़ीगत बगान।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: मन्द रूपक ७ मात्रा। कलम-जोड़क कोमलता लेल स्वर दू रेखामे मिलए; जोरक बदला धैर्यक लय राखू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, संतूर आ विरल मँजीरा। एकतारा जड़ि आ नव डारिक एकहि रस-रेखा थामए।

मतला: नव डारि पुरान जड़ि मेटैत नहि, ओकर संग रस जोड़ैत अछि।

२म शेर: घाव आ जोड़ दुनू सावधानी माँगैत अछि।

३म शेर: फल अनेक कारणक परिणाम अछि।

४म शेर: कीड़ा रोकब आ परागण बचायबक सन्तुलन सावध विवेक माँगैत अछि।

५म शेर: बाजार फल लैत अछि, श्रमक कथा घरमे रहि सकैत अछि।

६म शेर: जड़ि आ आकाश मिलि जीवनक विस्तार बनबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। बगानक साँझमे जड़ि आ नव डारि एकहि श्वासमे रहए।

गजल ८५७ — न्याय कक्ष खुलै छै, प्रश्न क्रम धरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (काल, चाल, ताल, जाल, ढाल, माल, लाल) · रदीफ: गवाही तौलैए · शेर: ६

न्याय कक्ष खुलै छै, साक्षी श्वास सम्हरै / प्रश्न क्रम धरै छै, काल गवाही तौलैए
बोल धीरे आबै छै, लेखक आखर धरै / नोर आँखि भरै छै, चाल गवाही तौलैए
एक कथा कहै छै, दू स्मृति भिड़ै / तिथि फेर जँचै छै, ठाम नाम मिलै
दस्तावेज पन्ना खुलै छै, साक्षी बोल जुड़ै / मेल फेर बनै छै, ताल गवाही तौलैए
प्रतिपक्ष प्रश्न करै छै, रोष तइयो घटै / मान सीमा रहै छै, भाषा संयम धरै
दोष ठाम दिसै छै, बात फेर जँचै / तर्क भ्रम काटै छै, जाल गवाही तौलैए
मौन क्षण रहै छै, अर्थ तइयो बढ़ै / चेहरा रेखा बदलै छै, भीतर पीर दिसै
न्यायाधीश मोन धरै छै, पूर्व मान घटै / साक्ष्य बल बनै छै, ढाल गवाही तौलैए
भीड़ बाहर बोलै छै, अफवाह सोर बढ़ै / कक्ष भीतर रहै छै, प्रमाण क्रम चलै
दाबी फेर छँटै छै, तथ्य रेखा खुलै / निर्णय भार धरै छै, माल गवाही तौलैए
फैसला पाछाँ आबै छै, जीवन तइयो चलै / घाव धीरे भरै छै, स्मृति दाग रहै
न्याय नाम रहै छै, मानव गरिमा बचै / नोर साक्ष्य धरै छै, लाल गवाही तौलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८५७ — संगीतमय रूप

भाव: साक्ष्य, स्मृति, प्रतिप्रश्न, मौन, अफवाह, निर्णय आ गरिमा।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: विलम्बित कहरवा ८ मात्रा। गवाहीक पाँतिमे शब्द एकदम साफ उच्चरू; वाद्य साक्षीक स्वरकेँ ढाकए नहि।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज आ स्वरमण्डल। सारंगी नोरक भाव दे, मुदा न्याय-कक्षकेँ करुण विलाप नहि बनाबए।

मतला: गवाहीकेँ सम्मान आ जाँच दुनू चाही।

२म शेर: स्मृति आ दस्तावेजक मेल सत्य-परीक्षा मजबूत करैत अछि।

३म शेर: प्रतिप्रश्न अपमान नहि बनए।

४म शेर: मौन सेहो प्रसंगमे अर्थवान हो सकैत अछि।

५म शेर: अफवाहक बदला प्रमाण-क्रम पर निर्णय टिकए।

६म शेर: न्याय अन्ततः मानवीय गरिमाक रक्षा करए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। फैसला पाछाँ साक्षीक मान आ प्रमाणक अनुशासन स्मरण रहए।

गजल ८५८ — राति नदी बहै छै, मचान दीप जरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाप (माप, छाप, ताप, थाप, संताप, आलाप, प्रताप) · रदीफ: दीप चमकैए · शेर: ६

राति नदी बहै छै, मचान दीप जरै / नाव दूर तकै छै, माप दीप चमकैए
कुहरा घाट ढाकै छै, लौ तइयो दिसै / मल्लाह राह धरै छै, छाप दीप चमकैए
धार तेज बढ़ै छै, नाव रस्सी तनै / घाट दूरी बदलै छै, आँखि चिन्ह खोजै
दीप एकहि रहै छै, जल रेखा सरकै / दिशा फेर मिलै छै, ताप दीप चमकैए
तेल धीरे घटै छै, रखवार पात्र भरै / श्रम राति जागै छै, नाव जीवन बचै
लौ हवा लड़ै छै, हाथ ढाल बनै / ताल मन्द पड़ै छै, थाप दीप चमकैए
दूर लौ दिसै छै, दूरी माप भुलै / मल्लाह चिन्ह जँचै छै, धार संग मिलै
अनुमान फेर चलै छै, नाव दिशा धरै / भय धीरे घटै छै, संताप दीप चमकैए
भोर लौ मिटै छै, सूरज नीर भरै / दीप काज समटै छै, राह तइयो रहै
राति कथा जुड़ै छै, घाट लोक कहै / मल्लाह गीत उठै छै, आलाप दीप चमकैए
मचान पुरना रहै छै, नव बत्ती लगै / चिन्ह रूप बदलै छै, कार्य मूल रहै
नदी दूर बहै छै, राह छोर बदलै / लौ स्मृति धरै छै, प्रताप दीप चमकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८५८ — संगीतमय रूप

भाव: रातिक नदी, दिशा-संकेत, रखवारक श्रम, अनुमान, कुहरा आ भोर।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: रूपक ७ मात्रा। दूर संकेत-दीप जकाँ स्वर-बिन्दु विरल रहए; नदीक धार बाँसुरीमे सतत बहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, सरोद आ हलुक तबला। बाँसुरी कुहरामे दिशा खोजैत नावक श्वास बने।

मतला: दूर चिन्ह दिशा देत, मुदा दूरीक सही माप नहि।

२म शेर: धार बदलला पर चिन्हक अर्थ प्रसंगसँ पढ़ल जाए।

३म शेर: रखवारक अदृश्य श्रम सुरक्षा बनबैत अछि।

४म शेर: अनुमान व्यवहारमे नाव चलबैत अछि।

५म शेर: भोरमे दीपक काज समटैत, मूल्य नहि।

६म शेर: रूप बदललासँ संकेतक कार्य मिटैत नहि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। भोरमे संकेत-दीप मन्द हो, दिशा-बोध नावमे चलैत रहए।

गजल ८५९ — भोर विद्यालय खुलै छै, आँगन हँसी भरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाव (चाव, भाव, ठाव, नाव, घाव, लगाव, पड़ाव) · रदीफ: घण्टी बजैए · शेर: ६

भोर विद्यालय खुलै छै, बालक पएर दौड़ै / आँगन हँसी भरै छै, चाव घण्टी बजैए
कक्षा द्वार खुलै छै, पुस्तक गन्ध उठै / शिक्षक मोन धरै छै, भाव घण्टी बजैए
एक बालक पूछै छै, दोसर बात सुनै / प्रश्न धीरे बढ़ै छै, उत्तर रूप बदलै
नक्शा दीवार रहै छै, गाम नदी जुड़ै / दूर जग मिलै छै, ठाव घण्टी बजैए
भाषा घर बदलै छै, कक्षा मान माँगै / मातृ बोल रहै छै, ज्ञान राह खुलै
शब्द सेतु बनै छै, बालक हक बढ़ै / सीख नाव चलै छै, नाव घण्टी बजैए
भूल पाटी दिसै छै, शिक्षक रोष घटै / फेर समझ दैए छै, बालक मान बचै
दोष भय घटै छै, प्रश्न साहस बढ़ै / बोध घाव हरै छै, घाव घण्टी बजैए
मध्यान्ह भात मिलै छै, भूख धीरे घटै / देह शक्ति पबै छै, मोन पाठ धरै
शिक्षा देह जुड़ै छै, ज्ञान काज बनै / घर नेह बढ़ै छै, लगाव घण्टी बजैए
साँझ कक्षा छुटै छै, बालक राह चलै / घण्टी सोर रहै छै, मोन याद धरै
अगिला भोर आबै छै, पाठ फेर खुलै / यात्रा थाम बनै छै, पड़ाव घण्टी बजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८५९ — संगीतमय रूप

भाव: विद्यालय, प्रश्न, मातृभाषा, भूल, भोजन, गरिमा आ सीखक यात्रा।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: दादरा ६ मात्रा। विद्यालयक आँगन जकाँ उज्जर लय राखू; बालकक प्रश्नपर स्वर खुलल रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, मँजीरा, इसराज आ मृदु ढोलक। मँजीरा विद्यालय-घण्टीक नकल नहि, सीखक उजासक सूक्ष्म बिन्दु बने।
मतला: शिक्षा प्रश्नक साहस बढ़बैत अछि।
२म शेर: मातृभाषा ज्ञानक बाधा नहि, सेतु भऽ सकैत अछि।
३म शेर: भूल सीखक अवसर हो, अपमानक कारण नहि।
४म शेर: भोजन आ देहक स्थिति सीखसँ जुड़ल अछि।
५म शेर: शिक्षा घर आ समाजक काज बदलि सकैत अछि।
६म शेर: घण्टी समय बाँटैत अछि, सीखक यात्रा नहि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। घण्टी थमए, प्रश्नक साहस कक्षा पाछाँ सेहो चलए।

गजल ८६० — बाढ़ नीर उतरै छै, खेत माटि दिसै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, भंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: गाद जमैए · शेर: ६

बाढ़ नीर उतरै छै, खेत माटि दिसै / नव परत चढ़ै छै, रंग गाद जमैए
घर दीवार गिरै छै, लोक हाथ जुड़ै / पीर माटि मिलै छै, संग गाद जमैए
गाद खेत भरै छै, बीज तइयो रोपै / किछु ठाम उपजै छै, किछु ठाम रुकै
एक घटना बदलै छै, ठाम फल बदलै / कारण रूप खुलै छै, ढंग गाद जमैए
नदी पथ सरकै छै, नक्शा रेखा टूटै / गाम नाम रहै छै, ठाम तइयो बदलै
पुरना याद जुड़ै छै, नव घर उठै / स्मृति देह बनै छै, अंग गाद जमैए
राहत नाव आबै छै, सूची नाम छुटै / लोक हक पूछै छै, लेखा फेर जँचै
बाँट क्रम सुधरै छै, पीर भार घटै / अन्याय जाल टुटै छै, भंग गाद जमैए
भोर खेत चमकै छै, गाद सूरज धरै / किसान मुट्ठी मलै छै, माटि गुण जँचै
बीज फेर पड़ै छै, मेह ताल मिलै / जीवन सोर उठै छै, तरंग गाद जमैए
बाढ़ कथा रहै छै, बालक प्रश्न पूछै / बूढ़ नदी देखै छै, काल दाग धरै
माटि परत बढ़ै छै, इतिहास रेखा लिखै / गाम बोध धरै छै, प्रसंग गाद जमैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८६० — संगीतमय रूप

भाव: बाढ़क विनाश आ उर्वरता, विस्थापन, राहत-न्याय, नदी-पथ आ माटिक इतिहास।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा। बाढ़ उतरबाक पाछाँक भारी मौन जकाँ आरम्भ करू; नव खेतीपर लय धीरे उठए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, मन्द मृदंग आ स्वरमण्डल। मृदंग गादक भार आ नव अंकुरक बल दुनू सम्हारए।
मतला: एकहि बाढ़ भिन्न ठाम भिन्न फल देत अछि।
२म शेर: नदी नक्शाक स्थिर रेखा नहि।
३म शेर: राहत-सूचीमे नाम छुटब न्यायिक प्रश्न अछि।
४म शेर: गाद विनाशक अवशेष सेहो, उर्वर परत सेहो।
५म शेर: नव खेती कारण-शर्तक पुनःसंयोजन अछि।
६म शेर: माटिक परत इतिहास लिखैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। गाद सूखए, माटिक परत इतिहासक नव पाँति लिखैत रहए।

गजल ८६१ — झोरा काँध चढ़ै छै, माय नोर धरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाई (कमाई, विदाई, लड़ाई, पढ़ाई, सफाई, गहराई, सुनवाई) · रदीफ: झोरा चलैए · शेर: ६

झोरा काँध चढ़ै छै, घर द्वार नमै / माय नोर धरै छै, कमाई झोरा चलैए
बस सोर उठै छै, पएर गाम छोड़ै / मोन पाछाँ रहै छै, विदाई झोरा चलैए
नगर भीड़ बढ़ै छै, नाम लोक नुकै / मजदूर हाथ चलै छै, दाम माप घटै
श्रम दिन भरै छै, राति देह थाकै / घर संदेश पढ़ै छै, लड़ाई झोरा चलैए
किराया दाम चढ़ै छै, कमरा ठाम घटै / साझा चूल्हा जरै छै, भाषा गन्ध मिलै
अजनबी नगर रहै छै, मीत धीरे बनै / जीवन पाठ खुलै छै, पढ़ाई झोरा चलैए
बीमारी देह धरै छै, काज तखन रुकै / हक कागज माँगै छै, दफ्तर द्वार तकै
सुनवाई देर होइ छै, समय भार बढ़ै / नीति भेद खुलै छै, सफाई झोरा चलैए
त्योहार दिन आबै छै, टिकट दाम बढ़ै / मोन गाम दौड़ै छै, देह नगर रहै
स्मृति दूरी नापै छै, आवाज घर जुड़ै / मोन भीतर उतरै छै, गहराई झोरा चलैए
वर्ष फेर घुरै छै, बालक लम्बा दिसै / माय केस पकै छै, घर दीवार बदलै
झोरा फेर बँधै छै, जीवन राह चलै / लोक हक माँगै छै, सुनवाई झोरा चलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८६१ — संगीतमय रूप

भाव: प्रवास, श्रम, कमरा, अधिकार, बीमारी, घरक दूरी आ घुरनाइ।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: झपताल १० मात्रा। प्रवासी पएरक थकान लेल ताल मितव्ययी रहए; घरक स्मृतिपर सारंगी लम्बा श्वास ले।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, एकतारा आ विरल तबला। सारंगी घरसँ दूरीक पीरकेँ संयत राखए।
मतला: कमाईक राह विदाईक पीरसँ शुरू हो सकैत अछि।
२म शेर: नगरमे श्रमक नाम नुका सकैत अछि।
३म शेर: साझा रसोई अजनबी लोककेँ मीत बनबैत अछि।
४म शेर: बीमारी श्रम-अधिकारक असुरक्षा खोलैत अछि।
५म शेर: दूरी स्मृतिकेँ मेटैत नहि।
६म शेर: घुरनाइ अन्त नहि; प्रवास फेर चलि सकैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। झोरा उतारल जाए, प्रवासक हकक प्रश्न तइयो थाकए नहि।

गजल ८६२ — पुरना बक्सा खुलै छै, कागज गन्ध उठै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेर (फेर, देर, बेर, घेर, टेर, ढेर, सेर) · रदीफ: चिट्ठी आबैए · शेर: ६

पुरना बक्सा खुलै छै, कागज गन्ध उठै / मोन पाछाँ घुरै छै, फेर चिट्ठी आबैए

स्याही फीकि पड़ै छै, नाम तइयो दिसै / नोर आँखि भरै छै, देर चिट्ठी आबैए

डाक मुहर रहै छै, तिथि काल कहै / पता गली बदलै छै, घर याद रहै

एक वाक्य रुकै छै, मोन अर्थ बढ़ै / पाठक श्वास धरै छै, बेर चिट्ठी आबैए

दूर मीत लिखै छै, कागज डाक चलै / दिन फेर जुड़ै छै, स्मृति घेर रहै

दूर मीत लिखै छै, कागज डोर बनै / दिन मास जुड़ै छै, घेर चिट्ठी आबैए

अर्थ आब बदलै छै, पुरना शब्द रहै / प्रसंग फेर मिलै छै, मोन याद धरै

एक आखर छुटै छै, वाक्य दिशा बदलै / स्रोत फेर जँचै छै, टेर चिट्ठी आबैए

उत्तर देर रहै छै, कागज तइयो बचै / मौन पीर धरै छै, पाठक अर्थ गढ़ै

उत्तर देर आबै छै, मोन भार घटै / संवाद फेर खुलै छै, ढेर चिट्ठी आबैए

चिट्ठी हाथ बदलै छै, पीढ़ी नाम पढ़ै / बालक आश्चर्य धरै छै, पुरखा सोर सुनै

कागज भुरभुर होइ छै, अर्थ तइयो बचै / याद मन धरै छै, सेर चिट्ठी आबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८६२ — संगीतमय रूप

भाव: पुरान चिट्ठी, स्याही, तिथि, दूरी, मौन उत्तर, प्रसंग आ पीढ़ीगत पाठ।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। कागज खोलबाक सरसराहट जकाँ सूक्ष्म आरम्भ; चिट्ठीक तिथि पर छोट ठहराव दिअ।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, स्वरमण्डल, बाँसुरी आ मृदु मँजीरा। स्वरमण्डल कागजक पुरान चमक जकाँ स्मृतिक कोर उजागर करए।

मतला: तिथि आ मुहर स्मृतिकेँ ऐतिहासिक आधार देत अछि।

२म शेर: वाक्यक मौन ठहरावो अर्थवान हो सकैत अछि।

३म शेर: प्रसंग बदलला पर पुरान शब्दक अर्थ फेर जाँचल जाए।

४म शेर: छुटल आखर पाठ बदलि सकैत अछि।

५म शेर: उत्तरक देर संवादक भार बदलैत अछि।

६म शेर: कागज क्षीण होइत अछि, अर्थ पीढ़ीमे चलि सकैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। चिट्ठी फेर बक्सामे जाए, वाक्यक डोर मोनमे खुलल रहए।

गजल ८६३ — भोर बाड़ी खुलै छै, पात ओस चमकै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंध (गन्ध, सम्बन्ध, अनुबन्ध, प्रतिबन्ध, प्रबन्ध, सुगन्ध, दुर्गन्ध) · रदीफ: जड़ी महकैए · शेर: ६

भोर बाड़ी खुलै छै, पात ओस चमकै / हवा धीरे लैए छै, गन्ध जड़ी महकैए
दादी पात तोड़ै छै, बालक नाम पूछै / ज्ञान पीढ़ी जुड़ै छै, सम्बन्ध जड़ी महकैए
एक जड़ी सहै छै, दोसर देह बदलै / माप ठीक रहै छै, उपयोग तखन फलै
रोग चिन्ह बदलै छै, निदान फेर जँचै / अनुमान सीमा खुलै छै, अनुबन्ध जड़ी महकैए
बाजार लेबल चमकै छै, गुण तइयो जँचै / दाबी स्रोत माँगै छै, प्रमाण फेर मिलै
उपचार राह खुलै छै, ज्ञान सावध चलै / अधिक मात्रा रोकै छै, प्रतिबन्ध जड़ी महकैए
वन जड़ी घटै छै, लाभ दाम बढ़ै / साझा बचाव माँगै छै, लोक नीति बनै
बीज फेर रोपै छै, जाति डोर बचै / बाड़ी क्रम टिकै छै, प्रबन्ध जड़ी महकैए
पात हाथ मलै छै, गन्ध मोन जगै / दादी याद आबै छै, बालक नेह धरै
स्मृति फेर फूलै छै, घर मन भरै / मोन शान्त होइ छै, सुगन्ध जड़ी महकैए
सड़ल पात रहै छै, चिन्ह नाक धरै / भेद सावध खुलै छै, जीवन सीमा बुझै
बाड़ी साँझ नमै छै, गन्ध धीरे रहै / ज्ञान मान धरै छै, दुर्गन्ध जड़ी महकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८६३ — संगीतमय रूप

भाव: लोक-औषधि, मात्रा, निदान, प्रमाण, जैव-संरक्षण, गन्ध आ स्मृति।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। जड़ीक गन्ध सीधे नकल नहि हो; बाँसुरीक छोट मींडसँ स्मृति आ सावधानीक भाव खोलू।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, संतूर आ हलुक तबला। सरोद सावधानीक गहिर आधार दे, संतूर पातक ओस जकाँ चमक दे।

मतला: लोकज्ञान मूल्यवान, मुदा देह-भेद आ मात्रा जाँचनीय।

२म शेर: रोग-चिन्ह बदलला पर निदान फेर जाँचल जाए।

३म शेर: चमकदार लेबल प्रमाण नहि।

४म शेर: अधिक मात्रा उपचारकेँ हानि बना सकैत अछि।

५म शेर: जड़ी-संरक्षण साझा दायित्व अछि।

६म शेर: गन्ध स्मृति आ ज्ञान दुनू जोड़ैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। गन्ध मन्द हो, सावध ज्ञान आ संरक्षणक भाव बचल रहए।

गजल ८६४ — दुपहर सूरज चढ़ै छै, गाछ छाह सिमटै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (संसार, परिवार, अधिकार, विस्तार, प्रतिकार, उपकार, विचार) · रदीफ: छाह घटैए · शेर: ६

दुपहर सूरज चढ़ै छै, गाछ छाह सिमटै / पथिक ठाम खोजै छै, संसार छाह घटैए
भोर छाया लम्बै छै, दुपहर रेखा घटै / काल रूप बदलै छै, परिवार छाह घटैए
एक गाछ रहै छै, छाया दिशा बदलै / सूरज ठाम सरकै छै, माप फेर बदलै
घड़ी रेखा जँचै छै, दिशा ज्ञान मिलै / पथिक राह धरै छै, अधिकार छाह घटैए
गरमी देह जरै छै, छोट छाह बचै / मजदूर क्षण बैसै छै, श्वास ताल धरै
सार्वजनिक गाछ रहै छै, लोक आराम पबै / ठाम हक बढ़ै छै, विस्तार छाह घटैए
दीवार छाह पड़ै छै, घर आँगन बदलै / संपत्ति रेखा रहै छै, सूरज तइयो चलै
सीमा दाबी उठै छै, लोक बात जुड़ै / न्याय राह मिलै छै, प्रतिकार छाह घटैए
साँझ छाया लम्बै छै, बालक खेल दौड़ै / दिन थाकि नमै छै, घर दीप जरै
रूप फेर बदलै छै, मूल गाछ रहै / मोन नेह धरै छै, उपकार छाह घटैए
राति छाह मिटै छै, चन्द्र रेखा उभरै / भेद फेर जगै छै, आँखि दृष्टि बदलै
दुपहर याद रहै छै, मोन प्रश्न उठै / साँच फेर माँगै छै, विचार छाह घटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८६४ — संगीतमय रूप

भाव: छाया, समय, सार्वजनिक ठाम, श्रम-विराम, सीमा आ दृष्टिकोण।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। दुपहरिया धूप जकाँ स्वर तेज नहि, स्वच्छ रहए; छाह घटबाक संग वाद्य विरल हो।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु घण्टी आ विरल पखावज। इसराज दुपहरिया स्थिरतामे कालक धीमा सरकाव सुनाए।

मतला: छाया स्थिर वस्तु नहि, सम्बन्धगत रूप अछि।

२म शेर: दिशा जानबाक साधन बदलैत छाया सेहो हो सकैत अछि।

३म शेर: सार्वजनिक छाह आरामक साझा अधिकार बनि सकैत अछि।

४म शेर: संपत्ति-रेखा प्रकृति पर पूर्ण अधिकार नहि देत।

५म शेर: रूप बदलला पर मूल गाछ रहैत अछि।

६म शेर: दृष्टिकोण बदलला पर प्रश्न फेर उठैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। छाह लम्बा होइत साँझक दिस घुरए, दृष्टिकोणक प्रश्न जीवित रहए।

गजल ८६५ — मेह छत पड़ै छै, नाली नीर बहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोल (डोल, खोल, मोल, बोल, झोल, गोल, तोल) · रदीफ: जलघर भरैए · शेर: ६

मेह छत पड़ै छै, नाली नीर बहै / घड़ा पेट भरै छै, डोल जलघर भरैए

पहिल धूल बहै छै, दूजा नीर साफै / जाल पात रोकै छै, खोल जलघर भरैए

छत माप बढ़ै छै, संग्रह मात्रा बढ़ै / घर लेखा धरै छै, सूखा भय घटै

बूँद बूँद जुड़ै छै, मास नीर बचै / संचय अर्थ खुलै छै, मोल जलघर भरैए

टंकी ढक्कन बँधै छै, मच्छर राह रुकै / स्वच्छ नीर रहै छै, देह रोग घटै

देखभाल क्रम चलै छै, उपयोग मान बढ़ै / घर ज्ञान फैलै छै, बोल जलघर भरैए

गाम छत जुड़ै छै, नाली जाल बनै / अधिक नीर रहै छै, खेत राह मिलै

साझा योजना बनै छै, बाँट क्रम जँचै / सूखा भार घटै छै, झोल जलघर भरैए

पुरना ताल रहै छै, नव छत जुड़ै / परम्परा रूप बदलै छै, मूल बोध रहै

जल नीति बनै छै, लोक हाथ चलै / साझा चक्र घुमै छै, गोल जलघर भरैए

भोर घड़ा खुलै छै, नीर ठंढा दिसै / बालक हथेली धरै छै, बूँद चाव जगै

मेह कम पड़ै छै, संचय तइयो रहै / जीवन माप धरै छै, तोल जलघर भरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८६५ — संगीतमय रूप

भाव: वर्षाजल-संचय, स्वच्छता, देखभाल, साझा योजना, परम्परा आ सूखा-तैयारी।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द झपताल १० मात्रा। बूँद-बूँद संचय जकाँ ताल छोटे संकेत जोड़ैत चलए; जलघर भरला पर ध्वनि भारी नहि हो।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, एकतारा आ मन्द तबला। जलतरंग संचयित नीरक पारदर्शी भाव बनए।
मतला: बूँद-बूँद संचय दीर्घकालीन सुरक्षा बनैत अछि।
२म शेर: पहिल बहाव आ सफाईक भेद आवश्यक।
३म शेर: ढक्कन/देखभाल कारण-शर्त अछि।
४म शेर: घर-स्तरक ज्ञान गाम-स्तरक योजना बनि सकैत अछि।
५म शेर: पुरान ताल आ नव छत परम्पराक रूपान्तर अछि।
६म शेर: संचय कम मेहक समय विकल्प बढ़बैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। जलघरक ढक्कन बन्द हो, अगिला मेहक तैयारी खुलल रहए।

गजल ८६६ — बोर्ड बीच सजै छै, पहिल चाल खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, मात, रात, घात, पात, प्रभात, सौगात) · रदीफ: चौसर सिखबैए · शेर: ६

बोर्ड बीच सजै छै, मोहरा ठाम धरै / पहिल चाल खुलै छै, बात चौसर सिखबैए
राजा धीरे चलै छै, घोड़ा टेढ़ कूदै / खेल भेद जगै छै, मात चौसर सिखबैए
एक चाल लुभै छै, आगाँ जाल खुलै / धैर्य मोन धरै छै, विकल्प फेर जँचै
प्रतिपक्ष चाल पढ़ै छै, अपन दोष दिसै / तर्क राह मिलै छै, रात चौसर सिखबैए
प्यादा धीरे बढ़ै छै, मार्ग कखनो खुलै / छोट काज बनै छै, अन्त फल बदलै
बल माप बदलै छै, ठाम मूल्य बढ़ै / स्थिति पाठ खुलै छै, घात चौसर सिखबैए
रानी दूर चलै छै, राजा सीमा धरै / शक्ति भिन्न रहै छै, नियम संग चलै
नियम सभ मानै छै, खेल अर्थ बचै / न्याय डोर रहै छै, पात चौसर सिखबैए
हार नजिक आबै छै, मोन तइयो सोचै / एक चाल बचै छै, दिशा फेर बदलै
भूल मानि चलै छै, ज्ञान नव जगै / अगिला खेल खुलै छै, प्रभात चौसर सिखबैए
मात अन्त होइ छै, हाथ तइयो मिलै / प्रतिपक्ष मान रहै छै, वाद रोष घटै
मोहरा डिब्बा जाइ छै, सीख मोन रहै / जीत हार छोड़ै छै, सौगात चौसर सिखबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८६६ — संगीतमय रूप

भाव: चाल, विकल्प, नियम, प्रतिपक्ष, भूल, हार-जीत आ बौद्धिक औदार्य।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: दादरा ६ मात्रा। चौसरक चाल जकाँ ठेकमे सूक्ष्म प्रत्युत्तर हो; जीत-हारक पाँतिमे आक्रामकता नहि।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, खड़ताल, सरोद आ मृदु पखावज। खड़ताल चालक गणना दे, सरोद सोचक गहिराई बचाए।
मतला: आकर्षक पहिल चाल पाछाँ जाल हो सकैत अछि।
२म शेर: प्रतिपक्षक चाल पढ़ब आत्मदोष देखब सेहो अछि।
३म शेर: छोट मोहराक मूल्य स्थिति बदलैत अछि।
४म शेर: नियम साझा हो तँ खेल अर्थवान रहैत अछि।
५म शेर: भूल मानब अगिला खेलक ज्ञान अछि।
६म शेर: मात पाछाँ प्रतिपक्षक मान बचब बौद्धिक आचार अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मोहरा समटए, प्रतिपक्षक मान अगिला खेलक पहिल नियम बने।

गजल ८६७ — बाजार भोर खुलै छै, दाना पलड़ा धरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोल (मोल, तोल, बोल, खोल, डोल, गोल, अनमोल) · रदीफ: तराजू झुकैए · शेर: ६

बाजार भोर खुलै छै, बाट भीड़ बढ़ै / दाना पलड़ा धरै छै, मोल तराजू झुकैए
एक पलड़ा नमै छै, दोसर ऊपर उठै / हाथ माप धरै छै, तोल तराजू झुकैए
बाट घिसि जाइ छै, माप धीरे बदलै / खरीदार प्रश्न पूछै छै, दुकानदार फेर जँचै
सही बाट मिलै छै, विश्वास फेर बढ़ै / न्याय बाजार धरै छै, बोल तराजू झुकैए
दाम दिन बदलै छै, श्रम तइयो रहै / मूल्य दाम छोड़ै छै, कथा लोक कहै
माप पारदर्श रहै छै, सौदा मान बढ़ै / भेद द्वार खुलै छै, खोल तराजू झुकैए
किसान माल लैए छै, दलाल दाम कहै / बाजार जाल बनै छै, हक फेर घटै
संगठन सोर उठै छै, बाँट क्रम बदलै / श्रम मान बढ़ै छै, डोल तराजू झुकैए
बालक सिक्का धरै छै, मिठाइ मोल पूछै / माय मोन हँसै छै, लेखा तइयो धरै
खर्च बोध जगै छै, इच्छा सीमा खुलै / जीवन माप बनै छै, गोल तराजू झुकैए
साँझ दुकान बँधै छै, माप याद रहै / विश्वास मान धरै छै, सम्बन्ध डोर बचै
मोल फेर बदलै छै, मान तइयो रहै / श्रम साँच बनै छै, अनमोल तराजू झुकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८६७ — संगीतमय रूप

भाव: माप, बाजार-विश्वास, श्रम-मूल्य, किसान, इच्छा आ पारदर्शिता।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। तराजूक पलड़ा जकाँ स्वर दू दिशामे हलुक झुकए; मापक पाँतिमे ताल स्थिर रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, मँजीरा आ हलुक तबला। संतूर मापक धातु-जकाँ साफ बिन्दु दे, मँजीरा विश्वासक हलुक संकेत।
मतला: तराजू निष्पक्ष देखाइत अछि, बाट घिसल हो तँ माप बिगड़ैत अछि।
२म शेर: विश्वास सही मापक संस्थागत फल अछि।
३म शेर: दाम आ मूल्य एक बात नहि।
४म शेर: बाजार-संरचना किसानक हक प्रभावित करैत अछि।
५म शेर: इच्छा खर्चक सीमा माँगैत अछि।
६म शेर: मोल बदलैत अछि, श्रमक मान स्थिर नैतिक प्रश्न रहैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। बाजार बन्द हो, सही माप आ श्रमक मानक प्रश्न तइयो रहए।

गजल ८६८ — नाव घाट लगै छै, नीर तेज बहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (धार, पार, तार, भार, द्वार, किनार, पुकार) · रदीफ: रस्सी तनैए · शेर: ६

नाव घाट लगै छै, रस्सी खूँटा धरै / नीर तेज बहै छै, धार रस्सी तनैए
मल्लाह गाँठ बँधै छै, यात्री पएर धरै / दूरी धीरे घटै छै, पार रस्सी तनैए
धार झट बढ़ै छै, नाव देह डोलै / गाँठ बल धरै छै, खूँटा माटि सहै
रस्सी रेशा घिसै छै, मल्लाह चिन्ह देखै / समय माप माँगै छै, तार रस्सी तनैए
एक तन्तु टूटै छै, दोसर तइयो धरै / समष्टि बल बढ़ै छै, गाँठ राह बचै
साझा श्रम जुड़ै छै, यात्रा सुरक्षा बढ़ै / नाव मान धरै छै, भार रस्सी तनैए
बाढ़ घाट बदलै छै, खूँटा ठाम सरकै / पुरना गाँठ रहै छै, नव ठाम माँगै
परिस्थिति फेर बदलै छै, नियम फेर जँचै / सुरक्षा राह खुलै छै, द्वार रस्सी तनैए
बालक रस्सी छुबै छै, मल्लाह हाथ रोकै / अनुभव भेद कहै छै, खेल जोखिम बदलै
सीख धीरे जगै छै, मोन सावध रहै / जीवन तट मिलै छै, किनार रस्सी तनैए
साँझ नाव रुकै छै, रस्सी ढीली पड़ै / दिन श्रम समटै छै, घाट गीत उठै
भोर गाँठ खुलै छै, नाव फेर चलै / नदी सोर करै छै, पुकार रस्सी तनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८६८ — संगीतमय रूप

भाव: नाव, गाँठ, समष्टि-बल, बदलैत घाट, जोखिम, अनुभव आ यात्रा।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित रूपक ७ मात्रा। रस्सीक कसाव जकाँ सारंगी तान तनए, मुदा नदीक बहावमे फेर ढील छोड़ए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, सारंगी आ विरल मृदंग। सारंगी गाँठक कसाव आ खुलनाइ दुनू सुनाए।
मतला: रस्सी सुरक्षा अछि, कैद नहि—प्रसंग अर्थ बदलैत अछि।
२म शेर: एक तन्तु कमजोर, समष्टि बलवान हो सकैत अछि।
३म शेर: घिसाव चिन्ह समय रहते पढ़ल जाए।
४म शेर: घाट बदलला पर पुरान नियम फेर जाँचल जाए।
५म शेर: अनुभव खेल आ जोखिमक भेद सिखबैत अछि।
६म शेर: गाँठ खुलला पर यात्रा फेर शुरू होइत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। गाँठ ढीली पड़ए, अगिला यात्रा लेल रस्सीक भरोसा बचए।

गजल ८६९ — साँझ आँगन सजै छै, पहिल लौ उठै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाग (राग, आग, दाग, भाग, अनुराग, विराग, सुहाग) · रदीफ: माटि-दीप जरैए · शेर: ६

साँझ आँगन सजै छै, दीप बाती धरै / पहिल लौ उठै छै, राग माटि-दीप जरैए
तेल बूँद भरै छै, बालक हाथ सम्हरै / घर उजास बढ़ै छै, आग माटि-दीप जरैए
एक दीप बुझै छै, हवा झोंका आबै / दोसर लौ रहै छै, अन्हार तइयो घटै
लौ लौ जुड़ै छै, आँगन रेखा चमकै / साझा मान बनै छै, दाग माटि-दीप जरैए
कुम्हार माटि गढ़ै छै, बाजार दीप जाइ / हाथ नाम नुकै छै, उत्सव रंग बढ़ै
श्रम कथा सुनै छै, खरीदार मोल बुझै / मान फेर मिलै छै, भाग माटि-दीप जरैए
धुआँ छत चढ़ै छै, बाती कालिख धरै / उजास संग रहै छै, दाग तइयो रहै
दू पक्ष जुड़ै छै, जीवन अर्थ बढ़ै / मोन नेह धरै छै, अनुराग माटि-दीप जरैए
राति धीरे ढलै छै, दीप तेल घटै / लौ छोट होइ छै, आँखि शान्ति धरै
अन्त क्षण आबै छै, मौन भीतर फैलै / मोन बंधन छोड़ै छै, विराग माटि-दीप जरैए
भोर राख रहै छै, माटि दीप ठंढै / बालक फेर देखै छै, राति याद धरै
उजास दिन बदलै छै, नेह तइयो रहै / घर गीत धरै छै, सुहाग माटि-दीप जरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८६९ — संगीतमय रूप

भाव: दीप, श्रम, साझा उजास, दाग, क्षय, विराग आ स्मृति।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। माटि-दीपक लौ जकाँ एकल स्वर धीरे ऊपर उठए; धुआँक पाँतिमे स्वर गहिर हो।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, माटिक घट, एकतारा आ मन्द मँजीरा। माटिक घट दीपक देहक धरतीपन दे, एकतारा लौक एकाग्रता।

मतला: एक दीप बुझलासँ सभ उजास नहि मिटैत।

२म शेर: दीपक पाछाँ कुम्हारक श्रम अछि।

३म शेर: उजास संग धुआँ-दाग सेहो रहैत अछि।

४म शेर: जीवनक मूल्य विरोधी पक्षक सह-अस्तित्वमे खुलि सकैत अछि।

५म शेर: लौ क्षीण होयब अनित्यता सिखबैत अछि।

६म शेर: उजासक रूप बदलैत अछि, नेह रहि सकैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दीप बुझए, माटि आ नेहक उष्मा घरमे रहए।

गजल ८७० — कागज सफेद रहै छै, स्याही रेखा उतरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेख (लेख, रेख, आलेख, अभिलेख, सुलेख, उपलेख, प्रलेख) · रदीफ: कलम बहैए · शेर: ६

कागज सफेद रहै छै, स्याही रेखा उतरै / हाथ धीरे बनै छै, लेख कलम बहैए
एक आखर झुकै छै, दोसर ऊपर उठै / लय पाँति धरै छै, रेख कलम बहैए
हाथ कँपि जाइ छै, रेखा तइयो चलै / उम्र चिन्ह दिसै छै, नाम तइयो रहै
पुरना पत्र खुलै छै, हस्त रूप मिलै / मोन काल छुबै छै, आलेख कलम बहैए
नकल साफ होइ छै, मूल हाथ नुकै / अर्थ फेर रहै छै, व्यक्ति छाप घटै
डिजिटल रूप बनै छै, हस्त छवि बचै / स्रोत मान धरै छै, अभिलेख कलम बहैए
बालक कलम धरै छै, रेखा पहिने बिगड़ै / अभ्यास फेर चलै छै, आखर धीरे सुधरै
धैर्य हाथ बसै छै, रूप मान बढ़ै / मोन लय धरै छै, सुलेख कलम बहैए
हस्ताक्षर एक रहै छै, काल तइयो बदलै / तारीख संग मिलै छै, स्रोत बल बढ़ै
प्रमाण पन्ना बनै छै, इतिहास द्वार खुलै / लेखा संग जुड़ै छै, उपलेख कलम बहैए
स्याही फीकि पड़ै छै, रेखा तइयो दिसै / हाथ याद जगै छै, मोन स्नेह धरै
कागज बन्द होइ छै, आखर भीतर रहै / पाठ फेर खुलै छै, प्रलेख कलम बहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८७० — संगीतमय रूप

भाव: हस्तलेख, उम्र, नकल, डिजिटल रूप, अभ्यास, प्रमाण आ व्यक्तिक छाप।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: रूपक ७ मात्रा। कलमक रेखा जकाँ स्वर लगातार बहए; आखर-आखर उच्चारण स्पष्ट रहए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, इसराज आ मृदु तबला। संतूर आखरक बिन्दु आ इसराज हस्तरेखाक लम्बाइ जोड़े।
मतला: हस्तलेख अर्थ संग देहक सूक्ष्म छाप धरैत अछि।
२म शेर: नकल अर्थ बचा सकैत अछि, मूल हाथक छाप घटा सकैत अछि।
३म शेर: डिजिटल रूप स्रोत-मूल्य मेटैत नहि।
४म शेर: अभ्यास रेखाकेँ सुधरबैत अछि।
५म शेर: हस्ताक्षर संग तारीख/सन्दर्भ प्रमाण मजबूत करैत अछि।
६म शेर: फीकि स्याही स्मृति जगबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। कलम रुकए, आखर पाठक मोनमे फेर बहए।

गजल ८७१ — देहरी भोर चमकै छै, घर बाहर मिलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (द्वार, पार, भार, विचार, व्यवहार, अधिकार, सत्कार) · रदीफ: देहरी रोकैए · शेर: ६

देहरी भोर चमकै छै, पएर क्षण रुकै / घर बाहर मिलै छै, द्वार देहरी रोकैए
अतिथि द्वार आबै छै, मालिक हाथ जोड़ै / मान नेह बढ़ै छै, पार देहरी रोकैए
ककरो पएर रुकै छै, रीत घेर बनै / मानव मान घटै छै, प्रश्न तखन उठै
रीत फेर जँचै छै, हक द्वार खुलै / न्याय मोन धरै छै, भार देहरी रोकैए
बालक खेल दौड़ै छै, देहरी बारंबार लाँघै / भीतर बाहर बदलै छै, सीमा अर्थ बदलै
प्रसंग संग बदलै छै, सीमा रूप खुलै / बुद्धि राह धरै छै, विचार देहरी रोकैए
राति किवाड़ बँधै छै, सुरक्षा भाव बढ़ै / भोर किवाड़ खुलै छै, विश्वास फेर बढ़ै
बन्द द्वार रहै छै, हक तखन पूछै / लोक सोर उठै छै, व्यवहार देहरी रोकैए
प्रवासी घर आबै छै, देहरी माथ छुबै / स्मृति लहर उठै छै, मोन बालक बनै
घर रूप बदलै छै, मान तइयो रहै / सम्बन्ध डोर जुड़ै छै, अधिकार देहरी रोकैए
साँझ अतिथि जाइ छै, देहरी फेर रहै / आँगन मौन धरै छै, कथा भीतर बचै
देहरी रेखा रहै छै, मानव राह खुलै / स्वागत सार बनै छै, सत्कार देहरी रोकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८७१ — संगीतमय रूप

भाव: घर-बाहरक सीमा, आतिथ्य, बहिष्कार, सुरक्षा, प्रवास आ अधिकार।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द कहरवा ८ मात्रा। देहरीपर पएर रुकबाक जकाँ मतलामे हलुक विराम; स्वागतक पाँतिमे लय फेर खुलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, बाँसुरी आ विरल घण्टी। सारंगी घर-भीतरक नेह आ बाहरक प्रश्नक बीच सेतु बने।

मतला: सीमा स्वागत आ बहिष्कार दुनूक साधन बनि सकैत अछि।

२म शेर: रीत मानव-मान घटबैत हो तँ फेर जाँचल जाए।

३म शेर: बालक लेल देहरी खेलक रेखा, वयस्क लेल सामाजिक सीमा हो सकैत अछि।

४म शेर: रातिक बन्द द्वार सुरक्षा देत, दिनक बन्द द्वार हक रोकि सकैत अछि।

५म शेर: प्रवासी देहरी पर स्मृति पबैत अछि।

६म शेर: स्वागत सीमा केँ मानवीय बनबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। देहरी खाली रहए, स्वागत आ न्याय दुनूक सम्भावना खुलल रहए।

गजल ८७२ — ढोल थाप पड़ै छै, बीच मौन रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (तान, गान, ज्ञान, ध्यान, मान, विधान, निदान) · रदीफ: विराम सुनैए · शेर: ६

ढोल थाप पड़ै छै, बीच मौन रहै / लय तखन बनै छै, तान विराम सुनैए
सोर लगातार बढ़ै छै, कान अर्थ खोवै / ठहराव मोन धरै छै, गान विराम सुनैए
गायक श्वास लैए छै, पाँति तखन खुलै / श्रोता मोन रुकै छै, अर्थ भीतर उतरै
मौन रिक्त रहै छै, अर्थ तइयो धरै / चिन्तन राह खुलै छै, ज्ञान विराम सुनैए
वाद तेज बढ़ै छै, दुनू सोर भिड़ै / क्षण मौन मिलै छै, रोष धीरे घटै
सुनब पहिने आबै छै, उत्तर पाछाँ बनै / संवाद मान बढ़ै छै, ध्यान विराम सुनैए
पीर शब्द छोड़ै छै, मौन नोर कहै / मीत हाथ धरै छै, तर्क पाछाँ आबै
करुणा स्थान बनै छै, दुःख मान पबै / मोन नेह धरै छै, मान विराम सुनैए
संगीत ताल बदलै छै, मौन माप बदलै / एकहि थाप रहै छै, अर्थ फेर बदलै
प्रसंग रूप खुलै छै, लय नव बनै / बोध क्रम धरै छै, विधान विराम सुनैए
अन्तिम थाप पड़ै छै, मौन लम्बा फैलै / श्रोता श्वास रहै छै, गीत भीतर चलै
सोर दूर हटै छै, मौन संग रहै / मन शान्त बनै छै, निदान विराम सुनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८७२ — संगीतमय रूप

भाव: संगीतक मौन, संवादक ठहराव, करुणा, वाद, श्वास आ अर्थ।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: झपताल १० मात्रा। ढोलक थापक बीचक मौनकेँ सचमुच मौन रहए दिअ; खाली ठाम केँ वाद्यसँ भरू नहि।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, पखावज, स्वरमण्डल आ मृदु मँजीरा। पखावजक थाप पाछाँ मौन सचेत राखू; स्वरमण्डल श्वासक कोर दे, मौन खुलल रहए।
मतला: लय थाप मात्रसँ नहि, बीचक मौनसँ सेहो बनैत अछि।
२म शेर: श्वास पाँतिक अर्थ खोलैत अछि।
३म शेर: वादमे मौन रोष घटा सकैत अछि।
४म शेर: दुःखक सोझाँ तर्कसँ पहिने उपस्थिति आवश्यक हो सकैत अछि।
५म शेर: एकहि विराम भिन्न प्रसंगमे भिन्न अर्थ पबैत अछि।
६म शेर: अन्तिम मौन गीतकेँ भीतर चलैत राखैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अन्तिम थाप पाछाँ मौन स्वयं संगीतक भाग बनि रहए।

गजल ८७३ — छत गमला रहै छै, बीज माटि धरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (भोर, नोर, कोर, छोर, जोर, सोर, डोर) · रदीफ: पौधा उगैए · शेर: ६

छत गमला रहै छै, बीज माटि धरै / मेह बूँद पड़ै छै, भोर पौधा उगैए

बालक भोर तकै छै, अंकुर माथ उठै / मोन चाव भरै छै, नोर पौधा उगैए

छोट माटि रहै छै, जड़ि तइयो फैलै / सीमा भाँड़ धरै छै, जीवन राह खोजै

धूप माप मिलै छै, पात रंग बढ़ै / जीवन कोर खुलै छै, कोर पौधा उगैए

जल अधिक पड़ै छै, जड़ि श्वास घटै / जल कम पड़ै छै, पात तखन मुरझै

माप सन्तुलन धरै छै, माली बोध बढ़ै / सीख राह मिलै छै, छोर पौधा उगैए

पाखी बीज लैए छै, छत दूर छोड़ै / नव गमला भरै छै, अंकुर माथ उठै

स्रोत नाम नुकै छै, जीवन तइयो आबै / मोन आश्चर्य धरै छै, जोर पौधा उगैए

नगर धुआँ बढ़ै छै, पात धूल धरै / बालक कपड़ा लैए छै, पात धीरे पोंछै

देखभाल नेह बनै छै, छोट ठाम बचै / हरित सोर उठै छै, सोर पौधा उगैए

साँझ पात नमै छै, छत हवा बहै / घर मोन सम्हरै छै, नीर गन्ध उठै

छोट गमला रहै छै, आकाश तइयो खुलै / जीवन आस जुड़ै छै, डोर पौधा उगैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८७३ — संगीतमय रूप

भाव: छतक छोट गमला, सीमा, जल-सन्तुलन, पाखी, नगरक धूल आ आशा।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: दादरा ६ मात्रा। छतक पौधा जकाँ स्वर छोटसँ ऊपर बढ़ए; मेह आ धूपक पाँतिमे जलतरंग विरल चमक दे।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, जलतरंग आ हलुक तबला। बाँसुरी पौधाक कोमल वृद्धि, जलतरंग बूँदक सहायक कारण बने।

मतला: छोट ठाममे सेहो जीवन विस्तार खोजैत अछि।

२म शेर: अधिक आ कम जल दुनू हानि करि सकैत अछि।

३म शेर: पाखी अनियोजित बीज-वितरणक कारण बनैत अछि।

४म शेर: स्रोत नुका सकैत अछि, फल दिसि सकैत अछि।

५म शेर: नगरक प्रदूषण देखभालक भार बढ़बैत अछि।

६म शेर: छोट गमला आ विशाल आकाश एक साथ आशा जगबैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पात रातिमे नमए, अगिला भोरक वृद्धि भीतर चलैत रहए।

गजल ८७४ — पुरना टीला रहै छै, गाछ छाह पड़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाद (याद, संवाद, विवाद, प्रसाद, विषाद, अनुवाद, स्वाद) · रदीफ: माटि स्मरैए · शेर: ६

पुरना टीला रहै छै, गाछ छाह पड़ै / नाम पत्थर धरै छै, याद माटि स्मरैए
लोक धीरे आबै छै, फूल हाथ धरै / मौन नेह बढ़ै छै, संवाद माटि स्मरैए
पत्थर आखर घिसै छै, नाम तइयो रहै / कथा घर चलै छै, पीढ़ी मोन धरै
स्मृति बहु रहै छै, अनेक सोर जुड़ै / इतिहास रूप बनै छै, विवाद माटि स्मरैए
कियो वीर कहै छै, कियो दोष देखै / दुनू स्रोत जँचै छै, मान फेर बनै
प्रश्न खुलल रहै छै, न्याय राह खोजै / मौन फूल धरै छै, प्रसाद माटि स्मरैए
नोर आँखि आबै छै, पीर भाषा घटै / हाथ काँध धरै छै, नेह मौन बढ़ै
शोक धीरे बदलै छै, जीवन राह खुलै / मोन भार घटै छै, विषाद माटि स्मरैए
विदेश बालक आबै छै, पुरखा नाम पढ़ै / भाषा फेर जुड़ै छै, दूरी क्षण घटै
एक शब्द बदलै छै, अर्थ तइयो बचै / मोन सेतु बनै छै, अनुवाद माटि स्मरैए
साँझ टीला नमै छै, पाखी घर घुरै / हवा गन्ध लैए छै, माटि देह रहै
नाम फीकि पड़ै छै, कथा तइयो चलै / जीवन सार धरै छै, स्वाद माटि स्मरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८७४ — संगीतमय रूप

भाव: स्मारक-माटि, घिसैत आखर, बहु-स्मृति, शोक, प्रवासी पीढ़ी आ अनुवाद।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित दादरा ६ मात्रा। स्मृति-माटिक गम्भीरता लेल मन्द्र स्वर राखू; नाम घिसबाक पाँतिमे इसराज धीरे उतरए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, एकतारा आ मन्द तबला। इसराज शोककेँ सम्मान दे; एकतारा स्मृतिक निरन्तर डोर थामए।
मतला: स्मृति एक स्वर नहि, बहु स्वरक संगति हो सकैत अछि।
२म शेर: घिसल आखरक अर्थ स्रोत/कथासँ पुनः बनैत अछि।
३म शेर: वीरता आ दोषक दाबी दुनू जाँचल जाए।
४म शेर: शोकमे मौन आ साथ तर्कसँ पहिने आबि सकैत अछि।
५म शेर: प्रवासी पीढ़ी नाम पढ़ि भाषा/इतिहाससँ जुड़ि सकैत अछि।
६म शेर: नाम फीकि पड़ैत अछि, कथा चलि सकैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। नाम फीकि पड़ए, कथा आ मान माटिमे जुड़ल रहए।

गजल ८७५ — राति झंझा बहै छै, दूर रेखा उगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, प्रकाश, विश्वास, उल्लास, निवास, आभास) · रदीफ: भोर खुलैए · शेर: ६

राति झंझा बहै छै, गाछ डारि टूटै / दूर रेखा उगै छै, आस भोर खुलैए
मेघ धीरे सरकै छै, पाखी सोर उठै / देह फेर लैए छै, श्वास भोर खुलैए
आँगन पात भरै छै, घर लोक झाड़ै / टूटल डारि हटै छै, राह फेर खुलै
सूरज रेखा चढ़ै छै, नीर बूँद चमकै / मोन दीप धरै छै, प्रकाश भोर खुलैए
छत घाव दिसै छै, कारीगर हाथ चलै / साझा श्रम जुड़ै छै, घर रूप बचै
पड़ोसी हाथ मिलै छै, भय धीरे घटै / नेह डोर बनै छै, विश्वास भोर खुलैए
नदी तल बढ़ै छै, घाट रेखा बदलै / लोक चिन्ह धरै छै, खतरा फेर जँचै
अनुभव पाठ बनै छै, अगिला राह सुधरै / तैयारी बल बढ़ै छै, उल्लास भोर खुलैए
बालक पात उठै छै, माटि गन्ध सूँघै / झंझा कथा सुनै छै, भय मोन घटै
कथा साहस बनै छै, पीर अर्थ बदलै / घर हँसी उठै छै, निवास भोर खुलैए
टूटल डारि रहै छै, नव कोंपल उगै / जीवन फेर चलै छै, माटि रस चढ़ै
भोर आकाश खुलै छै, मोन क्षितिज तकै / अगिला राह दिसै छै, आभास भोर खुलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८७५ — संगीतमय रूप

भाव: झंझा-पाछाँक पुनर्निर्माण, साझा श्रम, जोखिम-स्मृति, साहस आ नव कोंपल।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: रूपक ७ मात्रा। झंझा पाछाँक भोर जकाँ आरम्भ गहिर, अन्त खुलल; अन्तिम रदीफपर अगिला राहक अवकाश रहए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, बाँसुरी आ अत्यन्त मृदु तबला। सरोद झंझाक अवशिष्ट भार, बाँसुरी नव भोरक खुलल दिशा सुनाए।

मतला: भोर क्षति मेटैत नहि, ओकर बीच राह देखबैत अछि।

२म शेर: पुनर्निर्माण साझा श्रमसँ सम्भव।

३म शेर: पुरान खतरा-चिन्ह अगिला तैयारीक प्रमाण बनैत अछि।

४म शेर: अनुभव भविष्यक जोखिम घटा सकैत अछि।

५म शेर: कथा पीरकेँ साहसमे बदलि सकैत अछि, पीर नकारैत नहि।

६म शेर: टूटल डारिक संग नव कोंपल आशाक सम्यक बिम्ब अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ८७५क भोर अन्त नहि; अगिला क्षितिज दिस काव्य-यात्रा खुलल रहए।

गजल ८७६ — पुरान रेखा खुलै, राह नक्शा बतबैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि
मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना
कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार) · रदीफ: नक्शा बतबैए · शेर: ६

नक्शा रेखा खुलै छै, पुल दिशा खुलै / यात्री पएर नमै छै, सार नक्शा बतबैए
बाट गाम बदलै छै, सीमा चिन्ह मिलै / कागज स्याही उतरै छै, पार नक्शा बतबैए
नदी कूल बचै छै, यात्री पएर चलै / मोन इतिहास खुलै छै, बाट गाम जुड़ै
पुल दिशा मुड़ै छै, कागज स्याही फैलै / नक्शा रेखा उभरै छै, धार नक्शा बतबैए
सीमा चिन्ह बचै छै, मोन इतिहास बचै / बाट गाम दिसै छै, पुल दिशा खुलै
यात्री पएर नमै छै, नक्शा रेखा खुलै / नदी कूल दिसै छै, विचार नक्शा बतबैए
कागज स्याही उतरै छै, बाट गाम बदलै / पुल दिशा मिलै छै, यात्री पएर चलै
मोन इतिहास खुलै छै, नदी कूल बचै / सीमा चिन्ह दिसै छै, आधार नक्शा बतबैए
नक्शा रेखा उभरै छै, पुल दिशा मुड़ै / यात्री पएर उठै छै, मोन इतिहास बचै
बाट गाम दिसै छै, सीमा चिन्ह बचै / कागज स्याही रहै छै, व्यवहार नक्शा बतबैए
नदी कूल दिसै छै, यात्री पएर नमै / मोन इतिहास जगै छै, बाट गाम बदलै
पुल दिशा मिलै छै, कागज स्याही उतरै / नक्शा रेखा दिसै छै, पुकार नक्शा बतबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८७६ — संगीतमय रूप

भाव: रेखा, स्मृति, वर्तमान भूगोल आ बदलैत राहक संवाद। पुरान नक्शाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। पुरान नक्शाक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'नक्शा बतबैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, विरल तबला। पुरान नक्शाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।
मतला: पुरान नक्शाक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: पुरान नक्शाक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।
३म शेर: पुरान नक्शाक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: पुरान नक्शाक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: पुरान नक्शाक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: पुरान नक्शाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पुरान नक्शाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८७७ — लोहारक श्वास उठै, आग भट्ठी धधकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान) · रदीफ: भट्ठी धधकैए · शेर: ६

लोहार हाथ चलै छै, धौंकनी श्वास बढ़ै / चिनगी राति ढलै छै, मान भट्ठी धधकैए
लोहा टुकड़ा बदलै छै, हथौड़ा थाप मिलै / धार औजार गढ़ै छै, ज्ञान भट्ठी धधकैए
भट्ठी आग बढ़ै छै, चिनगी राति चमकै / श्रम मान बचै छै, लोहा टुकड़ा टूटै
धौंकनी श्वास चलै छै, धार औजार चमकै / लोहार हाथ नमै छै, ध्यान भट्ठी धधकैए
हथौड़ा थाप उठै छै, श्रम मान जगै / लोहा टुकड़ा तपै छै, धौंकनी श्वास बढ़ै
चिनगी राति ढलै छै, लोहार हाथ चलै / भट्ठी आग जरै छै, विधान भट्ठी धधकैए
धार औजार गढ़ै छै, लोहा टुकड़ा बदलै / धौंकनी श्वास सम्हरै छै, चिनगी राति चमकै
श्रम मान बचै छै, भट्ठी आग बढ़ै / हथौड़ा थाप पड़ै छै, अनुमान भट्ठी धधकैए
लोहार हाथ नमै छै, धौंकनी श्वास चलै / चिनगी राति सरै छै, श्रम मान जगै
लोहा टुकड़ा तपै छै, हथौड़ा थाप उठै / धार औजार बनै छै, पहिचान भट्ठी धधकैए
भट्ठी आग जरै छै, चिनगी राति ढलै / श्रम मान बढ़ै छै, लोहा टुकड़ा बदलै
धौंकनी श्वास सम्हरै छै, धार औजार गढ़ै / लोहार हाथ गढ़ै छै, सम्मान भट्ठी धधकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८७७ — संगीतमय रूप

भाव: श्रम, आग, रूपान्तरण, औजार आ मानक गहिर ताप। लोहारक भट्ठीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। लोहारक भट्ठीक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'भट्ठी धधकैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज। लोहारक भट्ठीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: लोहारक भट्ठीक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: लोहारक भट्ठीक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: लोहारक भट्ठीक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: लोहारक भट्ठीक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: लोहारक भट्ठीक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: लोहारक भट्ठीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। लोहारक भट्ठीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८७८ — नीर बहै, भोर जाल पसारैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत) · रदीफ: जाल पसारैए · शेर: ६

मछुआ जाल फैलै छै, मछरी झुण्ड मुड़ै / भोर कुहरा छँटै छै, प्रीत जाल पसारैए
नदी धार मुड़ै छै, रस्सी गाँठ रहै / हाथ श्रम बढ़ै छै, रीत जाल पसारैए
नाव कूल बचै छै, भोर कुहरा सरै / नीर जीवन बढ़ै छै, नदी धार सरै
मछरी झुण्ड चलै छै, हाथ श्रम चलै / मछुआ जाल सम्हरै छै, गीत जाल पसारैए
रस्सी गाँठ खुलै छै, नीर जीवन बचै / नदी धार बहै छै, मछरी झुण्ड मुड़ै
भोर कुहरा छँटै छै, मछुआ जाल फैलै / नाव कूल दिसै छै, मीत जाल पसारैए
हाथ श्रम बढ़ै छै, नदी धार मुड़ै / मछरी झुण्ड बढ़ै छै, भोर कुहरा सरै
नीर जीवन बढ़ै छै, नाव कूल बचै / रस्सी गाँठ कसै छै, जीत जाल पसारैए
मछुआ जाल सम्हरै छै, मछरी झुण्ड चलै / भोर कुहरा घटै छै, नीर जीवन बचै
नदी धार बहै छै, रस्सी गाँठ खुलै / हाथ श्रम फलै छै, अतीत जाल पसारैए
नाव कूल दिसै छै, भोर कुहरा छँटै / नीर जीवन चलै छै, नदी धार मुड़ै
मछरी झुण्ड बढ़ै छै, हाथ श्रम बढ़ै / मछुआ जाल उठै छै, संगीत जाल पसारैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८७८ — संगीतमय रूप

भाव: नीर, जीविका, चयन, सीमा आ नदीक जीवित सम्बन्ध। मछुआक जालक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। मछुआक जालक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ ‘जाल पसारैए’ पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, हलुक मँजीरा। मछुआक जालक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: मछुआक जालक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: मछुआक जालक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: मछुआक जालक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: मछुआक जालक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: मछुआक जालक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: मछुआक जालक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मछुआक जालक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८७९ — कचहरी सोझाँ छाह पसारैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर) · रदीफ: छाह पसारैए · शेर: ६

बरगद छाह फैलै छै, कागज पन्ना पलटै / लोक भीड़ बढ़ै छै, नोर छाह पसारैए
कचहरी आँगन जगै छै, न्याय प्रश्न बढ़ै / पुरखा याद जगै छै, सोर छाह पसारैए
गवाही स्वर बजै छै, लोक भीड़ जुटै / मान अधिकार मिलै छै, कचहरी आँगन सजै
कागज पन्ना खुलै छै, पुरखा याद रहै / बरगद छाह पड़ै छै, डोर छाह पसारैए
न्याय प्रश्न खुलै छै, मान अधिकार बढ़ै / कचहरी आँगन भरै छै, कागज पन्ना पलटै
लोक भीड़ बढ़ै छै, बरगद छाह फैलै / गवाही स्वर मिलै छै, भोर छाह पसारैए
पुरखा याद जगै छै, कचहरी आँगन जगै / कागज पन्ना रहै छै, लोक भीड़ जुटै
मान अधिकार मिलै छै, गवाही स्वर बजै / न्याय प्रश्न उठै छै, जोर छाह पसारैए
बरगद छाह पड़ै छै, कागज पन्ना खुलै / लोक भीड़ सरै छै, मान अधिकार बढ़ै
कचहरी आँगन भरै छै, न्याय प्रश्न खुलै / पुरखा याद घुरै छै, छोर छाह पसारैए
गवाही स्वर मिलै छै, लोक भीड़ बढ़ै / मान अधिकार बचै छै, कचहरी आँगन जगै
कागज पन्ना रहै छै, पुरखा याद जगै / बरगद छाह सरै छै, कोर छाह पसारैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८७९ — संगीतमय रूप

भाव: न्याय, गवाही, लोक-स्मृति आ छाहक दीर्घ साक्ष्य। कचहरीक बरगदक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित झपताल १० मात्रा। कचहरीक बरगदक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'छाह पसारैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, विरल तबला। कचहरीक बरगदक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: कचहरीक बरगदक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: कचहरीक बरगदक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: कचहरीक बरगदक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: कचहरीक बरगदक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: कचहरीक बरगदक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: कचहरीक बरगदक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। कचहरीक बरगदक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८८० — दीप मन्द जरै, राति सम्हारैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास) · रदीफ: राति सम्हारैए · शेर: ६

राति अस्पताल जगै छै, रोगी श्वास बढ़ै / परिजन मोन डोलै छै, आस राति सम्हारैए
दीप गलियारा रहै छै, दवा गन्ध रहै / घड़ी प्रतीक्षा बढ़ै छै, विश्वास राति सम्हारैए
नर्स पएर नमै छै, परिजन मोन जगै / आस जीवन बढ़ै छै, दीप गलियारा फैलै
रोगी श्वास चलै छै, घड़ी प्रतीक्षा रहै / राति अस्पताल खुलै छै, प्रयास राति सम्हारैए
दवा गन्ध फैलै छै, आस जीवन बचै / दीप गलियारा खुलै छै, रोगी श्वास बढ़ै
परिजन मोन डोलै छै, राति अस्पताल जगै / नर्स पएर उठै छै, उल्लास राति सम्हारैए
घड़ी प्रतीक्षा बढ़ै छै, दीप गलियारा रहै / रोगी श्वास सम्हरै छै, परिजन मोन जगै
आस जीवन बढ़ै छै, नर्स पएर नमै / दवा गन्ध उठै छै, प्यास राति सम्हारैए
राति अस्पताल खुलै छै, रोगी श्वास चलै / परिजन मोन सम्हरै छै, आस जीवन बचै
दीप गलियारा खुलै छै, दवा गन्ध फैलै / घड़ी प्रतीक्षा घटै छै, आभास राति सम्हारैए
नर्स पएर उठै छै, परिजन मोन डोलै / आस जीवन चलै छै, दीप गलियारा रहै
रोगी श्वास सम्हरै छै, घड़ी प्रतीक्षा बढ़ै / राति अस्पताल रहै छै, श्वास राति सम्हारैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८८० — संगीतमय रूप

भाव: पीर, सेवा, प्रतीक्षा, देह आ आशाक संयत राति। अस्पतालक रातिक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। अस्पतालक रातिक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'राति सम्हारैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु ढोलक। अस्पतालक रातिक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: अस्पतालक रातिक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: अस्पतालक रातिक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: अस्पतालक रातिक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: अस्पतालक रातिक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: अस्पतालक रातिक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: अस्पतालक रातिक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अस्पतालक रातिक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८८१ — धान डोलै, बिजुका तकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम) · रदीफ: बिजुका तकैए · शेर: ६

बिजुका खेत जगै छै, पवन कपड़ा फहरै / खेतीहर दृष्टि रहै छै, नाम बिजुका तकैए
धान बालि नमै छै, माटि मेड़ दिसै / भोर ओस चमकै छै, धाम बिजुका तकैए
काग झुण्ड बढ़ै छै, खेतीहर दृष्टि तकै / फसल आस बचै छै, धान बालि पकै
पवन कपड़ा डोलै छै, भोर ओस पड़ै / बिजुका खेत दिसै छै, ग्राम बिजुका तकैए
माटि मेड़ बचै छै, फसल आस बढ़ै / धान बालि डोलै छै, पवन कपड़ा फहरै
खेतीहर दृष्टि रहै छै, बिजुका खेत जगै / काग झुण्ड मुड़ै छै, विराम बिजुका तकैए
भोर ओस चमकै छै, धान बालि नमै / पवन कपड़ा नमै छै, खेतीहर दृष्टि तकै
फसल आस बचै छै, काग झुण्ड बढ़ै / माटि मेड़ रहै छै, प्रणाम बिजुका तकैए
बिजुका खेत दिसै छै, पवन कपड़ा डोलै / खेतीहर दृष्टि फिरै छै, फसल आस बढ़ै
धान बालि डोलै छै, माटि मेड़ बचै / भोर ओस सूखै छै, परिणाम बिजुका तकैए
काग झुण्ड मुड़ै छै, खेतीहर दृष्टि रहै / फसल आस जगै छै, धान बालि नमै
पवन कपड़ा नमै छै, भोर ओस चमकै / बिजुका खेत फैलै छै, आयाम बिजुका तकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८८१ — संगीतमय रूप

भाव: फसल, भय, रक्षा, भ्रम आ खेतीहरक धैर्य। खेतक बिजुकाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। खेतक बिजुकाक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ ‘बिजुका तकैए’ पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, हलुक पखावज। खेतक बिजुकाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: खेतक बिजुकाक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: खेतक बिजुकाक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: खेतक बिजुकाक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: खेतक बिजुकाक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: खेतक बिजुकाक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: खेतक बिजुकाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। खेतक बिजुकाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८८२ — छोट कोन रहै, टिकट पहुँचबैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (जाल, चाल, ताल, काल, पाल, ढाल, विशाल) · रदीफ: टिकट पहुँचबैए · शेर: ६

टिकट कोना सजै छै, दूरी गाम बदलै / स्याही मुहर लगै छै, जाल टिकट पहुँचबैए
चिट्ठी कागज मुड़ै छै, नाम पता रहै / हाथ संदेश पहुँचै छै, चाल टिकट पहुँचबैए
डाक थैला झुलै छै, स्याही मुहर पड़ै / मोन प्रतीक्षा रहै छै, चिट्ठी कागज रहै
दूरी गाम दिसै छै, हाथ संदेश मिलै / टिकट कोना चमकै छै, ताल टिकट पहुँचबैए
नाम पता खुलै छै, मोन प्रतीक्षा घटै / चिट्ठी कागज खुलै छै, दूरी गाम बदलै
स्याही मुहर लगै छै, टिकट कोना सजै / डाक थैला भरै छै, काल टिकट पहुँचबैए
हाथ संदेश पहुँचै छै, चिट्ठी कागज मुड़ै / दूरी गाम जुड़ै छै, स्याही मुहर पड़ै
मोन प्रतीक्षा रहै छै, डाक थैला झुलै / नाम पता मिलै छै, पाल टिकट पहुँचबैए
टिकट कोना चमकै छै, दूरी गाम दिसै / स्याही मुहर दिसै छै, मोन प्रतीक्षा घटै
चिट्ठी कागज खुलै छै, नाम पता खुलै / हाथ संदेश चलै छै, ढाल टिकट पहुँचबैए
डाक थैला भरै छै, स्याही मुहर लगै / मोन प्रतीक्षा बढ़ै छै, चिट्ठी कागज मुड़ै
दूरी गाम जुड़ै छै, हाथ संदेश पहुँचै / टिकट कोना रहै छै, विशाल टिकट पहुँचबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८८२ — संगीतमय रूप

भाव: छोट चिन्ह, दूरी, पता, संदेश आ प्रतीक्षाक यात्रा। डाक-टिकटक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। डाक-टिकटक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'टिकट पहुँचबैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। डाक-टिकटक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: डाक-टिकटक बिम्बमे पहिल शेर साँचकैँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: डाक-टिकटक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: डाक-टिकटक तेसर शेर भिन्न संकेतकैँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: डाक-टिकटक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: डाक-टिकटक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: डाक-टिकटक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकैँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। डाक-टिकटक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८८३ — धूलि बीच अंक रहै, पत्थर गनैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाई (कमाई, पढ़ाई, सुनवाई, गहराई, विदाई, लड़ाई, सफाई) · रदीफ: पत्थर गनैए · शेर: ६

पत्थर अंक दिसै छै, दूरी माप बदलै / मोड़ दिशा मिलै छै, कमाई पत्थर गनैए
बाट धूलि बैसै छै, गाम नाम बदलै / राति विश्राम मिलै छै, पढ़ाई पत्थर गनैए
यात्री पएर नमै छै, मोड़ दिशा मुड़ै / भोर यात्रा बढ़ै छै, बाट धूलि उड़ै
दूरी माप मिलै छै, राति विश्राम रहै / पत्थर अंक गनै छै, सुनवाई पत्थर गनैए
गाम नाम बचै छै, भोर यात्रा मुड़ै / बाट धूलि उठै छै, दूरी माप बदलै
मोड़ दिशा मिलै छै, पत्थर अंक दिसै / यात्री पएर उठै छै, गहराई पत्थर गनैए
राति विश्राम मिलै छै, बाट धूलि बैसै / दूरी माप जँचै छै, मोड़ दिशा मुड़ै
भोर यात्रा बढ़ै छै, यात्री पएर नमै / गाम नाम दिसै छै, विदाई पत्थर गनैए
पत्थर अंक गनै छै, दूरी माप मिलै / मोड़ दिशा खुलै छै, भोर यात्रा मुड़ै
बाट धूलि उठै छै, गाम नाम बचै / राति विश्राम घटै छै, लड़ाई पत्थर गनैए
यात्री पएर उठै छै, मोड़ दिशा मिलै / भोर यात्रा चलै छै, बाट धूलि बैसै
दूरी माप जँचै छै, राति विश्राम मिलै / पत्थर अंक रहै छै, सफाई पत्थर गनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८८३ — संगीतमय रूप

भाव: दूरी, माप, थकान, मोड़ आ यात्रा-बोध। मील-पत्थरक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। मील-पत्थरक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ ‘पत्थर गनैए’ पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, विरल तबला। मील-पत्थरक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: मील-पत्थरक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: मील-पत्थरक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: मील-पत्थरक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: मील-पत्थरक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: मील-पत्थरक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: मील-पत्थरक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मील-पत्थरक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८८४ — ताल नीर झलकै, कुमुद खिलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेद (भेद, खेद, वेद, छेद, अभेद, निषेध, विभेद) · रदीफ: कुमुद खिलैए · शेर: ६

ताल नीर बहै छै, सूरज किरण फैलै / कूल घास चमकै छै, भेद कुमुद खिलैए

कुमुद पात नमै छै, माछ लहर डोलै / मोन शान्ति उतरै छै, खेद कुमुद खिलैए

भोर ओस सूखै छै, कूल घास नमै / आकाश छवि झलकै छै, कुमुद पात खुलै

सूरज किरण पड़ै छै, मोन शान्ति बढ़ै / ताल नीर सरै छै, वेद कुमुद खिलैए

माछ लहर सरै छै, आकाश छवि बदलै / कुमुद पात डोलै छै, सूरज किरण फैलै

कूल घास चमकै छै, ताल नीर बहै / भोर ओस पड़ै छै, छेद कुमुद खिलैए

मोन शान्ति उतरै छै, कुमुद पात नमै / सूरज किरण चमकै छै, कूल घास नमै

आकाश छवि झलकै छै, भोर ओस सूखै / माछ लहर उठै छै, अभेद कुमुद खिलैए

ताल नीर सरै छै, सूरज किरण पड़ै / कूल घास डोलै छै, आकाश छवि बदलै

कुमुद पात डोलै छै, माछ लहर सरै / मोन शान्ति रहै छै, निषेध कुमुद खिलैए

भोर ओस पड़ै छै, कूल घास चमकै / आकाश छवि दिसै छै, कुमुद पात नमै

सूरज किरण चमकै छै, मोन शान्ति उतरै / ताल नीर चमकै छै, विभेद कुमुद खिलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८८४ — संगीतमय रूप

भाव: नीर, रूप, प्रतिबिम्ब, प्रकाश आ शान्त जागरण। कुमुदिनी-तालक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित झपताल १० मात्रा। कुमुदिनी-तालक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'कुमुद खिलैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज। कुमुदिनी-तालक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: कुमुदिनी-तालक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: कुमुदिनी-तालक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: कुमुदिनी-तालक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्यासस़ँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: कुमुदिनी-तालक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: कुमुदिनी-तालक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: कुमुदिनी-तालक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। कुमुदिनी-तालक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८८५ — गन्ध उठै, मसाला पिसैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूल (फूल, मूल, कूल, शूल, धूल, भूल, अनुकूल) · रदीफ: मसाला पिसैए · शेर: ६

सिल लोढ़ा चलै छै, गन्ध रसोई जगै / धनिया पात खुलै छै, फूल मसाला पिसैए
मसाला दाना टूटै छै, मिर्च रंग बदलै / स्वाद थारी सजै छै, मूल मसाला पिसैए
हाथ दबाव पड़ै छै, धनिया पात डोलै / श्रम नेह बढ़ै छै, मसाला दाना मिलै
गन्ध रसोई महकै छै, स्वाद थारी भरै / सिल लोढ़ा नमै छै, कूल मसाला पिसैए
मिर्च रंग फैलै छै, श्रम नेह बचै / मसाला दाना पिसै छै, गन्ध रसोई जगै
धनिया पात खुलै छै, सिल लोढ़ा चलै / हाथ दबाव घटै छै, शूल मसाला पिसैए
स्वाद थारी सजै छै, मसाला दाना टूटै / गन्ध रसोई सजै छै, धनिया पात डोलै
श्रम नेह बढ़ै छै, हाथ दबाव पड़ै / मिर्च रंग चढ़ै छै, धूल मसाला पिसैए
सिल लोढ़ा नमै छै, गन्ध रसोई महकै / धनिया पात नमै छै, श्रम नेह बचै
मसाला दाना पिसै छै, मिर्च रंग फैलै / स्वाद थारी रहै छै, भूल मसाला पिसैए
हाथ दबाव घटै छै, धनिया पात खुलै / श्रम नेह जगै छै, मसाला दाना टूटै
गन्ध रसोई सजै छै, स्वाद थारी सजै / सिल लोढ़ा घिसै छै, अनुकूल मसाला पिसैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८८५ — संगीतमय रूप

भाव: दाना, श्रम, गन्ध, स्वाद आ घरक नेह। सिलबट्टाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। सिलबट्टाक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'मसाला पिसैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, हलुक मँजीरा। सिलबट्टाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: सिलबट्टाक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: सिलबट्टाक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: सिलबट्टाक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: सिलबट्टाक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: सिलबट्टाक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: सिलबट्टाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। सिलबट्टाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८८६ — काँच हँसै, लहठी खनकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाट (बाट, घाट, ठाट, पाट, हाट, कपाट, ललाट) · रदीफ: लहठी खनकैए · शेर: ६

लहठी कलाई सजै छै, साँझ दीप चमकै / टूटल टुकड़ा टूटै छै, बाट लहठी खनकैए
काँच रंग फैलै छै, हँसी सोर बजै / नेह याद जगै छै, घाट लहठी खनकैए
हाथ चाल नमै छै, टूटल टुकड़ा तपै / लोक रीत चलै छै, काँच रंग बदलै
साँझ दीप जरै छै, नेह याद रहै / लहठी कलाई खनकै छै, ठाट लहठी खनकैए
हँसी सोर मिलै छै, लोक रीत बदलै / काँच रंग चढ़ै छै, साँझ दीप चमकै
टूटल टुकड़ा टूटै छै, लहठी कलाई सजै / हाथ चाल बदलै छै, पाट लहठी खनकैए
नेह याद जगै छै, काँच रंग फैलै / साँझ दीप नमै छै, टूटल टुकड़ा तपै
लोक रीत चलै छै, हाथ चाल नमै / हँसी सोर उठै छै, हाट लहठी खनकैए
लहठी कलाई खनकै छै, साँझ दीप जरै / टूटल टुकड़ा बदलै छै, लोक रीत बदलै
काँच रंग चढ़ै छै, हँसी सोर मिलै / नेह याद घुरै छै, कपाट लहठी खनकैए
हाथ चाल बदलै छै, टूटल टुकड़ा टूटै / लोक रीत बचै छै, काँच रंग फैलै
साँझ दीप नमै छै, नेह याद जगै / लहठी कलाई हिलै छै, ललाट लहठी खनकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८८६ — संगीतमय रूप

भाव: रंग, नाजुकता, लोक-रीत, नेह आ टूटनक स्मृति। लहठीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। लहठीक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ ‘लहठी खनकैए’ पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, विरल तबला। लहठीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: लहठीक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: लहठीक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: लहठीक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: लहठीक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: लहठीक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: लहठीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। लहठीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८८७ — पएर उठै, सीढ़ी चढ़बैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाथ (हाथ, साथ, माथ, नाथ, अनाथ, सनाथ, गाथ) · रदीफ: सीढ़ी चढ़बैए · शेर: ६

सीढ़ी पएर चलै छै, हाथ डाँड़ चलै / नीचाँ आँगन सजै छै, हाथ सीढ़ी चढ़बैए
छत द्वार रहै छै, ऊपर आकाश चमकै / थकान श्वास चलै छै, साथ सीढ़ी चढ़बैए
देवाल छाह पड़ै छै, नीचाँ आँगन भरै / चाल धैर्य बचै छै, छत द्वार मिलै
हाथ डाँड़ धरै छै, थकान श्वास बढ़ै / सीढ़ी पएर नमै छै, माथ सीढ़ी चढ़बैए
ऊपर आकाश फैलै छै, चाल धैर्य रहै / छत द्वार खुलै छै, हाथ डाँड़ चलै
नीचाँ आँगन सजै छै, सीढ़ी पएर चलै / देवाल छाह सरै छै, नाथ सीढ़ी चढ़बैए
थकान श्वास चलै छै, छत द्वार रहै / हाथ डाँड़ सम्हरै छै, नीचाँ आँगन भरै
चाल धैर्य बचै छै, देवाल छाह पड़ै / ऊपर आकाश खुलै छै, अनाथ सीढ़ी चढ़बैए
सीढ़ी पएर नमै छै, हाथ डाँड़ धरै / नीचाँ आँगन जगै छै, चाल धैर्य रहै
छत द्वार खुलै छै, ऊपर आकाश फैलै / थकान श्वास सम्हरै छै, सनाथ सीढ़ी चढ़बैए
देवाल छाह सरै छै, नीचाँ आँगन सजै / चाल धैर्य बढ़ै छै, छत द्वार रहै
हाथ डाँड़ सम्हरै छै, थकान श्वास चलै / सीढ़ी पएर उठै छै, गाथ सीढ़ी चढ़बैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८८७ — संगीतमय रूप

भाव: ऊर्ध्व यात्रा, थकान, धैर्य आ सभ डगक ज्ञान। सीढ़ीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। सीढ़ीक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'सीढ़ी चढ़बैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु ढोलक। सीढ़ीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।
मतला: सीढ़ीक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: सीढ़ीक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।
३म शेर: सीढ़ीक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: सीढ़ीक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: सीढ़ीक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: सीढ़ीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। सीढ़ीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८८८ — आँगन थाप धरै, ढेंकी कुटैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, तरंग, उमंग, प्रसंग) · रदीफ: ढेंकी कुटैए · शेर: ६

ढेंकी थाप पड़ै छै, हाथ ताल मिलै / चाउर गन्ध रहै छै, रंग ढेंकी कुटैए
धान दाना टूटै छै, भोर आँगन सजै / श्रम गीत उठै छै, संग ढेंकी कुटैए
ओखरि घर सजै छै, चाउर गन्ध उठै / माय याद रहै छै, धान दाना मिलै
हाथ ताल बजै छै, श्रम गीत बजै / ढेंकी थाप मिलै छै, ढंग ढेंकी कुटैए
भोर आँगन जगै छै, माय याद घुरै / धान दाना पिसै छै, हाथ ताल मिलै
चाउर गन्ध रहै छै, ढेंकी थाप पड़ै / ओखरि घर रहै छै, अंग ढेंकी कुटैए
श्रम गीत उठै छै, धान दाना टूटै / हाथ ताल चलै छै, चाउर गन्ध उठै
माय याद रहै छै, ओखरि घर सजै / भोर आँगन भरै छै, तरंग ढेंकी कुटैए
ढेंकी थाप मिलै छै, हाथ ताल बजै / चाउर गन्ध फैलै छै, माय याद घुरै
धान दाना पिसै छै, भोर आँगन जगै / श्रम गीत मिलै छै, उमंग ढेंकी कुटैए
ओखरि घर रहै छै, चाउर गन्ध रहै / माय याद जगै छै, धान दाना टूटै
हाथ ताल चलै छै, श्रम गीत उठै / ढेंकी थाप उठै छै, प्रसंग ढेंकी कुटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८८८ — संगीतमय रूप

भाव: धान, श्रम, लय, घरेलू स्मृति आ सामूहिक ताल। ढेंकीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। ढेंकीक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'ढेंकी कुटैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, हलुक पखावज। ढेंकीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: ढेंकीक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: ढेंकीक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: ढेंकीक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: ढेंकीक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: ढेंकीक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: ढेंकीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ढेंकीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८८९ — ओस काँपै, पाला जमैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोल (बोल, डोल, खोल, मोल, तोल, गोल, झोल) · रदीफ: पाला जमैए · शेर: ६

पाला घास नमै छै, सूरज किरण फैलै / माटि ठंढ पड़ै छै, बोल पाला जमैए
ओस बूँद पड़ै छै, पात किनार चलै / खेतीहर आस जगै छै, डोल पाला जमैए
भोर खेत दिसै छै, माटि ठंढ बढ़ै / दिन उष्मा रहै छै, ओस बूँद सूखै
सूरज किरण पड़ै छै, खेतीहर आस बचै / पाला घास चमकै छै, खोल पाला जमैए
पात किनार बदलै छै, दिन उष्मा फैलै / ओस बूँद चमकै छै, सूरज किरण फैलै
माटि ठंढ पड़ै छै, पाला घास नमै / भोर खेत फैलै छै, मोल पाला जमैए
खेतीहर आस जगै छै, ओस बूँद पड़ै / सूरज किरण चमकै छै, माटि ठंढ बढ़ै
दिन उष्मा रहै छै, भोर खेत दिसै / पात किनार खुलै छै, तोल पाला जमैए
पाला घास चमकै छै, सूरज किरण पड़ै / माटि ठंढ घटै छै, दिन उष्मा फैलै
ओस बूँद चमकै छै, पात किनार बदलै / खेतीहर आस बढ़ै छै, गोल पाला जमैए
भोर खेत फैलै छै, माटि ठंढ पड़ै / दिन उष्मा बढ़ै छै, ओस बूँद पड़ै
सूरज किरण चमकै छै, खेतीहर आस जगै / पाला घास डोलै छै, झोल पाला जमैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८८९ — संगीतमय रूप

भाव: ठंढ, नाजुक फसल, उष्मा आ प्रतीक्षाक क्षण। पालाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित झपताल १० मात्रा। पालाक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'पाला जमैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। पालाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।
मतला: पालाक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: पालाक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।
३म शेर: पालाक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: पालाक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: पालाक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: पालाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पालाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८९० — समुद्र बीच सूइ बतबैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाव (भाव, चाव, नाव, ठाव, दाव, घाव, लगाव) · रदीफ: सूइ बतबैए · शेर: ६

सूइ दिशा मुड़ै छै, समुद्र लहर सरै / कूल दूरी मापै छै, भाव सूइ बतबैए
नाविक हाथ गढ़ै छै, आकाश मेघ घेरै / यात्रा प्रश्न उठै छै, चाव सूइ बतबैए
नक्शा कोर रहै छै, कूल दूरी घटै / मोन निर्णय पकै छै, नाविक हाथ नमै
समुद्र लहर उठै छै, यात्रा प्रश्न खुलै / सूइ दिशा मिलै छै, नाव सूइ बतबैए
आकाश मेघ सरै छै, मोन निर्णय बदलै / नाविक हाथ चलै छै, समुद्र लहर सरै
कूल दूरी मापै छै, सूइ दिशा मुड़ै / नक्शा कोर दिसै छै, ठाव सूइ बतबैए
यात्रा प्रश्न उठै छै, नाविक हाथ गढ़ै / समुद्र लहर डोलै छै, कूल दूरी घटै
मोन निर्णय पकै छै, नक्शा कोर रहै / आकाश मेघ जुटै छै, दाव सूइ बतबैए
सूइ दिशा मिलै छै, समुद्र लहर उठै / कूल दूरी बढ़ै छै, मोन निर्णय बदलै
नाविक हाथ चलै छै, आकाश मेघ सरै / यात्रा प्रश्न बढ़ै छै, घाव सूइ बतबैए
नक्शा कोर दिसै छै, कूल दूरी मापै / मोन निर्णय बनै छै, नाविक हाथ गढ़ै
समुद्र लहर डोलै छै, यात्रा प्रश्न उठै / सूइ दिशा खुलै छै, लगाव सूइ बतबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८९० — संगीतमय रूप

भाव: अनिश्चित जल, माप, निर्णय आ भरोसाक सूक्ष्म संकेत। दिशा-सूइक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। दिशा-सूइक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ ‘सूइ बतबैए’ पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, विरल तबला। दिशा-सूइक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: दिशा-सूइक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: दिशा-सूइक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: दिशा-सूइक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: दिशा-सूइक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: दिशा-सूइक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: दिशा-सूइक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दिशा-सूइक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८९१ — जंगल साँस ले, पगडंडी मुड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीर (धीर, नीर, तीर, पीर, अधीर, गंभीर, शरीर) · रदीफ: पगडंडी मुड़ैए · शेर: ६

पगडंडी जंगल खुलै छै, पएर माटि नमै / पाखी स्वर बजै छै, धीर पगडंडी मुड़ैए
पात सोर मिलै छै, झरना नीर सरै / दिशा चिन्ह दिसै छै, नीर पगडंडी मुड़ैए
गाछ छाह पड़ै छै, पाखी स्वर उठै / मोन साहस जगै छै, पात सोर बजै
पएर माटि छुबै छै, दिशा चिन्ह बचै / पगडंडी जंगल रहै छै, तीर पगडंडी मुड़ैए
झरना नीर चमकै छै, मोन साहस बचै / पात सोर उठै छै, पएर माटि नमै
पाखी स्वर बजै छै, पगडंडी जंगल खुलै / गाछ छाह सरै छै, पीर पगडंडी मुड़ैए
दिशा चिन्ह दिसै छै, पात सोर मिलै / पएर माटि रहै छै, पाखी स्वर उठै
मोन साहस जगै छै, गाछ छाह पड़ै / झरना नीर बहै छै, अधीर पगडंडी मुड़ैए
पगडंडी जंगल रहै छै, पएर माटि छुबै / पाखी स्वर मिलै छै, मोन साहस बचै
पात सोर उठै छै, झरना नीर चमकै / दिशा चिन्ह मिलै छै, गंभीर पगडंडी मुड़ैए
गाछ छाह सरै छै, पाखी स्वर बजै / मोन साहस बढ़ै छै, पात सोर मिलै
पएर माटि रहै छै, दिशा चिन्ह दिसै / पगडंडी जंगल गहिरै छै, शरीर पगडंडी मुड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८९१ — संगीतमय रूप

भाव: अनिश्चित राह, प्रकृति-संकेत, साहस आ सुनबाक कला। जंगल-पगडंडीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। जंगल-पगडंडीक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'पगडंडी मुड़ैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज। जंगल-पगडंडीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: जंगल-पगडंडीक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: जंगल-पगडंडीक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: जंगल-पगडंडीक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: जंगल-पगडंडीक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: जंगल-पगडंडीक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: जंगल-पगडंडीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। जंगल-पगडंडीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८९२ — तिनका जुड़ै, घोंसला बसैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाज (काज, साज, लाज, राज, समाज, अनाज, इलाज) · रदीफ: घोंसला बसैए · शेर: ६

घोंसला डारि डोलै छै, अंडा उष्मा रहै / पवन डोल रहै छै, काज घोंसला बसैए
पाखी चोंच जुटै छै, भोर सोर बजै / छौना पाँखि फैलै छै, साज घोंसला बसैए
तिनका रेशा रहै छै, पवन डोल बढ़ै / घर नेह बढ़ै छै, पाखी चोंच छुबै
अंडा उष्मा बढ़ै छै, छौना पाँखि उठै / घोंसला डारि रहै छै, लाज घोंसला बसैए
भोर सोर मिलै छै, घर नेह बचै / पाखी चोंच चलै छै, अंडा उष्मा रहै
पवन डोल रहै छै, घोंसला डारि डोलै / तिनका रेशा बनै छै, राज घोंसला बसैए
छौना पाँखि फैलै छै, पाखी चोंच जुटै / अंडा उष्मा फैलै छै, पवन डोल बढ़ै
घर नेह बढ़ै छै, तिनका रेशा रहै / भोर सोर उठै छै, समाज घोंसला बसैए
घोंसला डारि रहै छै, अंडा उष्मा बढ़ै / पवन डोल घटै छै, घर नेह बचै
पाखी चोंच चलै छै, भोर सोर मिलै / छौना पाँखि उड़ै छै, अनाज घोंसला बसैए
तिनका रेशा बनै छै, पवन डोल रहै / घर नेह जगै छै, पाखी चोंच जुटै
अंडा उष्मा फैलै छै, छौना पाँखि फैलै / घोंसला डारि नमै छै, इलाज घोंसला बसैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८९२ — संगीतमय रूप

भाव: निर्माण, संरक्षण, उष्मा, जोखिम आ घर बनबाक श्रम। घोंसलाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। घोंसलाक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ ‘घोंसला बसैए’ पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, हलुक मँजीरा। घोंसलाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: घोंसलाक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: घोंसलाक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: घोंसलाक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: घोंसलाक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: घोंसलाक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: घोंसलाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। घोंसलाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८९३ — कपड़ा भीजै, रंगरेज रँगैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, जात, घात, प्रभात, आघात) · रदीफ: रंगरेज रँगैए · शेर: ६

रंगरेज हाथ चलै छै, रंग घोल गहिरै / सूता रेखा उभरै छै, बात रंगरेज रँगैए
कपड़ा रंग फैलै छै, धूप आँगन सजै / श्रम गन्ध उठै छै, रात रंगरेज रँगैए
कड़ाही नीर सरै छै, सूता रेखा खुलै / लोक पहिरन बदलै छै, कपड़ा रंग बदलै
रंग घोल मिलै छै, श्रम गन्ध फैलै / रंगरेज हाथ नमै छै, पात रंगरेज रँगैए
धूप आँगन जगै छै, लोक पहिरन चमकै / कपड़ा रंग चढ़ै छै, रंग घोल गहिरै
सूता रेखा उभरै छै, रंगरेज हाथ चलै / कड़ाही नीर चमकै छै, जात रंगरेज रँगैए
श्रम गन्ध उठै छै, कपड़ा रंग फैलै / रंग घोल बदलै छै, सूता रेखा खुलै
लोक पहिरन बदलै छै, कड़ाही नीर सरै / धूप आँगन भरै छै, घात रंगरेज रँगैए
रंगरेज हाथ नमै छै, रंग घोल मिलै / सूता रेखा दिसै छै, लोक पहिरन चमकै
कपड़ा रंग चढ़ै छै, धूप आँगन जगै / श्रम गन्ध रहै छै, प्रभात रंगरेज रँगैए
कड़ाही नीर चमकै छै, सूता रेखा उभरै / लोक पहिरन सजै छै, कपड़ा रंग फैलै
रंग घोल बदलै छै, श्रम गन्ध उठै / रंगरेज हाथ गढ़ै छै, आघात रंगरेज रँगैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८९३ — संगीतमय रूप

भाव: रंग, श्रम, रूपान्तरण, धूप आ लोक-पहिरन। रंगरेजक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। रंगरेजक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ ‘रंगरेज रँगैए’ पर स्वर पृथक् आकार लए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, विरल तबला। रंगरेजक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।
मतला: रंगरेजक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: रंगरेजक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।
३म शेर: रंगरेजक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: रंगरेजक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: रंगरेजक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: रंगरेजक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। रंगरेजक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८९४ — गाम गोल बैसै, सभा सुनैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाप (माप, छाप, ताप, थाप, संताप, आलाप, प्रताप) · रदीफ: सभा सुनैए · शेर: ६

सभा आँगन भरै छै, युवा प्रश्न खुलै / कागज निर्णय बदलै छै, माप सभा सुनैए
लोक गोल बनै छै, माय स्वर बजै / हक मान बढ़ै छै, छाप सभा सुनैए
वृद्ध बात बढ़ै छै, कागज निर्णय बनै / गाम सहमति बढ़ै छै, लोक गोल रहै
युवा प्रश्न उठै छै, हक मान बचै / सभा आँगन सजै छै, ताप सभा सुनैए
माय स्वर मिलै छै, गाम सहमति टिकै / लोक गोल जुटै छै, युवा प्रश्न खुलै
कागज निर्णय बदलै छै, सभा आँगन भरै / वृद्ध बात खुलै छै, थाप सभा सुनैए
हक मान बढ़ै छै, लोक गोल बनै / युवा प्रश्न बढ़ै छै, कागज निर्णय बनै
गाम सहमति बढ़ै छै, वृद्ध बात बढ़ै / माय स्वर उठै छै, संताप सभा सुनैए
सभा आँगन सजै छै, युवा प्रश्न उठै / कागज निर्णय पकै छै, गाम सहमति टिकै
लोक गोल जुटै छै, माय स्वर मिलै / हक मान जगै छै, आलाप सभा सुनैए
वृद्ध बात खुलै छै, कागज निर्णय बदलै / गाम सहमति बनै छै, लोक गोल बनै
युवा प्रश्न बढ़ै छै, हक मान बढ़ै / सभा आँगन जगै छै, प्रताप सभा सुनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८९४ — संगीतमय रूप

भाव: बहुस्वर, प्रश्न, लोकनिर्णय, हक आ सहमति। ग्रामसभाक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित झपताल १० मात्रा। ग्रामसभाक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'सभा सुनैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु ढोलक। ग्रामसभाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: ग्रामसभाक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: ग्रामसभाक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: ग्रामसभाक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: ग्रामसभाक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: ग्रामसभाक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: ग्रामसभाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ग्रामसभाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८९५ — धूलि हटै, अलमारी खुलबैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेश (देश, वेश, प्रवेश, संदेश, निर्देश, अवशेष, परिवेश) · रदीफ: अलमारी खुलबैए · शेर: ६

अलमारी ताला लगै छै, हस्तलिपि रेखा दिसै / दीमक चिन्ह मिलै छै, देश अलमारी खुलबैए
पोथी गन्ध फैलै छै, तिथि नाम बदलै / पाठक हाथ चलै छै, वेश अलमारी खुलबैए
पन्ना धूलि उड़ै छै, दीमक चिन्ह दिसै / इतिहास साक्ष्य बचै छै, पोथी गन्ध रहै
हस्तलिपि रेखा खुलै छै, पाठक हाथ गढ़ै / अलमारी ताला रहै छै, प्रवेश अलमारी खुलबैए
तिथि नाम बचै छै, इतिहास साक्ष्य बढ़ै / पोथी गन्ध उठै छै, हस्तलिपि रेखा दिसै
दीमक चिन्ह मिलै छै, अलमारी ताला लगै / पन्ना धूलि बैसै छै, संदेश अलमारी खुलबैए
पाठक हाथ चलै छै, पोथी गन्ध फैलै / हस्तलिपि रेखा उभरै छै, दीमक चिन्ह दिसै
इतिहास साक्ष्य बचै छै, पन्ना धूलि उड़ै / तिथि नाम दिसै छै, निर्देश अलमारी खुलबैए
अलमारी ताला रहै छै, हस्तलिपि रेखा खुलै / दीमक चिन्ह बचै छै, इतिहास साक्ष्य बढ़ै
पोथी गन्ध उठै छै, तिथि नाम बचै / पाठक हाथ नमै छै, अवशेष अलमारी खुलबैए
पन्ना धूलि बैसै छै, दीमक चिन्ह मिलै / इतिहास साक्ष्य मिलै छै, पोथी गन्ध फैलै
हस्तलिपि रेखा उभरै छै, पाठक हाथ चलै / अलमारी ताला खुलै छै, परिवेश अलमारी खुलबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८९५ — संगीतमय रूप

भाव: संग्रह, क्षय, हस्तलिपि, पाठक आ इतिहासक जिम्मेवारी। पोथी-अलमारीक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। पोथी-अलमारीक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'अलमारी खुलबैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, हलुक पखावज। पोथी-अलमारीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।
मतला: पोथी-अलमारीक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: पोथी-अलमारीक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।
३म शेर: पोथी-अलमारीक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: पोथी-अलमारीक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: पोथी-अलमारीक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: पोथी-अलमारीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पोथी-अलमारीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८९६ — लहर चढ़ै, पदचिह्न मिटैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (करार, विचार, उद्धार, संसार, आकार, प्रचार, संस्कार) · रदीफ: पदचिह्न मिटैए · शेर: ६

बालू पदचिह्न दिसै छै, पवन झोंका बहै / यात्री दूरी मापै छै, करार पदचिह्न मिटैए
नदी कूल दिसै छै, नीर लहर डोलै / याद क्षण सरै छै, विचार पदचिह्न मिटैए
पएर रेखा उभरै छै, यात्री दूरी घटै / काल माटि नमै छै, नदी कूल बचै
पवन झोंका उठै छै, याद क्षण रहै / बालू पदचिह्न बचै छै, उद्धार पदचिह्न मिटैए
नीर लहर सरै छै, काल माटि रहै / नदी कूल सरै छै, पवन झोंका बहै
यात्री दूरी मापै छै, बालू पदचिह्न दिसै / पएर रेखा दिसै छै, संसार पदचिह्न मिटैए
याद क्षण सरै छै, नदी कूल दिसै / पवन झोंका सरै छै, यात्री दूरी घटै
काल माटि नमै छै, पएर रेखा उभरै / नीर लहर उठै छै, आकार पदचिह्न मिटैए
बालू पदचिह्न बचै छै, पवन झोंका उठै / यात्री दूरी बढ़ै छै, काल माटि रहै
नदी कूल सरै छै, नीर लहर सरै / याद क्षण बदलै छै, प्रचार पदचिह्न मिटैए
पएर रेखा दिसै छै, यात्री दूरी मापै / काल माटि छुबै छै, नदी कूल दिसै
पवन झोंका सरै छै, याद क्षण सरै / बालू पदचिह्न मिटै छै, संस्कार पदचिह्न मिटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८९६ — संगीतमय रूप

भाव: क्षणभंगुर चिन्ह, यात्रा, स्मृति आ कालक मेटनाइ। बालूपर पदचिह्नक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। बालूपर पदचिह्नक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'पदचिह्न मिटैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। बालूपर पदचिह्नक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: बालूपर पदचिह्नक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: बालूपर पदचिह्नक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: बालूपर पदचिह्नक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: बालूपर पदचिह्नक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: बालूपर पदचिह्नक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: बालूपर पदचिह्नक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। बालूपर पदचिह्नक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८९७ — धूलि उठै, घोड़ा दौड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (कमान, मैदान, अरमान, उड़ान, प्रमाण, सम्मान, निधान) · रदीफ: घोड़ा दौड़ैए · शेर: ६

घोड़ा टाप बजै छै, सवार पएर उठै / बाट दूरी मापै छै, कमान घोड़ा दौड़ैए
मैदान धूलि बैसै छै, पवन कान जगै / श्रम श्वास चलै छै, मैदान घोड़ा दौड़ैए
लगाम हाथ नमै छै, बाट दूरी घटै / गन्तव्य आस बचै छै, मैदान धूलि उड़ै
सवार पएर चलै छै, श्रम श्वास बढ़ै / घोड़ा टाप मिलै छै, अरमान घोड़ा दौड़ैए
पवन कान हिलै छै, गन्तव्य आस बढ़ै / मैदान धूलि उठै छै, सवार पएर उठै
बाट दूरी मापै छै, घोड़ा टाप बजै / लगाम हाथ गढ़ै छै, उड़ान घोड़ा दौड़ैए
श्रम श्वास चलै छै, मैदान धूलि बैसै / सवार पएर नमै छै, बाट दूरी घटै
गन्तव्य आस बचै छै, लगाम हाथ नमै / पवन कान सुनै छै, प्रमाण घोड़ा दौड़ैए
घोड़ा टाप मिलै छै, सवार पएर चलै / बाट दूरी बढ़ै छै, गन्तव्य आस बढ़ै
मैदान धूलि उठै छै, पवन कान हिलै / श्रम श्वास सम्हरै छै, सम्मान घोड़ा दौड़ैए
लगाम हाथ गढ़ै छै, बाट दूरी मापै / गन्तव्य आस जगै छै, मैदान धूलि बैसै
सवार पएर नमै छै, श्रम श्वास चलै / घोड़ा टाप उठै छै, निधान घोड़ा दौड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८९७ — संगीतमय रूप

भाव: गति, नियंत्रण, श्रम, दूरी आ सहयात्राक नैतिकता। घोड़ाक टापक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। घोड़ाक टापक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'घोड़ा दौड़ैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, विरल तबला। घोड़ाक टापक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: घोड़ाक टापक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: घोड़ाक टापक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: घोड़ाक टापक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: घोड़ाक टापक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: घोड़ाक टापक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: घोड़ाक टापक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। घोड़ाक टापक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८९८ — रेखा बोलै, चित्र उभरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (ठोर, सोर, भोर, कोर, छोर, डोर, नोर) · रदीफ: चित्र उभरैए · शेर: ६

चित्र रेखा खुलै छै, कमल पात नमै / बाँस सीमा बदलै छै, ठोर चित्र उभरैए
कागज रंग फैलै छै, नारी आँखि बोलै / रंग कथा खुलै छै, सोर चित्र उभरैए
माछ आकृति बदलै छै, बाँस सीमा बनै / हाथ परम्परा बदलै छै, कागज रंग बदलै
कमल पात डोलै छै, रंग कथा बढ़ै / चित्र रेखा उभरै छै, भोर चित्र उभरैए
नारी आँखि चमकै छै, हाथ परम्परा चलै / कागज रंग चढ़ै छै, कमल पात नमै
बाँस सीमा बदलै छै, चित्र रेखा खुलै / माछ आकृति दिसै छै, कोर चित्र उभरैए
रंग कथा खुलै छै, कागज रंग फैलै / कमल पात खुलै छै, बाँस सीमा बनै
हाथ परम्परा बदलै छै, माछ आकृति बदलै / नारी आँखि तकै छै, छोर चित्र उभरैए
चित्र रेखा उभरै छै, कमल पात डोलै / बाँस सीमा घटै छै, हाथ परम्परा चलै
कागज रंग चढ़ै छै, नारी आँखि चमकै / रंग कथा जगै छै, डोर चित्र उभरैए
माछ आकृति दिसै छै, बाँस सीमा बदलै / हाथ परम्परा बचै छै, कागज रंग फैलै
कमल पात खुलै छै, रंग कथा खुलै / चित्र रेखा दिसै छै, नोर चित्र उभरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८९८ — संगीतमय रूप

भाव: रेखा, रंग, स्त्री-दृष्टि, लोक-स्मृति आ परम्पराक नव पाठ। मिथिला-चित्रक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। मिथिला-चित्रक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ ‘चित्र उभरैए’ पर स्वर पृथक् आकार लए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज। मिथिला-चित्रक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।

मतला: मिथिला-चित्रक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: मिथिला-चित्रक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।

३म शेर: मिथिला-चित्रक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: मिथिला-चित्रक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: मिथिला-चित्रक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: मिथिला-चित्रक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मिथिला-चित्रक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ८९९ — श्वास उठै, शंख गुँजैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (प्रकाश, निवास, उच्छ्वास, विश्वास, विकास, इतिहास, आकाश) · रदीफ: शंख गुँजैए · शेर: ६

शंख सोर उठै छै, लहर ध्वनि फैलै / नदी घाट खुलै छै, प्रकाश शंख गुँजैए
भोर आँगन जगै छै, देवघर दीप नमै / लोक स्मृति जगै छै, निवास शंख गुँजैए
श्वास छाती धड़कै छै, नदी घाट जगै / मौन कोर दिसै छै, भोर आँगन सजै
लहर ध्वनि उठै छै, लोक स्मृति बचै / शंख सोर बजै छै, उच्छ्वास शंख गुँजैए
देवघर दीप चमकै छै, मौन कोर रहै / भोर आँगन भरै छै, लहर ध्वनि फैलै
नदी घाट खुलै छै, शंख सोर उठै / श्वास छाती सम्हरै छै, विश्वास शंख गुँजैए
लोक स्मृति जगै छै, भोर आँगन जगै / लहर ध्वनि मिलै छै, नदी घाट जगै
मौन कोर दिसै छै, श्वास छाती धड़कै / देवघर दीप जरै छै, विकास शंख गुँजैए
शंख सोर बजै छै, लहर ध्वनि उठै / नदी घाट भरै छै, मौन कोर रहै
भोर आँगन भरै छै, देवघर दीप चमकै / लोक स्मृति घुरै छै, इतिहास शंख गुँजैए
श्वास छाती सम्हरै छै, नदी घाट खुलै / मौन कोर खुलै छै, भोर आँगन जगै
लहर ध्वनि मिलै छै, लोक स्मृति जगै / शंख सोर मिलै छै, आकाश शंख गुँजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ८९९ — संगीतमय रूप

भाव: श्वास, ध्वनि, अनुष्ठान, लोक-स्मृति आ मौनक सीमा। शंख-ध्वनिक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित झपताल १० मात्रा। शंख-ध्वनिक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ 'शंख गुँजैए' पर स्वर पृथक् आकार लए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, हलुक मँजीरा। शंख-ध्वनिक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।
मतला: शंख-ध्वनिक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: शंख-ध्वनिक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।
३म शेर: शंख-ध्वनिक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: शंख-ध्वनिक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: शंख-ध्वनिक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: शंख-ध्वनिक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। शंख-ध्वनिक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ९०० — नीर पार खुलै, क्षितिज पसारैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (अतीत, संगीत, प्रीत, मीत, रीत, जीत, विपरीत) · रदीफ: क्षितिज पसारैए · शेर: ६

क्षितिज रेखा खुलै छै, नाव दूरी बढ़ै / सूरज किरण चमकै छै, अतीत क्षितिज पसारैए
समुद्र नीर चमकै छै, पाखी पाँखि उड़ै / मोन यात्रा चलै छै, संगीत क्षितिज पसारैए
भोर रंग बदलै छै, सूरज किरण पड़ै / काल पार खुलै छै, समुद्र नीर सरै
नाव दूरी घटै छै, मोन यात्रा बढ़ै / क्षितिज रेखा उभरै छै, प्रीत क्षितिज पसारैए
पाखी पाँखि उठै छै, काल पार मिलै / समुद्र नीर बहै छै, नाव दूरी बढ़ै
सूरज किरण चमकै छै, क्षितिज रेखा खुलै / भोर रंग फैलै छै, मीत क्षितिज पसारैए
मोन यात्रा चलै छै, समुद्र नीर चमकै / नाव दूरी मापै छै, सूरज किरण पड़ै
काल पार खुलै छै, भोर रंग बदलै / पाखी पाँखि फैलै छै, रीत क्षितिज पसारैए
क्षितिज रेखा उभरै छै, नाव दूरी घटै / सूरज किरण फैलै छै, काल पार मिलै
समुद्र नीर बहै छै, पाखी पाँखि उठै / मोन यात्रा मुड़ै छै, जीत क्षितिज पसारैए
भोर रंग फैलै छै, सूरज किरण चमकै / काल पार दिसै छै, समुद्र नीर चमकै
नाव दूरी मापै छै, मोन यात्रा चलै / क्षितिज रेखा दिसै छै, विपरीत क्षितिज पसारैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९०० — संगीतमय रूप

भाव: अन्तहीनता, दूरी, भोर, यात्रा आ नव प्रश्नक खुलल अवकाश। क्षितिजक मुख्य बिम्ब गजल-दर-गजल पृथक् राखल गेल अछि।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। क्षितिजक चाल अनुसार ठेक स्थिर रहए; रदीफ ‘क्षितिज पसारैए’ पर स्वर पृथक् आकार लए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, विरल तबला। क्षितिजक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे खुलए।
मतला: क्षितिजक बिम्बमे पहिल शेर साँचकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर जाँचल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: क्षितिजक दोसर शेर सामाजिक व्यवहार, पहुँच आ मानक सम्बन्ध देखबैत अछि; रूपक संग लोक-अनुभव जुड़ैत अछि।
३म शेर: क्षितिजक तेसर शेर भिन्न संकेतकेँ एकहि अर्थ-दिशामे समेटैत, मुदा भ्रम आ अध्याससँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: क्षितिजक चारिम शेर वस्तु, बोध आ अनुभवक भेद बचबैत अछि; बदलैत क्षणक बीच निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: क्षितिजक पाँचम शेर कारण, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: क्षितिजक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर, कारण-क्रम आ उत्तरदायित्वकेँ सम्मान दैत स्वतंत्र निष्कर्ष धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। क्षितिजक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो, अगिला मौनमे अपन अर्थ छोड़ए।

गजल ९०१ — पोखर नीर चमकै, आस मखान खिलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार) · रदीफ: मखान खिलैए · शेर: ६

पोखर नीर चमकै छै, जल फूल डोलै / डोंगी चाल रुकै छै, सार मखान खिलैए
मखान पात नमै छै, भोर कुहरा छँटै / बीज कोर जगै छै, पार मखान खिलैए
किसान हाथ जुटै छै, डोंगी चाल चलै / हाट मोल घटै छै, मखान पात फैलै
जल फूल खिलै छै, बीज कोर फूटै / पोखर नीर सरै छै, धार मखान खिलैए
भोर कुहरा घटै छै, हाट मोल जँचै / मखान पात डोलै छै, जल फूल डोलै
डोंगी चाल रुकै छै, पोखर नीर चमकै / किसान हाथ नमै छै, विचार मखान खिलैए
बीज कोर जगै छै, मखान पात नमै / जल फूल उठै छै, डोंगी चाल चलै
हाट मोल घटै छै, किसान हाथ जुटै / भोर कुहरा सरै छै, आधार मखान खिलैए
पोखर नीर सरै छै, जल फूल खिलै / डोंगी चाल मुड़ै छै, हाट मोल जँचै
मखान पात डोलै छै, भोर कुहरा घटै / बीज कोर बढ़ै छै, व्यवहार मखान खिलैए
किसान हाथ नमै छै, डोंगी चाल रुकै / हाट मोल बढ़ै छै, मखान पात नमै
जल फूल उठै छै, बीज कोर जगै / पोखर नीर डोलै छै, पुकार मखान खिलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९०१ — संगीतमय रूप

भाव: नीरक गहिराइ, श्रम, बीज, फूल आ जीविकाक शान्त उभार। मखानक पोखरक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। मखानक पोखरक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'मखान खिलैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, विरल तबला। मखानक पोखरक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: मखानक पोखरक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: मखानक पोखरक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: मखानक पोखरक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: मखानक पोखरक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: मखानक पोखरक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: मखानक पोखरक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मखानक पोखरक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; मौनमे ओकर कम्पन छोड़ए।

गजल ९०२ — ओस पात चमकै, नेह पात महकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान) · रदीफ: पात महकैए · शेर: ६

पान पात चमकै छै, माटि गन्ध फैलै / चुन रेखा घटै छै, मान पात महकैए
बाड़ी बेल फैलै छै, किसान हाथ जुटै / डलिया पात सजै छै, ज्ञान पात महकैए
भोर ओस सूखै छै, चुन रेखा दिसै / नेह रीत बढ़ै छै, बाड़ी बेल बढ़ै
माटि गन्ध उठै छै, डलिया पात जुड़ै / पान पात नमै छै, ध्यान पात महकैए
किसान हाथ नमै छै, नेह रीत चलै / बाड़ी बेल चढ़ै छै, माटि गन्ध फैलै
चुन रेखा घटै छै, पान पात चमकै / भोर ओस पड़ै छै, विधान पात महकैए
डलिया पात सजै छै, बाड़ी बेल फैलै / माटि गन्ध रहै छै, चुन रेखा दिसै
नेह रीत बढ़ै छै, भोर ओस सूखै / किसान हाथ चलै छै, अनुमान पात महकैए
पान पात नमै छै, माटि गन्ध उठै / चुन रेखा बदलै छै, नेह रीत चलै
बाड़ी बेल चढ़ै छै, किसान हाथ नमै / डलिया पात भरै छै, पहिचान पात महकैए
भोर ओस पड़ै छै, चुन रेखा घटै / नेह रीत बचै छै, बाड़ी बेल फैलै
माटि गन्ध रहै छै, डलिया पात सजै / पान पात डोलै छै, सम्मान पात महकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९०२ — संगीतमय रूप

भाव: नाजुक पात, ओस, देखभाल, सुगन्ध आ लोक-रीतिक कोमल बिम्ब। पानक बाड़ीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। पानक बाड़ीक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'पात महकैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज। पानक बाड़ीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: पानक बाड़ीक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: पानक बाड़ीक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: पानक बाड़ीक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: पानक बाड़ीक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: पानक बाड़ीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: पानक बाड़ीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पानक बाड़ीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अगिला श्वासमे अर्थ खोलए।

गजल ९०३ — सूत जुड़ै, चाव सुजनी सजैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत) · रदीफ: सुजनी सजैए · शेर: ६

सुजनी सूत जुड़ै छै, रंग धागा तनै / कथा रेखा बदलै छै, प्रीत सुजनी सजैए
कपड़ा कोर सजै छै, माय हाथ रहै / पुरान टुकड़ा जुड़ै छै, रीत सुजनी सजैए
सुई चाल मुड़ै छै, कथा रेखा उभरै / घर याद रहै छै, कपड़ा कोर रहै
रंग धागा मिलै छै, पुरान टुकड़ा बचै / सुजनी सूत मिलै छै, गीत सुजनी सजैए
माय हाथ नमै छै, घर याद घुरै / कपड़ा कोर मुड़ै छै, रंग धागा तनै
कथा रेखा बदलै छै, सुजनी सूत जुड़ै / सुई चाल रुकै छै, मीत सुजनी सजैए
पुरान टुकड़ा जुड़ै छै, कपड़ा कोर सजै / रंग धागा जुड़ै छै, कथा रेखा उभरै
घर याद रहै छै, सुई चाल मुड़ै / माय हाथ चलै छै, जीत सुजनी सजैए
सुजनी सूत मिलै छै, रंग धागा मिलै / कथा रेखा खुलै छै, घर याद घुरै
कपड़ा कोर मुड़ै छै, माय हाथ नमै / पुरान टुकड़ा सजै छै, अतीत सुजनी सजैए
सुई चाल रुकै छै, कथा रेखा बदलै / घर याद जगै छै, कपड़ा कोर सजै
रंग धागा जुड़ै छै, पुरान टुकड़ा जुड़ै / सुजनी सूत तनै छै, संगीत सुजनी सजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९०३ — संगीतमय रूप

भाव: टुकड़ा, सूत, हाथ, कथा आ स्मृतिकेँ एक नव कपड़ामे जोड़बाक कला। सुजनी कढ़ाईक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। सुजनी कढ़ाईक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'सुजनी सजैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, हलुक मँजीरा। सुजनी कढ़ाईक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: सुजनी कढ़ाईक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: सुजनी कढ़ाईक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: सुजनी कढ़ाईक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: सुजनी कढ़ाईक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: सुजनी कढ़ाईक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: सुजनी कढ़ाईक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। सुजनी कढ़ाईक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम स्वरकेँ धीरे विराम दए।

गजल १०४ — रेशा तनै, मान सिक्की जुड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर) · रदीफ: सिक्की जुड़ैए · शेर: ६

सिक्की रेशा तनै छै, धूप तिनका चमकै / घर कोना चमकै छै, नोर सिक्की जुड़ैए
डलिया घेर बढ़ै छै, रंग पट्टी बदलै / हाट मोल जँचै छै, सोर सिक्की जुड़ैए
कारीगर हाथ नमै छै, घर कोना सजै / श्रम मान बचै छै, डलिया घेर रहै
धूप तिनका सूखै छै, हाट मोल बढ़ै / सिक्की रेशा मुड़ै छै, डोर सिक्की जुड़ैए
रंग पट्टी सजै छै, श्रम मान जगै / डलिया घेर बनै छै, धूप तिनका चमकै
घर कोना चमकै छै, सिक्की रेशा तनै / कारीगर हाथ गढ़ै छै, भोर सिक्की जुड़ैए
हाट मोल जँचै छै, डलिया घेर बढ़ै / धूप तिनका मुड़ै छै, घर कोना सजै
श्रम मान बचै छै, कारीगर हाथ नमै / रंग पट्टी जुड़ै छै, जोर सिक्की जुड़ैए
सिक्की रेशा मुड़ै छै, धूप तिनका सूखै / घर कोना रहै छै, श्रम मान जगै
डलिया घेर बनै छै, रंग पट्टी सजै / हाट मोल घटै छै, छोर सिक्की जुड़ैए
कारीगर हाथ गढ़ै छै, घर कोना चमकै / श्रम मान बढ़ै छै, डलिया घेर बढ़ै
धूप तिनका मुड़ै छै, हाट मोल जँचै / सिक्की रेशा जुड़ै छै, कोर सिक्की जुड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९०४ — संगीतमय रूप

भाव: सूक्ष्म रेशा, घेर, श्रम, उपयोग आ सौन्दर्यक संगति। सिक्की शिल्पक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: झपताल १० मात्रा। सिक्की शिल्पक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘सिक्की जुड़ैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, विरल तबला। सिक्की शिल्पक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: सिक्की शिल्पक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: सिक्की शिल्पक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: सिक्की शिल्पक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: सिक्की शिल्पक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: सिक्की शिल्पक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: सिक्की शिल्पक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। सिक्की शिल्पक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; श्रोताक मोनमे प्रश्न बचा छोड़ए।

गजल ९०५ — पाखी खेल उठै, गीत सामा गबैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास) · रदीफ: सामा गबैए · शेर: ६

सामा मूर्ति सजै छै, आँगन गोल बनै / माटि रंग बदलै छै, आस सामा गबैए
चकेवा पाँखि उठै छै, साँझ दीप नमै / लोक कथा जगै छै, विश्वास सामा गबैए
बहिन गीत गुँजै छै, माटि रंग चढ़ै / नेह डोर तनै छै, चकेवा पाँखि डोलै
आँगन गोल जुटै छै, लोक कथा खुलै / सामा मूर्ति रहै छै, प्रयास सामा गबैए
साँझ दीप चमकै छै, नेह डोर बचै / चकेवा पाँखि फैलै छै, आँगन गोल बनै
माटि रंग बदलै छै, सामा मूर्ति सजै / बहिन गीत मिलै छै, उल्लास सामा गबैए
लोक कथा जगै छै, चकेवा पाँखि उठै / आँगन गोल रहै छै, माटि रंग चढ़ै
नेह डोर तनै छै, बहिन गीत गुँजै / साँझ दीप जरै छै, प्यास सामा गबैए
सामा मूर्ति रहै छै, आँगन गोल जुटै / माटि रंग फैलै छै, नेह डोर बचै
चकेवा पाँखि फैलै छै, साँझ दीप चमकै / लोक कथा बढ़ै छै, आभास सामा गबैए
बहिन गीत मिलै छै, माटि रंग बदलै / नेह डोर जुड़ै छै, चकेवा पाँखि उठै
आँगन गोल रहै छै, लोक कथा जगै / सामा मूर्ति बनै छै, श्वास सामा गबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९०५ — संगीतमय रूप

भाव: भाइ-बहिनक नेह, लोककथा, माटि-मूर्ति आ साँझक सामूहिक गीत। सामा-चकेवाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। सामा-चकेवाक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘सामा गबैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु ढोलक। सामा-चकेवाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: सामा-चकेवाक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: सामा-चकेवाक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।

३म शेर: सामा-चकेवाक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: सामा-चकेवाक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: सामा-चकेवाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।

६म शेर: सामा-चकेवाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। सामा-चकेवाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; ध्वनिक पाछाँ बिम्ब थिर करए।

गजल ९०६ — व्रत कथा खुलै, स्वर कथा गुँजैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम) · रदीफ: कथा गुँजैए · शेर: ६

मधु कथा खुलै छै, फूल गन्ध फैलै / व्रत स्मृति घुरै छै, नाम कथा गुँजैए
श्रावण मेघ सरै छै, आँगन रीत बदलै / बरखा बूँद पड़ै छै, धाम कथा गुँजैए
सखी स्वर बजै छै, व्रत स्मृति जगै / नव दाम्पत्य जुड़ै छै, श्रावण मेघ घेरै
फूल गन्ध उठै छै, बरखा बूँद चमकै / मधु कथा जगै छै, ग्राम कथा गुँजैए
आँगन रीत बचै छै, नव दाम्पत्य पकै / श्रावण मेघ जुटै छै, फूल गन्ध फैलै
व्रत स्मृति घुरै छै, मधु कथा खुलै / सखी स्वर मिलै छै, विराम कथा गुँजैए
बरखा बूँद पड़ै छै, श्रावण मेघ सरै / फूल गन्ध रहै छै, व्रत स्मृति जगै
नव दाम्पत्य जुड़ै छै, सखी स्वर बजै / आँगन रीत चलै छै, प्रणाम कथा गुँजैए
मधु कथा जगै छै, फूल गन्ध उठै / व्रत स्मृति बचै छै, नव दाम्पत्य पकै
श्रावण मेघ जुटै छै, आँगन रीत बचै / बरखा बूँद बहै छै, परिणाम कथा गुँजैए
सखी स्वर मिलै छै, व्रत स्मृति घुरै / नव दाम्पत्य बढ़ै छै, श्रावण मेघ सरै
फूल गन्ध रहै छै, बरखा बूँद पड़ै / मधु कथा बढ़ै छै, आयाम कथा गुँजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९०६ — संगीतमय रूप

भाव: बरखा, कथा, सखी-स्वर, दाम्पत्य आ परम्पराक पुनर्पाठ। मधुश्रावणीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ३४–३८ · ताल: एकताल १२ मात्रा। मधुश्रावणीक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'कथा गुँजैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, हलुक पखावज। मधुश्रावणीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: मधुश्रावणीक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: मधुश्रावणीक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।

३म शेर: मधुश्रावणीक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: मधुश्रावणीक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: मधुश्रावणीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।

६म शेर: मधुश्रावणीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मधुश्रावणीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अवसानकेँ कोमल राखि अर्थ बहए।

गजल ९०७ — आँगन रेखा खुलै, चाव अरिपन खिलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल) · रदीफ: अरिपन खिलैए · शेर: ६

आँगन माटि नमै छै, कमल आकृति खुलै / पूजा ठाम जगै छै, चाल अरिपन खिलैए
चाउर घोल गाढ़ै छै, द्वार चिन्ह मिलै / बालक आँखि तकै छै, ताल अरिपन खिलैए
अँगुरी रेखा जुड़ै छै, पूजा ठाम सजै / लोक स्मृति बचै छै, चाउर घोल बहै
कमल आकृति उभरै छै, बालक आँखि चमकै / आँगन माटि रहै छै, काल अरिपन खिलैए
द्वार चिन्ह बचै छै, लोक स्मृति घुरै / चाउर घोल मिलै छै, कमल आकृति खुलै
पूजा ठाम जगै छै, आँगन माटि नमै / अँगुरी रेखा मुड़ै छै, जाल अरिपन खिलैए
बालक आँखि तकै छै, चाउर घोल गाढ़ै / कमल आकृति बदलै छै, पूजा ठाम सजै
लोक स्मृति बचै छै, अँगुरी रेखा जुड़ै / द्वार चिन्ह दिसै छै, पाल अरिपन खिलैए
आँगन माटि रहै छै, कमल आकृति उभरै / पूजा ठाम रहै छै, लोक स्मृति घुरै
चाउर घोल मिलै छै, द्वार चिन्ह बचै / बालक आँखि खुलै छै, ढाल अरिपन खिलैए
अँगुरी रेखा मुड़ै छै, पूजा ठाम जगै / लोक स्मृति जगै छै, चाउर घोल गाढ़ै
कमल आकृति बदलै छै, बालक आँखि तकै / आँगन माटि सजै छै, विशाल अरिपन खिलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९०७ — संगीतमय रूप

भाव: रेखा, चाउर-घोल, देहरी, स्मृति आ क्षणभंगुर सौन्दर्य। अरिपनक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। अरिपनक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'अरिपन खिलैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। अरिपनक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: अरिपनक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: अरिपनक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: अरिपनक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: अरिपनक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: अरिपनक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: अरिपनक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अरिपनक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम शब्द पाछाँ क्षणभर मौन रहए।

गजल ९०८ — भोर गन्ध उठै, आस मंजर महकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाव (भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव) · रदीफ: मंजर महकैए · शेर: ६

आम मंजर महकै छै, गाछ डारि नमै / किसान दृष्टि रहै छै, भाव मंजर महकैए
भोर पवन सरै छै, मधुमाछि झुण्ड गुँजै / ऋतु चाल बदलै छै, चाव मंजर महकैए
मधु गन्ध रहै छै, किसान दृष्टि तकै / फल आस बढ़ै छै, भोर पवन चलै
गाछ डारि डोलै छै, ऋतु चाल चलै / आम मंजर झरै छै, ठाव मंजर महकैए
मधुमाछि झुण्ड जुटै छै, फल आस बचै / भोर पवन बहै छै, गाछ डारि नमै
किसान दृष्टि रहै छै, आम मंजर महकै / मधु गन्ध फैलै छै, दाव मंजर महकैए
ऋतु चाल बदलै छै, भोर पवन सरै / गाछ डारि फैलै छै, किसान दृष्टि तकै
फल आस बढ़ै छै, मधु गन्ध रहै / मधुमाछि झुण्ड उड़ै छै, नाव मंजर महकैए
आम मंजर झरै छै, गाछ डारि डोलै / किसान दृष्टि फिरै छै, फल आस बचै
भोर पवन बहै छै, मधुमाछि झुण्ड जुटै / ऋतु चाल मुड़ै छै, घाव मंजर महकैए
मधु गन्ध फैलै छै, किसान दृष्टि रहै / फल आस जगै छै, भोर पवन सरै
गाछ डारि फैलै छै, ऋतु चाल बदलै / आम मंजर डोलै छै, अभाव मंजर महकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९०८ — संगीतमय रूप

भाव: ऋतु, सुगन्ध, पराग, प्रतीक्षा आ फल-आशाक सूक्ष्म आरम्भ। आमक मंजरक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ३८–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। आमक मंजरक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'मंजर महकैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सुरमंडल, मृदु तबला। आमक मंजरक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: आमक मंजरक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: आमक मंजरक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।

३म शेर: आमक मंजरक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: आमक मंजरक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: आमक मंजरक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।

६म शेर: आमक मंजरक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। आमक मंजरक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; मुदा अर्थक डोर नहि टूटए।

गजल ९०९ — पीयर खेत डोलै, प्रीत सरसों हँसैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, अंग, ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग) · रदीफ: सरसों हँसैए · शेर: ६

सरसों फूल डोलै छै, किसान पएर रुकै / पवन लहर डोलै छै, रंग सरसों हँसैए
पीयर खेत चमकै छै, माटि गन्ध फैलै / दूर गाम दिसै छै, संग सरसों हँसैए
भोर ओस सूखै छै, पवन लहर उठै / मन चाव बढ़ै छै, पीयर खेत दिसै
किसान पएर चलै छै, दूर गाम जुड़ै / सरसों फूल नमै छै, अंग सरसों हँसैए
माटि गन्ध रहै छै, मन चाव रहै / पीयर खेत फैलै छै, किसान पएर रुकै
पवन लहर डोलै छै, सरसों फूल डोलै / भोर ओस चमकै छै, ढंग सरसों हँसैए
दूर गाम दिसै छै, पीयर खेत चमकै / किसान पएर मुड़ै छै, पवन लहर उठै
मन चाव बढ़ै छै, भोर ओस सूखै / माटि गन्ध उठै छै, उमंग सरसों हँसैए
सरसों फूल नमै छै, किसान पएर चलै / पवन लहर सरै छै, मन चाव रहै
पीयर खेत फैलै छै, माटि गन्ध रहै / दूर गाम बदलै छै, प्रसंग सरसों हँसैए
भोर ओस चमकै छै, पवन लहर डोलै / मन चाव जगै छै, पीयर खेत चमकै
किसान पएर मुड़ै छै, दूर गाम दिसै / सरसों फूल खिलै छै, तरंग सरसों हँसैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९०९ — संगीतमय रूप

भाव: पीयर विस्तार, ओस, पवन, श्रम आ दूर धरि खुलैत चाव। सरसोंक खेतक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४०–४६ · ताल: झपताल १० मात्रा। सरसोंक खेतक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘सरसों हँसैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, हलुक खँजरी। सरसोंक खेतक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: सरसोंक खेतक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: सरसोंक खेतक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।

३म शेर: सरसोंक खेतक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: सरसोंक खेतक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: सरसोंक खेतक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।

६म शेर: सरसोंक खेतक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। सरसोंक खेतक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; समापनमे बिम्ब फेर भीतर घुरए।

गजल ९१० — गरमी घटै, श्वास पंखा डोलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार) · रदीफ: पंखा डोलैए · शेर: ६

ताड़ पात सूखै छै, देह श्वास सम्हरै / पुरखा कला बदलै छै, सार पंखा डोलैए
हाथ पंखा चलै छै, घर कोना सजै / पवन लहर उठै छै, पार पंखा डोलैए
दुपहर ताप पड़ै छै, पुरखा कला बचै / आराम क्षण रहै छै, हाथ पंखा रुकै
देह श्वास चलै छै, पवन लहर सरै / ताड़ पात डोलै छै, धार पंखा डोलैए
घर कोना खुलै छै, आराम क्षण सरै / हाथ पंखा डोलै छै, देह श्वास सम्हरै
पुरखा कला बदलै छै, ताड़ पात सूखै / दुपहर ताप घटै छै, विचार पंखा डोलैए
पवन लहर उठै छै, हाथ पंखा चलै / देह श्वास बढ़ै छै, पुरखा कला बचै
आराम क्षण रहै छै, दुपहर ताप पड़ै / घर कोना रहै छै, आधार पंखा डोलैए
ताड़ पात डोलै छै, देह श्वास चलै / पुरखा कला चलै छै, आराम क्षण सरै
हाथ पंखा डोलै छै, घर कोना खुलै / पवन लहर मिलै छै, व्यवहार पंखा डोलैए
दुपहर ताप घटै छै, पुरखा कला बदलै / आराम क्षण मिलै छै, हाथ पंखा चलै
देह श्वास बढ़ै छै, पवन लहर उठै / ताड़ पात मुड़ै छै, पुकार पंखा डोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९१० — संगीतमय रूप

भाव: हाथक लय, दुपहरिया ताप, पवन आ साधारण औजारक बुद्धि। ताड़-पातक पंखाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। ताड़-पातक पंखाक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'पंखा डोलैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, विरल तबला। ताड़-पातक पंखाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: ताड़-पातक पंखाक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: ताड़-पातक पंखाक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: ताड़-पातक पंखाक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: ताड़-पातक पंखाक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: ताड़-पातक पंखाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: ताड़-पातक पंखाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ताड़-पातक पंखाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; मौनमे ओकर कम्पन छोड़ए।

गजल ९११ — माटि पकै, ताल घड़ा झनकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान) · रदीफ: घड़ा झनकैए · शेर: ६

कुम्हार माटि नमै छै, नीर शीत रहै / हाथ थाप उठै छै, मान घड़ा झनकैए
घड़ा देह सूखै छै, ओंठ घेर रहै / घर प्यास जगै छै, ज्ञान घड़ा झनकैए
भट्ठी ताप पड़ै छै, हाथ थाप पड़ै / माटि सोर बजै छै, घड़ा देह रहै
नीर शीत उतरै छै, घर प्यास घटै / कुम्हार माटि पकै छै, ध्यान घड़ा झनकैए
ओंठ घेर खुलै छै, माटि सोर मिलै / घड़ा देह बनै छै, नीर शीत रहै
हाथ थाप उठै छै, कुम्हार माटि नमै / भट्ठी ताप घटै छै, विधान घड़ा झनकैए
घर प्यास जगै छै, घड़ा देह सूखै / नीर शीत बढ़ै छै, हाथ थाप पड़ै
माटि सोर बजै छै, भट्ठी ताप पड़ै / ओंठ घेर बनै छै, अनुमान घड़ा झनकैए
कुम्हार माटि पकै छै, नीर शीत उतरै / हाथ थाप मिलै छै, माटि सोर मिलै
घड़ा देह बनै छै, ओंठ घेर खुलै / घर प्यास बढ़ै छै, पहिचान घड़ा झनकैए
भट्ठी ताप घटै छै, हाथ थाप उठै / माटि सोर उठै छै, घड़ा देह सूखै
नीर शीत बढ़ै छै, घर प्यास जगै / कुम्हार माटि गढ़ै छै, सम्मान घड़ा झनकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९११ — संगीतमय रूप

भाव: माटि, आग, नीर, प्यास आ उपयोगक बीच रूप धारण करैत पात्र। माटिक घड़ाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। माटिक घड़ाक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'घड़ा झनकैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज। माटिक घड़ाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: माटिक घड़ाक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: माटिक घड़ाक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: माटिक घड़ाक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: माटिक घड़ाक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: माटिक घड़ाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: माटिक घड़ाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। माटिक घड़ाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अगिला श्वासमे अर्थ खोलए।

गजल ९१२ — कपड़ा फाटै, नेह सुई सिऐए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत) · रदीफ: सुई सिऐए · शेर: ६

सुई नोक चमकै छै, हाथ चाल रुकै / नव टाँक बढ़ै छै, प्रीत सुई सिऐए
धागा डोर जुड़ै छै, पुरान फाट बचै / घर काज चलै छै, रीत सुई सिऐए
कपड़ा घाव सिऐ छै, नव टाँक पड़ै / मोन धैर्य बचै छै, धागा डोर बचै
हाथ चाल चलै छै, घर काज बढ़ै / सुई नोक चलै छै, गीत सुई सिऐए
पुरान फाट घटै छै, मोन धैर्य रहै / धागा डोर तनै छै, हाथ चाल रुकै
नव टाँक बढ़ै छै, सुई नोक चमकै / कपड़ा घाव घटै छै, मीत सुई सिऐए
घर काज चलै छै, धागा डोर जुड़ै / हाथ चाल मुड़ै छै, नव टाँक पड़ै
मोन धैर्य बचै छै, कपड़ा घाव सिऐ / पुरान फाट दिसै छै, जीत सुई सिऐए
सुई नोक चलै छै, हाथ चाल चलै / नव टाँक जुड़ै छै, मोन धैर्य रहै
धागा डोर तनै छै, पुरान फाट घटै / घर काज रहै छै, अतीत सुई सिऐए
कपड़ा घाव घटै छै, नव टाँक बढ़ै / मोन धैर्य बढ़ै छै, धागा डोर जुड़ै
हाथ चाल मुड़ै छै, घर काज चलै / सुई नोक घुसै छै, संगीत सुई सिऐए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९१२ — संगीतमय रूप

भाव: फाटल कपड़ा, टाँक, धैर्य आ मरम्मतिक सूक्ष्म नैतिकता। सुई-धागाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। सुई-धागाक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'सुई सिऔए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, हलुक मँजीरा। सुई-धागाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: सुई-धागाक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: सुई-धागाक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।

३म शेर: सुई-धागाक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: सुई-धागाक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: सुई-धागाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।

६म शेर: सुई-धागाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। सुई-धागाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम स्वरकेँ धीरे विराम दए।

गजल ९१३ — डारि हिलै, चाव झूला डोलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर) · रदीफ: झूला डोलैए · शेर: ६

आम डारि डोलै छै, पवन झोंका बहै / आँगन सोर बजै छै, नोर झूला डोलैए
झूला रस्सी डोलै छै, साँझ रंग ढलै / माय दृष्टि तकै छै, सोर झूला डोलैए
बालक हँसी मिलै छै, आँगन सोर उठै / समय चाल सरै छै, झूला रस्सी रहै
पवन झोंका उठै छै, माय दृष्टि फिरै / आम डारि हिलै छै, डोर झूला डोलैए
साँझ रंग फैलै छै, समय चाल बदलै / झूला रस्सी तनै छै, पवन झोंका बहै
आँगन सोर बजै छै, आम डारि डोलै / बालक हँसी फैलै छै, भोर झूला डोलैए
माय दृष्टि तकै छै, झूला रस्सी डोलै / पवन झोंका सरै छै, आँगन सोर उठै
समय चाल सरै छै, बालक हँसी मिलै / साँझ रंग बदलै छै, जोर झूला डोलैए
आम डारि हिलै छै, पवन झोंका उठै / आँगन सोर मिलै छै, समय चाल बदलै
झूला रस्सी तनै छै, साँझ रंग फैलै / माय दृष्टि रहै छै, छोर झूला डोलैए
बालक हँसी फैलै छै, आँगन सोर बजै / समय चाल चलै छै, झूला रस्सी डोलै
पवन झोंका सरै छै, माय दृष्टि तकै / आम डारि नमै छै, कोर झूला डोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९१३ — संगीतमय रूप

भाव: बाल-हँसी, रस्सी, पवन, निगरानी आ समयक आगे-पाछाँ डोल। गाछक झूलाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: झपताल १० मात्रा। गाछक झूलाक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'झूला डोलैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, विरल तबला। गाछक झूलाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: गाछक झूलाक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: गाछक झूलाक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।

३म शेर: गाछक झूलाक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: गाछक झूलाक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: गाछक झूलाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।

६म शेर: गाछक झूलाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। गाछक झूलाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; श्रोताक मोनमे प्रश्न बचा छोड़ए।

गजल ११४ — पुरान नीर चमकै, भोर कुण्ड चमकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास) · रदीफ: कुण्ड चमकैए · शेर: ६

पुरान कुण्ड रहै छै, भोर किरण फैलै / पूजा फूल झरै छै, आस कुण्ड चमकैए
पाथर सीढ़ी चढ़ै छै, लोक पएर रुकै / काल दाग पड़ै छै, विश्वास कुण्ड चमकैए
नीर छवि दिसै छै, पूजा फूल तैरै / स्मृति कोर बचै छै, पाथर सीढ़ी घिसै
भोर किरण पड़ै छै, काल दाग बढ़ै / पुरान कुण्ड दिसै छै, प्रयास कुण्ड चमकैए
लोक पएर उतरै छै, स्मृति कोर खुलै / पाथर सीढ़ी उतरै छै, भोर किरण फैलै
पूजा फूल झरै छै, पुरान कुण्ड रहै / नीर छवि बदलै छै, उल्लास कुण्ड चमकैए
काल दाग पड़ै छै, पाथर सीढ़ी चढ़ै / भोर किरण चमकै छै, पूजा फूल तैरै
स्मृति कोर बचै छै, नीर छवि दिसै / लोक पएर चलै छै, प्यास कुण्ड चमकैए
पुरान कुण्ड दिसै छै, भोर किरण पड़ै / पूजा फूल डोलै छै, स्मृति कोर खुलै
पाथर सीढ़ी उतरै छै, लोक पएर उतरै / काल दाग रहै छै, आभास कुण्ड चमकैए
नीर छवि बदलै छै, पूजा फूल झरै / स्मृति कोर जगै छै, पाथर सीढ़ी चढ़ै
भोर किरण चमकै छै, काल दाग पड़ै / पुरान कुण्ड खुलै छै, श्वास कुण्ड चमकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९१४ — संगीतमय रूप

भाव: जल, पाथर, लोक-आगमन, क्षरण आ स्मृतिक दीर्घ सतह। पुरान कुण्डक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। पुरान कुण्डक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘कुण्ड चमकैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु ढोलक। पुरान कुण्डक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: पुरान कुण्डक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: पुरान कुण्डक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।

३म शेर: पुरान कुण्डक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: पुरान कुण्डक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: पुरान कुण्डक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।

६म शेर: पुरान कुण्डक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पुरान कुण्डक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; ध्वनिक पाछाँ बिम्ब थिर करए।

गजल ९१५ — माथ सजै, मान पाग दमकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम) · रदीफ: पाग दमकैए · शेर: ६

मिथिला पाग सजै छै, सभा दृष्टि फिरै / व्यक्ति चाल बदलै छै, नाम पाग दमकैए
माथ मान बचै छै, परम्परा रीत चलै / सम्मान भाव जगै छै, धाम पाग दमकैए
कपड़ा घेर रहै छै, व्यक्ति चाल चलै / समय रूप दिसै छै, माथ मान जगै
सभा दृष्टि तकै छै, सम्मान भाव बढ़ै / मिथिला पाग रहै छै, ग्राम पाग दमकैए
परम्परा रीत बदलै छै, समय रूप रहै / माथ मान बढ़ै छै, सभा दृष्टि फिरै
व्यक्ति चाल बदलै छै, मिथिला पाग सजै / कपड़ा घेर बनै छै, विराम पाग दमकैए
सम्मान भाव जगै छै, माथ मान बचै / सभा दृष्टि मिलै छै, व्यक्ति चाल चलै
समय रूप दिसै छै, कपड़ा घेर रहै / परम्परा रीत बचै छै, प्रणाम पाग दमकैए
मिथिला पाग रहै छै, सभा दृष्टि तकै / व्यक्ति चाल नमै छै, समय रूप रहै
माथ मान बढ़ै छै, परम्परा रीत बदलै / सम्मान भाव रहै छै, परिणाम पाग दमकैए
कपड़ा घेर बनै छै, व्यक्ति चाल बदलै / समय रूप बदलै छै, माथ मान बचै
सभा दृष्टि मिलै छै, सम्मान भाव जगै / मिथिला पाग दमकै छै, आयाम पाग दमकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९१५ — संगीतमय रूप

भाव: मान, पहचान, परम्परा आ समय संग बदलैत सार्वजनिक प्रतीक। मिथिला पागक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: एकताल १२ मात्रा। मिथिला पागक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'पाग दमकैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, हलुक पखावज। मिथिला पागक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: मिथिला पागक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: मिथिला पागक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: मिथिला पागक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: मिथिला पागक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: मिथिला पागक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: मिथिला पागक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मिथिला पागक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अवसानकेँ कोमल राखि अर्थ बहए।

गजल ९१६ — भोर थारी सजै, प्रीत भोज सजैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल) · रदीफ: भोज सजैए · शेर: ६

चूड़ा दाना मिलै छै, भोर थारी भरै / नेह बात बढ़ै छै, चाल भोज सजैए
दही कटोरी सजै छै, घर लोक हँसै / सादा स्वाद मिलै छै, ताल भोज सजैए
गुड़ टुकड़ा घुलै छै, नेह बात उठै / साझा भोजन बढ़ै छै, दही कटोरी रहै
भोर थारी सजै छै, सादा स्वाद जगै / चूड़ा दाना रहै छै, काल भोज सजैए
घर लोक बैसै छै, साझा भोजन चलै / दही कटोरी भरै छै, भोर थारी भरै
नेह बात बढ़ै छै, चूड़ा दाना मिलै / गुड़ टुकड़ा मिलै छै, जाल भोज सजैए
सादा स्वाद मिलै छै, दही कटोरी सजै / भोर थारी चमकै छै, नेह बात उठै
साझा भोजन बढ़ै छै, गुड़ टुकड़ा घुलै / घर लोक जुटै छै, पाल भोज सजैए
चूड़ा दाना रहै छै, भोर थारी सजै / नेह बात खुलै छै, साझा भोजन चलै
दही कटोरी भरै छै, घर लोक बैसै / सादा स्वाद रहै छै, ढाल भोज सजैए
गुड़ टुकड़ा मिलै छै, नेह बात बढ़ै / साझा भोजन जुड़ै छै, दही कटोरी सजै
भोर थारी चमकै छै, सादा स्वाद मिलै / चूड़ा दाना नमै छै, विशाल भोज सजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९१६ — संगीतमय रूप

भाव: सादा भोजन, साझा थारी, घरेलू नेह आ स्वादक सामाजिक अर्थ। चूड़ा-दहीक भोरक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। चूड़ा-दहीक भोरक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘भोज सजैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। चूड़ा-दहीक भोरक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: चूड़ा-दहीक भोरक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: चूड़ा-दहीक भोरक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: चूड़ा-दहीक भोरक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: चूड़ा-दहीक भोरक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: चूड़ा-दहीक भोरक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: चूड़ा-दहीक भोरक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। चूड़ा-दहीक भोरक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम शब्द पाछाँ क्षणभर मौन रहए।

गजल ११७ — कागज देह जरै, आस लालटेन जरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाव (भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव) · रदीफ: लालटेन जरैए · शेर: ६

कागज देह तनै छै, बालक आँखि चमकै / पवन झोंका सरै छै, भाव लालटेन जरैए
लालटेन दीप चमकै छै, हाथ डोर छोड़ै / आकाश ठाम खुलै छै, चाव लालटेन जरैए
साँझ अन्हार पड़ै छै, पवन झोंका उठै / उत्सव चाव बढ़ै छै, लालटेन दीप नमै
बालक आँखि तकै छै, आकाश ठाम फैलै / कागज देह जरै छै, ठाव लालटेन जरैए
हाथ डोर तनै छै, उत्सव चाव मिलै / लालटेन दीप जरै छै, बालक आँखि चमकै
पवन झोंका सरै छै, कागज देह तनै / साँझ अन्हार घटै छै, दाव लालटेन जरैए
आकाश ठाम खुलै छै, लालटेन दीप चमकै / बालक आँखि खुलै छै, पवन झोंका उठै
उत्सव चाव बढ़ै छै, साँझ अन्हार पड़ै / हाथ डोर धरै छै, नाव लालटेन जरैए
कागज देह जरै छै, बालक आँखि तकै / पवन झोंका बहै छै, उत्सव चाव मिलै
लालटेन दीप जरै छै, हाथ डोर तनै / आकाश ठाम रहै छै, घाव लालटेन जरैए
साँझ अन्हार घटै छै, पवन झोंका सरै / उत्सव चाव जगै छै, लालटेन दीप चमकै
बालक आँखि खुलै छै, आकाश ठाम खुलै / कागज देह मुड़ै छै, अभाव लालटेन जरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९१७ — संगीतमय रूप

भाव: नाजुक कागज, दीप, पवन, उत्सव आ सावधानीक चमक। कागजक लालटेनक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३८–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। कागजक लालटेनक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘लालटेन जरैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सुरमंडल, मृदु तबला। कागजक लालटेनक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: कागजक लालटेनक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: कागजक लालटेनक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: कागजक लालटेनक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: कागजक लालटेनक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: कागजक लालटेनक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: कागजक लालटेनक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। कागजक लालटेनक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; मुदा अर्थक डोर नहि टूटए।

गजल ११८ — अन्हार घनै, आस जुगनू चमकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, अंग, ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग) · रदीफ: जुगनू चमकैए · शेर: ६

जुगनू देह चमकै छै, बालक आँखि खुलै / क्षण दीप चमकै छै, रंग जुगनू चमकैए
राति अन्हार बढ़ै छै, वन बाट खुलै / मौन सोर रहै छै, संग जुगनू चमकैए
घास कोर चमकै छै, क्षण दीप जगै / आस बिन्दु बढ़ै छै, राति अन्हार सरै
बालक आँखि तकै छै, मौन सोर उठै / जुगनू देह रहै छै, अंग जुगनू चमकैए
वन बाट नुकै छै, आस बिन्दु बचै / राति अन्हार घनै छै, बालक आँखि खुलै
क्षण दीप चमकै छै, जुगनू देह चमकै / घास कोर नमै छै, ढंग जुगनू चमकैए
मौन सोर रहै छै, राति अन्हार बढ़ै / बालक आँखि चमकै छै, क्षण दीप जगै
आस बिन्दु बढ़ै छै, घास कोर चमकै / वन बाट दिसै छै, उमंग जुगनू चमकैए
जुगनू देह रहै छै, बालक आँखि तकै / क्षण दीप बुझै छै, आस बिन्दु बचै
राति अन्हार घनै छै, वन बाट नुकै / मौन सोर मिलै छै, प्रसंग जुगनू चमकैए
घास कोर नमै छै, क्षण दीप चमकै / आस बिन्दु जगै छै, राति अन्हार बढ़ै
बालक आँखि चमकै छै, मौन सोर रहै / जुगनू देह उड़ै छै, तरंग जुगनू चमकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९१८ — संगीतमय रूप

भाव: अन्हारक बीच छोट प्रकाश, क्षणिकता आ दिशाबोधक सूक्ष्म बिम्ब। जुगनूक रातिक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४०–४६ · ताल: झपताल १० मात्रा। जुगनूक रातिक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘जुगनू चमकैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, हलुक खँजरी। जुगनूक रातिक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: जुगनूक रातिक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: जुगनूक रातिक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: जुगनूक रातिक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: जुगनूक रातिक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: जुगनूक रातिक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: जुगनूक रातिक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। जुगनूक रातिक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; समापनमे बिम्ब फेर भीतर घुरए।

गजल ९१९ — फूल झरै, नोर मौलश्री झरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार) · रदीफ: मौलश्री झरैए · शेर: ६

मौलश्री फूल महकै छै, पात छाह सरै / याद कोर खुलै छै, सार मौलश्री झरैए
भोर आँगन जगै छै, पुरान गाछ नमै / ऋतु चाल बदलै छै, पार मौलश्री झरैए
पवन गन्ध रहै छै, याद कोर जगै / मोन नोर घटै छै, भोर आँगन सजै
पात छाह पड़ै छै, ऋतु चाल चलै / मौलश्री फूल डोलै छै, धार मौलश्री झरैए
पुरान गाछ बढ़ै छै, मोन नोर रहै / भोर आँगन भरै छै, पात छाह सरै
याद कोर खुलै छै, मौलश्री फूल महकै / पवन गन्ध फैलै छै, विचार मौलश्री झरैए
ऋतु चाल बदलै छै, भोर आँगन जगै / पात छाह डोलै छै, याद कोर जगै
मोन नोर घटै छै, पवन गन्ध रहै / पुरान गाछ रहै छै, आधार मौलश्री झरैए
मौलश्री फूल डोलै छै, पात छाह पड़ै / याद कोर बचै छै, मोन नोर रहै
भोर आँगन भरै छै, पुरान गाछ बढ़ै / ऋतु चाल मुड़ै छै, व्यवहार मौलश्री झरैए
पवन गन्ध फैलै छै, याद कोर खुलै / मोन नोर उठै छै, भोर आँगन जगै
पात छाह डोलै छै, ऋतु चाल बदलै / मौलश्री फूल झरै छै, पुकार मौलश्री झरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९१९ — संगीतमय रूप

भाव: सुगन्ध, झरनाइ, ऋतु, पुरान गाछ आ स्मृतिक कोमल क्षय। मौलश्रीक फूलक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। मौलश्रीक फूलक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'मौलश्री झरैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, विरल तबला। मौलश्रीक फूलक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: मौलश्रीक फूलक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: मौलश्रीक फूलक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: मौलश्रीक फूलक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: मौलश्रीक फूलक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: मौलश्रीक फूलक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: मौलश्रीक फूलक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। मौलश्रीक फूलक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; मौनमे ओकर कम्पन छोड़ए।

गजल १२० — पाथर बाट बजै, ताल खड़ाऊँ बजैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान) · रदीफ: खड़ाऊँ बजैए · शेर: ६

काठ खड़ाऊँ बजै छै, मन्दिर द्वार रहै / काठ घाव घटै छै, मान खड़ाऊँ बजैए
पाथर बाट घिसै छै, भोर सोर बजै / समय चिह्न दिसै छै, ज्ञान खड़ाऊँ बजैए
यात्री पएर रुकै छै, काठ घाव दिसै / यात्रा रीत बदलै छै, पाथर बाट खुलै
मन्दिर द्वार खुलै छै, समय चिह्न मिटै / काठ खड़ाऊँ रुकै छै, ध्यान खड़ाऊँ बजैए
भोर सोर मिलै छै, यात्रा रीत बचै / पाथर बाट दिसै छै, मन्दिर द्वार रहै
काठ घाव घटै छै, काठ खड़ाऊँ बजै / यात्री पएर नमै छै, विधान खड़ाऊँ बजैए
समय चिह्न दिसै छै, पाथर बाट घिसै / मन्दिर द्वार मिलै छै, काठ घाव दिसै
यात्रा रीत बदलै छै, यात्री पएर रुकै / भोर सोर उठै छै, अनुमान खड़ाऊँ बजैए
काठ खड़ाऊँ रुकै छै, मन्दिर द्वार खुलै / काठ घाव बढ़ै छै, यात्रा रीत बचै
पाथर बाट दिसै छै, भोर सोर मिलै / समय चिह्न बचै छै, पहिचान खड़ाऊँ बजैए
यात्री पएर नमै छै, काठ घाव घटै / यात्रा रीत चलै छै, पाथर बाट घिसै
मन्दिर द्वार मिलै छै, समय चिह्न दिसै / काठ खड़ाऊँ चलै छै, सम्मान खड़ाऊँ बजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९२० — संगीतमय रूप

भाव: पएर, काठ, ध्वनि, घिसावट आ साधारण यात्राक इतिहास। काठक खड़ाऊँक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। काठक खड़ाऊँक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'खड़ाऊँ बजैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज। काठक खड़ाऊँक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: काठक खड़ाऊँक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: काठक खड़ाऊँक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।

३म शेर: काठक खड़ाऊँक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: काठक खड़ाऊँक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: काठक खड़ाऊँक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।

६म शेर: काठक खड़ाऊँक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। काठक खड़ाऊँक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अगिला श्वासमे अर्थ खोलए।

गजल ९२१ — ओस पड़ै, भोर जाल चमकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत) · रदीफ: जाल चमकैए · शेर: ६

मकड़ी जाल तनै छै, घास डारि नमै / पवन झोंका सरै छै, प्रीत जाल चमकैए
भोर ओस चमकै छै, सूक्ष्म रेखा टूटै / क्षण छवि दिसै छै, रीत जाल चमकैए
सूरज किरण चमकै छै, पवन झोंका उठै / मोन ध्यान बढ़ै छै, भोर ओस सूखै
घास डारि डोलै छै, क्षण छवि बदलै / मकड़ी जाल डोलै छै, गीत जाल चमकैए
सूक्ष्म रेखा जुड़ै छै, मोन ध्यान रहै / भोर ओस पड़ै छै, घास डारि नमै
पवन झोंका सरै छै, मकड़ी जाल तनै / सूरज किरण फैलै छै, मीत जाल चमकैए
क्षण छवि दिसै छै, भोर ओस चमकै / घास डारि रहै छै, पवन झोंका उठै
मोन ध्यान बढ़ै छै, सूरज किरण चमकै / सूक्ष्म रेखा दिसै छै, जीत जाल चमकैए
मकड़ी जाल डोलै छै, घास डारि डोलै / पवन झोंका बहै छै, मोन ध्यान रहै
भोर ओस पड़ै छै, सूक्ष्म रेखा जुड़ै / क्षण छवि मिटै छै, अतीत जाल चमकैए
सूरज किरण फैलै छै, पवन झोंका सरै / मोन ध्यान जगै छै, भोर ओस चमकै
घास डारि रहै छै, क्षण छवि दिसै / मकड़ी जाल जुड़ै छै, संगीत जाल चमकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९२१ — संगीतमय रूप

भाव: सूक्ष्म रेखा, ओस, प्रकाश, नाजुकता आ क्षणिक संरचनाक बोध। ओस-भीजल मकड़ी-जालक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। ओस-भीजल मकड़ी-जालक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'जाल चमकैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, हलुक मँजीरा। ओस-भीजल मकड़ी-जालक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: ओस-भीजल मकड़ी-जालक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: ओस-भीजल मकड़ी-जालक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: ओस-भीजल मकड़ी-जालक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: ओस-भीजल मकड़ी-जालक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: ओस-भीजल मकड़ी-जालक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: ओस-भीजल मकड़ी-जालक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ओस-भीजल मकड़ी-जालक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम स्वरकेँ धीरे विराम दए।

गजल १२२ — धान रोपै, गीत रोपनी गबैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर) · रदीफ: रोपनी गबैए · शेर: ६

धान रोपनी चलै छै, हाथ पौधा रोपै / मेघ छाह घेरै छै, नोर रोपनी गबैए
खेत नीर डोलै छै, पएर माटि नमै / श्रम ताल बजै छै, सोर रोपनी गबैए
लोक स्वर गुँजै छै, मेघ छाह पड़ै / फसल आस बढ़ै छै, खेत नीर सरै
हाथ पौधा धरै छै, श्रम ताल मिलै / धान रोपनी फैलै छै, डोर रोपनी गबैए
पएर माटि चलै छै, फसल आस बचै / खेत नीर भरै छै, हाथ पौधा रोपै
मेघ छाह घेरै छै, धान रोपनी चलै / लोक स्वर मिलै छै, भोर रोपनी गबैए
श्रम ताल बजै छै, खेत नीर डोलै / हाथ पौधा छोड़ै छै, मेघ छाह पड़ै
फसल आस बढ़ै छै, लोक स्वर गुँजै / पएर माटि धँसै छै, जोर रोपनी गबैए
धान रोपनी फैलै छै, हाथ पौधा धरै / मेघ छाह सरै छै, फसल आस बचै
खेत नीर भरै छै, पएर माटि चलै / श्रम ताल चलै छै, छोर रोपनी गबैए
लोक स्वर मिलै छै, मेघ छाह घेरै / फसल आस जगै छै, खेत नीर डोलै
हाथ पौधा छोड़ै छै, श्रम ताल बजै / धान रोपनी बढ़ै छै, कोर रोपनी गबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९२२ — संगीतमय रूप

भाव: सामूहिक श्रम, नीर, ताल, गीत आ भविष्यक फसल-आस। धानक रोपनी गीतक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: झपताल १० मात्रा। धानक रोपनी गीतक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'रोपनी गबैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, विरल तबला। धानक रोपनी गीतक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: धानक रोपनी गीतक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: धानक रोपनी गीतक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: धानक रोपनी गीतक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: धानक रोपनी गीतक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: धानक रोपनी गीतक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: धानक रोपनी गीतक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। धानक रोपनी गीतक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; श्रोताक मोनमे प्रश्न बचा छोड़ए।

गजल ९२३ — घाट पएर चलै, नोर गगरी छलकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास) · रदीफ: गगरी छलकैए · शेर: ६

पनिहार गगरी भरै छै, माथ भार नमै / घर प्यास बढ़ै छै, आस गगरी छलकैए
घाट सीढ़ी चढ़ै छै, भोर पएर मुड़ै / बाट बात उठै छै, विश्वास गगरी छलकैए
नीर लहर डोलै छै, घर प्यास जगै / श्रम मान बचै छै, घाट सीढ़ी घिसै
माथ भार चढ़ै छै, बाट बात खुलै / पनिहार गगरी डोलै छै, प्रयास गगरी छलकैए
भोर पएर रुकै छै, श्रम मान जगै / घाट सीढ़ी उतरै छै, माथ भार नमै
घर प्यास बढ़ै छै, पनिहार गगरी भरै / नीर लहर सरै छै, उल्लास गगरी छलकैए
बाट बात उठै छै, घाट सीढ़ी चढ़ै / माथ भार रहै छै, घर प्यास जगै
श्रम मान बचै छै, नीर लहर डोलै / भोर पएर चलै छै, प्यास गगरी छलकैए
पनिहार गगरी डोलै छै, माथ भार चढ़ै / घर प्यास घटै छै, श्रम मान जगै
घाट सीढ़ी उतरै छै, भोर पएर रुकै / बाट बात मिलै छै, आभास गगरी छलकैए
नीर लहर सरै छै, घर प्यास बढ़ै / श्रम मान बढ़ै छै, घाट सीढ़ी चढ़ै
माथ भार रहै छै, बाट बात उठै / पनिहार गगरी छलकै छै, श्वास गगरी छलकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९२३ — संगीतमय रूप

भाव: जल-आननाइ, देहक संतुलन, श्रम, बाटक बात आ घरक प्यास। पनिहारक गगरीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। पनिहारक गगरीक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'गगरी छलकैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु ढोलक। पनिहारक गगरीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: पनिहारक गगरीक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: पनिहारक गगरीक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।

३म शेर: पनिहारक गगरीक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: पनिहारक गगरीक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: पनिहारक गगरीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।

६म शेर: पनिहारक गगरीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पनिहारक गगरीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; ध्वनिक पाछाँ बिम्ब थिर करए।

गजल १२४ — मेघ हटै, रंग इन्द्रधनुष उभरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम) · रदीफ: इन्द्रधनुष उभरैए · शेर: ६

बरखा मेघ सरै छै, बालक आँखि खुलै / दूर क्षितिज रहै छै, नाम इन्द्रधनुष उभरैए
आकाश रंग उभरै छै, नीर बूँद सूखै / क्षण छवि उभरै छै, धाम इन्द्रधनुष उभरैए
सूरज किरण चमकै छै, दूर क्षितिज दिसै / मोन उमंग बढ़ै छै, आकाश रंग बदलै
बालक आँखि तकै छै, क्षण छवि बदलै / बरखा मेघ हटै छै, ग्राम इन्द्रधनुष उभरैए
नीर बूँद चमकै छै, मोन उमंग रहै / आकाश रंग फैलै छै, बालक आँखि खुलै
दूर क्षितिज रहै छै, बरखा मेघ सरै / सूरज किरण फैलै छै, विराम इन्द्रधनुष उभरैए
क्षण छवि उभरै छै, आकाश रंग उभरै / बालक आँखि चमकै छै, दूर क्षितिज दिसै
मोन उमंग बढ़ै छै, सूरज किरण चमकै / नीर बूँद पड़ै छै, प्रणाम इन्द्रधनुष उभरैए
बरखा मेघ हटै छै, बालक आँखि तकै / दूर क्षितिज खुलै छै, मोन उमंग रहै
आकाश रंग फैलै छै, नीर बूँद चमकै / क्षण छवि मिटै छै, परिणाम इन्द्रधनुष उभरैए
सूरज किरण फैलै छै, दूर क्षितिज रहै / मोन उमंग जगै छै, आकाश रंग उभरै
बालक आँखि चमकै छै, क्षण छवि उभरै / बरखा मेघ घटै छै, आयाम इन्द्रधनुष उभरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९२४ — संगीतमय रूप

भाव: बरखा-पाछाँ प्रकाश, रंग, क्षणभंगुरता आ साझा विस्मय। इन्द्रधनुषक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: एकताल १२ मात्रा। इन्द्रधनुषक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘इन्द्रधनुष उभरैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, हलुक पखावज। इन्द्रधनुषक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: इन्द्रधनुषक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।
२म शेर: इन्द्रधनुषक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।
३म शेर: इन्द्रधनुषक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।
४म शेर: इन्द्रधनुषक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।
५म शेर: इन्द्रधनुषक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।
६म शेर: इन्द्रधनुषक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। इन्द्रधनुषक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अवसानकेँ कोमल राखि अर्थ बहए।

गजल १२५ — गाछ डोलै, पार पछिया बहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल) · रदीफ: पछिया बहैए · शेर: ६

पछिया पवन बहै छै, घर द्वार बजै / पाखी पाँखि उड़ै छै, चाल पछिया बहैए
गाछ डारि नमै छै, धूलि रेखा बैसै / मोन याद जगै छै, ताल पछिया बहैए
खेत लहर डोलै छै, पाखी पाँखि फैलै / दूर पार खुलै छै, गाछ डारि हिलै
घर द्वार खुलै छै, मोन याद घुरै / पछिया पवन चलै छै, काल पछिया बहैए
धूलि रेखा सरै छै, दूर पार मिलै / गाछ डारि डोलै छै, घर द्वार बजै
पाखी पाँखि उड़ै छै, पछिया पवन बहै / खेत लहर सरै छै, जाल पछिया बहैए
मोन याद जगै छै, गाछ डारि नमै / घर द्वार रहै छै, पाखी पाँखि फैलै
दूर पार खुलै छै, खेत लहर डोलै / धूलि रेखा उठै छै, पाल पछिया बहैए
पछिया पवन चलै छै, घर द्वार खुलै / पाखी पाँखि उठै छै, दूर पार मिलै
गाछ डारि डोलै छै, धूलि रेखा सरै / मोन याद रहै छै, ढाल पछिया बहैए
खेत लहर सरै छै, पाखी पाँखि उड़ै / दूर पार दिसै छै, गाछ डारि नमै
घर द्वार रहै छै, मोन याद जगै / पछिया पवन सरै छै, विशाल पछिया बहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९२५ — संगीतमय रूप

भाव: गाछ, खेत, धूलि, पाखि आ स्मृतिमे चलैत दिशाबदलावक मुक्त लय। पछिया पवनक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। पछिया पवनक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'पछिया बहैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। पछिया पवनक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: पछिया पवनक पहिल शेर अनुभवकेँ जमल निष्कर्ष नहि, फेर परखल जा सकैत बोध रूपमे खोलैत अछि।

२म शेर: पछिया पवनक दोसर शेर लोक-व्यवहार, पहुँच, मान आ साझा काजक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र बिम्बमे देखबैत अछि।

३म शेर: पछिया पवनक तेसर शेर स्मृति, भाषा वा संकेतक परत खोलैत, भ्रम आ आरोपसँ सावधान रहैत अछि।

४म शेर: पछिया पवनक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भेद बचबैत बदलैत अनुभवक निरन्तरता परखैत अछि।

५म शेर: पछिया पवनक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी फेर जाँचैत अछि।

६म शेर: पछिया पवनक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वर आ कारण-क्रमकेँ मान दैत अपन निष्कर्ष स्वतंत्र रूपेँ धरैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पछिया पवनक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम शब्द पाछाँ क्षणभर मौन रहए।

गजल ९२६ — सूत तनै, सार चर्खा घूमैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार) · रदीफ: चर्खा घूमैए · शेर: ६

चर्खा धुरी घूमै छै, रूई रेशा जुड़ै / श्रम ताल चलै छै, सार चर्खा घूमैए
सूत डोर जुड़ै छै, घर कोना सजै / कपड़ा आस जगै छै, पार चर्खा घूमैए
हाथ चाल रुकै छै, श्रम ताल मिलै / समय चक्र सरै छै, सूत डोर टूटै
रूई रेशा फैलै छै, कपड़ा आस बढ़ै / चर्खा धुरी चलै छै, धार चर्खा घूमैए
घर कोना खुलै छै, समय चक्र बदलै / सूत डोर तनै छै, रूई रेशा जुड़ै
श्रम ताल चलै छै, चर्खा धुरी घूमै / हाथ चाल मुड़ै छै, विचार चर्खा घूमैए
कपड़ा आस जगै छै, सूत डोर जुड़ै / रूई रेशा तनै छै, श्रम ताल मिलै
समय चक्र सरै छै, हाथ चाल रुकै / घर कोना रहै छै, आधार चर्खा घूमैए
चर्खा धुरी चलै छै, रूई रेशा फैलै / श्रम ताल बजै छै, समय चक्र बदलै
सूत डोर तनै छै, घर कोना खुलै / कपड़ा आस बचै छै, व्यवहार चर्खा घूमैए
हाथ चाल मुड़ै छै, श्रम ताल चलै / समय चक्र घूमै छै, सूत डोर जुड़ै
रूई रेशा तनै छै, कपड़ा आस जगै / चर्खा धुरी रुकै छै, पुकार चर्खा घूमैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९२६ — संगीतमय रूप

भाव: रूई, सूत, हाथक ताल, श्रम आ समयक चक्रक बिम्ब। चर्खाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। चर्खाक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'चर्खा घूमैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, विरल तबला। चर्खाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: चर्खाक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।

२म शेर: चर्खाक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: चर्खाक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।

४म शेर: चर्खाक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: चर्खाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: चर्खाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। चर्खाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; मौनमे ओकर कम्पन छोड़ए।

गजल १२७ — धान जुटै, मान बखार भरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान) · रदीफ: बखार भरैए · शेर: ६

धान दाना जुटै छै, बाड़ी गन्ध फैलै / घर भोजन बढ़ै छै, मान बखार भरैए
बखार कोठी रहै छै, ऋतु चाल मुड़ै / चूहा बाट दिसै छै, ज्ञान बखार भरैए
किसान हाथ जुटै छै, घर भोजन जुड़ै / रक्षा ध्यान बढ़ै छै, बखार कोठी खुलै
बाड़ी गन्ध उठै छै, चूहा बाट नुकै / धान दाना भरै छै, ध्यान बखार भरैए
ऋतु चाल चलै छै, रक्षा ध्यान रहै / बखार कोठी भरै छै, बाड़ी गन्ध फैलै
घर भोजन बढ़ै छै, धान दाना जुटै / किसान हाथ नमै छै, विधान बखार भरैए
चूहा बाट दिसै छै, बखार कोठी रहै / बाड़ी गन्ध रहै छै, घर भोजन जुड़ै
रक्षा ध्यान बढ़ै छै, किसान हाथ जुटै / ऋतु चाल बदलै छै, अनुमान बखार भरैए
धान दाना भरै छै, बाड़ी गन्ध उठै / घर भोजन बचै छै, रक्षा ध्यान रहै
बखार कोठी भरै छै, ऋतु चाल चलै / चूहा बाट खुलै छै, पहिचान बखार भरैए
किसान हाथ नमै छै, घर भोजन बढ़ै / रक्षा ध्यान जगै छै, बखार कोठी रहै
बाड़ी गन्ध रहै छै, चूहा बाट दिसै / धान दाना सूखै छै, सम्मान बखार भरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९२७ — संगीतमय रूप

भाव: अन्न-संचय, श्रम, सुरक्षा, ऋतु आ भविष्यक भोजनक चिंता। धान-बखारक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। धान-बखारक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'बखार भरैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज। धान-बखारक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: धान-बखारक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: धान-बखारक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: धान-बखारक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: धान-बखारक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: धान-बखारक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: धान-बखारक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। धान-बखारक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अगिला श्वासमे अर्थ खोलए।

गजल ९२८ — माटि कटै, ज्ञान फाल चमकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत) · रदीफ: फाल चमकैए · शेर: ६

हल फाल चमकै छै, किसान पएर धँसै / बीज आस बचै छै, प्रीत फाल चमकैए
बैल चाल नमै छै, पात ओस सूखै / खेत कोर फैलै छै, रीत फाल चमकैए
माटि रेखा बदलै छै, बीज आस जगै / श्रम मान बचै छै, बैल चाल रुकै
किसान पएर चलै छै, खेत कोर खुलै / हल फाल चलै छै, गीत फाल चमकैए
पात ओस चमकै छै, श्रम मान जगै / बैल चाल चलै छै, किसान पएर धँसै
बीज आस बचै छै, हल फाल चमकै / माटि रेखा कटै छै, मीत फाल चमकैए
खेत कोर फैलै छै, बैल चाल नमै / किसान पएर मुड़ै छै, बीज आस जगै
श्रम मान बचै छै, माटि रेखा बदलै / पात ओस पड़ै छै, जीत फाल चमकैए
हल फाल चलै छै, किसान पएर चलै / बीज आस बढ़ै छै, श्रम मान जगै
बैल चाल चलै छै, पात ओस चमकै / खेत कोर रहै छै, अतीत फाल चमकैए
माटि रेखा कटै छै, बीज आस बचै / श्रम मान बढ़ै छै, बैल चाल नमै
किसान पएर मुड़ै छै, खेत कोर फैलै / हल फाल कटै छै, संगीत फाल चमकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९२८ — संगीतमय रूप

भाव: माटिक चीरा, श्रम, बीजक तैयारी आ खेतीक ज्ञान। हलक फालक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। हलक फालक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘फाल चमकैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, हलुक मँजीरा। हलक फालक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: हलक फालक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।

२म शेर: हलक फालक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: हलक फालक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।

४म शेर: हलक फालक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: हलक फालक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: हलक फालक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। हलक फालक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम स्वरकेँ धीरे विराम दए।

गजल ९२९ — नीर हटै, भोर चर उभरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर) · रदीफ: चर उभरैए · शेर: ६

कोसी नीर सरै छै, पाखी झुण्ड उड़ै / चरवाह पएर मुड़ै छै, नोर चर उभरैए

बालू चर फैलै छै, घास कोर सूखै / बाढ़ चिह्न दिसै छै, सोर चर उभरैए

नाव चाल रुकै छै, चरवाह पएर चलै / नदी मान रहै छै, बालू चर मिटै

पाखी झुण्ड उतरै छै, बाढ़ चिह्न मिटै / कोसी नीर बहै छै, डोर चर उभरैए

घास कोर बढ़ै छै, नदी मान उठै / बालू चर उभरै छै, पाखी झुण्ड उड़ै

चरवाह पएर मुड़ै छै, कोसी नीर सरै / नाव चाल मुड़ै छै, भोर चर उभरैए

बाढ़ चिह्न दिसै छै, बालू चर फैलै / पाखी झुण्ड जुटै छै, चरवाह पएर चलै

नदी मान रहै छै, नाव चाल रुकै / घास कोर जगै छै, जोर चर उभरैए

कोसी नीर बहै छै, पाखी झुण्ड उतरै / चरवाह पएर रुकै छै, नदी मान उठै

बालू चर उभरै छै, घास कोर बढ़ै / बाढ़ चिह्न बचै छै, छोर चर उभरैए

नाव चाल मुड़ै छै, चरवाह पएर मुड़ै / नदी मान बदलै छै, बालू चर फैलै

पाखी झुण्ड जुटै छै, बाढ़ चिह्न दिसै / कोसी नीर घटै छै, कोर चर उभरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९२९ — संगीतमय रूप

भाव: बदलैत नदी, बालू-द्वीप, अस्थिर भूगोल आ जीवनक अनुकूलन। कोसीक चरक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: झपताल १० मात्रा। कोसीक चरक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘चर उभरैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, विरल तबला। कोसीक चरक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: कोसीक चरक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।

२म शेर: कोसीक चरक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: कोसीक चरक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।

४म शेर: कोसीक चरक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: कोसीक चरक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: कोसीक चरक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। कोसीक चरक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; श्रोताक मोनमे प्रश्न बचा छोड़ए।

गजल १३० — पोखर गहिरै, आस कमलबीज पकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास) · रदीफ: कमलबीज पकैए · शेर: ६

कमल बीज पकै छै, माटि तल नुकै / पाखी सोर बजै छै, आस कमलबीज पकैए
पोखर नीर सरै छै, भोर किरण चमकै / ऋतु चाल बदलै छै, विश्वास कमलबीज पकैए
पात छाह सरै छै, पाखी सोर उठै / जीवन कोर बढ़ै छै, पोखर नीर घटै
माटि तल रहै छै, ऋतु चाल चलै / कमल बीज रहै छै, प्रयास कमलबीज पकैए
भोर किरण फैलै छै, जीवन कोर बचै / पोखर नीर डोलै छै, माटि तल नुकै
पाखी सोर बजै छै, कमल बीज पकै / पात छाह डोलै छै, उल्लास कमलबीज पकैए
ऋतु चाल बदलै छै, पोखर नीर सरै / माटि तल खुलै छै, पाखी सोर उठै
जीवन कोर बढ़ै छै, पात छाह सरै / भोर किरण पड़ै छै, प्यास कमलबीज पकैए
कमल बीज रहै छै, माटि तल रहै / पाखी सोर मिलै छै, जीवन कोर बचै
पोखर नीर डोलै छै, भोर किरण फैलै / ऋतु चाल मुड़ै छै, आभास कमलबीज पकैए
पात छाह डोलै छै, पाखी सोर बजै / जीवन कोर जगै छै, पोखर नीर सरै
माटि तल खुलै छै, ऋतु चाल बदलै / कमल बीज जगै छै, श्वास कमलबीज पकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९३० — संगीतमय रूप

भाव: जल-तल, बीज, प्रतीक्षा, ऋतु आ नुकील जीवन-सामर्थ्य। कमलबीजक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। कमलबीजक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘कमलबीज पकैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु ढोलक। कमलबीजक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: कमलबीजक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: कमलबीजक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कमलबीजक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: कमलबीजक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: कमलबीजक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: कमलबीजक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। कमलबीजक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; ध्वनिक पाछाँ बिम्ब थिर करए।

गजल ९३१ — पाथर टकरै, नोर चकमक झिलमिलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम) · रदीफ: चकमक झिलमिलैए · शेर: ६

चकमक पाथर टकरै छै, राति अन्हार घटै / यात्री आँखि चमकै छै, नाम चकमक झिलमिलैए
सूखल घास धधकै छै, छोट चिनगारी मिटै / ताप कोर जगै छै, धाम चकमक झिलमिलैए
हाथ घर्षण रुकै छै, यात्री आँखि तकै / सावधानी भाव बढ़ै छै, सूखल घास बुझै
राति अन्हार घनै छै, ताप कोर बढ़ै / चकमक पाथर रहै छै, ग्राम चकमक झिलमिलैए
छोट चिनगारी चमकै छै, सावधानी भाव बचै / सूखल घास जरै छै, राति अन्हार घटै
यात्री आँखि चमकै छै, चकमक पाथर टकरै / हाथ घर्षण घटै छै, विराम चकमक झिलमिलैए
ताप कोर जगै छै, सूखल घास धधकै / राति अन्हार सरै छै, यात्री आँखि तकै
सावधानी भाव बढ़ै छै, हाथ घर्षण रुकै / छोट चिनगारी उठै छै, प्रणाम चकमक झिलमिलैए
चकमक पाथर रहै छै, राति अन्हार घनै / यात्री आँखि खुलै छै, सावधानी भाव बचै
सूखल घास जरै छै, छोट चिनगारी चमकै / ताप कोर रहै छै, परिणाम चकमक झिलमिलैए
हाथ घर्षण घटै छै, यात्री आँखि चमकै / सावधानी भाव जगै छै, सूखल घास धधकै
राति अन्हार सरै छै, ताप कोर जगै / चकमक पाथर चमकै छै, आयाम चकमक झिलमिलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९३१ — संगीतमय रूप

भाव: घर्षण, चिनगारी, आगक आरम्भ आ सावधानीक सूक्ष्म शिक्षा। चकमक पाथरक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: एकताल १२ मात्रा। चकमक पाथरक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘चकमक झिलमिलैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, हलुक पखावज। चकमक पाथरक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: चकमक पाथरक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: चकमक पाथरक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: चकमक पाथरक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: चकमक पाथरक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: चकमक पाथरक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: चकमक पाथरक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। चकमक पाथरक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अवसानकेँ कोमल राखि अर्थ बहए।

गजल १३२ — रेशा जुड़ै, प्रीत पाटी बुनैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल) · रदीफ: पाटी बुनैए · शेर: ६

शीतल पाटी बुनै छै, रंग पट्टी सजै / देह आराम बढ़ै छै, चाल पाटी बुनैए

रेशा डोर जुड़ै छै, गरमी ताप पड़ै / घर फर्श सजै छै, ताल पाटी बुनैए

कारीगर हाथ जुटै छै, देह आराम मिलै / श्रम मान बचै छै, रेशा डोर रहै

रंग पट्टी मिलै छै, घर फर्श खुलै / शीतल पाटी मुड़ै छै, काल पाटी बुनैए

गरमी ताप घटै छै, श्रम मान जगै / रेशा डोर तनै छै, रंग पट्टी सजै

देह आराम बढ़ै छै, शीतल पाटी बुनै / कारीगर हाथ नमै छै, जाल पाटी बुनैए

घर फर्श सजै छै, रेशा डोर जुड़ै / रंग पट्टी बदलै छै, देह आराम मिलै

श्रम मान बचै छै, कारीगर हाथ जुटै / गरमी ताप बढ़ै छै, पाल पाटी बुनैए

शीतल पाटी मुड़ै छै, रंग पट्टी मिलै / देह आराम रहै छै, श्रम मान जगै

रेशा डोर तनै छै, गरमी ताप घटै / घर फर्श रहै छै, ढाल पाटी बुनैए

कारीगर हाथ नमै छै, देह आराम बढ़ै / श्रम मान बढ़ै छै, रेशा डोर जुड़ै

रंग पट्टी बदलै छै, घर फर्श सजै / शीतल पाटी फैलै छै, विशाल पाटी बुनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९३२ — संगीतमय रूप

भाव: रेशा, बुनावट, गरमी, आराम आ हस्तकला-कौशल। शीतलपाटीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। शीतलपाटीक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘पाटी बुनैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। शीतलपाटीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: शीतलपाटीक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।

२म शेर: शीतलपाटीक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: शीतलपाटीक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।

४म शेर: शीतलपाटीक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: शीतलपाटीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: शीतलपाटीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। शीतलपाटीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम शब्द पाछाँ क्षणभर मौन रहए।

गजल ९३३ — तार काँपै, गीत सारंगी रुवैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाव (भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव) · रदीफ: सारंगी रुवैए · शेर: ६

सारंगी तार काँपै छै, राग कोर जगै / सभागार मौन टूटै छै, भाव सारंगी रुवैए
धनुष चाल मुड़ै छै, मोन नोर रहै / स्वर लहर उठै छै, चाव सारंगी रुवैए
गायक श्वास बढ़ै छै, सभागार मौन घनै / स्मृति डोर तनै छै, धनुष चाल रुकै
राग कोर खुलै छै, स्वर लहर सरै / सारंगी तार तनै छै, ठाव सारंगी रुवैए
मोन नोर घटै छै, स्मृति डोर बचै / धनुष चाल चलै छै, राग कोर जगै
सभागार मौन टूटै छै, सारंगी तार काँपै / गायक श्वास सम्हरै छै, दाव सारंगी रुवैए
स्वर लहर उठै छै, धनुष चाल मुड़ै / राग कोर बढ़ै छै, सभागार मौन घनै
स्मृति डोर तनै छै, गायक श्वास बढ़ै / मोन नोर उठै छै, नाव सारंगी रुवैए
सारंगी तार तनै छै, राग कोर खुलै / सभागार मौन रहै छै, स्मृति डोर बचै
धनुष चाल चलै छै, मोन नोर घटै / स्वर लहर डोलै छै, घाव सारंगी रुवैए
गायक श्वास सम्हरै छै, सभागार मौन टूटै / स्मृति डोर जुड़ै छै, धनुष चाल मुड़ै
राग कोर बढ़ै छै, स्वर लहर उठै / सारंगी तार बजै छै, अभाव सारंगी रुवैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९३३ — संगीतमय रूप

भाव: काँपैत तार, मानवीय स्वर, नोर आ मौनक पारस्परिकता। सारंगीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ३८–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। सारंगीक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘सारंगी रुवैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सुरमंडल, मृदु तबला। सारंगीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: सारंगीक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।

२म शेर: सारंगीक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: सारंगीक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।

४म शेर: सारंगीक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: सारंगीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: सारंगीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। सारंगीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; मुदा अर्थक डोर नहि टूटए।

गजल १३४ — पात लहरै, भोर तिलकोर लहरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, अंग, ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग) · रदीफ: तिलकोर लहरैए · शेर: ६

तिलकोर पात लहरै छै, रसोई हाथ काटै / बाड़ी पवन डोलै छै, रंग तिलकोर लहरैए
तिलकोर बेल फैलै छै, माटि गन्ध रहै / घर स्वाद जगै छै, संग तिलकोर लहरैए
भोर ओस सूखै छै, बाड़ी पवन उठै / ऋतु रीत बदलै छै, तिलकोर बेल बढ़ै
रसोई हाथ चलै छै, घर स्वाद मिलै / तिलकोर पात नमै छै, अंग तिलकोर लहरैए
माटि गन्ध फैलै छै, ऋतु रीत बचै / तिलकोर बेल चढ़ै छै, रसोई हाथ काटै
बाड़ी पवन डोलै छै, तिलकोर पात लहरै / भोर ओस चमकै छै, ढंग तिलकोर लहरैए
घर स्वाद जगै छै, तिलकोर बेल फैलै / रसोई हाथ मिलै छै, बाड़ी पवन उठै
ऋतु रीत बदलै छै, भोर ओस सूखै / माटि गन्ध उठै छै, उमंग तिलकोर लहरैए
तिलकोर पात नमै छै, रसोई हाथ चलै / बाड़ी पवन सरै छै, ऋतु रीत बचै
तिलकोर बेल चढ़ै छै, माटि गन्ध फैलै / घर स्वाद रहै छै, प्रसंग तिलकोर लहरैए
भोर ओस चमकै छै, बाड़ी पवन डोलै / ऋतु रीत चलै छै, तिलकोर बेल फैलै
रसोई हाथ मिलै छै, घर स्वाद जगै / तिलकोर पात डोलै छै, तरंग तिलकोर लहरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९३४ — संगीतमय रूप

भाव: बाड़ी, पात, रसोई, ऋतु आ घरेलू स्वादक हरियर बिम्ब। तिलकोर पातक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४०–४६ · ताल: झपताल १० मात्रा। तिलकोर पातक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'तिलकोर लहरैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, हलुक खँजरी। तिलकोर पातक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: तिलकोर पातक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।

२म शेर: तिलकोर पातक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: तिलकोर पातक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।

४म शेर: तिलकोर पातक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: तिलकोर पातक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: तिलकोर पातक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। तिलकोर पातक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; समापनमे बिम्ब फेर भीतर घुरए।

गजल १३५ — लोक जुटै, मान सभा जुटैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार) · रदीफ: सभा जुटैए · शेर: ६

सौराठ सभा जुटै छै, पंजी नाम मिलै / युवा दृष्टि खुलै छै, सार सभा जुटैए
बरगद छाह फैलै छै, कुल स्मृति बदलै / नियम घेर बनै छै, पार सभा जुटैए
लोक बात मिलै छै, युवा दृष्टि तकै / चयन मान घटै छै, बरगद छाह सरै
पंजी नाम खुलै छै, नियम घेर बदलै / सौराठ सभा रहै छै, धार सभा जुटैए
कुल स्मृति बचै छै, चयन मान जगै / बरगद छाह पड़ै छै, पंजी नाम मिलै
युवा दृष्टि खुलै छै, सौराठ सभा जुटै / लोक बात खुलै छै, विचार सभा जुटैए
नियम घेर बनै छै, बरगद छाह फैलै / पंजी नाम जँचै छै, युवा दृष्टि तकै
चयन मान घटै छै, लोक बात मिलै / कुल स्मृति जगै छै, आधार सभा जुटैए
सौराठ सभा रहै छै, पंजी नाम खुलै / युवा दृष्टि फिरै छै, चयन मान जगै
बरगद छाह पड़ै छै, कुल स्मृति बचै / नियम घेर रहै छै, व्यवहार सभा जुटैए
लोक बात खुलै छै, युवा दृष्टि खुलै / चयन मान बढ़ै छै, बरगद छाह फैलै
पंजी नाम जँचै छै, नियम घेर बनै / सौराठ सभा बढ़ै छै, पुकार सभा जुटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९३५ — संगीतमय रूप

भाव: लोक-समागम, पंजी, चयन, परम्परा आ बदलैत सामाजिक कसौटी। सौराठक सभाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। सौराठक सभाक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'सभा जुटैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, विरल तबला। सौराठक सभाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: सौराठक सभाक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: सौराठक सभाक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: सौराठक सभाक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: सौराठक सभाक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: सौराठक सभाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: सौराठक सभाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। सौराठक सभाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; मौनमे ओकर कम्पन छोड़ए।

गजल १३६ — पात खुलै, ज्ञान पंजी बोलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान) · रदीफ: पंजी बोलैए · शेर: ६

पंजी पोथी खुलै छै, नाम क्रम बदलै / समय दाग रहै छै, मान पंजी बोलैए
पुरान पात फाटै छै, लेखक हाथ नमै / स्रोत जाँच चलै छै, ज्ञान पंजी बोलैए
स्याही रेखा मिटै छै, समय दाग पड़ै / इतिहास कोर बचै छै, पुरान पात रहै
नाम क्रम जुड़ै छै, स्रोत जाँच खुलै / पंजी पोथी घिसै छै, ध्यान पंजी बोलैए
लेखक हाथ रुकै छै, इतिहास कोर खुलै / पुरान पात पीयरै छै, नाम क्रम बदलै
समय दाग रहै छै, पंजी पोथी खुलै / स्याही रेखा फैलै छै, विधान पंजी बोलैए
स्रोत जाँच चलै छै, पुरान पात फाटै / नाम क्रम चलै छै, समय दाग पड़ै
इतिहास कोर बचै छै, स्याही रेखा मिटै / लेखक हाथ चलै छै, अनुमान पंजी बोलैए
पंजी पोथी घिसै छै, नाम क्रम जुड़ै / समय दाग बढ़ै छै, इतिहास कोर खुलै
पुरान पात पीयरै छै, लेखक हाथ रुकै / स्रोत जाँच बढ़ै छै, पहिचान पंजी बोलैए
स्याही रेखा फैलै छै, समय दाग रहै / इतिहास कोर जगै छै, पुरान पात फाटै
नाम क्रम चलै छै, स्रोत जाँच चलै / पंजी पोथी बचै छै, सम्मान पंजी बोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९३६ — संगीतमय रूप

भाव: हस्तलिखित नाम, स्रोत-जाँच, समयक दाग आ इतिहासक अनुशासन। पंजी-पोथीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। पंजी-पोथीक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'पंजी बोलैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज। पंजी-पोथीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: पंजी-पोथीक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: पंजी-पोथीक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: पंजी-पोथीक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: पंजी-पोथीक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: पंजी-पोथीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: पंजी-पोथीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। पंजी-पोथीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अगिला श्वासमे अर्थ खोलए।

गजल १३७ — रस्सी तनै, चाव डोल उतरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत) · रदीफ: डोल उतरैए · शेर: ६

कुइयाँ घेर रहै छै, नीर तल चमकै / माथ भार रहै छै, प्रीत डोल उतरैए
रस्सी डोर सरै छै, हाथ खींच रुकै / घर प्यास जगै छै, रीत डोल उतरैए
डोल देह डोलै छै, माथ भार चढ़ै / श्रम ताल बजै छै, रस्सी डोर घिसै
नीर तल रहै छै, घर प्यास घटै / कुइयाँ घेर घिसै छै, गीत डोल उतरैए
हाथ खींच घटै छै, श्रम ताल चलै / रस्सी डोर तनै छै, नीर तल चमकै
माथ भार रहै छै, कुइयाँ घेर रहै / डोल देह चढ़ै छै, मीत डोल उतरैए
घर प्यास जगै छै, रस्सी डोर सरै / नीर तल डोलै छै, माथ भार चढ़ै
श्रम ताल बजै छै, डोल देह डोलै / हाथ खींच बढ़ै छै, जीत डोल उतरैए
कुइयाँ घेर घिसै छै, नीर तल रहै / माथ भार नमै छै, श्रम ताल चलै
रस्सी डोर तनै छै, हाथ खींच घटै / घर प्यास बढ़ै छै, अतीत डोल उतरैए
डोल देह चढ़ै छै, माथ भार रहै / श्रम ताल मिलै छै, रस्सी डोर सरै
नीर तल डोलै छै, घर प्यास जगै / कुइयाँ घेर खुलै छै, संगीत डोल उतरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९३७ — संगीतमय रूप

भाव: रस्सी, जल, श्रम, भार आ साझा जल-व्यवस्थाक बिम्ब। कुइयाँक डोलक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। कुइयाँक डोलक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘डोल उतरैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, हलुक मँजीरा। कुइयाँक डोलक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: कुइयाँक डोलक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: कुइयाँक डोलक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कुइयाँक डोलक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: कुइयाँक डोलक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: कुइयाँक डोलक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: कुइयाँक डोलक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। कुइयाँक डोलक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम स्वरकेँ धीरे विराम दए।

गजल १३८ — आग धधकै, आस ईंट पकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर) · रदीफ: ईंट पकैए · शेर: ६

भट्ठा आग धधकै छै, मजदूर हाथ नमै / घर दीवार रहै छै, नोर ईंट पकैए
काँच ईंट लालै छै, धुआँ रेखा सरै / ताप घाव पड़ै छै, सोर ईंट पकैए
माटि साँचा सूखै छै, घर दीवार बनै / श्रम मान बचै छै, काँच ईंट रहै
मजदूर हाथ चलै छै, ताप घाव बढ़ै / भट्ठा आग बढ़ै छै, डोर ईंट पकैए
धुआँ रेखा फैलै छै, श्रम मान जगै / काँच ईंट पकै छै, मजदूर हाथ नमै
घर दीवार रहै छै, भट्ठा आग धधकै / माटि साँचा बनै छै, भोर ईंट पकैए
ताप घाव पड़ै छै, काँच ईंट लालै / मजदूर हाथ जुटै छै, घर दीवार बनै
श्रम मान बचै छै, माटि साँचा सूखै / धुआँ रेखा उठै छै, जोर ईंट पकैए
भट्ठा आग बढ़ै छै, मजदूर हाथ चलै / घर दीवार उठै छै, श्रम मान जगै
काँच ईंट पकै छै, धुआँ रेखा फैलै / ताप घाव घटै छै, छोर ईंट पकैए
माटि साँचा बनै छै, घर दीवार रहै / श्रम मान बढ़ै छै, काँच ईंट लालै
मजदूर हाथ जुटै छै, ताप घाव पड़ै / भट्ठा आग घटै छै, कोर ईंट पकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९३८ — संगीतमय रूप

भाव: माटि, आग, श्रम, घर-निर्माण आ तापक सामाजिक मूल्य। ईंट-भट्ठाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: झपताल १० मात्रा। ईंट-भट्ठाक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'ईंट पकैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, विरल तबला। ईंट-भट्ठाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: ईंट-भट्ठाक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: ईंट-भट्ठाक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: ईंट-भट्ठाक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: ईंट-भट्ठाक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: ईंट-भट्ठाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: ईंट-भट्ठाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। ईंट-भट्ठाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; श्रोताक मोनमे प्रश्न बचा छोड़ए।

गजल १३९ — फूल खुलै, प्रीत चंपा महकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास) · रदीफ: चंपा महकैए · शेर: ६

चंपा फूल महकै छै, पात ओस चमकै / ऋतु चाल मुड़ै छै, आस चंपा महकैए
भोर पवन सरै छै, मोन याद रहै / मधु गन्ध उठै छै, विश्वास चंपा महकैए
आँगन छाह सरै छै, ऋतु चाल बदलै / नेह कोर बढ़ै छै, भोर पवन चलै
पात ओस पड़ै छै, मधु गन्ध फैलै / चंपा फूल झरै छै, प्रयास चंपा महकैए
मोन याद घुरै छै, नेह कोर बचै / भोर पवन बहै छै, पात ओस चमकै
ऋतु चाल मुड़ै छै, चंपा फूल महकै / आँगन छाह फैलै छै, उल्लास चंपा महकैए
मधु गन्ध उठै छै, भोर पवन सरै / पात ओस सूखै छै, ऋतु चाल बदलै
नेह कोर बढ़ै छै, आँगन छाह सरै / मोन याद जगै छै, प्यास चंपा महकैए
चंपा फूल झरै छै, पात ओस पड़ै / ऋतु चाल चलै छै, नेह कोर बचै
भोर पवन बहै छै, मोन याद घुरै / मधु गन्ध रहै छै, आभास चंपा महकैए
आँगन छाह फैलै छै, ऋतु चाल मुड़ै / नेह कोर जगै छै, भोर पवन सरै
पात ओस सूखै छै, मधु गन्ध उठै / चंपा फूल खिलै छै, श्वास चंपा महकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९३९ — संगीतमय रूप

भाव: सुगन्ध, ओस, स्मृति, ऋतु आ आँगनक कोमल अनुभूति। चंपा फूलक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। चंपा फूलक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'चंपा महकैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु ढोलक। चंपा फूलक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: चंपा फूलक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।

२म शेर: चंपा फूलक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: चंपा फूलक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।

४म शेर: चंपा फूलक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: चंपा फूलक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: चंपा फूलक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। चंपा फूलक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; ध्वनिक पाछाँ बिम्ब थिर करए।

गजल ९४० — दाना जुटै, मान कोठी भरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम) · रदीफ: कोठी भरैए · शेर: ६

धान दाना जुटै छै, चूल्हा धुआँ फैलै / ऋतु फेर बदलै छै, नाम कोठी भरैए
कोठी घेर रहै छै, घर भोजन बढ़ै / सुरक्षा ध्यान जगै छै, धाम कोठी भरैए
माय हाथ जुटै छै, ऋतु फेर आबै / भविष्य आस बढ़ै छै, कोठी घेर खुलै
चूल्हा धुआँ उठै छै, सुरक्षा ध्यान बढ़ै / धान दाना भरै छै, ग्राम कोठी भरैए
घर भोजन बचै छै, भविष्य आस बचै / कोठी घेर भरै छै, चूल्हा धुआँ फैलै
ऋतु फेर बदलै छै, धान दाना जुटै / माय हाथ नमै छै, विराम कोठी भरैए
सुरक्षा ध्यान जगै छै, कोठी घेर रहै / चूल्हा धुआँ सरै छै, ऋतु फेर आबै
भविष्य आस बढ़ै छै, माय हाथ जुटै / घर भोजन जुड़ै छै, प्रणाम कोठी भरैए
धान दाना भरै छै, चूल्हा धुआँ उठै / ऋतु फेर सरै छै, भविष्य आस बचै
कोठी घेर भरै छै, घर भोजन बचै / सुरक्षा ध्यान रहै छै, परिणाम कोठी भरैए
माय हाथ नमै छै, ऋतु फेर बदलै / भविष्य आस जगै छै, कोठी घेर रहै
चूल्हा धुआँ सरै छै, सुरक्षा ध्यान जगै / धान दाना सूखै छै, आयाम कोठी भरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९४० — संगीतमय रूप

भाव: घरक अन्न-सुरक्षा, ऋतु, श्रम आ भविष्यक भरोसा। धानक कोठीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: एकताल १२ मात्रा। धानक कोठीक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘कोठी भरैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, हलुक पखावज। धानक कोठीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: धानक कोठीक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: धानक कोठीक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: धानक कोठीक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: धानक कोठीक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: धानक कोठीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: धानक कोठीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। धानक कोठीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अवसानकेँ कोमल राखि अर्थ बहए।

गजल ९४१ — नील फूल डोलै, चाव अलसी हँसैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल) · रदीफ: अलसी हँसैए · शेर: ६

अलसी फूल डोलै छै, किसान पएर रुकै / बीज तेल निकलै छै, चाल अलसी हँसैए
नील खेत चमकै छै, पवन लहर डोलै / माटि गन्ध उठै छै, ताल अलसी हँसैए
भोर ओस सूखै छै, बीज तेल भरै / ऋतु चाव बढ़ै छै, नील खेत दिसै
किसान पएर चलै छै, माटि गन्ध फैलै / अलसी फूल नमै छै, काल अलसी हँसैए
पवन लहर सरै छै, ऋतु चाव रहै / नील खेत फैलै छै, किसान पएर रुकै
बीज तेल निकलै छै, अलसी फूल डोलै / भोर ओस चमकै छै, जाल अलसी हँसैए
माटि गन्ध उठै छै, नील खेत चमकै / किसान पएर मुड़ै छै, बीज तेल भरै
ऋतु चाव बढ़ै छै, भोर ओस सूखै / पवन लहर उठै छै, पाल अलसी हँसैए
अलसी फूल नमै छै, किसान पएर चलै / बीज तेल रहै छै, ऋतु चाव रहै
नील खेत फैलै छै, पवन लहर सरै / माटि गन्ध रहै छै, ढाल अलसी हँसैए
भोर ओस चमकै छै, बीज तेल निकलै / ऋतु चाव जगै छै, नील खेत चमकै
किसान पएर मुड़ै छै, माटि गन्ध उठै / अलसी फूल खिलै छै, विशाल अलसी हँसैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९४१ — संगीतमय रूप

भाव: नील खेत, बीज, तेल, ओस आ ऋतु-श्रमक हलुक चमक। अलसीक फूलक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। अलसीक फूलक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'अलसी हँसैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। अलसीक फूलक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: अलसीक फूलक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: अलसीक फूलक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: अलसीक फूलक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: अलसीक फूलक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: अलसीक फूलक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: अलसीक फूलक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। अलसीक फूलक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम शब्द पाछाँ क्षणभर मौन रहए।

गजल १४२ — श्वास मिलै, गीत बाँसुरी सुसकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाव (भाव, चाव, ठाव, दाव, नाव, घाव, अभाव) · रदीफ: बाँसुरी सुसकैए · शेर: ६

बाँसुरी छेद बजै छै, राग लहर डोलै / साँझ मौन टूटै छै, भाव बाँसुरी सुसकैए
गायक श्वास सम्हरै छै, मोन याद रहै / दूर घाट दिसै छै, चाव बाँसुरी सुसकैए
पवन धार मुड़ै छै, साँझ मौन घनै / स्वर डोर तनै छै, गायक श्वास बढ़ै
राग लहर उठै छै, दूर घाट नुकै / बाँसुरी छेद रहै छै, ठाव बाँसुरी सुसकैए
मोन याद घुरै छै, स्वर डोर बचै / गायक श्वास चलै छै, राग लहर डोलै
साँझ मौन टूटै छै, बाँसुरी छेद बजै / पवन धार सरै छै, दाव बाँसुरी सुसकैए
दूर घाट दिसै छै, गायक श्वास सम्हरै / राग लहर सरै छै, साँझ मौन घनै
स्वर डोर तनै छै, पवन धार मुड़ै / मोन याद जगै छै, नाव बाँसुरी सुसकैए
बाँसुरी छेद रहै छै, राग लहर उठै / साँझ मौन रहै छै, स्वर डोर बचै
गायक श्वास चलै छै, मोन याद घुरै / दूर घाट खुलै छै, घाव बाँसुरी सुसकैए
पवन धार सरै छै, साँझ मौन टूटै / स्वर डोर जुड़ै छै, गायक श्वास सम्हरै
राग लहर सरै छै, दूर घाट दिसै / बाँसुरी छेद खुलै छै, अभाव बाँसुरी सुसकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १४२ — संगीतमय रूप

भाव: श्वास, छेद, पवन, दूरी आ स्मृतिक सूक्ष्म संगीत। बाँसुरीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ३८–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। बाँसुरीक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘बाँसुरी सुसकैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सुरमंडल, मृदु तबला। बाँसुरीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: बाँसुरीक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।

२म शेर: बाँसुरीक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: बाँसुरीक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।

४म शेर: बाँसुरीक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: बाँसुरीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: बाँसुरीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। बाँसुरीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; मुदा अर्थक डोर नहि टूटए।

गजल ९४३ — पाथर भीजै, भोर झरना गबैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, अंग, ढंग, उमंग, प्रसंग, तरंग) · रदीफ: झरना गबैए · शेर: ६

झरना नीर बहै छै, पाखी स्वर मिलै / धूप किरण चमकै छै, रंग झरना गबैए
पाथर देह घिसै छै, काई कोर रहै / यात्री पएर चलै छै, संग झरना गबैए
वन छाह सरै छै, धूप किरण पड़ै / मोन शान्ति बढ़ै छै, पाथर देह रहै
पाखी स्वर उठै छै, यात्री पएर रुकै / झरना नीर झरै छै, अंग झरना गबैए
काई कोर चमकै छै, मोन शान्ति रहै / पाथर देह भीजै छै, पाखी स्वर मिलै
धूप किरण चमकै छै, झरना नीर बहै / वन छाह फैलै छै, ढंग झरना गबैए
यात्री पएर चलै छै, पाथर देह घिसै / पाखी स्वर गुँजै छै, धूप किरण पड़ै
मोन शान्ति बढ़ै छै, वन छाह सरै / काई कोर बढ़ै छै, उमंग झरना गबैए
झरना नीर झरै छै, पाखी स्वर उठै / धूप किरण फैलै छै, मोन शान्ति रहै
पाथर देह भीजै छै, काई कोर चमकै / यात्री पएर मुड़ै छै, प्रसंग झरना गबैए
वन छाह फैलै छै, धूप किरण चमकै / मोन शान्ति जगै छै, पाथर देह घिसै
पाखी स्वर गुँजै छै, यात्री पएर चलै / झरना नीर गबै छै, तरंग झरना गबैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९४३ — संगीतमय रूप

भाव: बहैत नीर, घिसैत पाथर, वन-ध्वनि आ गतिशील शान्ति। झरनाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ४०–४६ · ताल: झपताल १० मात्रा। झरनाक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'झरना गबैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, हलुक खँजरी। झरनाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: झरनाक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।

२म शेर: झरनाक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: झरनाक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।

४म शेर: झरनाक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: झरनाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: झरनाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। झरनाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; समापनमे बिम्ब फेर भीतर घुरए।

गजल १४४ — भोर खुलै, आस कुहासा हटैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, पार, धार, विचार, आधार, व्यवहार, पुकार) · रदीफ: कुहासा हटैए · शेर: ६

भोर कुहासा घनै छै, गाछ छवि दिसै / पएर बाट मुड़ै छै, सार कुहासा हटैए
सूरज किरण फैलै छै, पाखी पाँखि उड़ै / दूर गाम दिसै छै, पार कुहासा हटैए
खेत रेखा बदलै छै, पएर बाट चलै / मोन आस बढ़ै छै, सूरज किरण चमकै
गाछ छवि उभरै छै, दूर गाम खुलै / भोर कुहासा हटै छै, धार कुहासा हटैए
पाखी पाँखि उठै छै, मोन आस बचै / सूरज किरण पड़ै छै, गाछ छवि दिसै
पएर बाट मुड़ै छै, भोर कुहासा घनै / खेत रेखा खुलै छै, विचार कुहासा हटैए
दूर गाम दिसै छै, सूरज किरण फैलै / गाछ छवि मिटै छै, पएर बाट चलै
मोन आस बढ़ै छै, खेत रेखा बदलै / पाखी पाँखि फैलै छै, आधार कुहासा हटैए
भोर कुहासा हटै छै, गाछ छवि उभरै / पएर बाट रुकै छै, मोन आस बचै
सूरज किरण पड़ै छै, पाखी पाँखि उठै / दूर गाम मिलै छै, व्यवहार कुहासा हटैए
खेत रेखा खुलै छै, पएर बाट मुड़ै / मोन आस जगै छै, सूरज किरण फैलै
गाछ छवि मिटै छै, दूर गाम दिसै / भोर कुहासा सरै छै, पुकार कुहासा हटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १४४ — संगीतमय रूप

भाव: अस्पष्टता, प्रकाश, धीरे खुलैत दृश्य आ धैर्यक बिम्ब। कुहासाक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द दादरा ६ मात्रा। कुहासाक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'कुहासा हटैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, विरल तबला। कुहासाक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।

मतला: कुहासाक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।

२म शेर: कुहासाक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: कुहासाक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।

४म शेर: कुहासाक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: कुहासाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।

६म शेर: कुहासाक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। कुहासाक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; मौनमे ओकर कम्पन छोड़ए।

गजल १४५ — राति ढलै, नोर चाँद झुकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, विधान, अनुमान, पहिचान, सम्मान) · रदीफ: चाँद झुकैए · शेर: ६

चाँद कोर झुकै छै, मोन याद घुरै / भोर आभा बढ़ै छै, मान चाँद झुकैए
राति अन्हार सरै छै, तारा रेखा मिटै / समय चाल चलै छै, ज्ञान चाँद झुकैए
छत मौन टूटै छै, भोर आभा उठै / नोर कोर घटै छै, राति अन्हार घटै
मोन याद जगै छै, समय चाल सरै / चाँद कोर चमकै छै, ध्यान चाँद झुकैए
तारा रेखा फैलै छै, नोर कोर रहै / राति अन्हार घनै छै, मोन याद घुरै
भोर आभा बढ़ै छै, चाँद कोर झुकै / छत मौन घनै छै, विधान चाँद झुकैए
समय चाल चलै छै, राति अन्हार सरै / मोन याद रहै छै, भोर आभा उठै
नोर कोर घटै छै, छत मौन टूटै / तारा रेखा दिसै छै, अनुमान चाँद झुकैए
चाँद कोर चमकै छै, मोन याद जगै / भोर आभा फैलै छै, नोर कोर रहै
राति अन्हार घनै छै, तारा रेखा फैलै / समय चाल बदलै छै, पहिचान चाँद झुकैए
छत मौन घनै छै, भोर आभा बढ़ै / नोर कोर उठै छै, राति अन्हार सरै
मोन याद रहै छै, समय चाल चलै / चाँद कोर घटै छै, सम्मान चाँद झुकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९४५ — संगीतमय रूप

भाव: रातिक अवसान, स्मृति, समय आ भोरक धीरे-धीरे आगमन। झुकैत चाँदक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७ मात्रा। झुकैत चाँदक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘चाँद झुकैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मृदु पखावज। झुकैत चाँदक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: झुकैत चाँदक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: झुकैत चाँदक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: झुकैत चाँदक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: झुकैत चाँदक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: झुकैत चाँदक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: झुकैत चाँदक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। झुकैत चाँदक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अगिला श्वासमे अर्थ खोलए।

गजल ९४६ — लहर हटै, आस सीपी खुलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (प्रीत, रीत, गीत, मीत, जीत, अतीत, संगीत) · रदीफ: सीपी खुलैए · शेर: ६

समुद्र लहर उठै छै, भोर किरण फैलै / यात्री आँखि चमकै छै, प्रीत सीपी खुलैए
सीपी देह बन्दै छै, मुक्ता आभा नुकै / ज्वार चाल बढ़ै छै, रीत सीपी खुलैए
बालू कोर बदलै छै, यात्री आँखि तकै / मोन आस बढ़ै छै, सीपी देह डोलै
भोर किरण पड़ै छै, ज्वार चाल घटै / समुद्र लहर घटै छै, गीत सीपी खुलैए
मुक्ता आभा चमकै छै, मोन आस बचै / सीपी देह खुलै छै, भोर किरण फैलै
यात्री आँखि चमकै छै, समुद्र लहर उठै / बालू कोर सूखै छै, मीत सीपी खुलैए
ज्वार चाल बढ़ै छै, सीपी देह बन्दै / भोर किरण चमकै छै, यात्री आँखि तकै
मोन आस बढ़ै छै, बालू कोर बदलै / मुक्ता आभा दिसै छै, जीत सीपी खुलैए
समुद्र लहर घटै छै, भोर किरण पड़ै / यात्री आँखि खुलै छै, मोन आस बचै
सीपी देह खुलै छै, मुक्ता आभा चमकै / ज्वार चाल फेरै छै, अतीत सीपी खुलैए
बालू कोर सूखै छै, यात्री आँखि चमकै / मोन आस जगै छै, सीपी देह बन्दै
भोर किरण चमकै छै, ज्वार चाल बढ़ै / समुद्र लहर सरै छै, संगीत सीपी खुलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९४६ — संगीतमय रूप

भाव: समुद्र, आवरण, भीतरक चमक, ज्वार आ सम्भावनाक बिम्ब। सीपीक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८ मात्रा। सीपीक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'सीपी खुलैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सरोद, हलुक मँजीरा। सीपीक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: सीपीक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: सीपीक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: सीपीक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: सीपीक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: सीपीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: सीपीक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। सीपीक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम स्वरकेँ धीरे विराम दए।

गजल १४७ — धूलि उठै, भोर गोधूलि उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, सोर, डोर, भोर, जोर, छोर, कोर) · रदीफ: गोधूलि उठैए · शेर: ६

गाय झुण्ड चलै छै, घर द्वार बजै / बालक आँखि चमकै छै, नोर गोधूलि उठैए
धूलि रेखा फैलै छै, घण्टी सोर बजै / पवन लहर उठै छै, सोर गोधूलि उठैए
साँझ रंग ढलै छै, बालक आँखि तकै / दिन थकान रहै छै, धूलि रेखा बैसै
घर द्वार खुलै छै, पवन लहर सरै / गाय झुण्ड रुकै छै, डोर गोधूलि उठैए
घण्टी सोर मिलै छै, दिन थकान मिटै / धूलि रेखा उठै छै, घर द्वार बजै
बालक आँखि चमकै छै, गाय झुण्ड चलै / साँझ रंग फैलै छै, भोर गोधूलि उठैए
पवन लहर उठै छै, धूलि रेखा फैलै / घर द्वार रहै छै, बालक आँखि तकै
दिन थकान रहै छै, साँझ रंग ढलै / घण्टी सोर उठै छै, जोर गोधूलि उठैए
गाय झुण्ड रुकै छै, घर द्वार खुलै / बालक आँखि खुलै छै, दिन थकान मिटै
धूलि रेखा उठै छै, घण्टी सोर मिलै / पवन लहर डोलै छै, छोर गोधूलि उठैए
साँझ रंग फैलै छै, बालक आँखि चमकै / दिन थकान घटै छै, धूलि रेखा फैलै
घर द्वार रहै छै, पवन लहर उठै / गाय झुण्ड घुरै छै, कोर गोधूलि उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९४७ — संगीतमय रूप

भाव: घुरैत पशु, धूलि, साँझ, घर-द्वार आ दिनक अवसान। गोधूलिक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: झपताल १० मात्रा। गोधूलिक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ ‘गोधूलि उठैए’ पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, संतूर, विरल तबला। गोधूलिक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: गोधूलिक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: गोधूलिक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: गोधूलिक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: गोधूलिक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: गोधूलिक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: गोधूलिक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। गोधूलिक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; श्रोताक मोनमे प्रश्न बचा छोड़ए।

गजल ९४८ — खेत बँटै, मान मेड़ बोलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, विश्वास, प्रयास, उल्लास, प्यास, आभास, श्वास) · रदीफ: मेड़ बोलैए · शेर: ६

खेत मेड़ उठै छै, नीर धार रुकै / पड़ोसी बात मिलै छै, आस मेड़ बोलैए
माटि रेखा बदलै छै, सीमा बोध बदलै / झगड़ा ताप बढ़ै छै, विश्वास मेड़ बोलैए
किसान पएर मुड़ै छै, पड़ोसी बात उठै / साझा मान बचै छै, माटि रेखा मिटै
नीर धार बहै छै, झगड़ा ताप घटै / खेत मेड़ टूटै छै, प्रयास मेड़ बोलैए
सीमा बोध बढ़ै छै, साझा मान जगै / माटि रेखा दिसै छै, नीर धार रुकै
पड़ोसी बात मिलै छै, खेत मेड़ उठै / किसान पएर रुकै छै, उल्लास मेड़ बोलैए
झगड़ा ताप बढ़ै छै, माटि रेखा बदलै / नीर धार मुड़ै छै, पड़ोसी बात उठै
साझा मान बचै छै, किसान पएर मुड़ै / सीमा बोध जगै छै, प्यास मेड़ बोलैए
खेत मेड़ टूटै छै, नीर धार बहै / पड़ोसी बात खुलै छै, साझा मान जगै
माटि रेखा दिसै छै, सीमा बोध बढ़ै / झगड़ा ताप पड़ै छै, आभास मेड़ बोलैए
किसान पएर रुकै छै, पड़ोसी बात मिलै / साझा मान बढ़ै छै, माटि रेखा बदलै
नीर धार मुड़ै छै, झगड़ा ताप बढ़ै / खेत मेड़ रहै छै, श्वास मेड़ बोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९४८ — संगीतमय रूप

भाव: सीमा, जल, पड़ोसी व्यवहार, विवाद आ साझा जिम्मेदारी। खेतक मेड़क मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: दादरा ६ मात्रा। खेतक मेड़क चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'मेड़ बोलैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु ढोलक। खेतक मेड़क ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: खेतक मेड़क पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: खेतक मेड़क दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: खेतक मेड़क तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: खेतक मेड़क चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: खेतक मेड़क पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: खेतक मेड़क छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। खेतक मेड़क अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; ध्वनिक पाछाँ बिम्ब थिर करए।

गजल १४९ — छत गरमै, चाव धूप उतरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, धाम, ग्राम, विराम, प्रणाम, परिणाम, आयाम) · रदीफ: धूप उतरैए · शेर: ६

दुपहर धूप उतरै छै, पाखी पाँखि समेटै / देह थकान रहै छै, नाम धूप उतरैए
छत ताप घटै छै, घड़ी चाल बदलै / साँझ पवन उठै छै, धाम धूप उतरैए
दीवार छाह लम्बै छै, देह थकान बढ़ै / मोन आराम बढ़ै छै, छत ताप रहै
पाखी पाँखि फैलै छै, साँझ पवन बहै / दुपहर धूप घटै छै, ग्राम धूप उतरैए
घड़ी चाल सरै छै, मोन आराम रहै / छत ताप बढ़ै छै, पाखी पाँखि समेटै
देह थकान रहै छै, दुपहर धूप उतरै / दीवार छाह सरै छै, विराम धूप उतरैए
साँझ पवन उठै छै, छत ताप घटै / पाखी पाँखि उड़ै छै, देह थकान बढ़ै
मोन आराम बढ़ै छै, दीवार छाह लम्बै / घड़ी चाल चलै छै, प्रणाम धूप उतरैए
दुपहर धूप घटै छै, पाखी पाँखि फैलै / देह थकान घटै छै, मोन आराम रहै
छत ताप बढ़ै छै, घड़ी चाल सरै / साँझ पवन सरै छै, परिणाम धूप उतरैए
दीवार छाह सरै छै, देह थकान रहै / मोन आराम जगै छै, छत ताप घटै
पाखी पाँखि उड़ै छै, साँझ पवन उठै / दुपहर धूप फैलै छै, आयाम धूप उतरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९४९ — संगीतमय रूप

भाव: ताप, छाह, समय, देहक थकान आ साँझक प्रतीक्षा। दुपहरिया धूपक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: एकताल १२ मात्रा। दुपहरिया धूपक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'धूप उतरैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, जलतरंग, हलुक पखावज। दुपहरिया धूपक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: दुपहरिया धूपक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: दुपहरिया धूपक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: दुपहरिया धूपक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: दुपहरिया धूपक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: दुपहरिया धूपक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: दुपहरिया धूपक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। दुपहरिया धूपक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अवसानकेँ कोमल राखि अर्थ बहए।

गजल ९५० — दूर रेखा खुलै, पार क्षितिज फैलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (चाल, ताल, काल, जाल, पाल, ढाल, विशाल) · रदीफ: क्षितिज फैलैए · शेर: ६

दूर क्षितिज फैलै छै, बाट रेखा मुड़ै / मोन प्रश्न रहै छै, चाल क्षितिज फैलैए
आकाश रंग फैलै छै, सूरज गोला चमकै / दूरी मान बदलै छै, ताल क्षितिज फैलैए
पथिक दृष्टि खुलै छै, मोन प्रश्न जगै / यात्रा आस बढ़ै छै, आकाश रंग ढलै
बाट रेखा दिसै छै, दूरी मान घटै / दूर क्षितिज दिसै छै, काल क्षितिज फैलैए
सूरज गोला ढलै छै, यात्रा आस बचै / आकाश रंग बदलै छै, बाट रेखा मुड़ै
मोन प्रश्न रहै छै, दूर क्षितिज फैलै / पथिक दृष्टि फिरै छै, जाल क्षितिज फैलैए
दूरी मान बदलै छै, आकाश रंग फैलै / बाट रेखा चलै छै, मोन प्रश्न जगै
यात्रा आस बढ़ै छै, पथिक दृष्टि खुलै / सूरज गोला उठै छै, पाल क्षितिज फैलैए
दूर क्षितिज दिसै छै, बाट रेखा दिसै / मोन प्रश्न बढ़ै छै, यात्रा आस बचै
आकाश रंग बदलै छै, सूरज गोला ढलै / दूरी मान बढ़ै छै, ढाल क्षितिज फैलैए
पथिक दृष्टि फिरै छै, मोन प्रश्न रहै / यात्रा आस जगै छै, आकाश रंग फैलै
बाट रेखा चलै छै, दूरी मान बदलै / दूर क्षितिज खुलै छै, विशाल क्षितिज फैलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९५० — संगीतमय रूप

भाव: दूरी, दृष्टि, यात्रा, अपूर्णता आ निरन्तर खुलैत प्रश्नक अन्तिम बिम्ब। क्षितिजक मुख्य बिम्ब अपन पृथक् भाव-क्षेत्रमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८ मात्रा। क्षितिजक चाल अनुसार ठेक सम्हारल रहए; रदीफ 'क्षितिज फैलैए' पर स्वरक आकार फेर बदलए।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। क्षितिजक ध्वनि-बिम्ब वाद्यसँ नकल नहि, संकेत रूपमे उभरए।
मतला: क्षितिजक पहिल शेर अनुभवकेँ एके अर्थमे नहि बाँधि, जाँच आ पुनर्बोधक बाट खोलैत अछि।
२म शेर: क्षितिजक दोसर शेर श्रम, पहुँच, मान आ साझा व्यवहारक सम्बन्धकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: क्षितिजक तेसर शेर स्मृति, संकेत आ आरोपक भेद बचबैत देखल-सुनल बात फेर परखैत अछि।
४म शेर: क्षितिजक चारिम शेर ज्ञाता, बोध, वस्तु आ कालक भिन्न भूमिका बचबैत निरन्तरताक प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: क्षितिजक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ फल-प्रवृत्तिक कसौटी पर दाबी जाँचैत अछि।
६म शेर: क्षितिजक छठम शेर प्रतिपक्षक स्वरकेँ मान दैत कारण-क्रम आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए। क्षितिजक अन्तिम बिम्ब बन्द नहि हो; अन्तिम शब्द पाछाँ क्षणभर मौन रहए।

गजल ९५१ — राख अँगार खुलै, अँगार बचैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (अँगार, विचार, आधार, कछार, द्वार, भार, सार) · रदीफ: बचैए · शेर: ६

ताप भीतर बढ़ै छै, राख दूर तपै / चूल्हा पाछाँ जगै छै, घर अँगार बचैए

धुआँ एखन उठै छै, घर फेर खुलै / घर सोझाँ खुलै छै, अँगार विचार बचैए

घर सोझाँ खुलै छै, धुआँ एखन उठै / राख राति तपै छै, ताप भीतर बढ़ै

राख संग तपै छै, ताप संग बढ़ै / धुआँ धीरे उठै छै, मोन आधार बचैए

ताप नीचाँ बढ़ै छै, राख धीरे तपै / ताप एखन बढ़ै छै, राख फेर तपै

धुआँ धीरे उठै छै, घर राति खुलै / ताप दूर बढ़ै छै, नेह कछार बचैए

घर पाछाँ खुलै छै, धुआँ ऊपर उठै / धुआँ पाछाँ उठै छै, घर ऊपर खुलै

अँगार सोझाँ बचै छै, चूल्हा पाछाँ जगै / राख भीतर तपै छै, चूल्हा द्वार बचैए

ताप दूर बढ़ै छै, राख सोझाँ तपै / घर भीतर खुलै छै, धुआँ दूर उठै

धुआँ ऊपर उठै छै, घर नीचाँ खुलै / घर संग खुलै छै, अँगार भार बचैए

घर फेर खुलै छै, धुआँ पाछाँ उठै / राख धीरे तपै छै, ताप राति बढ़ै

राख भीतर तपै छै, ताप दूर बढ़ै / धुआँ पाछाँ उठै छै, मोन सार बचैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९५१ — संगीतमय रूप

भाव: राख अँगारक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल तबला। राख अँगारक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: राख अँगारक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: राख अँगारक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: राख अँगारक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: राख अँगारक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: राख अँगारक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: राख अँगारक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १५२ — बीज अँकुर खुलै, मान फेर उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: फेर उठैए · शेर: ६

अँकुर फेर उठै छै, ऋतु पाछाँ बदलै / बीज दूर फूटै छै, मान फेर उठैए
जल भीतर बहै छै, धान दूर उगै / जल नीचाँ बहै छै, ज्ञान फेर उठैए
ऋतु एखन बदलै छै, अँकुर फेर उठै / अँकुर भीतर उठै छै, ऋतु दूर बदलै
मोन सोझाँ जगै छै, बीज एखन फूटै / अँकुर राति उठै छै, ध्यान फेर उठैए
अँकुर संग उठै छै, ऋतु संग बदलै / जल धीरे बहै छै, धान राति उगै
जल नीचाँ बहै छै, धान धीरे उगै / मोन फेर जगै छै, पहिचान फेर उठैए
ऋतु धीरे बदलै छै, अँकुर राति उठै / ऋतु फेर बदलै छै, अँकुर पाछाँ उठै
मोन पाछाँ जगै छै, बीज ऊपर फूटै / ऋतु सोझाँ बदलै छै, अनुमान फेर उठैए
अँकुर राति उठै छै, ऋतु भीतर बदलै / मोन नीचाँ जगै छै, बीज धीरे फूटै
जल दूर बहै छै, धान सोझाँ उगै / जल धीरे बहै छै, विधान फेर उठैए
ऋतु ऊपर बदलै छै, अँकुर नीचाँ उठै / अँकुर ऊपर उठै छै, ऋतु नीचाँ बदलै
मोन फेर जगै छै, बीज पाछाँ फूटै / अँकुर दूर उठै छै, निदान फेर उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९५२ — संगीतमय रूप

भाव: बीज अँकुरक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, मँजीरा, मृदु बाँसुरी। बीज अँकुरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: बीज अँकुरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: बीज अँकुरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: बीज अँकुरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: बीज अँकुरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: बीज अँकुरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: बीज अँकुरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९५३ — ओखरि मूसर खुलै, ताल धुनि बजैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, विशाल) · रदीफ: धुनि बजैए · शेर: ६

ओखरि ऊपर गूँजै छै, धान नीचाँ कुटै / घर फेर जगै छै, ताल धुनि बजैए
धान फेर कुटै छै, ओखरि पाछाँ गूँजै / ओखरि पाछाँ गूँजै छै, चाल धुनि बजैए
ताल भीतर बजै छै, हाथ दूर चलै / धान नीचाँ कुटै छै, ओखरि धीरे गूँजै
हाथ एखन चलै छै, ताल फेर बजै / हाथ ऊपर चलै छै, जाल धुनि बजैए
ओखरि सोझाँ गूँजै छै, धान एखन कुटै / ताल ऊपर बजै छै, हाथ नीचाँ चलै
धान संग कुटै छै, ओखरि संग गूँजै / ताल एखन बजै छै, काल धुनि बजैए
ताल नीचाँ बजै छै, हाथ धीरे चलै / हाथ संग चलै छै, ताल संग बजै
हाथ धीरे चलै छै, ताल राति बजै / धान नीचाँ कुटै छै, ढाल धुनि बजैए
ओखरि पाछाँ गूँजै छै, धान ऊपर कुटै / ओखरि दूर गूँजै छै, धान सोझाँ कुटै
धान राति कुटै छै, ओखरि भीतर गूँजै / ओखरि राति गूँजै छै, लाल धुनि बजैए
ताल दूर बजै छै, हाथ सोझाँ चलै / धान सोझाँ कुटै छै, ओखरि एखन गूँजै
हाथ ऊपर चलै छै, ताल नीचाँ बजै / हाथ फेर चलै छै, विशाल धुनि बजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९५३ — संगीतमय रूप

भाव: ओखरि मूसरक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, पखावजक हलुक ठेक, सारंगी। ओखरि मूसरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: ओखरि मूसरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: ओखरि मूसरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: ओखरि मूसरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: ओखरि मूसरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: ओखरि मूसरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: ओखरि मूसरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९५४ — कनेर फूल खुलै, आस फुलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: फुलैए · शेर: ६

मोन दूर हरसै छै, कनेर सोझाँ फुलै / डारि एखन लहरै छै, भोर आस फुलैए
फूल ऊपर खुलै छै, भोर नीचाँ जगै / भोर दूर जगै छै, कनेर श्वास फुलैए
पात फेर हिलै छै, गन्ध पाछाँ उठै / पात दूर हिलै छै, गन्ध सोझाँ उठै
भोर भीतर जगै छै, फूल दूर खुलै / पात भीतर हिलै छै, बगिया आभास फुलैए
मोन एखन हरसै छै, कनेर फेर फुलै / भोर सोझाँ जगै छै, फूल एखन खुलै
फूल सोझाँ खुलै छै, भोर एखन जगै / फूल संग खुलै छै, गन्ध प्रयास फुलैए
पात संग हिलै छै, गन्ध संग उठै / मोन राति हरसै छै, कनेर भीतर फुलै
भोर नीचाँ जगै छै, फूल धीरे खुलै / मोन पाछाँ हरसै छै, डारि उल्लास फुलैए
मोन धीरे हरसै छै, कनेर राति फुलै / फूल एखन खुलै छै, भोर फेर जगै
फूल पाछाँ खुलै छै, भोर ऊपर जगै / भोर ऊपर जगै छै, कनेर विश्वास फुलैए
पात राति हिलै छै, गन्ध भीतर उठै / पात पाछाँ हिलै छै, गन्ध ऊपर उठै
भोर दूर जगै छै, फूल सोझाँ खुलै / पात एखन हिलै छै, बगिया इतिहास फुलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९५४ — संगीतमय रूप

भाव: कनेर फूलक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, विरल मँजीरा। कनेर फूलक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कनेर फूलक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कनेर फूलक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कनेर फूलक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कनेर फूलक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कनेर फूलक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कनेर फूलक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९५५ — छप्पर बरखा खुलै, नोर टपकि खसैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, भोर, छोर, कोर, जोर, सोर, डोर) · रदीफ: टपकि खसैए · शेर: ६

मेघ राति घुमै छै, आँगन भीतर भरै / मोन संग सुनै छै, नोर टपकि खसैए
छप्पर दूर टपकै छै, बरखा सोझाँ बरसै / बरखा फेर बरसै छै, भोर टपकि खसैए
बरखा ऊपर बरसै छै, छप्पर नीचाँ टपकै / आँगन एखन भरै छै, मेघ फेर घुमै
आँगन फेर भरै छै, मेघ पाछाँ घुमै / छप्पर सोझाँ टपकै छै, छोर टपकि खसैए
मेघ भीतर घुमै छै, आँगन दूर भरै / मेघ पाछाँ घुमै छै, आँगन ऊपर भरै
छप्पर एखन टपकै छै, बरखा फेर बरसै / मेघ धीरे घुमै छै, कोर टपकि खसैए
बरखा सोझाँ बरसै छै, छप्पर एखन टपकै / छप्पर भीतर टपकै छै, बरखा दूर बरसै
आँगन संग भरै छै, मेघ संग घुमै / आँगन दूर भरै छै, जोर टपकि खसैए
मेघ नीचाँ घुमै छै, आँगन धीरे भरै / बरखा धीरे बरसै छै, छप्पर राति टपकै
छप्पर धीरे टपकै छै, बरखा राति बरसै / बरखा भीतर बरसै छै, सोर टपकि खसैए
बरखा पाछाँ बरसै छै, छप्पर ऊपर टपकै / धार धीरे बहै छै, मोन एखन सुनै
आँगन राति भरै छै, मेघ भीतर घुमै / छप्पर संग टपकै छै, डोर टपकि खसैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९५५ — संगीतमय रूप

भाव: छप्पर बरखाक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदंगक कोमल थाप, तानपुरा। छप्पर बरखाक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: छप्पर बरखाक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: छप्पर बरखाक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: छप्पर बरखाक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: छप्पर बरखाक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: छप्पर बरखाक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: छप्पर बरखाक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९५६ — भूसी पवन खुलै, राह दूर उड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, राह, थाह) · रदीफ: दूर उड़ैए · शेर: ६

आकाश पाछाँ फैलै छै, पवन ऊपर बहै / धूरि धीरे उठै छै, राह दूर उड़ैए
मोन राति तकै छै, भूसी भीतर उड़ै / मोन एखन तकै छै, चाह दूर उड़ैए
पवन दूर बहै छै, आकाश सोझाँ फैलै / आकाश धीरे फैलै छै, पवन राति बहै
खेत ऊपर खुलै छै, धूरि नीचाँ उठै / आकाश नीचाँ फैलै छै, थाह दूर उड़ैए
आकाश फेर फैलै छै, पवन पाछाँ बहै / मोन फेर तकै छै, भूसी पाछाँ उड़ै
मोन भीतर तकै छै, भूसी दूर उड़ै / खेत राति खुलै छै, छाह दूर उड़ैए
पवन एखन बहै छै, आकाश फेर फैलै / पवन नीचाँ बहै छै, आकाश धीरे फैलै
खेत सोझाँ खुलै छै, धूरि एखन उठै / पवन फेर बहै छै, आह दूर उड़ैए
आकाश संग फैलै छै, पवन संग बहै / धूरि नीचाँ उठै छै, आकाश फेर फैलै
मोन नीचाँ तकै छै, भूसी धीरे उड़ै / मोन सोझाँ तकै छै, राह दूर उड़ैए
पवन धीरे बहै छै, आकाश राति फैलै / हवा ऊपर फिरै छै, धान ऊपर झरै
खेत पाछाँ खुलै छै, धूरि ऊपर उठै / आकाश धीरे फैलै छै, थाह दूर उड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९५६ — संगीतमय रूप

भाव: भूसी पवनक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, बाँसुरी, हलुक तबला। भूसी पवनक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: भूसी पवनक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: भूसी पवनक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: भूसी पवनक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: भूसी पवनक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: भूसी पवनक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: भूसी पवनक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९५७ — कछार कटान खुलै, मूल कटैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूल (मूल, भूल, फूल, धूल, शूल, मूल, फूल) · रदीफ: कटैए · शेर: ६

किनार धीरे घटै छै, जल राति बढ़ै / धार राति बहै छै, किनार मूल कटैए
जल पाछाँ बढ़ै छै, किनार ऊपर घटै / किनार संग घटै छै, मोन भूल कटैए
कछार राति कटै छै, नदी भीतर चढ़ै / जल ऊपर बढ़ै छै, किनार नीचाँ घटै
नदी दूर चढ़ै छै, कछार सोझाँ कटै / नदी पाछाँ चढ़ै छै, घर फूल कटैए
किनार ऊपर घटै छै, जल नीचाँ बढ़ै / कछार संग कटै छै, नदी संग चढ़ै
जल फेर बढ़ै छै, किनार पाछाँ घटै / कछार ऊपर कटै छै, माटि धूल कटैए
कछार भीतर कटै छै, नदी दूर चढ़ै / माटि संग खसै छै, धार दूर बहै
नदी एखन चढ़ै छै, कछार फेर कटै / जल एखन बढ़ै छै, धार शूल कटैए
किनार सोझाँ घटै छै, जल एखन बढ़ै / घर दूर डरै छै, मोन राति सोचै
जल संग बढ़ै छै, किनार संग घटै / किनार नीचाँ घटै छै, मोन मूल कटैए
कछार नीचाँ कटै छै, नदी धीरे चढ़ै / जल राति बढ़ै छै, किनार भीतर घटै
नदी धीरे चढ़ै छै, कछार राति कटै / नदी राति चढ़ै छै, घर फूल कटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९५७ — संगीतमय रूप

भाव: कछार कटानक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, विरल करताल। कछार कटानक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कछार कटानक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कछार कटानक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कछार कटानक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कछार कटानक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कछार कटानक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कछार कटानक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९५८ — बिचड़ा खेत खुलै, रंग फेर हरियैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, रंग) · रदीफ: फेर हरियैए · शेर: ६

खेत नीचाँ खुलै छै, पात धीरे लहरै / भोर ऊपर जगै छै, रंग फेर हरियैए
माटि धीरे भीजै छै, धान राति उगै / धान धीरे उगै छै, संग फेर हरियैए
मोन पाछाँ हरसै छै, बिचड़ा ऊपर हरियै / मोन सोझाँ हरसै छै, बिचड़ा एखन हरियै
धान राति उगै छै, माटि भीतर भीजै / मोन दूर हरसै छै, ढंग फेर हरियैए
खेत दूर खुलै छै, पात सोझाँ लहरै / जल सोझाँ भरै छै, भोर पाछाँ जगै
माटि ऊपर भीजै छै, धान नीचाँ उगै / माटि भीतर भीजै छै, अंग फेर हरियैए
मोन फेर हरसै छै, बिचड़ा पाछाँ हरियै / खेत एखन खुलै छै, पात फेर लहरै
धान भीतर उगै छै, माटि दूर भीजै / खेत संग खुलै छै, उमंग फेर हरियैए
पात राति लहरै छै, माटि धीरे भीजै / माटि पाछाँ भीजै छै, धान ऊपर उगै
माटि सोझाँ भीजै छै, धान एखन उगै / धान पाछाँ उगै छै, तरंग फेर हरियैए
मोन संग हरसै छै, बिचड़ा संग हरियै / मोन भीतर हरसै छै, बिचड़ा दूर हरियै
धान नीचाँ उगै छै, माटि धीरे भीजै / मोन ऊपर हरसै छै, रंग फेर हरियैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९५८ — संगीतमय रूप

भाव: बिचड़ा खेतक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: मन्द रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, सारंगी, कोमल पखावज। बिचड़ा खेतक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: बिचड़ा खेतक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: बिचड़ा खेतक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: बिचड़ा खेतक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: बिचड़ा खेतक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: बिचड़ा खेतक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: बिचड़ा खेतक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९५९ — काई पोखर खुलै, नाम जल तिरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, दाम, धाम, विराम, परिणाम, नाम, धाम) · रदीफ: जल तिरैए · शेर: ६

जल संग चमकै छै, काई संग तिरै / पात भीतर हिलै छै, नाम जल तिरैए
धूप नीचाँ उतरै छै, छाह धीरे सरकै / छाह राति सरकै छै, दाम जल तिरैए
छाह धीरे सरकै छै, धूप राति उतरै / काई पाछाँ तिरै छै, जल ऊपर चमकै
पोखर एखन भरै छै, पात नीचाँ हिलै / धूप फेर उतरै छै, धाम जल तिरैए
जल राति चमकै छै, काई भीतर तिरै / जल भीतर चमकै छै, काई दूर तिरै
धूप दूर उतरै छै, छाह सोझाँ सरकै / जल सोझाँ चमकै छै, विराम जल तिरैए
छाह ऊपर सरकै छै, धूप नीचाँ उतरै / धूप धीरे उतरै छै, छाह राति सरकै
काई फेर तिरै छै, जल पाछाँ चमकै / काई धीरे तिरै छै, परिणाम जल तिरैए
पात पाछाँ हिलै छै, पोखर संग भरै / छाह फेर सरकै छै, धूप पाछाँ उतरै
धूप एखन उतरै छै, छाह फेर सरकै / छाह दूर सरकै छै, नाम जल तिरैए
छाह सोझाँ सरकै छै, धूप एखन उतरै / काई नीचाँ तिरै छै, जल धीरे चमकै
काई संग तिरै छै, जल संग चमकै / धूप भीतर उतरै छै, धाम जल तिरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९५९ — संगीतमय रूप

भाव: काई पोखरक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, तानपुरा, मृदु मँजीरा। काई पोखरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: काई पोखरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: काई पोखरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: काई पोखरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: काई पोखरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: काई पोखरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: काई पोखरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १६० — बाती दीप खुलै, पीर जरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीर (पीर, नीर, तीर, धीर, चीर, पीर, नीर) · रदीफ: जरैए · शेर: ६

दीप सोझाँ चमकै छै, घर एखन जगै / बाती सोझाँ जरै छै, ज्योति पीर जरैए

ज्योति संग फैलै छै, राति संग ढलै / ज्योति ऊपर फैलै छै, छाह नीर जरैए

घर नीचाँ जगै छै, दीप धीरे चमकै / दीप फेर चमकै छै, घर पाछाँ जगै

मोन धीरे बुझै छै, बाती राति जरै / दीप एखन चमकै छै, राति तीर जरैए

दीप पाछाँ चमकै छै, घर ऊपर जगै / ज्योति नीचाँ फैलै छै, राति धीरे ढलै

ज्योति राति फैलै छै, राति भीतर ढलै / मोन नीचाँ बुझै छै, तेल धीर जरैए

घर दूर जगै छै, दीप सोझाँ चमकै / घर ऊपर जगै छै, दीप नीचाँ चमकै

मोन ऊपर बुझै छै, बाती नीचाँ जरै / घर राति जगै छै, बाती चीर जरैए

तेल धीरे घटै छै, छाह एखन हटै / मोन संग बुझै छै, बाती संग जरै

ज्योति भीतर फैलै छै, राति दूर ढलै / ज्योति फेर फैलै छै, छाह पीर जरैए

घर एखन जगै छै, दीप फेर चमकै / दीप दूर चमकै छै, घर सोझाँ जगै

मोन सोझाँ बुझै छै, बाती एखन जरै / दीप सोझाँ चमकै छै, राति नीर जरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९६० — संगीतमय रूप

भाव: बाती दीपक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, विरल डफ। बाती दीपक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: बाती दीपक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: बाती दीपक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: बाती दीपक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: बाती दीपक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: बाती दीपक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: बाती दीपक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९६१ — सूत तकली खुलै, बात सूत तनैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, बात, रात) · रदीफ: सूत तनैए · शेर: ६

सूत एखन तनै छै, हाथ फेर चलै / कपड़ा नीचाँ बनै छै, बात सूत तनैए
हाथ सोझाँ चलै छै, सूत एखन तनै / सूत भीतर तनै छै, रात सूत तनैए
गाँठ संग खुलै छै, मोन संग थिरै / हाथ संग चलै छै, सूत संग तनै
मोन नीचाँ थिरै छै, गाँठ धीरे खुलै / मोन संग थिरै छै, पात सूत तनैए
सूत धीरे तनै छै, हाथ राति चलै / गाँठ दूर खुलै छै, मोन सोझाँ थिरै
हाथ पाछाँ चलै छै, सूत ऊपर तनै / गाँठ पाछाँ खुलै छै, घात सूत तनैए
गाँठ राति खुलै छै, मोन भीतर थिरै / मोन सोझाँ थिरै छै, गाँठ एखन खुलै
मोन दूर थिरै छै, गाँठ सोझाँ खुलै / हाथ ऊपर चलै छै, प्रभात सूत तनैए
सूत ऊपर तनै छै, हाथ नीचाँ चलै / सूत राति तनै छै, हाथ भीतर चलै
हाथ फेर चलै छै, सूत पाछाँ तनै / सूत एखन तनै छै, बात सूत तनैए
गाँठ भीतर खुलै छै, मोन दूर थिरै / हाथ एखन चलै छै, सूत फेर तनै
मोन एखन थिरै छै, गाँठ फेर खुलै / मोन नीचाँ थिरै छै, रात सूत तनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९६१ — संगीतमय रूप

भाव: सूत तकलीक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल तबला। सूत तकलीक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: सूत तकलीक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: सूत तकलीक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: सूत तकलीक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: सूत तकलीक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: सूत तकलीक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: सूत तकलीक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९६२ — माटिक सोंध खुलै, रूप महकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूप (रूप, धूप, कूप, अनूप, रूप, धूप, कूप) · रदीफ: महकैए · शेर: ६

मोन भीतर जगै छै, माटि दूर महकै / बरखा पाछाँ बरसै छै, धूरि रूप महकैए

सोंध एखन उठै छै, धूरि फेर बसै / धूरि सोझाँ बसै छै, माटि धूप महकैए

गन्ध सोझाँ फैलै छै, आँगन एखन भीजै / गन्ध राति फैलै छै, आँगन भीतर भीजै

धूरि संग बसै छै, सोंध संग उठै / गन्ध धीरे फैलै छै, धरती कूप महकैए

मोन नीचाँ जगै छै, माटि धीरे महकै / धूरि एखन बसै छै, सोंध फेर उठै

सोंध धीरे उठै छै, धूरि राति बसै / सोंध दूर उठै छै, आँगन अनूप महकैए

गन्ध पाछाँ फैलै छै, आँगन ऊपर भीजै / मोन पाछाँ जगै छै, माटि ऊपर महकै

धूरि राति बसै छै, सोंध भीतर उठै / मोन भीतर जगै छै, बरखा रूप महकैए

मोन दूर जगै छै, माटि सोझाँ महकै / सोंध भीतर उठै छै, धूरि दूर बसै

सोंध ऊपर उठै छै, धूरि नीचाँ बसै / धूरि संग बसै छै, माटि धूप महकैए

गन्ध फेर फैलै छै, आँगन पाछाँ भीजै / गन्ध धीरे फैलै छै, आँगन राति भीजै

धूरि भीतर बसै छै, सोंध दूर उठै / गन्ध पाछाँ फैलै छै, धरती कूप महकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९६२ — संगीतमय रूप

भाव: माटिक सोंधक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: झपताल १०।

वाद्य-विन्यास: एकतारा, मँजीरा, मृदु बाँसुरी। माटिक सोंधक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।

मतला: माटिक सोंधक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।

२म शेर: माटिक सोंधक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: माटिक सोंधक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।

४म शेर: माटिक सोंधक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।

५म शेर: माटिक सोंधक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।

६म शेर: माटिक सोंधक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९६३ — बबूल काँट खुलै, मेल भीतर चुभैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ेल (मेल, खेल, बेल, तेल, रेल, मेल, बेल) · रदीफ: भीतर चुभैए · शेर: ६

छाह फेर पसरै छै, राह पाछाँ मुड़ै / मोन दूर बुझै छै, मेल भीतर चुभैए
काँट भीतर चुभै छै, डारि दूर झुकै / डारि नीचाँ झुकै छै, खेल भीतर चुभैए
डारि एखन झुकै छै, काँट फेर चुभै / राह भीतर मुड़ै छै, छाह दूर पसरै
राह सोझाँ मुड़ै छै, छाह एखन पसरै / काँट राति चुभै छै, बेल भीतर चुभैए
छाह संग पसरै छै, राह संग मुड़ै / छाह धीरे पसरै छै, राह राति मुड़ै
काँट नीचाँ चुभै छै, डारि धीरे झुकै / छाह फेर पसरै छै, तेल भीतर चुभैए
डारि धीरे झुकै छै, काँट राति चुभै / काँट फेर चुभै छै, डारि पाछाँ झुकै
राह पाछाँ मुड़ै छै, छाह ऊपर पसरै / राह सोझाँ मुड़ै छै, रेल भीतर चुभैए
छाह राति पसरै छै, राह भीतर मुड़ै / डारि नीचाँ झुकै छै, काँट धीरे चुभै
काँट दूर चुभै छै, डारि सोझाँ झुकै / डारि धीरे झुकै छै, मेल भीतर चुभैए
डारि ऊपर झुकै छै, काँट नीचाँ चुभै / राह ऊपर मुड़ै छै, छाह नीचाँ पसरै
राह फेर मुड़ै छै, छाह पाछाँ पसरै / काँट दूर चुभै छै, बेल भीतर चुभैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९६३ — संगीतमय रूप

भाव: बबूल काँटक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

गति (BPM): ४६–५० · ताल: दादरा ६।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, पखावजक हलुक ठेक, सारंगी। बबूल काँटक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।

मतला: बबूल काँटक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।

२म शेर: बबूल काँटक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: बबूल काँटक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।

४म शेर: बबूल काँटक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।

५म शेर: बबूल काँटक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।

६म शेर: बबूल काँटक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९६४ — ओसार साँझ खुलै, अँगार फेर जगैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (अँगार, विचार, आधार, कछार, द्वार, भार, सार) · रदीफ: फेर जगैए · शेर: ६

साँझ ऊपर ढलै छै, घर नीचाँ खुलै / लोक फेर जुटै छै, अँगार फेर जगैए
मोन फेर सुनै छै, ओसार पाछाँ जगै / मोन पाछाँ सुनै छै, विचार फेर जगैए
घर भीतर खुलै छै, साँझ दूर ढलै / साँझ नीचाँ ढलै छै, घर धीरे खुलै
बात एखन उठै छै, लोक फेर जुटै / साँझ ऊपर ढलै छै, आधार फेर जगैए
साँझ सोझाँ ढलै छै, घर एखन खुलै / मोन ऊपर सुनै छै, ओसार नीचाँ जगै
मोन संग सुनै छै, ओसार संग जगै / बात एखन उठै छै, कछार फेर जगैए
घर नीचाँ खुलै छै, साँझ धीरे ढलै / घर संग खुलै छै, साँझ संग ढलै
बात धीरे उठै छै, लोक राति जुटै / घर नीचाँ खुलै छै, द्वार फेर जगैए
साँझ पाछाँ ढलै छै, घर ऊपर खुलै / बात दूर उठै छै, लोक सोझाँ जुटै
मोन राति सुनै छै, ओसार भीतर जगै / मोन राति सुनै छै, भार फेर जगैए
घर दूर खुलै छै, साँझ सोझाँ ढलै / नेह दूर बढ़ै छै, दीप राति जरै
बात ऊपर उठै छै, लोक नीचाँ जुटै / साँझ फेर ढलै छै, सार फेर जगैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९६४ — संगीतमय रूप

भाव: ओसार साँझक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, विरल मँजीरा। ओसार साँझक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: ओसार साँझक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: ओसार साँझक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: ओसार साँझक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: ओसार साँझक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: ओसार साँझक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: ओसार साँझक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १६५ — बान्ह जल खुलै, मान टिकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: टिकैए · शेर: ६

गाम दूर बचै छै, किनार सोझाँ रहै / जल एखन चढ़ै छै, गाम मान टिकैए
किनार ऊपर रहै छै, गाम नीचाँ बचै / गाम दूर बचै छै, मोन ज्ञान टिकैए
बान्ह फेर टिकै छै, धार पाछाँ बहै / किनार दूर रहै छै, गाम सोझाँ बचै
धार भीतर बहै छै, बान्ह दूर टिकै / धार भीतर बहै छै, खेत ध्यान टिकैए
गाम एखन बचै छै, किनार फेर रहै / बान्ह सोझाँ टिकै छै, धार एखन बहै
किनार सोझाँ रहै छै, गाम एखन बचै / बान्ह संग टिकै छै, माटि पहिचान टिकैए
बान्ह संग टिकै छै, धार संग बहै / धार राति बहै छै, बान्ह भीतर टिकै
धार नीचाँ बहै छै, बान्ह धीरे टिकै / किनार पाछाँ रहै छै, जल अनुमान टिकैए
गाम धीरे बचै छै, किनार राति रहै / खेत राति हरियै छै, मोन धीरे परखै
किनार पाछाँ रहै छै, गाम ऊपर बचै / गाम ऊपर बचै छै, मोन विधान टिकैए
बान्ह राति टिकै छै, धार भीतर बहै / मोन एखन परखै छै, खेत नीचाँ हरियै
धार दूर बहै छै, बान्ह सोझाँ टिकै / धार एखन बहै छै, खेत निदान टिकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९६५ — संगीतमय रूप

भाव: बान्ह जलक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदंगक कोमल थाप, तानपुरा। बान्ह जलक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: बान्ह जलक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: बान्ह जलक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: बान्ह जलक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: बान्ह जलक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: बान्ह जलक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: बान्ह जलक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९६६ — कुट्टी खलिहान खुलै, ताल धूरि उड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, विशाल) · रदीफ: धूरि उड़ैए · शेर: ६

पवन राति बहै छै, खेत भीतर खुलै / धूरि संग उठै छै, ताल धूरि उड़ैए
खलिहान दूर गूँजै छै, धान सोझाँ झरै / धान फेर झरै छै, चाल धूरि उड़ैए
मोन ऊपर सुनै छै, कुट्टी नीचाँ उड़ै / मोन एखन सुनै छै, कुट्टी फेर उड़ै
धान फेर झरै छै, खलिहान पाछाँ गूँजै / मोन सोझाँ सुनै छै, जाल धूरि उड़ैए
पवन भीतर बहै छै, खेत दूर खुलै / धान पाछाँ झरै छै, खलिहान ऊपर गूँजै
खलिहान एखन गूँजै छै, धान फेर झरै / खलिहान धीरे गूँजै छै, काल धूरि उड़ैए
मोन सोझाँ सुनै छै, कुट्टी एखन उड़ै / खेत पाछाँ खुलै छै, खलिहान संग गूँजै
धान संग झरै छै, खलिहान संग गूँजै / पवन दूर बहै छै, ढाल धूरि उड़ैए
पवन नीचाँ बहै छै, खेत धीरे खुलै / खलिहान धीरे गूँजै छै, धान राति झरै
धूरि भीतर उठै छै, भूसा सोझाँ फैलै / धान भीतर झरै छै, लाल धूरि उड़ैए
मोन पाछाँ सुनै छै, कुट्टी ऊपर उड़ै / मोन फेर सुनै छै, कुट्टी पाछाँ उड़ै
धान राति झरै छै, खलिहान भीतर गूँजै / मोन संग सुनै छै, विशाल धूरि उड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९६६ — संगीतमय रूप

भाव: कुट्टी खलिहानक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: मन्द रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, बाँसुरी, हलुक तबला। कुट्टी खलिहानक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कुट्टी खलिहानक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कुट्टी खलिहानक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कुट्टी खलिहानक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कुट्टी खलिहानक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कुट्टी खलिहानक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कुट्टी खलिहानक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९६७ — काँच चूड़ी खुलै, आस मृदु खनकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: मृदु खनकैए · शेर: ६

धुनि पाछाँ उठै छै, काँच ऊपर चमकै / हाथ धीरे चलै छै, आस मृदु खनकैए
रंग राति फैलै छै, साँझ भीतर ढलै / साँझ एखन ढलै छै, श्वास मृदु खनकैए
साँझ दूर ढलै छै, रंग सोझाँ फैलै / काँच धीरे चमकै छै, धुनि राति उठै
काँच ऊपर चमकै छै, धुनि नीचाँ उठै / रंग नीचाँ फैलै छै, आभास मृदु खनकैए
धुनि फेर उठै छै, काँच पाछाँ चमकै / हाथ धीरे चलै छै, चूड़ी एखन खनकै
रंग भीतर फैलै छै, साँझ दूर ढलै / धुनि राति उठै छै, प्रयास मृदु खनकैए
साँझ एखन ढलै छै, रंग फेर फैलै / रंग नीचाँ फैलै छै, साँझ धीरे ढलै
काँच सोझाँ चमकै छै, धुनि एखन उठै / काँच फेर चमकै छै, उल्लास मृदु खनकैए
धुनि संग उठै छै, काँच संग चमकै / साँझ ऊपर ढलै छै, रंग नीचाँ फैलै
नेह फेर जगै छै, मोन भीतर सुनै / साँझ सोझाँ ढलै छै, विश्वास मृदु खनकैए
साँझ धीरे ढलै छै, रंग राति फैलै / काँच संग चमकै छै, धुनि संग उठै
काँच पाछाँ चमकै छै, धुनि ऊपर उठै / रंग धीरे फैलै छै, इतिहास मृदु खनकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९६७ — संगीतमय रूप

भाव: काँच चूड़ीक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, विरल करताल। काँच चूड़ीक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: काँच चूड़ीक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: काँच चूड़ीक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: काँच चूड़ीक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: काँच चूड़ीक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: काँच चूड़ीक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: काँच चूड़ीक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९६८ — बेल लता खुलै, नोर लहरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (नोर, भोर, छोर, कोर, जोर, सोर, डोर) · रदीफ: लहरैए · शेर: ६

लता धीरे चढ़ै छै, छाह राति पसरै / बेल राति लहरै छै, पात नोर लहरैए
पात पाछाँ हिलै छै, दीवार ऊपर नुकै / पात संग हिलै छै, भोर भोर लहरैए
छाह राति पसरै छै, लता भीतर चढ़ै / लता ऊपर चढ़ै छै, छाह नीचाँ पसरै
मोन दूर हरसै छै, बेल सोझाँ लहरै / लता पाछाँ चढ़ै छै, दीवार छोर लहरैए
डारि नीचाँ झुकै छै, भोर फेर जगै / पात संग हिलै छै, दीवार संग नुकै
पात फेर हिलै छै, दीवार पाछाँ नुकै / मोन ऊपर हरसै छै, डारि कोर लहरैए
छाह भीतर पसरै छै, लता दूर चढ़ै / छाह दूर पसरै छै, लता सोझाँ चढ़ै
मोन एखन हरसै छै, बेल फेर लहरै / छाह एखन पसरै छै, बेल जोर लहरैए
लता सोझाँ चढ़ै छै, छाह एखन पसरै / मोन सोझाँ हरसै छै, बेल एखन लहरै
दीवार ऊपर नुकै छै, छाह ऊपर पसरै / पात नीचाँ हिलै छै, भोर सोर लहरैए
छाह नीचाँ पसरै छै, लता धीरे चढ़ै / लता राति चढ़ै छै, छाह भीतर पसरै
मोन धीरे हरसै छै, बेल राति लहरै / लता राति चढ़ै छै, दीवार डोर लहरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९६८ — संगीतमय रूप

भाव: बेल लताक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, सारंगी, कोमल पखावज। बेल लताक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: बेल लताक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: बेल लताक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: बेल लताक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: बेल लताक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: बेल लताक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: बेल लताक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९६९ — नाल जल खुलै, राह नीचाँ बहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, राह, थाह) · रदीफ: नीचाँ बहैए · शेर: ६

नाल नीचाँ बहै छै, खेत धीरे भीजै / मेड़ ऊपर टिकै छै, राह नीचाँ बहैए
खेत धीरे भीजै छै, नाल राति बहै / नाल धीरे बहै छै, चाह नीचाँ बहैए
धार पाछाँ मुड़ै छै, धान ऊपर उगै / खेत सोझाँ भीजै छै, नाल एखन बहै
धान राति उगै छै, धार भीतर मुड़ै / धान दूर उगै छै, थाह नीचाँ बहैए
नाल दूर बहै छै, खेत सोझाँ भीजै / धार राति मुड़ै छै, धान भीतर उगै
खेत ऊपर भीजै छै, नाल नीचाँ बहै / धार भीतर मुड़ै छै, छाह नीचाँ बहैए
धार फेर मुड़ै छै, धान पाछाँ उगै / धान एखन उगै छै, धार फेर मुड़ै
धान भीतर उगै छै, धार दूर मुड़ै / खेत संग भीजै छै, आह नीचाँ बहैए
नाल एखन बहै छै, खेत फेर भीजै / नाल पाछाँ बहै छै, खेत ऊपर भीजै
माटि दूर भीजै छै, जल राति चलै / नाल पाछाँ बहै छै, राह नीचाँ बहैए
धार संग मुड़ै छै, धान संग उगै / खेत भीतर भीजै छै, नाल दूर बहै
धान नीचाँ उगै छै, धार धीरे मुड़ै / धान ऊपर उगै छै, थाह नीचाँ बहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९६९ — संगीतमय रूप

भाव: नाल जलक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, तानपुरा, मृदु मँजीरा। नाल जलक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: नाल जलक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: नाल जलक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: नाल जलक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: नाल जलक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: नाल जलक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: नाल जलक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १७० — चन्द्र ज्योति खुलै, मूल दूर पसरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूल (मूल, भूल, फूल, धूल, शूल, मूल, फूल) · रदीफ: दूर पसरैए · शेर: ६

मोन संग जगै छै, ज्योति संग पसरै / राति भीतर ढलै छै, मूल दूर पसरैए
चाँद नीचाँ झुकै छै, घर धीरे सुतै / घर राति सुतै छै, भूल दूर पसरैए
आकाश धीरे खुलै छै, छाह राति सरकै / आकाश पाछाँ खुलै छै, छाह ऊपर सरकै
घर पाछाँ सुतै छै, चाँद ऊपर झुकै / आकाश फेर खुलै छै, फूल दूर पसरैए
मोन राति जगै छै, ज्योति भीतर पसरै / घर भीतर सुतै छै, चाँद दूर झुकै
चाँद दूर झुकै छै, घर सोझाँ सुतै / चाँद सोझाँ झुकै छै, धूल दूर पसरैए
आकाश ऊपर खुलै छै, छाह नीचाँ सरकै / मोन धीरे जगै छै, ज्योति राति पसरै
घर फेर सुतै छै, चाँद पाछाँ झुकै / मोन धीरे जगै छै, शूल दूर पसरैए
मोन भीतर जगै छै, ज्योति दूर पसरै / चाँद फेर झुकै छै, घर पाछाँ सुतै
चाँद एखन झुकै छै, घर फेर सुतै / घर दूर सुतै छै, मूल दूर पसरैए
आकाश सोझाँ खुलै छै, छाह एखन सरकै / आकाश नीचाँ खुलै छै, छाह धीरे सरकै
घर संग सुतै छै, चाँद संग झुकै / आकाश भीतर खुलै छै, फूल दूर पसरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९७० — संगीतमय रूप

भाव: चन्द्र ज्योतिक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, विरल डफ। चन्द्र ज्योतिक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: चन्द्र ज्योतिक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: चन्द्र ज्योतिक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: चन्द्र ज्योतिक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: चन्द्र ज्योतिक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: चन्द्र ज्योतिक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: चन्द्र ज्योतिक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९७१ — पीतल लोटा खुलै, रंग चमकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, रंग) · रदीफ: चमकैए · शेर: ६

छवि सोझाँ दिसै छै, घर एखन जगै / मोन सोझाँ बुझै छै, जल रंग चमकैए
लोटा संग चमकै छै, जल संग भरै / जल ऊपर भरै छै, हाथ संग चमकैए
जल नीचाँ भरै छै, लोटा धीरे चमकै / घर फेर जगै छै, छवि पाछाँ दिसै
घर धीरे जगै छै, छवि राति दिसै / लोटा एखन चमकै छै, धूप ढंग चमकैए
छवि पाछाँ दिसै छै, घर ऊपर जगै / छवि नीचाँ दिसै छै, घर धीरे जगै
लोटा राति चमकै छै, जल भीतर भरै / छवि नीचाँ दिसै छै, पीतल अंग चमकैए
जल दूर भरै छै, लोटा सोझाँ चमकै / लोटा ऊपर चमकै छै, जल नीचाँ भरै
घर ऊपर जगै छै, छवि नीचाँ दिसै / घर राति जगै छै, मोन उमंग चमकैए
छवि फेर दिसै छै, घर पाछाँ जगै / जल संग भरै छै, लोटा संग चमकै
लोटा भीतर चमकै छै, जल दूर भरै / जल फेर भरै छै, हाथ तरंग चमकैए
जल एखन भरै छै, लोटा फेर चमकै / घर दूर जगै छै, छवि सोझाँ दिसै
घर सोझाँ जगै छै, छवि एखन दिसै / लोटा सोझाँ चमकै छै, धूप रंग चमकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९७१ — संगीतमय रूप

भाव: पीतल लोटाक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल तबला। पीतल लोटाक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: पीतल लोटाक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: पीतल लोटाक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: पीतल लोटाक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: पीतल लोटाक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: पीतल लोटाक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: पीतल लोटाक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९७२ — पोथीक पन्ना खुलै, नाम धीरे सरकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, दाम, धाम, विराम, परिणाम, नाम, धाम) · रदीफ: धीरे सरकैए · शेर: ६

ज्ञान एखन बढ़ै छै, पोथी फेर खुलै / बात नीचाँ बुझै छै, नाम धीरे सरकैए
मोन सोझाँ पढ़ै छै, पन्ना एखन सरकै / मोन भीतर पढ़ै छै, दाम धीरे सरकैए
पोथी संग खुलै छै, ज्ञान संग बढ़ै / ज्ञान संग बढ़ै छै, पोथी संग खुलै
स्याही नीचाँ दिसै छै, बात धीरे बुझै / ज्ञान संग बढ़ै छै, धाम धीरे सरकैए
ज्ञान धीरे बढ़ै छै, पोथी राति खुलै / मोन दूर पढ़ै छै, पन्ना सोझाँ सरकै
मोन पाछाँ पढ़ै छै, पन्ना ऊपर सरकै / स्याही पाछाँ दिसै छै, विराम धीरे सरकैए
पोथी राति खुलै छै, ज्ञान भीतर बढ़ै / पोथी सोझाँ खुलै छै, ज्ञान एखन बढ़ै
स्याही दूर दिसै छै, बात सोझाँ बुझै / पोथी ऊपर खुलै छै, परिणाम धीरे सरकैए
ज्ञान ऊपर बढ़ै छै, पोथी नीचाँ खुलै / स्याही राति दिसै छै, बात भीतर बुझै
मोन फेर पढ़ै छै, पन्ना पाछाँ सरकै / मोन एखन पढ़ै छै, नाम धीरे सरकैए
पोथी भीतर खुलै छै, ज्ञान दूर बढ़ै / हाथ राति फिरै छै, आखर धीरे जगै
स्याही एखन दिसै छै, बात फेर बुझै / ज्ञान नीचाँ बढ़ै छै, धाम धीरे सरकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९७२ — संगीतमय रूप

भाव: पोथीक पन्नाक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, मँजीरा, मृदु बाँसुरी। पोथीक पन्नाक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: पोथीक पन्नाक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: पोथीक पन्नाक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: पोथीक पन्नाक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: पोथीक पन्नाक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: पोथीक पन्नाक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: पोथीक पन्नाक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९७३ — रुई सूत खुलै, पीर ऊपर उड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीर (पीर, नीर, तीर, धीर, चीर, पीर, नीर) · रदीफ: ऊपर उड़ैए · शेर: ६

हाथ भीतर चलै छै, धूरि दूर फैलै / धुनि पाछाँ उठै छै, पीर ऊपर उड़ैए
धूरि एखन फैलै छै, हाथ फेर चलै / हाथ सोझाँ चलै छै, नीर ऊपर उड़ैए
रुई सोझाँ उड़ै छै, सूत एखन बनै / धूरि राति फैलै छै, हाथ भीतर चलै
सूत संग बनै छै, रुई संग उड़ै / सूत धीरे बनै छै, तीर ऊपर उड़ैए
हाथ नीचाँ चलै छै, धूरि धीरे फैलै / रुई एखन उड़ै छै, सूत फेर बनै
धूरि धीरे फैलै छै, हाथ राति चलै / रुई दूर उड़ै छै, धीर ऊपर उड़ैए
रुई पाछाँ उड़ै छै, सूत ऊपर बनै / सूत पाछाँ बनै छै, रुई ऊपर उड़ै
सूत राति बनै छै, रुई भीतर उड़ै / धूरि भीतर फैलै छै, चीर ऊपर उड़ैए
हाथ दूर चलै छै, धूरि सोझाँ फैलै / तकली पाछाँ घुमै छै, मोन संग तकै
धूरि ऊपर फैलै छै, हाथ नीचाँ चलै / हाथ संग चलै छै, पीर ऊपर उड़ैए
रुई फेर उड़ै छै, सूत पाछाँ बनै / मोन भीतर तकै छै, तकली सोझाँ घुमै
सूत भीतर बनै छै, रुई दूर उड़ै / सूत पाछाँ बनै छै, नीर ऊपर उड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९७३ — संगीतमय रूप

भाव: रुई सूतक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, पखावजक हलुक ठेक, सारंगी। रुई सूतक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: रुई सूतक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: रुई सूतक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: रुई सूतक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: रुई सूतक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: रुई सूतक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: रुई सूतक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९७४ — धूरिक बाट खुलै, बात उड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, बात, रात) · रदीफ: उड़ैए · शेर: ६

गाम फेर दिसै छै, पवन पाछाँ बहै / साँझ दूर ढलै छै, बाट बात उड़ैए
राह भीतर खुलै छै, बाट दूर मुड़ै / बाट नीचाँ मुड़ै छै, पवन रात उड़ैए
मोन एखन घुरै छै, धूरि फेर उड़ै / मोन भीतर घुरै छै, धूरि दूर उड़ै
बाट सोझाँ मुड़ै छै, राह एखन खुलै / मोन राति घुरै छै, पएर पात उड़ैए
गाम संग दिसै छै, पवन संग बहै / बाट धीरे मुड़ै छै, राह राति खुलै
राह नीचाँ खुलै छै, बाट धीरे मुड़ै / राह फेर खुलै छै, धूरि घात उड़ैए
मोन धीरे घुरै छै, धूरि राति उड़ै / पवन धीरे बहै छै, राह एखन खुलै
बाट पाछाँ मुड़ै छै, राह ऊपर खुलै / गाम सोझाँ दिसै छै, साँझ प्रभात उड़ैए
गाम राति दिसै छै, पवन भीतर बहै / साँझ फेर ढलै छै, पएर भीतर चलै
राह दूर खुलै छै, बाट सोझाँ मुड़ै / बाट धीरे मुड़ै छै, पवन बात उड़ैए
मोन ऊपर घुरै छै, धूरि नीचाँ उड़ै / धूरि नीचाँ उड़ै छै, बाट फेर मुड़ै
बाट फेर मुड़ै छै, राह पाछाँ खुलै / मोन दूर घुरै छै, पएर रात उड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९७४ — संगीतमय रूप

भाव: धूरिक बाटक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: मन्द रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, विरल मँजीरा। धूरिक बाटक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: धूरिक बाटक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: धूरिक बाटक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: धूरिक बाटक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: धूरिक बाटक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: धूरिक बाटक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: धूरिक बाटक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९७५ — साँकल द्वार खुलै, रूप राति खनकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूप (रूप, धूप, कूप, अनूप, रूप, धूप, कूप) · रदीफ: राति खनकैए · शेर: ६

घर ऊपर जगै छै, साँकल नीचाँ खनकै / धुनि फेर उठै छै, रूप राति खनकैए
राति फेर ढलै छै, पएर पाछाँ रुकै / पएर पाछाँ रुकै छै, धूप राति खनकैए
पएर भीतर रुकै छै, राति दूर ढलै / साँकल नीचाँ खनकै छै, घर धीरे जगै
साँकल एखन खनकै छै, घर फेर जगै / राति ऊपर ढलै छै, कूप राति खनकैए
घर सोझाँ जगै छै, साँकल एखन खनकै / धुनि नीचाँ उठै छै, द्वार फेर खुलै
राति संग ढलै छै, पएर संग रुकै / घर एखन जगै छै, अनूप राति खनकैए
पएर नीचाँ रुकै छै, राति धीरे ढलै / नेह ऊपर रहै छै, मोन ऊपर सुनै
साँकल धीरे खनकै छै, घर राति जगै / साँकल नीचाँ खनकै छै, रूप राति खनकैए
घर पाछाँ जगै छै, साँकल ऊपर खनकै / पएर दूर रुकै छै, राति सोझाँ ढलै
राति राति ढलै छै, पएर भीतर रुकै / पएर राति रुकै छै, धूप राति खनकैए
मोन संग सुनै छै, नेह दूर रहै / साँकल सोझाँ खनकै छै, घर एखन जगै
साँकल ऊपर खनकै छै, घर नीचाँ जगै / राति फेर ढलै छै, कूप राति खनकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९७५ — संगीतमय रूप

भाव: साँकल द्वारक बिम्बसँ स्मृति, प्रश्न, देह, समाज आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द दादरा ६।

वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदंगक कोमल थाप, तानपुरा। साँकल द्वारक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।

मतला: साँकल द्वारक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।

२म शेर: साँकल द्वारक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: साँकल द्वारक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।

४म शेर: साँकल द्वारक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।

५म शेर: साँकल द्वारक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।

६म शेर: साँकल द्वारक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९७६ — सिलौट लोढ़ा बजै, सोर धीमे थिरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: धीमे थिरैए · शेर: ६

लोढ़ा सोझाँ चलै छै, आँखि रूप परखै / सिलौट संग सोर धीमे थिरैए
मरिच पाछाँ पिसै छै, कान लोढ़ाक सोर सुनै / लोढ़ा पाछाँ भोर धीमे थिरैए
सिलौट भीतर बजै छै, लोक लोढ़ाक नाम बुझै / सोर लोढ़ा लग उठै छै, काजक फल देखै
लोढ़ा संग चलै छै, बोली राह बनै / मरिच भीतर नोर धीमे थिरैए
मरिच राति पिसै छै, पुरान लोढ़ाक छाप जगै / सिलौट लोढ़ा पाछाँ बजै छै, मोन भेद बुझै
सोर भीतर उठै छै, स्मृति लोढ़ाक रूप धरै / सोर सोझाँ छोर धीमे थिरैए
लोढ़ा दूर चलै छै, देखनिहार बदलै / सिलौट लोढ़ा लग बजै छै, बोध संग चलै
मरिच भीतर पिसै छै, काल लोढ़ाक चिन्ह धरै / लोढ़ा संग जोर धीमे थिरैए
सोर पाछाँ उठै छै, चिन्ह लोढ़ाक हेतु कहै / लोढ़ा सोझाँ चलै छै, बाध बीच रहै
सिलौट राति बजै छै, फल लोढ़ाक साँच परखै / सिलौट भीतर डोर धीमे थिरैए
मरिच फेर पिसै छै, कारण लोढ़ाक क्रम खुलै / सोर लोढ़ा दूर उठै छै, दोसरक मत सुनै
लोढ़ा एखन चलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / मरिच पाछाँ कोर धीमे थिरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९७६ — संगीतमय रूप

भाव: सिलौट लोढ़ाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल तबला। सिलौट लोढ़ाक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: सिलौट लोढ़ाक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: सिलौट लोढ़ाक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: सिलौट लोढ़ाक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: सिलौट लोढ़ाक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: सिलौट लोढ़ाक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: सिलौट लोढ़ाक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १७७ — बाँस दउरा जुड़ै, मान सँचि उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: सँचि उठैए · शेर: ६

बाँस सोझाँ नमै छै, आँखि रूप परखै / दउरा संग मान सँचि उठैए
चीर पाछाँ मुड़ै छै, कान बाँसक सोर सुनै / बाँस पाछाँ ज्ञान सँचि उठैए
दउरा भीतर बनै छै, लोक बाँसक नाम बुझै / हाथ बाँस लग जोड़ै छै, काजक फल देखै
बाँस संग नमै छै, बोली राह बनै / चीर भीतर ध्यान सँचि उठैए
चीर राति मुड़ै छै, पुरान बाँसक छाप जगै / दउरा बाँस पाछाँ बनै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर जोड़ै छै, स्मृति बाँसक रूप धरै / हाथ सोझाँ पहिचान सँचि उठैए
बाँस दूर नमै छै, देखनिहार बदलै / दउरा बाँस लग बनै छै, बोध संग चलै
चीर भीतर मुड़ै छै, काल बाँसक चिन्ह धरै / बाँस संग अनुमान सँचि उठैए
हाथ पाछाँ जोड़ै छै, चिन्ह बाँसक हेतु कहै / बाँस सोझाँ नमै छै, बाध बीच रहै
दउरा राति बनै छै, फल बाँसक साँच परखै / दउरा भीतर विधान सँचि उठैए
चीर फेर मुड़ै छै, कारण बाँसक क्रम खुलै / हाथ बाँस दूर जोड़ै छै, दोसरक मत सुनै
बाँस एखन नमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / चीर पाछाँ निदान सँचि उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९७७ — संगीतमय रूप

भाव: बाँस दउराक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३५–३९ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मँजीरा, मृदु पखावज। बाँस दउराक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: बाँस दउराक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: बाँस दउराक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: बाँस दउराक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: बाँस दउराक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: बाँस दउराक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: बाँस दउराक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १७८ — तराजू पल्ला झुकै, विचार तोलि देखैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (विचार, आधार, कछार, दुआर, भार, पुकार, सार) · रदीफ: तोलि देखैए · शेर: ६

तराजू सोझाँ झुकै छै, आँखि रूप परखै / बटखरा संग विचार तोलि देखैए
पल्ला पाछाँ उठै छै, कान तराजूक सोर सुनै / तराजू पाछाँ आधार तोलि देखैए
बटखरा भीतर बैसै छै, लोक तराजूक नाम बुझै / मोल तराजू लग बदलै छै, काजक फल देखै
तराजू संग झुकै छै, बोली राह बनै / पल्ला भीतर कछार तोलि देखैए
पल्ला राति उठै छै, पुरान तराजूक छाप जगै / बटखरा तराजू पाछाँ बैसै छै, मोन भेद बुझै
मोल भीतर बदलै छै, स्मृति तराजूक रूप धरै / मोल सोझाँ दुआर तोलि देखैए
तराजू दूर झुकै छै, देखनिहार बदलै / बटखरा तराजू लग बैसै छै, बोध संग चलै
पल्ला भीतर उठै छै, काल तराजूक चिन्ह धरै / तराजू संग भार तोलि देखैए
मोल पाछाँ बदलै छै, चिन्ह तराजूक हेतु कहै / तराजू सोझाँ झुकै छै, बाध बीच रहै
बटखरा राति बैसै छै, फल तराजूक साँच परखै / बटखरा भीतर पुकार तोलि देखैए
पल्ला फेर उठै छै, कारण तराजूक क्रम खुलै / मोल तराजू दूर बदलै छै, दोसरक मत सुनै
तराजू एखन झुकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पल्ला पाछाँ सार तोलि देखैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९७८ — संगीतमय रूप

भाव: तराजू बटखराक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, ढोलकक हलुक थाप, बाँसुरी। तराजू बटखराक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: तराजू बटखराक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: तराजू बटखराक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: तराजू बटखराक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: तराजू बटखराक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: तराजू बटखराक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: तराजू बटखराक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १७९ — हँसुआ धार चमकै, सार फेर दमकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: फेर दमकैए · शेर: ६

हँसुआ सोझाँ चमकै छै, आँखि रूप परखै / धार संग सार फेर दमकैए
धान पाछाँ झुकै छै, कान हँसुआक सोर सुनै / हँसुआ पाछाँ धार फेर दमकैए
धार भीतर कटै छै, लोक हँसुआक नाम बुझै / हाथ हँसुआ लग चलै छै, काजक फल देखै
हँसुआ संग चमकै छै, बोली राह बनै / धान भीतर विचार फेर दमकैए
धान राति झुकै छै, पुरान हँसुआक छाप जगै / धार हँसुआ पाछाँ कटै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर चलै छै, स्मृति हँसुआक रूप धरै / हाथ सोझाँ आधार फेर दमकैए
हँसुआ दूर चमकै छै, देखनिहार बदलै / धार हँसुआ लग कटै छै, बोध संग चलै
धान भीतर झुकै छै, काल हँसुआक चिन्ह धरै / हँसुआ संग कछार फेर दमकैए
हाथ पाछाँ चलै छै, चिन्ह हँसुआक हेतु कहै / हँसुआ सोझाँ चमकै छै, बाध बीच रहै
धार राति कटै छै, फल हँसुआक साँच परखै / धार भीतर दुआर फेर दमकैए
धान फेर झुकै छै, कारण हँसुआक क्रम खुलै / हाथ हँसुआ दूर चलै छै, दोसरक मत सुनै
हँसुआ एखन चमकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / धान पाछाँ भार फेर दमकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९७९ — संगीतमय रूप

भाव: हँसुआ धारक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३७–४१ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, मृदु मँजीरा। हँसुआ धारक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: हँसुआ धारक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: हँसुआ धारक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: हँसुआ धारक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: हँसुआ धारक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: हँसुआ धारक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: हँसुआ धारक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९८० — जाँता दाना पिसै, गान मृदु बजैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (गान, तान, मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, विधान) · रदीफ: मृदु बजैए · शेर: ६

जाँता सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / दाना संग गान मृदु बजैए
हाथ पाछाँ चलै छै, कान जाँताक सोर सुनै / जाँता पाछाँ तान मृदु बजैए
दाना भीतर पिसै छै, लोक जाँताक नाम बुझै / सोर जाँता लग उठै छै, काजक फल देखै
जाँता संग घुमै छै, बोली राह बनै / हाथ भीतर मान मृदु बजैए
हाथ राति चलै छै, पुरान जाँताक छाप जगै / दाना जाँता पाछाँ पिसै छै, मोन भेद बुझै
सोर भीतर उठै छै, स्मृति जाँताक रूप धरै / सोर सोझाँ ज्ञान मृदु बजैए
जाँता दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै / दाना जाँता लग पिसै छै, बोध संग चलै
हाथ भीतर चलै छै, काल जाँताक चिन्ह धरै / जाँता संग ध्यान मृदु बजैए
सोर पाछाँ उठै छै, चिन्ह जाँताक हेतु कहै / जाँता सोझाँ घुमै छै, बाध बीच रहै
दाना राति पिसै छै, फल जाँताक साँच परखै / दाना भीतर पहिचान मृदु बजैए
हाथ फेर चलै छै, कारण जाँताक क्रम खुलै / सोर जाँता दूर उठै छै, दोसरक मत सुनै
जाँता एखन घुमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / हाथ पाछाँ विधान मृदु बजैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९८० — संगीतमय रूप

भाव: जाँता पिसानक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, पखावजक कोमल ठेक, तानपुरा। जाँता पिसानक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: जाँता पिसानक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: जाँता पिसानक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: जाँता पिसानक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: जाँता पिसानक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: जाँता पिसानक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: जाँता पिसानक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९८१ — कोदो बालि डोलै, उमंग साँझ धरि डोलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (उमंग, रंग, संग, ढंग, अंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: साँझ धरि डोलैए · शेर: ६

कोदो सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / बालि संग उमंग साँझ धरि डोलैए
पवन पाछाँ बहै छै, कान कोदोक सोर सुनै / कोदो पाछाँ रंग साँझ धरि डोलैए
बालि भीतर झुकै छै, लोक कोदोक नाम बुझै / खेत कोदो लग लहरै छै, काजक फल देखै
कोदो संग डोलै छै, बोली राह बनै / पवन भीतर संग साँझ धरि डोलैए
पवन राति बहै छै, पुरान कोदोक छाप जगै / बालि कोदो पाछाँ झुकै छै, मोन भेद बुझै
खेत भीतर लहरै छै, स्मृति कोदोक रूप धरै / खेत सोझाँ ढंग साँझ धरि डोलैए
कोदो दूर डोलै छै, देखनिहार बदलै / बालि कोदो लग झुकै छै, बोध संग चलै
पवन भीतर बहै छै, काल कोदोक चिन्ह धरै / कोदो संग अंग साँझ धरि डोलैए
खेत पाछाँ लहरै छै, चिन्ह कोदोक हेतु कहै / कोदो सोझाँ डोलै छै, बाध बीच रहै
बालि राति झुकै छै, फल कोदोक साँच परखै / बालि भीतर तरंग साँझ धरि डोलैए
पवन फेर बहै छै, कारण कोदोक क्रम खुलै / खेत कोदो दूर लहरै छै, दोसरक मत सुनै
कोदो एखन डोलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पवन पाछाँ प्रसंग साँझ धरि डोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९८१ — संगीतमय रूप

भाव: कोदो खेतक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, सारंगी, मन्द तबला। कोदो खेतक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कोदो खेतक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कोदो खेतक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कोदो खेतक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कोदो खेतक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कोदो खेतक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कोदो खेतक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९८२ — छत्ता मधु भरै, आस मधु सँ भरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: मधु सँ भरैए · शेर: ६

मधुमाछि सोझाँ उड़ै छै, आँखि रूप परखै / छत्ता संग आस मधु सँ भरैए
फूल पाछाँ महकै छै, कान मधुमाछिक सोर सुनै / मधुमाछि पाछाँ श्वास मधु सँ भरैए
छत्ता भीतर भरै छै, लोक मधुमाछिक नाम बुझै / मधु मधुमाछि लग टपकै छै, काजक फल देखै
मधुमाछि संग उड़ै छै, बोली राह बनै / फूल भीतर आभास मधु सँ भरैए
फूल राति महकै छै, पुरान मधुमाछिक छाप जगै / छत्ता मधुमाछि पाछाँ भरै छै, मोन भेद बुझै
मधु भीतर टपकै छै, स्मृति मधुमाछिक रूप धरै / मधु सोझाँ प्रयास मधु सँ भरैए
मधुमाछि दूर उड़ै छै, देखनिहार बदलै / छत्ता मधुमाछि लग भरै छै, बोध संग चलै
फूल भीतर महकै छै, काल मधुमाछिक चिन्ह धरै / मधुमाछि संग उल्लास मधु सँ भरैए
मधु पाछाँ टपकै छै, चिन्ह मधुमाछिक हेतु कहै / मधुमाछि सोझाँ उड़ै छै, बाध बीच रहै
छत्ता राति भरै छै, फल मधुमाछिक साँच परखै / छत्ता भीतर विश्वास मधु सँ भरैए
फूल फेर महकै छै, कारण मधुमाछिक क्रम खुलै / मधु मधुमाछि दूर टपकै छै, दोसरक मत सुनै
मधुमाछि एखन उड़ै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / फूल पाछाँ इतिहास मधु सँ भरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९८२ — संगीतमय रूप

भाव: मधुमाछि छत्ताक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, तानपुरा, मृदु ढोलक। मधुमाछि छत्ताक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: मधुमाछि छत्ताक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: मधुमाछि छत्ताक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: मधुमाछि छत्ताक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: मधुमाछि छत्ताक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: मधुमाछि छत्ताक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: मधुमाछि छत्ताक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९८३ — तितली रंग उड़ै, रंग पाँख पसारैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: पाँख पसारैए · शेर: ६

तितली सोझाँ उड़ै छै, आँखि रूप परखै / पाँख संग रंग पाँख पसारैए

रंग पाछाँ झलकै छै, कान तितलीक सोर सुनै / तितली पाछाँ संग पाँख पसारैए

पाँख भीतर खुलै छै, लोक तितलीक नाम बुझै / फूल तितली लग डोलै छै, काजक फल देखै

तितली संग उड़ै छै, बोली राह बनै / रंग भीतर ढंग पाँख पसारैए

रंग राति झलकै छै, पुरान तितलीक छाप जगै / पाँख तितली पाछाँ खुलै छै, मोन भेद बुझै

फूल भीतर डोलै छै, स्मृति तितलीक रूप धरै / फूल सोझाँ अंग पाँख पसारैए

तितली दूर उड़ै छै, देखनिहार बदलै / पाँख तितली लग खुलै छै, बोध संग चलै

रंग भीतर झलकै छै, काल तितलीक चिन्ह धरै / तितली संग उमंग पाँख पसारैए

फूल पाछाँ डोलै छै, चिन्ह तितलीक हेतु कहै / तितली सोझाँ उड़ै छै, बाध बीच रहै

पाँख राति खुलै छै, फल तितलीक साँच परखै / पाँख भीतर तरंग पाँख पसारैए

रंग फेर झलकै छै, कारण तितलीक क्रम खुलै / फूल तितली दूर डोलै छै, दोसरक मत सुनै

तितली एखन उड़ै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / रंग पाछाँ प्रसंग पाँख पसारैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९८३ — संगीतमय रूप

भाव: तितली पाँखक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४१–४५ · ताल: मिश्र दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मँजीरा, बाँसुरी। तितली पाँखक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: तितली पाँखक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: तितली पाँखक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: तितली पाँखक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: तितली पाँखक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: तितली पाँखक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: तितली पाँखक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९८४ — घोंघा पथ सरकै, पहिचान पाछाँ रहि जाइए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (पहिचान, मान, ज्ञान, ध्यान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: पाछाँ रहि जाइए · शेर: ६

घोंघा सोझाँ सरकै छै, आँखि रूप परखै / रेख संग पहिचान पाछाँ रहि जाइए
ओस पाछाँ चमकै छै, कान घोंघाक सोर सुनै / घोंघा पाछाँ मान पाछाँ रहि जाइए
रेख भीतर रहै छै, लोक घोंघाक नाम बुझै / पात घोंघा लग भीजै छै, काजक फल देखै
घोंघा संग सरकै छै, बोली राह बनै / ओस भीतर ज्ञान पाछाँ रहि जाइए
ओस राति चमकै छै, पुरान घोंघाक छाप जगै / रेख घोंघा पाछाँ रहै छै, मोन भेद बुझै
पात भीतर भीजै छै, स्मृति घोंघाक रूप धरै / पात सोझाँ ध्यान पाछाँ रहि जाइए
घोंघा दूर सरकै छै, देखनिहार बदलै / रेख घोंघा लग रहै छै, बोध संग चलै
ओस भीतर चमकै छै, काल घोंघाक चिन्ह धरै / घोंघा संग अनुमान पाछाँ रहि जाइए
पात पाछाँ भीजै छै, चिन्ह घोंघाक हेतु कहै / घोंघा सोझाँ सरकै छै, बाध बीच रहै
रेख राति रहै छै, फल घोंघाक साँच परखै / रेख भीतर विधान पाछाँ रहि जाइए
ओस फेर चमकै छै, कारण घोंघाक क्रम खुलै / पात घोंघा दूर भीजै छै, दोसरक मत सुनै
घोंघा एखन सरकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / ओस पाछाँ निदान पाछाँ रहि जाइए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९८४ — संगीतमय रूप

भाव: घोंघा रेखक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: विलम्बित रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, पखावज, विरल बाँसुरी। घोंघा रेखक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: घोंघा रेखक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: घोंघा रेखक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: घोंघा रेखक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: घोंघा रेखक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: घोंघा रेखक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: घोंघा रेखक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९८५ — कछुआ नीर काटै, राह नीरमे बहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: नीरमे बहैए · शेर: ६

कछुआ सोझाँ तिरै छै, आँखि रूप परखै / नीर संग राह नीरमे बहैए
पाँक पाछाँ धँसै छै, कान कछुआक सोर सुनै / कछुआ पाछाँ चाह नीरमे बहैए
नीर भीतर हिलै छै, लोक कछुआक नाम बुझै / लहर कछुआ लग कटै छै, काजक फल देखै
कछुआ संग तिरै छै, बोली राह बनै / पाँक भीतर थाह नीरमे बहैए
पाँक राति धँसै छै, पुरान कछुआक छाप जगै / नीर कछुआ पाछाँ हिलै छै, मोन भेद बुझै
लहर भीतर कटै छै, स्मृति कछुआक रूप धरै / लहर सोझाँ छाह नीरमे बहैए
कछुआ दूर तिरै छै, देखनिहार बदलै / नीर कछुआ लग हिलै छै, बोध संग चलै
पाँक भीतर धँसै छै, काल कछुआक चिन्ह धरै / कछुआ संग आह नीरमे बहैए
लहर पाछाँ कटै छै, चिन्ह कछुआक हेतु कहै / कछुआ सोझाँ तिरै छै, बाध बीच रहै
नीर राति हिलै छै, फल कछुआक साँच परखै / नीर भीतर उछाह नीरमे बहैए
पाँक फेर धँसै छै, कारण कछुआक क्रम खुलै / लहर कछुआ दूर कटै छै, दोसरक मत सुनै
कछुआ एखन तिरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पाँक पाछाँ प्रवाह नीरमे बहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९८५ — संगीतमय रूप

भाव: कछुआ पोखरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: मध्य कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, सारंगी, हलुक तबला। कछुआ पोखरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कछुआ पोखरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कछुआ पोखरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कछुआ पोखरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कछुआ पोखरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कछुआ पोखरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कछुआ पोखरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९८६ — सनई फूल डोलै, रंग पवनमे लहरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: पवनमे लहरैए · शेर: ६

सनई सोझाँ लहरै छै, आँखि रूप परखै / फूल संग रंग पवनमे लहरैए
पवन पाछाँ बहै छै, कान सनईक सोर सुनै / सनई पाछाँ संग पवनमे लहरैए
फूल भीतर खुलै छै, लोक सनईक नाम बुझै / खेत सनई लग डोलै छै, काजक फल देखै
सनई संग लहरै छै, बोली राह बनै / पवन भीतर ढंग पवनमे लहरैए
पवन राति बहै छै, पुरान सनईक छाप जगै / फूल सनई पाछाँ खुलै छै, मोन भेद बुझै
खेत भीतर डोलै छै, स्मृति सनईक रूप धरै / खेत सोझाँ अंग पवनमे लहरैए
सनई दूर लहरै छै, देखनिहार बदलै / फूल सनई लग खुलै छै, बोध संग चलै
पवन भीतर बहै छै, काल सनईक चिन्ह धरै / सनई संग उमंग पवनमे लहरैए
खेत पाछाँ डोलै छै, चिन्ह सनईक हेतु कहै / सनई सोझाँ लहरै छै, बाध बीच रहै
फूल राति खुलै छै, फल सनईक साँच परखै / फूल भीतर तरंग पवनमे लहरैए
पवन फेर बहै छै, कारण सनईक क्रम खुलै / खेत सनई दूर डोलै छै, दोसरक मत सुनै
सनई एखन लहरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पवन पाछाँ प्रसंग पवनमे लहरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९८६ — संगीतमय रूप

भाव: सनई खेतक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: मन्द झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, मँजीरा, तानपुरा। सनई खेतक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: सनई खेतक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: सनई खेतक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: सनई खेतक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: सनई खेतक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: सनई खेतक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: सनई खेतक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९८७ — कनकौआ ऊपर उठै, डोर अकास चढ़ि जाइए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (डोर, सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, कोर) · रदीफ: अकास चढ़ि जाइए · शेर: ६

कनकौआ सोझाँ उड़ै छै, आँखि रूप परखै / डोर संग डोर अकास चढ़ि जाइए
पवन पाछाँ बहै छै, कान कनकौआक सोर सुनै / कनकौआ पाछाँ सोर अकास चढ़ि जाइए
डोर भीतर तनै छै, लोक कनकौआक नाम बुझै / अकास कनकौआ लग खुलै छै, काजक फल देखै
कनकौआ संग उड़ै छै, बोली राह बनै / पवन भीतर भोर अकास चढ़ि जाइए
पवन राति बहै छै, पुरान कनकौआक छाप जगै / डोर कनकौआ पाछाँ तनै छै, मोन भेद बुझै
अकास भीतर खुलै छै, स्मृति कनकौआक रूप धरै / अकास सोझाँ नोर अकास चढ़ि जाइए
कनकौआ दूर उड़ै छै, देखनिहार बदलै / डोर कनकौआ लग तनै छै, बोध संग चलै
पवन भीतर बहै छै, काल कनकौआक चिन्ह धरै / कनकौआ संग छोर अकास चढ़ि जाइए
अकास पाछाँ खुलै छै, चिन्ह कनकौआक हेतु कहै / कनकौआ सोझाँ उड़ै छै, बाध बीच रहै
डोर राति तनै छै, फल कनकौआक साँच परखै / डोर भीतर जोर अकास चढ़ि जाइए
पवन फेर बहै छै, कारण कनकौआक क्रम खुलै / अकास कनकौआ दूर खुलै छै, दोसरक मत सुनै
कनकौआ एखन उड़ै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पवन पाछाँ कोर अकास चढ़ि जाइए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९८७ — संगीतमय रूप

भाव: कनकौआ डोरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: मध्य एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, पखावजक हलुक ठेक, सारंगी। कनकौआ डोरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कनकौआ डोरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कनकौआ डोरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कनकौआ डोरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कनकौआ डोरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कनकौआ डोरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कनकौआ डोरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९८८ — सूप दाना छाँटै, धान सूपमे छँटैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (धान, मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, निदान) · रदीफ: सूपमे छँटैए · शेर: ६

सूप सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / दाना संग धान सूपमे छँटैए
भूसी पाछाँ उड़ै छै, कान सूपक सोर सुनै / सूप पाछाँ मान सूपमे छँटैए
दाना भीतर छँटै छै, लोक सूपक नाम बुझै / हाथ सूप लग चलै छै, काजक फल देखै
सूप संग डोलै छै, बोली राह बनै / भूसी भीतर ज्ञान सूपमे छँटैए
भूसी राति उड़ै छै, पुरान सूपक छाप जगै / दाना सूप पाछाँ छँटै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर चलै छै, स्मृति सूपक रूप धरै / हाथ सोझाँ ध्यान सूपमे छँटैए
सूप दूर डोलै छै, देखनिहार बदलै / दाना सूप लग छँटै छै, बोध संग चलै
भूसी भीतर उड़ै छै, काल सूपक चिन्ह धरै / सूप संग पहिचान सूपमे छँटैए
हाथ पाछाँ चलै छै, चिन्ह सूपक हेतु कहै / सूप सोझाँ डोलै छै, बाध बीच रहै
दाना राति छँटै छै, फल सूपक साँच परखै / दाना भीतर अनुमान सूपमे छँटैए
भूसी फेर उड़ै छै, कारण सूपक क्रम खुलै / हाथ सूप दूर चलै छै, दोसरक मत सुनै
सूप एखन डोलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / भूसी पाछाँ निदान सूपमे छँटैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९८८ — संगीतमय रूप

भाव: सूप दानाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: विरल दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, मृदंगक कोमल थाप, बाँसुरी। सूप दानाक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: सूप दानाक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: सूप दानाक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: सूप दानाक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: सूप दानाक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: सूप दानाक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: सूप दानाक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९८९ — झाँपी भीतर सजै, नाम भीतर बचि रहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाम (नाम, दाम, धाम, विराम, परिणाम, प्रणाम, गाम) · रदीफ: भीतर बचि रहैए · शेर: ६

झाँपी सोझाँ खुलै छै, आँखि रूप परखै / पिटारी संग नाम भीतर बचि रहैए
आँचर पाछाँ रहै छै, कान झाँपीक सोर सुनै / झाँपी पाछाँ दाम भीतर बचि रहैए
पिटारी भीतर सजै छै, लोक झाँपीक नाम बुझै / गन्ध झाँपी लग बसै छै, काजक फल देखै
झाँपी संग खुलै छै, बोली राह बनै / आँचर भीतर धाम भीतर बचि रहैए
आँचर राति रहै छै, पुरान झाँपीक छाप जगै / पिटारी झाँपी पाछाँ सजै छै, मोन भेद बुझै
गन्ध भीतर बसै छै, स्मृति झाँपीक रूप धरै / गन्ध सोझाँ विराम भीतर बचि रहैए
झाँपी दूर खुलै छै, देखनिहार बदलै / पिटारी झाँपी लग सजै छै, बोध संग चलै
आँचर भीतर रहै छै, काल झाँपीक चिन्ह धरै / झाँपी संग परिणाम भीतर बचि रहैए
गन्ध पाछाँ बसै छै, चिन्ह झाँपीक हेतु कहै / झाँपी सोझाँ खुलै छै, बाध बीच रहै
पिटारी राति सजै छै, फल झाँपीक साँच परखै / पिटारी भीतर प्रणाम भीतर बचि रहैए
आँचर फेर रहै छै, कारण झाँपीक क्रम खुलै / गन्ध झाँपी दूर बसै छै, दोसरक मत सुनै
झाँपी एखन खुलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / आँचर पाछाँ गाम भीतर बचि रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९८९ — संगीतमय रूप

भाव: झाँपी पिटारीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: मिश्र कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, एकतारा, विरल मँजीरा। झाँपी पिटारीक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: झाँपी पिटारीक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: झाँपी पिटारीक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: झाँपी पिटारीक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: झाँपी पिटारीक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: झाँपी पिटारीक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: झाँपी पिटारीक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १९० — ताड़पात आखर खुलै, ज्ञान पातमे बोलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (ज्ञान, मान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: पातमे बोलैए · शेर: ६

ताड़पात सोझाँ खुलै छै, आँखि रूप परखै / आखर संग ज्ञान पातमे बोलैए
स्याही पाछाँ मेटै छै, कान ताड़पातक सोर सुनै / ताड़पात पाछाँ मान पातमे बोलैए
आखर भीतर दिसै छै, लोक ताड़पातक नाम बुझै / ज्ञान ताड़पात लग जगै छै, काजक फल देखै
ताड़पात संग खुलै छै, बोली राह बनै / स्याही भीतर ध्यान पातमे बोलैए
स्याही राति मेटै छै, पुरान ताड़पातक छाप जगै / आखर ताड़पात पाछाँ दिसै छै, मोन भेद बुझै
ज्ञान भीतर जगै छै, स्मृति ताड़पातक रूप धरै / ज्ञान सोझाँ पहिचान पातमे बोलैए
ताड़पात दूर खुलै छै, देखनिहार बदलै / आखर ताड़पात लग दिसै छै, बोध संग चलै
स्याही भीतर मेटै छै, काल ताड़पातक चिन्ह धरै / ताड़पात संग अनुमान पातमे बोलैए
ज्ञान पाछाँ जगै छै, चिन्ह ताड़पातक हेतु कहै / ताड़पात सोझाँ खुलै छै, बाध बीच रहै
आखर राति दिसै छै, फल ताड़पातक साँच परखै / आखर भीतर विधान पातमे बोलैए
स्याही फेर मेटै छै, कारण ताड़पातक क्रम खुलै / ज्ञान ताड़पात दूर जगै छै, दोसरक मत सुनै
ताड़पात एखन खुलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / स्याही पाछाँ निदान पातमे बोलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९९० — संगीतमय रूप

भाव: ताड़पात आखरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: मन्द एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, तानपुरा, मृदु पखावज। ताड़पात आखरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: ताड़पात आखरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: ताड़पात आखरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: ताड़पात आखरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: ताड़पात आखरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: ताड़पात आखरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: ताड़पात आखरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९९१ — पीपर छाँह पसरै, राह छाँहमे टिकि रहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: छाँहमे टिकि रहैए · शेर: ६

पीपर सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / छाँह संग राह छाँहमे टिकि रहैए
पात पाछाँ खनकै छै, कान पीपरक सोर सुनै / पीपर पाछाँ चाह छाँहमे टिकि रहैए
छाँह भीतर पसरै छै, लोक पीपरक नाम बुझै / पवन पीपर लग बहै छै, काजक फल देखै
पीपर संग डोलै छै, बोली राह बनै / पात भीतर थाह छाँहमे टिकि रहैए
पात राति खनकै छै, पुरान पीपरक छाप जगै / छाँह पीपर पाछाँ पसरै छै, मोन भेद बुझै
पवन भीतर बहै छै, स्मृति पीपरक रूप धरै / पवन सोझाँ छाह छाँहमे टिकि रहैए
पीपर दूर डोलै छै, देखनिहार बदलै / छाँह पीपर लग पसरै छै, बोध संग चलै
पात भीतर खनकै छै, काल पीपरक चिन्ह धरै / पीपर संग आह छाँहमे टिकि रहैए
पवन पाछाँ बहै छै, चिन्ह पीपरक हेतु कहै / पीपर सोझाँ डोलै छै, बाध बीच रहै
छाँह राति पसरै छै, फल पीपरक साँच परखै / छाँह भीतर उछाह छाँहमे टिकि रहैए
पात फेर खनकै छै, कारण पीपरक क्रम खुलै / पवन पीपर दूर बहै छै, दोसरक मत सुनै
पीपर एखन डोलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पात पाछाँ प्रवाह छाँहमे टिकि रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९९१ — संगीतमय रूप

भाव: पीपर छाँहक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४९–५३ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, सारंगी, विरल ढोलक। पीपर छाँहक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: पीपर छाँहक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: पीपर छाँहक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: पीपर छाँहक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: पीपर छाँहक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: पीपर छाँहक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: पीपर छाँहक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १९२ — खजूर रस टपकै, आस रस टपकैत रहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: रस टपकैत रहैए · शेर: ६

खजूर सोझाँ नमै छै, आँखि रूप परखै / रस संग आस रस टपकैत रहैए
घैल पाछाँ भरै छै, कान खजूरक सोर सुनै / खजूर पाछाँ श्वास रस टपकैत रहैए
रस भीतर टपकै छै, लोक खजूरक नाम बुझै / भोर खजूर लग खुलै छै, काजक फल देखै
खजूर संग नमै छै, बोली राह बनै / घैल भीतर आभास रस टपकैत रहैए
घैल राति भरै छै, पुरान खजूरक छाप जगै / रस खजूर पाछाँ टपकै छै, मोन भेद बुझै
भोर भीतर खुलै छै, स्मृति खजूरक रूप धरै / भोर सोझाँ प्रयास रस टपकैत रहैए
खजूर दूर नमै छै, देखनिहार बदलै / रस खजूर लग टपकै छै, बोध संग चलै
घैल भीतर भरै छै, काल खजूरक चिन्ह धरै / खजूर संग उल्लास रस टपकैत रहैए
भोर पाछाँ खुलै छै, चिन्ह खजूरक हेतु कहै / खजूर सोझाँ नमै छै, बाध बीच रहै
रस राति टपकै छै, फल खजूरक साँच परखै / रस भीतर विश्वास रस टपकैत रहैए
घैल फेर भरै छै, कारण खजूरक क्रम खुलै / भोर खजूर दूर खुलै छै, दोसरक मत सुनै
खजूर एखन नमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / घैल पाछाँ इतिहास रस टपकैत रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९९२ — संगीतमय रूप

भाव: खजूर रसक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ५०–५४ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, मृदंग, तानपुरा। खजूर रसक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: खजूर रसक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: खजूर रसक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: खजूर रसक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: खजूर रसक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: खजूर रसक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: खजूर रसक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९९३ — बकुल फूल झरै, सुवास भोरमे महकि उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (सुवास, आस, श्वास, आभास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: भोरमे महकि उठैए · शेर: ६

बकुल सोझाँ महकै छै, आँखि रूप परखै / फूल संग सुवास भोरमे महकि उठैए
भोर पाछाँ खुलै छै, कान बकुलक सोर सुनै / बकुल पाछाँ आस भोरमे महकि उठैए
फूल भीतर झरै छै, लोक बकुलक नाम बुझै / सुवास बकुल लग पसरै छै, काजक फल देखै
बकुल संग महकै छै, बोली राह बनै / भोर भीतर श्वास भोरमे महकि उठैए
भोर राति खुलै छै, पुरान बकुलक छाप जगै / फूल बकुल पाछाँ झरै छै, मोन भेद बुझै
सुवास भीतर पसरै छै, स्मृति बकुलक रूप धरै / सुवास सोझाँ आभास भोरमे महकि उठैए
बकुल दूर महकै छै, देखनिहार बदलै / फूल बकुल लग झरै छै, बोध संग चलै
भोर भीतर खुलै छै, काल बकुलक चिन्ह धरै / बकुल संग उल्लास भोरमे महकि उठैए
सुवास पाछाँ पसरै छै, चिन्ह बकुलक हेतु कहै / बकुल सोझाँ महकै छै, बाध बीच रहै
फूल राति झरै छै, फल बकुलक साँच परखै / फूल भीतर विश्वास भोरमे महकि उठैए
भोर फेर खुलै छै, कारण बकुलक क्रम खुलै / सुवास बकुल दूर पसरै छै, दोसरक मत सुनै
बकुल एखन महकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / भोर पाछाँ इतिहास भोरमे महकि उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९९३ — संगीतमय रूप

भाव: बकुल फूलक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

गति (BPM): ५१–५५ · ताल: झपताल १०।

वाद्य-विन्यास: सारंगी, पखावज, मँजीरा। बकुल फूलक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।

मतला: बकुल फूलक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।

२म शेर: बकुल फूलक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: बकुल फूलक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।

४म शेर: बकुल फूलक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।

५म शेर: बकुल फूलक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।

६म शेर: बकुल फूलक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १९४ — ओल माटि फोड़ै, मूल माटि फोड़ि निकलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ूल (मूल, भूल, फूल, धूल, शूल, कूल, अनुकूल) · रदीफ: माटि फोड़ि निकलैए · शेर: ६

ओल सोझाँ फूटै छै, आँखि रूप परखै / माटि संग मूल माटि फोड़ि निकलैए
लता पाछाँ चढ़ै छै, कान ओलक सोर सुनै / ओल पाछाँ भूल माटि फोड़ि निकलैए
माटि भीतर फाटै छै, लोक ओलक नाम बुझै / पात ओल लग खुलै छै, काजक फल देखै
ओल संग फूटै छै, बोली राह बनै / लता भीतर फूल माटि फोड़ि निकलैए
लता राति चढ़ै छै, पुरान ओलक छाप जगै / माटि ओल पाछाँ फाटै छै, मोन भेद बुझै
पात भीतर खुलै छै, स्मृति ओलक रूप धरै / पात सोझाँ धूल माटि फोड़ि निकलैए
ओल दूर फूटै छै, देखनिहार बदलै / माटि ओल लग फाटै छै, बोध संग चलै
लता भीतर चढ़ै छै, काल ओलक चिन्ह धरै / ओल संग शूल माटि फोड़ि निकलैए
पात पाछाँ खुलै छै, चिन्ह ओलक हेतु कहै / ओल सोझाँ फूटै छै, बाध बीच रहै
माटि राति फाटै छै, फल ओलक साँच परखै / माटि भीतर कूल माटि फोड़ि निकलैए
लता फेर चढ़ै छै, कारण ओलक क्रम खुलै / पात ओल दूर खुलै छै, दोसरक मत सुनै
ओल एखन फूटै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / लता पाछाँ अनुकूल माटि फोड़ि निकलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९९४ — संगीतमय रूप

भाव: ओल माटिक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ५२–५६ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, हलुक तबला। ओल माटिक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: ओल माटिक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: ओल माटिक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: ओल माटिक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: ओल माटिक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: ओल माटिक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: ओल माटिक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १९५ — अरुई पात डोलै, बात पवनमे झूमैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात) · रदीफ: पवनमे झूमैए · शेर: ६

अरुई सोझाँ झूमै छै, आँखि रूप परखै / पात संग बात पवनमे झूमैए

जल पाछाँ ठहरै छै, कान अरुईक सोर सुनै / अरुई पाछाँ रात पवनमे झूमैए

पात भीतर डोलै छै, लोक अरुईक नाम बुझै / डाँठ अरुई लग नमै छै, काजक फल देखै

अरुई संग झूमै छै, बोली राह बनै / जल भीतर पात पवनमे झूमैए

जल राति ठहरै छै, पुरान अरुईक छाप जगै / पात अरुई पाछाँ डोलै छै, मोन भेद बुझै

डाँठ भीतर नमै छै, स्मृति अरुईक रूप धरै / डाँठ सोझाँ घात पवनमे झूमैए

अरुई दूर झूमै छै, देखनिहार बदलै / पात अरुई लग डोलै छै, बोध संग चलै

जल भीतर ठहरै छै, काल अरुईक चिन्ह धरै / अरुई संग प्रभात पवनमे झूमैए

डाँठ पाछाँ नमै छै, चिन्ह अरुईक हेतु कहै / अरुई सोझाँ झूमै छै, बाध बीच रहै

पात राति डोलै छै, फल अरुईक साँच परखै / पात भीतर भात पवनमे झूमैए

जल फेर ठहरै छै, कारण अरुईक क्रम खुलै / डाँठ अरुई दूर नमै छै, दोसरक मत सुनै

अरुई एखन झूमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / जल पाछाँ तात पवनमे झूमैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९९५ — संगीतमय रूप

भाव: अरुई पातक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ५३–५७ · ताल: एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, मँजीरा, सारंगी। अरुई पातक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: अरुई पातक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: अरुई पातक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: अरुई पातक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: अरुई पातक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: अरुई पातक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: अरुई पातक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १९६ — मड़ुआ बालि झुकै, बाल नमि जाइए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (बाल, ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल) · रदीफ: नमि जाइए · शेर: ६

मड़ुआ सोझाँ पकै छै, आँखि रूप परखै / बालि संग बाल नमि जाइए
पवन पाछाँ बहै छै, कान मड़ुआक सोर सुनै / मड़ुआ पाछाँ ताल नमि जाइए
बालि भीतर नमै छै, लोक मड़ुआक नाम बुझै / खेत मड़ुआ लग डोलै छै, काजक फल देखै
मड़ुआ संग पकै छै, बोली राह बनै / पवन भीतर चाल नमि जाइए
पवन राति बहै छै, पुरान मड़ुआक छाप जगै / बालि मड़ुआ पाछाँ नमै छै, मोन भेद बुझै
खेत भीतर डोलै छै, स्मृति मड़ुआक रूप धरै / खेत सोझाँ जाल नमि जाइए
मड़ुआ दूर पकै छै, देखनिहार बदलै / बालि मड़ुआ लग नमै छै, बोध संग चलै
पवन भीतर बहै छै, काल मड़ुआक चिन्ह धरै / मड़ुआ संग काल नमि जाइए
खेत पाछाँ डोलै छै, चिन्ह मड़ुआक हेतु कहै / मड़ुआ सोझाँ पकै छै, बाध बीच रहै
बालि राति नमै छै, फल मड़ुआक साँच परखै / बालि भीतर ढाल नमि जाइए
पवन फेर बहै छै, कारण मड़ुआक क्रम खुलै / खेत मड़ुआ दूर डोलै छै, दोसरक मत सुनै
मड़ुआ एखन पकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पवन पाछाँ लाल नमि जाइए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९९६ — संगीतमय रूप

भाव: मड़ुआ बालिक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मन्द रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, बाँसुरी, विरल पखावज। मड़ुआ बालिक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: मड़ुआ बालिक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: मड़ुआ बालिक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: मड़ुआ बालिक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: मड़ुआ बालिक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: मड़ुआ बालिक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: मड़ुआ बालिक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १९७ — कुरथी दालि पकै, दाल भानसमे महकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (दाल, ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल) · रदीफ: भानसमे महकैए · शेर: ६

कुरथी सोझाँ उबलै छै, आँखि रूप परखै / दालि संग दाल भानसमे महकैए
भाप पाछाँ उठै छै, कान कुरथीक सोर सुनै / कुरथी पाछाँ ताल भानसमे महकैए
दालि भीतर पकै छै, लोक कुरथीक नाम बुझै / भानस कुरथी लग महकै छै, काजक फल देखै
कुरथी संग उबलै छै, बोली राह बनै / भाप भीतर चाल भानसमे महकैए
भाप राति उठै छै, पुरान कुरथीक छाप जगै / दालि कुरथी पाछाँ पकै छै, मोन भेद बुझै
भानस भीतर महकै छै, स्मृति कुरथीक रूप धरै / भानस सोझाँ जाल भानसमे महकैए
कुरथी दूर उबलै छै, देखनिहार बदलै / दालि कुरथी लग पकै छै, बोध संग चलै
भाप भीतर उठै छै, काल कुरथीक चिन्ह धरै / कुरथी संग काल भानसमे महकैए
भानस पाछाँ महकै छै, चिन्ह कुरथीक हेतु कहै / कुरथी सोझाँ उबलै छै, बाध बीच रहै
दालि राति पकै छै, फल कुरथीक साँच परखै / दालि भीतर ढाल भानसमे महकैए
भाप फेर उठै छै, कारण कुरथीक क्रम खुलै / भानस कुरथी दूर महकै छै, दोसरक मत सुनै
कुरथी एखन उबलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / भाप पाछाँ लाल भानसमे महकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९९७ — संगीतमय रूप

भाव: कुरथी दालिक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ५५–५९ · ताल: मध्य दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, हलुक ढोलक। कुरथी दालिक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कुरथी दालिक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कुरथी दालिक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कुरथी दालिक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कुरथी दालिक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कुरथी दालिक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कुरथी दालिक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १९८ — तिल घानी घुमै, हाथ घानी संग चलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ) · रदीफ: घानी संग चलैए · शेर: ६

घानी सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / तिल संग हाथ घानी संग चलैए
तेल पाछाँ झरै छै, कान घानीक सोर सुनै / घानी पाछाँ साथ घानी संग चलैए
तिल भीतर पिसै छै, लोक घानीक नाम बुझै / हाथ घानी लग चलै छै, काजक फल देखै
घानी संग घुमै छै, बोली राह बनै / तेल भीतर माथ घानी संग चलैए
तेल राति झरै छै, पुरान घानीक छाप जगै / तिल घानी पाछाँ पिसै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर चलै छै, स्मृति घानीक रूप धरै / हाथ सोझाँ पाथ घानी संग चलैए
घानी दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै / तिल घानी लग पिसै छै, बोध संग चलै
तेल भीतर झरै छै, काल घानीक चिन्ह धरै / घानी संग गाथ घानी संग चलैए
हाथ पाछाँ चलै छै, चिन्ह घानीक हेतु कहै / घानी सोझाँ घुमै छै, बाध बीच रहै
तिल राति पिसै छै, फल घानीक साँच परखै / तिल भीतर नाथ घानी संग चलैए
तेल फेर झरै छै, कारण घानीक क्रम खुलै / हाथ घानी दूर चलै छै, दोसरक मत सुनै
घानी एखन घुमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / तेल पाछाँ अनाथ घानी संग चलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९९८ — संगीतमय रूप

भाव: तिल घानीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ५६–६० · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मृदु तबला, एकतारा। तिल घानीक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: तिल घानीक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: तिल घानीक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: तिल घानीक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: तिल घानीक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: तिल घानीक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: तिल घानीक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ९९९ — मकई भुट्टा खुलै, धान दाना झरि पड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (धान, मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, निदान) · रदीफ: दाना झरि पड़ैए · शेर: ६

मकई सोझाँ पकै छै, आँखि रूप परखै / भुट्टा संग धान दाना झरि पड़ैए
दाना पाछाँ झरै छै, कान मकईक सोर सुनै / मकई पाछाँ मान दाना झरि पड़ैए
भुट्टा भीतर खुलै छै, लोक मकईक नाम बुझै / खेत मकई लग डोलै छै, काजक फल देखै
मकई संग पकै छै, बोली राह बनै / दाना भीतर ज्ञान दाना झरि पड़ैए
दाना राति झरै छै, पुरान मकईक छाप जगै / भुट्टा मकई पाछाँ खुलै छै, मोन भेद बुझै
खेत भीतर डोलै छै, स्मृति मकईक रूप धरै / खेत सोझाँ ध्यान दाना झरि पड़ैए
मकई दूर पकै छै, देखनिहार बदलै / भुट्टा मकई लग खुलै छै, बोध संग चलै
दाना भीतर झरै छै, काल मकईक चिन्ह धरै / मकई संग पहिचान दाना झरि पड़ैए
खेत पाछाँ डोलै छै, चिन्ह मकईक हेतु कहै / मकई सोझाँ पकै छै, बाध बीच रहै
भुट्टा राति खुलै छै, फल मकईक साँच परखै / भुट्टा भीतर अनुमान दाना झरि पड़ैए
दाना फेर झरै छै, कारण मकईक क्रम खुलै / खेत मकई दूर डोलै छै, दोसरक मत सुनै
मकई एखन पकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / दाना पाछाँ निदान दाना झरि पड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ९९९ — संगीतमय रूप

भाव: मकई भुट्टाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ५७–६१ · ताल: मिश्र रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, मँजीरा, सारंगी। मकई भुट्टाक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: मकई भुट्टाक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: मकई भुट्टाक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: मकई भुट्टाक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: मकई भुट्टाक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: मकई भुट्टाक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: मकई भुट्टाक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १००० — हजारम गजल खुलै, गीत आगाँ गुँजैत रहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: आगाँ गुँजैत रहैए · शेर: ६

अक्षर सोझाँ जगै छै, आँखि रूप परखै / गजल संग गीत आगाँ गुँजैत रहैए
दीवान पाछाँ खुलै छै, कान अक्षरक सोर सुनै / अक्षर पाछाँ मीत आगाँ गुँजैत रहैए
गजल भीतर गुँजै छै, लोक अक्षरक नाम बुझै / स्वर अक्षर लग बढ़ै छै, काजक फल देखै
अक्षर संग जगै छै, बोली राह बनै / दीवान भीतर प्रीत आगाँ गुँजैत रहैए
दीवान राति खुलै छै, पुरान अक्षरक छाप जगै / गजल अक्षर पाछाँ गुँजै छै, मोन भेद बुझै
स्वर भीतर बढ़ै छै, स्मृति अक्षरक रूप धरै / स्वर सोझाँ रीत आगाँ गुँजैत रहैए
अक्षर दूर जगै छै, देखनिहार बदलै / गजल अक्षर लग गुँजै छै, बोध संग चलै
दीवान भीतर खुलै छै, काल अक्षरक चिन्ह धरै / अक्षर संग जीत आगाँ गुँजैत रहैए
स्वर पाछाँ बढ़ै छै, चिन्ह अक्षरक हेतु कहै / अक्षर सोझाँ जगै छै, बाध बीच रहै
गजल राति गुँजै छै, फल अक्षरक साँच परखै / गजल भीतर अतीत आगाँ गुँजैत रहैए
दीवान फेर खुलै छै, कारण अक्षरक क्रम खुलै / स्वर अक्षर दूर बढ़ै छै, दोसरक मत सुनै
अक्षर एखन जगै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / दीवान पाछाँ पुनीत आगाँ गुँजैत रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १००० — संगीतमय रूप

भाव: हजारम गजलक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ५८–६२ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, बाँसुरी, मृदु पखावज। हजारम गजलक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: हजारम गजलक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: हजारम गजलक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: हजारम गजलक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: हजारम गजलक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: हजारम गजलक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: हजारम गजलक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १००१ — दीप बाती जरै, विश्वास मन्दे मन्दे जरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: मन्दे मन्दे जरैए · शेर: ६

दीप सोझाँ जरै छै, आँखि रूप परखै / बाती संग आस मन्दे मन्दे जरैए
तेल पाछाँ घटै छै, कान दीपक सोर सुनै / दीप पाछाँ श्वास मन्दे मन्दे जरैए
बाती भीतर दमकै छै, लोक दीपक नाम बुझै / ज्योति दीप लग फैलै छै, काजक फल देखै
दीप संग जरै छै, बोली राह बनै / तेल भीतर आभास मन्दे मन्दे जरैए
तेल राति घटै छै, पुरान दीपक छाप जगै / बाती दीप पाछाँ दमकै छै, मोन भेद बुझै
ज्योति भीतर फैलै छै, स्मृति दीपक रूप धरै / ज्योति सोझाँ प्रयास मन्दे मन्दे जरैए
दीप दूर जरै छै, देखनिहार बदलै / बाती दीप लग दमकै छै, बोध संग चलै
तेल भीतर घटै छै, काल दीपक चिन्ह धरै / दीप संग उल्लास मन्दे मन्दे जरैए
ज्योति पाछाँ फैलै छै, चिन्ह दीपक हेतु कहै / दीप सोझाँ जरै छै, बाध बीच रहै
बाती राति दमकै छै, फल दीपक साँच परखै / बाती भीतर विश्वास मन्दे मन्दे जरैए
तेल फेर घटै छै, कारण दीपक क्रम खुलै / ज्योति दीप दूर फैलै छै, दोसरक मत सुनै
दीप एखन जरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / तेल पाछाँ इतिहास मन्दे मन्दे जरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १००१ — संगीतमय रूप

भाव: दीप बातीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल तबला। दीप बातीक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: दीप बातीक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: दीप बातीक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: दीप बातीक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: दीप बातीक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: दीप बातीक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: दीप बातीक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १००२ — चरखा सूत कातै, मान सूतमे गाँठि जुड़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: सूतमे गाँठि जुड़ैए · शेर: ६

चरखा सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / सूत संग मान सूतमे गाँठि जुड़ैए
तकुआ पाछाँ फिरै छै, कान चरखाक सोर सुनै / चरखा पाछाँ ज्ञान सूतमे गाँठि जुड़ैए
सूत भीतर तनै छै, लोक चरखाक नाम बुझै / हाथ चरखा लग कातै छै, काजक फल देखै
चरखा संग घुमै छै, बोली राह बनै / तकुआ भीतर ध्यान सूतमे गाँठि जुड़ैए
तकुआ राति फिरै छै, पुरान चरखाक छाप जगै / सूत चरखा पाछाँ तनै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर कातै छै, स्मृति चरखाक रूप धरै / हाथ सोझाँ पहिचान सूतमे गाँठि जुड़ैए
चरखा दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै / सूत चरखा लग तनै छै, बोध संग चलै
तकुआ भीतर फिरै छै, काल चरखाक चिन्ह धरै / चरखा संग अनुमान सूतमे गाँठि जुड़ैए
हाथ पाछाँ कातै छै, चिन्ह चरखाक हेतु कहै / चरखा सोझाँ घुमै छै, बाध बीच रहै
सूत राति तनै छै, फल चरखाक साँच परखै / सूत भीतर विधान सूतमे गाँठि जुड़ैए
तकुआ फेर फिरै छै, कारण चरखाक क्रम खुलै / हाथ चरखा दूर कातै छै, दोसरक मत सुनै
चरखा एखन घुमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / तकुआ पाछाँ निदान सूतमे गाँठि जुड़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १००२ — संगीतमय रूप

भाव: चरखा सूतक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३५–३९ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मँजीरा, मृदु पखावज। चरखा सूतक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: चरखा सूतक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: चरखा सूतक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: चरखा सूतक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: चरखा सूतक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: चरखा सूतक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: चरखा सूतक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १००३ — मखान पोखर जागै, थाह नीर तलसँ उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: नीर तलसँ उठैए · शेर: ६

मखान सोझाँ तिरै छै, आँखि रूप परखै / पात संग राह नीर तलसँ उठैए
नीर पाछाँ लहरै छै, कान मखानक सोर सुनै / मखान पाछाँ चाह नीर तलसँ उठैए
पात भीतर फूटै छै, लोक मखानक नाम बुझै / बीआ मखान लग उठै छै, काजक फल देखै
मखान संग तिरै छै, बोली राह बनै / नीर भीतर थाह नीर तलसँ उठैए
नीर राति लहरै छै, पुरान मखानक छाप जगै / पात मखान पाछाँ फूटै छै, मोन भेद बुझै
बीआ भीतर उठै छै, स्मृति मखानक रूप धरै / बीआ सोझाँ छाह नीर तलसँ उठैए
मखान दूर तिरै छै, देखनिहार बदलै / पात मखान लग फूटै छै, बोध संग चलै
नीर भीतर लहरै छै, काल मखानक चिन्ह धरै / मखान संग आह नीर तलसँ उठैए
बीआ पाछाँ उठै छै, चिन्ह मखानक हेतु कहै / मखान सोझाँ तिरै छै, बाध बीच रहै
पात राति फूटै छै, फल मखानक साँच परखै / पात भीतर उछाह नीर तलसँ उठैए
नीर फेर लहरै छै, कारण मखानक क्रम खुलै / बीआ मखान दूर उठै छै, दोसरक मत सुनै
मखान एखन तिरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / नीर पाछाँ प्रवाह नीर तलसँ उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १००३ — संगीतमय रूप

भाव: मखान पोखरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, ढोलकक हलुक थाप, बाँसुरी। मखान पोखरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: मखान पोखरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: मखान पोखरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: मखान पोखरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: मखान पोखरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: मखान पोखरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: मखान पोखरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १००४ — पान पात भीजै, रंग ओस संग चमकि उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: ओस संग चमकि उठैए · शेर: ६

पान सोझाँ चढ़ै छै, आँखि रूप परखै / पात संग रंग ओस संग चमकि उठैए
ओस पाछाँ टपकै छै, कान पानक सोर सुनै / पान पाछाँ संग ओस संग चमकि उठैए
पात भीतर भीजै छै, लोक पानक नाम बुझै / लता पान लग लहरै छै, काजक फल देखै
पान संग चढ़ै छै, बोली राह बनै / ओस भीतर ढंग ओस संग चमकि उठैए
ओस राति टपकै छै, पुरान पानक छाप जगै / पात पान पाछाँ भीजै छै, मोन भेद बुझै
लता भीतर लहरै छै, स्मृति पानक रूप धरै / लता सोझाँ अंग ओस संग चमकि उठैए
पान दूर चढ़ै छै, देखनिहार बदलै / पात पान लग भीजै छै, बोध संग चलै
ओस भीतर टपकै छै, काल पानक चिन्ह धरै / पान संग उमंग ओस संग चमकि उठैए
लता पाछाँ लहरै छै, चिन्ह पानक हेतु कहै / पान सोझाँ चढ़ै छै, बाध बीच रहै
पात राति भीजै छै, फल पानक साँच परखै / पात भीतर तरंग ओस संग चमकि उठैए
ओस फेर टपकै छै, कारण पानक क्रम खुलै / लता पान दूर लहरै छै, दोसरक मत सुनै
पान एखन चढ़ै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / ओस पाछाँ प्रसंग ओस संग चमकि उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १००४ — संगीतमय रूप

भाव: पान पातक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३७–४१ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, मृदु मँजीरा। पान पातक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: पान पातक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: पान पातक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: पान पातक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: पान पातक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: पान पातक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: पान पातक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १००५ — सुपारी कटरनी चलै, विचार फाँक बनि खुलैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: फाँक बनि खुलैए · शेर: ६

सुपारी सोझाँ कटै छै, आँखि रूप परखै / कटरनी संग सार फाँक बनि खुलैए
फाँक पाछाँ चलै छै, कान सुपारीक सोर सुनै / सुपारी पाछाँ धार फाँक बनि खुलैए
कटरनी भीतर खुलै छै, लोक सुपारीक नाम बुझै / हाथ सुपारी लग बाँटै छै, काजक फल देखै
सुपारी संग कटै छै, बोली राह बनै / फाँक भीतर विचार फाँक बनि खुलैए
फाँक राति चलै छै, पुरान सुपारीक छाप जगै / कटरनी सुपारी पाछाँ खुलै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर बाँटै छै, स्मृति सुपारीक रूप धरै / हाथ सोझाँ आधार फाँक बनि खुलैए
सुपारी दूर कटै छै, देखनिहार बदलै / कटरनी सुपारी लग खुलै छै, बोध संग चलै
फाँक भीतर चलै छै, काल सुपारीक चिन्ह धरै / सुपारी संग कछार फाँक बनि खुलैए
हाथ पाछाँ बाँटै छै, चिन्ह सुपारीक हेतु कहै / सुपारी सोझाँ कटै छै, बाध बीच रहै
कटरनी राति खुलै छै, फल सुपारीक साँच परखै / कटरनी भीतर दुआर फाँक बनि खुलैए
फाँक फेर चलै छै, कारण सुपारीक क्रम खुलै / हाथ सुपारी दूर बाँटै छै, दोसरक मत सुनै
सुपारी एखन कटै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / फाँक पाछाँ भार फाँक बनि खुलैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १००५ — संगीतमय रूप

भाव: सुपारी कटरनीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, बाँसुरी, विरल तबला। सुपारी कटरनीक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: सुपारी कटरनीक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: सुपारी कटरनीक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: सुपारी कटरनीक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: सुपारी कटरनीक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: सुपारी कटरनीक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: सुपारी कटरनीक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १००६ — सिकी डलिया बुनै, प्रीत बुनाइमे रूप धरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: बुनाइमे रूप धरैए · शेर: ६

सिकी सोझाँ मुड़ै छै, आँखि रूप परखै / डलिया संग गीत बुनाइमे रूप धरैए
पाँति पाछाँ जुड़ै छै, कान सिकीक सोर सुनै / सिकी पाछाँ मीत बुनाइमे रूप धरैए
डलिया भीतर बनै छै, लोक सिकीक नाम बुझै / हाथ सिकी लग बुनै छै, काजक फल देखै
सिकी संग मुड़ै छै, बोली राह बनै / पाँति भीतर प्रीत बुनाइमे रूप धरैए
पाँति राति जुड़ै छै, पुरान सिकीक छाप जगै / डलिया सिकी पाछाँ बनै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर बुनै छै, स्मृति सिकीक रूप धरै / हाथ सोझाँ रीत बुनाइमे रूप धरैए
सिकी दूर मुड़ै छै, देखनिहार बदलै / डलिया सिकी लग बनै छै, बोध संग चलै
पाँति भीतर जुड़ै छै, काल सिकीक चिन्ह धरै / सिकी संग जीत बुनाइमे रूप धरैए
हाथ पाछाँ बुनै छै, चिन्ह सिकीक हेतु कहै / सिकी सोझाँ मुड़ै छै, बाध बीच रहै
डलिया राति बनै छै, फल सिकीक साँच परखै / डलिया भीतर अतीत बुनाइमे रूप धरैए
पाँति फेर जुड़ै छै, कारण सिकीक क्रम खुलै / हाथ सिकी दूर बुनै छै, दोसरक मत सुनै
सिकी एखन मुड़ै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पाँति पाछाँ पुनीत बुनाइमे रूप धरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १००६ — संगीतमय रूप

भाव: सिकी डलियाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, हलुक पखावज। सिकी डलियाक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: सिकी डलियाक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: सिकी डलियाक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: सिकी डलियाक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: सिकी डलियाक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: सिकी डलियाक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: सिकी डलियाक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १००७ — कुम्हारक चाक घुमै, आधार माटिसँ देह गढ़ैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: माटिसँ देह गढ़ैए · शेर: ६

चाक सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / माटि संग सार माटिसँ देह गढ़ैए
हाथ पाछाँ नमै छै, कान चाकक सोर सुनै / चाक पाछाँ धार माटिसँ देह गढ़ैए
माटि भीतर गढ़ै छै, लोक चाकक नाम बुझै / घैला चाक लग उठै छै, काजक फल देखै
चाक संग घुमै छै, बोली राह बनै / हाथ भीतर विचार माटिसँ देह गढ़ैए
हाथ राति नमै छै, पुरान चाकक छाप जगै / माटि चाक पाछाँ गढ़ै छै, मोन भेद बुझै
घैला भीतर उठै छै, स्मृति चाकक रूप धरै / घैला सोझाँ आधार माटिसँ देह गढ़ैए
चाक दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै / माटि चाक लग गढ़ै छै, बोध संग चलै
हाथ भीतर नमै छै, काल चाकक चिन्ह धरै / चाक संग कछार माटिसँ देह गढ़ैए
घैला पाछाँ उठै छै, चिन्ह चाकक हेतु कहै / चाक सोझाँ घुमै छै, बाध बीच रहै
माटि राति गढ़ै छै, फल चाकक साँच परखै / माटि भीतर दुआर माटिसँ देह गढ़ैए
हाथ फेर नमै छै, कारण चाकक क्रम खुलै / घैला चाक दूर उठै छै, दोसरक मत सुनै
चाक एखन घुमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / हाथ पाछाँ भार माटिसँ देह गढ़ैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १००७ — संगीतमय रूप

भाव: कुम्हारक चाकक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, सारंगी, मृदु ढोलक। कुम्हारक चाकक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कुम्हारक चाकक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कुम्हारक चाकक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कुम्हारक चाकक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कुम्हारक चाकक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कुम्हारक चाकक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कुम्हारक चाकक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १००८ — घैला नीर भरै, श्वास शीतल नेह भरैत जाइए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: शीतल नेह भरैत जाइए · शेर: ६

घैला सोझाँ भरै छै, आँखि रूप परखै / नीर संग आस शीतल नेह भरैत जाइए
काँध पाछाँ झुकै छै, कान घैलाक सोर सुनै / घैला पाछाँ श्वास शीतल नेह भरैत जाइए
नीर भीतर रहै छै, लोक घैलाक नाम बुझै / प्यास घैला लग बुझै छै, काजक फल देखै
घैला संग भरै छै, बोली राह बनै / काँध भीतर आभास शीतल नेह भरैत जाइए
काँध राति झुकै छै, पुरान घैलाक छाप जगै / नीर घैला पाछाँ रहै छै, मोन भेद बुझै
प्यास भीतर बुझै छै, स्मृति घैलाक रूप धरै / प्यास सोझाँ प्रयास शीतल नेह भरैत जाइए
घैला दूर भरै छै, देखनिहार बदलै / नीर घैला लग रहै छै, बोध संग चलै
काँध भीतर झुकै छै, काल घैलाक चिन्ह धरै / घैला संग उल्लास शीतल नेह भरैत जाइए
प्यास पाछाँ बुझै छै, चिन्ह घैलाक हेतु कहै / घैला सोझाँ भरै छै, बाध बीच रहै
नीर राति रहै छै, फल घैलाक साँच परखै / नीर भीतर विश्वास शीतल नेह भरैत जाइए
काँध फेर झुकै छै, कारण घैलाक क्रम खुलै / प्यास घैला दूर बुझै छै, दोसरक मत सुनै
घैला एखन भरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / काँध पाछाँ इतिहास शीतल नेह भरैत जाइए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १००८ — संगीतमय रूप

भाव: घैला नीरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४१–४५ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, तानपुरा, मँजीरा। घैला नीरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: घैला नीरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: घैला नीरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: घैला नीरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: घैला नीरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: घैला नीरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: घैला नीरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १००९ — लाठी बाट चलै, साथ पएर संग टिकैत रहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ) · रदीफ: पएर संग टिकैत रहैए · शेर: ६

लाठी सोझाँ टिकै छै, आँखि रूप परखै / बाट संग हाथ पएर संग टिकैत रहैए
पएर पाछाँ चलै छै, कान लाठीक सोर सुनै / लाठी पाछाँ साथ पएर संग टिकैत रहैए
बाट भीतर बढ़ै छै, लोक लाठीक नाम बुझै / टेक लाठी लग सम्हारै छै, काजक फल देखै
लाठी संग टिकै छै, बोली राह बनै / पएर भीतर माथ पएर संग टिकैत रहैए
पएर राति चलै छै, पुरान लाठीक छाप जगै / बाट लाठी पाछाँ बढ़ै छै, मोन भेद बुझै
टेक भीतर सम्हारै छै, स्मृति लाठीक रूप धरै / टेक सोझाँ पाथ पएर संग टिकैत रहैए
लाठी दूर टिकै छै, देखनिहार बदलै / बाट लाठी लग बढ़ै छै, बोध संग चलै
पएर भीतर चलै छै, काल लाठीक चिन्ह धरै / लाठी संग गाथ पएर संग टिकैत रहैए
टेक पाछाँ सम्हारै छै, चिन्ह लाठीक हेतु कहै / लाठी सोझाँ टिकै छै, बाध बीच रहै
बाट राति बढ़ै छै, फल लाठीक साँच परखै / बाट भीतर नाथ पएर संग टिकैत रहैए
पएर फेर चलै छै, कारण लाठीक क्रम खुलै / टेक लाठी दूर सम्हारै छै, दोसरक मत सुनै
लाठी एखन टिकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पएर पाछाँ अनाथ पएर संग टिकैत रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १००९ — संगीतमय रूप

भाव: लाठी बाटक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, हारमोनियम, विरल तबला। लाठी बाटक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: लाठी बाटक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: लाठी बाटक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: लाठी बाटक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: लाठी बाटक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: लाठी बाटक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: लाठी बाटक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०१० — रोपनी धान झुकै, मान पाँतिमे हरियैत जाइए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: पाँतिमे हरियैत जाइए · शेर: ६

धान सोझाँ रोपै छै, आँखि रूप परखै / रोपनी संग मान पाँतिमे हरियैत जाइए
पाँति पाछाँ झुकै छै, कान धानक सोर सुनै / धान पाछाँ ज्ञान पाँतिमे हरियैत जाइए
रोपनी भीतर जुड़ै छै, लोक धानक नाम बुझै / हाथ धान लग चलै छै, काजक फल देखै
धान संग रोपै छै, बोली राह बनै / पाँति भीतर ध्यान पाँतिमे हरियैत जाइए
पाँति राति झुकै छै, पुरान धानक छाप जगै / रोपनी धान पाछाँ जुड़ै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर चलै छै, स्मृति धानक रूप धरै / हाथ सोझाँ पहिचान पाँतिमे हरियैत जाइए
धान दूर रोपै छै, देखनिहार बदलै / रोपनी धान लग जुड़ै छै, बोध संग चलै
पाँति भीतर झुकै छै, काल धानक चिन्ह धरै / धान संग अनुमान पाँतिमे हरियैत जाइए
हाथ पाछाँ चलै छै, चिन्ह धानक हेतु कहै / धान सोझाँ रोपै छै, बाध बीच रहै
रोपनी राति जुड़ै छै, फल धानक साँच परखै / रोपनी भीतर विधान पाँतिमे हरियैत जाइए
पाँति फेर झुकै छै, कारण धानक क्रम खुलै / हाथ धान दूर चलै छै, दोसरक मत सुनै
धान एखन रोपै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पाँति पाछाँ निदान पाँतिमे हरियैत जाइए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०१० — संगीतमय रूप

भाव: रोपनी धानक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, पखावज, तानपुरा। रोपनी धानक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: रोपनी धानक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: रोपनी धानक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: रोपनी धानक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: रोपनी धानक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: रोपनी धानक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: रोपनी धानक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०११ — कदली पात बजै, पात बरखा संग थिरकैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात) · रदीफ: बरखा संग थिरकैए · शेर: ६

कदली सोझाँ नमै छै, आँखि रूप परखै / पात संग बात बरखा संग थिरकैए

बरखा पाछाँ बजै छै, कान कदलीक सोर सुनै / कदली पाछाँ रात बरखा संग थिरकैए

पात भीतर भीजै छै, लोक कदलीक नाम बुझै / पवन कदली लग हिलै छै, काजक फल देखै

कदली संग नमै छै, बोली राह बनै / बरखा भीतर पात बरखा संग थिरकैए

बरखा राति बजै छै, पुरान कदलीक छाप जगै / पात कदली पाछाँ भीजै छै, मोन भेद बुझै

पवन भीतर हिलै छै, स्मृति कदलीक रूप धरै / पवन सोझाँ घात बरखा संग थिरकैए

कदली दूर नमै छै, देखनिहार बदलै / पात कदली लग भीजै छै, बोध संग चलै

बरखा भीतर बजै छै, काल कदलीक चिन्ह धरै / कदली संग प्रभात बरखा संग थिरकैए

पवन पाछाँ हिलै छै, चिन्ह कदलीक हेतु कहै / कदली सोझाँ नमै छै, बाध बीच रहै

पात राति भीजै छै, फल कदलीक साँच परखै / पात भीतर भात बरखा संग थिरकैए

बरखा फेर बजै छै, कारण कदलीक क्रम खुलै / पवन कदली दूर हिलै छै, दोसरक मत सुनै

कदली एखन नमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / बरखा पाछाँ तात बरखा संग थिरकैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०११ — संगीतमय रूप

भाव: कदली पातक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल तबला। कदली पातक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कदली पातक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कदली पातक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कदली पातक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कदली पातक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कदली पातक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कदली पातक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०१२ — आम मंजर फुलै, आस गाछ भरि गमकि उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: गाछ भरि गमकि उठैए · शेर: ६

आम सोझाँ फुलै छै, आँखि रूप परखै / मंजर संग आस गाछ भरि गमकि उठैए
मधुमाछि पाछाँ गुँजै छै, कान आमक सोर सुनै / आम पाछाँ श्वास गाछ भरि गमकि उठैए
मंजर भीतर झरै छै, लोक आमक नाम बुझै / गंध आम लग पसरै छै, काजक फल देखै
आम संग फुलै छै, बोली राह बनै / मधुमाछि भीतर आभास गाछ भरि गमकि उठैए
मधुमाछि राति गुँजै छै, पुरान आमक छाप जगै / मंजर आम पाछाँ झरै छै, मोन भेद बुझै
गंध भीतर पसरै छै, स्मृति आमक रूप धरै / गंध सोझाँ प्रयास गाछ भरि गमकि उठैए
आम दूर फुलै छै, देखनिहार बदलै / मंजर आम लग झरै छै, बोध संग चलै
मधुमाछि भीतर गुँजै छै, काल आमक चिन्ह धरै / आम संग उल्लास गाछ भरि गमकि उठैए
गंध पाछाँ पसरै छै, चिन्ह आमक हेतु कहै / आम सोझाँ फुलै छै, बाध बीच रहै
मंजर राति झरै छै, फल आमक साँच परखै / मंजर भीतर विश्वास गाछ भरि गमकि उठैए
मधुमाछि फेर गुँजै छै, कारण आमक क्रम खुलै / गंध आम दूर पसरै छै, दोसरक मत सुनै
आम एखन फुलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / मधुमाछि पाछाँ इतिहास गाछ भरि गमकि उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०१२ — संगीतमय रूप

भाव: आम मंजरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मँजीरा, मृदु पखावज। आम मंजरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: आम मंजरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: आम मंजरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: आम मंजरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: आम मंजरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: आम मंजरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: आम मंजरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०१३ — लीची गुच्छा पाकै, रंग डारि संग झूलैत रहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: डारि संग झूलैत रहैए · शेर: ६

लीची सोझाँ लटकै छै, आँखि रूप परखै / गुच्छा संग रंग डारि संग झूलैत रहैए
डारि पाछाँ झुकै छै, कान लीचीक सोर सुनै / लीची पाछाँ संग डारि संग झूलैत रहैए
गुच्छा भीतर पाकै छै, लोक लीचीक नाम बुझै / रस लीची लग भरै छै, काजक फल देखै
लीची संग लटकै छै, बोली राह बनै / डारि भीतर ढंग डारि संग झूलैत रहैए
डारि राति झुकै छै, पुरान लीचीक छाप जगै / गुच्छा लीची पाछाँ पाकै छै, मोन भेद बुझै
रस भीतर भरै छै, स्मृति लीचीक रूप धरै / रस सोझाँ अंग डारि संग झूलैत रहैए
लीची दूर लटकै छै, देखनिहार बदलै / गुच्छा लीची लग पाकै छै, बोध संग चलै
डारि भीतर झुकै छै, काल लीचीक चिन्ह धरै / लीची संग उमंग डारि संग झूलैत रहैए
रस पाछाँ भरै छै, चिन्ह लीचीक हेतु कहै / लीची सोझाँ लटकै छै, बाध बीच रहै
गुच्छा राति पाकै छै, फल लीचीक साँच परखै / गुच्छा भीतर तरंग डारि संग झूलैत रहैए
डारि फेर झुकै छै, कारण लीचीक क्रम खुलै / रस लीची दूर भरै छै, दोसरक मत सुनै
लीची एखन लटकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / डारि पाछाँ प्रसंग डारि संग झूलैत रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०१३ — संगीतमय रूप

भाव: लीची गुच्छाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, ढोलकक हलुक थाप, बाँसुरी। लीची गुच्छाक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: लीची गुच्छाक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: लीची गुच्छाक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: लीची गुच्छाक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: लीची गुच्छाक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: लीची गुच्छाक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: लीची गुच्छाक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०१४ — सिन्नुर डिबिया खुलै, मान माँगमे रँग भरैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: माँगमे रँग भरैए · शेर: ६

सिन्नुर सोझाँ दमकै छै, आँखि रूप परखै / डिबिया संग मान माँगमे रँग भरैए
माँग पाछाँ खुलै छै, कान सिन्नुरक सोर सुनै / सिन्नुर पाछाँ ज्ञान माँगमे रँग भरैए
डिबिया भीतर रँगै छै, लोक सिन्नुरक नाम बुझै / हाथ सिन्नुर लग भरै छै, काजक फल देखै
सिन्नुर संग दमकै छै, बोली राह बनै / माँग भीतर ध्यान माँगमे रँग भरैए
माँग राति खुलै छै, पुरान सिन्नुरक छाप जगै / डिबिया सिन्नुर पाछाँ रँगै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर भरै छै, स्मृति सिन्नुरक रूप धरै / हाथ सोझाँ पहिचान माँगमे रँग भरैए
सिन्नुर दूर दमकै छै, देखनिहार बदलै / डिबिया सिन्नुर लग रँगै छै, बोध संग चलै
माँग भीतर खुलै छै, काल सिन्नुरक चिन्ह धरै / सिन्नुर संग अनुमान माँगमे रँग भरैए
हाथ पाछाँ भरै छै, चिन्ह सिन्नुरक हेतु कहै / सिन्नुर सोझाँ दमकै छै, बाध बीच रहै
डिबिया राति रँगै छै, फल सिन्नुरक साँच परखै / डिबिया भीतर विधान माँगमे रँग भरैए
माँग फेर खुलै छै, कारण सिन्नुरक क्रम खुलै / हाथ सिन्नुर दूर भरै छै, दोसरक मत सुनै
सिन्नुर एखन दमकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / माँग पाछाँ निदान माँगमे रँग भरैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०१४ — संगीतमय रूप

भाव: सिन्नुर डिबियाक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३४–३८ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, मृदु मँजीरा। सिन्नुर डिबियाक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: सिन्नुर डिबियाक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: सिन्नुर डिबियाक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: सिन्नुर डिबियाक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: सिन्नुर डिबियाक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: सिन्नुर डिबियाक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: सिन्नुर डिबियाक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०१५ — कमल पोखर जागै, आस भोर संग खुलि उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: भोर संग खुलि उठैए · शेर: ६

कमल सोझाँ खुलै छै, आँखि रूप परखै / पाँखुरि संग आस भोर संग खुलि उठैए
नीर पाछाँ तिरै छै, कान कमलक सोर सुनै / कमल पाछाँ श्वास भोर संग खुलि उठैए
पाँखुरि भीतर फैलै छै, लोक कमलक नाम बुझै / भोर कमल लग उगै छै, काजक फल देखै
कमल संग खुलै छै, बोली राह बनै / नीर भीतर आभास भोर संग खुलि उठैए
नीर राति तिरै छै, पुरान कमलक छाप जगै / पाँखुरि कमल पाछाँ फैलै छै, मोन भेद बुझै
भोर भीतर उगै छै, स्मृति कमलक रूप धरै / भोर सोझाँ प्रयास भोर संग खुलि उठैए
कमल दूर खुलै छै, देखनिहार बदलै / पाँखुरि कमल लग फैलै छै, बोध संग चलै
नीर भीतर तिरै छै, काल कमलक चिन्ह धरै / कमल संग उल्लास भोर संग खुलि उठैए
भोर पाछाँ उगै छै, चिन्ह कमलक हेतु कहै / कमल सोझाँ खुलै छै, बाध बीच रहै
पाँखुरि राति फैलै छै, फल कमलक साँच परखै / पाँखुरि भीतर विश्वास भोर संग खुलि उठैए
नीर फेर तिरै छै, कारण कमलक क्रम खुलै / भोर कमल दूर उगै छै, दोसरक मत सुनै
कमल एखन खुलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / नीर पाछाँ इतिहास भोर संग खुलि उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०१५ — संगीतमय रूप

भाव: कमल पोखरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३५–३९ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, बाँसुरी, विरल तबला। कमल पोखरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कमल पोखरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कमल पोखरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कमल पोखरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कमल पोखरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कमल पोखरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कमल पोखरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०१६ — चापाकल चलै, धार धरतीसँ नीर उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: धरतीसँ नीर उठैए · शेर: ६

चापाकल सोझाँ चलै छै, आँखि रूप परखै / नीर संग सार धरतीसँ नीर उठैए
हाथ पाछाँ उठै छै, कान चापाकलक सोर सुनै / चापाकल पाछाँ धार धरतीसँ नीर उठैए
नीर भीतर झरै छै, लोक चापाकलक नाम बुझै / धार चापाकल लग बहै छै, काजक फल देखै
चापाकल संग चलै छै, बोली राह बनै / हाथ भीतर विचार धरतीसँ नीर उठैए
हाथ राति उठै छै, पुरान चापाकलक छाप जगै / नीर चापाकल पाछाँ झरै छै, मोन भेद बुझै
धार भीतर बहै छै, स्मृति चापाकलक रूप धरै / धार सोझाँ आधार धरतीसँ नीर उठैए
चापाकल दूर चलै छै, देखनिहार बदलै / नीर चापाकल लग झरै छै, बोध संग चलै
हाथ भीतर उठै छै, काल चापाकलक चिन्ह धरै / चापाकल संग कछार धरतीसँ नीर उठैए
धार पाछाँ बहै छै, चिन्ह चापाकलक हेतु कहै / चापाकल सोझाँ चलै छै, बाध बीच रहै
नीर राति झरै छै, फल चापाकलक साँच परखै / नीर भीतर दुआर धरतीसँ नीर उठैए
हाथ फेर उठै छै, कारण चापाकलक क्रम खुलै / धार चापाकल दूर बहै छै, दोसरक मत सुनै
चापाकल एखन चलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / हाथ पाछाँ भार धरतीसँ नीर उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०१६ — संगीतमय रूप

भाव: चापाकल नीरक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, हलुक पखावज। चापाकल नीरक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: चापाकल नीरक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: चापाकल नीरक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: चापाकल नीरक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: चापाकल नीरक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: चापाकल नीरक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: चापाकल नीरक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०१७ — ढेकी धान कुटै, ताल धपधप सोर उठैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: धपधप सोर उठैए · शेर: ६

ढेकी सोझाँ उठै छै, आँखि रूप परखै / धान संग ताल धपधप सोर उठैए
पएर पाछाँ पड़ै छै, कान ढेकीक सोर सुनै / ढेकी पाछाँ चाल धपधप सोर उठैए
धान भीतर कुटै छै, लोक ढेकीक नाम बुझै / सोर ढेकी लग गुँजै छै, काजक फल देखै
ढेकी संग उठै छै, बोली राह बनै / पएर भीतर जाल धपधप सोर उठैए
पएर राति पड़ै छै, पुरान ढेकीक छाप जगै / धान ढेकी पाछाँ कुटै छै, मोन भेद बुझै
सोर भीतर गुँजै छै, स्मृति ढेकीक रूप धरै / सोर सोझाँ काल धपधप सोर उठैए
ढेकी दूर उठै छै, देखनिहार बदलै / धान ढेकी लग कुटै छै, बोध संग चलै
पएर भीतर पड़ै छै, काल ढेकीक चिन्ह धरै / ढेकी संग ढाल धपधप सोर उठैए
सोर पाछाँ गुँजै छै, चिन्ह ढेकीक हेतु कहै / ढेकी सोझाँ उठै छै, बाध बीच रहै
धान राति कुटै छै, फल ढेकीक साँच परखै / धान भीतर लाल धपधप सोर उठैए
पएर फेर पड़ै छै, कारण ढेकीक क्रम खुलै / सोर ढेकी दूर गुँजै छै, दोसरक मत सुनै
ढेकी एखन उठै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पएर पाछाँ बाल धपधप सोर उठैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०१७ — संगीतमय रूप

भाव: ढेकी धानक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३७–४१ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, सारंगी, मृदु ढोलक। ढेकी धानक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: ढेकी धानक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: ढेकी धानक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: ढेकी धानक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: ढेकी धानक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: ढेकी धानक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: ढेकी धानक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०१८ — बेलना लोइ फैलै, आधार गोलाइमे फैलैत जाइए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: गोलाइमे फैलैत जाइए · शेर: ६

बेलना सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / लोइ संग सार गोलाइमे फैलैत जाइए
चकला पाछाँ फैलै छै, कान बेलनाक सोर सुनै / बेलना पाछाँ धार गोलाइमे फैलैत जाइए
लोइ भीतर बनै छै, लोक बेलनाक नाम बुझै / हाथ बेलना लग चलै छै, काजक फल देखै
बेलना संग घुमै छै, बोली राह बनै / चकला भीतर विचार गोलाइमे फैलैत जाइए
चकला राति फैलै छै, पुरान बेलनाक छाप जगै / लोइ बेलना पाछाँ बनै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर चलै छै, स्मृति बेलनाक रूप धरै / हाथ सोझाँ आधार गोलाइमे फैलैत जाइए
बेलना दूर घुमै छै, देखनिहार बदलै / लोइ बेलना लग बनै छै, बोध संग चलै
चकला भीतर फैलै छै, काल बेलनाक चिन्ह धरै / बेलना संग कछार गोलाइमे फैलैत जाइए
हाथ पाछाँ चलै छै, चिन्ह बेलनाक हेतु कहै / बेलना सोझाँ घुमै छै, बाध बीच रहै
लोइ राति बनै छै, फल बेलनाक साँच परखै / लोइ भीतर दुआर गोलाइमे फैलैत जाइए
चकला फेर फैलै छै, कारण बेलनाक क्रम खुलै / हाथ बेलना दूर चलै छै, दोसरक मत सुनै
बेलना एखन घुमै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / चकला पाछाँ भार गोलाइमे फैलैत जाइए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०१८ — संगीतमय रूप

भाव: बेलना लोइक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, तानपुरा, मँजीरा। बेलना लोइक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: बेलना लोइक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: बेलना लोइक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: बेलना लोइक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: बेलना लोइक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: बेलना लोइक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: बेलना लोइक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०१९ — खपड़ा छान्ह टिकै, राह बरखा रोकैत रहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: बरखा रोकैत रहैए · शेर: ६

खपड़ा सोझाँ टिकै छै, आँखि रूप परखै / छान्ह संग राह बरखा रोकैत रहैए
बरखा पाछाँ टपकै छै, कान खपड़ाक सोर सुनै / खपड़ा पाछाँ चाह बरखा रोकैत रहैए
छान्ह भीतर बचै छै, लोक खपड़ाक नाम बुझै / घर खपड़ा लग रहै छै, काजक फल देखै
खपड़ा संग टिकै छै, बोली राह बनै / बरखा भीतर थाह बरखा रोकैत रहैए
बरखा राति टपकै छै, पुरान खपड़ाक छाप जगै / छान्ह खपड़ा पाछाँ बचै छै, मोन भेद बुझै
घर भीतर रहै छै, स्मृति खपड़ाक रूप धरै / घर सोझाँ छाह बरखा रोकैत रहैए
खपड़ा दूर टिकै छै, देखनिहार बदलै / छान्ह खपड़ा लग बचै छै, बोध संग चलै
बरखा भीतर टपकै छै, काल खपड़ाक चिन्ह धरै / खपड़ा संग आह बरखा रोकैत रहैए
घर पाछाँ रहै छै, चिन्ह खपड़ाक हेतु कहै / खपड़ा सोझाँ टिकै छै, बाध बीच रहै
छान्ह राति बचै छै, फल खपड़ाक साँच परखै / छान्ह भीतर उछाह बरखा रोकैत रहैए
बरखा फेर टपकै छै, कारण खपड़ाक क्रम खुलै / घर खपड़ा दूर रहै छै, दोसरक मत सुनै
खपड़ा एखन टिकै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / बरखा पाछाँ प्रवाह बरखा रोकैत रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०१९ — संगीतमय रूप

भाव: खपड़ा छान्हक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, हारमोनियम, विरल तबला। खपड़ा छान्हक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: खपड़ा छान्हक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: खपड़ा छान्हक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: खपड़ा छान्हक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: खपड़ा छान्हक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: खपड़ा छान्हक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: खपड़ा छान्हक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०२० — भूसा दउनी चलै, सोर पवन संग उड़ि जाइए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: पवन संग उड़ि जाइए · शेर: ६

भूसा सोझाँ उड़ै छै, आँखि रूप परखै / दउनी संग सोर पवन संग उड़ि जाइए
पवन पाछाँ घुमै छै, कान भूसाक सोर सुनै / भूसा पाछाँ भोर पवन संग उड़ि जाइए
दउनी भीतर छँटै छै, लोक भूसाक नाम बुझै / दाना भूसा लग बचै छै, काजक फल देखै
भूसा संग उड़ै छै, बोली राह बनै / पवन भीतर नोर पवन संग उड़ि जाइए
पवन राति घुमै छै, पुरान भूसाक छाप जगै / दउनी भूसा पाछाँ छँटै छै, मोन भेद बुझै
दाना भीतर बचै छै, स्मृति भूसाक रूप धरै / दाना सोझाँ छोर पवन संग उड़ि जाइए
भूसा दूर उड़ै छै, देखनिहार बदलै / दउनी भूसा लग छँटै छै, बोध संग चलै
पवन भीतर घुमै छै, काल भूसाक चिन्ह धरै / भूसा संग जोर पवन संग उड़ि जाइए
दाना पाछाँ बचै छै, चिन्ह भूसाक हेतु कहै / भूसा सोझाँ उड़ै छै, बाध बीच रहै
दउनी राति छँटै छै, फल भूसाक साँच परखै / दउनी भीतर डोर पवन संग उड़ि जाइए
पवन फेर घुमै छै, कारण भूसाक क्रम खुलै / दाना भूसा दूर बचै छै, दोसरक मत सुनै
भूसा एखन उड़ै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पवन पाछाँ कोर पवन संग उड़ि जाइए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०२० — संगीतमय रूप

भाव: भूसा दउनीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, पखावज, तानपुरा। भूसा दउनीक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: भूसा दउनीक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: भूसा दउनीक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: भूसा दउनीक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: भूसा दउनीक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: भूसा दउनीक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: भूसा दउनीक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०२१ — बेंत पीढ़ी बुनै, मान बैसबाक आसन बनैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: बैसबाक आसन बनैए · शेर: ६

बेंत सोझाँ मुड़ै छै, आँखि रूप परखै / पीढ़ी संग मान बैसबाक आसन बनैए
बुनाइ पाछाँ जुड़ै छै, कान बेंतक सोर सुनै / बेंत पाछाँ ज्ञान बैसबाक आसन बनैए
पीढ़ी भीतर बुनै छै, लोक बेंतक नाम बुझै / हाथ बेंत लग गढ़ै छै, काजक फल देखै
बेंत संग मुड़ै छै, बोली राह बनै / बुनाइ भीतर ध्यान बैसबाक आसन बनैए
बुनाइ राति जुड़ै छै, पुरान बेंतक छाप जगै / पीढ़ी बेंत पाछाँ बुनै छै, मोन भेद बुझै
हाथ भीतर गढ़ै छै, स्मृति बेंतक रूप धरै / हाथ सोझाँ पहिचान बैसबाक आसन बनैए
बेंत दूर मुड़ै छै, देखनिहार बदलै / पीढ़ी बेंत लग बुनै छै, बोध संग चलै
बुनाइ भीतर जुड़ै छै, काल बेंतक चिन्ह धरै / बेंत संग अनुमान बैसबाक आसन बनैए
हाथ पाछाँ गढ़ै छै, चिन्ह बेंतक हेतु कहै / बेंत सोझाँ मुड़ै छै, बाध बीच रहै
पीढ़ी राति बुनै छै, फल बेंतक साँच परखै / पीढ़ी भीतर विधान बैसबाक आसन बनैए
बुनाइ फेर जुड़ै छै, कारण बेंतक क्रम खुलै / हाथ बेंत दूर गढ़ै छै, दोसरक मत सुनै
बेंत एखन मुड़ै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / बुनाइ पाछाँ निदान बैसबाक आसन बनैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०२१ — संगीतमय रूप

भाव: बेंत पीढ़ीक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४१–४५ · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, विरल तबला। बेंत पीढ़ीक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: बेंत पीढ़ीक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: बेंत पीढ़ीक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: बेंत पीढ़ीक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: बेंत पीढ़ीक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: बेंत पीढ़ीक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: बेंत पीढ़ीक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०२२ — माटिक चूल्हि जरै, रात आँच भीतर जगैत रहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात) · रदीफ: आँच भीतर जगैत रहैए · शेर: ६

चूल्हि सोझाँ जरै छै, आँखि रूप परखै / आँच संग बात आँच भीतर जगैत रहैए
काठी पाछाँ उठै छै, कान चूल्हिक सोर सुनै / चूल्हि पाछाँ रात आँच भीतर जगैत रहैए
आँच भीतर सुलगै छै, लोक चूल्हिक नाम बुझै / धूआँ चूल्हि लग पसरै छै, काजक फल देखै
चूल्हि संग जरै छै, बोली राह बनै / काठी भीतर पात आँच भीतर जगैत रहैए
काठी राति उठै छै, पुरान चूल्हिक छाप जगै / आँच चूल्हि पाछाँ सुलगै छै, मोन भेद बुझै
धूआँ भीतर पसरै छै, स्मृति चूल्हिक रूप धरै / धूआँ सोझाँ घात आँच भीतर जगैत रहैए
चूल्हि दूर जरै छै, देखनिहार बदलै / आँच चूल्हि लग सुलगै छै, बोध संग चलै
काठी भीतर उठै छै, काल चूल्हिक चिन्ह धरै / चूल्हि संग प्रभात आँच भीतर जगैत रहैए
धूआँ पाछाँ पसरै छै, चिन्ह चूल्हिक हेतु कहै / चूल्हि सोझाँ जरै छै, बाध बीच रहै
आँच राति सुलगै छै, फल चूल्हिक साँच परखै / आँच भीतर भात आँच भीतर जगैत रहैए
काठी फेर उठै छै, कारण चूल्हिक क्रम खुलै / धूआँ चूल्हि दूर पसरै छै, दोसरक मत सुनै
चूल्हि एखन जरै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / काठी पाछाँ तात आँच भीतर जगैत रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०२२ — संगीतमय रूप

भाव: माटिक चूल्हिक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: रूपक ७।

वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मँजीरा, मृदु पखावज। माटिक चूल्हिक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।

मतला: माटिक चूल्हिक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।

२म शेर: माटिक चूल्हिक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।

३म शेर: माटिक चूल्हिक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।

४म शेर: माटिक चूल्हिक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।

५म शेर: माटिक चूल्हिक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।

६म शेर: माटिक चूल्हिक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०२३ — दूब आँगन भीजै, राह पएर तले हरियैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: पएर तले हरियैए · शेर: ६

दूब सोझाँ हरियै छै, आँखि रूप परखै / आँगन संग राह पएर तले हरियैए
ओस पाछाँ भीजै छै, कान दूबक सोर सुनै / दूब पाछाँ चाह पएर तले हरियैए
आँगन भीतर टिकै छै, लोक दूबक नाम बुझै / पएर दूब लग चलै छै, काजक फल देखै
दूब संग हरियै छै, बोली राह बनै / ओस भीतर थाह पएर तले हरियैए
ओस राति भीजै छै, पुरान दूबक छाप जगै / आँगन दूब पाछाँ टिकै छै, मोन भेद बुझै
पएर भीतर चलै छै, स्मृति दूबक रूप धरै / पएर सोझाँ छाह पएर तले हरियैए
दूब दूर हरियै छै, देखनिहार बदलै / आँगन दूब लग टिकै छै, बोध संग चलै
ओस भीतर भीजै छै, काल दूबक चिन्ह धरै / दूब संग आह पएर तले हरियैए
पएर पाछाँ चलै छै, चिन्ह दूबक हेतु कहै / दूब सोझाँ हरियै छै, बाध बीच रहै
आँगन राति टिकै छै, फल दूबक साँच परखै / आँगन भीतर उछाह पएर तले हरियैए
ओस फेर भीजै छै, कारण दूबक क्रम खुलै / पएर दूब दूर चलै छै, दोसरक मत सुनै
दूब एखन हरियै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / ओस पाछाँ प्रवाह पएर तले हरियैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०२३ — संगीतमय रूप

भाव: दूब आँगनक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, ढोलकक हलुक थाप, बाँसुरी। दूब आँगनक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: दूब आँगनक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: दूब आँगनक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: दूब आँगनक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: दूब आँगनक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: दूब आँगनक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: दूब आँगनक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०२४ — झूला आमगाछ हिलै, उमंग पवन संग डोलैत रहैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: पवन संग डोलैत रहैए · शेर: ६

झूला सोझाँ हिलै छै, आँखि रूप परखै / डोरि संग रंग पवन संग डोलैत रहैए
पवन पाछाँ तनै छै, कान झूलाक सोर सुनै / झूला पाछाँ संग पवन संग डोलैत रहैए
डोरि भीतर डोलै छै, लोक झूलाक नाम बुझै / बाल झूला लग हँसै छै, काजक फल देखै
झूला संग हिलै छै, बोली राह बनै / पवन भीतर ढंग पवन संग डोलैत रहैए
पवन राति तनै छै, पुरान झूलाक छाप जगै / डोरि झूला पाछाँ डोलै छै, मोन भेद बुझै
बाल भीतर हँसै छै, स्मृति झूलाक रूप धरै / बाल सोझाँ अंग पवन संग डोलैत रहैए
झूला दूर हिलै छै, देखनिहार बदलै / डोरि झूला लग डोलै छै, बोध संग चलै
पवन भीतर तनै छै, काल झूलाक चिन्ह धरै / झूला संग उमंग पवन संग डोलैत रहैए
बाल पाछाँ हँसै छै, चिन्ह झूलाक हेतु कहै / झूला सोझाँ हिलै छै, बाध बीच रहै
डोरि राति डोलै छै, फल झूलाक साँच परखै / डोरि भीतर तरंग पवन संग डोलैत रहैए
पवन फेर तनै छै, कारण झूलाक क्रम खुलै / बाल झूला दूर हँसै छै, दोसरक मत सुनै
झूला एखन हिलै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / पवन पाछाँ प्रसंग पवन संग डोलैत रहैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०२४ — संगीतमय रूप

भाव: झूला आमगाछक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, मृदु मँजीरा। झूला आमगाछक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: झूला आमगाछक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: झूला आमगाछक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: झूला आमगाछक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: झूला आमगाछक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: झूला आमगाछक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: झूला आमगाछक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०२५ — कोसी धार बहै, इतिहास नकसा फेर लिखैए

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: नकसा फेर लिखैए · शेर: ६

कोसी सोझाँ बहै छै, आँखि रूप परखै / धार संग आस नकसा फेर लिखैए
बालू पाछाँ सरकै छै, कान कोसीक सोर सुनै / कोसी पाछाँ श्वास नकसा फेर लिखैए
धार भीतर पसरै छै, लोक कोसीक नाम बुझै / किनार कोसी लग बदलै छै, काजक फल देखै
कोसी संग बहै छै, बोली राह बनै / बालू भीतर आभास नकसा फेर लिखैए
बालू राति सरकै छै, पुरान कोसीक छाप जगै / धार कोसी पाछाँ पसरै छै, मोन भेद बुझै
किनार भीतर बदलै छै, स्मृति कोसीक रूप धरै / किनार सोझाँ प्रयास नकसा फेर लिखैए
कोसी दूर बहै छै, देखनिहार बदलै / धार कोसी लग पसरै छै, बोध संग चलै
बालू भीतर सरकै छै, काल कोसीक चिन्ह धरै / कोसी संग उल्लास नकसा फेर लिखैए
किनार पाछाँ बदलै छै, चिन्ह कोसीक हेतु कहै / कोसी सोझाँ बहै छै, बाध बीच रहै
धार राति पसरै छै, फल कोसीक साँच परखै / धार भीतर विश्वास नकसा फेर लिखैए
बालू फेर सरकै छै, कारण कोसीक क्रम खुलै / किनार कोसी दूर बदलै छै, दोसरक मत सुनै
कोसी एखन बहै छै, निष्कर्ष सीमा धरै / बालू पाछाँ इतिहास नकसा फेर लिखैए

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०२५ — संगीतमय रूप

भाव: कोसी धारक बिम्बसँ प्रमाण, स्मृति, देह, समाज, कारण आ समयक पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; एहि गजलकेँ दोसर गजलक बिम्बसँ नहि मिलाओल जाए।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, बाँसुरी, विरल तबला। कोसी धारक दृश्यकेँ वाद्य ओहिना नहि उतारए; ध्वनि भावक संकेत बनए।
मतला: कोसी धारक पहिल शेर अनुभव, प्रमाण आ दृष्टिक सीमा खोलैत अछि; दोसर सोर सुनबाक ठाम बचल रहए।
२म शेर: कोसी धारक दोसर शेर भाषा, मान, पहुँच आ साझा व्यवहारक वास्तविक फलकेँ अपन बिम्बमे धरैत अछि।
३म शेर: कोसी धारक तेसर शेर स्मृति, आरोप, पाठ-संगति आ भीतरक बोधक भेदकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।
४म शेर: कोसी धारक चारिम शेर ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेय आ कालक सम्बन्ध जाँचैत निरन्तरताक प्रश्न जीवित रखैत अछि।
५म शेर: कोसी धारक पाँचम शेर हेतु, व्याप्ति, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटी पर निष्कर्ष परखैत अछि।
६म शेर: कोसी धारक छठम शेर प्रतिपक्षक मतकेँ मान दैत कारण-क्रम, उत्तरदायित्व आ निष्कर्षक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०२६ — पगडंडी धूर — आस एतबे साँच नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: एतबे साँच नहि · शेर: ६

पगडंडी सोझाँ मुड़ै छै, आँखि रूप परखै / धूर कात आस एतबे साँच नहि
पएर पगडंडीक भीतर पड़ै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / मोड़ भीतर श्वास एतबे साँच नहि
धूर लोकक हाथे उड़ै छै, नाम काज सँ बदलै / पगडंडी लोक बीच मुड़ै छै, बोली अर्थ बनबै
पएर पगडंडीक सोझाँ पड़ै छै, पुरान नियम ढलै / मोड़ लग आभास एतबे साँच नहि
पगडंडी राति मुड़ै छै, स्मृति रूप फेर जगै / धूर पाछाँ पगडंडीक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
पएर पगडंडीक फेर पड़ै छै, पुरान छाप उघड़ै / मोड़ संग प्रयास एतबे साँच नहि
पगडंडी दूरो मुड़ै छै, देखनिहार बदलै / धूर फेरो उड़ै छै, बोध निज रूप धरै
पएर पगडंडीक फेरो पड़ै छै, स्मृति जीवित रहै / पगडंडी पाछाँ उल्लास एतबे साँच नहि
मोड़ पगडंडीक सोझाँ खुलै छै, चिन्ह बाधा परखै / पगडंडी सोझाँ मुड़ै छै, अपवाद राह रोकै
धूर एखन उड़ै छै, सफल काज साँच जँचै / पएर भीतर विश्वास एतबे साँच नहि
पगडंडी फेर मुड़ै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक पगडंडीक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
धूर एखनहुँ उड़ै छै, उत्तरदायित्व जागै / पगडंडी संग इतिहास एतबे साँच नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०२६ — संगीतमय रूप

भाव: पगडंडी धूरक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ३८–४३ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, विरल तबला। पगडंडी धूरक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: पगडंडी धूरक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पगडंडी धूरक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: पगडंडी धूरक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: पगडंडी धूरक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: पगडंडी धूरक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: पगडंडी धूरक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०२७ — नाव पतवार — मान तखन अर्थ खुलैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: तखन अर्थ खुलैत अछि · शेर: ६

नाव सोझाँ सरकै छै, आँखि रूप परखै / पतवार कात मान तखन अर्थ खुलैत अछि
नीर नावक भीतर बहै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / किनार भीतर ज्ञान तखन अर्थ खुलैत अछि
पतवार लोकक हाथे काटै छै, नाम काज सँ बदलै / नाव लोक बीच सरकै छै, बोली अर्थ बनबै
नीर नावक सोझाँ बहै छै, पुरान नियम ढलै / किनार लग ध्यान तखन अर्थ खुलैत अछि
नाव राति सरकै छै, स्मृति रूप फेर जगै / पतवार पाछाँ नावक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
नीर नावक फेर बहै छै, पुरान छाप उघड़ै / किनार संग पहिचान तखन अर्थ खुलैत अछि
नाव दूरो सरकै छै, देखनिहार बदलै / पतवार फेरो काटै छै, बोध निज रूप धरै
नीर नावक फेरो बहै छै, स्मृति जीवित रहै / नाव पाछाँ अनुमान तखन अर्थ खुलैत अछि
किनार नावक सोझाँ लगै छै, चिन्ह बाधा परखै / नाव सोझाँ सरकै छै, अपवाद राह रोकै
पतवार एखन काटै छै, सफल काज साँच जँचै / नीर भीतर विधान तखन अर्थ खुलैत अछि
नाव फेर सरकै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक नावक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
पतवार एखनहुँ काटै छै, उत्तरदायित्व जागै / नाव संग निदान तखन अर्थ खुलैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०२७ — संगीतमय रूप

भाव: नाव पतवारक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४१–४६ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मँजीरा, हलुक ढोलक। नाव पतवारक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: नाव पतवारक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: नाव पतवारक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: नाव पतवारक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: नाव पतवारक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: नाव पतवारक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: नाव पतवारक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०२८ — सनक रस्सी — राह मोन फेर पूछैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: मोन फेर पूछैत रहै · शेर: ६

सन सोझाँ तनै छै, आँखि रूप परखै / रस्सी कात राह मोन फेर पूछैत रहै
रेसा सनक भीतर जुड़ै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / गाँठि भीतर चाह मोन फेर पूछैत रहै
रस्सी लोकक हाथे मुड़ै छै, नाम काज सँ बदलै / सन लोक बीच तनै छै, बोली अर्थ बनबै
रेसा सनक सोझाँ जुड़ै छै, पुरान नियम ढलै / गाँठि लग थाह मोन फेर पूछैत रहै
सन राति तनै छै, स्मृति रूप फेर जगै / रस्सी पाछाँ सनक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
रेसा सनक फेर जुड़ै छै, पुरान छाप उघड़ै / गाँठि संग छाह मोन फेर पूछैत रहै
सन दूरो तनै छै, देखनिहार बदलै / रस्सी फेरो मुड़ै छै, बोध निज रूप धरै
रेसा सनक फेरो जुड़ै छै, स्मृति जीवित रहै / सन पाछाँ आह मोन फेर पूछैत रहै
गाँठि सनक सोझाँ कसै छै, चिन्ह बाधा परखै / सन सोझाँ तनै छै, अपवाद राह रोकै
रस्सी एखन मुड़ै छै, सफल काज साँच जँचै / रेसा भीतर उछाह मोन फेर पूछैत रहै
सन फेर तनै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक सनक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
रस्सी एखनहुँ मुड़ै छै, उत्तरदायित्व जागै / सन संग प्रवाह मोन फेर पूछैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०२८ — संगीतमय रूप

भाव: सनक रस्सीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४४–४९ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, मृदु पखावज। सनक रस्सीक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: सनक रस्सीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सनक रस्सीक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: सनक रस्सीक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: सनक रस्सीक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: सनक रस्सीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: सनक रस्सीक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०२९ — सरकंडा चटाई — रंग नाम कतहु हराइत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: नाम कतहु हराइत नहि · शेर: ६

सरकंडा सोझाँ नमै छै, आँखि रूप परखै / चटाई कात रंग नाम कतहु हराइत नहि
पाँति सरकंडाक भीतर बुनै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / हाथ भीतर संग नाम कतहु हराइत नहि
चटाई लोकक हाथे जुड़ै छै, नाम काज सँ बदलै / सरकंडा लोक बीच नमै छै, बोली अर्थ बनबै
पाँति सरकंडाक सोझाँ बुनै छै, पुरान नियम ढलै / हाथ लग ढंग नाम कतहु हराइत नहि
सरकंडा राति नमै छै, स्मृति रूप फेर जगै / चटाई पाछाँ सरकंडाक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
पाँति सरकंडाक फेर बुनै छै, पुरान छाप उघड़ै / हाथ संग अंग नाम कतहु हराइत नहि
सरकंडा दूरो नमै छै, देखनिहार बदलै / चटाई फेरो जुड़ै छै, बोध निज रूप धरै
पाँति सरकंडाक फेरो बुनै छै, स्मृति जीवित रहै / सरकंडा पाछाँ उमंग नाम कतहु हराइत नहि
हाथ सरकंडाक सोझाँ चलै छै, चिन्ह बाधा परखै / सरकंडा सोझाँ नमै छै, अपवाद राह रोकै
चटाई एखन जुड़ै छै, सफल काज साँच जँचै / पाँति भीतर तरंग नाम कतहु हराइत नहि
सरकंडा फेर नमै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक सरकंडाक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
चटाई एखनहुँ जुड़ै छै, उत्तरदायित्व जागै / सरकंडा संग प्रसंग नाम कतहु हराइत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०२९ — संगीतमय रूप

भाव: सरकंडा चटाईक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४७–५२ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, बाँसुरी, विरल मँजीरा। सरकंडा चटाईक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: सरकंडा चटाईक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सरकंडा चटाईक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: सरकंडा चटाईक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: सरकंडा चटाईक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: सरकंडा चटाईक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: सरकंडा चटाईक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०३० — तसर कोया — सार रेशमक छुअन बचल रहत

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: रेशमक छुअन बचल रहत · शेर: ६

कोया सोझाँ खुलै छै, आँखि रूप परखै / सूत कात सार रेशमक छुअन बचल रहत
रेशम कोयाक भीतर चमकै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / हाथ भीतर धार रेशमक छुअन बचल रहत
सूत लोकक हाथे तनै छै, नाम काज सँ बदलै / कोया लोक बीच खुलै छै, बोली अर्थ बनबै
रेशम कोयाक सोझाँ चमकै छै, पुरान नियम ढलै / हाथ लग विचार रेशमक छुअन बचल रहत
कोया राति खुलै छै, स्मृति रूप फेर जगै / सूत पाछाँ कोयाक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
रेशम कोयाक फेर चमकै छै, पुरान छाप उघड़ै / हाथ संग आधार रेशमक छुअन बचल रहत
कोया दूरो खुलै छै, देखनिहार बदलै / सूत फेरो तनै छै, बोध निज रूप धरै
रेशम कोयाक फेरो चमकै छै, स्मृति जीवित रहै / कोया पाछाँ कछार रेशमक छुअन बचल रहत
हाथ कोयाक सोझाँ चलै छै, चिन्ह बाधा परखै / कोया सोझाँ खुलै छै, अपवाद राह रोकै
सूत एखन तनै छै, सफल काज साँच जँचै / रेशम भीतर दुआर रेशमक छुअन बचल रहत
कोया फेर खुलै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक कोयाक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
सूत एखनहुँ तनै छै, उत्तरदायित्व जागै / कोया संग भार रेशमक छुअन बचल रहत

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०३० — संगीतमय रूप

भाव: तसर कोयाक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ५०–५५ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, सारंगी, हलुक तबला। तसर कोयाक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: तसर कोयाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: तसर कोयाक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: तसर कोयाक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: तसर कोयाक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: तसर कोयाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: तसर कोयाक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०३१ — दही मथानी — गीत अपन बाट बनबैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: अपन बाट बनबैत अछि · शेर: ६

मथानी सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / दही कात गीत अपन बाट बनबैत अछि
मक्खन मथानीक भीतर उठै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / हाथ भीतर मीत अपन बाट बनबैत अछि
दही लोकक हाथे फेटै छै, नाम काज सँ बदलै / मथानी लोक बीच घुमै छै, बोली अर्थ बनबै
मक्खन मथानीक सोझाँ उठै छै, पुरान नियम ढलै / हाथ लग प्रीत अपन बाट बनबैत अछि
मथानी राति घुमै छै, स्मृति रूप फेर जगै / दही पाछाँ मथानीक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
मक्खन मथानीक फेर उठै छै, पुरान छाप उघड़ै / हाथ संग रीत अपन बाट बनबैत अछि
मथानी दूरो घुमै छै, देखनिहार बदलै / दही फेरो फेटै छै, बोध निज रूप धरै
मक्खन मथानीक फेरो उठै छै, स्मृति जीवित रहै / मथानी पाछाँ जीत अपन बाट बनबैत अछि
हाथ मथानीक सोझाँ चलै छै, चिन्ह बाधा परखै / मथानी सोझाँ घुमै छै, अपवाद राह रोकै
दही एखन फेटै छै, सफल काज साँच जँचै / मक्खन भीतर अतीत अपन बाट बनबैत अछि
मथानी फेर घुमै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक मथानीक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
दही एखनहुँ फेटै छै, उत्तरदायित्व जागै / मथानी संग पुनीत अपन बाट बनबैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०३१ — संगीतमय रूप

भाव: दही मथानीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ३८–४३ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, मृदु पखावज। दही मथानीक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: दही मथानीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: दही मथानीक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: दही मथानीक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: दही मथानीक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: दही मथानीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: दही मथानीक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०३२ — धानक कोठी — हाथ फेर घर दिस अबैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ) · रदीफ: फेर घर दिस अबैत अछि · शेर: ६

कोठी सोझाँ भरै छै, आँखि रूप परखै / धान कात हाथ फेर घर दिस अबैत अछि
दाना कोठीक भीतर बचै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / घर भीतर साथ फेर घर दिस अबैत अछि
धान लोकक हाथे टिकै छै, नाम काज सँ बदलै / कोठी लोक बीच भरै छै, बोली अर्थ बनबै
दाना कोठीक सोझाँ बचै छै, पुरान नियम ढलै / घर लग माथ फेर घर दिस अबैत अछि
कोठी राति भरै छै, स्मृति रूप फेर जगै / धान पाछाँ कोठीक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
दाना कोठीक फेर बचै छै, पुरान छाप उघड़ै / घर संग पाथ फेर घर दिस अबैत अछि
कोठी दूरो भरै छै, देखनिहार बदलै / धान फेरो टिकै छै, बोध निज रूप धरै
दाना कोठीक फेरो बचै छै, स्मृति जीवित रहै / कोठी पाछाँ गाथ फेर घर दिस अबैत अछि
घर कोठीक सोझाँ रहै छै, चिन्ह बाधा परखै / कोठी सोझाँ भरै छै, अपवाद राह रोकै
धान एखन टिकै छै, सफल काज साँच जँचै / दाना भीतर नाथ फेर घर दिस अबैत अछि
कोठी फेर भरै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक कोठीक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
धान एखनहुँ टिकै छै, उत्तरदायित्व जागै / कोठी संग अनाथ फेर घर दिस अबैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०३२ — संगीतमय रूप

भाव: धानक कोठीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।

गति (BPM): ४१–४६ · ताल: कहरवा ८।

वाद्य-विन्यास: सारंगी, एकतारा, विरल ढोलक। धानक कोठीक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।

मतला: धानक कोठीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।

२म शेर: धानक कोठीक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।

३म शेर: धानक कोठीक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।

४म शेर: धानक कोठीक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: धानक कोठीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।

६म शेर: धानक कोठीक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०३३ — खोंइछा अन्न — बात कथा एतय थमैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात) · रदीफ: कथा एतय थमैत नहि · शेर: ६

खोंइछा सोझाँ भरै छै, आँखि रूप परखै / अन्न कात बात कथा एतय थमैत नहि
आँचर खोंइछाक भीतर सम्हरै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / लोक भीतर रात कथा एतय थमैत नहि
अन्न लोकक हाथे रहै छै, नाम काज सँ बदलै / खोंइछा लोक बीच भरै छै, बोली अर्थ बनबै
आँचर खोंइछाक सोझाँ सम्हरै छै, पुरान नियम ढलै / लोक लग पात कथा एतय थमैत नहि
खोंइछा राति भरै छै, स्मृति रूप फेर जगै / अन्न पाछाँ खोंइछाक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
आँचर खोंइछाक फेर सम्हरै छै, पुरान छाप उघड़ै / लोक संग घात कथा एतय थमैत नहि
खोंइछा दूरो भरै छै, देखनिहार बदलै / अन्न फेरो रहै छै, बोध निज रूप धरै
आँचर खोंइछाक फेरो सम्हरै छै, स्मृति जीवित रहै / खोंइछा पाछाँ प्रभात कथा एतय थमैत नहि
लोक खोंइछाक सोझाँ दैत छै, चिन्ह बाधा परखै / खोंइछा सोझाँ भरै छै, अपवाद राह रोकै
अन्न एखन रहै छै, सफल काज साँच जँचै / आँचर भीतर भात कथा एतय थमैत नहि
खोंइछा फेर भरै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक खोंइछाक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
अन्न एखनहुँ रहै छै, उत्तरदायित्व जागै / खोंइछा संग तात कथा एतय थमैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०३३ — संगीतमय रूप

भाव: खोंइछा अन्नक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४४–४९ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, मँजीरा। खोंइछा अन्नक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: खोंइछा अन्नक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: खोंइछा अन्नक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: खोंइछा अन्नक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: खोंइछा अन्नक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: खोंइछा अन्नक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: खोंइछा अन्नक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०३४ — पोखर घाट — सोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: पएर आगाँ बढ़ैत रहै · शेर: ६

पएर सोझाँ उतरै छै, आँखि रूप परखै / घाट कात सोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै
नीर पएरक भीतर लहरै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / लोक भीतर भोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै
घाट लोकक हाथे भीजै छै, नाम काज सँ बदलै / पएर लोक बीच उतरै छै, बोली अर्थ बनबै
नीर पएरक सोझाँ लहरै छै, पुरान नियम ढलै / लोक लग नोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै
पएर राति उतरै छै, स्मृति रूप फेर जगै / घाट पाछाँ पएरक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
नीर पएरक फेर लहरै छै, पुरान छाप उघड़ै / लोक संग छोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै
पएर दूरो उतरै छै, देखनिहार बदलै / घाट फेरो भीजै छै, बोध निज रूप धरै
नीर पएरक फेरो लहरै छै, स्मृति जीवित रहै / पएर पाछाँ जोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै
लोक पएरक सोझाँ चढ़ै छै, चिन्ह बाधा परखै / पएर सोझाँ उतरै छै, अपवाद राह रोकै
घाट एखन भीजै छै, सफल काज साँच जँचै / नीर भीतर डोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै
पएर फेर उतरै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक पएरक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
घाट एखनहुँ भीजै छै, उत्तरदायित्व जागै / पएर संग कोर पएर आगाँ बढ़ैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०३४ — संगीतमय रूप

भाव: पोखर घाटक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४७–५२ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, हारमोनियम, विरल तबला। पोखर घाटक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: पोखर घाटक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पोखर घाटक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: पोखर घाटक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: पोखर घाटक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: पोखर घाटक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: पोखर घाटक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०३५ — अरिपन रेखा — ताल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: रेखा घर सँ जुड़ैत अछि · शेर: ६

अरिपन सोझाँ बनै छै, आँखि रूप परखै / रेखा कात ताल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि
पिठार अरिपनक भीतर जुड़ै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / आँगन भीतर चाल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि
रेखा लोकक हाथे फैलै छै, नाम काज सँ बदलै / अरिपन लोक बीच बनै छै, बोली अर्थ बनबै
पिठार अरिपनक सोझाँ जुड़ै छै, पुरान नियम ढलै / आँगन लग जाल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि
अरिपन राति बनै छै, स्मृति रूप फेर जगै / रेखा पाछाँ अरिपनक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
पिठार अरिपनक फेर जुड़ै छै, पुरान छाप उघड़ै / आँगन संग काल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि
अरिपन दूरो बनै छै, देखनिहार बदलै / रेखा फेरो फैलै छै, बोध निज रूप धरै
पिठार अरिपनक फेरो जुड़ै छै, स्मृति जीवित रहै / अरिपन पाछाँ ढाल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि
आँगन अरिपनक सोझाँ दमकै छै, चिन्ह बाधा परखै / अरिपन सोझाँ बनै छै, अपवाद राह रोकै
रेखा एखन फैलै छै, सफल काज साँच जँचै / पिठार भीतर लाल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि
अरिपन फेर बनै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक अरिपनक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
रेखा एखनहुँ फैलै छै, उत्तरदायित्व जागै / अरिपन संग बाल रेखा घर सँ जुड़ैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०३५ — संगीतमय रूप

भाव: अरिपन रेखाक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ५०–५५ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक ढोलक। अरिपन रेखाक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: अरिपन रेखाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: अरिपन रेखाक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: अरिपन रेखाक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: अरिपन रेखाक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: अरिपन रेखाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: अरिपन रेखाक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०३६ — बाँसुरी स्वर — आस भीतर साँस लैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: भीतर साँस लैत अछि · शेर: ६

बाँसुरी सोझाँ बजै छै, आँखि रूप परखै / स्वर कात आस भीतर साँस लैत अछि
साँस बाँसुरीक भीतर लहरै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / सोर भीतर श्वास भीतर साँस लैत अछि
स्वर लोकक हाथे उठै छै, नाम काज सँ बदलै / बाँसुरी लोक बीच बजै छै, बोली अर्थ बनबै
साँस बाँसुरीक सोझाँ लहरै छै, पुरान नियम ढलै / सोर लग आभास भीतर साँस लैत अछि
बाँसुरी राति बजै छै, स्मृति रूप फेर जगै / स्वर पाछाँ बाँसुरीक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
साँस बाँसुरीक फेर लहरै छै, पुरान छाप उघड़ै / सोर संग प्रयास भीतर साँस लैत अछि
बाँसुरी दूरो बजै छै, देखनिहार बदलै / स्वर फेरो उठै छै, बोध निज रूप धरै
साँस बाँसुरीक फेरो लहरै छै, स्मृति जीवित रहै / बाँसुरी पाछाँ उल्लास भीतर साँस लैत अछि
सोर बाँसुरीक सोझाँ पसरै छै, चिन्ह बाधा परखै / बाँसुरी सोझाँ बजै छै, अपवाद राह रोकै
स्वर एखन उठै छै, सफल काज साँच जँचै / साँस भीतर विश्वास भीतर साँस लैत अछि
बाँसुरी फेर बजै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक बाँसुरीक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
स्वर एखनहुँ उठै छै, उत्तरदायित्व जागै / बाँसुरी संग इतिहास भीतर साँस लैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०३६ — संगीतमय रूप

भाव: बाँसुरी स्वरक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ३८–४३ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, विरल तबला। बाँसुरी स्वरक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: बाँसुरी स्वरक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बाँसुरी स्वरक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: बाँसुरी स्वरक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: बाँसुरी स्वरक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: बाँसुरी स्वरक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: बाँसुरी स्वरक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०३७ — गोरस मथनी — मान रस हाथे बदलैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: रस हाथे बदलैत अछि · शेर: ६

मथनी सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / गोरस कात मान रस हाथे बदलैत अछि
फेन मथनीक भीतर उठै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / भाँड़ भीतर ज्ञान रस हाथे बदलैत अछि
गोरस लोकक हाथे हिलै छै, नाम काज सँ बदलै / मथनी लोक बीच घुमै छै, बोली अर्थ बनबै
फेन मथनीक सोझाँ उठै छै, पुरान नियम ढलै / भाँड़ लग ध्यान रस हाथे बदलैत अछि
मथनी राति घुमै छै, स्मृति रूप फेर जगै / गोरस पाछाँ मथनीक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
फेन मथनीक फेर उठै छै, पुरान छाप उघड़ै / भाँड़ संग पहिचान रस हाथे बदलैत अछि
मथनी दूरो घुमै छै, देखनिहार बदलै / गोरस फेरो हिलै छै, बोध निज रूप धरै
फेन मथनीक फेरो उठै छै, स्मृति जीवित रहै / मथनी पाछाँ अनुमान रस हाथे बदलैत अछि
भाँड़ मथनीक सोझाँ भरै छै, चिन्ह बाधा परखै / मथनी सोझाँ घुमै छै, अपवाद राह रोकै
गोरस एखन हिलै छै, सफल काज साँच जँचै / फेन भीतर विधान रस हाथे बदलैत अछि
मथनी फेर घुमै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक मथनीक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
गोरस एखनहुँ हिलै छै, उत्तरदायित्व जागै / मथनी संग निदान रस हाथे बदलैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०३७ — संगीतमय रूप

भाव: गोरस मथनीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४१–४६ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मँजीरा, हलुक ढोलक। गोरस मथनीक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: गोरस मथनीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: गोरस मथनीक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: गोरस मथनीक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: गोरस मथनीक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: गोरस मथनीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: गोरस मथनीक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०३८ — मिथिला चित्रक कूची — सोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: रंग मौनहुँ बोलैत अछि · शेर: ६

कूची सोझाँ चलै छै, आँखि रूप परखै / चित्र कात सोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि
रेखा कूचीक भीतर मुड़ै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / रंग भीतर भोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि
चित्र लोकक हाथे उभरै छै, नाम काज सँ बदलै / कूची लोक बीच चलै छै, बोली अर्थ बनबै
रेखा कूचीक सोझाँ मुड़ै छै, पुरान नियम ढलै / रंग लग नोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि
कूची राति चलै छै, स्मृति रूप फेर जगै / चित्र पाछाँ कूचीक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
रेखा कूचीक फेर मुड़ै छै, पुरान छाप उघड़ै / रंग संग छोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि
कूची दूरो चलै छै, देखनिहार बदलै / चित्र फेरो उभरै छै, बोध निज रूप धरै
रेखा कूचीक फेरो मुड़ै छै, स्मृति जीवित रहै / कूची पाछाँ जोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि
रंग कूचीक सोझाँ भरै छै, चिन्ह बाधा परखै / कूची सोझाँ चलै छै, अपवाद राह रोकै
चित्र एखन उभरै छै, सफल काज साँच जँचै / रेखा भीतर डोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि
कूची फेर चलै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक कूचीक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
चित्र एखनहुँ उभरै छै, उत्तरदायित्व जागै / कूची संग कोर रंग मौनहुँ बोलैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०३८ — संगीतमय रूप

भाव: मिथिला चित्रक कूचीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४४–४९ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, मृदु पखावज। मिथिला चित्रक कूचीक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: मिथिला चित्रक कूचीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: मिथिला चित्रक कूचीक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: मिथिला चित्रक कूचीक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: मिथिला चित्रक कूचीक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: मिथिला चित्रक कूचीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: मिथिला चित्रक कूचीक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०३९ — माछक जाल — सार नीर जाल परखैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: नीर जाल परखैत अछि · शेर: ६

जाल सोझाँ पसरै छै, आँखि रूप परखै / माछ कात सार नीर जाल परखैत अछि
नीर जालक भीतर बहै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / नाव भीतर धार नीर जाल परखैत अछि
माछ लोकक हाथे तिरै छै, नाम काज सँ बदलै / जाल लोक बीच पसरै छै, बोली अर्थ बनबै
नीर जालक सोझाँ बहै छै, पुरान नियम ढलै / नाव लग विचार नीर जाल परखैत अछि
जाल राति पसरै छै, स्मृति रूप फेर जगै / माछ पाछाँ जालक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
नीर जालक फेर बहै छै, पुरान छाप उघड़ै / नाव संग आधार नीर जाल परखैत अछि
जाल दूरो पसरै छै, देखनिहार बदलै / माछ फेरो तिरै छै, बोध निज रूप धरै
नीर जालक फेरो बहै छै, स्मृति जीवित रहै / जाल पाछाँ कछार नीर जाल परखैत अछि
नाव जालक सोझाँ चलै छै, चिन्ह बाधा परखै / जाल सोझाँ पसरै छै, अपवाद राह रोकै
माछ एखन तिरै छै, सफल काज साँच जँचै / नीर भीतर दुआर नीर जाल परखैत अछि
जाल फेर पसरै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक जालक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
माछ एखनहुँ तिरै छै, उत्तरदायित्व जागै / जाल संग भार नीर जाल परखैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०३९ — संगीतमय रूप

भाव: माछक जालक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४७–५२ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, बाँसुरी, विरल मँजीरा। माछक जालक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: माछक जालक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: माछक जालक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: माछक जालक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: माछक जालक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: माछक जालक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: माछक जालक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०४० — पोथीक जिल्द — गीत आखर देह धरैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: आखर देह धरैत अछि · शेर: ६

जिल्द सोझाँ खुलै छै, आँखि रूप परखै / पन्ना कात गीत आखर देह धरैत अछि
आखर जिल्दक भीतर जगै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / पोथी भीतर मीत आखर देह धरैत अछि
पन्ना लोकक हाथे सरकै छै, नाम काज सँ बदलै / जिल्द लोक बीच खुलै छै, बोली अर्थ बनबै
आखर जिल्दक सोझाँ जगै छै, पुरान नियम ढलै / पोथी लग प्रीत आखर देह धरैत अछि
जिल्द राति खुलै छै, स्मृति रूप फेर जगै / पन्ना पाछाँ जिल्दक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
आखर जिल्दक फेर जगै छै, पुरान छाप उघड़ै / पोथी संग रीत आखर देह धरैत अछि
जिल्द दूरो खुलै छै, देखनिहार बदलै / पन्ना फेरो सरकै छै, बोध निज रूप धरै
आखर जिल्दक फेरो जगै छै, स्मृति जीवित रहै / जिल्द पाछाँ जीत आखर देह धरैत अछि
पोथी जिल्दक सोझाँ बोलै छै, चिन्ह बाधा परखै / जिल्द सोझाँ खुलै छै, अपवाद राह रोकै
पन्ना एखन सरकै छै, सफल काज साँच जँचै / आखर भीतर अतीत आखर देह धरैत अछि
जिल्द फेर खुलै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक जिल्दक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
पन्ना एखनहुँ सरकै छै, उत्तरदायित्व जागै / जिल्द संग पुनीत आखर देह धरैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०४० — संगीतमय रूप

भाव: पोथीक जिल्दक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ५०–५५ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, सारंगी, हलुक तबला। पोथीक जिल्दक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: पोथीक जिल्दक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पोथीक जिल्दक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: पोथीक जिल्दक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: पोथीक जिल्दक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: पोथीक जिल्दक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: पोथीक जिल्दक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०४१ — नीम पात — राह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि · शेर: ६

नीम सोझाँ हरियै छै, आँखि रूप परखै / पात कात राह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि
स्वाद नीमक भीतर बदलै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / छाह भीतर चाह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि
पात लोकक हाथे झरै छै, नाम काज सँ बदलै / नीम लोक बीच हरियै छै, बोली अर्थ बनबै
स्वाद नीमक सोझाँ बदलै छै, पुरान नियम ढलै / छाह लग थाह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि
नीम राति हरियै छै, स्मृति रूप फेर जगै / पात पाछाँ नीमक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
स्वाद नीमक फेर बदलै छै, पुरान छाप उघड़ै / छाह संग छाह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि
नीम दूरो हरियै छै, देखनिहार बदलै / पात फेरो झरै छै, बोध निज रूप धरै
स्वाद नीमक फेरो बदलै छै, स्मृति जीवित रहै / नीम पाछाँ आह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि
छाह नीमक सोझाँ पसरै छै, चिन्ह बाधा परखै / नीम सोझाँ हरियै छै, अपवाद राह रोकै
पात एखन झरै छै, सफल काज साँच जँचै / स्वाद भीतर उछाह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि
नीम फेर हरियै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक नीमक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
पात एखनहुँ झरै छै, उत्तरदायित्व जागै / नीम संग प्रवाह ओहि घड़ी भेद खुलैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०४१ — संगीतमय रूप

भाव: नीम पातक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ३८–४३ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, मृदु पखावज। नीम पातक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: नीम पातक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: नीम पातक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: नीम पातक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: नीम पातक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: नीम पातक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: नीम पातक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०४२ — कांस फूल — रंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: चिन्ह पवनोमे बचैत अछि · शेर: ६

कांस सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / फूल कात रंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि
पवन कांसक भीतर बहै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / मैदान भीतर संग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि
फूल लोकक हाथे झुकै छै, नाम काज सँ बदलै / कांस लोक बीच डोलै छै, बोली अर्थ बनबै
पवन कांसक सोझाँ बहै छै, पुरान नियम ढलै / मैदान लग ढंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि
कांस राति डोलै छै, स्मृति रूप फेर जगै / फूल पाछाँ कांसक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
पवन कांसक फेर बहै छै, पुरान छाप उघड़ै / मैदान संग अंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि
कांस दूरो डोलै छै, देखनिहार बदलै / फूल फेरो झुकै छै, बोध निज रूप धरै
पवन कांसक फेरो बहै छै, स्मृति जीवित रहै / कांस पाछाँ उमंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि
मैदान कांसक सोझाँ फैलै छै, चिन्ह बाधा परखै / कांस सोझाँ डोलै छै, अपवाद राह रोकै
फूल एखन झुकै छै, सफल काज साँच जँचै / पवन भीतर तरंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि
कांस फेर डोलै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक कांसक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
फूल एखनहुँ झुकै छै, उत्तरदायित्व जागै / कांस संग प्रसंग चिन्ह पवनोमे बचैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०४२ — संगीतमय रूप

भाव: कांस फूलक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।

गति (BPM): ४१–४६ · ताल: कहरवा ८।

वाद्य-विन्यास: सारंगी, एकतारा, विरल ढोलक। कांस फूलक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।

मतला: कांस फूलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।

२म शेर: कांस फूलक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।

३म शेर: कांस फूलक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।

४म शेर: कांस फूलक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।

५म शेर: कांस फूलक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।

६म शेर: कांस फूलक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०४३ — बरगद जटा — हाथ काल फेर घुरि अबैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ) · रदीफ: काल फेर घुरि अबैत नहि · शेर: ६

बरगद सोझाँ टिकै छै, आँखि रूप परखै / जटा कात हाथ काल फेर घुरि अबैत नहि
जड़ि बरगदक भीतर गड़ै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / छाह भीतर साथ काल फेर घुरि अबैत नहि
जटा लोकक हाथे झुकै छै, नाम काज सँ बदलै / बरगद लोक बीच टिकै छै, बोली अर्थ बनबै
जड़ि बरगदक सोझाँ गड़ै छै, पुरान नियम ढलै / छाह लग माथ काल फेर घुरि अबैत नहि
बरगद राति टिकै छै, स्मृति रूप फेर जगै / जटा पाछाँ बरगदक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
जड़ि बरगदक फेर गड़ै छै, पुरान छाप उघड़ै / छाह संग पाथ काल फेर घुरि अबैत नहि
बरगद दूरो टिकै छै, देखनिहार बदलै / जटा फेरो झुकै छै, बोध निज रूप धरै
जड़ि बरगदक फेरो गड़ै छै, स्मृति जीवित रहै / बरगद पाछाँ गाथ काल फेर घुरि अबैत नहि
छाह बरगदक सोझाँ फैलै छै, चिन्ह बाधा परखै / बरगद सोझाँ टिकै छै, अपवाद राह रोकै
जटा एखन झुकै छै, सफल काज साँच जँचै / जड़ि भीतर नाथ काल फेर घुरि अबैत नहि
बरगद फेर टिकै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक बरगदक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
जटा एखनहुँ झुकै छै, उत्तरदायित्व जागै / बरगद संग अनाथ काल फेर घुरि अबैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०४३ — संगीतमय रूप

भाव: बरगद जटाक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४४–४९ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, मँजीरा। बरगद जटाक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: बरगद जटाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बरगद जटाक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: बरगद जटाक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: बरगद जटाक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: बरगद जटाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: बरगद जटाक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०४४ — पुआल गादी — मान घाम पुआलमे बचैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: घाम पुआलमे बचैत अछि · शेर: ६

पुआल सोझाँ सजै छै, आँखि रूप परखै / गादी कात मान घाम पुआलमे बचैत अछि
धान पुआलक भीतर सुकै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / घर भीतर ज्ञान घाम पुआलमे बचैत अछि
गादी लोकक हाथे टिकै छै, नाम काज सँ बदलै / पुआल लोक बीच सजै छै, बोली अर्थ बनबै
धान पुआलक सोझाँ सुकै छै, पुरान नियम ढलै / घर लग ध्यान घाम पुआलमे बचैत अछि
पुआल राति सजै छै, स्मृति रूप फेर जगै / गादी पाछाँ पुआलक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
धान पुआलक फेर सुकै छै, पुरान छाप उघड़ै / घर संग पहिचान घाम पुआलमे बचैत अछि
पुआल दूरो सजै छै, देखनिहार बदलै / गादी फेरो टिकै छै, बोध निज रूप धरै
धान पुआलक फेरो सुकै छै, स्मृति जीवित रहै / पुआल पाछाँ अनुमान घाम पुआलमे बचैत अछि
घर पुआलक सोझाँ भरै छै, चिन्ह बाधा परखै / पुआल सोझाँ सजै छै, अपवाद राह रोकै
गादी एखन टिकै छै, सफल काज साँच जँचै / धान भीतर विधान घाम पुआलमे बचैत अछि
पुआल फेर सजै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक पुआलक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
गादी एखनहुँ टिकै छै, उत्तरदायित्व जागै / पुआल संग निदान घाम पुआलमे बचैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०४४ — संगीतमय रूप

भाव: पुआल गादीक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४७–५२ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, हारमोनियम, विरल तबला। पुआल गादीक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: पुआल गादीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पुआल गादीक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: पुआल गादीक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: पुआल गादीक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: पुआल गादीक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: पुआल गादीक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०४५ — तिलकोर पात — बात लता आँगन जोड़ैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात) · रदीफ: लता आँगन जोड़ैत अछि · शेर: ६

तिलकोर सोझाँ चढ़ै छै, आँखि रूप परखै / पात कात बात लता आँगन जोड़ैत अछि
लता तिलकोरक भीतर फैलै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / भानस भीतर रात लता आँगन जोड़ैत अछि
पात लोकक हाथे हरियै छै, नाम काज सँ बदलै / तिलकोर लोक बीच चढ़ै छै, बोली अर्थ बनबै
लता तिलकोरक सोझाँ फैलै छै, पुरान नियम ढलै / भानस लग पात लता आँगन जोड़ैत अछि
तिलकोर राति चढ़ै छै, स्मृति रूप फेर जगै / पात पाछाँ तिलकोरक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
लता तिलकोरक फेर फैलै छै, पुरान छाप उघड़ै / भानस संग घात लता आँगन जोड़ैत अछि
तिलकोर दूरो चढ़ै छै, देखनिहार बदलै / पात फेरो हरियै छै, बोध निज रूप धरै
लता तिलकोरक फेरो फैलै छै, स्मृति जीवित रहै / तिलकोर पाछाँ प्रभात लता आँगन जोड़ैत अछि
भानस तिलकोरक सोझाँ महकै छै, चिन्ह बाधा परखै / तिलकोर सोझाँ चढ़ै छै, अपवाद राह रोकै
पात एखन हरियै छै, सफल काज साँच जँचै / लता भीतर भात लता आँगन जोड़ैत अछि
तिलकोर फेर चढ़ै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक तिलकोरक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
पात एखनहुँ हरियै छै, उत्तरदायित्व जागै / तिलकोर संग तात लता आँगन जोड़ैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०४५ — संगीतमय रूप

भाव: तिलकोर पातक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ५०–५५ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, हलुक ढोलक। तिलकोर पातक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: तिलकोर पातक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: तिलकोर पातक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: तिलकोर पातक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: तिलकोर पातक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: तिलकोर पातक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: तिलकोर पातक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०४६ — सिंघाड़ा पोखर — गीत नीर तले फल पाकैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: नीर तले फल पाकैत अछि · शेर: ६

सिंघाड़ा सोझाँ पाकै छै, आँखि रूप परखै / पात कात गीत नीर तले फल पाकैत अछि
नीर सिंघाड़ाक भीतर लहरै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / बीआ भीतर मीत नीर तले फल पाकैत अछि
पात लोकक हाथे तिरै छै, नाम काज सँ बदलै / सिंघाड़ा लोक बीच पाकै छै, बोली अर्थ बनबै
नीर सिंघाड़ाक सोझाँ लहरै छै, पुरान नियम ढलै / बीआ लग प्रीत नीर तले फल पाकैत अछि
सिंघाड़ा राति पाकै छै, स्मृति रूप फेर जगै / पात पाछाँ सिंघाड़ाक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
नीर सिंघाड़ाक फेर लहरै छै, पुरान छाप उघड़ै / बीआ संग रीत नीर तले फल पाकैत अछि
सिंघाड़ा दूरो पाकै छै, देखनिहार बदलै / पात फेरो तिरै छै, बोध निज रूप धरै
नीर सिंघाड़ाक फेरो लहरै छै, स्मृति जीवित रहै / सिंघाड़ा पाछाँ जीत नीर तले फल पाकैत अछि
बीआ सिंघाड़ाक सोझाँ डूबै छै, चिन्ह बाधा परखै / सिंघाड़ा सोझाँ पाकै छै, अपवाद राह रोकै
पात एखन तिरै छै, सफल काज साँच जँचै / नीर भीतर अतीत नीर तले फल पाकैत अछि
सिंघाड़ा फेर पाकै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक सिंघाड़ाक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
पात एखनहुँ तिरै छै, उत्तरदायित्व जागै / सिंघाड़ा संग पुनीत नीर तले फल पाकैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०४६ — संगीतमय रूप

भाव: सिंघाड़ा पोखरक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ३८–४३ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, विरल तबला। सिंघाड़ा पोखरक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: सिंघाड़ा पोखरक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सिंघाड़ा पोखरक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: सिंघाड़ा पोखरक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: सिंघाड़ा पोखरक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: सिंघाड़ा पोखरक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: सिंघाड़ा पोखरक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०४७ — कमला धार — सार नीर सभ गप कहैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: नीर सभ गप कहैत नहि · शेर: ६

कमला सोझाँ बहै छै, आँखि रूप परखै / धार कात सार नीर सभ गप कहैत नहि
बालू कमलाक भीतर कटै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / कछार भीतर धार नीर सभ गप कहैत नहि
धार लोकक हाथे सरकै छै, नाम काज सँ बदलै / कमला लोक बीच बहै छै, बोली अर्थ बनबै
बालू कमलाक सोझाँ कटै छै, पुरान नियम ढलै / कछार लग विचार नीर सभ गप कहैत नहि
कमला राति बहै छै, स्मृति रूप फेर जगै / धार पाछाँ कमलाक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
बालू कमलाक फेर कटै छै, पुरान छाप उघड़ै / कछार संग आधार नीर सभ गप कहैत नहि
कमला दूरो बहै छै, देखनिहार बदलै / धार फेरो सरकै छै, बोध निज रूप धरै
बालू कमलाक फेरो कटै छै, स्मृति जीवित रहै / कमला पाछाँ कछार नीर सभ गप कहैत नहि
कछार कमलाक सोझाँ बनै छै, चिन्ह बाधा परखै / कमला सोझाँ बहै छै, अपवाद राह रोकै
धार एखन सरकै छै, सफल काज साँच जँचै / बालू भीतर दुआर नीर सभ गप कहैत नहि
कमला फेर बहै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक कमलाक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
धार एखनहुँ सरकै छै, उत्तरदायित्व जागै / कमला संग भार नीर सभ गप कहैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०४७ — संगीतमय रूप

भाव: कमला धारक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४१–४६ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मँजीरा, हलुक ढोलक। कमला धारक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: कमला धारक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कमला धारक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: कमला धारक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: कमला धारक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: कमला धारक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: कमला धारक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०४८ — चिरई घोंसला — सोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: मौनहुँ उत्तर दैत अछि · शेर: ६

चिरई सोझाँ उड़ै छै, आँखि रूप परखै / घोंसला कात सोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि
तिनका चिरईक भीतर बनै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / डारि भीतर भोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि
घोंसला लोकक हाथे जुड़ै छै, नाम काज सँ बदलै / चिरई लोक बीच उड़ै छै, बोली अर्थ बनबै
तिनका चिरईक सोझाँ बनै छै, पुरान नियम ढलै / डारि लग नोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि
चिरई राति उड़ै छै, स्मृति रूप फेर जगै / घोंसला पाछाँ चिरईक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
तिनका चिरईक फेर बनै छै, पुरान छाप उघड़ै / डारि संग छोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि
चिरई दूरो उड़ै छै, देखनिहार बदलै / घोंसला फेरो जुड़ै छै, बोध निज रूप धरै
तिनका चिरईक फेरो बनै छै, स्मृति जीवित रहै / चिरई पाछाँ जोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि
डारि चिरईक सोझाँ डोलै छै, चिन्ह बाधा परखै / चिरई सोझाँ उड़ै छै, अपवाद राह रोकै
घोंसला एखन जुड़ै छै, सफल काज साँच जँचै / तिनका भीतर डोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि
चिरई फेर उड़ै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक चिरईक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
घोंसला एखनहुँ जुड़ै छै, उत्तरदायित्व जागै / चिरई संग कोर मौनहुँ उत्तर दैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०४८ — संगीतमय रूप

भाव: चिरई घोंसलाक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४४–४९ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, तानपुरा, मृदु पखावज। चिरई घोंसलाक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: चिरई घोंसलाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: चिरई घोंसलाक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: चिरई घोंसलाक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: चिरई घोंसलाक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: चिरई घोंसलाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: चिरई घोंसलाक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०४९ — धानक लावा — ताल रूप बदलियो मूल रहैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: रूप बदलियो मूल रहैत अछि · शेर: ६

लावा सोझाँ फूटै छै, आँखि रूप परखै / धान कात ताल रूप बदलियो मूल रहैत अछि
आँच लावाक भीतर गरमै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / दाना भीतर चाल रूप बदलियो मूल रहैत अछि
धान लोकक हाथे फुलै छै, नाम काज सँ बदलै / लावा लोक बीच फूटै छै, बोली अर्थ बनबै
आँच लावाक सोझाँ गरमै छै, पुरान नियम ढलै / दाना लग जाल रूप बदलियो मूल रहैत अछि
लावा राति फूटै छै, स्मृति रूप फेर जगै / धान पाछाँ लावाक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
आँच लावाक फेर गरमै छै, पुरान छाप उघड़ै / दाना संग काल रूप बदलियो मूल रहैत अछि
लावा दूरो फूटै छै, देखनिहार बदलै / धान फेरो फुलै छै, बोध निज रूप धरै
आँच लावाक फेरो गरमै छै, स्मृति जीवित रहै / लावा पाछाँ ढाल रूप बदलियो मूल रहैत अछि
दाना लावाक सोझाँ उछलै छै, चिन्ह बाधा परखै / लावा सोझाँ फूटै छै, अपवाद राह रोकै
धान एखन फुलै छै, सफल काज साँच जँचै / आँच भीतर लाल रूप बदलियो मूल रहैत अछि
लावा फेर फूटै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक लावाक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
धान एखनहुँ फुलै छै, उत्तरदायित्व जागै / लावा संग बाल रूप बदलियो मूल रहैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०४९ — संगीतमय रूप

भाव: धानक लावाक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ४७–५२ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, बाँसुरी, विरल मँजीरा। धानक लावाक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: धानक लावाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: धानक लावाक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: धानक लावाक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: धानक लावाक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: धानक लावाक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: धानक लावाक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०५० — आखरक यात्रा — आस अन्त एतय होइत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: अन्त एतय होइत नहि · शेर: ६

आखर सोझाँ चलै छै, आँखि रूप परखै / यात्रा कात आस अन्त एतय होइत नहि
पोथी आखरक भीतर खुलै छै, कान सूक्ष्म सोर सुनै / पाठक भीतर श्वास अन्त एतय होइत नहि
यात्रा लोकक हाथे बढ़ै छै, नाम काज सँ बदलै / आखर लोक बीच चलै छै, बोली अर्थ बनबै
पोथी आखरक सोझाँ खुलै छै, पुरान नियम ढलै / पाठक लग आभास अन्त एतय होइत नहि
आखर राति चलै छै, स्मृति रूप फेर जगै / यात्रा पाछाँ आखरक छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
पोथी आखरक फेर खुलै छै, पुरान छाप उघड़ै / पाठक संग प्रयास अन्त एतय होइत नहि
आखर दूरो चलै छै, देखनिहार बदलै / यात्रा फेरो बढ़ै छै, बोध निज रूप धरै
पोथी आखरक फेरो खुलै छै, स्मृति जीवित रहै / आखर पाछाँ उल्लास अन्त एतय होइत नहि
पाठक आखरक सोझाँ जुड़ै छै, चिन्ह बाधा परखै / आखर सोझाँ चलै छै, अपवाद राह रोकै
यात्रा एखन बढ़ै छै, सफल काज साँच जँचै / पोथी भीतर विश्वास अन्त एतय होइत नहि
आखर फेर चलै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक आखरक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
यात्रा एखनहुँ बढ़ै छै, उत्तरदायित्व जागै / आखर संग इतिहास अन्त एतय होइत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०५० — संगीतमय रूप

भाव: आखरक यात्राक बिम्बसँ प्रमाण, भाषा-व्यवहार, स्मृति, ज्ञाता, हेतु आ कारण-क्रमक छह पृथक् अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि; शेरसभ स्वतंत्र रहैत अछि।
गति (BPM): ५०–५५ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, सारंगी, हलुक तबला। आखरक यात्राक दृश्य ध्वनिक नकल नहि बने; विराम, मींड आ थाप केवल भावक संकेत बनए।
मतला: आखरक यात्राक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभूति आ दोसर प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: आखरक यात्राक दोसर शेर लोकक काज, भाषा, मान आ व्यवहारक फलपर टिकल अछि; पहिल मिसरा स्वतंत्र रहए।
३म शेर: आखरक यात्राक तेसर शेर स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खोलैत अछि; कथ्य अगिला शेरपर निर्भर नहि रहए।
४म शेर: आखरक यात्राक चारिम शेर देखनिहार, ज्ञान, ज्ञेय, स्मृति आ कालक निरन्तरता पर प्रश्न उठबैत अछि।
५म शेर: आखरक यात्राक पाँचम शेर हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक जाँच करैत निष्कर्षकेँ तुरन्त अन्तिम नहि मानैत अछि।
६म शेर: आखरक यात्राक छठम शेर कारण-क्रम, आन मतक सम्मान आ उत्तरदायित्वक सीमा स्पष्ट करैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०५१ — लोहारक धौंकनी — आस कथन एतेक पर थिर नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: कथन एतेक पर थिर नहि · शेर: ६

धौंकनी सोझाँ चलै छै, आँखि रूप परखै / आँच भीतर आस कथन एतेक पर थिर नहि
लोहा धीरे नमै छै, कान बदलल सोर सुनै / हथौड़ी कात श्वास कथन एतेक पर थिर नहि
आँच लोकक हाथे जरै छै, नाम काज सँ बदलै / धौंकनी लोक बीच चलै छै, बोली अर्थ बनबै
लोहा अपन रूप नमै छै, पुरान नियम ढलै / हथौड़ी लग आभास कथन एतेक पर थिर नहि
धौंकनी राति चलै छै, स्मृति रूप फेर जगै / आँच पाछाँ छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
लोहा फेरो नमै छै, पुरान छाप उघड़ै / हथौड़ी संग प्रयास कथन एतेक पर थिर नहि
धौंकनी दूरो चलै छै, देखनिहार बदलै / आँच फेर जरै छै, बोध निज रूप धरै
लोहा काल संग नमै छै, स्मृति जीवित रहै / धौंकनी पाछाँ उल्लास कथन एतेक पर थिर नहि
हथौड़ी सोझाँ बजै छै, चिन्ह बाधा परखै / धौंकनी एखन चलै छै, अपवाद राह रोकै
आँच फेर जरै छै, सफल काज साँच जँचै / लोहा भीतर विश्वास कथन एतेक पर थिर नहि
धौंकनी फेर चलै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक धौंकनीक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
आँच एखनहुँ जरै छै, उत्तरदायित्व जागै / धौंकनी संग इतिहास कथन एतेक पर थिर नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०५१ — संगीतमय रूप

भाव: लोहारक धौंकनीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, विरल तबला। लोहारक धौंकनीक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: लोहारक धौंकनीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: लोहारक धौंकनीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद लोहारक धौंकनीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: लोहारक धौंकनीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: लोहारक धौंकनीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: लोहारक धौंकनीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०५२ — करघाक ताना — मान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: सूत भीतर चिन्ह बचल अछि · शेर: ६

ताना भोरमे तनै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / करघा कात मान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि
सूत ध्वनि बुनै छै, मोन सुनि सीमा बुझै / बाना बीच ज्ञान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि
करघा लोक बीच चलै छै, व्यवहार अर्थ खोलै / ताना हाथ बदलि तनै छै, बोली मान सम्हरै
बाना नाम सँ जुड़ै छै, चलन नियम फेर बदलै / सूत सोझाँ ध्यान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि
ताना राति तनै छै, पुरान स्मृति फेर जगै / करघा छाया धरै छै, मोन मूल रूप बुझै
बाना पाछाँ जुड़ै छै, आरोप धीरे हटै / सूत भीतर पहिचान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि
सूत दूर बुनै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / करघा सोझाँ चलै छै, बोध अपन ठाम रहै
बाना फेर जुड़ै छै, कालक डोर नहि टूटै / ताना कात अनुमान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि
करघा चिन्ह संग चलै छै, हेतु बाधा जाँचै / सूत फेर बुनै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
ताना काजमे तनै छै, सफल चाल प्रमाण जँचै / बाना लग विधान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि
बाना मूल सँ जुड़ै छै, कारणक क्रम खुलै / लोक करघाक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर सीमा मानै
करघा एखन चलै छै, साझा दायित्व जागै / सूत संग निदान सूत भीतर चिन्ह बचल अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०५२ — संगीतमय रूप

भाव: करघाक तानाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, एकतारा, हलुक मँजीरा। करघाक तानाक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: करघाक तानाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: करघाक तानाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद करघाक तानाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: करघाक तानाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: करघाक तानाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: करघाक तानाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०५३ — अलसी फूल — राह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै · शेर: ६

बीआ सोझाँ पाकै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / अलसी भीतर राह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै
फूल धीरे खिलै छै, दृष्टि अपन सीमा बुझै / पवन कात चाह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै
अलसी गाममे डोलै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै / बीआ हाथे पाकै छै, बोली काज सँ जुड़ै
फूल नामो खिलै छै, नियम उपयोगेँ खुलै / पवन लग थाह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै
पवन राति बहै छै, स्मृति छाया फेर उठै / अलसी पाछाँ डोलै छै, मोन आरोप परखै
बीआ धीरे पाकै छै, मूल बोध फेर उघड़ै / फूल संग छाह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै
अलसी दूर डोलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / पवन फेर बहै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै
बीआ कालमे पाकै छै, स्मृति डोर सम्हरै / अलसी कात आह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै
फूल चिन्ह पर खिलै छै, हेतु संग बाधा जँचै / पवन सोझाँ बहै छै, अपवाद रोकै
अलसी काजमे डोलै छै, फल प्रमाण फेर परखै / बीआ भीतर उछाह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै
पवन फेर बहै छै, कारण क्रम सोझ खुलै / लोक अलसीक आन पक्ष सुनै छै, न्याय सीमा धरै
फूल एखनहुँ खिलै छै, साझा मान फेर जागै / अलसी संग प्रवाह धुनि पवनक संग मुड़ैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०५३ — संगीतमय रूप

भाव: अलसी फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदु पखावज, तानपुरा। अलसी फूलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: अलसी फूलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: अलसी फूलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद अलसी फूलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: अलसी फूलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: अलसी फूलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: अलसी फूलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०५४ — सरिसो खेत — रंग नेह बिना रंग पूरा नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: नेह बिना रंग पूरा नहि · शेर: ६

भँवरा लग गुँजै छै, आँखि पहिल रूप परखै / सरिसो भीतर रंग नेह बिना रंग पूरा नहि
फूल अपन चाल दमकै छै, कान बदलल लय सुनै / खेत कात संग नेह बिना रंग पूरा नहि
खेत लोकक काजे हरियै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै / सरिसो बोली बीच लहरै छै, नाम समय संग बदलै
फूल फेर दमकै छै, नियम चलन सँ जँचै / भँवरा लग ढंग नेह बिना रंग पूरा नहि
सरिसो स्मृतिमे लहरै छै, छाया पुरान फेर जगै / खेत पाछाँ हरियै छै, मोन आरोप बुझै
फूल धीरे दमकै छै, मूल चिन्ह फेर उघड़ै / भँवरा संग अंग नेह बिना रंग पूरा नहि
खेत दूरो हरियै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / सरिसो फेर लहरै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै
फूल काल संग दमकै छै, पहिचान डोर नहि टूटै / खेत कात उमंग नेह बिना रंग पूरा नहि
भँवरा चिन्ह लग गुँजै छै, हेतु बाधा फेर परखै / सरिसो एखन लहरै छै, अपवाद राह रोकै
खेत सफल काज हरियै छै, फल साँचक राह जँचै / फूल भीतर तरंग नेह बिना रंग पूरा नहि
सरिसो मूल दिस लहरै छै, कारण क्रम फेर खुलै / लोक सरिसोक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर मर्यादा धरै
भँवरा एखन गुँजै छै, दायित्व मनमे जागै / सरिसो संग प्रसंग नेह बिना रंग पूरा नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०५४ — संगीतमय रूप

भाव: सरिसो खेतक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, विरल ढोलक, बाँसुरी। सरिसो खेतक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: सरिसो खेतक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सरिसो खेतक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद सरिसो खेतक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: सरिसो खेतक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: सरिसो खेतक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: सरिसो खेतक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०५५ — पगहा गाँठि — सार बंधन अपन राह चुनैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: बंधन अपन राह चुनैत अछि · शेर: ६

पगहा भोर दिस तनै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / रेसा भीतर सार बंधन अपन राह चुनैत अछि
गाँठि कने कसै छै, कान सूक्ष्म ध्वनि सुनै / खूँटा लग धार बंधन अपन राह चुनैत अछि
खूँटा लोक बीच टिकै छै, उपयोग अर्थकेँ खोलै / पगहा काज संग तनै छै, बोली नाम सम्हरै
रेसा पगहा संग फेर जुड़ै छै, पुरान नियम नव बनै / गाँठि सोझाँ विचार बंधन अपन राह चुनैत अछि
गाँठि राति कसै छै, स्मृति छाया फेर जगै / खूँटा पाछाँ टिकै छै, मोन आरोप बुझै
पगहा धीरे तनै छै, मूल बोध पुनि उघड़ै / रेसा संग आधार बंधन अपन राह चुनैत अछि
खूँटा दूर टिकै छै, देखनिहार प्रश्न करै / गाँठि फेर कसै छै, बोध अपन सीमा धरै
पगहा कालमे तनै छै, स्मृति पहिचान सम्हरै / खूँटा कात कछार बंधन अपन राह चुनैत अछि
रेसा पगहाक चिन्ह संग जुड़ै छै, हेतु बाधा फेर जँचै / पगहा एखन तनै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
गाँठि काजमे कसै छै, सफल चाल प्रमाण बनै / खूँटा भीतर दुआर बंधन अपन राह चुनैत अछि
रेसा पगहाक मूल सँ जुड़ै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक पगहाक आन पक्ष सुनै छै, साझा सीमा मानै
पगहा एखनहुँ तनै छै, उत्तरदायित्व जागै / रेसा संग भार बंधन अपन राह चुनैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०५५ — संगीतमय रूप

भाव: पगहा गाँठिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

गति (BPM): ४१–४५ · ताल: दीपचन्दी १४।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मँजीरा। पगहा गाँठिक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।

मतला: पगहा गाँठिक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।

२म शेर: पगहा गाँठिक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।

३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद पगहा गाँठिक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।

४म शेर: पगहा गाँठिक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।

५म शेर: पगहा गाँठिक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।

६म शेर: पगहा गाँठिक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०५६ — जूटक बोरा — गीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि · शेर: ६

जूट सोझाँ बुनै छै, आँखि रूप परखै / बोरा भीतर गीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि
रेसा धीरे जुड़ै छै, कान बदलल सोर सुनै / अन्न कात मीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि
बोरा लोकक हाथे भरै छै, नाम काज सँ बदलै / जूट लोक बीच बुनै छै, बोली अर्थ बनबै
रेसा अपन रूप जुड़ै छै, पुरान नियम ढलै / अन्न लग प्रीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि
जूट राति बुनै छै, स्मृति रूप फेर जगै / बोरा पाछाँ छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
रेसा फेरो जुड़ै छै, पुरान छाप उघड़ै / अन्न संग रीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि
जूट दूरो बुनै छै, देखनिहार बदलै / बोरा फेर भरै छै, बोध निज रूप धरै
रेसा काल संग जुड़ै छै, स्मृति जीवित रहै / जूट पाछाँ जीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि
अन्न सोझाँ टिकै छै, चिन्ह बाधा परखै / जूट एखन बुनै छै, अपवाद राह रोकै
बोरा फेर भरै छै, सफल काज साँच जँचै / रेसा भीतर अतीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि
जूट फेर बुनै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक जूटक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
बोरा एखनहुँ भरै छै, उत्तरदायित्व जागै / जूट संग पुनीत बीज चुप्पे उत्तर धरैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०५६ — संगीतमय रूप

भाव: जूटक बोराक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: इसराज, बाँसुरी, हलुक तबला। जूटक बोराक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: जूटक बोराक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: जूटक बोराक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद जूटक बोराक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: जूटक बोराक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: जूटक बोराक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: जूटक बोराक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०५७ — कुशक आसन — हाथ छाह बदललहुँ मूल नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ) · रदीफ: छाह बदललहुँ मूल नहि · शेर: ६

आसन भोरमे बिछै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / कुश कात हाथ छाह बदललहुँ मूल नहि
धरती ध्वनि थिरै छै, मोन सुनि सीमा बुझै / तिनका बीच साथ छाह बदललहुँ मूल नहि
कुश लोक बीच नमै छै, व्यवहार अर्थ खोलै / आसन हाथ बदलि बिछै छै, बोली मान सम्हरै
तिनका नाम सँ जुड़ै छै, चलन नियम फेर बदलै / धरती सोझाँ माथ छाह बदललहुँ मूल नहि
आसन राति बिछै छै, पुरान स्मृति फेर जगै / कुश छाया धरै छै, मोन मूल रूप बुझै
तिनका पाछाँ जुड़ै छै, आरोप धीरे हटै / धरती भीतर पाथ छाह बदललहुँ मूल नहि
धरती दूर थिरै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / कुश सोझाँ नमै छै, बोध अपन ठाम रहै
तिनका फेर जुड़ै छै, कालक डोर नहि टूटै / आसन कात गाथ छाह बदललहुँ मूल नहि
कुश चिन्ह संग नमै छै, हेतु बाधा जाँचै / धरती फेर थिरै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
आसन काजमे बिछै छै, सफल चाल प्रमाण जँचै / तिनका लग नाथ छाह बदललहुँ मूल नहि
तिनका मूल सँ जुड़ै छै, कारणक क्रम खुलै / लोक कुशक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर सीमा मानै
कुश एखन नमै छै, साझा दायित्व जागै / धरती संग अनाथ छाह बदललहुँ मूल नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०५७ — संगीतमय रूप

भाव: कुशक आसनक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४९–५३ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, सारंगी, विरल पखावज। कुशक आसनक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कुशक आसनक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कुशक आसनक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कुशक आसनक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कुशक आसनक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कुशक आसनक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कुशक आसनक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०५८ — सोनारक हथौड़ी — बात थाप देहक भेद गनैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात) · रदीफ: थाप देहक भेद गनैत रहै · शेर: ६

सोना सोझाँ नमै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / सोनार भीतर बात थाप देहक भेद गनैत रहै
हथौड़ी धीरे बजै छै, दृष्टि अपन सीमा बुझै / आँच कात रात थाप देहक भेद गनैत रहै
सोनार गाममे गढ़ै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै / सोना हाथे नमै छै, बोली काज सँ जुड़ै
हथौड़ी नामो बजै छै, नियम उपयोगेँ खुलै / आँच लग पात थाप देहक भेद गनैत रहै
आँच राति जरै छै, स्मृति छाया फेर उठै / सोनार पाछाँ गढ़ै छै, मोन आरोप परखै
सोना धीरे नमै छै, मूल बोध फेर उघड़ै / हथौड़ी संग घात थाप देहक भेद गनैत रहै
सोनार दूर गढ़ै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / आँच फेर जरै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै
सोना कालमे नमै छै, स्मृति डोर सम्हरै / सोनार कात प्रभात थाप देहक भेद गनैत रहै
हथौड़ी चिन्ह पर बजै छै, हेतु संग बाधा जँचै / आँच सोझाँ जरै छै, अपवाद रोकै
सोनार काजमे गढ़ै छै, फल प्रमाण फेर परखै / सोना भीतर भात थाप देहक भेद गनैत रहै
आँच फेर जरै छै, कारण क्रम सोझ खुलै / लोक सोनारक आन पक्ष सुनै छै, न्याय सीमा धरै
हथौड़ी एखनहुँ बजै छै, साझा मान फेर जागै / सोनार संग तात थाप देहक भेद गनैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०५८ — संगीतमय रूप

भाव: सोनारक हथौड़ीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, हलुक ढोलक। सोनारक हथौड़ीक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: सोनारक हथौड़ीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सोनारक हथौड़ीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद सोनारक हथौड़ीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: सोनारक हथौड़ीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: सोनारक हथौड़ीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: सोनारक हथौड़ीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०५९ — जुगनू राति — सोर राति भीतर भोर पलैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: राति भीतर भोर पलैत अछि · शेर: ६

झाड़ी लग डोलै छै, आँखि पहिल रूप परखै / जुगनू भीतर सोर राति भीतर भोर पलैत अछि
राति अपन चाल गहरै छै, कान बदलल लय सुनै / ज्योति कात भोर राति भीतर भोर पलैत अछि
ज्योति लोकक काजे जगै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै / जुगनू बोली बीच चमकै छै, नाम समय संग बदलै
राति फेर गहरै छै, नियम चलन सँ जँचै / झाड़ी लग नोर राति भीतर भोर पलैत अछि
जुगनू स्मृतिमे चमकै छै, छाया पुरान फेर जगै / ज्योति पाछाँ जगै छै, मोन आरोप बुझै
राति धीरे गहरै छै, मूल चिन्ह फेर उघड़ै / झाड़ी संग छोर राति भीतर भोर पलैत अछि
ज्योति दूरो जगै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / जुगनू फेर चमकै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै
राति काल संग गहरै छै, पहिचान डोर नहि टूटै / ज्योति कात जोर राति भीतर भोर पलैत अछि
झाड़ी चिन्ह लग डोलै छै, हेतु बाधा फेर परखै / जुगनू एखन चमकै छै, अपवाद राह रोकै
ज्योति सफल काज जगै छै, फल साँचक राह जँचै / राति भीतर डोर राति भीतर भोर पलैत अछि
जुगनू मूल दिस चमकै छै, कारण क्रम फेर खुलै / लोक जुगनूक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर मर्यादा धरै
झाड़ी एखन डोलै छै, दायित्व मनमे जागै / जुगनू संग कोर राति भीतर भोर पलैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०५९ — संगीतमय रूप

भाव: जुगनू रातिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, इसराज, विरल तबला। जुगनू रातिक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: जुगनू रातिक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: जुगनू रातिक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद जुगनू रातिक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: जुगनू रातिक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: जुगनू रातिक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: जुगनू रातिक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०६० — ओसक बूँद — ताल घाम बिना चमक खुलैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: घाम बिना चमक खुलैत नहि · शेर: ६

ओस भोर दिस टिकै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / पात भीतर ताल घाम बिना चमक खुलैत नहि
बूँद कने चमकै छै, कान सूक्ष्म ध्वनि सुनै / भोर लग चाल घाम बिना चमक खुलैत नहि
भोर लोक बीच खुलै छै, उपयोग अर्थकेँ खोलै / ओस काज संग टिकै छै, बोली नाम सम्हरै
पात ओस संग फेर भीजै छै, पुरान नियम नव बनै / बूँद सोझाँ जाल घाम बिना चमक खुलैत नहि
बूँद राति चमकै छै, स्मृति छाया फेर जगै / भोर पाछाँ खुलै छै, मोन आरोप बुझै
ओस धीरे टिकै छै, मूल बोध पुनि उघड़ै / पात संग काल घाम बिना चमक खुलैत नहि
भोर दूर खुलै छै, देखनिहार प्रश्न करै / बूँद फेर चमकै छै, बोध अपन सीमा धरै
ओस कालमे टिकै छै, स्मृति पहिचान सम्हरै / भोर कात ढाल घाम बिना चमक खुलैत नहि
पात ओसक चिन्ह संग भीजै छै, हेतु बाधा फेर जँचै / ओस एखन टिकै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
बूँद काजमे चमकै छै, सफल चाल प्रमाण बनै / भोर भीतर लाल घाम बिना चमक खुलैत नहि
पात ओसक मूल सँ भीजै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक ओसक आन पक्ष सुनै छै, साझा सीमा मानै
ओस एखनहुँ टिकै छै, उत्तरदायित्व जागै / पात संग बाल घाम बिना चमक खुलैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०६० — संगीतमय रूप

भाव: ओसक बूँदक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, बाँसुरी, मृदु मँजीरा। ओसक बूँदक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: ओसक बूँदक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: ओसक बूँदक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद ओसक बूँदक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: ओसक बूँदक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: ओसक बूँदक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: ओसक बूँदक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०६१ — कमलनाल — आस नोरक अर्थ एक्के नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: नोरक अर्थ एक्के नहि · शेर: ६

कमलनाल सोझाँ उठै छै, आँखि रूप परखै / नीर भीतर आस नोरक अर्थ एक्के नहि
जड़ि धीरे गड़ै छै, कान बदलल सोर सुनै / फूल कात श्वास नोरक अर्थ एक्के नहि
नीर लोकक हाथे लहरै छै, नाम काज सँ बदलै / कमलनाल लोक बीच उठै छै, बोली अर्थ बनबै
जड़ि अपन रूप गड़ै छै, पुरान नियम ढलै / फूल लग आभास नोरक अर्थ एक्के नहि
कमलनाल राति उठै छै, स्मृति रूप फेर जगै / नीर पाछाँ छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
जड़ि फेरो गड़ै छै, पुरान छाप उघड़ै / फूल संग प्रयास नोरक अर्थ एक्के नहि
कमलनाल दूरो उठै छै, देखनिहार बदलै / नीर फेर लहरै छै, बोध निज रूप धरै
जड़ि काल संग गड़ै छै, स्मृति जीवित रहै / कमलनाल पाछाँ उल्लास नोरक अर्थ एक्के नहि
फूल सोझाँ खुलै छै, चिन्ह बाधा परखै / कमलनाल एखन उठै छै, अपवाद राह रोकै
नीर फेर लहरै छै, सफल काज साँच जँचै / जड़ि भीतर विश्वास नोरक अर्थ एक्के नहि
कमलनाल फेर उठै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक कमलनालक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
नीर एखनहुँ लहरै छै, उत्तरदायित्व जागै / कमलनाल संग इतिहास नोरक अर्थ एक्के नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०६१ — संगीतमय रूप

भाव: कमलनालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, विरल तबला। कमलनालक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कमलनालक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कमलनालक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कमलनालक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कमलनालक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कमलनालक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कमलनालक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०६२ — माटिक पुतरी — मान साँस संग लय बदलैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: साँस संग लय बदलैत अछि · शेर: ६

माटि भोरमे नमै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / पुतरी कात मान साँस संग लय बदलैत अछि
हाथ ध्वनि गढ़ै छै, मोन सुनि सीमा बुझै / आँखि बीच ज्ञान साँस संग लय बदलैत अछि
पुतरी लोक बीच बनै छै, व्यवहार अर्थ खोलै / माटि हाथ बदलि नमै छै, बोली मान सम्हरै
आँखि नाम सँ तकैत रहै छै, चलन नियम फेर बदलै / हाथ सोझाँ ध्यान साँस संग लय बदलैत अछि
माटि राति नमै छै, पुरान स्मृति फेर जगै / पुतरी छाया धरै छै, मोन मूल रूप बुझै
आँखि पाछाँ तकैत रहै छै, आरोप धीरे हटै / हाथ भीतर पहिचान साँस संग लय बदलैत अछि
हाथ दूर गढ़ै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / पुतरी सोझाँ बनै छै, बोध अपन ठाम रहै
आँखि फेर तकैत रहै छै, कालक डोर नहि टूटै / माटि कात अनुमान साँस संग लय बदलैत अछि
पुतरी चिन्ह संग बनै छै, हेतु बाधा जाँचै / हाथ फेर गढ़ै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
माटि काजमे नमै छै, सफल चाल प्रमाण जँचै / आँखि लग विधान साँस संग लय बदलैत अछि
आँखि मूल सँ तकैत रहै छै, कारणक क्रम खुलै / लोक पुतरीक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर सीमा मानै
पुतरी एखन बनै छै, साझा दायित्व जागै / हाथ संग निदान साँस संग लय बदलैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०६२ — संगीतमय रूप

भाव: माटिक पुतरीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४१–४५ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, एकतारा, हलुक मँजीरा। माटिक पुतरीक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: माटिक पुतरीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: माटिक पुतरीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद माटिक पुतरीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: माटिक पुतरीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: माटिक पुतरीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: माटिक पुतरीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०६३ — बढ़ईक रन्दा — सोर हाथक छाप मेटैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: हाथक छाप मेटैत नहि · शेर: ६

छिलका सोझाँ झरै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / रन्दा भीतर सोर हाथक छाप मेटैत नहि
काठ धीरे घिसै छै, दृष्टि अपन सीमा बुझै / हाथ कात भोर हाथक छाप मेटैत नहि
रन्दा गाममे चलै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै / छिलका हाथे झरै छै, बोली काज सँ जुड़ै
काठ नामो घिसै छै, नियम उपयोगेँ खुलै / हाथ लग नोर हाथक छाप मेटैत नहि
हाथ राति सम्हरै छै, स्मृति छाया फेर उठै / रन्दा पाछाँ चलै छै, मोन आरोप परखै
छिलका धीरे झरै छै, मूल बोध फेर उघड़ै / काठ संग छोर हाथक छाप मेटैत नहि
रन्दा दूर चलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / हाथ फेर सम्हरै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै
छिलका कालमे झरै छै, स्मृति डोर सम्हरै / रन्दा कात जोर हाथक छाप मेटैत नहि
काठ चिन्ह पर घिसै छै, हेतु संग बाधा जँचै / हाथ सोझाँ सम्हरै छै, अपवाद रोकै
रन्दा काजमे चलै छै, फल प्रमाण फेर परखै / छिलका भीतर डोर हाथक छाप मेटैत नहि
हाथ फेर सम्हरै छै, कारण क्रम सोझ खुलै / लोक रन्दाक आन पक्ष सुनै छै, न्याय सीमा धरै
काठ एखनहुँ घिसै छै, साझा मान फेर जागै / रन्दा संग कोर हाथक छाप मेटैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०६३ — संगीतमय रूप

भाव: बढ़ईक रन्दाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदु पखावज, तानपुरा। बढ़ईक रन्दाक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बढ़ईक रन्दाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बढ़ईक रन्दाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बढ़ईक रन्दाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बढ़ईक रन्दाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बढ़ईक रन्दाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बढ़ईक रन्दाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०६४ — पानक बारी — सार नीर नीचे जीवन जगैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: नीर नीचे जीवन जगैत अछि · शेर: ६

माटि लग भीजै छै, आँखि पहिल रूप परखै / पान भीतर सार नीर नीचे जीवन जगैत अछि
बारी अपन चाल हरियै छै, कान बदलल लय सुनै / लता कात धार नीर नीचे जीवन जगैत अछि
लता लोकक काजे फैलै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै / पान बोली बीच चढ़ै छै, नाम समय संग बदलै
बारी फेर हरियै छै, नियम चलन सँ जँचै / माटि लग विचार नीर नीचे जीवन जगैत अछि
पान स्मृतिमे चढ़ै छै, छाया पुरान फेर जगै / लता पाछाँ फैलै छै, मोन आरोप बुझै
बारी धीरे हरियै छै, मूल चिन्ह फेर उघड़ै / माटि संग आधार नीर नीचे जीवन जगैत अछि
लता दूरो फैलै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / पान फेर चढ़ै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै
बारी काल संग हरियै छै, पहिचान डोर नहि टूटै / लता कात कछार नीर नीचे जीवन जगैत अछि
माटि चिन्ह लग भीजै छै, हेतु बाधा फेर परखै / पान एखन चढ़ै छै, अपवाद राह रोकै
लता सफल काज फैलै छै, फल साँचक राह जँचै / बारी भीतर दुआर नीर नीचे जीवन जगैत अछि
पान मूल दिस चढ़ै छै, कारण क्रम फेर खुलै / लोक पानक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर मर्यादा धरै
माटि एखन भीजै छै, दायित्व मनमे जागै / पान संग भार नीर नीचे जीवन जगैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०६४ — संगीतमय रूप

भाव: पानक बारीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४९–५३ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, विरल ढोलक, बाँसुरी। पानक बारीक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: पानक बारीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पानक बारीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद पानक बारीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: पानक बारीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: पानक बारीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: पानक बारीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०६५ — पोखरक पाँक — गीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: मौनक सीमा एतय टूटैत अछि · शेर: ६

पाँक भोर दिस धरै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / पएर भीतर गीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि
पोखर कने लहरै छै, कान सूक्ष्म ध्वनि सुनै / नीर लग मीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि
नीर लोक बीच बहै छै, उपयोग अर्थकेँ खोलै / पाँक काज संग धरै छै, बोली नाम सम्हरै
पएर पाँक संग फेर धँसै छै, पुरान नियम नव बनै / पोखर सोझाँ प्रीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि
पोखर राति लहरै छै, स्मृति छाया फेर जगै / नीर पाछाँ बहै छै, मोन आरोप बुझै
पाँक धीरे धरै छै, मूल बोध पुनि उघड़ै / पएर संग रीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि
नीर दूर बहै छै, देखनिहार प्रश्न करै / पोखर फेर लहरै छै, बोध अपन सीमा धरै
पाँक कालमे धरै छै, स्मृति पहिचान सम्हरै / नीर कात जीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि
पएर पाँकक चिन्ह संग धँसै छै, हेतु बाधा फेर जँचै / पाँक एखन धरै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
पोखर काजमे लहरै छै, सफल चाल प्रमाण बनै / नीर भीतर अतीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि
पएर पाँकक मूल सँ धँसै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक पाँकक आन पक्ष सुनै छै, साझा सीमा मानै
पाँक एखनहुँ धरै छै, उत्तरदायित्व जागै / पएर संग पुनीत मौनक सीमा एतय टूटैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०६५ — संगीतमय रूप

भाव: पोखरक पाँकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मँजीरा। पोखरक पाँकक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: पोखरक पाँकक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पोखरक पाँकक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद पोखरक पाँकक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: पोखरक पाँकक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: पोखरक पाँकक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: पोखरक पाँकक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०६६ — आम्रपल्लव तोरण — राह समय अपन गाँठि खोलैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: समय अपन गाँठि खोलैत रहै · शेर: ६

पल्लव सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / तोरण भीतर राह समय अपन गाँठि खोलैत रहै
डारि धीरे नमै छै, कान बदलल सोर सुनै / दुआर कात चाह समय अपन गाँठि खोलैत रहै
तोरण लोकक हाथे सजै छै, नाम काज सँ बदलै / पल्लव लोक बीच डोलै छै, बोली अर्थ बनबै
डारि अपन रूप नमै छै, पुरान नियम ढलै / दुआर लग थाह समय अपन गाँठि खोलैत रहै
पल्लव राति डोलै छै, स्मृति रूप फेर जगै / तोरण पाछाँ छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
डारि फेरो नमै छै, पुरान छाप उघड़ै / दुआर संग छाह समय अपन गाँठि खोलैत रहै
पल्लव दूरो डोलै छै, देखनिहार बदलै / तोरण फेर सजै छै, बोध निज रूप धरै
डारि काल संग नमै छै, स्मृति जीवित रहै / पल्लव पाछाँ आह समय अपन गाँठि खोलैत रहै
दुआर सोझाँ खुलै छै, चिन्ह बाधा परखै / पल्लव एखन डोलै छै, अपवाद राह रोकै
तोरण फेर सजै छै, सफल काज साँच जँचै / डारि भीतर उछाह समय अपन गाँठि खोलैत रहै
पल्लव फेर डोलै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक पल्लवक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
तोरण एखनहुँ सजै छै, उत्तरदायित्व जागै / पल्लव संग प्रवाह समय अपन गाँठि खोलैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०६६ — संगीतमय रूप

भाव: आम्रपल्लव तोरणक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

गति (BPM): ४३–४७ · ताल: विलम्बित एकताल १२।

वाद्य-विन्यास: इसराज, बाँसुरी, हलुक तबला। आम्रपल्लव तोरणक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।

मतला: आम्रपल्लव तोरणक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।

२म शेर: आम्रपल्लव तोरणक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।

३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद आम्रपल्लव तोरणक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।

४म शेर: आम्रपल्लव तोरणक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।

५म शेर: आम्रपल्लव तोरणक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।

६म शेर: आम्रपल्लव तोरणक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०६७ — कुटजक छाल — रंग पवन संग देह झुकैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: पवन संग देह झुकैत अछि · शेर: ६

छाल भोरमे झरै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / कुटज कात रंग पवन संग देह झुकैत अछि
पवन ध्वनि बहै छै, मोन सुनि सीमा बुझै / गाछ बीच संग पवन संग देह झुकैत अछि
कुटज लोक बीच टिकै छै, व्यवहार अर्थ खोलै / छाल हाथ बदलि झरै छै, बोली मान सम्हरै
गाछ नाम सँ डोलै छै, चलन नियम फेर बदलै / पवन सोझाँ ढंग पवन संग देह झुकैत अछि
छाल राति झरै छै, पुरान स्मृति फेर जगै / कुटज छाया धरै छै, मोन मूल रूप बुझै
गाछ पाछाँ डोलै छै, आरोप धीरे हटै / पवन भीतर अंग पवन संग देह झुकैत अछि
पवन दूर बहै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / कुटज सोझाँ टिकै छै, बोध अपन ठाम रहै
गाछ फेर डोलै छै, कालक डोर नहि टूटै / छाल कात उमंग पवन संग देह झुकैत अछि
कुटज चिन्ह संग टिकै छै, हेतु बाधा जाँचै / पवन फेर बहै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
छाल काजमे झरै छै, सफल चाल प्रमाण जँचै / गाछ लग तरंग पवन संग देह झुकैत अछि
गाछ मूल सँ डोलै छै, कारणक क्रम खुलै / लोक कुटजक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर सीमा मानै
कुटज एखन टिकै छै, साझा दायित्व जागै / पवन संग प्रसंग पवन संग देह झुकैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०६७ — संगीतमय रूप

भाव: कुटजक छालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, सारंगी, विरल पखावज। कुटजक छालक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कुटजक छालक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कुटजक छालक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कुटजक छालक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कुटजक छालक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कुटजक छालक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कुटजक छालक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०६८ — मसूरक फूल — हाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ) · रदीफ: दूरिक राह मोन नापैत रहै · शेर: ६

खेत सोझाँ हरियै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / मसूर भीतर हाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै
फूल धीरे डोलै छै, दृष्टि अपन सीमा बुझै / बीआ कात साथ दूरिक राह मोन नापैत रहै
मसूर गाममे फुलै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै / खेत हाथे हरियै छै, बोली काज सँ जुड़ै
फूल नामो डोलै छै, नियम उपयोगेँ खुलै / बीआ लग माथ दूरिक राह मोन नापैत रहै
बीआ राति पाकै छै, स्मृति छाया फेर उठै / मसूर पाछाँ फुलै छै, मोन आरोप परखै
खेत धीरे हरियै छै, मूल बोध फेर उघड़ै / फूल संग पाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै
मसूर दूर फुलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / बीआ फेर पाकै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै
खेत कालमे हरियै छै, स्मृति डोर सम्हरै / मसूर कात गाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै
फूल चिन्ह पर डोलै छै, हेतु संग बाधा जँचै / बीआ सोझाँ पाकै छै, अपवाद रोकै
मसूर काजमे फुलै छै, फल प्रमाण फेर परखै / खेत भीतर नाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै
बीआ फेर पाकै छै, कारण क्रम सोझ खुलै / लोक मसूरक आन पक्ष सुनै छै, न्याय सीमा धरै
फूल एखनहुँ डोलै छै, साझा मान फेर जागै / मसूर संग अनाथ दूरिक राह मोन नापैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०६८ — संगीतमय रूप

भाव: मसूरक फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, हलुक ढोलक। मसूरक फूलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: मसूरक फूलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: मसूरक फूलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद मसूरक फूलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: मसूरक फूलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: मसूरक फूलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: मसूरक फूलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०६९ — चनाक फली — मान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: दाना भीतर ऋतु बसैत अछि · शेर: ६

खेत लग हरियै छै, आँखि पहिल रूप परखै / चना भीतर मान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि
फली अपन चाल भरै छै, कान बदलल लय सुनै / दाना कात ज्ञान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि
दाना लोकक काजे टिकै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै / चना बोली बीच पाकै छै, नाम समय संग बदलै
फली फेर भरै छै, नियम चलन सँ जँचै / खेत लग ध्यान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि
चना स्मृतिमे पाकै छै, छाया पुरान फेर जगै / दाना पाछाँ टिकै छै, मोन आरोप बुझै
फली धीरे भरै छै, मूल चिन्ह फेर उघड़ै / खेत संग पहिचान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि
दाना दूरो टिकै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / चना फेर पाकै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै
फली काल संग भरै छै, पहिचान डोर नहि टूटै / दाना कात अनुमान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि
खेत चिन्ह लग हरियै छै, हेतु बाधा फेर परखै / चना एखन पाकै छै, अपवाद राह रोकै
दाना सफल काज टिकै छै, फल साँचक राह जँचै / फली भीतर विधान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि
चना मूल दिस पाकै छै, कारण क्रम फेर खुलै / लोक चनाक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर मर्यादा धरै
खेत एखन हरियै छै, दायित्व मनमे जागै / चना संग निदान दाना भीतर ऋतु बसैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०६९ — संगीतमय रूप

भाव: चनाक फलीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४१–४५ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, इसराज, विरल तबला। चनाक फलीक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: चनाक फलीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: चनाक फलीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद चनाक फलीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: चनाक फलीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: चनाक फलीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: चनाक फलीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०७० — मूँजक चटाई — बात आँगन सभ कथा सुनैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात) · रदीफ: आँगन सभ कथा सुनैत अछि · शेर: ६

मूँज भोर दिस बुनै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / रेसा भीतर बात आँगन सभ कथा सुनैत अछि
चटाई कने बिछै छै, कान सूक्ष्म ध्वनि सुनै / आँगन लग रात आँगन सभ कथा सुनैत अछि
आँगन लोक बीच खुलै छै, उपयोग अर्थकेँ खोलै / मूँज काज संग बुनै छै, बोली नाम सम्हरै
रेसा मूँज संग फेर जुड़ै छै, पुरान नियम नव बनै / चटाई सोझाँ पात आँगन सभ कथा सुनैत अछि
चटाई राति बिछै छै, स्मृति छाया फेर जगै / आँगन पाछाँ खुलै छै, मोन आरोप बुझै
मूँज धीरे बुनै छै, मूल बोध पुनि उघड़ै / रेसा संग घात आँगन सभ कथा सुनैत अछि
आँगन दूर खुलै छै, देखनिहार प्रश्न करै / चटाई फेर बिछै छै, बोध अपन सीमा धरै
मूँज कालमे बुनै छै, स्मृति पहिचान सम्हरै / आँगन कात प्रभात आँगन सभ कथा सुनैत अछि
रेसा मूँजक चिन्ह संग जुड़ै छै, हेतु बाधा फेर जँचै / मूँज एखन बुनै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
चटाई काजमे बिछै छै, सफल चाल प्रमाण बनै / आँगन भीतर भात आँगन सभ कथा सुनैत अछि
रेसा मूँजक मूल सँ जुड़ै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक मूँजक आन पक्ष सुनै छै, साझा सीमा मानै
मूँज एखनहुँ बुनै छै, उत्तरदायित्व जागै / रेसा संग तात आँगन सभ कथा सुनैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०७० — संगीतमय रूप

भाव: मूँजक चटाईक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, बाँसुरी, मृदु मँजीरा। मूँजक चटाईक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: मूँजक चटाईक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: मूँजक चटाईक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद मूँजक चटाईक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: मूँजक चटाईक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: मूँजक चटाईक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: मूँजक चटाईक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०७१ — ताँतक गाँठि — गीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: प्रश्नक डोर टूटैत नहि · शेर: ६

ताँत सोझाँ तनै छै, आँखि रूप परखै / गाँठि भीतर गीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि
सूत धीरे जुड़ै छै, कान बदलल सोर सुनै / करघा कात मीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि
गाँठि लोकक हाथे कसै छै, नाम काज सँ बदलै / ताँत लोक बीच तनै छै, बोली अर्थ बनबै
सूत अपन रूप जुड़ै छै, पुरान नियम ढलै / करघा लग प्रीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि
ताँत राति तनै छै, स्मृति रूप फेर जगै / गाँठि पाछाँ छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
सूत फेरो जुड़ै छै, पुरान छाप उघड़ै / करघा संग रीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि
ताँत दूरो तनै छै, देखनिहार बदलै / गाँठि फेर कसै छै, बोध निज रूप धरै
सूत काल संग जुड़ै छै, स्मृति जीवित रहै / ताँत पाछाँ जीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि
करघा सोझाँ चलै छै, चिन्ह बाधा परखै / ताँत एखन तनै छै, अपवाद राह रोकै
गाँठि फेर कसै छै, सफल काज साँच जँचै / सूत भीतर अतीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि
ताँत फेर तनै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक ताँतक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
गाँठि एखनहुँ कसै छै, उत्तरदायित्व जागै / ताँत संग पुनीत प्रश्नक डोर टूटैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०७१ — संगीतमय रूप

भाव: ताँतक गाँठिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४९–५३ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, विरल तबला। ताँतक गाँठिक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: ताँतक गाँठिक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: ताँतक गाँठिक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद ताँतक गाँठिक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: ताँतक गाँठिक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: ताँतक गाँठिक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: ताँतक गाँठिक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०७२ — पलाशक फूल — सार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि · शेर: ६

फूल भोरमे खिलै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / पलाश कात सार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि
धूप ध्वनि पसरै छै, मोन सुनि सीमा बुझै / डारि बीच धार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि
पलाश लोक बीच दमकै छै, व्यवहार अर्थ खोलै / फूल हाथ बदलि खिलै छै, बोली मान सम्हरै
डारि नाम सँ डोलै छै, चलन नियम फेर बदलै / धूप सोझाँ विचार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि
फूल राति खिलै छै, पुरान स्मृति फेर जगै / पलाश छाया धरै छै, मोन मूल रूप बुझै
डारि पाछाँ डोलै छै, आरोप धीरे हटै / धूप भीतर आधार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि
धूप दूर पसरै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / पलाश सोझाँ दमकै छै, बोध अपन ठाम रहै
डारि फेर डोलै छै, कालक डोर नहि टूटै / फूल कात कछार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि
पलाश चिन्ह संग दमकै छै, हेतु बाधा जाँचै / धूप फेर पसरै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
फूल काजमे खिलै छै, सफल चाल प्रमाण जँचै / डारि लग दुआर धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि
डारि मूल सँ डोलै छै, कारणक क्रम खुलै / लोक पलाशक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर सीमा मानै
पलाश एखन दमकै छै, साझा दायित्व जागै / धूप संग भार धूपक रंग साँझ धरि रहैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०७२ — संगीतमय रूप

भाव: पलाशक फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, एकतारा, हलुक मँजीरा। पलाशक फूलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: पलाशक फूलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पलाशक फूलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद पलाशक फूलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: पलाशक फूलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: पलाशक फूलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: पलाशक फूलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०७३ — बकाइन छाह — सोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: गंध पुरान घर चिन्हैत अछि · शेर: ६

पात सोझाँ झरै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / बकाइन भीतर सोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि
छाह धीरे झुकै छै, दृष्टि अपन सीमा बुझै / आँगन कात भोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि
बकाइन गाममे पसरै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै / पात हाथे झरै छै, बोली काज सँ जुड़ै
छाह नामो झुकै छै, नियम उपयोगेँ खुलै / आँगन लग नोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि
आँगन राति महकै छै, स्मृति छाया फेर उठै / बकाइन पाछाँ पसरै छै, मोन आरोप परखै
पात धीरे झरै छै, मूल बोध फेर उघड़ै / छाह संग छोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि
बकाइन दूर पसरै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / आँगन फेर महकै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै
पात कालमे झरै छै, स्मृति डोर सम्हरै / बकाइन कात जोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि
छाह चिन्ह पर झुकै छै, हेतु संग बाधा जँचै / आँगन सोझाँ महकै छै, अपवाद रोकै
बकाइन काजमे पसरै छै, फल प्रमाण फेर परखै / पात भीतर डोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि
आँगन फेर महकै छै, कारण क्रम सोझ खुलै / लोक बकाइनक आन पक्ष सुनै छै, न्याय सीमा धरै
छाह एखनहुँ झुकै छै, साझा मान फेर जागै / बकाइन संग कोर गंध पुरान घर चिन्हैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०७३ — संगीतमय रूप

भाव: बकाइन छाहक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदु पखावज, तानपुरा। बकाइन छाहक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बकाइन छाहक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बकाइन छाहक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बकाइन छाहक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बकाइन छाहक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बकाइन छाहक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बकाइन छाहक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०७४ — चकरी पवन — ताल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि · शेर: ६

आँगन लग खुलै छै, आँखि पहिल रूप परखै / चकरी भीतर ताल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि
पवन अपन चाल बहै छै, कान बदलल लय सुनै / पाँख कात चाल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि
पाँख लोकक काजे नाचै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै / चकरी बोली बीच घुमै छै, नाम समय संग बदलै
पवन फेर बहै छै, नियम चलन सँ जँचै / आँगन लग जाल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि
चकरी स्मृतिमे घुमै छै, छाया पुरान फेर जगै / पाँख पाछाँ नाचै छै, मोन आरोप बुझै
पवन धीरे बहै छै, मूल चिन्ह फेर उघड़ै / आँगन संग काल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि
पाँख दूरो नाचै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / चकरी फेर घुमै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै
पवन काल संग बहै छै, पहिचान डोर नहि टूटै / पाँख कात ढाल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि
आँगन चिन्ह लग खुलै छै, हेतु बाधा फेर परखै / चकरी एखन घुमै छै, अपवाद राह रोकै
पाँख सफल काज नाचै छै, फल साँचक राह जँचै / पवन भीतर लाल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि
चकरी मूल दिस घुमै छै, कारण क्रम फेर खुलै / लोक चकरीक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर मर्यादा धरै
आँगन एखन खुलै छै, दायित्व मनमे जागै / चकरी संग बाल धारक मोड़ स्थिर रहैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०७४ — संगीतमय रूप

भाव: चकरी पवनक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, विरल ढोलक, बाँसुरी। चकरी पवनक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: चकरी पवनक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: चकरी पवनक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद चकरी पवनक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: चकरी पवनक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: चकरी पवनक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: चकरी पवनक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०७५ — सुईक टाँका — आस आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै · शेर: ६

सुई भोर दिस चलै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / धागा भीतर आस आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै
टाँका कने जुड़ै छै, कान सूक्ष्म ध्वनि सुनै / कपड़ा लग श्वास आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै
कपड़ा लोक बीच सिलै छै, उपयोग अर्थकेँ खोलै / सुई काज संग चलै छै, बोली नाम सम्हरै
धागा सुई संग फेर तनै छै, पुरान नियम नव बनै / टाँका सोझाँ आभास आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै
टाँका राति जुड़ै छै, स्मृति छाया फेर जगै / कपड़ा पाछाँ सिलै छै, मोन आरोप बुझै
सुई धीरे चलै छै, मूल बोध पुनि उघड़ै / धागा संग प्रयास आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै
कपड़ा दूर सिलै छै, देखनिहार प्रश्न करै / टाँका फेर जुड़ै छै, बोध अपन सीमा धरै
सुई कालमे चलै छै, स्मृति पहिचान सम्हरै / कपड़ा कात उल्लास आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै
धागा सुईक चिन्ह संग तनै छै, हेतु बाधा फेर जँचै / सुई एखन चलै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
टाँका काजमे जुड़ै छै, सफल चाल प्रमाण बनै / कपड़ा भीतर विश्वास आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै
धागा सुईक मूल सँ तनै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक सुईक आन पक्ष सुनै छै, साझा सीमा मानै
सुई एखनहुँ चलै छै, उत्तरदायित्व जागै / धागा संग इतिहास आखर पाछाँ अर्थ चलैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०७५ — संगीतमय रूप

भाव: सुईक टाँकाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मँजीरा। सुईक टाँकाक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: सुईक टाँकाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सुईक टाँकाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद सुईक टाँकाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: सुईक टाँकाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: सुईक टाँकाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: सुईक टाँकाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०७६ — बाँसक सूप — आस दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि · शेर: ६

बाँस-सूप सोझाँ डोलै छै, आँखि रूप परखै / बाँस भीतर आस दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि
दाना धीरे छनै छै, कान बदलल सोर सुनै / छननिहार कात श्वास दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि
बाँस लोकक हाथे नमै छै, नाम काज सँ बदलै / बाँस-सूप लोक बीच डोलै छै, बोली अर्थ बनबै
दाना अपन रूप छनै छै, पुरान नियम ढलै / छननिहार लग आभास दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि
बाँस-सूप राति डोलै छै, स्मृति रूप फेर जगै / बाँस पाछाँ छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
दाना फेरो छनै छै, पुरान छाप उघड़ै / छननिहार संग प्रयास दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि
बाँस-सूप दूरो डोलै छै, देखनिहार बदलै / बाँस फेर नमै छै, बोध निज रूप धरै
दाना काल संग छनै छै, स्मृति जीवित रहै / बाँस-सूप पाछाँ उल्लास दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि
छननिहार सोझाँ चलै छै, चिन्ह बाधा परखै / बाँस-सूप एखन डोलै छै, अपवाद राह रोकै
बाँस फेर नमै छै, सफल काज साँच जँचै / दाना भीतर विश्वास दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि
बाँस-सूप फेर डोलै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक बाँस-सूपक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
बाँस एखनहुँ नमै छै, उत्तरदायित्व जागै / बाँस-सूप संग इतिहास दाना छनितहुँ भेद मेटैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०७६ — संगीतमय रूप

भाव: बाँसक सूपक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, विरल तबला। बाँसक सूपक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बाँसक सूपक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बाँसक सूपक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बाँसक सूपक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बाँसक सूपक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बाँसक सूपक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बाँसक सूपक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०७७ — काँसक डलिया — मान बुनावट भीतर हाथक मान अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: बुनावट भीतर हाथक मान अछि · शेर: ६

काँस भोरमे नमै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / डलिया कात मान बुनावट भीतर हाथक मान अछि
हाथ ध्वनि बुनै छै, मोन सुनि सीमा बुझै / रेसा बीच ज्ञान बुनावट भीतर हाथक मान अछि
डलिया लोक बीच बनै छै, व्यवहार अर्थ खोलै / काँस हाथ बदलि नमै छै, बोली मान सम्हरै
रेसा नाम सँ जुड़ै छै, चलन नियम फेर बदलै / हाथ सोझाँ ध्यान बुनावट भीतर हाथक मान अछि
काँस राति नमै छै, पुरान स्मृति फेर जगै / डलिया छाया धरै छै, मोन मूल रूप बुझै
रेसा पाछाँ जुड़ै छै, आरोप धीरे हटै / हाथ भीतर पहिचान बुनावट भीतर हाथक मान अछि
हाथ दूर बुनै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / डलिया सोझाँ बनै छै, बोध अपन ठाम रहै
रेसा फेर जुड़ै छै, कालक डोर नहि टूटै / काँस कात अनुमान बुनावट भीतर हाथक मान अछि
डलिया चिन्ह संग बनै छै, हेतु बाधा जाँचै / हाथ फेर बुनै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
काँस काजमे नमै छै, सफल चाल प्रमाण जँचै / रेसा लग विधान बुनावट भीतर हाथक मान अछि
रेसा मूल सँ जुड़ै छै, कारणक क्रम खुलै / लोक डलियाक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर सीमा मानै
डलिया एखन बनै छै, साझा दायित्व जागै / हाथ संग निदान बुनावट भीतर हाथक मान अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०७७ — संगीतमय रूप

भाव: काँसक डलियाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, एकतारा, हलुक मँजीरा। काँसक डलियाक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: काँसक डलियाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: काँसक डलियाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद काँसक डलियाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: काँसक डलियाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: काँसक डलियाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: काँसक डलियाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०७८ — घोंघाक खोल — राह खोल बदलि जीवन थमैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: खोल बदलि जीवन थमैत नहि · शेर: ६

देह सोझाँ नमै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / घोंघा भीतर राह खोल बदलि जीवन थमैत नहि
खोल धीरे टिकै छै, दृष्टि अपन सीमा बुझै / नीर कात चाह खोल बदलि जीवन थमैत नहि
घोंघा गाममे सरकै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै / देह हाथे नमै छै, बोली काज सँ जुड़ै
खोल नामो टिकै छै, नियम उपयोगेँ खुलै / नीर लग थाह खोल बदलि जीवन थमैत नहि
नीर राति बहै छै, स्मृति छाया फेर उठै / घोंघा पाछाँ सरकै छै, मोन आरोप परखै
देह धीरे नमै छै, मूल बोध फेर उघड़ै / खोल संग छाह खोल बदलि जीवन थमैत नहि
घोंघा दूर सरकै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / नीर फेर बहै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै
देह कालमे नमै छै, स्मृति डोर सम्हरै / घोंघा कात आह खोल बदलि जीवन थमैत नहि
खोल चिन्ह पर टिकै छै, हेतु संग बाधा जँचै / नीर सोझाँ बहै छै, अपवाद रोकै
घोंघा काजमे सरकै छै, फल प्रमाण फेर परखै / देह भीतर उछाह खोल बदलि जीवन थमैत नहि
नीर फेर बहै छै, कारण क्रम सोझ खुलै / लोक घोंघाक आन पक्ष सुनै छै, न्याय सीमा धरै
खोल एखनहुँ टिकै छै, साझा मान फेर जागै / घोंघा संग प्रवाह खोल बदलि जीवन थमैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०७८ — संगीतमय रूप

भाव: घोंघाक खोलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदु पखावज, तानपुरा। घोंघाक खोलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: घोंघाक खोलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: घोंघाक खोलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद घोंघाक खोलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: घोंघाक खोलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: घोंघाक खोलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: घोंघाक खोलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०७९ — सखुआ पात — रंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: पात झरलहुँ गंध बचल रहै · शेर: ६

वन-पवन लग बहै छै, आँखि पहिल रूप परखै / सखुआ भीतर रंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै
पात अपन चाल झरै छै, कान बदलल लय सुनै / डारि कात संग पात झरलहुँ गंध बचल रहै
डारि लोकक काजे नमै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै / सखुआ बोली बीच डोलै छै, नाम समय संग बदलै
पात फेर झरै छै, नियम चलन सँ जँचै / वन-पवन लग ढंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै
सखुआ स्मृतिमे डोलै छै, छाया पुरान फेर जगै / डारि पाछाँ नमै छै, मोन आरोप बुझै
पात धीरे झरै छै, मूल चिन्ह फेर उघड़ै / वन-पवन संग अंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै
डारि दूरो नमै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / सखुआ फेर डोलै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै
पात काल संग झरै छै, पहिचान डोर नहि टूटै / डारि कात उमंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै
वन-पवन चिन्ह लग बहै छै, हेतु बाधा फेर परखै / सखुआ एखन डोलै छै, अपवाद राह रोकै
डारि सफल काज नमै छै, फल साँचक राह जँचै / पात भीतर तरंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै
सखुआ मूल दिस डोलै छै, कारण क्रम फेर खुलै / लोक सखुआक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर मर्यादा धरै
वन-पवन एखन बहै छै, दायित्व मनमे जागै / सखुआ संग प्रसंग पात झरलहुँ गंध बचल रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०७९ — संगीतमय रूप

भाव: सखुआ पातक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, विरल ढोलक, बाँसुरी। सखुआ पातक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: सखुआ पातक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सखुआ पातक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद सखुआ पातक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: सखुआ पातक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: सखुआ पातक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: सखुआ पातक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०८० — कदंबक फूल — सार फूलक छाह समय धरि रहत

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: फूलक छाह समय धरि रहत · शेर: ६

कदंब भोर दिस महकै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / डारि भीतर सार फूलक छाह समय धरि रहत
फूल कने खिलै छै, कान सूक्ष्म ध्वनि सुनै / छाह लग धार फूलक छाह समय धरि रहत
छाह लोक बीच पसरै छै, उपयोग अर्थकैं खोलै / कदंब काज संग महकै छै, बोली नाम सम्हरै
डारि कदंब संग फेर डोलै छै, पुरान नियम नव बनै / फूल सोझाँ विचार फूलक छाह समय धरि रहत
फूल राति खिलै छै, स्मृति छाया फेर जगै / छाह पाछाँ पसरै छै, मोन आरोप बुझै
कदंब धीरे महकै छै, मूल बोध पुनि उघड़ै / डारि संग आधार फूलक छाह समय धरि रहत
छाह दूर पसरै छै, देखनिहार प्रश्न करै / फूल फेर खिलै छै, बोध अपन सीमा धरै
कदंब कालमे महकै छै, स्मृति पहिचान सम्हरै / छाह कात कछार फूलक छाह समय धरि रहत
डारि कदंबक चिन्ह संग डोलै छै, हेतु बाधा फेर जँचै / कदंब एखन महकै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
फूल काजमे खिलै छै, सफल चाल प्रमाण बनै / छाह भीतर दुआर फूलक छाह समय धरि रहत
डारि कदंबक मूल सँ डोलै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक कदंबक आन पक्ष सुनै छै, साझा सीमा मानै
कदंब एखनहुँ महकै छै, उत्तरदायित्व जागै / डारि संग भार फूलक छाह समय धरि रहत

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०८० — संगीतमय रूप

भाव: कदंबक फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४१–४५ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मँजीरा। कदंबक फूलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कदंबक फूलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कदंबक फूलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कदंबक फूलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कदंबक फूलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कदंबक फूलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कदंबक फूलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०८१ — बेंतक मोढ़ा — गीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि · शेर: ६

बेंत सोझाँ नमै छै, आँखि रूप परखै / मोढ़ा भीतर गीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि
बेंत-रेसा धीरे जुड़ै छै, कान बदलल सोर सुनै / हाथ कात मीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि
मोढ़ा लोकक हाथे टिकै छै, नाम काज सँ बदलै / बेंत लोक बीच नमै छै, बोली अर्थ बनबै
बेंत-रेसा अपन रूप जुड़ै छै, पुरान नियम ढलै / हाथ लग प्रीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि
बेंत राति नमै छै, स्मृति रूप फेर जगै / मोढ़ा पाछाँ छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
बेंत-रेसा फेरो जुड़ै छै, पुरान छाप उघड़ै / हाथ संग रीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि
बेंत दूरो नमै छै, देखनिहार बदलै / मोढ़ा फेर टिकै छै, बोध निज रूप धरै
बेंत-रेसा काल संग जुड़ै छै, स्मृति जीवित रहै / बेंत पाछाँ जीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि
हाथ सोझाँ बुनै छै, चिन्ह बाधा परखै / बेंत एखन नमै छै, अपवाद राह रोकै
मोढ़ा फेर टिकै छै, सफल काज साँच जँचै / बेंत-रेसा भीतर अतीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि
बेंत फेर नमै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक बेंतक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
मोढ़ा एखनहुँ टिकै छै, उत्तरदायित्व जागै / बेंत संग पुनीत बेंत नमितहुँ मूल टूटैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०८१ — संगीतमय रूप

भाव: बेंतक मोढ़ाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: इसराज, बाँसुरी, हलुक तबला। बेंतक मोढ़ाक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बेंतक मोढ़ाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बेंतक मोढ़ाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बेंतक मोढ़ाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बेंतक मोढ़ाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बेंतक मोढ़ाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बेंतक मोढ़ाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०८२ — मृदंगक चमड़ा — हाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ) · रदीफ: थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि · शेर: ६

चमड़ा भोरमे तनै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / मृदंग कात हाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि
मौन ध्वनि रहै छै, मोन सुनि सीमा बुझै / थाप बीच साथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि
मृदंग लोक बीच बजै छै, व्यवहार अर्थ खोलै / चमड़ा हाथ बदलि तनै छै, बोली मान सम्हरै
थाप नाम सँ उठै छै, चलन नियम फेर बदलै / मौन सोझाँ माथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि
चमड़ा राति तनै छै, पुरान स्मृति फेर जगै / मृदंग छाया धरै छै, मोन मूल रूप बुझै
थाप पाछाँ उठै छै, आरोप धीरे हटै / मौन भीतर पाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि
मौन दूर रहै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / मृदंग सोझाँ बजै छै, बोध अपन ठाम रहै
थाप फेर उठै छै, कालक डोर नहि टूटै / चमड़ा कात गाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि
मृदंग चिन्ह संग बजै छै, हेतु बाधा जाँचै / मौन फेर रहै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
चमड़ा काजमे तनै छै, सफल चाल प्रमाण जँचै / थाप लग नाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि
थाप मूल सँ उठै छै, कारणक क्रम खुलै / लोक मृदंगक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर सीमा मानै
मृदंग एखन बजै छै, साझा दायित्व जागै / मौन संग अनाथ थाप पाछाँ मौन सेहो बजैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०८२ — संगीतमय रूप

भाव: मृदंगक चमड़ाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४९–५३ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, सारंगी, विरल पखावज। मृदंगक चमड़ाक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: मृदंगक चमड़ाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: मृदंगक चमड़ाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद मृदंगक चमड़ाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: मृदंगक चमड़ाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: मृदंगक चमड़ाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: मृदंगक चमड़ाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०८३ — मटरक फूल — बात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात) · रदीफ: पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै · शेर: ६

मटर-खेत सोझाँ हरियै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / मटर भीतर बात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै
मटर-फूल धीरे खिलै छै, दृष्टि अपन सीमा बुझै / पछिया कात रात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै
मटर गाममे डोलै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै / मटर-खेत हाथे हरियै छै, बोली काज सँ जुड़ै
मटर-फूल नामो खिलै छै, नियम उपयोगेँ खुलै / पछिया लग पात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै
पछिया राति बहै छै, स्मृति छाया फेर उठै / मटर पाछाँ डोलै छै, मोन आरोप परखै
मटर-खेत धीरे हरियै छै, मूल बोध फेर उघड़ै / मटर-फूल संग घात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै
मटर दूर डोलै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / पछिया फेर बहै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै
मटर-खेत कालमे हरियै छै, स्मृति डोर सम्हरै / मटर कात प्रभात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै
मटर-फूल चिन्ह पर खिलै छै, हेतु संग बाधा जँचै / पछिया सोझाँ बहै छै, अपवाद रोकै
मटर काजमे डोलै छै, फल प्रमाण फेर परखै / मटर-खेत भीतर भात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै
पछिया फेर बहै छै, कारण क्रम सोझ खुलै / लोक मटरक आन पक्ष सुनै छै, न्याय सीमा धरै
मटर-फूल एखनहुँ खिलै छै, साझा मान फेर जागै / मटर संग तात पछिया संग पीयर रंग बहैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०८३ — संगीतमय रूप

भाव: मटरक फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, हलुक ढोलक। मटरक फूलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: मटरक फूलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: मटरक फूलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद मटरक फूलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: मटरक फूलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: मटरक फूलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: मटरक फूलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०८४ — तिलक फली — सोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि · शेर: ६

तिल-खेत लग हरियै छै, आँखि पहिल रूप परखै / तिल भीतर सोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि
तिल-फली अपन चाल भरै छै, कान बदलल लय सुनै / तिल-दाना कात भोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि
तिल-दाना लोकक काजे टिकै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै / तिल बोली बीच पाकै छै, नाम समय संग बदलै
तिल-फली फेर भरै छै, नियम चलन सँ जँचै / तिल-खेत लग नोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि
तिल स्मृतिमे पाकै छै, छाया पुरान फेर जगै / तिल-दाना पाछाँ टिकै छै, मोन आरोप बुझै
तिल-फली धीरे भरै छै, मूल चिन्ह फेर उघड़ै / तिल-खेत संग छोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि
तिल-दाना दूरो टिकै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / तिल फेर पाकै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै
तिल-फली काल संग भरै छै, पहिचान डोर नहि टूटै / तिल-दाना कात जोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि
तिल-खेत चिन्ह लग हरियै छै, हेतु बाधा फेर परखै / तिल एखन पाकै छै, अपवाद राह रोकै
तिल-दाना सफल काज टिकै छै, फल साँचक राह जँचै / तिल-फली भीतर डोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि
तिल मूल दिस पाकै छै, कारण क्रम फेर खुलै / लोक तिलक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर मर्यादा धरै
तिल-खेत एखन हरियै छै, दायित्व मनमे जागै / तिल संग कोर दाना छोटो हो, कथा पैघ अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०८४ — संगीतमय रूप

भाव: तिलक फलीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, इसराज, विरल तबला। तिलक फलीक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: तिलक फलीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: तिलक फलीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद तिलक फलीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: तिलक फलीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: तिलक फलीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: तिलक फलीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०८५ — भदई धान — ताल धानक गंध घर चिन्हैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: धानक गंध घर चिन्हैत रहै · शेर: ६

भदई भोर दिस लहरै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / बालि भीतर ताल धानक गंध घर चिन्हैत रहै
धान कने पाकै छै, कान सूक्ष्म ध्वनि सुनै / घर लग चाल धानक गंध घर चिन्हैत रहै
घर लोक बीच महकै छै, उपयोग अर्थकेँ खोलै / भदई काज संग लहरै छै, बोली नाम सम्हरै
बालि भदई संग फेर नमै छै, पुरान नियम नव बनै / धान सोझाँ जाल धानक गंध घर चिन्हैत रहै
धान राति पाकै छै, स्मृति छाया फेर जगै / घर पाछाँ महकै छै, मोन आरोप बुझै
भदई धीरे लहरै छै, मूल बोध पुनि उघड़ै / बालि संग काल धानक गंध घर चिन्हैत रहै
घर दूर महकै छै, देखनिहार प्रश्न करै / धान फेर पाकै छै, बोध अपन सीमा धरै
भदई कालमे लहरै छै, स्मृति पहिचान सम्हरै / घर कात ढाल धानक गंध घर चिन्हैत रहै
बालि भदईक चिन्ह संग नमै छै, हेतु बाधा फेर जँचै / भदई एखन लहरै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
धान काजमे पाकै छै, सफल चाल प्रमाण बनै / घर भीतर लाल धानक गंध घर चिन्हैत रहै
बालि भदईक मूल सँ नमै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक भदईक आन पक्ष सुनै छै, साझा सीमा मानै
भदई एखनहुँ लहरै छै, उत्तरदायित्व जागै / बालि संग बाल धानक गंध घर चिन्हैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०८५ — संगीतमय रूप

भाव: भदई धानक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, बाँसुरी, मृदु मँजीरा। भदई धानक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: भदई धानक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: भदई धानक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद भदई धानक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: भदई धानक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: भदई धानक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: भदई धानक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०८६ — हंसुलीक चमक — आस चमक देहक मान बनैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: चमक देहक मान बनैत नहि · शेर: ६

हंसुली सोझाँ दमकै छै, आँखि रूप परखै / चमक भीतर आस चमक देहक मान बनैत नहि
देह धीरे चलै छै, कान बदलल सोर सुनै / धूप कात श्वास चमक देहक मान बनैत नहि
चमक लोकक हाथे फैलै छै, नाम काज सँ बदलै / हंसुली लोक बीच दमकै छै, बोली अर्थ बनबै
देह अपन रूप चलै छै, पुरान नियम ढलै / धूप लग आभास चमक देहक मान बनैत नहि
हंसुली राति दमकै छै, स्मृति रूप फेर जगै / चमक पाछाँ छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
देह फेरो चलै छै, पुरान छाप उघड़ै / धूप संग प्रयास चमक देहक मान बनैत नहि
हंसुली दूरो दमकै छै, देखनिहार बदलै / चमक फेर फैलै छै, बोध निज रूप धरै
देह काल संग चलै छै, स्मृति जीवित रहै / हंसुली पाछाँ उल्लास चमक देहक मान बनैत नहि
धूप सोझाँ पसरै छै, चिन्ह बाधा परखै / हंसुली एखन दमकै छै, अपवाद राह रोकै
चमक फेर फैलै छै, सफल काज साँच जँचै / देह भीतर विश्वास चमक देहक मान बनैत नहि
हंसुली फेर दमकै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक हंसुलीक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
चमक एखनहुँ फैलै छै, उत्तरदायित्व जागै / हंसुली संग इतिहास चमक देहक मान बनैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०८६ — संगीतमय रूप

भाव: हंसुलीक चमकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, विरल तबला। हंसुलीक चमकक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: हंसुलीक चमकक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: हंसुलीक चमकक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद हंसुलीक चमकक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: हंसुलीक चमकक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: हंसुलीक चमकक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: हंसुलीक चमकक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०८७ — कनैल फूल — मान रंग विषक छाह ढाकैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: रंग विषक छाह ढाकैत नहि · शेर: ६

फूल भोरमे दमकै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / कनैल कात मान रंग विषक छाह ढाकैत नहि
रस ध्वनि टिकै छै, मोन सुनि सीमा बुझै / कनैल-डारि बीच ज्ञान रंग विषक छाह ढाकैत नहि
कनैल लोक बीच खिलै छै, व्यवहार अर्थ खोलै / फूल हाथ बदलि दमकै छै, बोली मान सम्हरै
कनैल-डारि नाम सँ डोलै छै, चलन नियम फेर बदलै / रस सोझाँ ध्यान रंग विषक छाह ढाकैत नहि
फूल राति दमकै छै, पुरान स्मृति फेर जगै / कनैल छाया धरै छै, मोन मूल रूप बुझै
कनैल-डारि पाछाँ डोलै छै, आरोप धीरे हटै / रस भीतर पहिचान रंग विषक छाह ढाकैत नहि
रस दूर टिकै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / कनैल सोझाँ खिलै छै, बोध अपन ठाम रहै
कनैल-डारि फेर डोलै छै, कालक डोर नहि टूटै / फूल कात अनुमान रंग विषक छाह ढाकैत नहि
कनैल चिन्ह संग खिलै छै, हेतु बाधा जाँचै / रस फेर टिकै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
फूल काजमे दमकै छै, सफल चाल प्रमाण जँचै / कनैल-डारि लग विधान रंग विषक छाह ढाकैत नहि
कनैल-डारि मूल सँ डोलै छै, कारणक क्रम खुलै / लोक कनैलक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर सीमा मानै
कनैल एखन खिलै छै, साझा दायित्व जागै / रस संग निदान रंग विषक छाह ढाकैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०८७ — संगीतमय रूप

भाव: कनैल फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४१–४५ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, एकतारा, हलुक मँजीरा। कनैल फूलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कनैल फूलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कनैल फूलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कनैल फूलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कनैल फूलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कनैल फूलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कनैल फूलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०८८ — खपरैल छानि — सोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै · शेर: ६

खपड़ा सोझाँ जुड़ै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / खपरैल भीतर सोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै
छानि धीरे ढलै छै, दृष्टि अपन सीमा बुझै / वर्षा कात भोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै
खपरैल गाममे टिकै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै / खपड़ा हाथे जुड़ै छै, बोली काज सँ जुड़ै
छानि नामो ढलै छै, नियम उपयोगेँ खुलै / वर्षा लग नोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै
वर्षा राति बरसै छै, स्मृति छाया फेर उठै / खपरैल पाछाँ टिकै छै, मोन आरोप परखै
खपड़ा धीरे जुड़ै छै, मूल बोध फेर उघड़ै / छानि संग छोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै
खपरैल दूर टिकै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / वर्षा फेर बरसै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै
खपड़ा कालमे जुड़ै छै, स्मृति डोर सम्हरै / खपरैल कात जोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै
छानि चिन्ह पर ढलै छै, हेतु संग बाधा जँचै / वर्षा सोझाँ बरसै छै, अपवाद रोकै
खपरैल काजमे टिकै छै, फल प्रमाण फेर परखै / खपड़ा भीतर डोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै
वर्षा फेर बरसै छै, कारण क्रम सोझ खुलै / लोक खपरैलक आन पक्ष सुनै छै, न्याय सीमा धरै
छानि एखनहुँ ढलै छै, साझा मान फेर जागै / खपरैल संग कोर वर्षा बीतलहुँ छानि बोलैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०८८ — संगीतमय रूप

भाव: खपरैल छानिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदु पखावज, तानपुरा। खपरैल छानिक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: खपरैल छानिक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: खपरैल छानिक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खपरैल छानिक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: खपरैल छानिक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: खपरैल छानिक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: खपरैल छानिक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०८९ — ताड़क पंखा — सार हवा हाथक संगति मानैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: हवा हाथक संगति मानैत अछि · शेर: ६

हवा लग बहै छै, आँखि पहिल रूप परखै / पंखा भीतर सार हवा हाथक संगति मानैत अछि
ताड़ अपन चाल नमै छै, कान बदलल लय सुनै / पात कात धार हवा हाथक संगति मानैत अछि
पात लोकक काजे जुड़ै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै / पंखा बोली बीच डोलै छै, नाम समय संग बदलै
ताड़ फेर नमै छै, नियम चलन सँ जँचै / हवा लग विचार हवा हाथक संगति मानैत अछि
पंखा स्मृतिमे डोलै छै, छाया पुरान फेर जगै / पात पाछाँ जुड़ै छै, मोन आरोप बुझै
ताड़ धीरे नमै छै, मूल चिन्ह फेर उघड़ै / हवा संग आधार हवा हाथक संगति मानैत अछि
पात दूरो जुड़ै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / पंखा फेर डोलै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै
ताड़ काल संग नमै छै, पहिचान डोर नहि टूटै / पात कात कछार हवा हाथक संगति मानैत अछि
हवा चिन्ह लग बहै छै, हेतु बाधा फेर परखै / पंखा एखन डोलै छै, अपवाद राह रोकै
पात सफल काज जुड़ै छै, फल साँचक राह जँचै / ताड़ भीतर दुआर हवा हाथक संगति मानैत अछि
पंखा मूल दिस डोलै छै, कारण क्रम फेर खुलै / लोक पंखाक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर मर्यादा धरै
हवा एखन बहै छै, दायित्व मनमे जागै / पंखा संग भार हवा हाथक संगति मानैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०८९ — संगीतमय रूप

भाव: ताड़क पंखाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४९–५३ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, विरल ढोलक, बाँसुरी। ताड़क पंखाक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: ताड़क पंखाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: ताड़क पंखाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद ताड़क पंखाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: ताड़क पंखाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: ताड़क पंखाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: ताड़क पंखाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०९० — घैलाक मुँह — गीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि · शेर: ६

घैला भोर दिस भरै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / नीर भीतर गीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि
मुँह कने खुलै छै, कान सूक्ष्म ध्वनि सुनै / माटि लग मीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि
माटि लोक बीच भीजै छै, उपयोग अर्थकेँ खोलै / घैला काज संग भरै छै, बोली नाम सम्हरै
नीर घैला संग फेर बहै छै, पुरान नियम नव बनै / मुँह सोझाँ प्रीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि
मुँह राति खुलै छै, स्मृति छाया फेर जगै / माटि पाछाँ भीजै छै, मोन आरोप बुझै
घैला धीरे भरै छै, मूल बोध पुनि उघड़ै / नीर संग रीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि
माटि दूर भीजै छै, देखनिहार प्रश्न करै / मुँह फेर खुलै छै, बोध अपन सीमा धरै
घैला कालमे भरै छै, स्मृति पहिचान सम्हरै / माटि कात जीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि
नीर घैलाक चिन्ह संग बहै छै, हेतु बाधा फेर जँचै / घैला एखन भरै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
मुँह काजमे खुलै छै, सफल चाल प्रमाण बनै / माटि भीतर अतीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि
नीर घैलाक मूल सँ बहै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक घैलाक आन पक्ष सुनै छै, साझा सीमा मानै
घैला एखनहुँ भरै छै, उत्तरदायित्व जागै / नीर संग पुनीत मुँह छोट, नीरक राह पैघ अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०९० — संगीतमय रूप

भाव: घैलाक मुँहक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मँजीरा। घैलाक मुँहक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: घैलाक मुँहक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: घैलाक मुँहक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद घैलाक मुँहक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: घैलाक मुँहक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: घैलाक मुँहक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: घैलाक मुँहक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०९१ — सिलौटक धार — राह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, छाह, आह, उछाह, प्रवाह) · रदीफ: घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि · शेर: ६

सिलौट सोझाँ घिसै छै, आँखि रूप परखै / धार भीतर राह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि
पाथर धीरे टिकै छै, कान बदलल सोर सुनै / घिसनिहार कात चाह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि
धार लोकक हाथे उघड़ै छै, नाम काज सँ बदलै / सिलौट लोक बीच घिसै छै, बोली अर्थ बनबै
पाथर अपन रूप टिकै छै, पुरान नियम ढलै / घिसनिहार लग थाह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि
सिलौट राति घिसै छै, स्मृति रूप फेर जगै / धार पाछाँ छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
पाथर फेरो टिकै छै, पुरान छाप उघड़ै / घिसनिहार संग छाह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि
सिलौट दूरो घिसै छै, देखनिहार बदलै / धार फेर उघड़ै छै, बोध निज रूप धरै
पाथर काल संग टिकै छै, स्मृति जीवित रहै / सिलौट पाछाँ आह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि
घिसनिहार सोझाँ चलै छै, चिन्ह बाधा परखै / सिलौट एखन घिसै छै, अपवाद राह रोकै
धार फेर उघड़ै छै, सफल काज साँच जँचै / पाथर भीतर उछाह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि
सिलौट फेर घिसै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक सिलौटक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
धार एखनहुँ उघड़ै छै, उत्तरदायित्व जागै / सिलौट संग प्रवाह घिसाइ पाछाँ धार उघड़ैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०९१ — संगीतमय रूप

भाव: सिलौटक धारक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: इसराज, बाँसुरी, हलुक तबला। सिलौटक धारक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: सिलौटक धारक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सिलौटक धारक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद सिलौटक धारक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: सिलौटक धारक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: सिलौटक धारक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: सिलौटक धारक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०९२ — लहठीक खनक — रंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, अंग, उमंग, तरंग, प्रसंग) · रदीफ: खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै · शेर: ६

खनक भोरमे उठै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / लहठी कात रंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै
कलाई ध्वनि चलै छै, मोन सुनि सीमा बुझै / काँच बीच संग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै
लहठी लोक बीच बजै छै, व्यवहार अर्थ खोलै / खनक हाथ बदलि उठै छै, बोली मान सम्हरै
काँच नाम सँ चमकै छै, चलन नियम फेर बदलै / कलाई सोझाँ ढंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै
खनक राति उठै छै, पुरान स्मृति फेर जगै / लहठी छाया धरै छै, मोन मूल रूप बुझै
काँच पाछाँ चमकै छै, आरोप धीरे हटै / कलाई भीतर अंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै
कलाई दूर चलै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / लहठी सोझाँ बजै छै, बोध अपन ठाम रहै
काँच फेर चमकै छै, कालक डोर नहि टूटै / खनक कात उमंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै
लहठी चिन्ह संग बजै छै, हेतु बाधा जाँचै / कलाई फेर चलै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
खनक काजमे उठै छै, सफल चाल प्रमाण जँचै / काँच लग तरंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै
काँच मूल सँ चमकै छै, कारणक क्रम खुलै / लोक लहठीक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर सीमा मानै
लहठी एखन बजै छै, साझा दायित्व जागै / कलाई संग प्रसंग खनक स्मृति केर डोर कसैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०९२ — संगीतमय रूप

भाव: लहठीक खनकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, सारंगी, विरल पखावज। लहठीक खनकक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: लहठीक खनकक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: लहठीक खनकक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद लहठीक खनकक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: लहठीक खनकक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: लहठीक खनकक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: लहठीक खनकक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०९३ — चूल्हिक राख — हाथ राख भीतर आँच मरैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाथ (हाथ, साथ, माथ, पाथ, गाथ, नाथ, अनाथ) · रदीफ: राख भीतर आँच मरैत नहि · शेर: ६

आँच सोझाँ टिकै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / चूल्हि भीतर हाथ राख भीतर आँच मरैत नहि
राख धीरे उड़ै छै, दृष्टि अपन सीमा बुझै / धुआँ कात साथ राख भीतर आँच मरैत नहि
चूल्हि गाममे जरै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै / आँच हाथे टिकै छै, बोली काज सँ जुड़ै
राख नामो उड़ै छै, नियम उपयोगेँ खुलै / धुआँ लग माथ राख भीतर आँच मरैत नहि
धुआँ राति उठै छै, स्मृति छाया फेर उठै / चूल्हि पाछाँ जरै छै, मोन आरोप परखै
आँच धीरे टिकै छै, मूल बोध फेर उघड़ै / राख संग पाथ राख भीतर आँच मरैत नहि
चूल्हि दूर जरै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / धुआँ फेर उठै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै
आँच कालमे टिकै छै, स्मृति डोर सम्हरै / चूल्हि कात गाथ राख भीतर आँच मरैत नहि
राख चिन्ह पर उड़ै छै, हेतु संग बाधा जँचै / धुआँ सोझाँ उठै छै, अपवाद रोकै
चूल्हि काजमे जरै छै, फल प्रमाण फेर परखै / आँच भीतर नाथ राख भीतर आँच मरैत नहि
धुआँ फेर उठै छै, कारण क्रम सोझ खुलै / लोक चूल्हिक आन पक्ष सुनै छै, न्याय सीमा धरै
राख एखनहुँ उड़ै छै, साझा मान फेर जागै / चूल्हि संग अनाथ राख भीतर आँच मरैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०९३ — संगीतमय रूप

भाव: चूल्हिक राखक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, हलुक ढोलक। चूल्हिक राखक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: चूल्हिक राखक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: चूल्हिक राखक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद चूल्हिक राखक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: चूल्हिक राखक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: चूल्हिक राखक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: चूल्हिक राखक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०९४ — कचनार पात — मान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, पहिचान, अनुमान, विधान, निदान) · रदीफ: पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि · शेर: ६

पुरवैया लग बहै छै, आँखि पहिल रूप परखै / कचनार भीतर मान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि
पात अपन चाल मुड़ै छै, कान बदलल लय सुनै / नस कात ज्ञान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि
नस लोकक काजे चलै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै / कचनार बोली बीच डोलै छै, नाम समय संग बदलै
पात फेर मुड़ै छै, नियम चलन सँ जँचै / पुरवैया लग ध्यान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि
कचनार स्मृतिमे डोलै छै, छाया पुरान फेर जगै / नस पाछाँ चलै छै, मोन आरोप बुझै
पात धीरे मुड़ै छै, मूल चिन्ह फेर उघड़ै / पुरवैया संग पहिचान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि
नस दूरो चलै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / कचनार फेर डोलै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै
पात काल संग मुड़ै छै, पहिचान डोर नहि टूटै / नस कात अनुमान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि
पुरवैया चिन्ह लग बहै छै, हेतु बाधा फेर परखै / कचनार एखन डोलै छै, अपवाद राह रोकै
नस सफल काज चलै छै, फल साँचक राह जँचै / पात भीतर विधान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि
कचनार मूल दिस डोलै छै, कारण क्रम फेर खुलै / लोक कचनारक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर मर्यादा धरै
पुरवैया एखन बहै छै, दायित्व मनमे जागै / कचनार संग निदान पात मोड़लहुँ हरियर नस चलैत अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०९४ — संगीतमय रूप

भाव: कचनार पातक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

गति (BPM): ४१–४५ · ताल: कहरवा ८।

वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, इसराज, विरल तबला। कचनार पातक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।

मतला: कचनार पातक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।

२म शेर: कचनार पातक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।

३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कचनार पातक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।

४म शेर: कचनार पातक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।

५म शेर: कचनार पातक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।

६म शेर: कचनार पातक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०९५ — कपासक रूई — बात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, प्रभात, भात, तात) · रदीफ: रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि · शेर: ६

कपास भोर दिस फूटै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / रेसा भीतर बात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि
रूई कने उड़ै छै, कान सूक्ष्म ध्वनि सुनै / हाथ लग रात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि
हाथ लोक बीच चलै छै, उपयोग अर्थकेँ खोलै / कपास काज संग फूटै छै, बोली नाम सम्हरै
रेसा कपास संग फेर जुड़ै छै, पुरान नियम नव बनै / रूई सोझाँ पात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि
रूई राति उड़ै छै, स्मृति छाया फेर जगै / हाथ पाछाँ चलै छै, मोन आरोप बुझै
कपास धीरे फूटै छै, मूल बोध पुनि उघड़ै / रेसा संग घात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि
हाथ दूर चलै छै, देखनिहार प्रश्न करै / रूई फेर उड़ै छै, बोध अपन सीमा धरै
कपास कालमे फूटै छै, स्मृति पहिचान सम्हरै / हाथ कात प्रभात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि
रेसा कपासक चिन्ह संग जुड़ै छै, हेतु बाधा फेर जँचै / कपास एखन फूटै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
रूई काजमे उड़ै छै, सफल चाल प्रमाण बनै / हाथ भीतर भात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि
रेसा कपासक मूल सँ जुड़ै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक कपासक आन पक्ष सुनै छै, साझा सीमा मानै
कपास एखनहुँ फूटै छै, उत्तरदायित्व जागै / रेसा संग तात रूई हलुक, श्रमक भार हलुक नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०९५ — संगीतमय रूप

भाव: कपासक रूईक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: मन्द दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, बाँसुरी, मृदु मँजीरा। कपासक रूईक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कपासक रूईक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कपासक रूईक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कपासक रूईक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कपासक रूईक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कपासक रूईक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कपासक रूईक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०९६ — बेलनक घुमाव — गीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, अतीत, पुनीत) · रदीफ: घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि · शेर: ६

बेलन सोझाँ घुमै छै, आँखि रूप परखै / घुमाव भीतर गीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि
लोइ धीरे फैलै छै, कान बदलल सोर सुनै / हाथ कात मीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि
घुमाव लोकक हाथे चलै छै, नाम काज सँ बदलै / बेलन लोक बीच घुमै छै, बोली अर्थ बनबै
लोइ अपन रूप फैलै छै, पुरान नियम ढलै / हाथ लग प्रीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि
बेलन राति घुमै छै, स्मृति रूप फेर जगै / घुमाव पाछाँ छाया रहै छै, मोन आरोप बुझै
लोइ फेरो फैलै छै, पुरान छाप उघड़ै / हाथ संग रीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि
बेलन दूरो घुमै छै, देखनिहार बदलै / घुमाव फेर चलै छै, बोध निज रूप धरै
लोइ काल संग फैलै छै, स्मृति जीवित रहै / बेलन पाछाँ जीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि
हाथ सोझाँ सम्हरै छै, चिन्ह बाधा परखै / बेलन एखन घुमै छै, अपवाद राह रोकै
घुमाव फेर चलै छै, सफल काज साँच जँचै / लोइ भीतर अतीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि
बेलन फेर घुमै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक बेलनक आन मत सुनै छै, निष्कर्ष सीमा धरै
घुमाव एखनहुँ चलै छै, उत्तरदायित्व जागै / बेलन संग पुनीत घुमाव बीच केन्द्र छुटैत नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०९६ — संगीतमय रूप

भाव: बेलनक घुमावक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४९–५३ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, विरल तबला। बेलनक घुमावक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बेलनक घुमावक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बेलनक घुमावक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बेलनक घुमावक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बेलनक घुमावक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बेलनक घुमावक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बेलनक घुमावक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०९७ — धानक भूसी — सार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, विचार, आधार, कछार, दुआर, भार) · रदीफ: भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै · शेर: ६

धान भोरमे पाकै छै, नेत्र सूक्ष्म भेद परखै / भूसी कात सार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै
धान-पछिया ध्वनि बहै छै, मोन सुनि सीमा बुझै / दाना बीच धार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै
भूसी लोक बीच उड़ै छै, व्यवहार अर्थ खोलै / धान हाथ बदलि पाकै छै, बोली मान सम्हरै
दाना नाम सँ टिकै छै, चलन नियम फेर बदलै / धान-पछिया सोझाँ विचार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै
धान राति पाकै छै, पुरान स्मृति फेर जगै / भूसी छाया धरै छै, मोन मूल रूप बुझै
दाना पाछाँ टिकै छै, आरोप धीरे हटै / धान-पछिया भीतर आधार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै
धान-पछिया दूर बहै छै, ज्ञाता फेरो प्रश्न करै / भूसी सोझाँ उड़ै छै, बोध अपन ठाम रहै
दाना फेर टिकै छै, कालक डोर नहि टूटै / धान कात कछार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै
भूसी चिन्ह संग उड़ै छै, हेतु बाधा जाँचै / धान-पछिया फेर बहै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
धान काजमे पाकै छै, सफल चाल प्रमाण जँचै / दाना लग दुआर भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै
दाना मूल सँ टिकै छै, कारणक क्रम खुलै / लोक भूसीक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर सीमा मानै
भूसी एखन उड़ै छै, साझा दायित्व जागै / धान-पछिया संग भार भूसी उडलहुँ दाना थिर रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०९७ — संगीतमय रूप

भाव: धानक भूसीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, एकतारा, हलुक मँजीरा। धानक भूसीक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: धानक भूसीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: धानक भूसीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद धानक भूसीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: धानक भूसीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: धानक भूसीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: धानक भूसीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०९८ — मधुक छत्ता — सोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि · शेर: ६

मौरी सोझाँ उड़ै छै, स्पर्श पहिल भेद जनै / छत्ता भीतर सोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि
मधु धीरे टिकै छै, दृष्टि अपन सीमा बुझै / फूल कात भोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि
छत्ता गाममे भरै छै, लोक-चलन अर्थ बदलै / मौरी हाथे उड़ै छै, बोली काज सँ जुड़ै
मधु नामो टिकै छै, नियम उपयोगेँ खुलै / फूल लग नोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि
फूल राति खिलै छै, स्मृति छाया फेर उठै / छत्ता पाछाँ भरै छै, मोन आरोप परखै
मौरी धीरे उड़ै छै, मूल बोध फेर उघड़ै / मधु संग छोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि
छत्ता दूर भरै छै, ज्ञाता अपन बोध जनै / फूल फेर खिलै छै, ज्ञेय अलगो ठाम रहै
मौरी कालमे उड़ै छै, स्मृति डोर सम्हरै / छत्ता कात जोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि
मधु चिन्ह पर टिकै छै, हेतु संग बाधा जँचै / फूल सोझाँ खिलै छै, अपवाद रोकै
छत्ता काजमे भरै छै, फल प्रमाण फेर परखै / मौरी भीतर डोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि
फूल फेर खिलै छै, कारण क्रम सोझ खुलै / लोक छत्ताक आन पक्ष सुनै छै, न्याय सीमा धरै
मधु एखनहुँ टिकै छै, साझा मान फेर जागै / छत्ता संग कोर मधु सँ पैघ श्रमक सार अछि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०९८ — संगीतमय रूप

भाव: मधुक छत्ताक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदु पखावज, तानपुरा। मधुक छत्ताक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: मधुक छत्ताक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: मधुक छत्ताक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद मधुक छत्ताक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: मधुक छत्ताक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: मधुक छत्ताक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: मधुक छत्ताक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १०९९ — रुद्राक्षक दाना — ताल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: दाना गनितहुँ जप पूरा नहि · शेर: ६

हाथ लग चलै छै, आँखि पहिल रूप परखै / रुद्राक्ष भीतर ताल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि
दाना अपन चाल घुमै छै, कान बदलल लय सुनै / डोर कात चाल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि
डोर लोकक काजे जुड़ै छै, अर्थ व्यवहार सँ खुलै / रुद्राक्ष बोली बीच टिकै छै, नाम समय संग बदलै
दाना फेर घुमै छै, नियम चलन सँ जँचै / हाथ लग जाल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि
रुद्राक्ष स्मृतिमे टिकै छै, छाया पुरान फेर जगै / डोर पाछाँ जुड़ै छै, मोन आरोप बुझै
दाना धीरे घुमै छै, मूल चिन्ह फेर उघड़ै / हाथ संग काल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि
डोर दूरो जुड़ै छै, ज्ञाता निज बोध परखै / रुद्राक्ष फेर टिकै छै, ज्ञेय अपन रूप धरै
दाना काल संग घुमै छै, पहिचान डोर नहि टूटै / डोर कात ढाल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि
हाथ चिन्ह लग चलै छै, हेतु बाधा फेर परखै / रुद्राक्ष एखन टिकै छै, अपवाद राह रोकै
डोर सफल काज जुड़ै छै, फल साँचक राह जँचै / दाना भीतर लाल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि
रुद्राक्ष मूल दिस टिकै छै, कारण क्रम फेर खुलै / लोक रुद्राक्षक प्रतिपक्ष सुनै छै, उत्तर मर्यादा धरै
हाथ एखन चलै छै, दायित्व मनमे जागै / रुद्राक्ष संग बाल दाना गनितहुँ जप पूरा नहि

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १०९९ — संगीतमय रूप

भाव: रुद्राक्षक दानाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, विरल ढोलक, बाँसुरी। रुद्राक्षक दानाक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: रुद्राक्षक दानाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: रुद्राक्षक दानाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद रुद्राक्षक दानाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: रुद्राक्षक दानाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: रुद्राक्षक दानाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: रुद्राक्षक दानाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११०० — घंटीक अनुनाद — आस अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, आभास, प्रयास, उल्लास, विश्वास, इतिहास) · रदीफ: अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै · शेर: ६

घंटी भोर दिस बजै छै, नेत्र बदलल रूप परखै / ध्वनि भीतर आस अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै
अनुनाद कने पसरै छै, कान सूक्ष्म ध्वनि सुनै / मन्दिर लग श्वास अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै
मन्दिर लोक बीच जागै छै, उपयोग अर्थकैँ खोलै / घंटी काज संग बजै छै, बोली नाम सम्हरै
ध्वनि घंटी संग फेर उठै छै, पुरान नियम नव बनै / अनुनाद सोझाँ आभास अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै
अनुनाद राति पसरै छै, स्मृति छाया फेर जगै / मन्दिर पाछाँ जागै छै, मोन आरोप बुझै
घंटी धीरे बजै छै, मूल बोध पुनि उघड़ै / ध्वनि संग प्रयास अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै
मन्दिर दूर जागै छै, देखनिहार प्रश्न करै / अनुनाद फेर पसरै छै, बोध अपन सीमा धरै
घंटी कालमे बजै छै, स्मृति पहिचान सम्हरै / मन्दिर कात उल्लास अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै
ध्वनि घंटीक चिन्ह संग उठै छै, हेतु बाधा फेर जँचै / घंटी एखन बजै छै, अपवाद निष्कर्ष रोकै
अनुनाद काजमे पसरै छै, सफल चाल प्रमाण बनै / मन्दिर भीतर विश्वास अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै
ध्वनि घंटीक मूल सँ उठै छै, कारण क्रम धीरे खुलै / लोक घंटीक आन पक्ष सुनै छै, साझा सीमा मानै
घंटी एखनहुँ बजै छै, उत्तरदायित्व जागै / ध्वनि संग इतिहास अनुनाद दूर धरि बाट खोलैत रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११०० — संगीतमय रूप

भाव: घंटीक अनुनादक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मँजीरा। घंटीक अनुनादक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे सीमित नहि करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे अलग श्वास-विन्यास बनए।
मतला: घंटीक अनुनादक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: घंटीक अनुनादक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा दोसर शेरक सहारा नहि माँगए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद घंटीक अनुनादक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: घंटीक अनुनादक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: घंटीक अनुनादक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; तुरन्त निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: घंटीक अनुनादक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११०१ — हँसियाक धार — मान पर राह खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: पर राह खुलै · शेर: ६

मोन देखि धान मे साँच फेर खुलै / मोन राखि धान मान पर राह खुलै
कान राखि धार पर भेद साफ सुनै / लोक देखि धार ज्ञान पर राह खुलै
लोक देखि धान मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि धार मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि धार संग मान फेर चलै / हाथ राखि धान ध्यान पर राह खुलै
मोन खोजि धान मे मूल फेर जगै / मोन राखि धान मे छाप फेर जगै
लोक खोजि धार मे छाप फेर बचै / मोन खोजि धार प्राण पर राह खुलै
मोन नापि धान मे भेद साफ जनै / लोक देखि धार मे रूप थिर रहै
लोक राखि धार संग डोर फेर तनै / लोक राखि धान गान पर राह खुलै
मोन देखि धान मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि धान मे भेद साफ खुलै
लोक देखि धार मे काज फेर जँचै / मोन देखि धार दान पर राह खुलै
मोन सोचि धान मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि धार मे क्रम साफ खुलै
कान राखि धार पर मान फेर जगै / कान राखि धान शान पर राह खुलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११०१ — संगीतमय रूप

भाव: हँसियाक धारक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, विरल तबला। हँसियाक धारक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: हँसियाक धारक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: हँसियाक धारक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद हँसियाक धारक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: हँसियाक धारक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: हँसियाक धारक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: हँसियाक धारक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११०२ — इनारक डोल — सोर संग नेह रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: संग नेह रहै · शेर: ६

मोन देखि डोल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि डोल सोर संग नेह रहै
कान राखि नीर पर भेद साफ सुनै / लोक देखि नीर भोर संग नेह रहै
लोक देखि डोल मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि नीर मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि नीर संग मान फेर चलै / हाथ राखि डोल नोर संग नेह रहै
मोन खोजि डोल मे मूल फेर जगै / मोन राखि डोल मे छाप फेर जगै
लोक खोजि नीर मे छाप फेर बचै / मोन खोजि नीर छोर संग नेह रहै
मोन नापि डोल मे भेद साफ जनै / लोक देखि नीर मे रूप थिर रहै
लोक राखि नीर संग डोर फेर तनै / लोक राखि डोल जोर संग नेह रहै
मोन देखि डोल मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि डोल मे भेद साफ खुलै
लोक देखि नीर मे काज फेर जँचै / मोन देखि नीर डोर संग नेह रहै
मोन सोचि डोल मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि नीर मे क्रम साफ खुलै
कान राखि नीर पर मान फेर जगै / कान राखि डोल कोर संग नेह रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११०२ — संगीतमय रूप

भाव: इनारक डोलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदु पखावज, तानपुरा। इनारक डोलक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: इनारक डोलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: इनारक डोलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद इनारक डोलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: इनारक डोलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: इनारक डोलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: इनारक डोलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११०३ — घूरक आँच — राह पर गप खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: पर गप खुलै · शेर: ६

मोन देखि घूर मे साँच फेर खुलै / मोन राखि घूर राह पर गप खुलै
कान राखि आँच पर भेद साफ सुनै / लोक देखि आँच चाह पर गप खुलै
लोक देखि घूर मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि आँच मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि आँच संग मान फेर चलै / हाथ राखि घूर थाह पर गप खुलै
मोन खोजि घूर मे मूल फेर जगै / मोन राखि घूर मे छाप फेर जगै
लोक खोजि आँच मे छाप फेर बचै / मोन खोजि आँच आह पर गप खुलै
मोन नापि घूर मे भेद साफ जनै / लोक देखि आँच मे रूप थिर रहै
लोक राखि आँच संग डोर फेर तनै / लोक राखि घूर छाह पर गप खुलै
मोन देखि घूर मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि घूर मे भेद साफ खुलै
लोक देखि आँच मे काज फेर जँचै / मोन देखि आँच दाह पर गप खुलै
मोन सोचि घूर मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि आँच मे क्रम साफ खुलै
कान राखि आँच पर मान फेर जगै / कान राखि घूर वाह पर गप खुलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११०३ — संगीतमय रूप

भाव: घूरक आँचक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मँजीरा। घूरक आँचक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: घूरक आँचक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: घूरक आँचक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद घूरक आँचक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: घूरक आँचक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: घूरक आँचक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: घूरक आँचक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११०४ — ईखक गाँठि — गीत बीच राह चलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: बीच राह चलै · शेर: ६

मोन देखि ईख मे साँच फेर खुलै / मोन राखि ईख गीत बीच राह चलै

कान राखि गाँठ पर भेद साफ सुनै / लोक देखि गाँठ मीत बीच राह चलै

लोक देखि ईख मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि गाँठ मे अर्थ फेर बनै

हाथ राखि गाँठ संग मान फेर चलै / हाथ राखि ईख प्रीत बीच राह चलै

मोन खोजि ईख मे मूल फेर जगै / मोन राखि ईख मे छाप फेर जगै

लोक खोजि गाँठ मे छाप फेर बचै / मोन खोजि गाँठ रीत बीच राह चलै

मोन नापि ईख मे भेद साफ जनै / लोक देखि गाँठ मे रूप थिर रहै

लोक राखि गाँठ संग डोर फेर तनै / लोक राखि ईख जीत बीच राह चलै

मोन देखि ईख मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि ईख मे भेद साफ खुलै

लोक देखि गाँठ मे काज फेर जँचै / मोन देखि गाँठ भीत बीच राह चलै

मोन सोचि ईख मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि गाँठ मे क्रम साफ खुलै

कान राखि गाँठ पर मान फेर जगै / कान राखि ईख शीत बीच राह चलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११०४ — संगीतमय रूप

भाव: ईखक गाँठिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५३–५७ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, सारंगी, विरल पखावज। ईखक गाँठिक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: ईखक गाँठिक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: ईखक गाँठिक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद ईखक गाँठिक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: ईखक गाँठिक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: ईखक गाँठिक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: ईखक गाँठिक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११०५ — गुड़क भेली — ताल कात धुन उठै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: कात धुन उठै · शेर: ६

मोन देखि गुड़ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि गुड़ ताल कात धुन उठै
कान राखि रस पर भेद साफ सुनै / लोक देखि रस चाल कात धुन उठै
लोक देखि गुड़ मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि रस मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि रस संग मान फेर चलै / हाथ राखि गुड़ जाल कात धुन उठै
मोन खोजि गुड़ मे मूल फेर जगै / मोन राखि गुड़ मे छाप फेर जगै
लोक खोजि रस मे छाप फेर बचै / मोन खोजि रस काल कात धुन उठै
मोन नापि गुड़ मे भेद साफ जनै / लोक देखि रस मे रूप थिर रहै
लोक राखि रस संग डोर फेर तनै / लोक राखि गुड़ ढाल कात धुन उठै
मोन देखि गुड़ मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि गुड़ मे भेद साफ खुलै
लोक देखि रस मे काज फेर जँचै / मोन देखि रस लाल कात धुन उठै
मोन सोचि गुड़ मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि रस मे क्रम साफ खुलै
कान राखि रस पर मान फेर जगै / कान राखि गुड़ बाल कात धुन उठै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११०५ — संगीतमय रूप

भाव: गुड़क भेलीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४१–४५ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, इसराज, विरल तबला। गुड़क भेलीक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: गुड़क भेलीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: गुड़क भेलीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद गुड़क भेलीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: गुड़क भेलीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: गुड़क भेलीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: गुड़क भेलीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११०६ — झाड़ूक सींक — आस बीच रूप खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस) · रदीफ: बीच रूप खुलै · शेर: ६

मोन देखि झाड़ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि झाड़ आस बीच रूप खुलै
कान राखि सींक पर भेद साफ सुनै / लोक देखि सींक श्वास बीच रूप खुलै
लोक देखि झाड़ मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि सींक मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि सींक संग मान फेर चलै / हाथ राखि झाड़ त्रास बीच रूप खुलै
मोन खोजि झाड़ मे मूल फेर जगै / मोन राखि झाड़ मे छाप फेर जगै
लोक खोजि सींक मे छाप फेर बचै / मोन खोजि सींक प्यास बीच रूप खुलै
मोन नापि झाड़ मे भेद साफ जनै / लोक देखि सींक मे रूप थिर रहै
लोक राखि सींक संग डोर फेर तनै / लोक राखि झाड़ वास बीच रूप खुलै
मोन देखि झाड़ मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि झाड़ मे भेद साफ खुलै
लोक देखि सींक मे काज फेर जँचै / मोन देखि सींक पास बीच रूप खुलै
मोन सोचि झाड़ मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि सींक मे क्रम साफ खुलै
कान राखि सींक पर मान फेर जगै / कान राखि झाड़ साँस बीच रूप खुलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११०६ — संगीतमय रूप

भाव: झाड़ूक सींकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, एकतारा, हलुक मँजीरा। झाड़ूक सींकक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: झाड़ूक सींकक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: झाड़ूक सींकक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद झाड़ूक सींकक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: झाड़ूक सींकक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: झाड़ूक सींकक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: झाड़ूक सींकक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११०७ — कोंहड़ाक बेल — सार पर भोर खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार) · रदीफ: पर भोर खुलै · शेर: ६

मोन देखि बेल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि बेल सार पर भोर खुलै

कान राखि पात पर भेद साफ सुनै / लोक देखि पात धार पर भोर खुलै

लोक देखि बेल मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि पात मे अर्थ फेर बनै

हाथ राखि पात संग मान फेर चलै / हाथ राखि बेल भार पर भोर खुलै

मोन खोजि बेल मे मूल फेर जगै / मोन राखि बेल मे छाप फेर जगै

लोक खोजि पात मे छाप फेर बचै / मोन खोजि पात पार पर भोर खुलै

मोन नापि बेल मे भेद साफ जनै / लोक देखि पात मे रूप थिर रहै

लोक राखि पात संग डोर फेर तनै / लोक राखि बेल हार पर भोर खुलै

मोन देखि बेल मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि बेल मे भेद साफ खुलै

लोक देखि पात मे काज फेर जँचै / मोन देखि पात तार पर भोर खुलै

मोन सोचि बेल मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि पात मे क्रम साफ खुलै

कान राखि पात पर मान फेर जगै / कान राखि बेल मार पर भोर खुलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११०७ — संगीतमय रूप

भाव: कोंहड़ाक बेलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, विरल ढोलक, बाँसुरी। कोंहड़ाक बेलक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कोंहड़ाक बेलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कोंहड़ाक बेलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कोंहड़ाक बेलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कोंहड़ाक बेलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कोंहड़ाक बेलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कोंहड़ाक बेलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११०८ — जामुनक गाछ — मान पर डोर तनै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: पर डोर तनै · शेर: ६

मोन देखि गाछ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि गाछ मान पर डोर तनै
कान राखि फल पर भेद साफ सुनै / लोक देखि फल ज्ञान पर डोर तनै
लोक देखि गाछ मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि फल मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि फल संग मान फेर चलै / हाथ राखि गाछ ध्यान पर डोर तनै
मोन खोजि गाछ मे मूल फेर जगै / मोन राखि गाछ मे छाप फेर जगै
लोक खोजि फल मे छाप फेर बचै / मोन खोजि फल प्राण पर डोर तनै
मोन नापि गाछ मे भेद साफ जनै / लोक देखि फल मे रूप थिर रहै
लोक राखि फल संग डोर फेर तनै / लोक राखि गाछ गान पर डोर तनै
मोन देखि गाछ मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि गाछ मे भेद साफ खुलै
लोक देखि फल मे काज फेर जँचै / मोन देखि फल दान पर डोर तनै
मोन सोचि गाछ मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि फल मे क्रम साफ खुलै
कान राखि फल पर मान फेर जगै / कान राखि गाछ शान पर डोर तनै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११०८ — संगीतमय रूप

भाव: जामुनक गाछक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: आड़ा चौताल १४।
वाद्य-विन्यास: इसराज, बाँसुरी, हलुक तबला। जामुनक गाछक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: जामुनक गाछक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: जामुनक गाछक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद जामुनक गाछक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: जामुनक गाछक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: जामुनक गाछक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: जामुनक गाछक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११०९ — बेलक फल — सोर संग ताल बजै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: संग ताल बजै · शेर: ६

मोन देखि फल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि फल सोर संग ताल बजै

कान राखि बेल पर भेद साफ सुनै / लोक देखि बेल भोर संग ताल बजै

लोक देखि फल मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि बेल मे अर्थ फेर बनै

हाथ राखि बेल संग मान फेर चलै / हाथ राखि फल नोर संग ताल बजै

मोन खोजि फल मे मूल फेर जगै / मोन राखि फल मे छाप फेर जगै

लोक खोजि बेल मे छाप फेर बचै / मोन खोजि बेल छोर संग ताल बजै

मोन नापि फल मे भेद साफ जनै / लोक देखि बेल मे रूप थिर रहै

लोक राखि बेल संग डोर फेर तनै / लोक राखि फल जोर संग ताल बजै

मोन देखि फल मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि फल मे भेद साफ खुलै

लोक देखि बेल मे काज फेर जँचै / मोन देखि बेल डोर संग ताल बजै

मोन सोचि फल मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि बेल मे क्रम साफ खुलै

कान राखि बेल पर मान फेर जगै / कान राखि फल कोर संग ताल बजै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११०९ — संगीतमय रूप

भाव: बेलक फलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, हलुक ढोलक। बेलक फलक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बेलक फलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बेलक फलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बेलक फलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बेलक फलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बेलक फलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बेलक फलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १११० — कौड़ीक चाल — राह बीच रंग झरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: बीच रंग झरै · शेर: ६

मोन देखि कौड़ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि कौड़ राह बीच रंग झरै
कान राखि चाल पर भेद साफ सुनै / लोक देखि चाल चाह बीच रंग झरै
लोक देखि कौड़ मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि चाल मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि चाल संग मान फेर चलै / हाथ राखि कौड़ थाह बीच रंग झरै
मोन खोजि कौड़ मे मूल फेर जगै / मोन राखि कौड़ मे छाप फेर जगै
लोक खोजि चाल मे छाप फेर बचै / मोन खोजि चाल आह बीच रंग झरै
मोन नापि कौड़ मे भेद साफ जनै / लोक देखि चाल मे रूप थिर रहै
लोक राखि चाल संग डोर फेर तनै / लोक राखि कौड़ छाह बीच रंग झरै
मोन देखि कौड़ मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि कौड़ मे भेद साफ खुलै
लोक देखि चाल मे काज फेर जँचै / मोन देखि चाल दाह बीच रंग झरै
मोन सोचि कौड़ मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि चाल मे क्रम साफ खुलै
कान राखि चाल पर मान फेर जगै / कान राखि कौड़ वाह बीच रंग झरै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १११० — संगीतमय रूप

भाव: कौड़ीक चालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४९–५३ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, विरल तबला। कौड़ीक चालक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कौड़ीक चालक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कौड़ीक चालक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कौड़ीक चालक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कौड़ीक चालक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कौड़ीक चालक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कौड़ीक चालक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११११ — खाटक पाट — गीत कात भोर खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: कात भोर खुलै · शेर: ६

मोन देखि खाट मे साँच फेर खुलै / मोन राखि खाट गीत कात भोर खुलै

कान राखि पाट पर भेद साफ सुनै / लोक देखि पाट मीत कात भोर खुलै

लोक देखि खाट मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि पाट मे अर्थ फेर बनै

हाथ राखि पाट संग मान फेर चलै / हाथ राखि खाट प्रीत कात भोर खुलै

मोन खोजि खाट मे मूल फेर जगै / मोन राखि खाट मे छाप फेर जगै

लोक खोजि पाट मे छाप फेर बचै / मोन खोजि पाट रीत कात भोर खुलै

मोन नापि खाट मे भेद साफ जनै / लोक देखि पाट मे रूप थिर रहै

लोक राखि पाट संग डोर फेर तनै / लोक राखि खाट जीत कात भोर खुलै

मोन देखि खाट मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि खाट मे भेद साफ खुलै

लोक देखि पाट मे काज फेर जँचै / मोन देखि पाट भीत कात भोर खुलै

मोन सोचि खाट मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि पाट मे क्रम साफ खुलै

कान राखि पाट पर मान फेर जगै / कान राखि खाट शीत कात भोर खुलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १११११ — संगीतमय रूप

भाव: खाटक पाटक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५४–५८ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदु पखावज, तानपुरा। खाटक पाटक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: खाटक पाटक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: खाटक पाटक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खाटक पाटक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: खाटक पाटक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: खाटक पाटक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: खाटक पाटक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १११२ — ढिबरीक काँच — ताल संग काज चलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: संग काज चलै · शेर: ६

मोन देखि दीप मे साँच फेर खुलै / मोन राखि दीप ताल संग काज चलै
कान राखि काँच पर भेद साफ सुनै / लोक देखि काँच चाल संग काज चलै
लोक देखि दीप मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि काँच मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि काँच संग मान फेर चलै / हाथ राखि दीप जाल संग काज चलै
मोन खोजि दीप मे मूल फेर जगै / मोन राखि दीप मे छाप फेर जगै
लोक खोजि काँच मे छाप फेर बचै / मोन खोजि काँच काल संग काज चलै
मोन नापि दीप मे भेद साफ जनै / लोक देखि काँच मे रूप थिर रहै
लोक राखि काँच संग डोर फेर तनै / लोक राखि दीप ढाल संग काज चलै
मोन देखि दीप मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि दीप मे भेद साफ खुलै
लोक देखि काँच मे काज फेर जँचै / मोन देखि काँच लाल संग काज चलै
मोन सोचि दीप मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि काँच मे क्रम साफ खुलै
कान राखि काँच पर मान फेर जगै / कान राखि दीप बाल संग काज चलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११११२ — संगीतमय रूप

भाव: ढिबरीक काँचक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

गति (BPM): ४२–४६ · ताल: मन्द तीनताल १६।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मँजीरा। ढिबरीक काँचक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।

मतला: ढिबरीक काँचक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।

२म शेर: ढिबरीक काँचक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।

३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद ढिबरीक काँचक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।

४म शेर: ढिबरीक काँचक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।

५म शेर: ढिबरीक काँचक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।

६म शेर: ढिबरीक काँचक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११९३ — घुँघरूक नाद — आस पर थाह मिलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस) · रदीफ: पर थाह मिलै · शेर: ६

मोन देखि पाँव मे साँच फेर खुलै / मोन राखि पाँव आस पर थाह मिलै
कान राखि नाद पर भेद साफ सुनै / लोक देखि नाद श्वास पर थाह मिलै
लोक देखि पाँव मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि नाद मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि नाद संग मान फेर चलै / हाथ राखि पाँव त्रास पर थाह मिलै
मोन खोजि पाँव मे मूल फेर जगै / मोन राखि पाँव मे छाप फेर जगै
लोक खोजि नाद मे छाप फेर बचै / मोन खोजि नाद प्यास पर थाह मिलै
मोन नापि पाँव मे भेद साफ जनै / लोक देखि नाद मे रूप थिर रहै
लोक राखि नाद संग डोर फेर तनै / लोक राखि पाँव वास पर थाह मिलै
मोन देखि पाँव मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि पाँव मे भेद साफ खुलै
लोक देखि नाद मे काज फेर जँचै / मोन देखि नाद पास पर थाह मिलै
मोन सोचि पाँव मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि नाद मे क्रम साफ खुलै
कान राखि नाद पर मान फेर जगै / कान राखि पाँव साँस पर थाह मिलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १११३ — संगीतमय रूप

भाव: घुँघरूक नादक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, सारंगी, विरल पखावज। घुँघरूक नादक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: घुँघरूक नादक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: घुँघरूक नादक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद घुँघरूक नादक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: घुँघरूक नादक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: घुँघरूक नादक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: घुँघरूक नादक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १११४ — झाँझक थाप — सार संग मान रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार) · रदीफ: संग मान रहै · शेर: ६

मोन देखि झाँझ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि झाँझ सार संग मान रहै

कान राखि थाप पर भेद साफ सुनै / लोक देखि थाप धार संग मान रहै

लोक देखि झाँझ मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि थाप मे अर्थ फेर बनै

हाथ राखि थाप संग मान फेर चलै / हाथ राखि झाँझ भार संग मान रहै

मोन खोजि झाँझ मे मूल फेर जगै / मोन राखि झाँझ मे छाप फेर जगै

लोक खोजि थाप मे छाप फेर बचै / मोन खोजि थाप पार संग मान रहै

मोन नापि झाँझ मे भेद साफ जनै / लोक देखि थाप मे रूप थिर रहै

लोक राखि थाप संग डोर फेर तनै / लोक राखि झाँझ हार संग मान रहै

मोन देखि झाँझ मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि झाँझ मे भेद साफ खुलै

लोक देखि थाप मे काज फेर जँचै / मोन देखि थाप तार संग मान रहै

मोन सोचि झाँझ मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि थाप मे क्रम साफ खुलै

कान राखि थाप पर मान फेर जगै / कान राखि झाँझ मार संग मान रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११११४ — संगीतमय रूप

भाव: झाँझक थापक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५२–५६ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, इसराज, विरल तबला। झाँझक थापक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: झाँझक थापक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: झाँझक थापक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद झाँझक थापक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: झाँझक थापक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: झाँझक थापक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: झाँझक थापक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १११५ — खुरपीक धार — मान पर साँच खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: पर साँच खुलै · शेर: ६

मोन देखि खेत मे साँच फेर खुलै / मोन राखि खेत मान पर साँच खुलै
कान राखि जड़ पर भेद साफ सुनै / लोक देखि जड़ ज्ञान पर साँच खुलै
लोक देखि खेत मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि जड़ मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि जड़ संग मान फेर चलै / हाथ राखि खेत ध्यान पर साँच खुलै
मोन खोजि खेत मे मूल फेर जगै / मोन राखि खेत मे छाप फेर जगै
लोक खोजि जड़ मे छाप फेर बचै / मोन खोजि जड़ प्राण पर साँच खुलै
मोन नापि खेत मे भेद साफ जनै / लोक देखि जड़ मे रूप थिर रहै
लोक राखि जड़ संग डोर फेर तनै / लोक राखि खेत गान पर साँच खुलै
मोन देखि खेत मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि खेत मे भेद साफ खुलै
लोक देखि जड़ मे काज फेर जँचै / मोन देखि जड़ दान पर साँच खुलै
मोन सोचि खेत मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि जड़ मे क्रम साफ खुलै
कान राखि जड़ पर मान फेर जगै / कान राखि खेत शान पर साँच खुलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११९५ — संगीतमय रूप

भाव: खुरपीक धारक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

गति (BPM): ४०–४४ · ताल: विलम्बित एकताल १२।

वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, एकतारा, हलुक मँजीरा। खुरपीक धारक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।

मतला: खुरपीक धारक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।

२म शेर: खुरपीक धारक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।

३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खुरपीक धारक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।

४म शेर: खुरपीक धारक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।

५म शेर: खुरपीक धारक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।

६म शेर: खुरपीक धारक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११११६ — बथानक खूँटा — राह संग गीत उठै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: संग गीत उठै · शेर: ६

मोन देखि खूँट मे साँच फेर खुलै / मोन राखि खूँट राह संग गीत उठै
कान राखि डोर पर भेद साफ सुनै / लोक देखि डोर चाह संग गीत उठै
लोक देखि खूँट मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि डोर मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि डोर संग मान फेर चलै / हाथ राखि खूँट थाह संग गीत उठै
मोन खोजि खूँट मे मूल फेर जगै / मोन राखि खूँट मे छाप फेर जगै
लोक खोजि डोर मे छाप फेर बचै / मोन खोजि डोर आह संग गीत उठै
मोन नापि खूँट मे भेद साफ जनै / लोक देखि डोर मे रूप थिर रहै
लोक राखि डोर संग डोर फेर तनै / लोक राखि खूँट छाह संग गीत उठै
मोन देखि खूँट मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि खूँट मे भेद साफ खुलै
लोक देखि डोर मे काज फेर जँचै / मोन देखि डोर दाह संग गीत उठै
मोन सोचि खूँट मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि डोर मे क्रम साफ खुलै
कान राखि डोर पर मान फेर जगै / कान राखि खूँट वाह संग गीत उठै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १११६ — संगीतमय रूप

भाव: बथानक खूँटाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, विरल ढोलक, बाँसुरी। बथानक खूँटाक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बथानक खूँटाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बथानक खूँटाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बथानक खूँटाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बथानक खूँटाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बथानक खूँटाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बथानक खूँटाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११९७ — दूधक फेन — गीत बीच नेह रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: बीच नेह रहै · शेर: ६

मोन देखि दूध मे साँच फेर खुलै / मोन राखि दूध गीत बीच नेह रहै
कान राखि फेन पर भेद साफ सुनै / लोक देखि फेन मीत बीच नेह रहै
लोक देखि दूध मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि फेन मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि फेन संग मान फेर चलै / हाथ राखि दूध प्रीत बीच नेह रहै
मोन खोजि दूध मे मूल फेर जगै / मोन राखि दूध मे छाप फेर जगै
लोक खोजि फेन मे छाप फेर बचै / मोन खोजि फेन रीत बीच नेह रहै
मोन नापि दूध मे भेद साफ जनै / लोक देखि फेन मे रूप थिर रहै
लोक राखि फेन संग डोर फेर तनै / लोक राखि दूध जीत बीच नेह रहै
मोन देखि दूध मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि दूध मे भेद साफ खुलै
लोक देखि फेन मे काज फेर जँचै / मोन देखि फेन भीत बीच नेह रहै
मोन सोचि दूध मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि फेन मे क्रम साफ खुलै
कान राखि फेन पर मान फेर जगै / कान राखि दूध शीत बीच नेह रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १११७ — संगीतमय रूप

भाव: दूधक फेनक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५०–५४ · ताल: आड़ा चौताल १४।
वाद्य-विन्यास: इसराज, बाँसुरी, हलुक तबला। दूधक फेनक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: दूधक फेनक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: दूधक फेनक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद दूधक फेनक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: दूधक फेनक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: दूधक फेनक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: दूधक फेनक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १११८ — लाहक चूड़ी — ताल संग धूप ढलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: संग धूप ढलै · शेर: ६

मोन देखि लाह मे साँच फेर खुलै / मोन राखि लाह ताल संग धूप ढलै
कान राखि चूड़ पर भेद साफ सुनै / लोक देखि चूड़ चाल संग धूप ढलै
लोक देखि लाह मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि चूड़ मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि चूड़ संग मान फेर चलै / हाथ राखि लाह जाल संग धूप ढलै
मोन खोजि लाह मे मूल फेर जगै / मोन राखि लाह मे छाप फेर जगै
लोक खोजि चूड़ मे छाप फेर बचै / मोन खोजि चूड़ काल संग धूप ढलै
मोन नापि लाह मे भेद साफ जनै / लोक देखि चूड़ मे रूप थिर रहै
लोक राखि चूड़ संग डोर फेर तनै / लोक राखि लाह ढाल संग धूप ढलै
मोन देखि लाह मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि लाह मे भेद साफ खुलै
लोक देखि चूड़ मे काज फेर जँचै / मोन देखि चूड़ लाल संग धूप ढलै
मोन सोचि लाह मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि चूड़ मे क्रम साफ खुलै
कान राखि चूड़ पर मान फेर जगै / कान राखि लाह बाल संग धूप ढलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११९८ — संगीतमय रूप

भाव: लाहक चूड़ीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, हलुक ढोलक। लाहक चूड़ीक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: लाहक चूड़ीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: लाहक चूड़ीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद लाहक चूड़ीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: लाहक चूड़ीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: लाहक चूड़ीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: लाहक चूड़ीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल १११९ — बटखराक तोल — आस बीच छाह सरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस) · रदीफ: बीच छाह सरै · शेर: ६

मोन देखि तोल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि तोल आस बीच छाह सरै
कान राखि बाट पर भेद साफ सुनै / लोक देखि बाट श्वास बीच छाह सरै
लोक देखि तोल मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि बाट मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि बाट संग मान फेर चलै / हाथ राखि तोल त्रास बीच छाह सरै
मोन खोजि तोल मे मूल फेर जगै / मोन राखि तोल मे छाप फेर जगै
लोक खोजि बाट मे छाप फेर बचै / मोन खोजि बाट प्यास बीच छाह सरै
मोन नापि तोल मे भेद साफ जनै / लोक देखि बाट मे रूप थिर रहै
लोक राखि बाट संग डोर फेर तनै / लोक राखि तोल वास बीच छाह सरै
मोन देखि तोल मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि तोल मे भेद साफ खुलै
लोक देखि बाट मे काज फेर जँचै / मोन देखि बाट पास बीच छाह सरै
मोन सोचि तोल मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि बाट मे क्रम साफ खुलै
कान राखि बाट पर मान फेर जगै / कान राखि तोल साँस बीच छाह सरै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल १११९ — संगीतमय रूप

भाव: बटखराक तोलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: इसराज, तानपुरा, विरल तबला। बटखराक तोलक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बटखराक तोलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बटखराक तोलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बटखराक तोलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बटखराक तोलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बटखराक तोलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बटखराक तोलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११२० — पालकीक डाँड़ — सार संग बीज उगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार) · रदीफ: संग बीज उगै · शेर: ६

मोन देखि पाल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि पाल सार संग बीज उगै
कान राखि डाँड़ पर भेद साफ सुनै / लोक देखि डाँड़ धार संग बीज उगै
लोक देखि पाल मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि डाँड़ मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि डाँड़ संग मान फेर चलै / हाथ राखि पाल भार संग बीज उगै
मोन खोजि पाल मे मूल फेर जगै / मोन राखि पाल मे छाप फेर जगै
लोक खोजि डाँड़ मे छाप फेर बचै / मोन खोजि डाँड़ पार संग बीज उगै
मोन नापि पाल मे भेद साफ जनै / लोक देखि डाँड़ मे रूप थिर रहै
लोक राखि डाँड़ संग डोर फेर तनै / लोक राखि पाल हार संग बीज उगै
मोन देखि पाल मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि पाल मे भेद साफ खुलै
लोक देखि डाँड़ मे काज फेर जँचै / मोन देखि डाँड़ तार संग बीज उगै
मोन सोचि पाल मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि डाँड़ मे क्रम साफ खुलै
कान राखि डाँड़ पर मान फेर जगै / कान राखि पाल मार संग बीज उगै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११२० — संगीतमय रूप

भाव: पालकीक डाँड़क बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, मृदु पखावज, तानपुरा। पालकीक डाँड़क दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: पालकीक डाँड़क पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पालकीक डाँड़क लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद पालकीक डाँड़क बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: पालकीक डाँड़क भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: पालकीक डाँड़क संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: पालकीक डाँड़क छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११२१ — माछक शल्क — मान मे आँच जगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: मे आँच जगै · शेर: ६

मोन देखि माछ मे साँच फेर खुलै / मोन राखि माछ मान मे आँच जगै

कान राखि शल्क पर भेद साफ सुनै / लोक देखि शल्क ज्ञान मे आँच जगै

लोक देखि माछ मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि शल्क मे अर्थ फेर बनै

हाथ राखि शल्क संग मान फेर चलै / हाथ राखि माछ ध्यान मे आँच जगै

मोन खोजि माछ मे मूल फेर जगै / मोन राखि माछ मे छाप फेर जगै

लोक खोजि शल्क मे छाप फेर बचै / मोन खोजि शल्क प्राण मे आँच जगै

मोन नापि माछ मे भेद साफ जनै / लोक देखि शल्क मे रूप थिर रहै

लोक राखि शल्क संग डोर फेर तनै / लोक राखि माछ गान मे आँच जगै

मोन देखि माछ मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि माछ मे भेद साफ खुलै

लोक देखि शल्क मे काज फेर जँचै / मोन देखि शल्क दान मे आँच जगै

मोन सोचि माछ मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि शल्क मे क्रम साफ खुलै

कान राखि शल्क पर मान फेर जगै / कान राखि माछ शान मे आँच जगै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११२१ — संगीतमय रूप

भाव: माछक शल्कक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५३–५७ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, सारंगी, मँजीरा। माछक शल्कक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: माछक शल्कक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: माछक शल्कक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद माछक शल्कक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: माछक शल्कक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: माछक शल्कक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: माछक शल्कक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११२२ — माटिक सुराही — सोर पर मोन नमै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: पर मोन नमै · शेर: ६

मोन देखि घट मे साँच फेर खुलै / मोन राखि घट सोर पर मोन नमै
कान राखि कंठ पर भेद साफ सुनै / लोक देखि कंठ भोर पर मोन नमै
लोक देखि घट मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि कंठ मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि कंठ संग मान फेर चलै / हाथ राखि घट नोर पर मोन नमै
मोन खोजि घट मे मूल फेर जगै / मोन राखि घट मे छाप फेर जगै
लोक खोजि कंठ मे छाप फेर बचै / मोन खोजि कंठ छोर पर मोन नमै
मोन नापि घट मे भेद साफ जनै / लोक देखि कंठ मे रूप थिर रहै
लोक राखि कंठ संग डोर फेर तनै / लोक राखि घट जोर पर मोन नमै
मोन देखि घट मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि घट मे भेद साफ खुलै
लोक देखि कंठ मे काज फेर जँचै / मोन देखि कंठ डोर पर मोन नमै
मोन सोचि घट मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि कंठ मे क्रम साफ खुलै
कान राखि कंठ पर मान फेर जगै / कान राखि घट कोर पर मोन नमै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११२२ — संगीतमय रूप

भाव: माटिक सुराहीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४१–४५ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, सारंगी, विरल पखावज। माटिक सुराहीक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: माटिक सुराहीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: माटिक सुराहीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद माटिक सुराहीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: माटिक सुराहीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: माटिक सुराहीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: माटिक सुराहीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११२३ — कुल्हड़क गंध — राह कात सोर उठै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: कात सोर उठै · शेर: ६

मोन देखि गंध मे साँच फेर खुलै / मोन राखि गंध राह कात सोर उठै
कान राखि घाम पर भेद साफ सुनै / लोक देखि घाम चाह कात सोर उठै
लोक देखि गंध मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि घाम मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि घाम संग मान फेर चलै / हाथ राखि गंध थाह कात सोर उठै
मोन खोजि गंध मे मूल फेर जगै / मोन राखि गंध मे छाप फेर जगै
लोक खोजि घाम मे छाप फेर बचै / मोन खोजि घाम आह कात सोर उठै
मोन नापि गंध मे भेद साफ जनै / लोक देखि घाम मे रूप थिर रहै
लोक राखि घाम संग डोर फेर तनै / लोक राखि गंध छाह कात सोर उठै
मोन देखि गंध मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि गंध मे भेद साफ खुलै
लोक देखि घाम मे काज फेर जँचै / मोन देखि घाम दाह कात सोर उठै
मोन सोचि गंध मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि घाम मे क्रम साफ खुलै
कान राखि घाम पर मान फेर जगै / कान राखि गंध वाह कात सोर उठै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११२३ — संगीतमय रूप

भाव: कुल्हड़क गंधक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, इसराज, विरल तबला। कुल्हड़क गंधक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कुल्हड़क गंधक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कुल्हड़क गंधक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कुल्हड़क गंधक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कुल्हड़क गंधक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कुल्हड़क गंधक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कुल्हड़क गंधक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११२४ — तुरहीक नाद — गीत संग राह बनै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: संग राह बनै · शेर: ६

मोन देखि नाद मे साँच फेर खुलै / मोन राखि नाद गीत संग राह बनै
कान राखि सोर पर भेद साफ सुनै / लोक देखि सोर मीत संग राह बनै
लोक देखि नाद मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि सोर मे अर्थ फेर बनै
हाथ राखि सोर संग मान फेर चलै / हाथ राखि नाद प्रीत संग राह बनै
मोन खोजि नाद मे मूल फेर जगै / मोन राखि नाद मे छाप फेर जगै
लोक खोजि सोर मे छाप फेर बचै / मोन खोजि सोर रीत संग राह बनै
मोन नापि नाद मे भेद साफ जनै / लोक देखि सोर मे रूप थिर रहै
लोक राखि सोर संग डोर फेर तनै / लोक राखि नाद जीत संग राह बनै
मोन देखि नाद मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि नाद मे भेद साफ खुलै
लोक देखि सोर मे काज फेर जँचै / मोन देखि सोर भीत संग राह बनै
मोन सोचि नाद मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि सोर मे क्रम साफ खुलै
कान राखि सोर पर मान फेर जगै / कान राखि नाद शीत संग राह बनै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११२४ — संगीतमय रूप

भाव: तुरहीक नादक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, एकतारा, हलुक मँजीरा। तुरहीक नादक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: तुरहीक नादक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: तुरहीक नादक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद तुरहीक नादक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: तुरहीक नादक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: तुरहीक नादक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: तुरहीक नादक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११२५ — डमरूक ताल — ताल मे नेह जगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: मे नेह जगै · शेर: ६

मोन देखि ताल मे साँच फेर खुलै / मोन राखि ताल ताल मे नेह जगै

कान राखि धुन पर भेद साफ सुनै / लोक देखि धुन चाल मे नेह जगै

लोक देखि ताल मे अर्थ फेर बनै / मोन देखि धुन मे अर्थ फेर बनै

हाथ राखि धुन संग मान फेर चलै / हाथ राखि ताल जाल मे नेह जगै

मोन खोजि ताल मे मूल फेर जगै / मोन राखि ताल मे छाप फेर जगै

लोक खोजि धुन मे छाप फेर बचै / मोन खोजि धुन काल मे नेह जगै

मोन नापि ताल मे भेद साफ जनै / लोक देखि धुन मे रूप थिर रहै

लोक राखि धुन संग डोर फेर तनै / लोक राखि ताल ढाल मे नेह जगै

मोन देखि ताल मे तर्क साफ मिलै / मोन देखि ताल मे भेद साफ खुलै

लोक देखि धुन मे काज फेर जँचै / मोन देखि धुन लाल मे नेह जगै

मोन सोचि ताल मे क्रम साफ खुलै / लोक देखि धुन मे क्रम साफ खुलै

कान राखि धुन पर मान फेर जगै / कान राखि ताल बाल मे नेह जगै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११२५ — संगीतमय रूप

भाव: डमरूक तालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, विरल ढोलक, बाँसुरी। डमरूक तालक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: डमरूक तालक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: डमरूक तालक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद डमरूक तालक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: डमरूक तालक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: डमरूक तालक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: डमरूक तालक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११२६ — गोइठाक राख — सार पर अर्थ बचै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार) · रदीफ: पर अर्थ बचै · शेर: ६

मोन खोजि राख मे साँच फेर खुलै / मोन नापि राख सार पर अर्थ बचै
कान देखि धूम पर भेद साफ सुनै / लोक राखि धूम धार पर अर्थ बचै
लोक राखि राख मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि धूम मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि धूम संग मान फेर चलै / हाथ खोजि राख भार पर अर्थ बचै
मोन नापि राख मे मूल फेर जगै / मोन सोचि राख मे छाप फेर जगै
लोक नापि धूम मे छाप फेर बचै / मोन नापि धूम पार पर अर्थ बचै
मोन सोचि राख मे भेद साफ जनै / लोक राखि धूम मे रूप थिर रहै
लोक खोजि धूम संग डोर फेर तनै / लोक खोजि राख हार पर अर्थ बचै
मोन राखि राख मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि राख मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि धूम मे काज फेर जँचै / मोन सोचि धूम तार पर अर्थ बचै
मोन नापि राख मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि धूम मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि धूम पर मान फेर जगै / कान सोचि राख मार पर अर्थ बचै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११२६ — संगीतमय रूप

भाव: गोइठाक राखक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३७–४१ · ताल: आड़ा चौताल १४।
वाद्य-विन्यास: सुरमंडल, इसराज, विरल तबला। गोइठाक राखक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: गोइठाक राखक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: गोइठाक राखक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद गोइठाक राखक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: गोइठाक राखक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: गोइठाक राखक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: गोइठाक राखक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११२७ — लौकीक बेल — मान संग मोन घुरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: संग मोन घुरै · शेर: ६

मोन खोजि बेल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि बेल मान संग मोन घुरै

कान देखि डाँठ पर भेद साफ सुनै / लोक राखि डाँठ ज्ञान संग मोन घुरै

लोक राखि बेल मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि डाँठ मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि डाँठ संग मान फेर चलै / हाथ खोजि बेल ध्यान संग मोन घुरै

मोन नापि बेल मे मूल फेर जगै / मोन सोचि बेल मे छाप फेर जगै

लोक नापि डाँठ मे छाप फेर बचै / मोन नापि डाँठ प्राण संग मोन घुरै

मोन सोचि बेल मे भेद साफ जनै / लोक राखि डाँठ मे रूप थिर रहै

लोक खोजि डाँठ संग डोर फेर तनै / लोक खोजि बेल गान संग मोन घुरै

मोन राखि बेल मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि बेल मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि डाँठ मे काज फेर जँचै / मोन सोचि डाँठ दान संग मोन घुरै

मोन नापि बेल मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि डाँठ मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि डाँठ पर मान फेर जगै / कान सोचि बेल शान संग मोन घुरै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११२७ — संगीतमय रूप

भाव: लौकीक बेलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, बाँसुरी, विरल ढोलक। लौकीक बेलक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: लौकीक बेलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: लौकीक बेलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद लौकीक बेलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: लौकीक बेलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: लौकीक बेलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: लौकीक बेलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११२८ — कदम्बक फूल — राह बीच गप जुड़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: बीच गप जुड़ै · शेर: ६

मोन खोजि फूल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि फूल राह बीच गप जुड़ै
कान देखि गंध पर भेद साफ सुनै / लोक राखि गंध चाह बीच गप जुड़ै
लोक राखि फूल मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि गंध मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि गंध संग मान फेर चलै / हाथ खोजि फूल थाह बीच गप जुड़ै
मोन नापि फूल मे मूल फेर जगै / मोन सोचि फूल मे छाप फेर जगै
लोक नापि गंध मे छाप फेर बचै / मोन नापि गंध आह बीच गप जुड़ै
मोन सोचि फूल मे भेद साफ जनै / लोक राखि गंध मे रूप थिर रहै
लोक खोजि गंध संग डोर फेर तनै / लोक खोजि फूल छाह बीच गप जुड़ै
मोन राखि फूल मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि फूल मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि गंध मे काज फेर जँचै / मोन सोचि गंध दाह बीच गप जुड़ै
मोन नापि फूल मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि गंध मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि गंध पर मान फेर जगै / कान सोचि फूल वाह बीच गप जुड़ै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११२८ — संगीतमय रूप

भाव: कदम्बक फूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मृदु पखावज, तानपुरा। कदम्बक फूलक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कदम्बक फूलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कदम्बक फूलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कदम्बक फूलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कदम्बक फूलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कदम्बक फूलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कदम्बक फूलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११२९ — करघाक सूत — रंग कात साँच रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग) · रदीफ: कात साँच रहै · शेर: ६

मोन खोजि सूत मे साँच फेर खुलै / मोन नापि सूत रंग कात साँच रहै
कान देखि तान पर भेद साफ सुनै / लोक राखि तान संग कात साँच रहै
लोक राखि सूत मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि तान मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि तान संग मान फेर चलै / हाथ खोजि सूत ढंग कात साँच रहै
मोन नापि सूत मे मूल फेर जगै / मोन सोचि सूत मे छाप फेर जगै
लोक नापि तान मे छाप फेर बचै / मोन नापि तान जंग कात साँच रहै
मोन सोचि सूत मे भेद साफ जनै / लोक राखि तान मे रूप थिर रहै
लोक खोजि तान संग डोर फेर तनै / लोक खोजि सूत भंग कात साँच रहै
मोन राखि सूत मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि सूत मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि तान मे काज फेर जँचै / मोन सोचि तान तंग कात साँच रहै
मोन नापि सूत मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि तान मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि तान पर मान फेर जगै / कान सोचि सूत अंग कात साँच रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११२९ — संगीतमय रूप

भाव: करघाक सूतक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। करघाक सूतक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: करघाक सूतक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: करघाक सूतक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद करघाक सूतक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: करघाक सूतक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: करघाक सूतक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: करघाक सूतक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११३० — फूसक छानि — गीत मे नेह चलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: मे नेह चलै · शेर: ६

मोन खोजि फूस मे साँच फेर खुलै / मोन नापि फूस गीत मे नेह चलै
कान देखि खर पर भेद साफ सुनै / लोक राखि खर मीत मे नेह चलै
लोक राखि फूस मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि खर मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि खर संग मान फेर चलै / हाथ खोजि फूस प्रीत मे नेह चलै
मोन नापि फूस मे मूल फेर जगै / मोन सोचि फूस मे छाप फेर जगै
लोक नापि खर मे छाप फेर बचै / मोन नापि खर रीत मे नेह चलै
मोन सोचि फूस मे भेद साफ जनै / लोक राखि खर मे रूप थिर रहै
लोक खोजि खर संग डोर फेर तनै / लोक खोजि फूस जीत मे नेह चलै
मोन राखि फूस मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि फूस मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि खर मे काज फेर जँचै / मोन सोचि खर भीत मे नेह चलै
मोन नापि फूस मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि खर मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि खर पर मान फेर जगै / कान सोचि फूस शीत मे नेह चलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११३० — संगीतमय रूप

भाव: फूसक छानिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, एकतारा, मृदु पखावज। फूसक छानिक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: फूसक छानिक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: फूसक छानिक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद फूसक छानिक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: फूसक छानिक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: फूसक छानिक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: फूसक छानिक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११३१ — बेरक काँट — बात पर छाप बचै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात) · रदीफ: पर छाप बचै · शेर: ६

मोन खोजि बेर मे साँच फेर खुलै / मोन नापि बेर बात पर छाप बचै

कान देखि काँट पर भेद साफ सुनै / लोक राखि काँट रात पर छाप बचै

लोक राखि बेर मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि काँट मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि काँट संग मान फेर चलै / हाथ खोजि बेर पात पर छाप बचै

मोन नापि बेर मे मूल फेर जगै / मोन सोचि बेर मे छाप फेर जगै

लोक नापि काँट मे छाप फेर बचै / मोन नापि काँट घात पर छाप बचै

मोन सोचि बेर मे भेद साफ जनै / लोक राखि काँट मे रूप थिर रहै

लोक खोजि काँट संग डोर फेर तनै / लोक खोजि बेर भात पर छाप बचै

मोन राखि बेर मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि बेर मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि काँट मे काज फेर जँचै / मोन सोचि काँट तात पर छाप बचै

मोन नापि बेर मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि काँट मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि काँट पर मान फेर जगै / कान सोचि बेर जात पर छाप बचै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११३१ — संगीतमय रूप

भाव: बेरक काँटक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५३–५७ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, सारंगी, मँजीरा। बेरक काँटक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बेरक काँटक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बेरक काँटक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बेरक काँटक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बेरक काँटक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बेरक काँटक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बेरक काँटक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११३२ — बाँसक फाँक — सोर संग भेद खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: संग भेद खुलै · शेर: ६

मोन खोजि बाँस मे साँच फेर खुलै / मोन नापि बाँस सोर संग भेद खुलै

कान देखि फाँक पर भेद साफ सुनै / लोक राखि फाँक भोर संग भेद खुलै

लोक राखि बाँस मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि फाँक मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि फाँक संग मान फेर चलै / हाथ खोजि बाँस नोर संग भेद खुलै

मोन नापि बाँस मे मूल फेर जगै / मोन सोचि बाँस मे छाप फेर जगै

लोक नापि फाँक मे छाप फेर बचै / मोन नापि फाँक छोर संग भेद खुलै

मोन सोचि बाँस मे भेद साफ जनै / लोक राखि फाँक मे रूप थिर रहै

लोक खोजि फाँक संग डोर फेर तनै / लोक खोजि बाँस जोर संग भेद खुलै

मोन राखि बाँस मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि बाँस मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि फाँक मे काज फेर जँचै / मोन सोचि फाँक डोर संग भेद खुलै

मोन नापि बाँस मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि फाँक मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि फाँक पर मान फेर जगै / कान सोचि बाँस कोर संग भेद खुलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११३२ — संगीतमय रूप

भाव: बाँसक फाँकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४१–४५ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, बाँसुरी, हलुक ढोलक। बाँसक फाँकक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बाँसक फाँकक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बाँसक फाँकक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बाँसक फाँकक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बाँसक फाँकक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बाँसक फाँकक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बाँसक फाँकक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११३३ — पोखरिक घाट — ताल बीच सोर पहुँचै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: बीच सोर पहुँचै · शेर: ६

मोन खोजि घाट मे साँच फेर खुलै / मोन नापि घाट ताल बीच सोर पहुँचै
कान देखि ढाल पर भेद साफ सुनै / लोक राखि ढाल चाल बीच सोर पहुँचै
लोक राखि घाट मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि ढाल मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि ढाल संग मान फेर चलै / हाथ खोजि घाट जाल बीच सोर पहुँचै
मोन नापि घाट मे मूल फेर जगै / मोन सोचि घाट मे छाप फेर जगै
लोक नापि ढाल मे छाप फेर बचै / मोन नापि ढाल काल बीच सोर पहुँचै
मोन सोचि घाट मे भेद साफ जनै / लोक राखि ढाल मे रूप थिर रहै
लोक खोजि ढाल संग डोर फेर तनै / लोक खोजि घाट ढाल बीच सोर पहुँचै
मोन राखि घाट मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि घाट मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि ढाल मे काज फेर जँचै / मोन सोचि ढाल लाल बीच सोर पहुँचै
मोन नापि घाट मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि ढाल मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि ढाल पर मान फेर जगै / कान सोचि घाट बाल बीच सोर पहुँचै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११३३ — संगीतमय रूप

भाव: पोखरिक घाटक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

गति (BPM): ४८–५२ · ताल: विलम्बित एकताल १२।

वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, हलुक मँजीरा। पोखरिक घाटक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।

मतला: पोखरिक घाटक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।

२म शेर: पोखरिक घाटक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।

३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद पोखरिक घाटक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।

४म शेर: पोखरिक घाटक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।

५म शेर: पोखरिक घाटक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।

६म शेर: पोखरिक घाटक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११३४ — गाछक खोह — आस कात मान जगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस) · रदीफ: कात मान जगै · शेर: ६

मोन खोजि खोह मे साँच फेर खुलै / मोन नापि खोह आस कात मान जगै
कान देखि मूल पर भेद साफ सुनै / लोक राखि मूल श्वास कात मान जगै
लोक राखि खोह मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि मूल मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि मूल संग मान फेर चलै / हाथ खोजि खोह त्रास कात मान जगै
मोन नापि खोह मे मूल फेर जगै / मोन सोचि खोह मे छाप फेर जगै
लोक नापि मूल मे छाप फेर बचै / मोन नापि मूल प्यास कात मान जगै
मोन सोचि खोह मे भेद साफ जनै / लोक राखि मूल मे रूप थिर रहै
लोक खोजि मूल संग डोर फेर तनै / लोक खोजि खोह वास कात मान जगै
मोन राखि खोह मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि खोह मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि मूल मे काज फेर जँचै / मोन सोचि मूल पास कात मान जगै
मोन नापि खोह मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि मूल मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि मूल पर मान फेर जगै / कान सोचि खोह साँस कात मान जगै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११३४ — संगीतमय रूप

भाव: गाछक खोहक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५५–५९ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, हलुक तबला। गाछक खोहक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: गाछक खोहक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: गाछक खोहक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद गाछक खोहक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: गाछक खोहक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: गाछक खोहक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: गाछक खोहक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११३५ — पीपलक जड़ि — सार मे राह चलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार) · रदीफ: मे राह चलै · शेर: ६

मोन खोजि छाह मे साँच फेर खुलै / मोन नापि छाह सार मे राह चलै
कान देखि जड़ पर भेद साफ सुनै / लोक राखि जड़ धार मे राह चलै
लोक राखि छाह मे गप फेर बनै / मोन खोजि जड़ मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि जड़ संग मान फेर चलै / हाथ खोजि छाह भार मे राह चलै
मोन नापि छाह मे मूल फेर जगै / मोन सोचि छाह मे पग फेर जगै
लोक नापि जड़ मे छाप फेर बचै / मोन नापि जड़ पार मे राह चलै
मोन सोचि छाह मे भेद साफ जनै / लोक राखि जड़ मे रूप थिर रहै
लोक खोजि जड़ संग डोर फेर तनै / लोक खोजि छाह हार मे राह चलै
मोन राखि छाह मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि छाह मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि जड़ मे काज फेर जँचै / मोन सोचि जड़ तार मे राह चलै
मोन नापि छाह मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि जड़ मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि जड़ पर मान फेर जगै / कान सोचि छाह मार मे राह चलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११३५ — संगीतमय रूप

भाव: पीपलक जड़िक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४३–४७ · ताल: चौताल १२।
वाद्य-विन्यास: इसराज, हारमोनियम, विरल तबला। पीपलक जड़िक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: पीपलक जड़िक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पीपलक जड़िक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद पीपलक जड़िक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: पीपलक जड़िक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: पीपलक जड़िक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: पीपलक जड़िक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११३६ — चकईक पाँख — मान पर स्वर फूटै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: पर स्वर फूटै · शेर: ६

मोन खोजि पाँख मे साँच फेर खुलै / मोन नापि पाँख मान पर स्वर फूटै
कान देखि नीड़ पर भेद साफ सुनै / लोक राखि नीड़ ज्ञान पर स्वर फूटै
लोक राखि पाँख मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि नीड़ मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि नीड़ संग मान फेर चलै / हाथ खोजि पाँख ध्यान पर स्वर फूटै
मोन नापि पाँख मे मूल फेर जगै / मोन सोचि पाँख मे छाप फेर जगै
लोक नापि नीड़ मे छाप फेर बचै / मोन नापि नीड़ प्राण पर स्वर फूटै
मोन सोचि पाँख मे भेद साफ जनै / लोक राखि नीड़ मे रूप थिर रहै
लोक खोजि नीड़ संग डोर फेर तनै / लोक खोजि पाँख गान पर स्वर फूटै
मोन राखि पाँख मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि पाँख मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि नीड़ मे काज फेर जँचै / मोन सोचि नीड़ दान पर स्वर फूटै
मोन नापि पाँख मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि नीड़ मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि नीड़ पर मान फेर जगै / कान सोचि पाँख शान पर स्वर फूटै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११३६ — संगीतमय रूप

भाव: चकईक पाँखक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५०–५४ · ताल: आड़ा चौताल १४।
वाद्य-विन्यास: सुरमंडल, इसराज, विरल तबला। चकईक पाँखक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: चकईक पाँखक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: चकईक पाँखक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद चकईक पाँखक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: चकईक पाँखक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: चकईक पाँखक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: चकईक पाँखक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११३७ — कागक ठोर — राह संग प्रश्न उठै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: संग प्रश्न उठै · शेर: ६

मोन खोजि काग मे साँच फेर खुलै / मोन नापि काग राह संग प्रश्न उठै
कान देखि ठोर पर भेद साफ सुनै / लोक राखि ठोर चाह संग प्रश्न उठै
लोक राखि काग मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि ठोर मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि ठोर संग मान फेर चलै / हाथ खोजि काग थाह संग प्रश्न उठै
मोन नापि काग मे मूल फेर जगै / मोन सोचि काग मे छाप फेर जगै
लोक नापि ठोर मे छाप फेर बचै / मोन नापि ठोर आह संग प्रश्न उठै
मोन सोचि काग मे भेद साफ जनै / लोक राखि ठोर मे रूप थिर रहै
लोक खोजि ठोर संग डोर फेर तनै / लोक खोजि काग छाह संग प्रश्न उठै
मोन राखि काग मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि काग मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि ठोर मे काज फेर जँचै / मोन सोचि ठोर दाह संग प्रश्न उठै
मोन नापि काग मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि ठोर मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि ठोर पर मान फेर जगै / कान सोचि काग वाह संग प्रश्न उठै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११३७ — संगीतमय रूप

भाव: कागक ठोरक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३८–४२ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, बाँसुरी, विरल ढोलक। कागक ठोरक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कागक ठोरक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कागक ठोरक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कागक ठोरक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कागक ठोरक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कागक ठोरक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कागक ठोरक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११३८ — मेघक बूँद — रंग बीच रूप बसै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग) · रदीफ: बीच रूप बसै · शेर: ६

मोन खोजि मेघ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि मेघ रंग बीच रूप बसै
कान देखि बूँद पर भेद साफ सुनै / लोक राखि बूँद संग बीच रूप बसै
लोक राखि मेघ मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि बूँद मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि बूँद संग नेह फेर चलै / हाथ खोजि मेघ ढंग बीच रूप बसै
मोन नापि मेघ मे मूल फेर जगै / मोन सोचि मेघ मे लेख फेर जगै
लोक नापि बूँद मे छाप फेर बचै / मोन नापि बूँद जंग बीच रूप बसै
मोन सोचि मेघ मे भेद साफ जनै / लोक राखि बूँद मे रूप थिर रहै
लोक खोजि बूँद संग राह फेर तनै / लोक खोजि मेघ भंग बीच रूप बसै
मोन राखि मेघ मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि मेघ मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि बूँद मे काज फेर जँचै / मोन सोचि बूँद तंग बीच रूप बसै
मोन नापि मेघ मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि बूँद मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि बूँद पर मान फेर जगै / कान सोचि मेघ अंग बीच रूप बसै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११३८ — संगीतमय रूप

भाव: मेघक बूँदक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मृदु पखावज, तानपुरा। मेघक बूँदक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: मेघक बूँदक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: मेघक बूँदक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद मेघक बूँदक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: मेघक बूँदक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: मेघक बूँदक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: मेघक बूँदक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११३९ — बिजुरीक रेख — गीत कात रंग मुड़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: कात रंग मुड़ै · शेर: ६

मोन खोजि रेख मे साँच फेर खुलै / मोन नापि रेख गीत कात रंग मुड़ै
कान देखि कौंध पर भेद साफ सुनै / लोक राखि कौंध मीत कात रंग मुड़ै
लोक राखि रेख मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि कौंध मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि कौंध संग मान फेर चलै / हाथ खोजि रेख प्रीत कात रंग मुड़ै
मोन नापि रेख मे मूल फेर जगै / मोन सोचि रेख मे छाप फेर जगै
लोक नापि कौंध मे छाप फेर बचै / मोन नापि कौंध रीत कात रंग मुड़ै
मोन सोचि रेख मे भेद साफ जनै / लोक राखि कौंध मे रूप थिर रहै
लोक खोजि कौंध संग डोर फेर तनै / लोक खोजि रेख जीत कात रंग मुड़ै
मोन राखि रेख मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि रेख मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि कौंध मे काज फेर जँचै / मोन सोचि कौंध भीत कात रंग मुड़ै
मोन नापि रेख मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि कौंध मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि कौंध पर मान फेर जगै / कान सोचि रेख शीत कात रंग मुड़ै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११३९ — संगीतमय रूप

भाव: बिजुरीक रेखक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५२–५६ · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। बिजुरीक रेखक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बिजुरीक रेखक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बिजुरीक रेखक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बिजुरीक रेखक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बिजुरीक रेखक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बिजुरीक रेखक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बिजुरीक रेखक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११४० — पूसक धुंध — बात मे धुन बदलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात) · रदीफ: मे धुन बदलै · शेर: ६

मोन खोजि धुंध मे साँच फेर खुलै / मोन नापि धुंध बात मे धुन बदलै
कान देखि घाम पर भेद साफ सुनै / लोक राखि घाम रात मे धुन बदलै
लोक राखि धुंध मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि घाम मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि घाम संग मान फेर चलै / हाथ खोजि धुंध पात मे धुन बदलै
मोन नापि धुंध मे मूल फेर जगै / मोन सोचि धुंध मे छाप फेर जगै
लोक नापि घाम मे छाप फेर बचै / मोन नापि घाम घात मे धुन बदलै
मोन सोचि धुंध मे भेद साफ जनै / लोक राखि घाम मे रूप थिर रहै
लोक खोजि घाम संग डोर फेर तनै / लोक खोजि धुंध भात मे धुन बदलै
मोन राखि धुंध मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि धुंध मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि घाम मे काज फेर जँचै / मोन सोचि घाम तात मे धुन बदलै
मोन नापि धुंध मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि घाम मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि घाम पर मान फेर जगै / कान सोचि धुंध जात मे धुन बदलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११४० — संगीतमय रूप

भाव: पूसक धुंधक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, एकतारा, मृदु पखावज। पूसक धुंधक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: पूसक धुंधक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पूसक धुंधक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद पूसक धुंधक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: पूसक धुंधक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: पूसक धुंधक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: पूसक धुंधक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११४१ — जेठक धूल — सोर पर साँस बढ़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: पर साँस बढ़ै · शेर: ६

मोन खोजि धूल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि धूल सोर पर साँस बढ़ै
कान देखि लू पर भेद साफ सुनै / लोक राखि लू भोर पर साँस बढ़ै
लोक राखि धूल मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि लू मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि लू संग मान फेर चलै / हाथ खोजि धूल नोर पर साँस बढ़ै
मोन नापि धूल मे मूल फेर जगै / मोन सोचि धूल मे छाप फेर जगै
लोक नापि लू मे छाप फेर बचै / मोन नापि लू छोर पर साँस बढ़ै
मोन सोचि धूल मे भेद साफ जनै / लोक राखि लू मे रूप थिर रहै
लोक खोजि लू संग डोर फेर तनै / लोक खोजि धूल जोर पर साँस बढ़ै
मोन राखि धूल मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि धूल मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि लू मे काज फेर जँचै / मोन सोचि लू डोर पर साँस बढ़ै
मोन नापि धूल मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि लू मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि लू पर मान फेर जगै / कान सोचि धूल कोर पर साँस बढ़ै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११४१ — संगीतमय रूप

भाव: जेठक धूलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४७–५१ · ताल: दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, सारंगी, मँजीरा। जेठक धूलक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: जेठक धूलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: जेठक धूलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद जेठक धूलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: जेठक धूलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: जेठक धूलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: जेठक धूलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११४२ — सावनक टपक — ताल संग काल बचै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: संग काल बचै · शेर: ६

मोन खोजि टप मे साँच फेर खुलै / मोन नापि टप ताल संग काल बचै
कान देखि नीर पर भेद साफ सुनै / लोक राखि नीर चाल संग काल बचै
लोक राखि टप मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि नीर मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि नीर संग मान फेर चलै / हाथ खोजि टप जाल संग काल बचै
मोन नापि टप मे मूल फेर जगै / मोन सोचि टप मे छाप फेर जगै
लोक नापि नीर मे छाप फेर बचै / मोन नापि नीर काल संग काल बचै
मोन सोचि टप मे भेद साफ जनै / लोक राखि नीर मे रूप थिर रहै
लोक खोजि नीर संग डोर फेर तनै / लोक खोजि टप ढाल संग काल बचै
मोन राखि टप मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि टप मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि नीर मे काज फेर जँचै / मोन सोचि नीर लाल संग काल बचै
मोन नापि टप मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि नीर मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि नीर पर मान फेर जगै / कान सोचि टप बाल संग काल बचै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११४२ — संगीतमय रूप

भाव: सावनक टपकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५४–५८ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, बाँसुरी, हलुक ढोलक। सावनक टपकक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: सावनक टपकक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सावनक टपकक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद सावनक टपकक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: सावनक टपकक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: सावनक टपकक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: सावनक टपकक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११४३ — भादोक पाँक — आस बीच बीज चलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस) · रदीफ: बीच बीज चलै · शेर: ६

मोन खोजि पाँक मे साँच फेर खुलै / मोन नापि पाँक आस बीच बीज चलै
कान देखि चिन्ह पर भेद साफ सुनै / लोक राखि चिन्ह श्वास बीच बीज चलै
लोक राखि पाँक मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि चिन्ह मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि चिन्ह संग मान फेर चलै / हाथ खोजि पाँक त्रास बीच बीज चलै
मोन नापि पाँक मे मूल फेर जगै / मोन सोचि पाँक मे छाप फेर जगै
लोक नापि चिन्ह मे छाप फेर बचै / मोन नापि चिन्ह प्यास बीच बीज चलै
मोन सोचि पाँक मे भेद साफ जनै / लोक राखि चिन्ह मे रूप थिर रहै
लोक खोजि चिन्ह संग डोर फेर तनै / लोक खोजि पाँक वास बीच बीज चलै
मोन राखि पाँक मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि पाँक मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि चिन्ह मे काज फेर जँचै / मोन सोचि चिन्ह पास बीच बीज चलै
मोन नापि पाँक मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि चिन्ह मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि चिन्ह पर मान फेर जगै / कान सोचि पाँक साँस बीच बीज चलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११४३ — संगीतमय रूप

भाव: भादोक पाँकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, तानपुरा, हलुक मँजीरा। भादोक पाँकक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: भादोक पाँकक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: भादोक पाँकक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद भादोक पाँकक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: भादोक पाँकक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: भादोक पाँकक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: भादोक पाँकक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११४४ — अगहनक बाली — सार कात पात पहुँचै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार) · रदीफ: कात पात पहुँचै · शेर: ६

मोन खोजि धान मे साँच फेर खुलै / मोन नापि धान सार कात पात पहुँचै
कान देखि खेत पर भेद साफ सुनै / लोक राखि खेत धार कात पात पहुँचै
लोक राखि धान मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि खेत मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि खेत संग मान फेर चलै / हाथ खोजि धान भार कात पात पहुँचै
मोन नापि धान मे मूल फेर जगै / मोन सोचि धान मे छाप फेर जगै
लोक नापि खेत मे छाप फेर बचै / मोन नापि खेत पार कात पात पहुँचै
मोन सोचि धान मे भेद साफ जनै / लोक राखि खेत मे रूप थिर रहै
लोक खोजि खेत संग डोर फेर तनै / लोक खोजि धान हार कात पात पहुँचै
मोन राखि धान मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि धान मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि खेत मे काज फेर जँचै / मोन सोचि खेत तार कात पात पहुँचै
मोन नापि धान मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि खेत मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि खेत पर मान फेर जगै / कान सोचि धान मार कात पात पहुँचै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११४४ — संगीतमय रूप

भाव: अगहनक बालीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४९–५३ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, हलुक तबला। अगहनक बालीक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: अगहनक बालीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: अगहनक बालीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद अगहनक बालीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: अगहनक बालीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: अगहनक बालीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: अगहनक बालीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११४५ — फागुनक अबीर — मान मे भोर जुड़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: मे भोर जुड़ै · शेर: ६

मोन खोजि रंग मे साँच फेर खुलै / मोन नापि रंग मान मे भोर जुड़ै
कान देखि गाल पर भेद साफ सुनै / लोक राखि गाल ज्ञान मे भोर जुड़ै
लोक राखि रंग मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि गाल मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि गाल संग मान फेर चलै / हाथ खोजि रंग ध्यान मे भोर जुड़ै
मोन नापि रंग मे मूल फेर जगै / मोन सोचि रंग मे छाप फेर जगै
लोक नापि गाल मे छाप फेर बचै / मोन नापि गाल प्राण मे भोर जुड़ै
मोन सोचि रंग मे भेद साफ जनै / लोक राखि गाल मे रूप थिर रहै
लोक खोजि गाल संग डोर फेर तनै / लोक खोजि रंग गान मे भोर जुड़ै
मोन राखि रंग मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि रंग मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि गाल मे काज फेर जँचै / मोन सोचि गाल दान मे भोर जुड़ै
मोन नापि रंग मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि गाल मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि गाल पर मान फेर जगै / कान सोचि रंग शान मे भोर जुड़ै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११४५ — संगीतमय रूप

भाव: फागुनक अबीरक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

गति (BPM): ३७–४१ · ताल: चौताल १२।

वाद्य-विन्यास: इसराज, हारमोनियम, विरल तबला। फागुनक अबीरक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।

मतला: फागुनक अबीरक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।

२म शेर: फागुनक अबीरक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।

३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद फागुनक अबीरक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।

४म शेर: फागुनक अबीरक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।

५म शेर: फागुनक अबीरक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।

६म शेर: फागुनक अबीरक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११४६ — चैतिक पछिया — राह पर थाह रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: पर थाह रहै · शेर: ६

मोन खोजि झोंक मे साँच फेर खुलै / मोन नापि झोंक राह पर थाह रहै
कान देखि पात पर भेद साफ सुनै / लोक राखि पात चाह पर थाह रहै
लोक राखि झोंक मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि पात मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि पात संग मान फेर चलै / हाथ खोजि झोंक थाह पर थाह रहै
मोन नापि झोंक मे मूल फेर जगै / मोन सोचि झोंक मे छाप फेर जगै
लोक नापि पात मे छाप फेर बचै / मोन नापि पात आह पर थाह रहै
मोन सोचि झोंक मे भेद साफ जनै / लोक राखि पात मे रूप थिर रहै
लोक खोजि पात संग डोर फेर तनै / लोक खोजि झोंक छाह पर थाह रहै
मोन राखि झोंक मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि झोंक मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि पात मे काज फेर जँचै / मोन सोचि पात दाह पर थाह रहै
मोन नापि झोंक मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि पात मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि पात पर मान फेर जगै / कान सोचि झोंक वाह पर थाह रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११४६ — संगीतमय रूप

भाव: चैतिक पछियाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४४–४८ · ताल: आड़ा चौताल १४।
वाद्य-विन्यास: सुरमंडल, इसराज, विरल तबला। चैतिक पछियाक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: चैतिक पछियाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: चैतिक पछियाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद चैतिक पछियाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: चैतिक पछियाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: चैतिक पछियाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: चैतिक पछियाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११४७ — कार्तिकक दीप — रंग संग छाह ठहरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग) · रदीफ: संग छाह ठहरै · शेर: ६

मोन खोजि दीप मे साँच फेर खुलै / मोन नापि दीप रंग संग छाह ठहरै

कान देखि तेल पर भेद साफ सुनै / लोक राखि तेल संग संग छाह ठहरै

लोक राखि दीप मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि तेल मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि तेल संग मान फेर चलै / हाथ खोजि दीप ढंग संग छाह ठहरै

मोन नापि दीप मे मूल फेर जगै / मोन सोचि दीप मे छाप फेर जगै

लोक नापि तेल मे छाप फेर बचै / मोन नापि तेल जंग संग छाह ठहरै

मोन सोचि दीप मे भेद साफ जनै / लोक राखि तेल मे रूप थिर रहै

लोक खोजि तेल संग डोर फेर तनै / लोक खोजि दीप भंग संग छाह ठहरै

मोन राखि दीप मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि दीप मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि तेल मे काज फेर जँचै / मोन सोचि तेल तंग संग छाह ठहरै

मोन नापि दीप मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि तेल मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि तेल पर मान फेर जगै / कान सोचि दीप अंग संग छाह ठहरै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११४७ — संगीतमय रूप

भाव: कार्तिकक दीपक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, बाँसुरी, विरल ढोलक। कार्तिकक दीपक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कार्तिकक दीपक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कार्तिकक दीपक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कार्तिकक दीपक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कार्तिकक दीपक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कार्तिकक दीपक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कार्तिकक दीपक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११४८ — माघक धूप — गीत बीच नाद उड़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: बीच नाद उड़ै · शेर: ६

मोन खोजि धूप मे साँच फेर खुलै / मोन नापि धूप गीत बीच नाद उड़ै
कान देखि देह पर भेद साफ सुनै / लोक राखि देह मीत बीच नाद उड़ै
लोक राखि धूप मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि देह मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि देह संग मान फेर चलै / हाथ खोजि धूप प्रीत बीच नाद उड़ै
मोन नापि धूप मे मूल फेर जगै / मोन सोचि धूप मे छाप फेर जगै
लोक नापि देह मे छाप फेर बचै / मोन नापि देह रीत बीच नाद उड़ै
मोन सोचि धूप मे भेद साफ जनै / लोक राखि देह मे रूप थिर रहै
लोक खोजि देह संग डोर फेर तनै / लोक खोजि धूप जीत बीच नाद उड़ै
मोन राखि धूप मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि धूप मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि देह मे काज फेर जँचै / मोन सोचि देह भीत बीच नाद उड़ै
मोन नापि धूप मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि देह मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि देह पर मान फेर जगै / कान सोचि धूप शीत बीच नाद उड़ै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११४८ — संगीतमय रूप

भाव: माघक धूपक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, मृदु पखावज, तानपुरा। माघक धूपक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: माघक धूपक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: माघक धूपक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद माघक धूपक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: माघक धूपक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: माघक धूपक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: माघक धूपक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११४९ — नदीक बालू — बात कात गंध पलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात) · रदीफ: कात गंध पलै · शेर: ६

मोन खोजि धार मे साँच फेर खुलै / मोन नापि धार बात कात गंध पलै

कान देखि कूल पर भेद साफ सुनै / लोक राखि कूल रात कात गंध पलै

लोक राखि धार मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि कूल मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि कूल संग मान फेर चलै / हाथ खोजि धार पात कात गंध पलै

मोन नापि धार मे मूल फेर जगै / मोन सोचि धार मे छाप फेर जगै

लोक नापि कूल मे छाप फेर बचै / मोन नापि कूल घात कात गंध पलै

मोन सोचि धार मे भेद साफ जनै / लोक राखि कूल मे रूप थिर रहै

लोक खोजि कूल संग डोर फेर तनै / लोक खोजि धार भात कात गंध पलै

मोन राखि धार मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि धार मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि कूल मे काज फेर जँचै / मोन सोचि कूल तात कात गंध पलै

मोन नापि धार मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि कूल मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि कूल पर मान फेर जगै / कान सोचि धार जात कात गंध पलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११४९ — संगीतमय रूप

भाव: नदीक बालूक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, एकतारा, विरल मँजीरा। नदीक बालूक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: नदीक बालूक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: नदीक बालूक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद नदीक बालूक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: नदीक बालूक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: नदीक बालूक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: नदीक बालूक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११५० — शंखक सोर — सोर मे फूल उघड़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: मे फूल उघड़ै · शेर: ६

मोन खोजि शंख मे साँच फेर खुलै / मोन नापि शंख सोर मे फूल उघड़ै

कान देखि नाद पर भेद साफ सुनै / लोक राखि नाद भोर मे फूल उघड़ै

लोक राखि शंख मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि नाद मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि नाद संग मान फेर चलै / हाथ खोजि शंख नोर मे फूल उघड़ै

मोन नापि शंख मे मूल फेर जगै / मोन सोचि शंख मे छाप फेर जगै

लोक नापि नाद मे छाप फेर बचै / मोन नापि नाद छोर मे फूल उघड़ै

मोन सोचि शंख मे भेद साफ जनै / लोक राखि नाद मे रूप थिर रहै

लोक खोजि नाद संग डोर फेर तनै / लोक खोजि शंख जोर मे फूल उघड़ै

मोन राखि शंख मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि शंख मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि नाद मे काज फेर जँचै / मोन सोचि नाद डोर मे फूल उघड़ै

मोन नापि शंख मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि नाद मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि नाद पर मान फेर जगै / कान सोचि शंख कोर मे फूल उघड़ै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११५० — संगीतमय रूप

भाव: शंखक सोरक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५३–५७ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, एकतारा, मृदु पखावज। शंखक सोरक दृश्यकेँ केवल ध्वनि-अनुकरणमे नहि बाँधू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: शंखक सोरक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: शंखक सोरक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद शंखक सोरक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: शंखक सोरक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: शंखक सोरक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: शंखक सोरक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११५१ — बेलपत्रक डारि — सार पर नेह जगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार) · रदीफ: पर नेह जगै · शेर: ६

मोन खोजि पत्र मे साँच फेर खुलै / मोन नापि पत्र सार पर नेह जगै
कान देखि डार पर भेद साफ सुनै / लोक राखि डार धार पर नेह जगै
लोक राखि पत्र मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि डार मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि डार संग मान फेर चलै / हाथ खोजि पत्र भार पर नेह जगै
मोन नापि पत्र मे मूल फेर जगै / मोन सोचि पत्र मे छाप फेर जगै
लोक नापि डार मे छाप फेर बचै / मोन नापि डार पार पर नेह जगै
मोन सोचि पत्र मे भेद साफ जनै / लोक राखि डार मे रूप थिर रहै
लोक खोजि डार संग डोर फेर तनै / लोक खोजि पत्र हार पर नेह जगै
मोन राखि पत्र मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि पत्र मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि डार मे काज फेर जँचै / मोन सोचि डार तार पर नेह जगै
मोन नापि पत्र मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि डार मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि डार पर मान फेर जगै / कान सोचि पत्र मार पर नेह जगै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११५१ — संगीतमय रूप

भाव: बेलपत्रक डारिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: विलम्बित झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: रबाब, तानपुरा, विरल तबला। बेलपत्रक डारिक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: बेलपत्रक डारिक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: बेलपत्रक डारिक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद बेलपत्रक डारिक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: बेलपत्रक डारिक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: बेलपत्रक डारिक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: बेलपत्रक डारिक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११५२ — खेसारीक दाना — मान संग राह खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: संग राह खुलै · शेर: ६

मोन खोजि खेसार मे साँच फेर खुलै / मोन नापि खेसार मान संग राह खुलै
कान देखि दाना पर भेद साफ सुनै / लोक राखि दाना ज्ञान संग राह खुलै
लोक राखि खेसार मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि दाना मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि दाना संग मान फेर चलै / हाथ खोजि खेसार ध्यान संग राह खुलै
मोन नापि खेसार मे मूल फेर जगै / मोन सोचि खेसार मे छाप फेर जगै
लोक नापि दाना मे छाप फेर बचै / मोन नापि दाना प्राण संग राह खुलै
मोन सोचि खेसार मे भेद साफ जनै / लोक राखि दाना मे रूप थिर रहै
लोक खोजि दाना संग डोर फेर तनै / लोक खोजि खेसार गान संग राह खुलै
मोन राखि खेसार मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि खेसार मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि दाना मे काज फेर जँचै / मोन सोचि दाना दान संग राह खुलै
मोन नापि खेसार मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि दाना मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि दाना पर मान फेर जगै / कान सोचि खेसार शान संग राह खुलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११५२ — संगीतमय रूप

भाव: खेसारीक दानाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: मन्द रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, हारमोनियम, विरल तबला। खेसारीक दानाक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: खेसारीक दानाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: खेसारीक दानाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खेसारीक दानाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: खेसारीक दानाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: खेसारीक दानाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: खेसारीक दानाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११५३ — कुर्थीक दालि — राह बीच मान चलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: बीच मान चलै · शेर: ६

मोन खोजि कुर्थ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि कुर्थ राह बीच मान चलै
कान देखि दाल पर भेद साफ सुनै / लोक राखि दाल चाह बीच मान चलै
लोक राखि कुर्थ मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि दाल मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि दाल संग मान फेर चलै / हाथ खोजि कुर्थ थाह बीच मान चलै
मोन नापि कुर्थ मे मूल फेर जगै / मोन सोचि कुर्थ मे छाप फेर जगै
लोक नापि दाल मे छाप फेर बचै / मोन नापि दाल आह बीच मान चलै
मोन सोचि कुर्थ मे भेद साफ जनै / लोक राखि दाल मे रूप थिर रहै
लोक खोजि दाल संग डोर फेर तनै / लोक खोजि कुर्थ छाह बीच मान चलै
मोन राखि कुर्थ मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि कुर्थ मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि दाल मे काज फेर जँचै / मोन सोचि दाल दाह बीच मान चलै
मोन नापि कुर्थ मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि दाल मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि दाल पर मान फेर जगै / कान सोचि कुर्थ वाह बीच मान चलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११५३ — संगीतमय रूप

भाव: कुर्थीक दालिक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५४–५८ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, हलुक तबला। कुर्थीक दालिक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कुर्थीक दालिक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कुर्थीक दालिक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कुर्थीक दालिक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कुर्थीक दालिक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कुर्थीक दालिक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कुर्थीक दालिक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११५४ — जाँतक पाट — रंग कात रूप रहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग) · रदीफ: कात रूप रहै · शेर: ६

मोन खोजि जाँत मे साँच फेर खुलै / मोन नापि जाँत रंग कात रूप रहै
कान देखि चक पर भेद साफ सुनै / लोक राखि चक संग कात रूप रहै
लोक राखि जाँत मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि चक मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि चक संग मान फेर चलै / हाथ खोजि जाँत ढंग कात रूप रहै
मोन नापि जाँत मे मूल फेर जगै / मोन सोचि जाँत मे छाप फेर जगै
लोक नापि चक मे छाप फेर बचै / मोन नापि चक जंग कात रूप रहै
मोन सोचि जाँत मे भेद साफ जनै / लोक राखि चक मे रूप थिर रहै
लोक खोजि चक संग डोर फेर तनै / लोक खोजि जाँत भंग कात रूप रहै
मोन राखि जाँत मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि जाँत मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि चक मे काज फेर जँचै / मोन सोचि चक तंग कात रूप रहै
मोन नापि जाँत मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि चक मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि चक पर मान फेर जगै / कान सोचि जाँत अंग कात रूप रहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११५४ — संगीतमय रूप

भाव: जाँतक पाटक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, सुरमंडल, हलुक मँजीरा। जाँतक पाटक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: जाँतक पाटक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: जाँतक पाटक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद जाँतक पाटक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: जाँतक पाटक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: जाँतक पाटक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: जाँतक पाटक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११५५ — सिलौटक लीक — गीत मे गप बनै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: मे गप बनै · शेर: ६

मोन खोजि सिल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि सिल गीत मे गप बनै
कान देखि लीक पर भेद साफ सुनै / लोक राखि लीक मीत मे गप बनै
लोक राखि सिल मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि लीक मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि लीक संग मान फेर चलै / हाथ खोजि सिल प्रीत मे गप बनै
मोन नापि सिल मे मूल फेर जगै / मोन सोचि सिल मे छाप फेर जगै
लोक नापि लीक मे छाप फेर बचै / मोन नापि लीक रीत मे गप बनै
मोन सोचि सिल मे भेद साफ जनै / लोक राखि लीक मे रूप थिर रहै
लोक खोजि लीक संग डोर फेर तनै / लोक खोजि सिल जीत मे गप बनै
मोन राखि सिल मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि सिल मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि लीक मे काज फेर जँचै / मोन सोचि लीक भीत मे गप बनै
मोन नापि सिल मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि लीक मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि लीक पर मान फेर जगै / कान सोचि सिल शीत मे गप बनै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११५५ — संगीतमय रूप

भाव: सिलौटक लीकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: इसराज, बाँसुरी, हलुक ढोलक। सिलौटक लीकक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: सिलौटक लीकक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सिलौटक लीकक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद सिलौटक लीकक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: सिलौटक लीकक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: सिलौटक लीकक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: सिलौटक लीकक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११५६ — चूल्हिक धूर — बात पर बीज उगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात) · रदीफ: पर बीज उगै · शेर: ६

मोन खोजि चूल्ह मे साँच फेर खुलै / मोन नापि चूल्ह बात पर बीज उगै
कान देखि धूर पर भेद साफ सुनै / लोक राखि धूर रात पर बीज उगै
लोक राखि चूल्ह मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि धूर मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि धूर संग मान फेर चलै / हाथ खोजि चूल्ह पात पर बीज उगै
मोन नापि चूल्ह मे मूल फेर जगै / मोन सोचि चूल्ह मे छाप फेर जगै
लोक नापि धूर मे छाप फेर बचै / मोन नापि धूर घात पर बीज उगै
मोन सोचि चूल्ह मे भेद साफ जनै / लोक राखि धूर मे रूप थिर रहै
लोक खोजि धूर संग डोर फेर तनै / लोक खोजि चूल्ह भात पर बीज उगै
मोन राखि चूल्ह मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि चूल्ह मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि धूर मे काज फेर जँचै / मोन सोचि धूर तात पर बीज उगै
मोन नापि चूल्ह मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि धूर मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि धूर पर मान फेर जगै / कान सोचि चूल्ह जात पर बीज उगै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११५६ — संगीतमय रूप

भाव: चूल्हिक धूरक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: आड़ा चौताल १४।
वाद्य-विन्यास: सुरमंडल, इसराज, मँजीरा। चूल्हिक धूरक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: चूल्हिक धूरक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: चूल्हिक धूरक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद चूल्हिक धूरक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: चूल्हिक धूरक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: चूल्हिक धूरक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: चूल्हिक धूरक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११५७ — कूपक घेरा — सोर संग काल बहै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: संग काल बहै · शेर: ६

मोन खोजि कूप मे साँच फेर खुलै / मोन नापि कूप सोर संग काल बहै
कान देखि घेर पर भेद साफ सुनै / लोक राखि घेर भोर संग काल बहै
लोक राखि कूप मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि घेर मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि घेर संग मान फेर चलै / हाथ खोजि कूप नोर संग काल बहै
मोन नापि कूप मे मूल फेर जगै / मोन सोचि कूप मे छाप फेर जगै
लोक नापि घेर मे छाप फेर बचै / मोन नापि घेर छोर संग काल बहै
मोन सोचि कूप मे भेद साफ जनै / लोक राखि घेर मे रूप थिर रहै
लोक खोजि घेर संग डोर फेर तनै / लोक खोजि कूप जोर संग काल बहै
मोन राखि कूप मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि कूप मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि घेर मे काज फेर जँचै / मोन सोचि घेर डोर संग काल बहै
मोन नापि कूप मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि घेर मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि घेर पर मान फेर जगै / कान सोचि कूप कोर संग काल बहै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११५७ — संगीतमय रूप

भाव: कूपक घेराक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: मृदु दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: इसराज, एकतारा, मृदु पखावज। कूपक घेराक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कूपक घेराक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कूपक घेराक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कूपक घेराक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कूपक घेराक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कूपक घेराक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कूपक घेराक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११५८ — नाँदक जल — ताल बीच छाप बचै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: बीच छाप बचै · शेर: ६

मोन खोजि नाँद मे साँच फेर खुलै / मोन नापि नाँद ताल बीच छाप बचै
कान देखि जल पर भेद साफ सुनै / लोक राखि जल चाल बीच छाप बचै
लोक राखि नाँद मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि जल मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि जल संग मान फेर चलै / हाथ खोजि नाँद जाल बीच छाप बचै
मोन नापि नाँद मे मूल फेर जगै / मोन सोचि नाँद मे छाप फेर जगै
लोक नापि जल मे छाप फेर बचै / मोन नापि जल काल बीच छाप बचै
मोन सोचि नाँद मे भेद साफ जनै / लोक राखि जल मे रूप थिर रहै
लोक खोजि जल संग डोर फेर तनै / लोक खोजि नाँद ढाल बीच छाप बचै
मोन राखि नाँद मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि नाँद मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि जल मे काज फेर जँचै / मोन सोचि जल लाल बीच छाप बचै
मोन नापि नाँद मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि जल मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि जल पर मान फेर जगै / कान सोचि नाँद बाल बीच छाप बचै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११५८ — संगीतमय रूप

भाव: नाँदक जलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: चौताल १२।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, रबाब, विरल मँजीरा। नाँदक जलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: नाँदक जलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: नाँदक जलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद नाँदक जलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: नाँदक जलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: नाँदक जलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: नाँदक जलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११५९ — भीतक लेप — आस कात डोर तनै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस) · रदीफ: कात डोर तनै · शेर: ६

मोन खोजि भीत मे साँच फेर खुलै / मोन नापि भीत आस कात डोर तनै
कान देखि लेप पर भेद साफ सुनै / लोक राखि लेप श्वास कात डोर तनै
लोक राखि भीत मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि लेप मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि लेप संग मान फेर चलै / हाथ खोजि भीत त्रास कात डोर तनै
मोन नापि भीत मे मूल फेर जगै / मोन सोचि भीत मे छाप फेर जगै
लोक नापि लेप मे छाप फेर बचै / मोन नापि लेप प्यास कात डोर तनै
मोन सोचि भीत मे भेद साफ जनै / लोक राखि लेप मे रूप थिर रहै
लोक खोजि लेप संग डोर फेर तनै / लोक खोजि भीत वास कात डोर तनै
मोन राखि भीत मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि भीत मे राह साफ खुलै
लोक सोचि लेप मे काज फेर जँचै / मोन सोचि लेप पास कात डोर तनै
मोन नापि भीत मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि लेप मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि लेप पर मान फेर जगै / कान सोचि भीत साँस कात डोर तनै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११५९ — संगीतमय रूप

भाव: भीतक लेपक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, बाँसुरी, मृदु पखावज। भीतक लेपक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: भीतक लेपक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: भीतक लेपक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद भीतक लेपक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: भीतक लेपक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: भीतक लेपक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: भीतक लेपक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११६० — खपराक छत — सार मे थाह खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार) · रदीफ: मे थाह खुलै · शेर: ६

मोन खोजि खप मे साँच फेर खुलै / मोन नापि खप सार मे थाह खुलै
कान देखि छत पर भेद साफ सुनै / लोक राखि छत धार मे थाह खुलै
लोक राखि खप मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि छत मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि छत संग मान फेर चलै / हाथ खोजि खप भार मे थाह खुलै
मोन नापि खप मे मूल फेर जगै / मोन सोचि खप मे छाप फेर जगै
लोक नापि छत मे छाप फेर बचै / मोन नापि छत पार मे थाह खुलै
मोन सोचि खप मे भेद साफ जनै / लोक राखि छत मे रूप थिर रहै
लोक खोजि छत संग डोर फेर तनै / लोक खोजि खप हार मे थाह खुलै
मोन राखि खप मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि खप मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि छत मे काज फेर जँचै / मोन सोचि छत तार मे थाह खुलै
मोन नापि खप मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि छत मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि छत पर मान फेर जगै / कान सोचि खप मार मे थाह खुलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११६० — संगीतमय रूप

भाव: खपराक छतक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।

गति (BPM): ५४–५८ · ताल: कहरवा ८।

वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, सारंगी, विरल ढोलक। खपराक छतक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।

मतला: खपराक छतक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।

२म शेर: खपराक छतक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।

३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद खपराक छतक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।

४म शेर: खपराक छतक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।

५म शेर: खपराक छतक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।

६म शेर: खपराक छतक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११६१ — काठक छील — मान पर स्वर बजै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: पर स्वर बजै · शेर: ६

मोन खोजि काठ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि काठ मान पर स्वर बजै

कान देखि छील पर भेद साफ सुनै / लोक राखि छील ज्ञान पर स्वर बजै

लोक राखि काठ मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि छील मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि छील संग मान फेर चलै / हाथ खोजि काठ ध्यान पर स्वर बजै

मोन नापि काठ मे मूल फेर जगै / मोन सोचि काठ मे छाप फेर जगै

लोक नापि छील मे छाप फेर बचै / मोन नापि छील प्राण पर स्वर बजै

मोन सोचि काठ मे भेद साफ जनै / लोक राखि छील मे रूप थिर रहै

लोक खोजि छील संग डोर फेर तनै / लोक खोजि काठ गान पर स्वर बजै

मोन राखि काठ मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि काठ मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि छील मे काज फेर जँचै / मोन सोचि छील दान पर स्वर बजै

मोन नापि काठ मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि छील मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि छील पर मान फेर जगै / कान सोचि काठ शान पर स्वर बजै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११६१ — संगीतमय रूप

भाव: काठक छीलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: विलम्बित झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: रबाब, तानपुरा, विरल तबला। काठक छीलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: काठक छीलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: काठक छीलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद काठक छीलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: काठक छीलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: काठक छीलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: काठक छीलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११६२ — ताड़क रस — राह संग साँच जनै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: संग साँच जनै · शेर: ६

मोन खोजि ताड़ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि ताड़ राह संग साँच जनै
कान देखि रस पर भेद साफ सुनै / लोक राखि रस चाह संग साँच जनै
लोक राखि ताड़ मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि रस मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि रस संग मान फेर चलै / हाथ खोजि ताड़ थाह संग साँच जनै
मोन नापि ताड़ मे मूल फेर जगै / मोन सोचि ताड़ मे छाप फेर जगै
लोक नापि रस मे छाप फेर बचै / मोन नापि रस आह संग साँच जनै
मोन सोचि ताड़ मे भेद साफ जनै / लोक राखि रस मे रूप थिर रहै
लोक खोजि रस संग डोर फेर तनै / लोक खोजि ताड़ छाह संग साँच जनै
मोन राखि ताड़ मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि ताड़ मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि रस मे काज फेर जँचै / मोन सोचि रस दाह संग साँच जनै
मोन नापि ताड़ मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि रस मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि रस पर मान फेर जगै / कान सोचि ताड़ वाह संग साँच जनै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११६२ — संगीतमय रूप

भाव: ताड़क रसक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: मन्द रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, हारमोनियम, विरल तबला। ताड़क रसक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: ताड़क रसक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: ताड़क रसक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद ताड़क रसक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: ताड़क रसक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: ताड़क रसक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: ताड़क रसक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११६३ — पनसक बीआ — रंग बीच नेह बचै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग) · रदीफ: बीच नेह बचै · शेर: ६

मोन खोजि पनस मे साँच फेर खुलै / मोन नापि पनस रंग बीच नेह बचै
कान देखि बीआ पर भेद साफ सुनै / लोक राखि बीआ संग बीच नेह बचै
लोक राखि पनस मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि बीआ मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि बीआ संग मान फेर चलै / हाथ खोजि पनस ढंग बीच नेह बचै
मोन नापि पनस मे मूल फेर जगै / मोन सोचि पनस मे छाप फेर जगै
लोक नापि बीआ मे छाप फेर बचै / मोन नापि बीआ जंग बीच नेह बचै
मोन सोचि पनस मे भेद साफ जनै / लोक राखि बीआ मे रूप थिर रहै
लोक खोजि बीआ संग डोर फेर तनै / लोक खोजि पनस भंग बीच नेह बचै
मोन राखि पनस मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि पनस मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि बीआ मे काज फेर जँचै / मोन सोचि बीआ तंग बीच नेह बचै
मोन नापि पनस मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि बीआ मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि बीआ पर मान फेर जगै / कान सोचि पनस अंग बीच नेह बचै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११६३ — संगीतमय रूप

भाव: पनसक बीआक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, हलुक तबला। पनसक बीआक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: पनसक बीआक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: पनसक बीआक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद पनसक बीआक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: पनसक बीआक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: पनसक बीआक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: पनसक बीआक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११६४ — मखानक खोल — गीत कात राह मुड़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: कात राह मुड़ै · शेर: ६

मोन खोजि मखान मे साँच फेर खुलै / मोन नापि मखान गीत कात राह मुड़ै
कान देखि खोल पर भेद साफ सुनै / लोक राखि खोल मीत कात राह मुड़ै
लोक राखि मखान मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि खोल मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि खोल संग मान फेर चलै / हाथ खोजि मखान प्रीत कात राह मुड़ै
मोन नापि मखान मे मूल फेर जगै / मोन सोचि मखान मे छाप फेर जगै
लोक नापि खोल मे छाप फेर बचै / मोन नापि खोल रीत कात राह मुड़ै
मोन सोचि मखान मे भेद साफ जनै / लोक राखि खोल मे रूप थिर रहै
लोक खोजि खोल संग डोर फेर तनै / लोक खोजि मखान जीत कात राह मुड़ै
मोन राखि मखान मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि मखान मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि खोल मे काज फेर जँचै / मोन सोचि खोल भीत कात राह मुड़ै
मोन नापि मखान मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि खोल मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि खोल पर मान फेर जगै / कान सोचि मखान शीत कात राह मुड़ै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११६४ — संगीतमय रूप

भाव: मखानक खोलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, सुरमंडल, हलुक मँजीरा। मखानक खोलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: मखानक खोलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: मखानक खोलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद मखानक खोलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: मखानक खोलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: मखानक खोलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: मखानक खोलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११६५ — सनक रेसा — बात मे रूप बदलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात) · रदीफ: मे रूप बदलै · शेर: ६

मोन खोजि सन मे साँच फेर खुलै / मोन नापि सन बात मे रूप बदलै

कान देखि रेस पर भेद साफ सुनै / लोक राखि रेस रात मे रूप बदलै

लोक राखि सन मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि रेस मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि रेस संग मान फेर चलै / हाथ खोजि सन पात मे रूप बदलै

मोन नापि सन मे मूल फेर जगै / मोन सोचि सन मे छाप फेर जगै

लोक नापि रेस मे छाप फेर बचै / मोन नापि रेस घात मे रूप बदलै

मोन सोचि सन मे भेद साफ जनै / लोक राखि रेस मे रूप थिर रहै

लोक खोजि रेस संग डोर फेर तनै / लोक खोजि सन भात मे रूप बदलै

मोन राखि सन मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि सन मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि रेस मे काज फेर जँचै / मोन सोचि रेस तात मे रूप बदलै

मोन नापि सन मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि रेस मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि रेस पर मान फेर जगै / कान सोचि सन जात मे रूप बदलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११६५ — संगीतमय रूप

भाव: सनक रेसाक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: इसराज, बाँसुरी, हलुक ढोलक। सनक रेसाक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: सनक रेसाक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: सनक रेसाक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद सनक रेसाक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: सनक रेसाक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: सनक रेसाक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: सनक रेसाक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११६६ — चूनक ढेरी — सोर पर गंध पलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: पर गंध पलै · शेर: ६

मोन खोजि चून मे साँच फेर खुलै / मोन नापि चून सोर पर गंध पलै

कान देखि ढेर पर भेद साफ सुनै / लोक राखि ढेर भोर पर गंध पलै

लोक राखि चून मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि ढेर मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि ढेर संग मान फेर चलै / हाथ खोजि चून नोर पर गंध पलै

मोन नापि चून मे मूल फेर जगै / मोन सोचि चून मे छाप फेर जगै

लोक नापि ढेर मे छाप फेर बचै / मोन नापि ढेर छोर पर गंध पलै

मोन सोचि चून मे भेद साफ जनै / लोक राखि ढेर मे रूप थिर रहै

लोक खोजि ढेर संग डोर फेर तनै / लोक खोजि चून जोर पर गंध पलै

मोन राखि चून मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि चून मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि ढेर मे काज फेर जँचै / मोन सोचि ढेर डोर पर गंध पलै

मोन नापि चून मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि ढेर मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि ढेर पर मान फेर जगै / कान सोचि चून कोर पर गंध पलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११६६ — संगीतमय रूप

भाव: चूनक ढेरीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: आड़ा चौताल १४।
वाद्य-विन्यास: सुरमंडल, इसराज, मँजीरा। चूनक ढेरीक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: चूनक ढेरीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: चूनक ढेरीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद चूनक ढेरीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: चूनक ढेरीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: चूनक ढेरीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: चूनक ढेरीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११६७ — घीक वास — ताल संग सोर फूटै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाल (ताल, चाल, जाल, काल, ढाल, लाल, बाल) · रदीफ: संग सोर फूटै · शेर: ६

मोन खोजि घी मे साँच फेर खुलै / मोन नापि घी ताल संग सोर फूटै
कान देखि वास पर भेद साफ सुनै / लोक राखि वास चाल संग सोर फूटै
लोक राखि घी मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि वास मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि वास संग मान फेर चलै / हाथ खोजि घी जाल संग सोर फूटै
मोन नापि घी मे मूल फेर जगै / मोन सोचि घी मे छाप फेर जगै
लोक नापि वास मे छाप फेर बचै / मोन नापि वास काल संग सोर फूटै
मोन सोचि घी मे भेद साफ जनै / लोक राखि वास मे रूप थिर रहै
लोक खोजि वास संग डोर फेर तनै / लोक खोजि घी ढाल संग सोर फूटै
मोन राखि घी मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि घी मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि वास मे काज फेर जँचै / मोन सोचि वास लाल संग सोर फूटै
मोन नापि घी मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि वास मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि वास पर मान फेर जगै / कान सोचि घी बाल संग सोर फूटै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११६७ — संगीतमय रूप

भाव: घीक वासक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५४–५८ · ताल: मृदु दादरा ६।
वाद्य-विन्यास: इसराज, एकतारा, मृदु पखावज। घीक वासक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: घीक वासक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: घीक वासक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद घीक वासक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: घीक वासक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: घीक वासक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: घीक वासक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११६८ — मधुक मकरंद — आस बीच मान ठहरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ास (आस, श्वास, त्रास, प्यास, वास, पास, साँस) · रदीफ: बीच मान ठहरै · शेर: ६

मोन खोजि मधु मे साँच फेर खुलै / मोन नापि मधु आस बीच मान ठहरै
कान देखि मकरंद पर भेद साफ सुनै / लोक राखि मकरंद श्वास बीच मान ठहरै
लोक राखि मधु मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि मकरंद मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि मकरंद संग मान फेर चलै / हाथ खोजि मधु त्रास बीच मान ठहरै
मोन नापि मधु मे मूल फेर जगै / मोन सोचि मधु मे छाप फेर जगै
लोक नापि मकरंद मे छाप फेर बचै / मोन नापि मकरंद प्यास बीच मान ठहरै
मोन सोचि मधु मे भेद साफ जनै / लोक राखि मकरंद मे रूप थिर रहै
लोक खोजि मकरंद संग डोर फेर तनै / लोक खोजि मधु वास बीच मान ठहरै
मोन राखि मधु मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि मधु मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि मकरंद मे काज फेर जँचै / मोन सोचि मकरंद पास बीच मान ठहरै
मोन नापि मधु मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि मकरंद मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि मकरंद पर मान फेर जगै / कान सोचि मधु साँस बीच मान ठहरै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११६८ — संगीतमय रूप

भाव: मधुक मकरंदक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: चौताल १२।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, रबाब, विरल मँजीरा। मधुक मकरंदक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: मधुक मकरंदक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: मधुक मकरंदक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद मधुक मकरंदक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: मधुक मकरंदक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: मधुक मकरंदक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: मधुक मकरंदक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११६९ — कोठीक अन्न — सार कात डोर जुड़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार) · रदीफ: कात डोर जुड़ै · शेर: ६

मोन खोजि कोठ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि कोठ सार कात डोर जुड़ै
कान देखि अन्न पर भेद साफ सुनै / लोक राखि अन्न धार कात डोर जुड़ै
लोक राखि कोठ मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि अन्न मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि अन्न संग मान फेर चलै / हाथ खोजि कोठ भार कात डोर जुड़ै
मोन नापि कोठ मे मूल फेर जगै / मोन सोचि कोठ मे छाप फेर जगै
लोक नापि अन्न मे छाप फेर बचै / मोन नापि अन्न पार कात डोर जुड़ै
मोन सोचि कोठ मे भेद साफ जनै / लोक राखि अन्न मे रूप थिर रहै
लोक खोजि अन्न संग डोर फेर तनै / लोक खोजि कोठ हार कात डोर जुड़ै
मोन राखि कोठ मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि कोठ मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि अन्न मे काज फेर जँचै / मोन सोचि अन्न तार कात डोर जुड़ै
मोन नापि कोठ मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि अन्न मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि अन्न पर मान फेर जगै / कान सोचि कोठ मार कात डोर जुड़ै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११६९ — संगीतमय रूप

भाव: कोठीक अन्नक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५१–५५ · ताल: मन्द तीनताल १६।
वाद्य-विन्यास: एकतारा, बाँसुरी, मृदु पखावज। कोठीक अन्नक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कोठीक अन्नक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कोठीक अन्नक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कोठीक अन्नक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कोठीक अन्नक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कोठीक अन्नक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कोठीक अन्नक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११७० — ढोलकक थाप — मान मे छाह सरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: मे छाह सरै · शेर: ६

मोन खोजि ढोल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि ढोल मान मे छाह सरै
कान देखि चर्म पर भेद साफ सुनै / लोक राखि चर्म ज्ञान मे छाह सरै
लोक राखि ढोल मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि चर्म मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि चर्म संग मान फेर चलै / हाथ खोजि ढोल ध्यान मे छाह सरै
मोन नापि ढोल मे मूल फेर जगै / मोन सोचि ढोल मे छाप फेर जगै
लोक नापि चर्म मे छाप फेर बचै / मोन नापि चर्म प्राण मे छाह सरै
मोन सोचि ढोल मे भेद साफ जनै / लोक राखि चर्म मे रूप थिर रहै
लोक खोजि चर्म संग डोर फेर तनै / लोक खोजि ढोल गान मे छाह सरै
मोन राखि ढोल मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि ढोल मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि चर्म मे काज फेर जँचै / मोन सोचि चर्म दान मे छाह सरै
मोन नापि ढोल मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि चर्म मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि चर्म पर मान फेर जगै / कान सोचि ढोल शान मे छाह सरै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११७० — संगीतमय रूप

भाव: ढोलकक थापक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३९–४३ · ताल: कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: हारमोनियम, सारंगी, विरल ढोलक। ढोलकक थापक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: ढोलकक थापक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: ढोलकक थापक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद ढोलकक थापक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: ढोलकक थापक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: ढोलकक थापक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: ढोलकक थापक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११७१ — काँसक थाल — राह पर भोर उगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: पर भोर उगै · शेर: ६

मोन खोजि काँस मे साँच फेर खुलै / मोन नापि काँस राह पर भोर उगै

कान देखि थाल पर भेद साफ सुनै / लोक राखि थाल चाह पर भोर उगै

लोक राखि काँस मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि थाल मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि थाल संग मान फेर चलै / हाथ खोजि काँस थाह पर भोर उगै

मोन नापि काँस मे मूल फेर जगै / मोन सोचि काँस मे छाप फेर जगै

लोक नापि थाल मे छाप फेर बचै / मोन नापि थाल आह पर भोर उगै

मोन सोचि काँस मे भेद साफ जनै / लोक राखि थाल मे रूप थिर रहै

लोक खोजि थाल संग डोर फेर तनै / लोक खोजि काँस छाह पर भोर उगै

मोन राखि काँस मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि काँस मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि थाल मे काज फेर जँचै / मोन सोचि थाल दाह पर भोर उगै

मोन नापि काँस मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि थाल मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि थाल पर मान फेर जगै / कान सोचि काँस वाह पर भोर उगै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११७१ — संगीतमय रूप

भाव: काँसक थालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४८–५२ · ताल: विलम्बित झपताल १०।
वाद्य-विन्यास: रबाब, तानपुरा, विरल तबला। काँसक थालक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: काँसक थालक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: काँसक थालक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद काँसक थालक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: काँसक थालक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: काँसक थालक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: काँसक थालक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११७२ — जोतक लीक — रंग संग तर्क जँचै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग) · रदीफ: संग तर्क जँचै · शेर: ६

मोन खोजि जोत मे साँच फेर खुलै / मोन नापि जोत रंग संग तर्क जँचै

कान देखि मेख पर भेद साफ सुनै / लोक राखि मेख संग संग तर्क जँचै

लोक राखि जोत मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि मेख मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि मेख संग मान फेर चलै / हाथ खोजि जोत ढंग संग तर्क जँचै

मोन नापि जोत मे मूल फेर जगै / मोन सोचि जोत मे छाप फेर जगै

लोक नापि मेख मे छाप फेर बचै / मोन नापि मेख जंग संग तर्क जँचै

मोन सोचि जोत मे भेद साफ जनै / लोक राखि मेख मे रूप थिर रहै

लोक खोजि मेख संग डोर फेर तनै / लोक खोजि जोत भंग संग तर्क जँचै

मोन राखि जोत मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि जोत मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि मेख मे काज फेर जँचै / मोन सोचि मेख तंग संग तर्क जँचै

मोन नापि जोत मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि मेख मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि मेख पर मान फेर जगै / कान सोचि जोत अंग संग तर्क जँचै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११७२ — संगीतमय रूप

भाव: जोतक लीकक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ३६–४० · ताल: मन्द रूपक ७।
वाद्य-विन्यास: सारंगी, हारमोनियम, विरल तबला। जोतक लीकक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: जोतक लीकक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: जोतक लीकक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद जोतक लीकक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: जोतक लीकक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: जोतक लीकक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: जोतक लीकक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११७३ — शालक छाल — गीत बीच अर्थ खुलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: बीच अर्थ खुलै · शेर: ६

मोन खोजि शाल मे साँच फेर खुलै / मोन नापि शाल गीत बीच अर्थ खुलै
कान देखि छाल पर भेद साफ सुनै / लोक राखि छाल मीत बीच अर्थ खुलै
लोक राखि शाल मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि छाल मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि छाल संग मान फेर चलै / हाथ खोजि शाल प्रीत बीच अर्थ खुलै
मोन नापि शाल मे मूल फेर जगै / मोन सोचि शाल मे छाप फेर जगै
लोक नापि छाल मे छाप फेर बचै / मोन नापि छाल रीत बीच अर्थ खुलै
मोन सोचि शाल मे भेद साफ जनै / लोक राखि छाल मे रूप थिर रहै
लोक खोजि छाल संग डोर फेर तनै / लोक खोजि शाल जीत बीच अर्थ खुलै
मोन राखि शाल मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि शाल मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि छाल मे काज फेर जँचै / मोन सोचि छाल भीत बीच अर्थ खुलै
मोन नापि शाल मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि छाल मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि छाल पर मान फेर जगै / कान सोचि शाल शीत बीच अर्थ खुलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११७३ — संगीतमय रूप

भाव: शालक छालक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४५–४९ · ताल: दीपचन्दी १४।
वाद्य-विन्यास: तानपुरा, बाँसुरी, हलुक तबला। शालक छालक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: शालक छालक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: शालक छालक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद शालक छालक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: शालक छालक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: शालक छालक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: शालक छालक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११७४ — कुम्हारक भट्ठी — बात कात नाद बजै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात) · रदीफ: कात नाद बजै · शेर: ६

मोन खोजि भट्ठ मे साँच फेर खुलै / मोन नापि भट्ठ बात कात नाद बजै
कान देखि ताप पर भेद साफ सुनै / लोक राखि ताप रात कात नाद बजै
लोक राखि भट्ठ मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि ताप मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि ताप संग मान फेर चलै / हाथ खोजि भट्ठ पात कात नाद बजै
मोन नापि भट्ठ मे मूल फेर जगै / मोन सोचि भट्ठ मे छाप फेर जगै
लोक नापि ताप मे छाप फेर बचै / मोन नापि ताप घात कात नाद बजै
मोन सोचि भट्ठ मे भेद साफ जनै / लोक राखि ताप मे रूप थिर रहै
लोक खोजि ताप संग डोर फेर तनै / लोक खोजि भट्ठ भात कात नाद बजै
मोन राखि भट्ठ मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि भट्ठ मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि ताप मे काज फेर जँचै / मोन सोचि ताप तात कात नाद बजै
मोन नापि भट्ठ मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि ताप मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि ताप पर मान फेर जगै / कान सोचि भट्ठ जात कात नाद बजै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११७४ — संगीतमय रूप

भाव: कुम्हारक भट्ठीक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ५४–५८ · ताल: विलम्बित एकताल १२।
वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, सुरमंडल, हलुक मँजीरा। कुम्हारक भट्ठीक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: कुम्हारक भट्ठीक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: कुम्हारक भट्ठीक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद कुम्हारक भट्ठीक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: कुम्हारक भट्ठीक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: कुम्हारक भट्ठीक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: कुम्हारक भट्ठीक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११७५ — धानक खील — सोर मे साँच मिलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ोर (सोर, भोर, नोर, छोर, जोर, डोर, कोर) · रदीफ: मे साँच मिलै · शेर: ६

मोन खोजि खील मे साँच फेर खुलै / मोन नापि खील सोर मे साँच मिलै
कान देखि लावा पर भेद साफ सुनै / लोक राखि लावा भोर मे साँच मिलै
लोक राखि खील मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि लावा मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि लावा संग मान फेर चलै / हाथ खोजि खील नोर मे साँच मिलै
मोन नापि खील मे मूल फेर जगै / मोन सोचि खील मे छाप फेर जगै
लोक नापि लावा मे छाप फेर बचै / मोन नापि लावा छोर मे साँच मिलै
मोन सोचि खील मे भेद साफ जनै / लोक राखि लावा मे रूप थिर रहै
लोक खोजि लावा संग डोर फेर तनै / लोक खोजि खील जोर मे साँच मिलै
मोन राखि खील मे तर्क साफ मिलै / मोन नापि खील मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि लावा मे काज फेर जँचै / मोन सोचि लावा डोर मे साँच मिलै
मोन नापि खील मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि लावा मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि लावा पर मान फेर जगै / कान सोचि खील कोर मे साँच मिलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११७५ — संगीतमय रूप

भाव: धानक खीलक बिम्बसँ प्रमाण, लोक-व्यवहार, स्मृति-अध्यास, ज्ञाता–ज्ञेय, हेतु-जाँच आ कारण-दायित्वक छह स्वतंत्र अर्थ-क्षेत्र खुलैत अछि।
गति (BPM): ४२–४६ · ताल: मन्द कहरवा ८।
वाद्य-विन्यास: इसराज, बाँसुरी, हलुक ढोलक। धानक खीलक दृश्यकेँ ध्वनि-अनुकरणमे नहि सीमित करू; शब्द, मौन, मींड आ थापमे पृथक् श्वास-विन्यास बनए।
मतला: धानक खीलक पहिल शेर प्रत्यक्ष अनुभव आ प्रमाणक सीमाकेँ खोलैत अछि; दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट रहए।
२म शेर: धानक खीलक लोक-चलन, भाषा आ काजसँ अर्थ बनबाक प्रश्न स्वतंत्र रूपेँ उठए; पहिल मिसरा अपनहि पूर्ण अर्थ राखए।
३म शेर: स्मृति, छाया, आरोप आ मूल बोधक भेद धानक खीलक बिम्बमे खुलए; कथ्य निबन्धात्मक नहि बने।
४म शेर: धानक खीलक भीतर ज्ञाता, ज्ञेय, आत्मबोध, स्मृति आ कालक निरन्तरता पृथक् काव्य-प्रश्न बनए।
५म शेर: धानक खीलक संकेतमे हेतु, बाधा, अपवाद आ सफल प्रवृत्तिक कसौटीपर निष्कर्ष जाँचल जाए; झट निश्चितता नहि थोपाल जाए।
६म शेर: धानक खीलक छठम शेरमे कारण-क्रम, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण श्रवण आ साझा उत्तरदायित्वक सीमा गीतात्मक रूपमे रहए।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११७६ — चानक डाकघर — पर पत्र जगै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ार (सार, धार, भार, पार, हार, तार, मार) · रदीफ: पर पत्र जगै · शेर: ६

रात खोलि चान मे डाक फेर चलै / मोन नापि चान सार पर पत्र जगै
तार देखि नभ मे मौन फेर सुनै / लोक राखि तारा धार पर पत्र जगै
नाम पढ़ि कागज मे दूरि फेर घटै / मोन खोजि चिट्ठी मे नेह फेर बनै
हाथ धरि कागज संग ताप फेर चलै / हाथ खोजि डाक भार पर पत्र जगै
रात नापि डाक मे दूरी फेर मुड़ै / मोन सोचि अक्षर मे छाप फेर जगै
लोक नापि अक्षर मे छाप फेर बचै / मोन नापि नभ पार पर पत्र जगै
मोन सोचि चान मे द्वार साफ खुलै / लोक राखि डाक मे आस थिर रहै
लोक खोजि तारा संग डोर फेर तनै / लोक खोजि चान हार पर पत्र जगै
मोन राखि चिट्ठी मे गंध साफ मिलै / मोन नापि कागज मे नेह साफ खुलै
लोक सोचि डाक मे काज फेर जँचै / मोन सोचि नभ तार पर पत्र जगै
मोन नापि चान मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि दूरी मे राह साफ खुलै
कान खोजि रात पर सोर फेर जगै / कान सोचि चान मार पर पत्र जगै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११७६ — संगीतमय रूप

भाव: चानक डाकघर असम्भव ठामक सम्भव संवाद अछि—दूरी, नाम, प्रतीक्षा, अनकहल चिट्ठी आ आकाशमे घूमैत नेह छह स्वतंत्र शेरमे खुलैत अछि।
गति (BPM): ४०–४४ · ताल: मन्द दादरा ६। यति १६+१६ पर खुलल, निस्सीम श्वास-विराम।
वाद्य-विन्यास: सुरमंडल, बाँसुरी, एकतारा, विरल मँजीरा। चिट्ठीक कागज-जकाँ हलुक ध्वनि आ दूर तारा-जकाँ विरल चमक रखल जाए।
मतला: चान डाकघर बनैत अछि; दू दिशासँ उठल पत्र एक्के आकाशमे जागैत अछि। दुनू मिसरामे काफिया–रदीफ स्पष्ट।
२म शेर: दूरी कागजपर घटैत अछि, मुदा हाथक ताप चिट्ठीकेँ मनुष्यक निकटता दैत अछि।
३म शेर: डाक यात्रा केवल ठाम बदलनाइ नहि; अक्षर पर समयक छाप सेहो बसैत अछि।
४म शेर: आकाशक द्वार भौतिक नहि, प्रतीक्षाक भीतर खुलैत अछि; हारो एकटा पत्र बनि सकैत अछि।
५म शेर: पुरान कागजक गंध स्मृति जगबैत अछि, आ संवादक काज केवल उत्तर पाबनाइ नहि।
६म शेर: अन्तिम शेरमे रातक मौन सेहो आवाज बनैत अछि; नहि पहुँचल पत्रो नेहक एक रूप बचबैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११७७ — समयक खाली जेब — संग घड़ी चलै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ान (मान, ज्ञान, ध्यान, प्राण, गान, दान, शान) · रदीफ: संग घड़ी चलै · शेर: ६

मोन खोजि काल मे जेब फेर खुलै / मोन नापि काल मान संग घड़ी चलै
हाथ देखि सूइ पर चाल फेर सुनै / लोक राखि सूइ ज्ञान संग घड़ी चलै
लोक राखि जेब मे सिक्का नहि बचै / मोन खोजि काल मे हँसी फेर बनै
हाथ देखि सूइ संग साँस फेर चलै / हाथ खोजि काल ध्यान संग घड़ी चलै
मोन नापि जेब मे खालीपन जगै / मोन सोचि काल मे नाम फेर जगै
लोक नापि साँस मे छाप फेर बचै / मोन नापि साँस प्राण संग घड़ी चलै
मोन सोचि काल मे दौड़ साफ थमै / लोक राखि जेब मे मौन थिर रहै
लोक खोजि सूइ संग डोर फेर तनै / लोक खोजि काल गान संग घड़ी चलै
मोन राखि जेब मे काज साफ मिलै / मोन नापि काल मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि साँस मे दाम फेर घटै / मोन सोचि काल दान संग घड़ी चलै
मोन नापि जेब मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि सूइ मे चाल साफ खुलै
कान खोजि मौन पर मान फेर जगै / कान सोचि काल शान संग घड़ी चलै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११७७ — संगीतमय रूप

भाव: समयक खाली जेब धनहीनता नहि, अनधिकारित क्षणक रूपक अछि—जहाँ घड़ी चलैत अछि मुदा जीवनक मूल्य सिक्का सँ नहि नापल जाइत।

गति (BPM): ३७–४१ · ताल: रूपक ७। ठहराव घड़ीक टिक-टिकक नकल नहि, साँसक अनियमित जीवित लय बने।

वाद्य-विन्यास: मन्द पियानो, इसराज, विरल खँजरी। धातुक टिक-टिकक बदला लकड़ीक सूक्ष्म ठक आ साँसक खाली ठाम मुख्य ध्वनि बने।

मतला: समयक जेब खाली अछि, मुदा मान आ ज्ञानक संग घड़ी चलैत रहैत अछि।

२म शेर: सिक्का नहि रहितहुँ जीवनक हँसी बचैत अछि; ध्यान घड़ीकेँ भीतरसँ सुनब सिखबैत अछि।

३म शेर: खालीपन स्वयं घटना अछि; साँस पर कालक छाप पड़ैत अछि, मुदा प्राण चलैत रहैत अछि।

४म शेर: दौड़ रुकलापर मौन देखाइत अछि; सूइक डोर गीतक रूप लैत अछि।

५म शेर: समयक दाम घटैत-बढ़ैत नहि; दान कएल क्षणहि ओकर मान बनैत अछि।

६म शेर: अन्तिम शेर मौनकेँ पराजय नहि, गरिमाक रूपमे सुनैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११७८ — बादलक पोथीघर — बीच अक्षर तिरै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ाह (राह, चाह, थाह, आह, छाह, दाह, वाह) · रदीफ: बीच अक्षर तिरै · शेर: ६

मोन खोजि मेघ मे पन्ना फेर खुलै / मोन नापि मेघ राह बीच अक्षर तिरै

कान देखि बिजुरी पर भेद साफ सुनै / लोक राखि बिजुरी चाह बीच अक्षर तिरै

लोक पढ़ि बादल मे अर्थ फेर बनै / मोन खोजि बरखा मे अर्थ फेर बनै

हाथ देखि बूँद संग नेह फेर चलै / हाथ खोजि मेघ थाह बीच अक्षर तिरै

मोन नापि पन्ना मे जल फेर जगै / मोन सोचि मेघ मे लेख फेर जगै

लोक नापि बरखा मे छाप फेर बचै / मोन नापि बूँद आह बीच अक्षर तिरै

मोन सोचि मेघ मे नाम साफ गलै / लोक राखि पन्ना मे रूप थिर रहै

लोक खोजि बूँद संग राह फेर तनै / लोक खोजि मेघ छाह बीच अक्षर तिरै

मोन राखि बरखा मे गप साफ मिलै / मोन नापि पन्ना मे भेद साफ खुलै

लोक सोचि मेघ मे काज फेर जँचै / मोन सोचि बूँद दाह बीच अक्षर तिरै

मोन नापि पन्ना मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि बरखा मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि मेघ पर सोर फेर जगै / कान सोचि बूँद वाह बीच अक्षर तिरै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११७८ — संगीतमय रूप

भाव: बादलक पोथीघरमे पन्ना जलसँ बनैत अछि, अक्षर तिरैत अछि आ नाम गलि जाइत अछि—ज्ञानकेँ स्थिर वस्तु नहि, बरखाक क्षणिक पाठ रूपमे देखल गेल अछि।
गति (BPM): ४६–५० · ताल: झपताल १०। स्वरमे मेघक विस्तार रहए, मुदा बरखाक बूँद-जकाँ स्पष्ट सूक्ष्म विरामो रहए।
वाद्य-विन्यास: सरोद, बाँसुरी, जलतरंगक विरल स्पर्श। बिजुरीक प्रभाव तेज झटका नहि, एक क्षणक उजास रूपेँ आबए।
मतला: मेघक भीतर पन्ना खुलैत अछि आ अक्षर जलपर तिरैत अछि।
२म शेर: बरखा अर्थकेँ मेटबैत नहि; पढ़बाक तरीका बदलैत अछि।
३म शेर: बूँद पन्नापर छाप छोड़ैत अछि, मुदा छाप स्थिर नहि रहैत।
४म शेर: नाम गलैत अछि, रूप रहैत अछि; छाह अक्षरकेँ नव किनार दैत अछि।
५म शेर: बरखाक गप काजसँ जँचल जाइत अछि—पोथी पढ़ब आ भीजब एक-दोसरसँ अलग नहि।
६म शेर: अन्तिम शेरमे मेघक सोर आ बूँदक विस्मय एक संग रहैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११७९ — सपनक रेल — कात सीटी बजै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ंग (रंग, संग, ढंग, जंग, भंग, तंग, अंग) · रदीफ: कात सीटी बजै · शेर: ६

रात खोजि रेल मे नींद फेर खुलै / मोन नापि रेल रंग कात सीटी बजै
कान देखि पटरी पर दूरि साफ सुनै / लोक राखि पटरी संग कात सीटी बजै
लोक चढ़ि सपन मे ठाम फेर बदलै / मोन खोजि डिब्बा मे नाम फेर बनै
हाथ देखि खिड़की संग चान फेर चलै / हाथ खोजि रेल ढंग कात सीटी बजै
मोन नापि स्टेशन मे मौन फेर जगै / मोन सोचि रेल मे छाप फेर जगै
लोक नापि सपन मे छाप फेर बचै / मोन नापि रात जंग कात सीटी बजै
मोन सोचि पटरी मे भेद साफ जनै / लोक राखि डिब्बा मे रूप थिर रहै
लोक खोजि खिड़की संग डोर फेर तनै / लोक खोजि रेल भंग कात सीटी बजै
मोन राखि सपन मे राह साफ मिलै / मोन नापि पटरी मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि स्टेशन मे काज फेर जँचै / मोन सोचि रात तंग कात सीटी बजै
मोन नापि रेल मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि सपन मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि नींद पर सोर फेर जगै / कान सोचि रेल अंग कात सीटी बजै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११७९ — संगीतमय रूप

भाव: सपनक रेल एहन यात्रा अछि जाहिमे टिकट, गन्तव्य आ जागरण निश्चित नहि—खिड़कीसँ चान चलैत अछि आ स्टेशन नाम बदलैत अछि।
गति (BPM): ५२–५६ · ताल: कहरवा ८। रेलक गति लगातार नहि; स्वप्न-जकाँ कखनो बहै, कखनो अचानक ठहरि जाए।
वाद्य-विन्यास: रबाब, क्लैरिनेट, मन्द ढोलक, विरल घंटी। सीटीक सीधा नकल नहि; लम्बा आरोही स्वर मात्र संकेत रूपेँ आबए।
मतला: नींद खुलैत-खुलैत रेल रंग बदलैत अछि; पटरीक दूरी सेहो आवाज बनैत अछि।
२म शेर: सपना चढ़ल यात्री ठाम बदलैत अछि, खिड़कीक बाहर चान ओकर संग चलैत अछि।
३म शेर: स्टेशनक मौन जागैत अछि; स्मृति जंगक रंग धारण करैत अछि।
४म शेर: पटरी दू रेखा होइतहुँ एक यात्रा बनबैत अछि; टूटन सेहो मार्गक हिस्सा अछि।
५म शेर: सपना राह देखबैत अछि, मुदा स्टेशनक काज जागरणमे जँचल जाइत अछि।
६म शेर: अन्तिम सीटी नींद तोड़ैत नहि—ओ सपना आ देहक बीचक अंग बनि बजैत अछि।
समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११८० — छाहक सोपान — पर पाँति चढ़ै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ीत (गीत, मीत, प्रीत, रीत, जीत, भीत, शीत) · रदीफ: पर पाँति चढ़ै · शेर: ६

मोन खोजि छाह मे सोपान फेर खुलै / मोन नापि छाह गीत पर पाँति चढ़ै

कान देखि भीत पर मौन फेर सुनै / लोक राखि भीत मीत पर पाँति चढ़ै

लोक राखि छाह मे गप फेर बनै / मोन खोजि सोपान मे नाम फेर बनै

हाथ देखि भीत संग मान फेर चलै / हाथ खोजि छाह प्रीत पर पाँति चढ़ै

मोन नापि सोपान मे पग फेर जगै / मोन सोचि छाह मे पग फेर जगै

लोक नापि भीत मे छाप फेर बचै / मोन नापि सोपान रीत पर पाँति चढ़ै

मोन सोचि छाह मे रूप साफ बदलै / लोक राखि भीत मे रंग थिर रहै

लोक खोजि पग संग डोर फेर तनै / लोक खोजि छाह जीत पर पाँति चढ़ै

मोन राखि सोपान मे साँस साफ मिलै / मोन नापि भीत मे राह साफ खुलै

लोक सोचि छाह मे काज फेर जँचै / मोन सोचि छाह भीत पर पाँति चढ़ै

मोन नापि सोपान मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि पग मे क्रम साफ खुलै

कान खोजि छाह पर सोर फेर जगै / कान सोचि भीत शीत पर पाँति चढ़ै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११८० — संगीतमय रूप

भाव: छाहक सोपान देहविहीन वास्तु अछि—पग चढ़ैत अछि, छाह बदलैत अछि, आ दीवारपर पाँति अपनहि ऊर्ध्व दिशा खोजैत अछि।

गति (BPM): ३८–४२ · ताल: विलम्बित एकताल १२। आरोह धीमा रहए; प्रत्येक १६-मात्रिक अर्धांश एकटा सीढ़ी-जकाँ पूर्ण ठहराव पाबए।

वाद्य-विन्यास: तानपुरा, इसराज, मृदु पखावज। ऊर्ध्वगमन लेल तानक अतिरेक नहि; मौनक तह मुख्य स्थापत्य बने।

मतला: छाह स्वयं सोपान बनैत अछि; गीत आ मीत दुनू पाँतिक चढ़ाइमे सहचर अछि।

२म शेर: नाम सोपानमे बनैत अछि, प्रीत छाहपर चढ़ैत अछि—ठोस आ अमूर्त एक-दोसरमे बदलैत अछि।

३म शेर: पगक छाप रीत बनैत अछि, मुदा सोपान ओकरा स्थिर नियम नहि बनबैत।

४म शेर: छाहक रूप बदलैत अछि; जीत ऊपर पहुँचनाइ नहि, चढ़बाक साहस अछि।

५म शेर: साँस सीढ़ीक असली माप अछि; भीतक भीतरक भीतियो एकटा पाँति बनि चढ़ैत अछि।

६म शेर: शीत दीवारक मौनकेँ ध्वनि दैत अछि; अन्तिम पाँति ऊपर नहि, भीतर चढ़ैत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

गजल ११८१ — शून्यक पतंग — संग डोर हँसै

बहर: उच्चारणाधारित दीर्घ सम-कल छन्द · पारम्परिक अरूज़ी नाम सुनिश्चित नहि

मात्रा-क्रम: ३२ मात्रा प्रति मिसरा · दूना-मिसरा नियम · दुनू १६-मात्रिक अर्धांश स्वतंत्र, सुन्दर, क्रियाशील उपवाक्य · वास्तविक उच्चारणाधारित गणना

कल-क्रम: २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति: १६+१६

काफिया: –ात (बात, रात, पात, घात, भात, तात, जात) · रदीफ: संग डोर हँसै · शेर: ६

मोन खोजि शून्य मे पाँख फेर खुलै / मोन नापि शून्य बात संग डोर हँसै
कान देखि पवन पर भेद साफ सुनै / लोक राखि पवन रात संग डोर हँसै
लोक राखि पतंग मे नाम फेर उड़ै / मोन खोजि नभ मे अर्थ फेर बनै
हाथ देखि डोर संग मान फेर चलै / हाथ खोजि पतंग पात संग डोर हँसै
मोन नापि शून्य मे सीमा फेर गलै / मोन सोचि पवन मे छाप फेर जगै
लोक नापि नभ मे छाप फेर बचै / मोन नापि पतंग घात संग डोर हँसै
मोन सोचि पवन मे राह साफ बदलै / लोक राखि डोर मे रूप थिर रहै
लोक खोजि नभ संग डोर फेर तनै / लोक खोजि शून्य भात संग डोर हँसै
मोन राखि पतंग मे आस साफ मिलै / मोन नापि पवन मे भेद साफ खुलै
लोक सोचि डोर मे काज फेर जँचै / मोन सोचि शून्य तात संग डोर हँसै
मोन नापि पतंग मे क्रम साफ खुलै / लोक नापि नभ मे क्रम साफ खुलै
कान खोजि पवन पर सोर फेर जगै / कान सोचि शून्य जात संग डोर हँसै

छन्द-जाँच (अन्तिम पाठसँ): १२/१२ मिसरा = ३२ मात्रा · वास्तविक कल-विन्यास २+२+१+२+२+२+२+१+२ | २+२+१+२+२+२+२+१+२ · यति १६+१६

गजल ११८१ — संगीतमय रूप

भाव: शून्यक पतंग अन्तिम गजलमे समाप्ति नहि, खुलल आकाशक खेल अछि—डोर बन्धन आ स्वतंत्रता दुनूक एक्के समयक रूप बनैत अछि।

गति (BPM): ४८–५२ · ताल: मन्द तीनताल १६। अन्तिम गजलमे आरोह खुलल रहए; अन्तिम सम पर स्वर बन्द नहि, मृदु अनुनादमे विलीन हो।

वाद्य-विन्यास: बाँसुरी, सरोद, मन्द तबला, अन्तमे एकल तानपुरा। पवनक आभास स्वरक खाली ठामसँ बनए, प्रभावक घनत्वसँ नहि।

मतला: शून्य बात करैत अछि, पवन रातक संग डोरकेँ हँसाबैत अछि।

२म शेर: पतंग पर नाम लिखल अछि, मुदा उड़ान नामक सीमा पार करैत अछि।

३म शेर: सीमा गलैत अछि; घातो पतंगकेँ केवल गिरबैत नहि, ओकर चाल बदलैत अछि।

४म शेर: पवन राह बदलैत अछि; डोरक तननाइ जीवनक खेलक दृश्य बनैत अछि।

५म शेर: आशा डोरमे काज करैत अछि; ऊष्मा शून्यकेँ निर्जीव रहए नहि दैत।

६म शेर: अन्तिम शेर वर्ग, जात वा नामक सीमा ऊपर उठि शून्यक खुलल हँसीपर समाप्त होइत अछि।

समापन: छहू शेर स्वतंत्र अर्थ-एकक रहए।

खण्ड-२

दीवान-ए-विदेह

मैथिली गजल संग्रह — गजलकार : गजेन्द्र ठाकुर

खण्ड-२ (गजल सभक संगीतमय रूप संगमे)

एहि दीवानमे गजेन्द्र ठाकुरक जीवन भरिक गजल-साधनाक संकलन अछि—
प्रेम, विरह, समय आ अस्तित्वक अनुभूतिसँ सिंचित शेर।
प्रत्येक शेरमे मिथिलाक माटिक सुगंध आ उर्दू-फारसी गजल
परम्पराक सामंजस्य भेटत। ई संग्रह एक यात्राक दस्तावेज अछि—
जाहिमे भाषा, भाव आ बिम्ब मिलिकऽ एकटा नव स्वर रचैत अछि।

विदेह वेबसाइट

www.videha.co.in

विदेह ई-जर्नल आर्काइव

videha-ejournal.github.io/videha

विदेह : प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ISSN 2229-547X

Videha : First Maithili Fortnightly e-Journal